हिन्दी मुहावरा कोश

सम्पादक
डॉ० भोलानाथ तिवारी

संशोधित संस्करण

किताब महल, इलाहाबाद

द्वितीय संस्करण : १९६४
तृतीय संस्करण : १९७७

प्रकाशक—किताब महल, इलाहाबाद।
मुद्रक—अनुपम प्रेस, ६, चक, इलाहाबाद।

प्रस्तुत संस्करण

मुहावरा कोश के इस संस्करण मे लगभग तीन हज़ार नये मुहावरे जोड़ दिये गये हैं। इस प्रकार यह पुराने सस्करणो की तुलना मे अधिक उपयोगी बन पडा है। प्रूफ मैं स्वयं नहीं देख सका, अत इसमे यत्र तत्र कुछ गलतियाँ रह गई है। आशा है कोश के प्रयोक्ता क्षमा करेंगे।

—संपादक

Rakesh Sharma

'मुहावरा' और हिन्दी में उसकी परम्परा

'मुहावरा' शब्द

'मुहावरा' शब्द मूलत अरबी भाषा का है और इसकी धातु है 'हे-वाव-रे', जिसका अर्थ है 'लौटाना', इसी से शब्द बनता है 'हावर', जिसका अर्थ है 'बातचीत करना', 'प्रश्नोत्तर करना' या 'उत्तर का उत्तर देना'। 'हावर' का क्रियार्थक सज्ञा रूप अरबी भाषा मे है **'मुहावरत'** जिसका फारसी रूप मिलता है **'मुहावरः'**। 'मुहावरा' इसी का हिन्दी रूप है। उर्दू मे लिखते है **'मुहावरः'**, किन्तु हिन्दी की तरह ही कहते है **'मुहावरा'**।

सस्कृत भाषा में मुहावरो का प्रयोग तो है, किन्तु उनके लिए अलग से कोई स्वीकृत नाम नही है। यो कुछ लोग इसके लिए **'वाग्रीति, 'वाग्धारा', 'वाग्वृत्ति', 'भाषा-संप्रदाय'** आदि का प्रयोग करते हैं, किन्तु ये कदाचित् नये बनाये हुये शब्द है, सस्कृत साहित्य मे इस अर्थ मे कम-से-कम मुझे इनमे से किसी का भी प्रयोग नही मिला। सस्कृत काव्यशास्त्र की दृष्टि से सभी मुहावरे रूढा **लक्षणा** कहे जाते हैं, अर्थात् ये मूलत. लक्षणा है, प्रयोग मे रूढ हो जाने के कारण इन्हे 'रूढा लक्षणा' के अतर्गत रखा जाता है। वस्तुत 'रूढा लक्षणा' रूढ हो जाने के कारण अभिधा के समीप पहुँच जाती है, इसीलिए रूढा लक्षणा को **अभिधा पुच्छभूता** कहा जाता है। काव्यशास्त्रियो की इस परम्परागत मान्यता से थोडा हटते हुए प्रस्तुत प्रसग मे मै यह कहना चाहूँगा कि मुहावरे लक्षणा के अतर्गत आते हैं, किन्तु वे अपने जन्म से 'रूढा लक्षणा' नही होते। प्रारम्भ मे जब कोई मुहावरा नया-नया प्रचलित होता है या बनता है तो वह **'प्रयोजनवती लक्षणा'** के अतर्गत आता है, और जब बहुप्रयुक्त होकर वह अपने विशिष्ट अर्थ मे रूढ हो जाता है, वह 'रूढा लक्षणा' के अतर्गत आ जाता है। इस स्थिति मे आकर ही मुहावरे को **'अभिधा पुच्छभूता लक्षणा'** के अतर्गत माना जाना चाहिए।

मुहावरों का जन्म

सामान्य भाषा सामान्य प्रयोग करती है—वाचक शब्द का, वाच्यार्थ का। शब्द शक्तियो की दृष्टि से कहना चाहे तो अभिधा शक्ति का। मुहावरो के जन्म का सबध इस सामान्य प्रयोग से नही है। जब वक्ता या लेखक अपने भावो की अपेक्षित अभिव्यक्ति मे इस सामान्य प्रयोग अथवा सामान्य भाषा को असमर्थ पाता है तो वह सामान्य प्रयोग की कारा को तोडकर विचलन करता है। नये मुहावरो का जन्म इसी विचलन से होता है। यह जन्म सामान्य बातचीत मे भी हो सकता है, काव्य-भाषा मे भी। मान लीजिए, कोई किसी से कहना चाहता है 'यह कैसी है तुम्हारी आदत ? जब देखो कहकर मुकर जाते हो'; किन्तु उसे लगता है कि इस सामान्य भाषा मे वह चुभन नही है, वह चोट नही है, जो वह अपनी अभिव्यक्ति मे भरना चाहता है, वह तुरन्त अपनी कल्पना के सहारे सादृश्य की सहायता लेता है और बोल उठता है 'यह कैसी है तुम्हारी आदत ? जब देखो, थूक कर चाटने लगते हो।' इस प्रकार एक मुहावरा जन्म लेकर उसकी अभिव्यक्ति मे मर्मभेदी चुभन भर देता है।

मुहावरों के जन्म के आधार

मुहावरों का जन्म अनेक आधारो पर होता है, जिनमें से कुछ मुख्य निम्नाकित है—

(क) सादृश्य के आधार पर—सबसे अधिक मुहावरे सादृश्य पर आधारित होते हैं

थूक कर चाटना=ऐसा करना जैसे कोई थूककर चाट रहा हो; **दिमाग सातवें आसमान पर होना**—दिमाग का इतना ऊपर उठ जाना, जैसे वह सातवें आसमान पर हो; **दही में मूसल का होना**=बीच में ऐसे आ जाना, जैसे दही में मूसल (अनुपयुक्त) आ गया हो, बीच में आकर मजा ऐसे किरकिरा कर देना, जैसे खाने वाले के सामने परसी सुस्वादु दही में मूसल डाल कर कोई उसका मजा किरकिरा कर दे; **दाँत काटी रोटी होना** दोनों में इस प्रकार पटना, जैसे वे इतने घनिष्ठ हो कि एक के द्वारा दाँत से काटी रोटी को दूसरा बिना भेद-भाव, घृणा-नफ़रत के खा जाय ; **दाँत कुरेदने को तिनका न होना**=अपना सब कुछ इस प्रकार गँवा देना कि पास मे जैसे दाँत खोदने के लिए एक तिनका भी न बचा हो। ऐसे ही, गागर मे सागर भरना, अंडा सेना, अँधेरे घर का उजाला, अगाड़ी-पिछाड़ी लगाना, ढिंढोरा पीटना आदि। कुछ मे तो यह सादृश्य बहुत स्पष्ट होता है (कैंची-सी ज़बान चलना, कुंदन-सा चमकना, सोने मे सुहागा होना, सोने मे सुगंध होना), किन्तु सभी मे नहीं।

(ख) **प्रतीकों के आधार पर**—कभी-कभी कुछ शब्दो को प्रतीक मान कर उनके आधार पर मुहावरे बना लेते है। उदाहरण के लिए, 'ढाई' शब्द का प्रतीक है, ख़ास-तौर पर जहाँ हज़ारों की बात हो . ढाई चावल की खिचड़ी पकाना, ढाई ईंट की मस्जिद बनाना, ढाई दिन की बादशाहत करना, ढाई माशे का आदमी, आदि।

(ग) **विशेष परिस्थिति मे होने वाली मुद्रा के वर्णन के आधार पर**—दाँतो तले-उँगली दबना, दाँत निपोरना, ओठ बिचकाना, सिर हिलाना, आँख मारना, आदि।

(घ) **भौतिक स्थिति के वर्णन के आधार पर**—जैसे अँतड़िया कुलबुलाना। बहुत भूख लगने पर अँतड़ियाँ कुलबुलाने लगती हैं, अत अँतड़ियाँ कुलबुलाना' का प्रयोग बहुत भूख लगने के लिए होने लगा है। ऐसे ही बहुत भूख लगने पर ऐसे लगता है, जैसे 'पेट मे चूहे कूद रहे हों'; अतः 'पेट में चूहे कूदना', 'अँतड़ियों मे आग लगना' भी इसी श्रेणी के मुहावरे है।

(ङ) **व्यंग्य मे उलटी बात के आधार पर**—जैसे, अक्ल का अजीर्ण होना। अजीर्ण ज़्यादा खाने से होता है, अत. यह आधिक्य का सूचक है। यहाँ 'अक्ल का अजीर्ण' का अर्थ 'अक्ल का आधिक्य' न होकर व्यंग्य मे उलटा, अर्थात् 'अक्ल का अभाव है।

(च) **ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर**—चाम के दाम चलाना, एक लाख का सवा लाख होना, आदि।

(छ) **कथाओं के आधार पर**—टेढ़ी खीर होना, बोझ की आख़िरी लकड़ी होना।

(ज) **असम्भव स्थिति के आधार पर**—कभी-कभी असम्भव स्थिति को शब्द-बद्ध करके भी मुहावरे बनाये जाते है· आसमान के तारे तोडना, जान हथेली पर रखना, छठी का दूध याद आना, जान होंठो पर आना, आदि।

मुहावरा : विशेषताएं और परिभाषा

मुहावरों की विशेषताएं निम्नांकित है—

(क) मुहावरा भाषा विशेष का होता है। ऐसा शायद ही कोई मुहावरा मिले, जो सभी भाषाओं की सामान्य रूप से सम्पत्ति हो।

(ख) मुहावरा वह अभिव्यक्तिक इकाई होती है, जिसमें प्रायः एकाधिक शब्द होते हैं,

(अपवादतः पहुँचा हुआ आदि) तथा जिसमें प्रायः एक क्रिया का भाव अवश्य (अपवादतः 'दिल का बादशाह आदि') होता है।

(ग) मुहावरे में प्रायः कोशार्थ या मुख्यार्थ का बोध होता है तथा उसका प्रयोग लक्ष्यार्थ के लिए किया जाता है, तथा लक्ष्यार्थ में ही मुहावरा भाषा-विशेष में रूढ़ि हो जाता है।

(घ) मुहावरे में शब्दो को प्रायः बदला नही जा सकता। उदाहरणार्थ, 'पानी-पानी होना' को 'जल-जल होना' या 'आसमान से बातें करना' को 'गगन से बातें करना' नहीं कहा जा सकता।

(ङ) मुहावरे प्रयुक्त होने पर वाक्य के अभिन्न अग बन जाते है, लोकोक्ति की तरह वे अलग नही रहते।

(च) मुहावरों का ठीक अनुवाद प्राय एक भाषा से दूसरी भाषा मे करना कठिन होता है। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी to pay back in the same coin को हिन्दी में उतारना कठिन है तो 'ईट का जवाब पत्थर से देना' को अंग्रेज़ी मे।

निष्कर्षतः सक्षेप मे **मुहावरा भाषा-विशेष में प्रचलित उस आभिव्यक्तिक इकाई को कहते है, जिसका प्रयोग प्रत्यक्षार्थ से अलग रूढ़ि लक्ष्यार्थ के लिए किया जाता है।**

मुहावरो का वर्गीकरण

मुहावरो का वर्गीकरण कई आधारो पर किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, मुहावरा बनने के आधार के आधार पर (जैसे ऐतिहासिक घटना, कोई कथा, पौराणिक आख्यान आदि), प्रयोक्ता के आधार पर (स्त्रियो द्वारा प्रयुक्त मुहावरे —इस प्रकार का उर्दू मे एक स्वतत्र संग्रह ('मुहावराते निस्वाँ') प्रकाशित हो चुका है खिलाडियो द्वारा प्रयुक्त मुहावरे, सेना मे प्रयुक्त मुहावरे, दलालो द्वारा प्रयुक्त मुहावरे आदि), स्रोत के आधार पर (जैसे सस्कृत से आये मुहावरे, फ़ारसी से आये मुहावरे, अंग्रेजी से आये मुहावरे आदि) तथा विषय के आधार पर (सामाजिक, स्वास्थ्य-विषयक, युद्ध-विषयक आदि) इत्यादि।

हिन्दी मुहावरों की परम्परा

जैसा कि स्वाभाविक है, हिन्दी मुहावरा की परम्परा सस्कृत तक जाती है। हमारे बहुत से मुहावरे संस्कृत से आये है तथा मध्य काल मे कुछ मुहावरे पश्तो, तुर्की और फ़ारसी से आये है। आधुनिक काल मे अंग्रेज़ी ने भी प्रभावस्वरूप हमे काफ़ी मुहावरे दिये है। इनके अतिरिक्त हिन्दी ने काफी-कुछ अपने मुहावरे भी विकसित किये है। इस प्रकार हिन्दी मुहावरो के ये पाँच-छ. प्रमुख स्रोत हैं।

कुछ लोगो (डॉ० हरदेव बाहरी, पर्शियन इन्फ्लुएस ऑन हिन्दी, १९६०, इलाहाबाद, पृ० ५९) का विचार है कि सस्कृत में मुहावरे बहुत कम थे, किन्तु वस्तुतः बात ऐसी नही है। हर भाषा में मुहावरों का प्रयोग होता है और सस्कृत भी अपवाद नही है। उदाहरणार्थ, मधुजिह्व (मधुरभाषी), तृणम्मन्ये (नाचीज समझना), हिरण्यवर्ण (निष्कपट), लोम्नि-लोम्नि (रोम-रोम में), अन्नभिवमन्यंत (सामान्य समझना), न इव (नहीं के बराबर), कुंभीम् पर्यादधाति (दूसरे की हँड़िया पर आशा लगाना), द्यून्भूषति (दिनों की शोभा बढाना), पृष्णी अपि श्रृण (कमर तोड़ना), मृत्यु-मुखात्प्रमुच्यते (मौत के मुँह से छूटना), चक्षुर्गच्छति (दृष्टि जाना), खं मुष्टिनाभि जिघृक्षन्ति (मुट्ठी में आसमान बन्द करना), प्राणस्य प्राण (प्राणों के प्राण), गाढ़ प्रसुप्तः (गाढी नींद में), पुष्पिताम् वाचम् (दिखाऊ बात) आदि। पालि, प्राकृत, अपभ्रंश भाषाएँ भी मुहावरों से भरी-पूरी हैं: भणम्मुद्दिआये जीहाये (खुली जीभ से कहना), मुहेसुमुद्दा (मुँह पर मुहर), भक्कड़-घुग्घिऊ (बन्दर-घुड़की), आदि। जैसा कि स्वाभाविक है, मुहावरों के प्रयोग की यह परम्परा संस्कृत से पालि-प्राकृत-अपभ्रंश होती हिन्दी में आई है।

हिन्दी में आदिकाल से ही मुहावरों का प्रयोग मिलने लगता है। गोरख, चंदबरदाई, विद्यापति, मुल्ला दाऊद आदि हिन्दी के प्राचीनतम कवियों के कुछ उदाहरण हैं--

मन काहू कै न आवै हाथि--गोरख
अहंकार तूटिबा निराकार फूटिबा--गोरख
तब सौवौ पांव पसारी--गोरख
थरहर धर ढिल्लीपुर कपिउ--चंद
के हनि अभागील बैरिनि रे, भागलि मोर निन्द--विद्यापति
बिन पानी सातू कस सानसि--मुल्ला दाउद
गउव सिंह एक पंथ रेंगावइ--मुल्ला दाउद
साध मरत हौ बीरन लोर दिखावहु मोहि--मुल्ला दाऊद

इनमे विशेषत गोरखनाथ तथा मुल्ला दाऊद मे तो मुहावरे काफ़ी है, क्योंकि इन दोनों कवियों की भाषा जनभाषा है। चदबरदाई मे अपेक्षाकृत कम मुहावरे प्रयुक्त हुए है, जिसका कारण उनकी भाषा का जनभाषा मे दूर होना है। नरपति नाल्ह की भाषा भी इसी श्रेणी की है, किन्तु उनमे भी मुहावरों का एकान्त अभाव नही है--

स्वामी घी विणाजियउ नइ जोमियउ तेल।
दुहुँ रे काया मिलउ एक पराण।

कबीर जनकवि है। उन्होंने स्वय कहा है--

मोहि आग्यौ दई दयाल दया करि काहू कू समझाई।
कहि कबीर मै कहि-कहि हांरयों अब मोहि दोस न लाई।।

इसी कारण उनकी भाषा जनभाषा के बहुत निकट है, जिसके परिणामस्वरूप उनमे मुहावरे भी पर्याप्त है। कबीर मे अंग-सम्बन्धी मुहावरे (अंग लगना, अग मोड़ना, कलेजे मे छेद करना, दिल बाँधना, दिल खोजना, कठ गहना, लम्बा पैर पसारना, सिर सौपना, गला काटना, शीश उतारना, हाथ मलना, हृदय मे बसना आँखे प्यासी होना, कुछ हाथ न आना, आदि) बहुत अधिक है। परम्परा की दृष्टि से कबीर ने क्लैसिकल मुहावरों का प्रयोग किया तो है, किन्तु कम। जैसे--

(क) कहै कबीर राजा राम राम भजन सौं नवनिधि होइगी चेरी।
(ख) कहै कबीर सोई जन तेरा, खीर नीर का करैनिबेरा।
(ग) पांच कुटुम्बी महा हरामी अम्रित मै बिख घोलैं।

इस प्रकार के मुहावरे ही अधिक है। उदाहरण के लिए, 'नीर-क्षीर (की तरह) मिलना' क्लैसिकल मुहावरा है, जिसके स्थान पर 'आटे-नमक (की तरह) मिलना' सामान्य मुहावरा है। कबीर कहते हैं--

कबीर गुर गरवा मिला मिलि गया आटैं लौन।

कबीर मे निश्चित सख्या के, अनिश्चित सख्या के लिए प्रयोग वाले मुहावरे भी हैं--

(क) कबीर नौबति आपनी दिन दस लेहु बजाइ।
(ख) दिवस चारि का पेखनां अंति खेह की खेह।

कबीर द्वारा प्रयुक्त कुछ बहुत व्यजक मुहावरे इस प्रकार है--

(क) कोई काहू को नहीं, सब देखी ठोंकि बजाइ।
(ख) हरिजन हरि सौं ऐसें मिलिया जस सोनें संग सुहागा।
(ग) लिखावंत जो होइगा पीवैगा झख मारि।

(घ) सील धरम जप भगति न कीन्हीं हौं अभिमान टेढ़ पगरी।
(ङ) काम क्रोध तिसनां के मारे बूड़ि मुएहु बिनु पांनी।
(च) साधु संगति हरि भगति बिनु कछू न आवै हाथ।
(छ) बातन ही असमानु गिरावहिं।

जायसी मे भी सर्वाधिक मुहावरे अग-सम्बंधी ही है। उदाहरण के लिए, शरीर मिट्टी करना, काया पीली होना, बाल बांका होना, रोवाँ पसीजना, सिर नवाना, सिर धुनना, सिर देकर पैर धरना, सिर देना, सीस फिरना, मुंह मे कालिख लगना, पलक बिछाना, दृष्टि बिछाना, जीभ उघलना, जीभ खोलना, हाथ मरोरना, हाथ मे जी लेना, पीठ देना, मन मारना, हृदय फटना आदि। कुछ मुहावरे सोना (बारह बानी होना, सोने मे सुहागा होना, कसौटी पर कसना), रंग (रग न होना, सफ़ेद-पीला होना), सख्या (दस-पाँच, चार दिन), जानवर (शेर के मुंह मे हाथ डालना, गाय-सिह का एक घाट पानी पीना) आदि से सम्बद्ध भी हैं।

जायसी के कुछ प्रयोग देखिये---

(क) दूध पानि सो करइ निरारा।
(ख) पदुमावति हँसि दीन्ह झरोखा।
(ग) कनक सुगंध दुआवसबानी।
(घ) उलटि बहा गंगा कर पानी।
(ङ) को अस हाथ सिंह मुख घाला।
(च) लंका छाड़ि पलंका परा।
(छ) तपि कै पाव उभरि कर फूला।
(ज) परै पहार न बांके बारू।
(झ) लाग दुहूँ जस लोन।
(ञ) तस ये दुवौ जीव पर खेलहिं।

सूरदास उन हिन्दी कवियो मे आते है, जिन्होने मुहावरो का सर्वाधिक प्रयोग िया है। इनके द्वारा प्रयुक्त मुहावरे डेढ़ हजार के लगभग होगे, जिनमे अंग-विषयक कुछ प्रमुख मुहावरे ये है--नख-शिख रोना, फूले न समाना, सिर धुनना, मूड उघाड़ना, मूड़ चढ़ाना, शीश पर नाचना, बाल या केस न खसना, भौं मरोड़ना, दृष्टि लगना, आँखों मे धूल देना, आँख जलना, नैन जुड़ाना, गाल बजाना, मूंछों पर ताव दिखाना, कान काटना, कान करना, मुंह न लगाना, मुंह सँभाल कर बोलना, आँसुओं से मुंह धोना, दाँत चबाना, दांत पीसना, अँगुली दाँतो मे देना, रसना तालू से न लगना, रसना हारना, कर मोड़ना, कर मीजना, हाथ फैलाना, बाँह पसार कर कहना, हाथ बिकना, हाथ आना, हिया काँपना, हृदय जलना, छाती जलना, उदर भरना, पीठ दिखाना, पीठ देना, बुद्धी का मोटा, कच्ची मति, दो नाव पर पाँव धरना, फूंक-फूंक पग धरना, प्राण पर खेलना, प्राण अधर तक आना, मन चुराना, मन मूसना, मन मारना, चित्त बिकना, चित्त में बैठना, कच्चा मन आदि। सूर के मुहावरों मे विविधता बहुत है। अंग के अतिरिक्त पशु, धातु, रंग, संख्या, वस्त्र आदि विषयक उनके मुहावरे प्रमुख हैं। कुछ प्रयोग इस प्रकार है---

(१) सूरदास के प्रभु सो करियै होइ न कान कटाई।
(२) कबहुंक फूलि सभा में बैठ्यो मूंछनि ताव दिखायो।
(३) व्याकुल होइ हरे ज्यों सरबस आँखिन धूर दई।
(४) तब नख सिख तें रोयौ।
(५) तुरत मन सुख मानि लीन्हों नारि तेहि रँग ढरी।
(६) जरे उपर लोन लावहि को है उनते बावरे।
(७) खैचि कहत हौं लीकौ।
(८) सूर काढ़ि डार्यो ब्रज तें ज्यों दूध माँझ ते माखी।
(९) दाई आगे पेट दुरावति वाकी बुद्धि आज मैं जानी।

(१०) जरो पर चूनो।
(११) कौन पै होत पीरी-कारी।
(१२) पाँच की सात लगायो।
(१३) सुरपति निज बैर सँभार्यौ।
(१४) हम तौ रीझि लटू भई लालन।
(१५) अपनौ पट देखि पसारहि लात।

मीरा के कुल लगभग दो सौ ही छन्द ऐसे हैं, जिन्हें उनका निश्चित रूप से कहा जा सकता है, किन्तु इतने कम छन्दों में भी काफी मुहावरे मिलते हैं। ये मुहावरे अंग, रंग, सख्या, बाजा, दीपक आदि विषयक हैं। अंग-विषयक प्रमुख मुहावरे, फूले अंग न समाना, सीस चढ़ाना, बदन जोहना, मुख खोलना, नयनों में समाना, पलक न लगना, आँख लगाना, हाथ गहना, हाथ मींजना, छाती भरना, कलेजा टुकड़े टुकड़े होना, चित्त लगना, हृदय फटना, हृदय में बसना तथा पाँव उड़ना आदि हैं। कुछ प्रयोग देखिए--

(१) देखाँ माई हरि मण काठ किया।
(२) णेणा चचल अटकणा माण्या परहथ गयाँ बिकाय।
(३) नेण बिछास्यं हिवड़ो डास्यूँ।
(४) अजू मुनी मुख खोल।
(५) हम बालू की भीत।
(६) दाध्या ऊपर लूण लगायाँ।
(७) हो गए स्याम दूइज के चन्दा।

हिन्दी में मुहावरों के प्रयोग की दृष्टि से तुलसी का विशेष स्थान है। उनके द्वारा प्रयुक्त मुहावरों की सख्या तो काफ़ी है ही--विशेषत मानस तथा कवितावली में--साथ ही उनके मुहावरों में बहुत विविधता है तथा वे बहुत ही सुन्दर ढग से प्रयुक्त हुए हैं। अन्य हिन्दी कवियों की तरह तुलसी में भी अंग-विषयक मुहावरे सर्वाधिक हैं--तन वारना, सिर नवाना, मूड में बार न होना, माथा धुनना, भृकुटि चढ़ना, लोचन निहाल करना, आँख दिखाना, आँख में रखने योग्य होना, कान करना, दूसरी जीभ करके कहना, गिरा से न गहा जाना, दाँत टेना, गाल करना, बड़े गाल होना, गाल बजाना, हाथ बिकना, बिना हाथ के होना, हाथ मलना, हाथ लगना, चना चबाकर हाथ चाटना, बाँहों में बसना, मुट्ठी भार देना, उँगली लगाना, उर में धरना, हृदय हारना, हृदय तपना, हिय हेरना, हिय में बसना, पेट-खलाना, कोख जुड़ाना, पीठ मीजना, पाँव पड़ना, गोड़ पसार कर सोना, मन से उठना, मन रखना, मन देना हाड गडना तथा प्राण न्यौछावर करना आदि। तुलसी में क्लैसिकल मुहावरे भी हैं--

(१) चार पदारथ करतल ताके। प्रिय पितु मातु प्राण सम जाके।
(२) बानि जानि सुधा तजि पियनि जहर की।

तुलसी में ऐसे भी मुहावरे काफी हैं, जो प्राय: अन्य कवियों में नही मिलते। उदाहरणार्थ--

(१) तुलसी की बाजी राखी राम ही के नाम न तु
भेंट पितरन कों न मूड़हू में बात है।
(२) आपने चना चबाइ हाथ चाटियतु है।
(३) मीजो गुरू पीठ अपनाइ गहि बाँह बोलि,
(४) देखे नर नारि कहै साग खाइ जाए माइ,
(५) मसक की पाँसुरी पयोधि पाटियतु हैं।

कुछ अन्य सुन्दर प्रयोग देखिए—

(१) चतुरग चमू पल में दलिकै रन राढ़ के हाड़ गढ़े।
(२) गालु करब केहि कर बलु पाई।
(३) फूटि-फूटि निकसत लोन रामराय को।
(४) चोट बिनु मोट पाई भयो न निहाल को?
(५) बापुरो विभीषण घरोंधा हुतो बालु को।
(६) नृपगति, अगह गिरा न जाति गही है।
(७) अब कछु कहब जीभ कर दूजी।

रहीम, गग, नन्ददास तथा रसखान आदि मे अपेक्षाकृत मुहावरे कम है, यद्यपि प्रयोग प्राय. पर्याप्त सुन्दर हैं--

ऊजर होन लगे अँग नीके। कंचन भूषन ह्वै चले फीके--नन्ददास
किधौं नदनंदन मंद मुसकि तुम्हरे मन मूसे--नन्ददास
डाँड़ो मारत बिरह को चित चिंता घटि जात--रहीम
ताहि अहीर की छोकरियाँ छछिया भरि छाछ पर नाच नचावें--रसखान
एते इलाज बिकाज करौ रसखानि को काहे को जारे पै जारौ--रसखान
देखत मोल भयो अँखियान को--रसखान
कोयल की कुहक करेजा जारियत--गग
मोह को चातुरता बहरावति मौसिन सौं ननसार की बातैं--गग

कठिन काव्य के प्रेत केशव मे मुहावरो का बहुत अधिक न मिलना सहज ही है। छन्दो के प्रयोग तथा भाषा की असहज सस्कृतनिष्ठता की ओर ध्यानस्थ कवि सहज अभिव्यजक मुहावरों की खोज मे भला कहाँ जाता ? फिर भी कुछ प्रयोग तो मिल ही जाते है--

(१) काहे को काहू को कीजै परेखो अब जीजे री जीव की नाक दै चूनो।
(२) ता लगि मेद महीपन को घृत घोरि दियो न सिरानो हियोरे।
(३) जानत हौं बीस बिसै राम भेस काम है।

रीतिकालीन कवियो मे सेनापति, बिहारी, भूषण, पद्माकर, देव तथा घनानद के नाम मुहावरो की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं। सेनापति के कुछ मुहावरे देखिए--

(१) कहाँ एती चतुराई पढ़ी आप जदुराई,
आँगुरी पकरि पहुँचा कौं पकरत हौ।
(२) लोचन जुगल मेरे ता दिन सफल ह्वै है।
(३) रही बाँह-छाँह राजा राम की, जनम भारि।

बिहारी मे मुहावरों के बड़े सुन्दर प्रयोग मिलते है—

दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीत।
परति गाँठ दुरजन हिये, दई नई यह रीत।

यद्यपि उनकी सख्या अधिक नही है। इस कमी का बहुत कुछ कारण है, कदाचित् उनके द्वारा प्रयुक्त दोहे जैसा लघु छन्द एव मुक्तक काव्य-विधा, सवैया, कवित्त, पद जैसे बड़े छन्द एवं प्रबधकाव्य निश्चय ही मुहावरो के प्रयोग के लिए अधिक उपयुक्त है। यों बिहारी ने कम लिखा भी है। बिहारी के कुछ अन्य मुहावरे इस प्रकार है--

(१) आँखिन आँखि लगी रहै,
(२) आँग न आँग समात।

(३) भरे भौन मै करत है नैननु हीं सों बात।
(४) हियौ पसीजि-पसीजि।

भूषण मे अपेक्षाकृत अधिक मुहावरे है। विदेशी शब्द हिन्दी मे आदिकाल से ही आने लगे थे और मुहावरों मे भी उनका प्रयोग होने लगा था, किन्तु भूषण मे ही प्रथम बार इस प्रकार के मुहावरे अधिक मिलते है, जिनमे अरबी-फ़ारसी शब्द हैं। उदाहरणार्थ, बे-आब होना, दिल-दरियाव, गुमान झाड़ना, खाक करना, गर्द मे मिलाना, छाती बीच दाग देना, कसाई होना, रोशनी चढ़ना, खता खाना, इज्ज़त बचाना आदि। जैसा कि स्वाभाविक ही है कि बिहारी मे यदि शृंगारोचित मुहावरे अधिक है तो भूषण मे ऐसे मुहावरे काफी है, जिन्हे युद्ध या वीर रस से विशेषण रूप से सम्बद्ध माना जा सकता है। कुछ इस प्रकार के हैं और कुछ अन्य है--

(१) कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल को।
(२) महलन मे मचाय महाभारत के भार को।
(३) अरि मुख घाव दै दै कूदि परे कोट पै।

भूषण के दो अन्य प्रयोग है--

(१) खाए मलिच्छन के छोकरा, पै तऊ डोकरा को डकार न आई।
(२) मति नाह दिवाल की राहन धाओ।

पद्माकर मे भी मुहावरे काफी है, यद्यपि प्रयोग की दृष्टि से उनमे कोई बहुत उल्लेख्य विशेषता नही है। कुछ उदाहरण है--

(१) कैसी भई तुम्हें गग को गैल मे गीत मँदारन के लगे गावन।
(२) एक दिना नहिं एक दिना कबहूँ फिरि वे दिन फेर फिरैगे।
(३) कीन्हे गरद गुनाह सब।

रीतिकालीन कवियो मे सर्वाधिक मुहावरे देव मे है। देव के मुहावरो की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे भाषा के प्रवाह मे घुलमिल गये है। रीतिकालीन पच्चीकार कवि बिहारी इस क्षेत्र मे देव से बहुत पीछे है। उनमे जहाँ मुहावरो का प्रयोग प्रायः चमत्कार के लिए है, वहाँ देव में वह मात्र-अभिव्यक्ति को सहज रूप से सशक्त बनाने के लिए है, कुछ उदाहरण हैं—

(१) बेगि ही बूड़ि गईं पँखियाँ अँखियाँ मधु की मखियाँ भई मेरी।
(२) खेलिबोऊ हँसिबोऊ कहा सुख सों बसिबो बिसे बीस बिसारो।
(३) कोमल कंकि कै कँवलिया कूर करेजनि की किरचैं करती क्यों।
(४) लाज ज्यों बाज चिरी झपटी, कपटी कुल के उर अंतर कैंची।

यो कुछ प्रयोग चमत्कार के उद्देश्य से भी किये ज्ञात होते है—

पन्नग की मनि कीन्हें तुम्हे, तुम पन्नग की किचुली कियो चाहत।

मुहावरो के क्षेत्र में घनानंद भी देव के समकक्ष हैं। एक प्रमुख अंतर यह है कि घनानंद में वे मुहावरे ही अधिक है जो बहुत प्रचलित है, जब कि देव मे नष्ट या अल्प प्रचलित प्रयोग भी काफ़ी है। रीतिकालीन कवियो मे ये दोनो कवि मुहावरो की दृष्टि से सर्वोपरि हैं। घनानंद के कुछ प्रयोग हैं--

(१) बकरा बरसैं रितु मैं घिरिकै नितही अँखियाँ उघरी बरसै।
(२) निरधार अधार दै धार-मझार दई गहि बाँह न बोरियै जू।
(३) वहै लड़कीली बानि आनि उर मै अरति है।
(४) अब जिय जारत कहौ धौं कौन न्याय है।

इन कवियों के अतिरिक्त अनेक अन्य रीतिकालीन कवियों ने भी न्यूनाधिक रूप मे मुहावरों का सुन्दर प्रयोग किया है। उदाहरण के लिए, अवधी-भोजपुरी का एक मुहावरा है, 'सातू बान्ह के पीछे पड़ब'। रीतिकालीन कवि बरकतुल्ला प्रेमी विरहिणी की भावनाओं को स्वर देते हुए कहते हैं—

देखो, जेठ निलज्ज को परो है सतुवं बांध।

पिछली सदी के आधुनिककालीन साहित्यकारों में प्रायः सभी ने अपने गद्य एवं पद्य को काफ़ी मुहावरेदार रखा है। कवियो में सर्वाधिक मुहावरे भारतेन्दु मे हैं। संख्या पर आधारित कुछ मुहावरे हैं—

(१) **'हरीचंद' वे तो बावन रहे तुम छप्पन निकसे गिरधारी।**
(२) **तीन बुलाए तेरह आवैं, निज-निज बिपदा रोइ सुनावैं।**
(३) **कबहू याके निकट न आवत लाख कहो न बनाई।**
(४) **यह दिन चार बसेरा है।**

कुछ अन्य सुन्दर प्रयोग देखिए—

(१) **सिथिल भई हाथ यह काया है, जीवन ओठ पर आया।**
(२) **जानत भए अजान कहो क्यों रहे तेल दे कान।**
(३) **सब गुरु जन को बुरा बतावै, अपनो खिचड़ी अलग पकावै।**

इस सदी के साहित्यकारो मे मुहावरो का सर्वाधिक प्रयोग हरिऔध तथा प्रेमचन्द मे मिलता है। इस दृष्टि से हरिऔध जी का 'बोलचाल' नामक ग्रंथ उल्लेखनीय है। इसमे कोई सन्देह नही कि इस ग्रंथ में मुहावरो की संख्या बहुत अधिक है, किन्तु इसकी सबसे बडी कमजोरी यह है कि मुहावरो की गिनती भर है, उनका प्रयोग प्रायः बहुत थोडा है। इसी कारण बोलचाल मे मुहावरो के शरीर ही है, उनकी आत्मा नही। उदाहरण के लिए—

आँख ने धूल आँख में झोंकी, कर गई आँख-आँख साथ ठगी।
क्यों नहीं आँख खुल सकी खोले, क्यों लगे आँख जबकि आँख लगी।

अथवा

नाक जब है सिकोड़ने हित सुन, किस तरह नाक को बचावेंगे।
नाक पर बैठने न दे मक्खी नक-कटे नाक ही कटावेंगे।

अथवा

आँख थी ही बन्द मुँह भी बन्द है, मुँह उठाकर कौन मुँह ताका नहीं।
सिल गया मुँह आज दिन भी है सिला, टूट मुंह का तो सका टाँका नहीं।

प्रेमचंद न केवल आधुनिक हिन्दी साहित्य में, अपितु पूरे हिन्दी (और हिन्दी ही क्यो, उर्दू भी) साहित्य में मुहावरों के सम्राट कहलाने के अधिकारी है। उन्होंने मुहावरों का सर्वाधिक प्रयोग तो किया ही है, साथ ही इतना सफल प्रयोग किया है कि कम साहित्यकार उनके सामने टिक सकते हैं। प्रेमचन्द मे प्रयुक्त मुहावरों की संख्या लगभग तीन हजार है। प्रेमचन्द के मुहावरो की सूची देने की यहाँ आवश्यकता नही। इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि आधुनिक हिन्दी के बहुप्रचलित एवं बहुव्यंजक प्राय. सभी मुहावरे उनमे किसी न किसी रूप मे मिल जाते है।

मुहावरों के काफ़ी प्रयोग श्री मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं मे भी हैं, देखिए—

(१) **लिखो कबूलन हुई निशानी कटला बैठे हाथ।**
(२) **त्रैलोक्य को अँगुलियों पर हूँ नचाती।**

(३) कै बार कहूँ सिर हाथ न मेरा खा तू।
(४) अब भी बजे चैन की बंशी उस माई के लाल की।

किन्तु बहुत अच्छे प्रयोग कम ही है। वस्तुतः यह एक अजीब बात है कि उर्दू भाषा के जानकार हिन्दी साहित्यिकों मे ही मुहावरो का सफल एवं सुन्दर प्रयोग विशेष रूप से मिलता है। इसका कारण यह कि मुहावरो का जितना ध्यान प्राचीन उर्दू कवियो ने रक्खा है, हिन्दी कवियों ने नहीं। इसके पीछे दरबारी वातावरण, फ़ारसी से प्रत्यक्ष सम्पर्क (फ़ारसी मुहाव रों से भरी-पूरी भाषा है, यद्यपि सस्कृत भी मुहावरो मे पीछे नही है, किन्तु हमारे प्राचीन कवियों मे कम का ही उससे सर्वदा सीधा सम्पर्क रहा, जब कि फारसी के राजाश्रय के कारण प्राय. शायरो को उससे सीधा सम्पर्क रखना पडा), काव्य-गुरु की अनिवार्यता और इसके कारण भाषा मे परिमार्जन, मुशायरे का प्रचलन (श्रोता को प्रभावित करने के उद्देश्य से मुहावरों का चमत्कार लाने या अधिक मार्मिक अभिव्यक्ति के प्रयास के कारण) आदि अनेक बाते है।

आधुनिक कालीन छायावादी काव्य में मुहावरो का प्रयोग बहुत कम हुआ है। प्रगतिवादी काव्य इस दिशा मे कुछ आगे है। मुक्तक की तुलना मे प्रबध मे मुहावरे अधिक आये है। गद्य में उपन्यास-कहानी एवं रेखाचित्र मे मुहावरो का प्रयोग सर्वाधिक हुआ है, तथा आलोचना (सैद्धान्तिक विशेष रूप से, यो कुछ अपवादो को छोडकर व्यावहारिक भी) एव गद्य-काव्य मे सबसे कम। नाटक बीच मे आता है।

मुहावरो के सम्बन्ध मे आधुनिक हिन्दी कवियों मे एक बहुत गडबडी यह मिलती है कि वे शब्दो का पर्याय रख देते है। उदाहरण के लिए, 'हाथ पसारना' के स्थान पर कामायनी मे 'मत कर पसार निज पैरों चल' है। वस्तुत 'हाथ पसार' की अभिव्यजना 'कर पसार' से नही होती। मैथिलीशरण गुप्त मे भी यह प्रवृत्ति मिलती है, 'दाँत खट्टे करना' का प्रयोग है—

करते थे रिपु के अम्ल दंत।

इसी प्रकार 'उँगली पकडकर पहुँचा पकड़ना' को उन्होने लिखा है—

कहते है इसको ही अँगुली पकड़ प्रकोष्ठ पकड़ लेना।

हिन्दी मे बहुत से मुहावरे तो सस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से परम्परागत रूप से आये है, किन्तु कुछ पश्तो, तुर्की फ़ारसी तथा अंग्रेज़ी से भी आये है। इस प्रकार के कुछ आगत मुहावरे नीचे दिये जा रहे है—

पश्तो—टस-से मस न होना, पानी पर लाठी मारना, तहस-नहस करना, दम-दिलासा देना, हाड़े खाना (प्रार्थना करना)।

तुर्की—पाँचों उँगली घी में होना, डंडे खाना, आँख लड़ना, बाल खिचड़ी होना।

फ़ारसी—दाँतों-तले उंगली दबाना (अंगुश्त ब दन्दाँ), उँगली उठाना (अंगुश्त निहादन), अक्ल गुम होना (अक्ल गुम शुदन), कटिबद्ध होना, कमर कसना, कमर बाँधना (कमर बस्तन), रास्ते पर आँखें बिछाना (चश्म ब राह दाश्तन), खून करना (खून कर्दन) सिर आँखों पर (चश्म बर सर), पानी-पानी होना (आब शुदन), मुंह मे पानी आना (आब दर दहान आमदन), कमर सीधी करना (कमर सीख कर्दन), बाज़ आना (बाज़ आमदन), आँखें चार या दो-चार होना (चश्म चहार या दो-चहार शुदन), आँख दिखाना (चश्म नमूदन), तारे गिनना (अख्तर शुमुर्दन), हाथ से जाना (अज़ दस्त रफ्तन), जान हथेली पर रखना (जान बर कफ़ निहादन), आँख मारना (चश्म ज़दन), जान की बाज़ी लगाना (बाज़ि-ए-जान करदन), दाँत दिखाना (दन्दान नमूदन), ज़बान-दराज़ी करना (ज़बान दराज़ करदन), हाथ झाड़ना (दस्त अफ़शान्दन), आग बरसना (आतिश बारीदन), हाथ आना (दस्त आवुर्दन), ज़बान पर लाना (बर ज़बान आवुर्दन), पानी जाना (आब रफ्तन), जान से हाथ धोना (दस्त अज़ जान शुस्तन), ज़बान देना (ज़बान

दावन), सर करना (सर करदन), हाथ पर हाथ धरे बैठना (दस्त बर दस्त निशस्तन), तेवर बदलना (तेवर तब्दील करदन), हाथ मलना (दस्त गजीदन), आस्तीन चढ़ाना (आस्तीन बर चीदन), दांत खट्टे करना (दंदां तुर्श करदन), हाथ खींचना (दस्त कशीदन), हाथ-पैर मारना (दस्तवपा जदन), आसमान में सुराख़ करना (आसमान रा सुराख़ करदन), जबान खोलना (जबान कुशादन), दिल पर भार होना (बल दिल बार निहादन), दिल देना (दिल दादन), गला फाड़ना (गरदन खारीदन), प्राण देना, जान देना (जान दादन), पीठ दिखाना (पुश्त नमूदन), सिर देना (सर दादन), सिर खुजलाना (सर खारीदन), मग़ज़ खाना (मग़ज़ खुरदन), मुंह चढ़ाना (रू कशीदन), सिर मारना (सर जदन), जामे से बाहर होना (अज़ जाम-बेरूं आमदन), हवा होना (बाद शुदन), शपथ खाना, क़सम खाना (क़सम खुरदन), बाग़-बाग़ होना (बाग़-बाग़ शुदन), नशा चढ़ना (नशा बलंद शुदन), आस्तीन का सांप (मारे आस्तीन), चिराग़ गुल करना (चिराग गुल करदन), धोखा देना (फ़रेब दादन), राह देना (राह दादन), सब्जबाग़ देखना (सब्ज बाग़ दीदन), रंग लाना (रंग आवुर्दन), तंग आना (तंग आमदन), गर्म होना (गर्म शुदन), धोखा खाना (फरेब खुर्दन), आपे बाहर होना (अज खुद दर रफ़्तन), बिना सिर-पैर की (बे सर-ओ-पा), ज़मीन आसमान एक करना (ज़मीन ओ आसमान यक करदन), टट्टी की ओट शिकार करना (दर पर्दा शिकार करदन), दिल का बुखार निकालना (बुखार-ए-दिल आवुर्दन), कान में रुई डालना (पुम्बा दर गोश निहादन), अंगूर खट्टे होना (अंगूर तुर्श शुदन), नक्कारखाने में तूती की आवाज़ होना (आवाजे तूती नक्कारखानेह)।

अंग्रेजी—प्रकाश डालना (Throw light), कलेजा मुंह को आना (Have one's heart in one's mouth), आंखों में धूल झोंकना (Throw dust into one's eyes), दो रायें न होना (निश्चित होना) जैसे—(There can't be two opinions—इस सम्बन्ध में दो रायें नहीं हो सकतीं)। रंगे हाथों (Red handed), रिकार्ड तोड़ना (Break the record), खून का प्यासा होना (To get blood thirsty), लाल फीता (Red tape), पीली पत्रकारिता (Yellow journalism), चोर बाज़ार (Black market), कीचड़ उछालना (To throw mud), सफ़ेद झूठ (White lie), सफेद हाथी (White elephant), दायां हाथ (Right hand), कठिन ज़िंदगी (hard life), विहगम दृष्टि (Birds eye view), बड़े पैमाने पर (On a large scale), कखग जानना (Know a b. c), आग में ईंधन डालना (To add fuel to flame), हवाई क़िले बनाना (Build castles in the air), स्वर्ण अवसर (Golden opportunity), गहरा सम्बन्ध (Deep relation), घड़ियाली आंसू, मगरमच्छ के आंसू (Crocodile's tears), मोटी बुद्धिवाला (Fat brained, fat headed), भावनाओं को ठेस पहुंचाना (To hurt one's feelings), पद-चिह्नों पर चलना (To follow the footprints), किस्मत आजमाना (Try one's fortune), मील का पत्थर (Milestone), बाल-बाल बचना (Hair breath's escape), हाथ बनाना (Make hands), आंख खोलना (To open one's eyes), आँख खोलने वाला (eye opener), प्रकाश में आना (Come to light), अक्षरशः अनुवाद (literal translation), संकीर्ण हृदय (Narrow hearted), खुला प्रश्न (open question), इशारे पर नाचना (Dance to one's tune), अंधेरे में होना (To be in the dark about something), शीत युद्ध (Cold war), आधे दिल से (Halfheartedly), पलक झपकते ही, पलक मारते ही (In the twinkling of an eye), प्रश्न नहीं उठता (Question does not arise), आग से खेलना (Play with fire), जीवन के उतार-चढ़ाव (Ups and downs of life), समुद्र बूंद में (A drop in the ocean)।

इस कोश में मुहावरे देखने के सम्बन्ध में

साधारणतः कोशो में जो अक्षरक्रम रखा जाता है, उसी का अनुसरण यहाँ भी किया गया है। संक्षेप केवल दो है :

उ०=उदाहरण, प्रयोग
दे०=देखिए

कुछ बाते विशेष कहनी हैं। मुहावरों का प्रयोग कभी-कभी प्रधान शब्द का पर्याय रखकर भी किया जाता है। आँख लेना, दृष्टि लेना, डीठ लेना, दीदा लेना आदि के प्रायः एक ही अर्थ है और प्राय. एक ही अर्थ मे ये प्रयुक्त होते है, यद्यपि अधिक प्रचलित मुहावरा 'आँख लेना' ही है। अब यदि आँख के इस प्रकार सारे पर्यायो के साथ 'लेना' जोडकर यहाँ रक्खा जाता और इसी प्रकार अन्य मुहावरो के पर्यायो की ओर भी ध्यान दिया जाता तो पुस्तक शायद प्रस्तुत रूप का अठगुना रूप लेकर भी पूर्ण न होती। अतः प्रायः अधिक प्रचलित शब्द के साथ ही मुहावरा दिया गया है। इसी प्रकार कुछ शब्दो की वर्तनी (Spelling) के कारण (वापस, वापिस, सर, सिर, बरबाद, बर्बाद आदि) भी प्रायः दो या अधिक रूप हो जाते हैं। इनमे भी प्राय एक ही के साथ मुहावरा मिलेगा। देखने वाले को यदि मुहावरा अपने उचित स्थान पर न मिले तो इस प्रकार के सम्भव अन्य स्थलो पर भी देख लेना चाहिए। मुहावरो मे 'ना', 'जाना' आदि लगाकर कई रूप बनते है। जैसे, कूच करना, कूच कर जाना आदि। अधिक मुहावरो के साथ दोनो रूप दे दिये गये हैं। जहाँ केवल 'ना' या केवल 'जाना' हो, आवश्यकतानुसार दूसरे को भी वहाँ माना जा सकता है। कहीं-कहीं 'ना' और 'जाना' मे अर्थ मे फर्क भी हो जाता है; ऐसे मुहावरे प्राय. अलग-अलग दे दिये गये है।

अ

अंक करना—स्वीकार करना। उ० भगवान सुख-दुख जो भी दे उसे अंक करो।

अंक देना—१. गले लगाना। उ० होली के दिन लोग दुश्मन को भी अंक देते है। २. नम्बर देना। उ० राम को परीक्षा में अच्छे अंक दिये गए है।

अंक भरना—लिपटा लेना, गोद में भर लेना। उ० कौशल्या ने अंक भरकर सीता को विदा दी।

अंकमाल देना—दे० 'अंक लगाना' १.।

अंक लगना—गले लगना। उ० आज वे दोनो अंक लगे।

अंक लगाना—१ आलिंगन करना, गले लगाना। उ० परीक्षा मे पास होने की खुशी मे उसने अपने जानी दुश्मन को भी अंक लगाया। २. नम्बर डालना। उ० आजकल पृष्ठो पर अंक लगाने के लिए एक मशीन का आविष्कार हो गया है। ३. नबर देना।

अंक लेना—१ आलिंगन करना। २ गोद मे लेना।

अँकवार देना—दे० 'अंक देना' १.।

अँकवार भरना—१. लिपटा लेना, गले लगाना। उ० विदाई के समय औरते अपने प्रियजनो को अँकवार भरती है। २. गोद भरना, बाँझ न रहना। उ० भगवान न करे कि दुराचारिणी स्त्रियो की कभी अँकवार भरे।

अंकित करना—१. अच्छी तरह जमा देना, छाप लगा देना। उ० मै ही जानता हूँ कि गरीबी ने धनिको के प्रति कितनी घृणा मेरे हृदय पर अकित कर दी है। २. बनाना, चित्रित करना। उ० उसने कपडे पर गाधी जी का एक बडा सुन्दर चित्र अकित किया है।

अंकित होना—बैठ जाना, जम जाना। उ० उसकी करुण मृत्यु का दृश्य मेरे हृदय-पटल पर सर्वदा के लिये अंकित हो गया है।

अंकुरित होना—प्रारम्भ होना, उगना। उ० तुम्हारे भी मन में विद्रोह अंकुरित होने लगा है।

अंकुश देना—१. दबाव डालना। उ० अंकुश देकर काम कराना मुझे बिल्कुल पसंद नही। २. वश में करना, वश में रखना, नियंत्रण रखना। उ० लड़कों पर अंकुश देना बहुत ही आवश्यक है। ३. दुख देना। उ० यदि आप अंकुश देंगे, तो मुझसे फूल की आशा कैसे कर सकते हैं।

अंकुश मानना—दबाव मानना। उ० बड़ों का अंकुश कौन नहीं मानता?

अंकुश रखना—दबाव में रखना, स्वतंत्रता न देना। उ० अकुश न रखने से लड़के बिगड जाते हैं।

अंकुश रहना, अंकुश होना—नियंत्रण रहना, नियंत्रण होना।

अँखिगर बनना—१. देखने वाला बनना, आँखवाला बनना। २. होशियार बनना। उ० मुझसे अँखिगर न बनिए, मैं आपकी रग-रग से वाकिफ़ हूँ।

अँखिफोर होना—बुद्धिमान होना। उ० आप अँखिफोर है, तो अपने घर के। मुझे शिक्षा न दें।

अंग-अंग—प्रत्येक अंग, पूरा शरीर। उ० मारकर अग-अंग तोड़ दूँगा।

अंग-अंग खिल जाना—१. जवानी आना। २. प्रसन्नता अंग-अग से टपकना।

अंग-अग टूटना—बदन में दर्द होना। उ० अंग-अग टूट रहे है। लगता है कि ज्वर आयेगा।

अंग-अंग ढीला होना—दे० 'अंग ढीला होना।'

अंग-अंग फूले न समाना—दे० 'अंग फूले न समाना।'

अंग उभरना—जवानी के लक्षण दिखाई पडना। उ० शादी की चिंता करो, सीता के अग उभरने लगे हैं।

अंग करना—अपनाना, स्वीकार करना। उ० भगवान ने जो दिया उसे अग करो। अब पछताने से क्या होगा?

अंग छूना—अंग या सर छूकर शपथ खाना। उ० यह बात तुम्हारे अंग छूकर भी मैं कहने को तैयार हूँ।

अंग टूटना या टूट जाना—१. दर्द होना। उ० आज मेरे अंग टूट रहे हैं। २. थक जाना, शिथिल हो जाना। ३. काम करते-करते आज अंग टूट गए।

अंग ढीला पड़ जाना–दे० 'अंग ढीला होना।'

अंग ढीला होना–१ थक जाना। उ० काम करते-करते मेरे अंग ढीले हो गये है। २. शिथिल हो जाना। उ० बुढापे मे अंग ढीले हो जाते है।

अंगड़ाई तोड़ना–आलस्य में बैठे रहना। आलस्य के कारण अंगड़ाई लेते रहना। उ० आजकल उसके पास कुछ काम नही है, दिन भर अँगड़ाई तोड़ना है।

अंगड़ाई लेना–१ चेतना जगना २. अपनी यथार्थ स्थिति पहचानना। ३ क्रांति करना।

अंग तोड़ना–अँगडाई लेना। उ० क्यों अंग तोड रहे हो, नींद आ रही है क्या?

अंग देना–थोड़ा लेट रहना, आराम करना। उ० आजकल अंग देने की भी फुरसत नही मिलती।

अंग धरना–पहनना। उ० कम से कम एक बनियाइन तो अंग धर लो। नंगे देख कर लोग क्या कहेंगे?

अंग पड़ना–हिस्से पडना।

अंग फड़कना–१. शुभ-अशुभ द्योतक (किसी अंग मे) स्पन्दन होना। २. लड़ने आदि के लिए जोश आदि से अंग फडकना।

अंग फूले न समाना–बहुत प्रसन्न होना। उ० विवाह के अवसर पर उसके अंग फूले नही समा रहे थे।

अंग भरना–युवावस्था के लक्षण दिखलाई देना। उ० प्राचीनो के अनुसार अंग भरने के पहले कुमारियो का विवाह हो जाना चाहिये।

अंग मुसकराना–१. बहुत प्रसन्न होना। उ० जीत के कारण उसके अंग मुस्करा रहे है। २ अंगो का बहुत सुन्दर होना। उ० जवानी मे किसके अंग नही मुस्कराते?

अंग में अंग चुराना–सकुचित होना, शर्मा जाना। उ० अंग में अंग चुराना स्त्रियो का एक बहुत बड़ा सौन्दर्य है। उ० वह तो मुझे देखकर अंग मे अंग चुराती है।

अंग में अंग न समाना–बहुत प्रसन्न होना।

अंग बनना–अपना बनना, सदस्य बनना। उ० अब सीता भी परिवार का अंग है।

अंग मोड़ना–१. पीछे हटना। उ० अब अंग मोडने से क्या लाभ? इधर खाई, उधर कुआँ। २. अँगड़ाई लेना।

अंग लगना–१. हजम होकर शरीर को लाभ पहुँचाना। उ० बेमन का खाया अंग नहीं लगता। २. काम में आना, उपयोग मे आना, सध जाना। उ० किसी के अंग लगा तो, मैं तो समझता था कि फेंकना ही पड़ेगा। ३. हिल-मिल जाना।

अंग लगाना–१. लिपटा लेना, गले लगाना। उ० कौन धनिक दीनो को अंग लगाता है? २ पहनना। उ० किसी दूसरे के अंग लगाए कपड़े मैं नही पहनता। ३ सहारे कर देना। उ० बेचारा गरीब आदमी है, किसी के अंग लगा देते तो अच्छा होता। ४. विवाह कर देना। उ० शीला को बिना सोचे-समझे किसी के अंग लगा देना ठीक नही। ५. विवाह कर लेना। उ० इसे अपने अंग लगा लो। ६. स्वीकार करना। उ० उनकी दी हुई चीजों को अंग लगाना ठीक नही। ७ महत्व देना।

अंग लाना–गले से लगाना, आलिंगन करना। उ० बड़े-छोटे सभी को अंग लाना बडो का ही काम है।

अंगड़-खंगड़ समझना–व्यर्थ या रद्दी समझना। उ० पैसे लगे है, अंगड़-खंगड़ समझ कर खुले में मत छोडो।

अंगार उगलना–कठोर बातें कहना, जली-कटी सुनाना। उ० छोटी-सी बात पर इतना अंगार न उगलो।

अंगार बनना–लाल हो जाना, क्रोधित होना। उ० क्षीणकाय लोग थोडी सी बात पर भी अंगार बन जाते है।

अंगार बरसना–१ बहुत गर्मी पडना, तेज़ धूप होना। उ० गर्मियों मे दोपहर को अंगार बरसने लगता है। २ जली-कटी बातें कहना। उ० उनके मुँह से तो दिन-रात अंगार बरसते रहते हैं। ३ दैवी आपत्ति आना। उ० ईश्वर का जाने मैने क्या बिगाड़ा है? जभी देखो मुझ पर अंगार बरसने लगते हैं।

अंगार सिर पर धरना–कठिन दुःख सहना। उ० इस जीवन मे अंगार सिर पर धरने ही पड़ते हैं।

अंगार होना–दे० 'अंगार बनना'।

अंगारों पर पैर रखना–१ जान-बूझकर हानि का काम करना। उ० अंगारों पर पैर रखने की बुद्धिमानी तुम जैसे अंधे ही कर सकते है। २ खतरे का काम करना। उ० अपनी माँ के अकेले बेटे हो, इस तरह अंगारों

पर पैर रखना उचित नही ।

अंगारों पर लोटना–१. क्रोध से लाल होना। उ० एक शेर दूसरे को देख कर अगारों पर लोटने लगता है। २. दुःख सहना। उ० मै जीवन भर अंगारो पर लोटता रहा हूँ। ३ डाह करना, ईर्ष्या करना। उ० तुम्हारे अगारो पर लोटने से मेरा कुछ बनने-बिगड़ने का नही।

अंगारों पर लोटाना–बहुत कष्ट देना। उ० अंगारो पर लोटाकर मेरे ऊपर तुम विजयी नही हो सकते। वह असहाय है तो उसे अंगारो पर लोटा लो, दूसरा रहता तो बताता।

अंगिया की बखिया उधेड़ना–नुक्ता चीनी करना। उ० तुम्हारी यही आदत अच्छी नही लगती। जब देखो अगिया की बखिया उधेड़ते रहते हो।

अँगुरियाना–परीशान करना। उ० ज्यादा न अँगुरियाओ, नही तो वह भी कम शैतान नही है।

अँगुली करना–परीशान करना। उ० बहुत अँगुली करोगे तो मुझसे काम न होगा।

अँगुली काटना–पश्चाताप करना। उ० काम बिगड जाने पर अँगुली काटना बेकार है।

अँगुली चमकाना–बातचीत या लडाई करते समय अँगुलियो को हिलाना या मटकाना। उ० अँगुली चमकाना औरतों को ही शोभा देता है।

अँगूठा चटाना–तुच्छ समझना, नाचीज़ समझना।

अँगूठा चूमना–१. चापलूसी करना। उ० आजकल विद्वानो को भी रुपये के लिये धनिको के अँगूठे चूमने पड़ते है। २. वश मे होना, किसी के अधीन रहना। उ० अँगूठा चूमने वाले सुख से रहना क्या जाने ?

अँगूठा दिखाना–१. वक्त पर नाही कर देना, ऐन मौके पर जवाब दे देना। उ० दोस्त मौके पर अँगूठा नही दिखाते, और जो अँगूठा दिखा देते है, वे दुश्मन से भी बुरे है। २. चिढ़ाना। उ० कल तक जो मेरे अँगूठे चूमते थे, आज मुझे अँगूठा दिखा रहे है। वाह रे समय !

अँगूठा नचाना–चिढ़ाना। उ० समय का फेर है, कि मेरे सामने के बच्चे भी अब अँगूठे नचाने लगे हैं।

अँगूठी का नगीना–जोड़ा मिलना। उचित दपति। उ० गाँधी और कस्तूरबा वास्तव मे अँगूठी के नगीने थे।

अँगूठे पर मारना–कुछ न समझना, परवाह न करना। उ० आप जैसे दोस्त को मै अँगूठे पर मारता हूँ।

अंगूर चटकना–दे० 'अंगूर तड़कना'।

अंगूर तड़कना–भरते घाव के ऊपर के पतले चमड़े का तड़कना। उ० अंगूर तड़कने पर फिर परीशान होंगे। दो-चार दिन और बचा दो।

अंगूर फटना–दे० 'अंगूर तड़कना'।

अंगूर बँधना–घाव भरना, घाव के ऊपर नई झिल्ली चढ़ना। उ० अब तुम्हारे फोड़े का अंगूर बँध रहा है।

अंगूर भरना–दे० 'अगूर बँधना'।

अँचरा पसारना–दे० 'अंचल पसारना'।

अंचल डालकर लेना–माँ की तरह वात्सल्य-पूर्वक लेना।

अंचल पसारना–१. माँगना। उ० आजकल बेचारी रोज़ ही देवी के स्थान पर अचल पसारने जाती है। २. किसी चीज के माँगने के लिए दयनीयता और नम्रता दिखलाना। उ० अंचल पसार कर मैं अपना सुहाग माँगती हूँ। हे देवी ! दया करो।

अंचल से बँधना–विवाह होना।

अँचार करना–खूब मारना। उ० चुप रहो नही तो अँचार कर दूँगा।

अँचार डालना–अँचार बनाना। उ० नीबू का अँचार डाल दो।

अँचार बनाना–१. खूब मारना। उ० उस दिन तो तुमने राम को ऐसा अँचार बनाया कि वह आज तक बीमार है।

अछर पढ़ कर मारना–मन्त्र फूँकना। उ० पंडित जी कुछ अछर पढकर मार दीजिये, ताकि मेरा बुखार छूट जाय।

अंछर मारना–१. जादू मारना। उ० उस आदमी ने अंछर मार कर यहाँ से कुर्सी गायब कर दी। २. मोह लेना, वश मे कर लेना। उ० खूब अंछर मारी। अब चन्द्रा तो जैसे तुम्हारी परछाही बन गई है।

अंजन लगाने का न होना–तनिक भी न होना।

अंजर-पंजर ढीला करना–१ खूब मारना। उ० अभी तुम्हारा अंजर-पंजर ढीला करता हूँ। २. शिथिल कर देना, थका देना। उ० बाप रे बाप ! चलाते-चलाते अंजर-पंजर ढीला कर

दिया। ३. खराब कर देना, जीर्ण-शीर्ण कर देना। उ० एक ही महीने तो साइकिल पर चढ़े और मारा कि उसका अंजर- पजर ढीला कर दिया।

अंजर-पंजर ढीले होना–१. अधिक दिन का हो जाने के कारण खराब या बेकार हो जाना। उ० अब तो उस मोटर के अंजर-पंजर ढीले हो गए। २. थक जाना। उ० बस ! यही हिम्मत थी। दो कोस भी नही आए और अजर- पंजर ढीले हो गए। ३. अकड़ भुला देना, गर्व ठंडा कर देना। उ० कितनों के हाथ तुम्हारे अजर-पंजर ढीले हुए पर तुम्हें तनिक भी शर्म नही। जाने किस बात पर तुले हो ?

अंजाम देना–पूरा करना। उ० वायदा तो मैने कर लिया लेकिन उसे अंजाम देना आसान नही है।

अंटा गुड़गुड़ होना–१. गहरी चोट से बेहोश हो जाना। २. भाँग के नशे मे धुत्त होना। एक अँग्रेज जनरल आक्टर लोनी थे, जो भरतपूर दखल करने के लिए भेजे गए थे। चढाई का नकशा ठीक कर दुरबीन से किले की ओर देख रहे थे, उसी समय किले पर से एक गोला आकर लगा और मर गए। कहा जाता है कि 'ंटा गुड़गुड़' 'आक्टर लोनी' का ही बिगड़ा रूप है।

अंटाचित्त गिरना–चित्त या पीठ के बल गिरना।

अंटाचित होना–१. कुछ न बोल सकना, सुन्न हो जाना। उ० उसकी बात सुनकर मै तो अंटाचित हो गया। २. बेहोश होना। उ० ज्वर से राम अंटाचित हो गया है। ३. काम बिगड़ना। उ० बीमारी के कारण उसकी खेती अंटाचित हो गई।

अंटी करना–मार लेना, चुपके से ले लेना। धीरे से चुरा लेना। उ० यह अंटी करना तुमने कब से सीखा ?

अंटी काटना–जेब काटना। उ० आज पुलिस ने कई अंटी काटने वालों को गिरफ्तार किया है।

अंटी देना–गरदनिया देना।

अंटी पर चढ़ना–१. हाथ या वश में आना। २. दाँव पर चढ़ना।

अंटी मारना–१. चाल चलना। उ० ऐसी अंटी मारी कि बच्चू चारो खाने चित्त हैं। २. कुश्ती में एक दाव मारना। ३. जुए में कौड़ी आदि छिपा कर धोखा देना। चुपके से लेना। उ० जो लेना चाहो, माँग कर ले लो। अटी मारना ठीक नहीं। ५. तराजू से तोलने में डंडी मारना।

अंटी रखना–छिपा कर रख लेना। उ० साझे की चीज़ अंटी रख लेना मै पसंद नही करता।

अंड-बंड करना–१ खराब करना। २. गड़बड़ करना। ३. गायब करना। उ० इनमें से कोई चीज़ अंड-बड न करना।

अंड-बंड कहना–बुरा भला कहना, गाली देना। उ० सभी को अड-बंड कहना ठीक नहीं। ऐसी आदत रही तो किसी दिन जूते खाओगे।

अंड-बंड बकना–१. पागल जैसी बाते करनहे, बिना सिर-पैर की कहना। उ० देख नही रा हो, अड-बंड बक रहा है। यह ज़रूर पागल हैं। २. गाली देना। उ० अंड-बंड बकोगे तो लात खाओगे।

अंडा खटकना या खटक जाना–अडा फूटना। उ० मुर्गी के अडे खटक गये।

अंडा ढीला होना–कमजोर हो जाना, दुर्बल हो जाना। उ० अरे तुम्हारा तो अंडा ढीला हो गया ! परिश्रम अधिक करना पड़ा क्या ?

अंडा सरकना या सरक जाना–१. दे० 'अंडा ढीला होना' २. बेहोश होना। उ० ऐसी मार मारूँगा कि अंडा सरक जायगा। ३. हाथ-पाँव हिलाना।

अडा सरकाना–१. हाथ-पैर हिलाना, अग डुलाना। कुछ काम करना। उ० अब अंडा सरकाओ तो काम चले।

अडा सेना–१. बच्चा गोद मे लेकर सोना। २. चिड़ियों का अंडो पर बैठ कर गर्माना। ३. किसी चीज की बहुत देखभाल करना। उ० क्या अंडा से रहे हो ? वह इतनी जल्दी खराब नही होगा। ४. बेकार या निकम्मा बैठना। उ० कुछ कमाओ-धमाओ, अडा सेते रहने से काम नहीं चलने का।

अंडे का शाहजादा–वह व्यक्ति जो कभी घर से बाहर न निकला हो, अनुभवहीन। उ० अंडे के शाहजादे को क्या पता है, कि दुनियाँ में क्या हो रहा है ?

अंडे-बच्चे–कच्चे-बच्चे, बहुत से छोटे-छोटे बच्चे। उ० अरे भाई इतने अंडे-बच्चे ! अभी तो तुम्हारी शादी चार ही पाँच साल पहले हुई थी ?

अंड़ुआ बैल बनना–सुस्त बनना । उ० इसी उम्र में अंड़ुआ बैल मत बनो ।

अंत करना–१. समाप्त करना । उ० आज मैंने उसके जीवन का अंत कर दिया । २. नष्ट करना । उ० उसके यश का अंत न करो । ३ हद कर देना, अति कर देना । उ० अब अन्त मत करो, आखिर हर चीज़ की एक सीमा होती है ।

अंत की बेर–मरते समय ।

अँतड़ियाँ कुलबुलाना–तेज़ भूख लगना । उ० मेरी तो अँतड़ियाँ कुलबुला रही है, कुछ खाना दे दो ।

अँतड़ियाँ गले पड़ना–दुःख में पड़ना । उ० सच्चा मित्र वही है जो अँतड़ियाँ गले पड़ने के समय सहायता करे ।

अँतड़ियाँ जलना–१. खूब भूख लगना । उ० अँतड़ियाँ जल रही हो तो सत्तू भी हलवा लगता है । २. खाने को न मिलना । उ० इस महँगाई मे जाने कितनो की अँतड़ियाँ जल रही हैं ।

अँतड़ियाँ टटोलना–पेट छू कर या टटोल कर यह देखना कि खाने को मिला है या नही । उ० घर आने पर माँ अँतड़ियाँ टटोलने लगती है ।

अँतड़ियाँ लगना या लग जाना–भूख से सूख जाना । उ० उस भिखारी की अँतड़ियाँ लग गई हैं ।

अँतड़ियों का 'कुल ओहु अल्लाह' पढ़ना–अधिक क्षुधित होना, भूख से परीशान होना । उ० इधर मेरी अँतड़ियाँ 'कुल ओहु अल्लाह' पढ रही हैं, और तुम्हे लडके ही से फुरसत नही। अच्छी बीबी मिली हो !

अँतड़ियों के बल खोलना–कई दिन न खाने के बाद भर पेट खाना । उ० मै आज चार दिन उपवास के बाद अँतड़ियों के बल खोल रहा हूँ ।

अँतड़ियों में आग लगना–भूख से परीशान होना। उ० आज मेरी अँतड़ियों में आग लगी है, जल्दी कुछ दो ।

अँतड़ियों में बल पड़ना–पेट या आँतों में दर्द होना । उ० आज तो हँसते-हँसते मेरी अँत-ड़ियों मे बल पड़ गए ।

अँतड़ी की बात जानना–१. किसी को भली भाँति जानना । २. मन की बात जानना । उ० तुम्हारी अँतड़ी की बात बस मै जानता हूँ ।

अंत न पाना–रहस्य न जान पाना, समझ न पाना । उ० उसका अंत बड़े-बड़े नही पाते, तो मै भला किस खेत की मूली हूँ ?

अंत पाना–रहस्य जान लेना । उ० मोहन बड़ा होशियार आदमी है, उसका अत पाना आसान नही ।

अंत बनना या बन जाना–१ परलोक बनना । उ० अत बने या न बने, मैं इन धूर्त साधुओं को एक पैसा भी नही दे सकता । २. किसी काम का अंत अच्छा होना । उ० अत बन जाय तो बीच की खराबियाँ ढक जायँ ।

अंत बनाना–१. परलोक बनाना । उ० यहाँ की चिंता क्या करूँ, अंत बना लूं, वही बहुत है । २. आखिरी हिस्से को अच्छा करना ।

अंत बिगड़ना–१. फल बुरा होना । उ० आदि बन कर ही क्या होगा यदि अंत बिगड़ गया। २ परलोक बिगड़ना । उ० रास्ता ऐसा चलो कि अत न बिगड़े ।

अंतर का पट खोलना–१. ज्ञान प्राप्त करना, ज्ञान के चक्षु खोलना । उ० अंतर के पट खोल रे तोको पीव मिलेंगे । २. किसी के सामने अपना हृदय खोल कर सब बातें साफ-साफ कह देना । उ० अंतर का पट खोल देने पर भी विश्वास नही करते तो मै क्या करूँ ?

अंतर खोलना–दे० 'अतर का पट खोलना' ।

अंतरपट साजना–छिप कर बैठना, ओट मे रहना । उ० क्या अतरपट साज रहे हो, क्यो नही सामने आते ?

अंतर पड़ना–खटक जाना, भेद पड़ना । उ० मैं खूब समझता हूँ, आजकल मियाँ-बीबी में अवश्य कुछ अंतर पड गया है ।

अंतरिक्ष होना–गायब होना । उ० रहते हो, रहते हो, जाने कहाँ अंतरिक्ष हो जाते हो । आखिर यह किताब पूरी करनी है या नही ?

अंतर्निविष्ट करना–१. मन में रखना, दिल में जमाना । उ० पहले मेरी बात अंतर्निविष्ट कर लो तो फिर काम मे हाथ लगाओ ।

अंतर्निविष्ट होना–१ भीतर बैठना । उ० यह बात मेरे हृदय में अंतर्निविष्ट हो चुकी है । २. दिल मे धँसना । उ० उसका करुण दृश्य अंतर्निविष्ट हो गया है ।

अंत लेना–१. भेद लेना । रहस्य जान लेना ।

उ० उसने तो बात ही बात में मेरा अंत ले लिया। २ मार डालना।

अंत होना–१. मृत्यु होना, नाश होना। उ० आज मेरे हाथ से एक कुत्ते का अंत हो गया। २. बहुत बड़ा नुकसान होना। उ० उनका तो इस डाके में अंत हो गया।

अंतिम घड़ियाँ गिनना– मरणासन्न होना।

अंतिम साँस गिनना या लेना–मरणासन्न होना।

अंते जाना–अन्यत्र जाना। उ० अंते जा रहा हूँ, जरा मेरा भी घर देखना।

अंदर-अंदर कड़ाही में गुड़ पकना–१ भीतर ही भीतर कुछ होते रहना २ गुप्त मंत्रणा होना।

अंदर होना–जेल में होना।

अंदाज उड़ाना–अनुमान करना। उ० तुम भी बिना सोचे-समझे अंदाज उड़ाते हो। इस टिन में भला १० सेर घी अट सकता है!

अंदेशा करना–शंका करना, आशंकित होना, भय करना। उ० किसी बात का अंदेशा मत करो। अब इस जंगल में एक भी जानवर नहीं रहा।

अंध भक्त–बिना सोचे-समझे श्रद्धा या भक्ति (किसी के प्रति) रखने वाला।

अंधा आइना–धुँधला शीशा। उ० अंधे आइने में मुँह देखना बुरा कहा गया है।

अंधा करना–ज्ञानशून्य करना।

अंधा कुआँ–१. सूखा कुआँ। उ० यह अंधा कुआँ है। २ व्यर्थ की चीज़, जिससे किसी भी प्रकार की आशा करना व्यर्थ हो।

अंधा घोड़ा–जूता। उ० उस बेचारे के पैर में तो अंधा घोड़ा भी नहीं है। (इसका प्रयोग साधू-फकीर ही विशेष रूप से करते रहे हैं।)

अंधा झोंपड़ा–पेट। उ० इस अंधे झोपड़े में जो ही डालो, सब ठीक है। (इसका प्रयोग विशेषत: साधुओं द्वारा होता है।)

अंधा तारा–नेपच्यून तारा। उ० अंधा तारा हम से बहुत दूर है।

अंधा दीया–धुँधले प्रकाश का दीपक। उ० यहाँ यह अंधा दीया न रक्खो।

अंधाधुंध मचाना–१. अंधेर मचाना। उ० अच्छी अंधाधुंध मचा रक्खी है। कहीं दिन में बिजली जलाई जाती है! २ अन्याय करना। उ० इस अंधाधुंध मचाने से शासन एक दिन भी नहीं चलेगा।

अंधाधुंध लुटाना–बिना सोचे-समझे बहुत ज्यादा खर्च करना। उ० पैसे को अंधाधुंध लुटाना ठीक नहीं। सदा समय एक सा नहीं रहता।

अंधा बनना–१ आगा-पीछा कुछ न देखना, तनिक भी परवाह न करना। उ० इस प्रकार अंधे मत बनो, नहीं तो खाने-खाने को मुहताज होना पड़ेगा। २ जान-बूझकर किसी के अन्याय या गलती को न देखना। उ० तुम अंधे बने हो और वह लड़की गिरती जा रही है।

अंधा बनाना–१. धोखा देना। उ० तुम मुझे अंधे बनाने के फेर में क्यों हो? तुमने जितना चून खाया होगा, उतना मैंने नून खाया है। २ मूर्ख बनाना। ३ ज्ञानशून्य करना।

अंधा शीशा–दे० 'अंधा आइना'।

अंधा होना–बेफ़िक्र होना, सामने की चीज़ का भी ध्यान न रखना। उ० अंधे हो गए हो क्या? कुछ पता है कि गोपाल कितना रोज ले जाता है।

अंधी खाई के बीच होना–बहुत फर्क होना।

अंधी खोपड़ी–मूर्ख। उ० उस अंधी खोपड़ी से मैं कुछ नहीं कह सकता।

अंधी सरकार–ऐसा शासन या राज्य जहाँ अंधेर हो। उ० स्वर्गीय श्री पटेल ने इन अंधी सरकारों का खात्मा कर, भारतवासियों का अनन्य उपकार किया।

अंधे की लकड़ी–एक ही सहारा। उ० वही तो अंधे की लकड़ी है, उसे छोड़कर बेचारा कहाँ जाय!

अंधे की लाठी–दे० 'अंधे की लकड़ी'।

अंधे कुएँ की ओर दौड़ना–प्यासे का निरर्थक प्रयत्न करना।

अंधे के आगे रोना–१. निष्ठुर या न सुनने वाले को अपनी व्यथा सुनाना। २. मूर्ख के सामने कुछ कहना। ३. अज्ञानी को कुछ सुनाना।

अंधे के हाथ बटेर लगना–१. मूर्ख या अयोग्य व्यक्ति को अनायास कुछ ऐसा मिल जाना, जिसका पात्र वह न हो।

अंधेर करना–अन्याय करना। उ० बहुत अंधेर न करो।

अंधेरखाता–१. बेइन्साफ़, अन्याय, उ० आजकल पंचायतों में बड़ा अंधेरखाता है। २.

२ हिसाब ठीक न होना । उ० ऐसे अंधेर खाते में तो एक पैसे का भी लाभ संभव नहीं । ३. गड़बड़ होना ।

अंधेर गुप–१. बिलकुल अँधेरा । उ० अरे ? आज तो इस बदली के कारण अभी अंधेर गुप हो गया । २. बहुत धाँधली । कुप्रबध । उ० इस राज्य मे तो बडा अंधेर गुप है ।

अंधेर छाना–गडबडी फैलना । उ० औरगजेब के समय देश में इतना अंधेर छाया था कि हिन्दुओं का जीवन दूभर हो गया था ।

अंधेर नगरी–जहाँ बहुत धाँधली या अन्याय हो । उ० अंधेर नगरी चौपट राजा । टके सेर भाजी, टके सेर खाजा ।

अंधेर मचना–गड़बडी होना । कुप्रबध होना । उ० आजकल पुलिस मे बडी अंधेर मची है । जिसको जब चाहा बद कर दिया ।

अंधेर छाना–शोक छाना । उ० गान्धी जी के मरते ही देश में अंधेरा छा गया ।

अंधेरा छोड़ना–प्रकाश के सामने से हटना । उ० अंधेरा छोड़ो, मुझे भी पढ़ना है ।

अँधेरा होना–१ बुरा समय आना २ कुछ न सूझना ।

अँधेरी कोठरी–१ न जानने योग्य या गुप्त जगह । उ० चीन विदेशियों के लिये अँधेरी कोठरी है । २ गर्भ । उ० अँधेरी कोठरी के विषय मे मै क्या कहूँ ? उसे भविष्य ही स्पष्ट करेगा ।

अँधेरी झुकना–बहुत अँधेरा होना । उ० आज ऐसी अँधेरी झुकी है कि हाथ की चीज भी नही दिखाई पडती ।

अंधेरी डालना–किसी की आँखे बन्द करके दुर्गति करना । आँखे बद करके मारना, ताकि वह मारने वाले को पहचान न सके । उ० यह आदमी तो बड़ा परीशान करता है । इस पर भी अँधेरी डालने की जरूरत है ।

अँधेरी देना–दे० 'अँधेरी डालना' ।

अँधेरे-उजेले–वक्त-बेवक्त, सुख-दु:ख में । उ० अँधेरे-उजेले, वही काम आता है, तो दूसरा किसे अपना कहे ?

अँधेरे घर का उजाला या दीपक–इकलौता पुत्र । उ० बुरा या अच्छा यही तो इसके अंधेरे घर का उजाला है । भला इसे वह कब कष्ट दे सकता है ?

अंधेरे मुँह–प्रातःकाल, तड़के । उ० अँधेरे मुँह मेरे यहाँ आ जाना, तो दवा दे दूँगा ।

अंधेरे में टटोलना–१. स्थिति अज्ञात तथा अस्पष्ट होने पर भी जानने का यत्न करना । २. व्यर्थ का प्रयत्न करना ।

अंधेरे में तीर मारना–दे० ऊपर ।

अंधेरे में रखना–(किसी को) ठीक स्थिति न बताना । उ० अपने मित्र को ही अँधेरे मे रखोगे तो हो चुका तुम्हारा काम ।

अंबर के तारे गिनना–१ वियोग या दु:ख के कारण रात को नीद न आना । २ असंभव काम करने का प्रयास करना । उ० तुम्हारा एम् पी के लिए खडा होना अबर के तारे गिनना है ।

अंबर के तारे डिगना–अविश्वसनीय और असंभव बात का होना । उ० तुम्हारा १८ फ़ीट कूदना अबर के तारे डिगना है ।

अकंटक राज्य करना–बिना किसी विरोध आदि के राज्य करना या आनद लूटना ।

अकड़ जाना–हठ करना, मिजाज दिखाना । उ० बात-बात मे अकड़ जाना शिष्टाचार नही है ।

अकड़े बैठना–जिद्द पर रहना, ज़िद्द पर अडे रहना । उ० तुम तो लडको की तरह अकड़े बैठे हो ।

अकेले चने का भाड़ नहीं फोड़ना–अकेले कुछ न हो सकना । उ० केवल तुमसे क्या समाज सुधरेगा ? अकेला चना भाड नही फोडता ।

अकेला दम–अकेला, कोई आगे-पीछे नही । उ० मेरा क्या है, अकेला दम हूँ । जहाँ भी रहूँ, सुखी रह सकता हूँ ।

अकेली कहानी–एक पक्ष द्वारा कही गई बात । उ० अकेली कहानी पर तुमने फैसला क्यो दिया ?

अकेले घर में छकेला मारना—घर मे अकेला होने के कारण खूब मौज उडाना । उ० तुम्हारा क्या है, तुम तो अकेले घर मे छकेला मारते हो । अब न मोटे होगे तो कब होगे ?

अकेले-दुकेले—अकेले, एकाकी । उ० अँधेरी रात में अकेले-दुकेले न जाया करो ।

अकेले राम—अकेला होना, किसी और के साथ होने का बंधन न होना । उ० तुम तो अकेले राम ठहरे, आज यहीं रुको । घर जाने की जल्दी क्या है ?

अक़्ल का अन्धा होना—मूर्ख होना। उ० वह तो अक्ल का अंधा हो गया है। देखते नहीं सयानी लड़की को मित्र के यहाँ छोड़ आया है।

अक़्ल का अजीर्ण होना—१. अक़्ल का मारा जाना, बेवकूफ़ होना। उ० आजकल मटर बो रहे हो! अक्ल का अजीर्ण हो गया है क्या? २. बुद्धिमान आदमी का कोई उलटा काम करना। उ० आजकल इन नेताओं को अक्ल का अजीर्ण हो गया है। रोज़ नई स्कीम शुरू करते है और दो दिन चलाकर वन्द कर देते हैं।

अक्ल का घास खाना या चरने जाना—१. अक्ल काम न करना। २. बेअक्ल होना।

अक़्ल का दुश्मन—बेवकूफ, मूर्ख। उ० हो तुम अक्ल के पूरे दुश्मन। अरे! कहीं मेरे जाने से बात बनेगी, हाँ बिगड जाए तो कोई अचरज नहीं।

अक़्ल का पुतला—मूर्ख (व्यंग्य मे)। उ० वाह रे अक्ल के पुतले! यह क्या कर डाला? खीर में कहीं नमक डाला जाता है?

अक़्ल का पूरा—बेवकूफ़। उ० तुम जैसा अक्ल का पूरा आदमी मिलना मुश्किल है। न तो अपने काम करते हो और न मुझे ही करने देते हो।

अक़्ल की कोताही—बुद्धि की कमी। उ० जिसमें अक्ल की कोताही है, उसका पढना और न पढना बराबर है।

अक्ल की गठरी—मूर्ख। उ० तुम सचमुच अक्ल की गठरी हो। कहीं चाय के बाद पानी पीते है?

अक़्ल की गाँठ खुलना—समझ में आना, अक्ल का काम करना।

अक़्ल के घोड़े दौड़ाना—१ अन्दाज लगाना, कल्पना करना। उ० अक्ल के घोडे दौडाने में बीरबल बडा तेज था। २ बहुत दूर तक सोचना। उ० अक्ल के घोडे दौडाओ तो शायद यह पहेली समझ में आ जाय।

अक्ल के पीछे लाठी लिये फिरना—बिना अक्ल के काम करना। मूर्खता करना। उ० तुम भी खूब अक्ल के पीछे लाठी लिए फिर रहे हो। सीधी सी बात थी और समझ मे न आई।

अक़्ल खर्च करना—गभीरता से विचारना, बुद्धि लड़ाना। उ० अक्ल खर्च करो तो कुछ समझ सकोगे, यों मुँह क्या देखते हो?

अक़्ल चकराना—दे० 'अक्ल चक्कर में आना'।

अक़्ल चक्कर में आना—दंग रह जाना, हैरत में आ जाना। उ० प्रदर्शनी में उस काठ की मूर्ति का काम देख कर अक़्ल चक्कर में आ गई।

अक्ल चरने जाना—बुद्धि का काम न करना। उ० इस प्रश्न को करते समय तुम्हारी अक़्ल क्या चरने गई थी?

अक्ल दंग रह जाना—चक्कर में पड़ना, आश्चर्य-चकित हो जाना। उ० कल का दृश्य देखकर तो मेरी अक्ल दंग रह गई। आग लोग छूते नहीं हैं और वह खा रहा था।

अक़्ल दंग होना—दे० 'अक्ल दंग रह जाना'।

अक्ल देना—१. राय देना। उ० आपके अक़्ल देने की आवश्यकता नहीं। २. समझाना। उ० उसे अक्ल देने लायक तुम नहीं हो।

अक़्ल दौड़ाना—गभीरता से सोचना, बुद्धि लगाना। उ० तुम जैसे बेवकूफ़ आदमी का किसी भी काम में अक्ल दौड़ाना बेकार है।

अक्ल पर ईंट या पत्थर या परदा पड़ना—अक्ल खराब हो जाना। उ० तुम्हारी अक्ल पर तो पत्थर पड गया है, कोई चीज तुम्हारी समझ मे आती ही नहीं।

अक्लमंद की दुम बनना—अपने को बहुत होशियार समझना। उ० अक्लमंद की दुम न बनो। तुम्हारी बिसात किसी से छिपी नहीं है।

अक्ल मारी जाना—१. घबरा जाना, कुछ समझ मे न आना। उ० इस समय कोई काम मुझ-मे सही नहीं हो सकता, सचमुच मेरी अक्ल मारी गई है। २ मूर्ख होना। अक्ल न रहना। उ० उसकी तो अक्ल मारी गई है, वह काम क्या करेगा?

अक्ल लड़ाना—दे० 'अक्ल दौडाना।'

अक़्ल सठियाना—बुद्धि बिगड़ना। उ० लोग कहते है कि बुड्ढो की अक्ल सठिया जाती है।

अक्ल से सरोकार न होना—कुछ न समझना, बेवकूफ़ होना। उ० उसकी बात न करो। उसका तो अक़्ल से कोई सरोकार ही नहीं है।

अक़्ल हवा हो जाना—किंकर्तव्यविमूढ हो जाना, अक्ल काम न करना।

अक़्ली गद्दे लड़ाना—बेकार में तर्क-वितर्क करना।

अक्षर घोटना—हरफ़-ब-हरफ़ याद करना। उ० अक्षर घोटने से क्या लाभ? उसे समझने की कोशिश करो।

अक्षर से भेंट न होना—१. बिल्कुल अनपढ़

होना । उ० भारत में बहुत से ऐसे आदमी हैं जिनसे अक्षर से भी भेंट नहीं हुई है । २. अनभिज्ञ होना । उ० अर्थशास्त्र के एक अक्षर से भी मेरी भेंट नहीं हुई है, तुम्हें बतलाऊँ तो क्या ?

अखज करना—१. चुनना, अख्तियार करना । उ० इनमें से कोई भी रास्ता अखज़ कर लो । २. बात में से बात निकालना । उ० अखज़ करने मे वह इतना तेज है कि उससे बहस करने की हिम्मत नही होती ।

अखरने लगना—बुरा लगना । उ० मालूम होता है कि मेरा रोज का यहाँ आना तुम्हे अखरने लगा है ।

अखाड़िया होना—नामी या सशक्त होना । उ० वह तो अखाड़िया है । उसका मुकाबिला तुम क्या खाकर करोगे ।

अख्तियार करना—१ मानना, स्वीकार करना । २. पसद करना । ३. चुनना । ४ काम मे लाना । उ० मै यही रास्ता अख्तियार करूँगा ।

अख्तियार मिलना—१ अधिकार मिलना । उ० अख्तियार मिलने पर सभी लोग अपने को लगाते है । २. कानूनी इजाजत मिलना । उ० अख्तियार मिल जाय तो मै उसी मकान मे रहूँगा । देखे कौन क्या करता है ?

अख्तियार में होना—काबू या वश मे होना । उ० जब वह अपने अख्तियार मे है तो करेगा क्यो नही ?

अख्तियार लेना—अधिकार लेना । उ० इस जमीन का अख्तियार मैने ले लिया है ।

अल्ती घोड़ी—ऐसी औरत जिसके स्तन स्पष्ट न दिखाई दें । उ० इसे जवान कौन कहेगा, यह तो अल्ती घोडी है । (इसका प्रयोग बाजारू जबान मे होता है ।)

अगर मगर करना—१. बेकार बकवाद करना । उ० विद्वानों के सामने ऐसी बातों पर अगर मगर करना व्यर्थ है । २ टाल मटोल करना । उ० अगर मगर करने से क्या लाभ ? न देना हो तो साफ कह दीजिए ।

अगले जमाने का आदमी—ईमानदार, सीधा-साधा । उ० तुम जैसे अगले जमाने के आदमी की भगवान मदद करता है ।

अगाड़ी-पिछाड़ी लगाना—बधन मे डालना, प्रतिबंध लगा देना । उ० पिताजी ने ऐसी अगाड़ी-पिछाड़ी लगा दी है कि एक मिनट के लिए भी बाजार आना संभव नही ।

अगाड़ी मारना—शत्रु की सेना को जल्दी से हरा देना । जल्दी से जीत लेना । उ० उनके दल ने अगाड़ी मार ली ।

अगिया बेताल—१. बड़ा उत्साही, बहुत तेज । उ० मोहन सचमुच अगिया बेताल है । वह इस काम को हाथ मे लेगा तो करते देर न लगेगी । २. धुधकारी । उ० तुमने तो ऐसे अगिया बेताल का साथ पकडा है कि मै डरने लगा हूँ ।

अगिया बैताल—दे० 'अगिया बेताल' ।

अगुआ होना—१. नेता होना । २. विवाह या खरीद-फरोख्त मे मध्यस्थ होना । उ० अगुआ होने वाले प्रायः मार खाते है ।

अचार करना—दे० 'अँचार करना' ।

अचार डालना—दे० 'अँचार डालना' ।

अचार बनाना—दे० 'अँचार बनाना' ।

अच्छा आना—ठीक समय पर आना । उ० अच्छे आए, नही तो अब मोटर छूटने ही वाली थी ।

अच्छा करना—१. चंगा कर देना । उ० डाक्टर ने कहा कि मैं इसे दो घटे मे अच्छा कर दूंगा । २. काम खराब कर देना । उ० आपने अच्छा किया ! अब होश रहा तो कभी आपके साथ न आऊँगा ।

अच्छा कहना—१. मौके की बात कहना । उ० अच्छी कही । भले आदमी होंगे तो कई जन्म तक याद रक्खेंगे । २ तारीफ़ करना । उ० उसका क्या है, सभी के बारे मे अच्छा ही कहता है । ३ अच्छा भाषण देना । उ० अच्छा कहता है, ज़रा बुलंद नही है ।

अच्छा खासा—१ अच्छा, बढिया । उ० वह अच्छा खासा आदमी है, उसी से शादी कर दी । २ स्वस्थ, भला चगा । उ० कौन उसे बीमार कहता है, यह तो अच्छा खासा है ।

अच्छा बिच्छा—भला चगा । उ० दो-चार दिन में मै अच्छा बिच्छा हो जाऊँगा, चिंता की कोई बात नही ।

अच्छा लगना—१. भला जान पड़ना । उ० तुम्हारे सिर पर यह टोपी नहीं अच्छी लगती । २. रुचिकर होना । उ० हमे यह फल अच्छा नही लगता ।

अच्छी बीतना—आनन्द से दिन कटना । उ० महँगी में कम लोगो की अच्छी बीतती है ।

अच्छे-अच्छे–१ प्रसिद्ध-प्रसिद्ध, बड़े-बड़े। उ० अच्छे-अच्छे देख लिए गए तो आप किस खेत की मूली है? २ सुन्दर, उमदा, बढ़िया। उ० उसकी बारात मे अच्छे-अच्छे घोड़े आए है।

अच्छे घर बायन देना–ऐसे को छेड़ना जो छठी का दूध याद करा दे।

अच्छे थान का घोड़ा–मशहूर जगह या जाति का घोड़ा। उ० अरबी घोडे तो अच्छे थान के होते है।

अच्छे दिन–सुख सम्पत्ति का दिन। उ० उसने अच्छे दिन देखे है।

अच्छे दिन आना–सौभाग्यशाली होना, भाग्य लौटना। उ० भगवान चाहेगा तो थोडे ही दिन मे उसके अच्छे दिन आने वाले है।

अच्छे दिन देखना–सुखी होना, गरीबी की दशा बिता कर अमीर बनना। उ० मेरे भाग्य मे अच्छे दिन देखना नही बदा है।

अच्छे मिलना–१. खूब मिलना। उ० आजकल अन्न की महँगी मे किसानो को रुपये अच्छे मिल रहे है। २ जरूरत के समय मिलना। उ० आज आपसे कुछ काम था आप अच्छे मिल गये। ३. बुरे मिलना (व्यंग्य मे)। उ० मुझे तो आप अच्छे मिले। रुपया भी खर्च हो गया और कुछ हाथ भी नही आया।

अच्छे रहना–१ स्वस्थ रहना। उ० इधर तो मै अच्छा ही रहा। २ सफल होना, लाभ मे होना। उ० और तो खाली हाथ आए पर तुम अच्छे रहे।

अछरकट्टू होना–साधारण पढ़ा-लिखा होना। उ० अछरकट्टू है, उससे लिखने पढ़ने का काम नही हो सकता।

अछरौटी वर्त्तनी–हिज्जे, वर्त्तनी, स्पेलिंग। किसी शब्द के प्रत्येक वर्ण का अलग-अलग करना। उ० उसे तो अभी अछरौटी-वर्त्तनी भी नही आती, उसका नाम चार मे कैसे लिखा जायगा?

अछूता–१ कोरा, नया। उ० मेरे पास तीन अछूती धोतियाँ है। कालिदास की उपमाएँ अछूती है। २. दूर, निर्लेप। उ० अवगुणो मे अछूता आदमी पाना आसान नही। ३ तनिक भी गति न होना। उ० वह इस विषय मे अछूता है।

अछूती कोख–वह औरत जिसका कोई बच्चा न मरा हो। उ० आजकल बहुत कम औरतें अछूती कोख की है।

अटकल पच्चू–१. मनगढंत। उ० अटकल पच्चू बाते कहने से क्या लाभ? २. कोरे अनुमान पर आधारित बात। उ० तुमने देखा है या अटकल पच्चू कह रहे हो।

अटकल पच्चू हाँकना–मनगढंत या अनुमान मे लम्बी-चौडी बातें कहना। उ० अटकल पच्चू हाँकने वाले का कौन विश्वास करेगा?

अटकल पच्छू–दे० 'अटकल पच्चू'।

अटकाना–फँसाना, उलझाना। उ० सब रुपया तो तुम अटकाए हो, मै दूँ तो कहाँ से?

अटकाव–सहारा। उ० इस पेड पर चढने के लिये आपका थोड़ा भी अटकाव मेरे लिये काफी है।

अटपट बोलना–१ अडबड कहना। उ० यार तुम तो निरे मूर्ख हो सबसे अटपट बोला करते हो। २. गाली देना। ३ बिना समझे बूझे कहना। उ० अटपट बोलने से चुप रहना अच्छा है।

अटवाटी-खटवाटी या अटवास-खटवास लेकर पड़ना–बेकार पडा रहना, काम-काज छोड कर पडा रहना। उ० नौजवान के लिए अटवाटी खटवाटी लेकर पडा रहना ठीक नही।

अटेरन कर देना–दाव मे डाल कर चकरा देना। उ० तुमने तो उसे अटेरन कर दिया।

अटेरन होना–बहुत दुबला-पतला होना। उ० बीमारी मे वह अटेरन हो गया है।

अट्ट-सट्ट–१ इधर-उधर की। उ० लाभ-हानि का ध्यान दिये बिना अट्ट-सट्ट मत खाओ। फिर पड जाओगे। २ अनुचित सबध। उ० उन दोनो मे अट्ट-सट्ट है।

अट्टहास करना–बहुत जोर से हँसना। उ० हर समय अट्टहास करना असभ्यता है।

अठखेलियाँ करना–१ खेल करना, खेलवाड करना। उ० कृष्ण सखियो से अठखेलियाँ किया करते थे। २ मजाक करना। उ० हर समय अठखेलियाँ करना अच्छा नही लगता।

अठखेलियाँ सूझना–मस्ती सूझना, मज़ाक सूझना। उ० मित्र तुम्हे तो हर समय अठखेलियाँ ही सूझा करती है।

अड्डा जमाना–रोज ही रहने लगना, हर वक्त जमा रहना। उ० ऐसे लोगों का यहाँ अड्डा जमाना ठीक नही। उन्हे मना कर दो।

अड्डे पर आना–ठीक रास्ते पर आना।

अड़ंगा लगाना–अड़चन डालना, रोकना। उ०

आपका हर एक काम में अड़ंगा लगाना ठीक नहीं। कभी आप गहरे चक्कर में पड़ जायगे।

अड़चन डालना–रुकावट डालना। उ० तुम मेरे हर एक काम मे अड़चन डाला करते हो। आखिर आदमी हो या शैतान !

अड़तल पकड़ना–१. शरण मे जाना। उ० अन्त मे उसे तुम्हारी अड़तल पकड़नी ही पड़ी। २. बहाना करना। उ० अड़तल पकड़ने से क्या लाभ ? अरे साफ इन्कार ही कर देते।

अड़तल लेना–दे० 'अड़तल पकड़ना'।

अड़ियल टट्टू–रुक-रुक कर काम करने वाला। उ० ऐसे अड़ियल टट्टू से काम पड़ा है कि काम इस वर्ष तो खतम होने का नही।

अड़िया करना–जहाज के लंगर की रस्सी खीचना। उ० अड़िया करना आसान काम नही है। हाथ भर जाता है।

अड़े पर काम आना–दु:ख मे काम आना। उ० अपने ही आदमी अड़े पर काम आते है।

अड़ोस-पड़ोस–दे० 'पास-पड़ोस'।

अड़ोसी-पड़ोसी–पड़ोसी इत्यादि। उ० अड़ोसियो-पड़ोसियों को तो खिला दो।

अढ़ाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना–दे० 'ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना'।

अढ़ाई दिन की हुकूमत–थोड़े दिनों का अधिकार। उ० महाशय जी आपकी अढ़ाई दिन की हुकूमत है, जो मन चाहे कर ले। मगर बाद के लिए होशियार रहिएगा।

अतिरंजित करना–खूब लम्बी-चौड़ी कहना। उ० तुम हर एक बात को अतिरंजित करके कहते हो।

अतिसार होकर निकलना–दस्त के रास्ते निकलना। उ० हमारा जो कुछ तुमने खाया है वह अतिसार होकर निकलेगा।

अतीत की मिट्टी खोदना–बीती या पुरानी बातो को याद करना या सुनाना।

अथाह में पड़ना–विपत्तियो मे पड़ना। उ० अथाह मे पड़ने पर सच्चा मित्र ही मदद करता है।

अथ से इति तक–शुरू से अन्त तक। उ० अथ से इति तक देखने के बाद ही इस पुस्तक के बारे मे कुछ कहा जा सकता है।

अटक जाना–डर जाना। उ० यह दिल का दौरा नही है, थोड़ा अटक गया है।

अदक समाना–डर जाना, भय समाना। उ० उसके हृदय में अदक समा गई। रात में वह यहाँ नही आ सकता।

अदब करना–आदर करना। उ० मै हर समय अपने से बड़ो का अदब करता हूँ।

अदन का रास्ता लेना–मर जाना। उ० अब क्या सिगार-पटार करूँ, अब तो अदन का रास्ता लेने का वक्त आया।

अदला-बदली–हेर-फेर, पहले का दूसरे स्थान पर और दूसरे का पहले स्थान पर आना। उ० अदला-बदली करके रक्खो तो शायद ऊँचाई ठीक हो जाय।

अदा करना–पालन करना, पूरा करना। उ० सबको अपना फर्ज अदा करना चाहिये।

अदालत करना–मुकदमा लड़ना। उ० अदालत न करो, व्यर्थ मे रुपया बरबाद होगा।

अदालत होना–मुकदमा चलना। उ० उस पर अदालत हो गई है।

अदालती कीड़ा–बहुत मुकदमेबाज।

अधकचरी बात–अनिश्चित या अप्रामाणिक बात।

अधभेसर होना–मूर्ख होना। उ० वह तो बड़ा अधभेसर है, उसकी राय लेकर क्या करोगे ?

अधर चबाना–गुस्सा के कारण दाँतो से ओठ दबाना। उ० उसे मैंने कभी भी अधर चबाते न देखा। पता नही वह इन्सान है या देवता।

अधर में झूलना–१ अधूरा पड़ना, पूरा न होना। उ० यह काम अधर मे झूल रहा है, किसी तरह पूरा कर देते। २ दुविधा मे पड़ना। उ० किस लिए अधर मे झूले हो ? जो करना हो जल्दी करो।

अधर में पड़ना–दे० 'अधर मे झूलना'।

अधर में लटकना–दे० 'अधर में झूलना'।

अधूरा कर देना–बलहीन या दुर्बल कर देना। उ० चार दिन के बुखार ने ही उसे अधूरा कर दिया।

अधूरा जाना–बिना समय के गर्भपात होना। उ० भाई उसकी तकदीर ही खोटी है, इसे लेकर उसके तीन बच्चे अधूरे गये हैं।

अधूरा होना–१. बिना समझ के होना। उ० आज मै उस समाचार मे अधूरा हो गया हूँ, कोई भी बात समझ मे नही आ रही है। २. आधा बल होना। उ० स्वर्गीय पटेल के बिना नेहरू जी अधूरे है।

अधोड़ी तनना–अच्छी तरह पेट भर जाना।

उ० इस कन्ट्रोल में बहुतों की अधोड़ी नहीं तनती।

अनकही देना–अवाक् रहना, मौन हो जाना। उ० सूर अनकही दै गोपिन सों, स्रवन मूँदि उठि धायो।—सूर।

अनखिली कली–दे० 'कच्ची कली'।

अनखुन खोजना–झगड़ा आदि करने के लिये जबर्दस्ती बहाना खोजना। उ० यदि यों मौका नही मिलता तो अनखुन खोज कर ही उसे एक दिन मारो।

अनजान बनना–जानते हुए भी न जानने वाला बनना। उ० भाई तुम्हारी यह आदत ठीक नही कि, दूसरे के काम पर अनजान बन जाते हो।

अनबन रहना–न पटना। उ० जब एक जंगल मे दो शेर है तो अनबन रहना भी आवश्यक है।

अनरस बोलना–प्रेम से बात न करना। उ० उसके यहाँ कौन जायेगा? सभी से अनरस बोलता है।

अनसुनी करना–बात न सुनना, ध्यान न देना। उ० किससे कहे? सभी तो अनसुनी कर रहे है।

अनी पर अड़ना–मरना, कटना।

अनी पर कनी खाना–आन पर हीरा की कनी चाटकर आत्महत्या करना।

अनोखा गुल खिलना–१ विचित्र बात होना। उ० उनके पत्र आने से एक अनोखा गुल खिल गया। २ विचित्र अफवाह या खबर उड़ना। उ० आज चार दिन से शहर मे अनोखे गुल खिल रहे है।

अन्न अंग न लगना–मोटा न होना। उ० मैं कितना भी खाता हूँ, पर अन्न अंग ही नही लगता।

अन्न का कन्न करना–१. किसी चीज को खराब करना। उ० तुम्हें तो बस अन्न का कन्न करना आता है। २. अच्छी रसद से खराब भोजन बनाना। उ० ऐसी औरत है कि अन्न का कन्न कर डालती है।

अन्न का सन्न होना–अन्न में ही शक्ति होना। उ० फल-दूध से ही ताकत नही आएगी। कुछ रोटी-ओटी खाओ। जानते नही अन्न में ही सन्न है।

अन्न-जल उठना–रहने का संयोग न रहना, जीविका का न रहना। उ० मालूम होता है कि तुम्हारा यहाँ से अन्न-जल उठ गया है, नही तो उनकी मजाल नहीं थी कि हटा देते।

अन्न-जल करना–१. जलपान करना। उ० भाई बहुत दिन पर आये हो, कुछ अन्न-जल तो कर लो। २ खाना-पीना। उ० उसके यहाँ गया तो अवश्य था, किंतु अन्न-जल करने का मौका ही नहीं मिला, नही तो भला यों कैसे आता?

अन्न लगना–खाना लगना, खाने का रस शरीर में मिलना। उ० सेत का अन्न लग गया है, इसी से बात नहीं करते। तुम्हें ससुराल का अन्न नही लगता, जब भी जाते हो दुबले होकर आते हो।

अपनपा खोना–अहंकार छोड़ना।

अपनपा पाना–अपने को समझना।

अपना उल्लू कहीं नहीं जाना–किसी का नुकसान हो या फायदा अपना मतलब निकल ही आना। उ० उनके मरने से क्या हुआ? जब तक उनकी स्त्री है, अपना उल्लू कही नही गया।

अपना उल्लू सीधा करना–अपना काम निकालना। उ० अपना उल्लू सीधा करने के लिए लोग गदहे को भी दादा कहते है।

अपना करना–अपना बनाना, घनिष्ठता स्थापित करना। उ० मनुष्य अपने व्यवहार से सभी को अपना कर सकता है।

अपना कर लेना–दे० 'अपना लेना'।

अपना कान देखे बिना कौए के पीछे दौड़ना-किसी के कहने से वास्तविक स्थिति को जाने बिना प्रयत्नशील होना।

अपना काम करना–अपना प्रयोजन निकालना। उ० सभी तो अपना काम करते है, दूसरे के लिए कौन परीशान होता है?

अपना किया पाना–कर्म का फल पाना। उ० दुनिया में सभी अपना किया पाते है। यदि ऐसा न हो तो कोई किसी को भला रहने न दे!

अपना गीत गाना–१. अपनी बात कहना। उ० आप में यह बडी बुरी आदत है कि आप हर समय अपना गीत गाते रहते है। २. अपनी बडाई करना। ३. अपना गीत गाते तुम्हे शर्म नही आती?

अपना घर समझना–बिना संकोच रहना। उ० जब तक यहाँ रहना हो, इसे अपना घर समझो।

अपना टका सीधा करना–१. किसी तरह रुपया कमाना। उ० संसार मे बहुत से लोग ऐसे है जो बेईमानी और ईमानदारी को कुछ नही जानते। उन्हें तो केवल अपना टका सीधा

करने की धुन रहती है। २. कही से फँसा रुपया निकालना। उ० उम्मीद तो नहीं थी पर डरा-धमका कर मैंने अपना टका सीधा कर लिया।

अपना ठिकाना करना–१. अपने रहने का प्रबन्ध करना। २. अपनी जीविका का इतज़ाम करना। ३. अपना काम या अपनी नौकरी लगाना। उ० अपना ठिकाना कर लूँ, तो तुम्हारे लिए भी कुछ कर दूंगा।

अपना तमाचा अपने मुंह पड़ना–दूसरे की हानि करने के यत्न में अपनी हानि कर लेना।

अपना दिल हाथ में रखना–अपने को काबू मे रखना। उ० जरा अपना दिल हाथ मे रक्खो नही तो किसी दिन जूते खाओगे।

अपना-पराया अपना-दूसरा, शत्रु-मित्र, मेरा-तेरा। उ० छोटे आदमियो का अपना-पराया बहुत आता है।

अपना राग अलापना–दे० 'अपना गीत गाना'।

अपना राग गाना–१. अपने ही मतलब की कहना। २. दूसरों की अनसुनी कर अपनी ही सुनाए जाना। उ० ये बुड्ढे तो हर वक्त अपना ही राग गाते है।

अपना रास्ता लेना–अपना काम करना।

अपना रुपया खोटा होना–दे० 'अपना सोना खोटा होना'।

अपना लेना–अपना बना लेना। उ० भारत का बच्चा-बच्चा जब अपने पड़ोसी को भी अपना लेगा, तभी कल्याण संभव है।

अपना सा करना–शक्ति भर उठा न रखना। उ० क्या करूँ, अपना सा बहुत किया पर वह आ न सका।

अपना-सा मुँह लेकर चले या लौट जाना–लज्जित होकर चले जाना।

अपना-सा मुँह लेकर रह जाना–शरमिन्दा हो जाना। उ० लड़ाई तय करने मैं वहाँ गया तो था किंतु जब मेरी कुछ न सुनी गई तो अपना-सा मुँह लेकर रह जाना पड़ा। आज तो मैंने ऐसी लगती बात कही की वे अपना-सा मुंह लेकर रह गए।

अपना सोना खोटा होना–अपने व्यक्ति या अपनी मे दोष वस्तु होना।

अपनी-अपनी गाना–१. सबका विचार भिन्न-भिन्न होना। उ० अपनी-अपनी गाने से कोई बात तय नही हो सकती। २. अपनी ही अपनी सुनाना। उ० सभी तो अपनी-अपनी गा रहे है, आखिर सुनें तो किसकी-किसकी ?

अपनी-अपनी देखना–केवल अपना ही अपना या अपने स्वार्थ का ख्याल करना। उ० जब सभी अपनी-अपनी देखते हैं, तो मैं भी वही करूँगा।

अपनी अपनी पड़ना–सबका स्वार्थी होना। उ० यहाँ सभी को अपनी-अपनी पड़ी है तो मैं ही क्यो प्राण दूँ ?

अपनी आँख से देखना–अपने दृष्टिकोण से विचार करना।

अपनी ओटना–अपनी ही बात करना। किसी दूसरे की न सुनना। उ० तुम तो बस अपनी ओटते हो। आखिर मुझे भी कुछ कहने दोगे ?

अपनी ओसाना–अपनी ही बात करते जाना और दूसरे की न सुनना। उ० तुम तो अपनी ओसाने लगते हो जैसे तुम्हारा मुँह ही नही थकता।

अपनी खचाना–दूसरे के तर्क को न सुन कर अपनी बात पुष्ट करते जाना। उ० सूर प्रभु अपनी खचाई रही निगमन जीति।

अपनी ओर निहारना–अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान रखना। उ० अपनी ओर निहारे बिना, तुमने यह कर डाला। कोई भी इसे अच्छा नही कहेगा।

अपनी खाट के नीचे देखना–अपना दोष देखना।

अपनी खाल में मस्त रहना–अपनी हालत मे प्रसन्न रहना। उ० जो अपनी खाल मे मस्त रहता है, वही सुखी है।

अपनी खिचड़ी अलग पकाना–अलग रहना, सब के साथ न चलना। उ० भाई यदि सब लोग अपनी खिचड़ी अलग पकाएँगे तो देश की उन्नति हो चुकी।

अपनी खुशी से जीना–दे० 'जीना अपनी खुशी से'।

अपनी गली का शेर होना–अपने क्षेत्र या हल्के में बली होना।

अपनी गाँठ का–दे० 'अपनी गिरह का'।

अपनी गाँठना–अपना मतलब निकालना। उ० अपनी गाँठने में तो आप बड़े तेज है।

अपनी गाना–दे० 'अपनी ओसाना'।

अपनी गिरह का–अपनी जेब का, अपने पास का। उ० अपनी गिरह का एक पैसा भी न जाय, तो कौन नही दानी बनना चाहेगा ?

अपनी गुड़िया सँवार देना–१ अपनी शक्ति के अनुसार बेटी की शादी कर देना। उ० जहाँ तक बन पड़ता है, सभी अपनी गुड़िया सँवार देते हैं। २. अपनी चीज सुन्दर बनाना।

अपनी चलाना–दे० 'अपनी गाना'।

अपनी जाँघ का सहारा होना–अपने साधनों का भरोसा होना।

अपनी ढाई ईंट की मस्जिद अलग उठाना–दे० 'अपनी ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना'।

अपनी ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना–अपनी राय सबसे अलग रखना। उ० सबको अपनी ढाई चावल की खिचडी अलग पकानी है, तो साझे का काम हो चुका।

अपनी नाक कटा कर या कटा कर दूसरे का शकुन बिगाड़ना–किसी की थोडी हानि करने के लिए अपनी बहुत बड़ी हानि कर डालना। मूर्खता करना।

अपनी नींद सोना–१. निश्चिन्त रहना। उ० बडे आदमियो को अपनी नीद सोना भी नसीब नही होता। २ मन के अनुसार सोना। उ० क्या करूँ मेरा जीवन ऐसा दुःखमय हो गया है कि आज तक कभी अपनी नीद नही सोया।

अपनी नींद सोना अपनी भूख खाना–दे० 'अपनी नीद सोना अपनी नीद उठना'।

अपनी नीद सोना अपनी नींद उठना–किसी से मतलब न रख कर आजादी और आराम से दिन बिताना। उ० आपका क्या है, आप तो अपनी नीद सोते है और अपनी नीद उठते है।

अपनी बात का एक–बात का सच्चा, वादे का पक्का। उ० दुनिया मे बहुत कम व्यक्ति अपनी बात के एक होते है।

अपनी बात पर आना–ज़िद्द पकडना, हठ करना। उ० आप लडको की तरह हर घडी अपनी बात पर क्यो आ जाया करते है?

अपनी बिल्ली का खौखियाना–अपने ही व्यक्ति का नाराज होना।

अपनी बीती–अपने पर सही हुई, अनुभूत। उ० मै अपनी बीती आपसे क्या कहूँ? सुनेगे तो विश्वास न होगा।

अपनी वालियों पर आना–दे० 'अपनी वाली पर आना'।

अपनी वाली पर आना–अपनी जिद्द और हठ पर आना। उ० अपनी ही वाली पर आना था, तो पचो को क्यो बुलाया?

अपनी हाँकना–दे० 'अपनी ओटना'।

अपने आगे किसी को कुछ न गिनना–अपने को बडा या बुद्धिमान तथा अन्य सभी को नाचीज या मूर्ख समझना।

अपने को उड़ेलना–अपनी सारी बातें कहना।

अपने को खोना–१ आत्म-विस्मृत होना। २. अहकार छोड़ना ३. किसी काम या बात मे अपने को पूर्णतः तल्लीन करना।

अपने को खाना–अपनी ही हानि करना।

अपने को लाट समझना–अपने को बडा समझना। उ० वह अभी कल तक पैसे-पैसे का मुहताज था, आज चार पैसे पाने लगा तो अपने को लाट समझता है।

अपने ख्याल में मस्त रहना–दूसरे की तनिक भी चिंता न करना।

अपने ख्याल में रहना–अपने सिवा किसी की भी फ़िक्र न करना। उ० घर के मालिक का हर समय अपने ख्याल मे रहना उचित नही।

अपने गिरह का कुछ न जाना–अपना कुछ भी खर्च न होना। उ० अपने गिरह का कुछ न जाय तो मुझे चलने मे कोई एतराज नही।

अपने गिरेबान में मुंह डालना–अपनी हैसियत या योग्यता आदि का ध्यान करना। उ० हर एक आदमी को अपने गिरेबान मे मुँह डाल कर काम करना चाहिये।

अपने चलते–भरसक, यथासाध्य। उ० अपने चलते कोशिश करूँगा, चाहे काम हो या न हो।

अपने टिक्के लगाना–अपने ही मतलब और गरज़ की बात कहना। उ० अपने टिक्के लगाना था तो मुझे क्यो बुलाया?

अपने ढंग का–विचित्र। उ० यह मकान अपने ढंग का है।

अपने तईं खींचना–अपना लाभ चाहना। उ० सर्वदा अपने तईं खीचना उचित नही, कुछ परोपकार भी सीखो।

अपने तक रखना–किसी से न कहना। उ० कृपया मेरी बात अपने तक रखियेगा।

अपनेपन पर आना–अपने बुरे स्वभाव के अनुसार काम करना। उ० अपनेपन पर आओगे तो यही परिणाम होगा।

अपने पर आना–किसी विपत्ति या समस्या का सामना होना। उ० दूसरे को सीख सभी देते है पर जब अपने पर आती है तो सब कुछ भूल जाता है।

अपने पाँव में आप कुल्हाड़ी मारना–जानकर अपनी बुराई करना, जान-बूझकर संकट मे पडना। उ० आप उससे झगडा करके अपने पॉव मे आप कुल्हाड़ी मार रहे है। अब से भी चेत जाइए।

अपने पैरों पर खड़ा होना–स्वावलम्बी होना। जीविका-उपार्जन करने योग्य बनना। उ०

आजकल के लड़के अपने पैरो पर खडा होना जानते ही नही।

अपने फैज को पहुँचना–अपने कर्म का उचित फल पाना। उ० घबराइए नही, अपने फैज को पहुँचेगे तब पता चलेगा।

अपने भावें–अपने अनुसार। उ० अपने भावे तो मैने कोई बात उठा नही रक्खी, काम न हुआ तो मै क्या करूँ ?

अपने मुंह मियाँ मिट्ठू बनना–अपनी बडाई आप करना। उ० अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना गँवारो का ही काम है।

अपने मुह में थप्पर मारना–अपना अहित या अपनी बढता भी कराना।

अपने सिर ओढ़ना या लेना–अपने ऊपर लेना। उ० तुम बिलकुल न डरो। मै सारा दोष अपने सिर लेने को तैयार हूँ।

अपने से–शक्ति के अनुसार। उ० मैंने अपने से सब कुछ किया, वह न आ सका तो मै क्या करूँ ?

अपने से बाहर होना–दे० 'आपे से बाहर होना'।

अपने हक में काँटे बोना–अपनी बुराई आप करना। उ० उस चोर आदमी को अपने घर मे रख कर मै अपने हक मे काँटे नहीं बो सकता।

अपने हक में जहर या विष बोना–दे० 'अपने हक मे काँटे बोना'।

अपने हाथों–स्वय।

अपने हाथो अपनी इज्जत की कब्र खोदना–स्वय अपनी इज्जत बर्बाद करना।उ० आपने मुझसे झगडा करके अपने-हाथो अपनी इज्जत की कब्र खोदी है। अब परिणाम देखने के लिए होशियार हो जाइए।

अपने हाथों कब्र खोदना–अपनी मृत्यु का स्वय कारण बनना। उ० यह क्या अपने हाथो कब्र खोद रहे हो ? वह यहाँ आकर क्या तुम्हे रहने देगा ?

अपने हाथों कुआँ खोदना–दे० 'अपने हाथो कब्र खोदना'।

अपने हाल में न रहना या होना–होश मे न रहना। उ० कभी तो वह अपने हाल मे रहता ही नही, क्या कहूँ और क्या न कहूँ ?

अफर कर चलना–अकड़ कर चलना। उ० छोटे आदमियो के पास थोड़ा भी पैसा हो जाता है तो अफर कर चलते है।

अफलातून समझना–बहुत योग्य, बड़ा या तीसमार खाँ समझना।

अफलातूनी करना–डीग हाँकना। उ० क्या अफलातूनी करता है, मै तेरी तीन पुश्त से परिचित हूँ।

अफवाह उड़ाना–झूठी खबर फैलाना। उ० युद्ध नीति में अफवाह उडाना भी बड़ा काम करता है।

अफवाह गर्म होना–बहुत चर्चा होना।

अबका–इस समय का। उ० अब का जमाना पहले की अपेक्षा बहुत खराब है।

अबकी–इस बार। उ० अबकी हराना तो तुम्हे कुछ समझूँगा।

अब जाकर–इतनी देर बाद। उ० महीनों से काम मे लगा था, अब जाकर तो समाप्त हुआ है।

अब-तब करना–बहाना करना, हीला-हवाला करना। उ० कोई भी चीज़ उससे माँगो वह अब-तब करने लगता है।

अब-तब होना–१ परेशान होना। उ० मारे गर्मी के अब-तब हो रहा है। २ मरने के क़रीब होना। उ० वह तो अब-तब हो रहा है। अब दवा देने से क्या होगा ?

अब भी–इस समय भी, इतने पर भी। उ० इतनी हानि उठाई, पर अब भी नही चेतते !

अ ब स जानना–दे० 'क ख ग जानना'। [यह To know A B C का ही अनुवाद है।]

अबसे–आगे, भविष्य मे। उ० अबसे वह ऐसा काम नही करेगा।

अबे-तबे करना–१ सेरी मारना। २ असभ्यता से बाते करना। उ० पढे-लिखे आदमी को अबे-तबे करना उचित नही। ३ गाली देना। उ० अबे-तबे करोगे तो जबान खींच लूंगा।

अबे-तबे बकना–दे० 'अबे-तबे करना'।

अबतर करना–बिगाडना, खराब करना। उ० क्यो उसकी इज्ज़त अबतर करते हो ?

अभ्र उठना–बादल से आसमान का भर जाना ! उ० अभ्र उठ रहे है, पानी बरसेगा।

अभयदान देना–रक्षा का वचन देना। उ० जब उन्होंने अभयदान दे दिया तो डरना क्या ?

अभय देना–दे० 'अभय दान देना'।

अभय बचन देना–दे० 'अभय दान देना'।

अभय बाँह देना–दे० 'अभय दान देना'।

अभिनय करना—तमाशा करना, स्वाँग रचना, नकल उतारना। उ० आपका सर सचमुच दर्द कर रहा है, या अभिनय कर रहे हैं ?

अमचुर हो जाना—दुबला-पतला हो जाना। उ० आप तो दो दिन के उपवास में ही अमचुर हो गये।

अमल-पानी करना—नशा सेवन करना। उ० अच्छी तरह अमल पानी कर लो, आज बहुत चलना है।

अमान माँगना—रक्षार्थ प्रार्थना करना। उ० अमान माँग रहा है, हटाओ जाने भी दो।

अमृत का घड़ा—अमूल्य चीज़। उ० अमृत का घड़ा नही लाए हो। इतनी शेखी मत बघाडो।

अम्मर की घरिया छीनना—कोई बहुत आवश्यक और महत्वपूर्ण चीज छीनना। उ० अम्मर की घरिया नही छीन रहा है, जाने भी दो।

अम्मर की घरिया पीना—अमर होना, मृत्यु को जीत लेना। उ० अम्मर की घरिया पीकर तो आए नही हो, जो कुछ करना हो जल्दी कर डालो।

अरक-अरक होना—पसीने से तरबतर होना। उ० धूप मे चलने से वे अरक-अरक हो गए है।

अरकस-बथुआ गिनना या समझना—दे० 'गाजर मूली समझना'।

अरकस-बथुआ बटोरना—बेकार चीजों का संग्रह करना।

अरण्य रोदन—ऐसा कहना, जो निरर्थक हो, जिसे कोई न सुने या सुनकर भी अनसुनी कर दे।

अरमान आना—१ दुखी होना, पछताना। उ० हजारो खून करके भी अरमान नही आयेगा। तुम इन्साँ हो। २. इच्छाओं का पैदा होना। ३. घमड होना।

अरमान ठंडे पड़ना—इच्छाओ का जहाँ-का-तहाँ दबा रह जाना। उ० पत्नी के मरते ही अरमान ठडे पड़ गये। अब तो जीना भी भार ही है।

अरमान दिल में रह जाना—मन की बात मन ही मे रह जाना।

अरमान निकालना—इच्छा पूरी कर लेना। उ० अपने अरमान निकाल लो, कौन जाने फिर वक्त मिले या नही।

अरमान भरा होना—१. जोश या उमंग मे होना, उत्सुक होना। उ० यह बड़ा अरमान भरा लड़का है, देखें कैसा होता है ? २. इच्छाओं से भरा होना। उ० अभी क्या, अभी तो मेरा दिल अरमान भरा है।

अरमान रह जाना—दिल की दिल मे रह जाना, हविश पूरी न होना। उ० तलवार खूं में रंग लो, अरमान रह न जाये। 'बिस्मिल' के सर पर कोई एहसान रह न जाय।

अरमान रहना—१. इच्छा होना। उ० अरमान रहे जब तक तुम थी, तुम गईं और अरमान गए। २. इच्छा पूरी न होना।

अरमान सिराना—दे० 'अरमान ठंडे पडना'।

अरमानों पर पाला पड़ना—इच्छाओं का जहाँ-का-तहाँ रह जाना।

अर्धचन्द्र देना—गर्दन पकड़ कर बाहर निकालना। उ० अर्धचन्द्र दूं या अपना रास्ता लोगे।

अलग पर आना या छा जाना—घोड़ी का मस्ताना। उ० तुम्हारी घोडी अलग पर आ गई है।

अलख जगाना—१ पुकार कर भगवान का नाम लेना। उ० अब तुम चुपचाप अलख जगाओ। २ भगवान के नाम पर भीख माँगना। उ० भारत मे अलख जगाने वालो की कमी नही।

अलल बछेड़ा—अनुभवहीन। उ० अभी तो बेचारा अलल बछेड़ा है, हुआ ही कितने दिन का ?

अलिफ नंगा—दे० 'नगा मादरजाद'।

अल्ला का बेटा—१ बहुत बडा। उ० आप तो अपने को अल्ला का बेटा समझते है। २. पैगंबर। उ० आप अल्ला के बेटे नही है कि आपका कहा सच मान लिया जाय।

अल्लाह को प्यारा होना—मर जाना।

अवकाश ग्रहण करना—रिटायर होना। उ० इसी महीने वे अवकाश ग्रहण कर रहे है।

अवटि मरना—मारे-मारे फिरना। उ० रामचन्द्र बहुत दिनो तक जगलो मे अवटि मरते रहे।

अवतार करना—दे० 'अवतार लेना'।

अवतार धरना—दे० 'अवतार लेना'।

अवतार लेना—१. उतरना, पैदा होना, शरीर ग्रहण करना। उ० धर्म की रक्षा के लिए भगवान अवतार लेते है। कलंकी नाम से विष्णु अवतार लेंगे। २. मूर्त रूप में होना, प्रतीक होकर आना। उ० तुमने तो सत्य का अवतार लिया है !

अवतार होना–पैदा होना। उ० भगवान के आज तक २४ अवतार हुए हैं।

अवतारी–१. शरारती। उ० वह बड़ा अवतारी लड़का है। २. ईश्वरीय शक्ति वाला, अलौकिक, चमत्कारी। उ० वह अवतारी काम कर दिखाता है।

अवतारी पुरुष–बड़ा, श्रेष्ठ, असाधारण। उ० गांधी अवतारी पुरुष थे।

अवधि गिनना–इंतज़ार करना।

अवधि देना–दे० 'अवधि बदना'।

अवधि बदना या बद देना–'समय नियत करना'। उ० आज उन्होंने अवधि बद दी, यदि उस दिन तक नही देंगे तो अदालत मे जाना ही होगा।

अवसर चूकना या हाथ से जाना–मौक़ा को हाथ से खो देना। उ० अवसर चूकने पर पछताना बेकार है।

अवसर ताकना–मौक़ा देखना। उ० अवसर ताकने से नही आता।

अवसर मारा जाना–समय निकल जाना। उ० अवसर मारे जाने पर तो आप काम करने चले है।

अवसर हाथ आना–सुयोग मिलना।

अवस्था ढलना–बुढापा आना। उ० अब आपकी अवस्था काफ़ी ढल गई।

अव्वल दर्जे का–दे० 'प्रथम श्रेणी का'।

अशर्फियों की लूट और कोयलों पर मुहर लगाना–मूल्यवान वस्तु की परवा न कर व्यर्थ की चीज को महत्व देना।

अहंकार का पुतला–बहुत घमंडी। उ० रावण अहकार का पुतला था।

अहाता करना–घेर देना। उ० उस जगह को अहाता कर दो नही तो नगरपालिका ले लेगी।

अहिरचपाट होना–पूरा मूर्ख होना। उ० वह तो अहिरचपाट है, उसके कहने का ख्याल मत करना।

अहीर होना–मूर्ख होना। उ० तुम तो अहीर मालूम पड़ते हो।

आ

आँख–नज़र, दृष्टि। उ० मेरी कलम उसी ने चुरायी होगा, इस पर उसकी आँख बहुत दिनो से लगी थी।

आँख अटकना–मोहब्बत होना। आज कल अक्सर लड़के-लड़कियो की आँखे अटक जाती है।

आँख अटकाना–प्रेम लगाना। उ० राह चलते आँख न अटकाओ।

आँख आई हुई होना–दे० 'आँख आना'।

आँख आना–आँख मे दर्द तथा लाली आदि होना। उ० आज चार दिन से मेरी आँख आ गई है।

आँख उघारना–सतर्क या सचेत होना।

आँख उठना–१. दे० 'आँख आना'। २. दया दृष्टि होना। ३. बुरी नज़र उठना, बुरी नज़रों से देखा जाना।

आँख उठाकर न देखना–१ ध्यान न देना। उ० मैं वहाँ आध घंटे तक खड़ा था, पर उसने आँख उठाकर देखा तक नही। २. उपेक्षा करना।

आँख उठाना–१. नुकसान पहुँचाने के ख्याल से देखना, कुदृष्टि से देखना। उ० इन निर्दोषों की ओर आँख न उठाओ। २. देखना। उ० ज़रा आँख उठाओ तो ज्ञात हो। ३. देखने की हिम्मत करना।

आँख उलझना–आकर्षित होना, प्रेम होना।

आँख उलट जाना–१ पुतली का ऊपर चढ जाना। उ० ज्यों ही वह ज़मीन पर गिरा उसकी आँखे उलट गईं। २. मरने के समीप होना। ३ गर्व होना। ४ पुराना भाव न रहना।

आँख ऊँची न होना–लज्जा से आँख ऊपर न उठना। उ० बुरे काम करने वालो की आँखें ऊँची नही होती हैं।

आँख ऊँची रखना–मानदंड ऊँचा रखना।

आँख ऊपर न उठना–लज्जा से दृष्टि ऊपर न होना। उ० बुरे काम करोगे तो आँख ऊपर नही उठेगी।

आँख ओझल–ओट मे, आड़े। उ० आँख ओझल तो सभी गाली देते है, पर सामने कोई नहीं बोलता।

आँख ओट–दे० 'आँख ओझल'।

आँख कड़आना–१. नीद की झपकी आना। उ० मेरी आँख कड़वा रही है, आज मैं पढ नही सकता। २. आँखो मे कड़ुआपन ज्ञात होना या उनका दुखना।

आँख करना–ध्यान देना।

आँख कहीं और दिल कहीं और रहना–१. आँखें दूसरी जगह, दिल दूसरी जगह रहना, ध्यान

न जमना । उ० आँख कही और दिल कही और रहने से तो यह काम न होगा । २. किसी की याद मे मशगूल रहना ।

आँख का अन्धा गाँठ का पूरा–धनवान किंतु बेवकूफ ।

आँख का आंजन–मात्रा मे बहुत थोडा । उ० वहाँ से घी क्या आया है, आँख का आँजन है ?

आँख का काँटा–खटकने वाला व्यक्ति ।

आँख का तारा–बहुत प्रिय व्यक्ति ।

आँख-कान खुला रखना–होशियार रहना । उ० गाम तुम्हारे बहुत से दुश्मन है । तुम्हे हर समय आँख-कान खुले रखने चाहिये ।

आँख-कान देना–देख-सुनकर ध्यान देना ।

आँख-कान से दुरुस्त होना–अच्छा और बिना ऐब का होना । उ० कुछ भी हो, दुलहा आँख-कान से तो दुरुस्त है ।

आँख का पानी–हया, लज्जा ।

आँख का सच्चा–बुरी दृष्टि से न देखने वाला ।

आँख का सुरमा--दे० 'आँख का आँजन' ।

आँख की पुतली फिरना–आँखो का मरते समय पथरा जाना । उ० डाक्टर को बुलाने से क्या लाभ, उसके आँखो की तो पुतली फिर गई ।

आँख की पुतली समझना–बहुत प्रेम करना । उ० मै अपने छोटे भाई को आँख की पुतली समझता हूँ ।

आँख की पुतली होना–बहुत प्यारा होना । उ० बुढ़िया का इकलौता बेटा उसकी आँख की पुतली है ।

आँख की हया–१ किसी की लाज । उ० कम से कम बडो के आँख की तो हया करो । २ किसी का लिहाज, देखने की लाज, शील । उ० केवल तुम्हारे आँख की हया है, नही तो इसे मजा चखा देता । ३ लाज, शर्म । उ० उसकी आँख की हया तो चली गई है ।

आँख खुलना–१ होशियार होना । स्थिति को समझना । उ० इतना जुल्म सहने के बाद भारतीयो की आँख खुली है । २. आराम होना । उ० डाक्टर के आते ही उसकी आँख खुल गई । ३. नीद टूटना । उ० आज तो तड़के ही आँख खुल गई ।

आँख खोलना–१. ख्याल करना । उ० आँख खोल कर देखो । २ आँख का इलाज करना । उ० तुमने तो बहुत सी आँखे खोली होगी । ३. चेत करा देना, होश करा देना । उ० उसकी आँख खोल दो, नही तो पछतायेगा ।

आँख गड़ जाना–दे० 'आँख गड़ना' ।

आँख गड़ना–१. लालच होना । उ० उसकी आँख इस चीज पर गडी है । २ कुदृष्टि होना । उ० होशियार रहो, सरकार की आँख तुम्हारे पर भी गड़ी है ।

आँख गड़ाना–१ टकटकी जमाना, नजर जमाना । उ० सूरज की तरफ आँख गडा कर कोई नही देख सकता । २. लालच करना । उ० इस चीज पर बेकार आँख न गडाओ, मै दे नही सकता । ३ बुरी दृष्टि करना । उ० खबरदार, उस लडकी पर आँख न गड़ाना । ४. ध्यान मे रखना ।

आँख गरम करना–किसी की सुन्दरता देख कर आँखो को ठडी करना । उ० आप यहाँ आँख गरम करने आते है या कीर्तन करने ?

आँख घुलना–चार आँखे होना । उ० दोनो की आँखो के घुलते ही प्रेमाश्रु टपक पड़े ।

आँख चढ़ना–१ आँखे उनीदी तथा लाल होना । उ० मै दो रात का जगा हूँ, मेरी आँखे चढी हुई है । बुखार के कारण उसकी आँख चढी हुई है । २ क्रोध के लक्षण दिखाई देना । उ० उनकी आँख चढते तो देर ही नही लगती ।

आँख चढ़ाना–गुस्सा करना । उ० बच्चे को स्नेह करो, आँखे न चढ़ाओ ।

आँख चमकना–प्रसन्न होना ।

आँख चरने जाना–सामने की चीज दिखाई न देना । उ० क्या तुम्हारी आँखे चरने गई है कि तुम्हे किताब नही दिखाई दे रही है ।

आँख चार होना–आँख से आँख मिलना । उ० आँख चार हुई और प्रेम पैदा हुआ । इन लड़कों की दुनिया विचित्र है ।

आँख चीर कर देखना–१. ध्यान मे देखना । उ० इस कागज पर क्या लिखा है, आँख चीर कर तो देखो । २. घूरना । उ० किसी की ओर यह आँख चीर कर देखने की कौन सी आदत सीख रहे हो ?

आँख चुरा कर कुछ करना–छिप कर कुछ करना । उ० आँख चुरा कर क्यो जा रहे है । मै रोकूँगा थोड़े ।

आँख चुरा कर देखना–छिप कर देखना । उ० क्या आँख चुरा कर देख रहे हो, क्यो नही सामने आते ?

आँख चुरा जाना–आँख बचाकर निकल जाना। उ० आप आँख चुराकर जाना चाहते थे, पर संयोग से पकड़ गए।

आँख चुराना–१. धोखा देना, बात से टल जाना। उ० पहले विश्वास देकर समय पर उसने आँख चुरा ली। २. बात करने में लजाना। ३. शान के कारण किसी की ओर भर आँख न देखना। उ० पद पा गया अब तो अपनों से भी आँख चुराता है। ४. छिपना, सामने न आना, कतराना।

आँख चूकना–जरा भी लापरवाह होना या न देखना। उ० आँख चूकते ही आजकल के नौकर चोरी कर लेते है।

आँख चौंधियाना–आँखो मे चकाचौंध छा जाना। उ० सूरज की तरफ देखने से आँख चौंधिया जाती है।

आँख छत से लगना–१. आँखें टँग जाना। २. इतज़ार मे रात भर जगते बीतना।

आँख छिपाना–१. कतरा कर जाना, बच कर निकल जाना। उ० उस दिन आँख छिपा कर वह निकल गया। २. शर्माना। ३. आमने-सामने न देखना। ४. सामने न होना।

आँख जमना–नजर स्थिर होना। उ० तेज रोशनी के आगे आँख नही जमती।

आँख ज़मीन से लगना–शर्मा जाना।

आँख जाना–आँख फूटना, अंधा होना।

आँख जोड़ना–प्रेम करना, चार आँख करना। उ० यहाँ तो आँख जोड़ लो, वहाँ जब भंडाफोड़ करूँगा तो पता चलेगा।

आँख झपकना–नींद आना। उ० अब तुम्हारी आँख झपक रही है।

आँख झुकना–१. आँख नीची होना। उ० कोई बात है जरूर। वह जब भी मुझे देखता है, उसकी आँखें झुक जाती है। २. शर्मा जाना।

आँख झेंपना–दे० 'आँख झुकना'।

आँख टँग जाना–मृत्यु निकट आना। उ० अब तो उसकी आँखें टँग गई, डाक्टर को बुलाना बेकार होगा।

आँख टँगना–टकटकी लगाना। उ० उसका वह रूप देखकर मेरी तो आँख ही टँग गई।

आँख टिमटिमाना–झपकी लेना। उ० क्यो आँख टिमटिमा रहे हो, जाकर सो जाओ।

आँख टूटी पड़ना–बहुत नींद आना।

आँख टोरना–शर्मिन्दा होना। उ० नायक को देखते ही नायिका ने आँख टोर ली।

आँख ठंडी करना–किसी के दर्शन से तृप्ति प्राप्त करना। उ० आज प्रदर्शनी मे आँखें खूब ठंडी कर लेना, पता नही फिर अवसर मिले या नही।

आँख ठंडी होना–१. तृप्त होना। उ० क्या रूप भगवान ने दिया है? देखकर आँखे ठंडी हो गई। २. सतोष होना। ३. प्रसन्नता होना।

आँख डबडबाना–आँखो मे आँसू आ जाना। उ० उसे बेरहमी से सिपाही का मारना देखकर मेरी तो आँखे डबडबा आई।

आँख डालना–जल्दी से देखना। उ० केवल आँख डालने से काम न चलेगा, इसमे तो अधिक समय देना पड़ेगा।

आँख तरसना–किसी वस्तु को देखने की इच्छा होना। उ० मोहन को देखने के लिये मेरी आँखे तरस रही है।

आँख तरेरना–गुस्से से देखना। उ० तुम्हारा आँख तरेरना बेकार है, तुम मेरा कुछ नही कर सकते।

आँख तले न लाना–कुछ न समझना। उ० लोग छोटों को आँख तले भी नही लाते।

आँख-ताँख निकल जाना–मृत्यु समीप आना। उ० चोट अधिक लगी है, देखने नही आँख-ताँख निकल गई है।

आँख दिखाना–क्रोध करना, बिगड़ना। उ० आप बात-बात मे क्यो मुझे आँख दिखाते है? नौकर बना लिया है क्या?

आँख देखते–जान-बूझकर, सामने। उ० आँख देखते मै यह पाप का काम नही होने दूँगा।

आँख देखा–अपने देखा, खुद देखा। उ० किसी से सुनकर मै नही कह रहा हूँ, यह आँख देखी घटना है।

आँख दौड़ाना–हर तरफ देखना। उ० मैने बहुत आँख दौड़ाई, पर चोर दिखाई न पड़ा।

आँखें धोई-धुलाई होना–दिल साफ़ होना। उ० आप उससे बच कर रहे। अभी उसकी आँख आपकी ओर से धोई-धुलाई नही है।

आँख न उठना–१. शर्म से आँखो का गड़ जाना। उ० उसने ऐसा काम किया है कि उसकी आँख ही नही उठती है। २. बहुत कमजोरी होना। उ० ज्वर के कारण उसकी आँख नही उठ रही है। ३. आँखों से न देखा जाना।

आँख न खोलना—१. बेहोश रहना, अचेत रहना। उ० बुखार के कारण आज दिन भर उसने आँख न खोली। २. जरा भी ध्यान न देना।

आँख न जमना—दे० 'आँख न ठहरना'।

आँख न ठहरना—१ एक टक न देखा जाना, आँखें एक जगह न टिकना। उ० सूर्य की रोशनी के सामने आँखे नहीं ठहरती। २. किसी चीज का बहुत चमकीला होना। ३. किसी चीज का अत्यंत सुन्दर होना।

आँख न डालना—जरा भी न देखना। उ० वह पराये स्त्री पर आँख भी नही डालता।

आँख न पसीजना—दया न आना। उ० यह दृश्य देखकर भी तुम्हारी आँख नही पसीजती।

आँख न मिलना—लज्जा का अनुभव करना।

आँख नचाना—पुतली इधर-उधर करना।

आँख निकालना—१ गुस्से से देखना। उ० थोडी सी बात पर आँख क्या निकालते है? २. आँख फोडना। उ० सच कहता हूँ कि अगर तुम नही मानोगे तो तुम्हारी आँख निकाल लूँगा। ३. आश्चर्य करना। उ० मेरी बात सुनकर वे लोग आँख निकालने लगे।

आँख नीची होना—१ लज्जा पैदा होना। उ० पुरुषों को देखते ही स्त्रियो की आँखे नीची हो जाती है। २ सकोच आदि के कारण बराबर न देख सकना। उ० उस दिन मुँह की खाने के बाद वह जब भी मिलता है, उसकी आँखे नीची हो जाती है।

आँख नीली-पीली करना—अधिक नाराज होना। उ० छोटी सी बात के लिये क्यो आँख नीली-पीली करते हो?

आँख नीली-पीली होना—अधिक नाराज होना। उ० न तो आँख नीली-पीली होते देर लगती है और न खुश होते। आखिर तुम आदमी हो या पायजामा?

आँख पटपटा जाना—आँख फूट जाना।

आँख पड़ना—ख्याल जाना। उ० मौज की बात है, अगर आँख पड़ गई तो सरकार तुम्हारे लिए कुछ अवश्य कर देंगे।

आँख पथराना—१. आँख थक जाना। उ० आज चार दिन से तुम्हारी राह देखते-देखते मेरी आँखें पथरा गई। २. मरने के समीप होना। उ० आज तक उसका जीवित होना सदिग्ध है। कल ही उसकी आँखें पथरा गई थीं।

आँख पर चढ़ना—१. दृष्टि पर आ जाना, दिखाई देना। उ० वह चीज मेरी आँख पर चढ गई है। २. प्रेम तथा विश्वास होना। उ० तुम तो उसकी आँखों पर चढ़े हो। ३. अखरना। उ० सबकी आँखों पर चढे हो।

आँख पर तिनका रखना—जान-बूझकर परवाह न करना। उ० आपने अपनी आँख पर तिनका रख रक्खा है, और इसी से चुम्रू दिन-पर-दिन बनता जा रहा है।

आँख पर पट्टी बँधना, आँख पर परदा पड़ना—१. कम दिखाई देना कुछ न सूझना। उ० आँख पर परदा पडा है कि वह सामने की चीज दिखाई नही देती? २. मूर्ख, लापरवाह या अज्ञानी होगा। ३. बुद्धिभ्रष्ट होना।

आँख पर पलकों का बोझ न होना—अपनों पर व्यय करना न खलना। उ० अरे तुम निस्संकोच ठहरो। आँखों पर कही पलकों का बोझ होता है?

आँख पर बिठाना—बहुत आवभगत या इज्जत करना। उ० आँख जिससे देश की ऊँची हुई, क्यो न आँखो पर बिठाएँ हम उसे।

आँख पर रखना—आदर और आराम से रखना। उ० जब भी मै राम के यहाँ जाता हूँ, वह मुझे अपनी आँख पर रखता है।

आँख पलट जाना—१ गुस्सा हो जाना। उ० कमजोर आदमी की आँख जल्दी पलट जाती है। २. दृष्टि बदल जाना, भाव बदल जाना। उ० काम खतम होने के बाद आँख पलट जाना स्वाभाविक ही है।

आँख पसारना—१. दूर तक देखना। उ० मैंने सडक पर बहुत आँख पसारी पर कही मोटर आती दिखाई न पडी। २. किसी के सप्रेम स्वागत के लिए तैयार रहना। उ० आज नेहरू के लिए पूरा इलाहाबाद आँख पसारे है।

आँख पसीजना—आँखो मे आँसू आना। उ० इस बेचारे दुखिया की रुलाई सुनकर मेरी आँखे पसीज गई।

आँख पहचानना—सकेत समझना। उ० मै तुरन्त आपकी आँख पहचान गया।

आँख पाना—१. आँख का (आँख की रोशनी) फिर से मिलना। उ० भगवान की दया से मैंने आँखे पा लीं, यही क्या कम है? २. प्यारी वस्तु का मिलना। ३. इशारा पाना। उ० मैं खूब समझता हूँ, यदि आपकी आँख न पाते

तो यह करने की उनके बाप की भी हिम्मत न पड़ती ।

आँख फटना–आश्चर्यचकित होना । उ० आज की घटना देख कर तो मेरी आँखें फट गई ।

आँख फड़कना–भला या बुरा शकुन होना । उ० मेरी आज बाईं आँख फड़क रही है, देखें क्या होता है ?

आँख फरकना–दे० 'आँख फड़कना' ।

आँख फाड़कर देखना–१. घूर कर देखना । उ० किसी अजनबी की ओर आँख फाड़कर देखना अशिष्टता है । २. प्रेम से देखना । ३. आश्चर्य से देखना ।

आँख फिर जाना–दे० 'आँख पलट जाना' ।

आँख फूटना–दिखाई न देना । ज्ञान न होना । उ० सचमुच तुम्हारी आँखें फूट गई हैं क्या, जो सारा तेल फैला दिया ?

आँख फेरना–विरुद्ध होना । पुराने अनुकूल भाव बदलना । तोताचश्म होना । उ० इस तरह आँखें न फेरो, आखिर मैं भी तुम्हारा हूँ ।

आँख फैलाकर देखना–ताज्जुब से देखना ।

आँख फोड़ना–१. किसी की प्रतीक्षा करने में कष्ट उठाना । उ० आज चार दिन से उनकी प्रतीक्षा करते-करते आँख फूट गई । २. आँख की रोशनी खराब करना । उ० दिन-रात मिलाई करके क्यों अपनी आँख फोड़ते हो ? ३. अंधा कर देना । उ० चोरों ने उसकी आँख फोड़ दी ।

आँख बन्द करके काम करना–बेसुध होकर काम करना, बिना ध्यान दिए काम करना । उ० आँख बन्द करके काम करना हो तो मैं नहीं करवाऊँगा ।

आँख बन्द करना–१. बेहोश हो जाना । २. मर जाना । उ० कल शाम को उसने आँख बन्द की, आज उसका लड़का भी चल बसा ।

आँख बन्द होना–१. मर जाना । उ० आज सबेरे उसकी बीमारी बहुत बढ़ गई और १० बजे आँखें बन्द हो गईं । २. बेहोश होना, ३. ध्यान न देना । उ० इस वक्त तो तुम्हारी आँखें बंद हैं, पर बाद में पछताओगे ।

आँख बचाना–१. छिपना । उ० आँख बचाकर भाग जाते हो ? २. ख्याल बँटना । उ० आँख न बचाओ, नहीं तो काम खराब हो जाएगा ।

आँख बदल जाना–१. सहानुभूति न रहना । उ० जाने क्यों उसकी आँख मेरी ओर से बदल गई है । २. विरुद्ध हो जाना ।

आँख बनवाना–१. आँख की दवा करना । उ० अब आपको आँख बनवानी पड़ेगी । २. आँख का आपरेशन करवाना । उ० जाड़े में आँखें बनवाई जाती हैं ।

आँख बरसना–रोना, आँखों से आँसू ढुलकना ।

आँख बराबर करना–चार आँखें करना, आमने-सामने देखना, बराबरी में देखना । उ० वे अगर भलेमानुस होंगे तो कम-से-कम इस ज़िंदगी में आँखें बराबर नहीं ही कर सकते ।

आँख बवा जाना–१. मर जाना । उ० आँख बवा गई, अब ले चलो । २. आश्चर्य-चकित हो जाना ।

आँख बहना–आँख से कीचड़ बहना ।

आँख बहाना–रोना ।

आँख बिछाना–आदर से स्वागत करना । उ० आपके लिए वह तो आँखें बिछाता है और आप उससे बोलते तक नहीं ।

आँख बैठ जाना या बैठना–आँख के ढेले का भीतर चला जाना, आँख फूट जाना । उ० चेचक की बीमारी में अक्सर आँख बैठ जाती है ।

आँख भर आना–आँखों में आँसू आना । उ० पिता की मृत्यु पर आँख भर आना तो दूर रहा, उसका चेहरा भी नहीं उदास हुआ ।

आँख भर (कर) देखना–दृष्टि गड़ाकर या अच्छी तरह देखना । उ० मैंने कभी उसे आँख भरकर नहीं देखा, बात करना तो दूर की बात है ।

आँख भर लाना–आँखों में आँसू ले आना । उ० बात-बात पर आँख भर लाना मर्दों को शोभा नहीं देता ।

आँख भौं चढ़ाना–क्रोध करना । उ० क्या छोटी सी बात पर आँख भौं चढ़ा रहे हो ?

आँख भौं टेढ़ी करना–दे० 'आँख भौं चढ़ाना' ।

आँख भौं सिकोड़ना–पसन्द न करना । उ० मेरी खरीदी चीजों पर कोई आँख-भौं सिकोड़ेगा तो ठीक न होगा ।

आँख मटकाना–१. नाज व नखरे करना । उ० वेश्यायें नाच में खूब आँख मटकाती हैं । २. आँख से इशारा करना । उ० आँख क्यों मटकाते हो, मुँह से कहो ।

आँख मारते या मारते-मारते–एक क्षण में, पलक झपकते ।

आँख मारना–१. इशारा करना । उ० उसने

आते ही आँख मारी और हम दोनों चल दिये। उ० तुमने आँखें मार दी, नहीं तो मैं हाथ उठा दिए होता।

आँख मिचकाना—१ इशारा करना। उ० आप का आँख मिचकाना उसने ताड़ लिया। २. बुरा समझना। उ० हर चीज पर तो आप आँख ही मिचकाते है।

आँख मिलाना—१ आँख लड़ाना, प्रेम करना। उ० हर जगह आँख मिलाने की आदत अच्छी नहीं। २ आमने-सामने खड़ा होना, बराबरी करना। उ० तुम्हारी हिम्मत कि मुझसे आँख मिलाओ।

आँख मूँद कर—बिना सोचे-समझे।

आँख मूँद कर सोना—निश्चिन्त या बिना कुछ किए बैठे रहना।

आँख मूँदना—१. मर जाना। उ० उस बुढ़िया ने आज आँख मूँद ली। २. ध्यान न देना। उ० आप मेरी बातो पर तो आँख मूँद लिया करते है।

आँख मे आँख डालना—आँख मिलाना, आँखे चार करना। उ० आँखो मे आँखे डालकर वे मौन हो गए।

आँख में कचवा बैठना—आँख फूट जाना। न दीखना। उ० तुम्हारे आँख मे कच्चा बैठा है क्या, जो दिखाई नहीं देता? [यह एक गाली है, जिसे स्त्रियाँ ही प्राय देती है।]

आँख में गड़ना—बुरा लगना। उ० उसका पढ़ना तुम्हारी आँख मे गडता है।

आँख में पानी न होना—लज्जाहीन होना। उ० आजकल की औरतो के आँख मे पानी नहीं है।

आँख में मिर्चे का आंजन करना—बहुत परीशान करना। उ० आँख मे मिर्चे का आंजन न करो, मै तुम्हारा काम कर दूँगा।

आँख में मैल लाना—दिल खट्टा होना या करना। उ० आप ऐसी बात कहते है कि मेरी आँखो मे मैल आ जाती है।

आँख में रखना—बड़े ही एहतिआत से रखना। उ० बेटा इस बच्चे को मेरे साथ जाने दो, अपने और लडको की तरह इसे भी आँख मे रखूँगी।

आँख में टेसू या सरसों फूलना—१. मस्ती मे होना, प्रसन्न होना। २ सभी तरफ अपनी मतवाली बात ही दिखाई पडना।

आँख रखना—ख्याल रखना। उ० मै जा रहा हूँ, जरा बच्चे पर आँख रखना, कही गिर न जाय। २. मुहब्बत रखना। उ० अच्छा, अब आप भी उस पर आँख रखने लगे है।

आँख लग जाना—दे०' आँख लगना'।

आँख लगना—१ नींद आना। आँखिन आँखि लगी रहे, आँखे लागत नाहिं। २ प्रेम होना। उ० तुम दोनो की आँखे लग गई है। आँखिन आँख लगी रहे, आँखे लागत नाहिं। ३ किसी चीज को पाने की ताक में होना।

आँख लगाना—मोहब्बत करना। आँख लगाकर धोखा देना उचित नहीं।

आँख लगी—प्रेमिका। उ० मै तुम्हारी आँख लगी को खूब जानता हूँ।

आँख लड़ जाना—दे० 'आँख लडना'।

आँख लडना—मोहब्बत होना, चार आँख होना। उ० भरे भवन मे आँख लडना तो मैंने यही देखा है!

आँख लड़ाना—१. नजर मिलाना। उ० दूसरे की स्त्री से आँख लडाना गुनाह है। २ प्रेम करना। उ० अब उससे भी आँख लडाना चाहते हो क्या?

आँख लजाना—लज्जित होना। उ० खड़ा होते ही जिसकी आँख लजाती है, वह भाषण क्या देगा?

आँख ललचाना—देखने को मन चाहना। उ० आँखे ललचाती ही रह गई, पर वे नहीं ही आए।

आँख लाल करना—गुस्सा करना। उ० तुम तो विचित्र आदमी हो! थोडी सी बात पर आँख लाल कर लेते हो।

आँख लाल होना—क्रोधित हो जाना। उ० मैंने क्या कहा कि आपकी आँखे लाल हो गई?

आँख लेना—१ दे० 'आँख बदल जाना'। २ अंधा करना। आँख फोड देना। उ० भगवती तुम्हारी आँख लेकर तो छोडेगी।

आँख वाला—होशियार। उ० आँख वाले हर जगह सफल होते है।

आँख सीधी करना—मेल-मिलाप करना। उ० अरे अब चलते समय तो आँख सीधी कर लो।

आँख सीधी होना—मेल होना। उ० अब उन दोनो की आँखे सीधी हो गई।

आँख से आँख जुड़ना—नज़र से नजर मिलना।

आँख से आँख घुलना—नज़र से नजर मिलना। उ० अब तो दोनो की रोज आँख से आँख घुलती है।

आँख से ओझल होना—गायब होना। कहीं दूर चला जाना। उ० देखते ही देखते साँप आँख

से ओझल हो गया।

आँख सेंकना–देखने का सुख लूटना। उ० आप यहाँ भाषण सुनने आए है या आँख सेकने ?

आँख से नमस्कार करना–आँखे नीची करके या झपका कर नमस्कार करना। उ० आँख से नमस्कार करना सभ्यता के विरुद्ध है। आँख से नमस्कार करने से तो नमस्कार न करना अच्छा है।

आँख से सलाम लेना–घमड के कारण किसी का नमस्कार आँख से ही स्वीकार करना। उ० आजकल उनकी तो पूछो नही, अब वे आँख से सलाम ले रहे है।

आँख होना–१. जानकारी या ज्ञान होना। उ० तुम्हारे जैसे आदमियो के साथ रह कर तो बिना पढे ही आँख हो जाती है। २ नज़र होना। उ० मै खूब जानता हूँ, उस लडकी पर तुम्हारी आँख है।

आँखें आई हुई होना–आँख आना (एक बीमारी)। उ० मेरी आँखे आई हुई है।

आँखे उमड़ना या उमड आना–१ भीड होना। उ० काग्रेस अधिवेशन मे लाखो आँखे उमड आई है। २ दर्शन की बडी आकाक्षा होना। उ० भक्तों की आँखे साधुओ के दर्शन के लिए उमड आती है।

आँखे कहीं और दिल कहीं और होना–१. अपने प्रेमी के ध्यान मे लीन रहना। उ० उसका तो अजीब हाल है। आँखे कही और है, और दिल कही और। २ ध्यान मे न करना। उ० इस पढने से क्या लाभ जब आँखे कही और है, और दिल कही और।

आँखें खिल उठना–दे० 'आँखे खिलना'।

आँखे खिलना या खिल जाना–खुश होना। उ० तुम्हें देख कर उसकी आँखे खिल जाती हैं।

आँखें खींचना–ध्यान आकर्षित करना।

आँखें खुल जाना–दे० 'आँखे खुलना'।

आँखे खुलना–१ ज्ञान होना। उ० आपके उपदेश से हम सब की आँखे खुल गई। २. चौकन्ना हो जाना। उ० जब सारा घर लुट गया तो आपकी आँखे खुली। ३ सो कर उठना। उ० ८ बजे तो आपकी आँखे खुलती है, आप घूमने कैसे चलेंगे ?

आँखें खुली की खुली रह जाना–१. मर जाना। उ० जो करना हो कर लो, नही तो एक दिन आँखें खुली की खुली रह जायँगी। २. आश्चर्य-चकित रह जाना। उ० इस बात को सुनकर उसकी आँखे खुली की खुली रह गई।

आँखें खोल कर देखना–१ ध्यान से सोचना। उ० आँखें खोल कर देखो तो तुम्हे असली बात का पता चले। २. गौर से देखना। उ० आँखें खोल कर देखो, वहाँ कोने में साँप बैठा है।

आँखें गीली होना–आँखो मे आँसू आ जाना।

आँखें गुद्दी में होना या रहना–१. मूर्ख होना। उ० तुम कोई भी काम ठीक से नही करते हो। तुम्हारी तो आँखें गुद्दी मे है। २ दिखाई न देना। उ० तुम्हारी आँखें तो जैसे हमेशा गुद्दी मे रहती है। उधर से ही आ रहे हो, यह नही नही हुआ कि मुन्नू को उठाते तो आते। बेचारा कब का रो रहा है।

आँखें गोल हो जाना–आश्चर्य होना।

आँखे चढ़ाना–गुस्से मे आना। उ० ज़रा सी बात पर आँखे न चढाओ।

आँखें चमकाना–१ आँखो से इशारा करना। उ० तुम्हारी आँखे चमकाना मैं तुरन्त समझ गया। २ शान दिखलाना। उ० आँखे कही और चमकाना, यहाँ तो तुम्हारी रत्ती-रत्ती जानता हू। ३ नाज-नखरे दिखलाना। उ० देखा तुमने ! शीला ने स्कूल जाना शुरू किया कि आँखे चमकाने लगी।

आँखे चार होना–'आँख चार होना'।

आँखे चारों तरफ चकर-मकर करना–१ आँखो का स्थिर न रहना। उ० आपकी आँखे चारो तरफ चकर-मकर कर रही है, क्या बात है ? २ चकाचौंध होना।

आँखे चारों तरफ रहना–हर एक बात का ख्याल रखना। उ० मेरी आँखे चारो तरफ रहती है, मुझे कोई भुलावा नही दे सकता।

आँखे चारों तरफ होना–दे० 'आँखे चारो तरफ रहना'।

आँखें ज़मीन से लग जाना–शरमा जाना, आँखे नीची होना। उ० उसी दिन की डाँट के बाद वह जब कभी मेरे सामने आता है, उसकी आँखे जमीन से लग जाती है।

आँखें जमीन से लगाना या लगा लेना–दे० 'आँखे जमीन से लग जाना'। उ० तुम्हे देखकर वह अपनी आँखे जमीन से लगा लेता है।

आँखें ज़मीन से सिली होना–शरम से दृष्टि हर समय नीचे रहना। उ० सुशील लड़कियो की आँखें हमेशा ज़मीन से सिली हुई रहती है।

आँखें जलना–१ डाह पैदा होना । उ० मेरी तरक्की देख कर तुम्हारी आँखे जलती क्यों हैं ? २. कष्ट होना । उ० वह दृश्य याद कर आज भी मेरी आँखें जलने लगती हैं । ३. क्रोधित होना । उ० उसे देखता हूँ तो मेरी आँखें जलने लगती है ।

आँखें जाती रहना-आँखे फूट जाना ।

आँखें जुड़वाना–दिल या आँखो को तृप्त करना । उ० बेटा, आज मरते समय आकर तुमने मेरी आँखे जुड़वा दी ।

आँखें जुड़ाना–१ दे० 'आँखे ठंडी होना' । २. किसी की आँखो या दिल को तृप्त करना । उ० ये मेरी आँखे जुडाने आए थे या फोडने ?

आँखें टंगी रहना–प्रतीक्षा करना ।

आँखें टेढ़ी करना या कर लेना–१ रोष या क्रोध दिखाना । उ० यहाँ आँखे टेढ़ी करके क्या करेंगे ? कोई आपका रिआया तो है नही, जो डर जाय । २ दया-दृष्टि हटाकर कुदृष्टि करना । उ० आप भी आँखे टेढ़ी कर लेंगे तो कौन सहारा होगा ?

आँखें टेढ़ी करना–नाराज करवाना । उ० वे उनकी आँखे लाख टेढी करवाएँ, मेरा कुछ होने-हवाने का तो है नही ।

आँखें टेढ़ी होना–नाराज होना । उ० उनकी आँखे हजार टेढी हों, मै उनके सामने झुकने से रहा ।

आँखें ठंडी रहना–सुख से रहना, कभी किसी बात के लिये न रोना, बाल बच्चों से भरा-पुरा रहना । उ० भगवान करे आपकी आँखें ठंडी रहें ।

आँखें ठंडी होना या हो जाना–हृदय का शांत होना, अत्यधिक तृप्ति होना । उ० आज बहू को देख कर मेरी आँखे ठंडी हो गई ।

आँखें तरसना–देखने के लिए लालायित होना । उ० उनके लिये मेरी आँखें तरसती है और वे पूछते तक नही ।

आँखें तलवों से लगना–आदर होना । उ० मै जब कभी अपने मित्र के यहाँ जाता हूँ, उसकी आँखे तलवो से लगी रहती है ।

आँखे निरामिए जाना–चकाचौंध होना, विस्मित होना ।

आँखें दुखना–१. आँखे आना । उ० आज दो रोज से मेरी आँखे दुख रही है । २ बुरा लगना, किसी चीज को देखकर कष्ट पाना । उ० उसे देखकर तुम्हारी आँखें दुखती क्यो हैं ?

आँखें धोना–देखने के लिए आँखों को साफ़ करना (व्यंग्य) । उ० पहले आँखें धो आओ तो मुझे देखना ।

आँखें पसारना–आँखे लगाना, देखना, उत्सुकता या आदर से देखना ।

आँखे पाना–१. सकेत मिलना । उ० आँखें पाते ही वह चला गया । २. देखने की शक्ति पाना ।

आँखें पैदा करना–१ शहूर या तमीज़ सीखना उ० पहले आँखें पैदा करो, फिर सामने खडे होना । २ किसी चीज या समस्या को अच्छी तरह समझने की शक्ति हासिल करना । उ० पढकर पहले आँखे पैदा करो, तब उसके दोष निकालना ।

आँखें प्यासी होना–देखने की इच्छा होना । उ० उन्हे क्या पता कि ये आँखे कितनी प्यासी हैं ?

आँखें फोड़ देना–दे० 'आँखें फोडना' ।

आँखें फोड़ना–१. ध्यान से देखना । उ० चिट्ठी पानी से भीग गई है । अगर आँख फोड़ कर देखोगे तो शायद पढ सको । २ अंधा करना, आँखो को फोड़ देना । उ० उसकी आँख क्यो फोडते हो ?

आँखें बंद करना–दे० 'आँखे बंद कर लेना' ।

आँखें बंद कर लेना–१. मुँह फेर लेना । उ० तुम सबकी सुनते हो पर मेरी ओर से आँखे बंद कर लेते हो । २ मर जाना । उ० आज बेचारी ने आँख बन्द कर ली ।

आँखें बंद किए जाना–बिना डर-भय के जाना । उ० यह जंगल तो अपना है, तुम आँखें बंद किये जा सकते हो ।

आँखे बंद होना–१ न देखना । २. मर जाना । उ० आज शाम को उसकी आँखें बंद हो गई ।

आँखें बदलना–रुख बदल जाना ।

आँखें माँगना–देखने की ताकत माँगना । उ० डाक्टर साहब, आपसे आँखे माँगता हूँ, दया कीजिए ।

आँखें मिट जाना–अंधा हो जाना । उ० यदि दूसरो का बुरा देखूँ तो मेरी आँखें मिट जायँ ।

आँखें मिलना–दे०, 'आँखें पाना' ।

आँखें मूंद लेना–१. किसी बुराई को जान-बूझ कर होने देना । उ० ऐसी बातों के लिए तुम कैसे आँख मूद लेते हो ? २. मर जाना । उ० आज उसने आँख मूंद लीं ।

आँखें राह में बिछाना–उत्सुकता या आदर से प्रतीक्षा करना ।

आँखें रो रो कर सुजाना–अधिक रोना, रो-रो कर आँखों को फुलाना। उ० आँखें रो-रो कर सुजाना बेकार है। अब वह लौट तो सकता नहीं।

आँखें रोशन करना–खुश होना। उ० आपके दर्शन से ही आँखें रोशन कर लेता हूँ।

आँखें रोशन होना या हो जाना–१. प्रसन्न होना। २. ज्ञान की आँखों का खुल जाना। उ० साधु के दर्शन से ही आँखें रोशन हो गई।

आँखें लाल पीली करना–नाराज होना।

आँखें सफेद हो जाना–दे० 'आँखें सफेद होना'।

आँखें सफेद होना–अंधा हो जाना, आँखो मे जाला पडना। उ० इसी उम्र मे मेरी दोनो आँखे सफेद हो गई, भला अब कैसे मेरा काम चलेगा।

आँखे सर्वदा को मूंद लेना–मर जाना। उ० दो दिन की बीमारी मे ही उसने अपनी आँखें सर्वदा को मूंद लीं।

आँखे होना–१. ज्ञान होना। उ० ठोकर खाने के बाद आँखे होती है। २ दिखाई देना, समझ पडना। उ० अब तुम्हे आँखे हो गई। भगवान को धन्यवाद है।

आँखों-आँखों में बातें होना–आँखो के इशारे मे बाते होना। नैन-नैन कीन्हो सब बात.–सूरदास

आँखों का अन्धा–बेवकूफ। उ० मुझे आप आँखो का अन्धा न समझिये, आपकी यहाँ कुछ भी न चलेगी।

आँखों का उजाला–प्रिय, अत्यन्त प्रिय।

आँखों का काँटा होना–१ दुश्मन होना। उ० आप उसकी आँखो के काँटे क्यो हो रहे है, इसका नतीजा अच्छा न होगा। २ आँखो मे खटकना।

आँखों का काजल चुरा लेना–बडी बारीकी मे चोरी करना, चोरी की कला मे बहुत दक्ष होना। उ० उसे तुम ऐसा-वैसा चोर मत समझना। वह आँखो का काजल चुरा लेता है।

आँखों का खिलखिलाना–बहुत प्रसन्न होना। उ० आज तो उसकी आँखें खिलखिला रही हैं। कही से कुछ मिल गया क्या ?

आँखों का जाती रहना-दिखाई न देना। उ० क्या करूँ ? इसी उम्र मे मेरी आँखे भी जाती रहीं। अब तो और भी कोई नही पूछेगा।

आँखों का टोना लगना–आँखें लगना, प्रेम मे पड़ना। आँखों का टोना लगा है, अब वह किसी के कहे में नहीं रह सकता है।

आँखों का ढूंढ़ना–देखने को जी चाहना। उ० मेरी आँखें भगवान को ढूंढती हैं।

आँखों का तारा–अत्यन्त प्यारा। उ० उसे मै अपनी आँखो का तारा समझता हूँ।

आँखों का तेल निकालना–बहुत बारीक काम करना। उ० इस कसीदे को काढ़ना आँखों का तेल निकालना है।

आँखों का नूर–बहुत प्यारा। उ० मेरी माँ आँखो का नूर है।

आँखों का परदा उठाना या खुलना–अज्ञानावस्था का रुका होना।

आँखों का परदा उठा देना–लज्जा छोड देना। उ० आजकल की औरते आँखों का परदा उठा देना ही सभ्यता का चिह्न मानती है।

आँखों का परदा हटना–ज्ञान की आँखें खुलना या ज्ञान होना। उ० जब तक आपकी आँखों का परदा न हटेगा, आप कुछ भी नही समझ सकते।

आँखो का पानी ढलना या ढल जाना–बेहया होना। उ० जिस औरत की आँखो का पानी ढल गया है, वह सब कुछ कर सकती है।

आँखो का रोना–देखने के लिए तरसना। उ० आपके लिए दिन-रात उसकी आँखे रोती रहती है और आप इसे महसूस तक नही करते।

आँखों की कसम–यदि झूठ बोलूं तो आँखें फूट जायँ। उ० आँखो की कसम, मेरे पास एक भी रुपया नही है, नही तो अवश्य दे देता।

आँखों की राह दिल में आना–दिल और आँख दोनो का बहुत प्यारा होना। उ० आँखो की राह दिल मे आने वाला तो बस एक था, अब वह भी चल बसा। इस जिन्दगी से मौत भली।

आँखों के आगे अँधेरा छा जाना या छाना–१ ससार सूना दिखाई पडना। उ० इकलौते पुत्र के मरते ही उसके आँखो के आगे अँधेरा छा गया। २ कमजोरी या अधिक कष्ट के कारण साधारण बेहोशी आ जाना। उ० ऐसी मार मारूँगा कि आँखो के आगे अँधेरा छा जायगा।

आँखों के आगे अँधेरा होना–दे० 'आँखों के आगे अँधेरा छाना'।

आँखों के आगे चाँदना–१. आँखों से स्पष्ट दिखाई देना। उ० उसकी आँखों के आगे

चाँदना है। उसे सारी बुराई-भलाई दिखाई देती है। २. न दिखाई देना। उ० तुम्हारी आँखो के आगे तो जैसे चाँदना है!

आँखों के आगे आना—१. अपने किए का फल भोगना। उ० मनुष्य जैसा करता है, वैसा उसकी आँखो के आगे आता है। २ सामने आना। उ० उतावली क्यो करते हो? एक मिनट मे सब आँखो के आगे आयेगा।

आँखों के आगे चिनगारी छूटना—१ चकाचौंध होना। उ० तेज बिजली की रोशनी की तरफ देखने से आँखो के आगे चिनगारी छूटने लगती है। २ शिथिलता आना। उ० तनिक भी चलता हूँ तो आँखों के आगे चिनगारी छूटने लगती है।

आँखों के आगे तारे छूटना—कमजोरी के कारण शिथिलता या थकावट आना। उ० इन दिनों बड़ी जल्दी आँखों के आगे तारे छूटने लगते है।

आँखों के आगे नाचना—हर समय याद रहना। उ० आप तो आजकल जिले भर की आँखो के आगे नाचते रहते है। भगवान इज्जत दे तो ऐसे।

आँखों के आगे फिरना—दे० 'आँखो के आगे नाचना'।

आँखो के आगे रखना—हर समय साथ या सामने रखना। उ० भाई क्या करूँ अब यही तो एक लड़का है, उसे हर समय आँखो के आगे न रक्खूँ तो चैन नही मिलता।

आँखों के आगे लौ छूटना—दे० 'आँखो के आगे चिनगारी छूटना'।

आँखों के तले खून उतरना—दे० 'आँखो के तले लहू उतरना'।

आँखों के तले लहू उतरना—क्रोध मे लाल हो जाना। उ० तुम जल्द से जल्द यहाँ मे चले जाओ नही तो झगड़ा हो जायगा। देखते नही, उसकी आँखों के तले लहू उतर गया है।

आँखों के तारे होना—अत्यन्त प्रिय होना।

आँखों के नाखून लेना—शऊर सीखना। उ० पहले आँखो के नाखून लो तो बाते करना।

आँखों के पाँवड़े बिछाना—आतुरता तथा प्रेम से प्रतीक्षा करना।

आँखों के बल—शौक से, सहर्ष। उ० वह आँखो के बल जाने को तैयार है।

आँखों के बल चलना—ध्यान से देखकर चलना। उ० आँखो के बल चलो, रास्ते मे काँटे बहुत है।

आँखों को खो बैठना—न दिखाई देना, आँखो का जाती रहना। उ० मैं अब आँखो को भी खो बैठी, भला ऐसे का संसार में कौन सहारा है?

आँखों को पकड़ना—आकर्षित होना।

आँखों देख कर—जान-बूझकर। उ० आँखों को देख कर मै जहर नही पी सकता।

आँखों देख के—जान बूझकर। उ० आँखो देख के मै पाप का काम नही कर सकता।

आँखों देखते—दे० 'आँखो देख के'।

आँखों देखा न कानों सुना—विचित्र, नया। उ० मैने तो ऐसी मशीन न कभी आँखो देखी, न कानो सुनी।

आँखों देखी—सामने की। उ० सुनता तो शायद विश्वास न करता पर आँखो देखी को कैसे इनकार करूँ?

आँखों देखी कहना—सामने की बात कहना। उ० यह मै आँखो देखी कह रहा हूँ, कोई झूठ कैसे साबित करेगा?

आँखों पर ऐनक लगाना—देखने की तमीज हासिल करना। उ० पहले आँखो पर ऐनक लगाओ तो मुझे देखना।

आँखों पर ठीकरे रख लेना—१ जान-बूझकर अनजान बनना। उ० आँखो पर इस प्रकार ठीकरे रख लेना तो मैंने नही देखा! क्या तुम देखते नही कि तुम्हारी शीला जाने किसके साथ घूमने जाती है? २ बेहया होना। उ० उसे क्या शर्म? उसने तो आँखो पर ठीकरे रख लिए है!

आँखो पर परदा डालना—१ जान-बूझकर अधा बनना। उ० तुम अपनी आँखो पर परदा डाल लो, पर मुझसे बर्दाश्त नही हो सकता। २ अधा बनाना, मूर्ख बनाना। उ० मेरी आँखो पर आप पर्दा नही डाल सकते।

आँखों पर परदा पड़ना—अधा होना दिखाई न देना। उ० खरीदते वक्त आँखों पर परदा पड़ा था क्या, जो ऐसी सड़ी दाल ले आए?

आँखों पर बैठाना—बहुत सत्कार करना। उ० जब भी मै उसके यहाँ जाता हूँ, वह मुझे अपनी आँखो पर बैठा लेता है।

आँखो पर रखना—दे० 'आँखो पर बैठाना'।

आँखो पर हाथ रखना—जान-बूझकर अधा बनना। उ० खबरदार, यहाँ ऐसी हरकत नहीं

हो सकती। मै अपनी आँखों पर हाथ नही रख सकता।

आँखो में आँखें गड़ाना या डालना—आँखो से मोह लेना। प्रेम करना। उ० जब जाना ही है तो आँखो मे आँखे क्यो डालते हो ?

आँखों में आँख पड़ना—प्रेम होना। उ० क्यो छिपाते हो। क्या मुझे ज्ञात नही है कि तुम दोनो की आँखों मे आँखे पड गई है।

आँखों में कहना—इशारा करना। उ० अगर अधिक लोग हो तो किसी तरह आँखो मे कह देना, बात जरूरी है, यो मत लौटना।

आँखों में कूट-कूट कर मोती भरना—आँखो का अत्यन्त सुन्दर होना। उ० उसकी आँखो मे तो जैसे कूट-कूट कर मोती भरा है।

आँखों में खटकना—नज़रो मे बुरा लगना। उ० आप उसी दिन से उसकी आँखो मे खटकने लगे है।

आँखों में खाए जाना—इशारे मे धमकाना, आँख दिखाकर डराना। उ० आँखो मे क्यो खाये जाते हो, जो कहना हो साफ कहो।

आँखों में ख़ाक की चुटकी डालना—१ कभी थोड़ी भी भलाई का कार्य न करना। उ० ऐसे लपटो की आँखो मे खाक की चुटकी डालना ही अच्छा है। २ दे० 'आँख मे धूल झोंकना'।

आँखों में ख़ार होना—दे० 'आँखो मे खटकना'।

आँखों में ख़ून उतरना—गुस्से से आँखो का लाल होना। उ० आपको देखते ही उसकी आँखो मे खून उतरने लगता है।

आँखों में गड़ना—१ बुरा लगना। उ० उसकी उन्नति सबकी आँखो मे गड़ती है। २ आँखो को प्यारा लगना। आँखो मे जम जाना। उ० उसकी सूरत आँखो मे गड़ गई है।

आँखों में गिरना—किसी की दृष्टि मे गिर जाना।

आँखों में घर करना—हृदय मे स्थान करना। उ० मुझे सब पता है। वह तुम्हारी आँखो मे घर कर गई है।

आँखों में चरबी छाना—घमण्ड में चूर होना। उ० अच्छा, आपकी आँखों में भी अब चरबी छा रही है ! कल के दिन भूल गए क्या ?

आँखों में चुभना—१. दे० 'आँखो मे गड़ना'। २. पसद आना। उ० उसका बैग मेरी आँखो में चुभ गया है। उसे मैं अवश्य लूँगा।

आँखों में चोब आना—आँखे लाल होना (चोट आदि के कारण)।

आँखों में जगह करना—किसी के दिल में सम्मान की जगह पाना। उ० कांग्रेसियों ने अपने त्याग से जनता की आँखो मे जगह कर लिया था, पर अब वह बात जाती रही।

आँखों में जरा भी मैल न होना—गलती करके दड पाने पर भी धृष्ट होना। बेहया होना। उ० उसकी आँखों में तो जरा भी मैल नहीं है। कल उसी काम के लिए पीटा गया और आज फिर कर रहा है।

आँखों में जान आना—१. ठंडा ज्ञात होना। उ० धूप मे छाए मे जाओ तो आँखो मे जान आए। २ आँखो का आरोग्य होना। उ० अस्पताल की दवा से तो कुछ आँखो में जान आ रही है।

आँखो मे डर न होना—तनिक भी लाज या डर न होना। उ० उसकी आँखो में डर नही है, चाहे जो कहो।

आँखों में तरावट आना—ताज़गी आना। उ० भूख लगी है, खाना खालूँ तो आँखो में तरावट आ जाय।

आँखों में तितलियाँ उड़ना—कमजोरी से थक जाना।

आँखों में तीसी फूलना—दे० 'आँखो में सरसों फूलना'।

आँखों मे धूल झोंकना—१. चालबाजी से हानि करना। उ० आँखो मे धूल झोक कर उसने मेरा सब कुछ ले लिया। २ धोखा देना। उ० तुम मेरी आँखो मे धूल नही झोक सकते।

आँखों में नमक देना—१ दे० 'आँखो मे धूल झोंकना'। २ अधा बनाना। उ० जरा सँभाल कर देखा करो, नही तो वह आखो मे नमक दे देगा। ३ बुराई करना। उ० जो बुरा है, उसकी आखों मे नमक दो।

आँखो में नासूर हो जाना—१. नेत्रो से सर्वदा पानी गिरना। उ० ज्यादा धुआँ मे रहने से उसकी आँखों में नासूर हो गया है। २. आखो के कोनो का पक जाना या सड़ जाना।

आँखों में नाचना, फिरना, बसना, रमना, रहना—(किसी की) बराबर स्मृति आना।

आँखों में नूर होना—दिखलाई देना। उ० जब तक आँखो में नूर है, कोई देखने से नहीं रोक सकता।

आँखों में नोन झोंकना—दे० 'आँखो मे नमक देना'।

आँखों में पालना–सस्नेह पालन करना। उ० मैंने उसे आँखों में पाला है और तुम मारते हो।

आँखों में फिरना–सदा स्मरण रहना। उ० उसकी प्रेमभरी बातें मेरी आँखो में फिरा करती है।

आँखों में फीका लगना–पसद न आना, उदास लगना। उ० एक भाई साहब के न आने से सारा उत्सव आँखो में फीका लगता है।

आँखों में बसना–दे० 'आँखों में जगह करना'।

आँखों में बात होना–आँखो से ही बातचीत होना, इशारे से बात होना। उ० उन दोनों में तो अब आँखो मे बात होने लगी है।

आँखों में मछली तैरना–रोना, आँसू आना।

आँखों में मिर्च झोंकना–दे० 'आँखो में नमक देना'।

आँखों में मुरव्वत होना–लिहाज या शील होना। उ० जिसकी आँखो में मुरव्वत नहीं है, वह भी क्या आदमी है ?

आँखों मे मोहिनी होना–आँखो मे ऐसी शक्ति होना कि आदमी देखते ही मोह जाय। उ० तुम्हारी आँखो मे मोहिनी है, देखने पर फिर तुम्हे छोडने को जी नही चाहता।

आँखो में रसीलापन होना–आँखो मे दिल आकर्षित करने की शक्ति होना। उ० तुम्हारी आँखो मे तो रसीलापन है, सभी को खीच लेते हो।

आँखों में रात कटना–पूरी रात जगते हुए बीतना। उ० आज तो तकलीफ के मारे आँखो मे रात कटी।

आँखों मे रात काटना–रात भर जागते रहना। उ० आज तो मरीज़ के पास बैठे-बैठे आँखो में रात कटी।

आँखो में शील होना–लिहाज़ या शर्म होना। उ० उसकी आँखो मे तो शील का नाम ही नही है; मुँहफट उत्तर देता है।

आँखो में समाना–१ आँखो मे बसना। उ० कृष्ण मेरी आँखो मे समा गए है। २ बहुत प्यारा होना। उ० वह तो तुम्हारी आँखो मे समाया हुआ है।

आँखों में सरसों फूलना–खुशी होना। गद्गद् होना। उ० अपना परीक्षा-फल देखकर उसकी आँखो में सरसो फूल गयी।

आँखों में सरूर होना–नशा आदि से आँखों का लाल होना। उ० देखो आँखो में सरूर है, इसने जरूर मद्यपान किया है।

आँखों से–स्वय। उ० मैने कलकत्ता म्युज़ियम आँखो से देखा है।

आँखों से उतरना–१. अच्छा न लगना। उ० यह आदमी तो आज सभी की आँखो से उतर गया है। २ प्रतिष्ठा न रहना। उ० वह बेईमानी करने से ही सबकी आँखो से उतर गया है।

आँखों से एक आँसू न निकलना–थोडा भी दुःख न होना। उ० इतना प्रेम दिखाता था परन्तु उसके मरने पर आँखों से एक आँसू भी न निकला।

आँखों से ओझल होना–सामने से गायब होना। उ० आँखो से ओझल होकर वह बच नही सकता।

आँखों से कबूल होना–स्पष्ट हाँ न करना, परन्तु हृदय से स्वीकार करना। उ० सभी को आप का प्रस्ताव आँखो से कबूल है।

आँखों से कभी-कभी देखना–संयोगवश कभी देखने को मिल जाना। उ० इन ग़रीबो ने ऐसी चीजे आँखो से कभी-कभी देखी होगी।

आँखो से करना–दिल लगा कर काम करना। उ० वह बेगारी नही करता है, बल्कि काम आँखो से करता है।

आँखो से गिरना–दे० 'आँखो से उतरना'।

आँखो से चिनगारी छूटना–१. क्रोध से आँखे लाल हो जाना। उ० इतनी सी बात पर आपकी आँखो से चिनगारी छूटने लगी ! अरे जरा शात भी तो रहिए। २. अत्यधिक कमजोरी होना। उ० दो कदम भी चलता हूँ तो आँखो से चिनगारी छूटने लगती है।

आँखों से ज़माना देखना–हर तरह के ज़माने का अनुभव होना। बहुत अनुभव होना, बहुत अनुभवी होना। उ० उसने आँखो से ज़माना देखा है, उसे भला तुम क्या मूर्ख बना सकते हो ?

आँखों से जान निकलना–प्रतीक्षा की हद होना। उ० आज तो आपके लिए आँखो से जान निकल गई।

आँखों से न देखना–बिलकुल पसंद न करना। उ० और तो और, मैं तो ऐसी चीज आँखों से भी न देखूँगा।

आँखों से रस बरसना–स्नेह से देखना।

आँखों से लगाना—बहुत प्यार करना, हृदय से लगा लेना। उ० आपका पत्र उसने अपनी आँखो से लगाया।

आँखों से लहू टपकना—बहुत दुःख होना। उ० भारत की वर्तमान दशा देख कर आँखों से लहू टपकता है।

आँखों से वह देखना जो कभी न देखा—अजीबो-गरीब चीज़ देखना। उ० आज तो आँखो से वह जमाना देख लिया, जो कभी न देखा था।

आँखों ही आँखों में—केवल संकेत से। उ० आँखो ही आँखो मे वे बात करते है।

आँच आना—ज़रा भी कष्ट मिलना। उ० चन्द्रगुप्त के समय मे युद्ध के समय भी कृषको को आँच नही आती थी।

आँच का खेल—भयावना कार्य। उ० राज्य के प्रति विद्रोह करना आँच का खेल है। न जाने क्या परिणाम हो?

आँच खाना—१ गर्म होना। उ० ज्यादा आँच खाने से जल जाएगा। २ क्रोधित होना।उ० इतनी सी बात पर आँच न खाओ, नही तो ठीक कर दूँगा।

आँचल दबाना—दूध पीना। उ० उसके बच्चे की तबियत बहुत खराब है। वह कई दिनो से आँचल भी नही दबा रहा है।

आँच दिखाना—१. बरबाद करना। उ० वह निर्दोष है, उसे आँच न दिखाओ। २ गर्मी पहुँचाना। उ० इसे थोडी सी आँच दिखा दो।

आँच न आने देना—ज़रा भी आघात या सदमा न पहुँचने देना। उ० इतना सब हुआ परन्तु उसने अपने आदमियो पर आँच तक न आने दी।

आँचल दबाना—स्तन मुँह मे लेकर दूध पीना। उ० बच्चा तो इतना कमजोर है कि आँचल भी नहीं दबा सकता।

आँचल देना—लडके को दूध पिलाना। उ० बच्चे को हर समय आँचल देना ठीक नही है। समय से दूध पिलाना चाहिये।

आँचल पर बैठाना—पूर्णरूप से आवभगत करना। उ० वह तो अपने आगंतुकों को आँचल पर बैठाती है।

आँचल पसारना—१ भिक्षा माँगना। उ० बुढ़िया क्षमा-दान के लिए आँचल पसारती है। २. देवता या किसी बड़े से गिड़गिड़ा कर कुछ माँगना या किसी बात के लिये प्रार्थना करना।

आँचल फाड़ना—१. पर्दानशीन औरत का दूसरों से बात करना। उ० नौकरो के सामने बहू आँचल नही फाडती है। २. टोटका करना। उ० दूसरों के बच्चे के लिये क्यों आँचल फाड़ती हो?

आँचल बिछाना—दे० 'आँचल पर बैठाना'।

आँचल मुँह पर लेना—घूँघट निकालना। उ० बहू ग़ैर को देखते ही मुँह पर आँचल ले लेती हैं।

आँचल में बाँधे रहना—हर समय साथ रखना। उ० क्या उस आवारे को आँचल मे बाँधे रहती हो? कोई देखेगा तो क्या कहेगा?

आँचल में बात बाँधना—कभी न भूलना, अच्छी तरह याद रखना। उ० यह बात आँचल मे बाँध रक्खो कि गरीबों की हर समय मदद करनी चाहिये।

आँचल में सात बातें बाँधना—१ टोना करना। २ जादू करना।

आँचल लेना—स्वागत करना। उ० अतिथियो की अच्छी तरह आँचल लो।

आँचल सँभालना—देह को ठीक से ढकना। उ० औरतो को घर से बाहर आँचल सँभाल कर चलना चाहिये।

आँच से खेलना—जान के जोखिम का कार्य करना। उ० स्वतंत्रता संग्राम मे भाग लेना, आँच से खेलना था।

आँट डालना या डाल देना—दुश्मनी करवाना। उ० तुमने व्यर्थ ही हम दोनो मे आँट डाल दी।

आँट पड़ना—मनमोटाव होना। उ० बात ही बात मे आँट पड़ गयी।

आँट पर चढ़ना—घात पर चढना। उ० अच्छा आज तो जाओ, जब आँट पर चढोगे तो बतलाऊँगा।

आँट लगाना—अवरोध पैदा कर देना। उ० काम करीब-करीब पूरा हो चुका है, अब यदि आँट लगाओगे तो बड़ी गड़बड़ी होगी।

आँट होना—खटपट होना, दुश्मनी होना। उ० आजकल दोनो मे आँट हो गई है, नही दाँत-काटी रोटी खाते थे।

आँटी काटना—जेब काटना। उ० मेले में आँटी काटने वाले बहुत रहते है।

आँटी गर्म करना—१. घूस देना। उ० आजकल तो आँटी गर्म करने का ही जमाना है।

२ घूस लेना । उ० उसने आँटी गर्म करके तो मेरा काम किया ।

आँटी गर्म होना–रुपया मिलना । उ० आजकल तो खूब आँटी गर्म हो रही है ।

आँड़े-बाँड़े खाना–इधर उधर मारा-मारा फिरना । उ० यह लड़का तो मुझे बिल्कुल पसद नही । दिन भर आँडे-बाँडे खाता फिरता है ।

आँते कुलकुलाना–खूब भूख लगना । उ० मेरी आँते कुलकुला रही है, मुझे कुछ खाने को दो ।

आँते कुलबुलाना–दे० 'आँते कुलकुलाना' ।

आँते गले पड़ना, आँतें गले में आना–बहुत परेशानी में होना । उ० आपकी वजह से मेरी आँते गले मे आ गई है ।

आँते मुँह में आना–दे० 'आँते गले मे आना' ।

आँते समेटना–भूख सहना । उ० आज तो व्रत का दिन है । आँतें समेटनी ही पड़ेगी ।

आँते सूखना–दे० 'आँते कुलबुलाना' ।

आँतों का बल खुलना–भर पेट भोजन करना । उ० आज महीनो के बाद मेरी आँतो का बल खुला है ।

आँतों का बल खुलवाना–भर पेट खिलाना ।

आँतो मे बल पड़ना–पेट मे दर्द होना । उ० उसकी कहानी सुन कर हँसते-हँसते आँतो मे बल पड़ गया ।

आँतों से बातें निकाल लेना–किसी के मन की बात निकलवा लेना ।

आँधी उठाना या उठा देना–१ धूम-धाम मचाना । उ० सीधे १०-५ को लेकर शादी कर आओ, क्यों आँधी उठाते हो ? २ बवाल पैदा करना । उ० तुम तो जहाँ भी जाते हो, आँधी उठा देते हो ।

आँधी के आम–बहुत सस्ती चीज । उ० इन मिठाइयों को आँधी के आम न समझो । १६) सेर खरीदी गई है ।

आँधी रोग होना–बहुत दूर होना, रास्ता पूरा न होना । उ० उस दिन तो रास्ता आँधी रोग हो गया था ।

आँधी हो जाना–बहुत तेज़ चलना । उ० तुम्हारे साथ मै नही जाऊँगी । तुम तो रास्ते मे आँधी हो जाते हो ।

आँवल नाल गड़ना–मातृभूमि होना । उ० भारत में मेरा आँवल नाल गडा है । तुम्हारा आँवल नाल गड़ा है क्या, जो रोज़ वहाँ पहुँचे रहते हो ?

आँसुओं का तार न टूटना–दे० 'आँसुओं का तार बँधना' ।

आँसुओं का तार बँधना या बँध जाना–बहुत रोना । बहुत आँसू गिरना । उ० स्त्री के मर जाने मे उसके आँसुओं का तार बँध गया है, जरा सान्त्वना तो दे आओ ।

आँसुओं की झड़ी बँधना–दे० 'आँसुओं का तार बँधना' ।

आँसुओं से मुंह धोना–दे० 'आँसुओं का तार बँधना' ।

आँसू गिराना–रोना । उ० अब आँसू गिराना बेकार है, जो होने को था, वह तो हो ही गया ।

आँसू डबडबाना या डबडबा आना–रोने को होना । उ० तुम्हारी याद आते ही आँखों मे आँसू डबडबा आते थे ।

आँसू ढालना–दे० 'आँसू गिरना' ।

आँसू थमना–रुलाई बन्द होना । उ० मेरे बहुत समझाने पर तो उसके आँसू थमे है ।

आँसू निकल पड़ना–सहसा रो देना । उ० उसकी याद आते ही आँसू निकल पडे ।

आँसू का घूंट पीकर रह जाना–हृदय का दुःख प्रकट न कर सकना । दुखी होने पर भी न रोना । आँसुओं को रोक लेना । उ० उस दिन मैं सबके होने से वहाँ आँसू पीकर रह गया नही तो बहुत रोता ।

आँसू पोछना–दिलासा देना । सांत्वना देना । उ० उसका लड़का मरा है । जरा आँसू तो पोछ आओ ।

आँसू बहाना–रोना । उ० व्यर्थ मे आँसू न बहाओ । आँख खराब हो जाएगी ।

आँसू भर लाना–रोने लगना । उ० क्या औरतो की तरह बात-बात पर आँसू भर लाते हो ?

आइना होना–१ साफ-साफ होना । उ० देखिए तो इनके पूछ लेने पर सारी बात आइना हो गई । २ स्वच्छ हो जाना । चमकने लगना । उ० देखो तो, एक उसने अपने बर्तन साफ किये है । कैसे आइना हो गए है ।

आइने में मुंह देखना–१ अपनी सूरत देखना । उ० आइने में मुँह देख कर उससे संबंध करो । २. अपनी योग्यता देखना । उ० पहले आइने मे मुँह देखो तब इस नौकरी के फेर में पडो ।

आई गई होना–दे० 'आए गए होना' । परिचित हो जाने से महत्व जाता रहना । उ० अब तो वह बात आई-गई हो गई । उसकी तरफ भला कौन ध्यान देगा ?

आई बाई पचना–दे० 'बाई पचना' ।

आए-गए होना–१. पुराना होना । उ० अब तो आप यहाँ के लिए आए गए हैं । २. खतम

होना। उ० रोज़ ही कितनी चीजें आई-गई होती है। आप जैसे कितने ही आए और गए।

आक की बुढ़िया—बहुत वृद्ध स्त्री। उ० उस आक की बुढिया को कौन नौकरी देगा ?

आकबत बिगड़ना—परलोक बिगडना।

आकबत में दिया दिखाना—परलोक मे काम आना। उ० अरे एक पाव सीधा तो दे देने दो। यही तो आकबत में दिया दिखाएगा।

आकाश के तारे तोड़ लाना—१ असम्भव कार्य कर डालना। उ० तुम तो पास होकर आकाश के तारे तोड लाए। २ बहुत बडा काम कर डालना।

आकाश खुलना—१. रास्ता साफ होना। उ० अब तो शायद आकाश वहाँ के लिए खुल गया। २. बदली न रहना। उ० दो दिन बाद तो आकाश खुल ही जायगा।

आकाश चूमना—१ गगनचुंबी होना। उ० जयपुर का हवा महल आकाश चूमता है। २ बहुत बढ कर बाते करना।

आकाश छूना—दे० 'आकाश चूमना'।

आकाश पर दिया जलाना—ऐंठना, गर्व करना। उ० चार पैसे हो गए तो आप आकाश पर दिया जलाने लगे।

आकाश-पाताल एक करना—१ कोई प्रयत्न उठा न रखना। उ० कोरिया का युद्ध बंद करने के लिए नेहरू ने आकाश-पाताल एक कर दिया। २ बढ़-बढ कर बाते करना। उ० यों तो वह आकाश-पाताल एक करता रहता है, परन्तु समय आने पर सब भूल जाता है।

आकाश-पाताल का अन्तर होना—बहुत बडा अन्तर होना। उ० तुम्हारे और मेरे सिद्धान्तो मे आकाश-पाताल का अन्तर है।

आकाश-पाताल के कुलाबे मिलाना—दे० 'आकाश-पाताल एक करना'।

आकाश-पाताल सोचना—बहुत दूर-दूर तक सोचना।

आकाश बाँधना—१ असम्भव बात करना। उ० सन् ४७ के पहले भारत की स्वतन्त्रता की बात करना आकाश बाँधना ही था। २ असम्भव काम करना। ३ बहुत दौड-धूप करना।

आकाश से बातें करना—१ बहुत ऊँचा होना। उ० न्यूयार्क के भवन आकाश से बातें करते है। २. बहुत बढ़-बढ कर बात करना। उ० तुम्हारा आकाश से बातें करना अभी निकल जायगा।

आखिर करना—१ पूरा करना। उ० आज मैं इस काम का आखिर करूँगा। २. मार डालना। उ० बिना तुम्हारा आखिर किये मुझे चैन नही।

आख़िर को—अंत में। उ० कब तक छिपेंगी कैरियाँ पत्तों की आड़ में। आखिर को आम बन कर बिकेंगी बाजार मे।

आख़िरत सँवारना—आकबत सँवारना, परलोक बनाना। उ० आख़िरत सँवारने के लिए हज करना जरूरी है। (इस मुहावरे का प्रयोग केवल मुसलमान करते है।)

आख़िरी बहार—१ ढलती जवानी। उ० आखिरी बहार है, जो मौज लेना हो ले लो। २ किसी काम के करने का आखिरी मौका।

आखूर की भरती—१. बलाय-बलाय या निकम्मी चीजें। उ० आखूर की भरती मेरे ही यहाँ भेजनी थी। २ निकम्मे आदमियों का समूह। उ० यह आखूर की भरती कहाँ से बटोर लाए ?

अखोर की भरती—दे० 'आखूर की भरती'।

आख़्ता करना—बधिया करना। उ० इस बैल का आख्ता कर दो।

आग उगलना—१ गोले बरसाना। उ० उसकी फौजें आग उगल रही थी। २. जोशीला एवं बगावत की भावनाओं से युक्त भाषण देना। उ० प० परमानंद भाषण क्या देते थे, आग उगलते थे। ३. असह्य बाते कहना। उ० आग न उगलो, मै खुद जा रहा हूँ।

आग उठाना—लड़ाई-झगडा मोल लेना। उ० तुम इतनी शांत-प्रकृति होकर क्यों आग उठाते हो ?

आग करना—१ आग जलाना। उ० चाय के लिए दमकले मे आग करो। २ अधिक गरम करना। उ० तुमने तो इसे आग कर दिया।

आग का पुतला—बहुत क्रोधी। उ० नादिरशाह आग का पुतला था।

आग का बाग—१. आतिशबाजी। उ० आज नुमाइश में आग का बाग देखने चलो। २ सुनार की अँगीठी।

आग के मोल—बड़ी महँगी। उ० आजकल तो सारी वस्तुएँ आग के मोल बिकती हैं।

आग को हवा देना—क्रोध या आवेग को और बढ़ाना।

आग खाना–१. उपद्रव करना । उ० बहुत आग न खाओ । २. अपना नाश स्वयं करना ।

आग खाना अंगार हगना–जैसा करना वैसा फल पाना । उ० इसके आफत में पड़ने का मुझे किंचित भी दुःख नहीं है । जो आग खायेगा, वह अवश्य ही अंगार हगेगा ।

आग ठंडी पड़ना–क्रोध शांत होना ।

आग तलवे से लगाना–बहुत क्रोधित होना । उ० बात जानते ही उसके तलवे से आग लग गई ।

आग दिखाना–आग की थोड़ी गर्मी से गर्म करना । उ० घी निकल नहीं रहा है क्या ? जरा आग दिखा दो ।

आग देना–१ नष्ट करना । उ० उन्हें आग न दो । २ गर्म करना । उ० पानी को आग दे दो । ३ आग लगाना, दूर करना, हटाना । उ० रत्नावलि पति राग रंगि दैं विराग में आगि ।

आग निकलना–१ बहुत गर्म होना । उ० अब तक पानी से आग निकल रही है । २ घर्षण से आग पैदा होना । उ० जंगल में पेड़ों से आग निकलती है ।

आग पड़ना–१ महँगी होना । उ० आजकल तो हर जगह आग पड़ रही है । २ बहुत गर्मी पड़ना ।

आग पर आग डालना–कष्ट पर कष्ट देना । उ० यों ही मेरा सारा धन चोरी चला गया था, आज डाकुओं ने बाकी को भी लूट लिया । इसी को आग पर आग डालना कहते है । मेरे पास तो यों ही एक पैसा नहीं है, तुम नालिश करके आग पर आग न डालो ।

आग पर घी डालना–किसी के क्रोध को और भड़काना । उ० आप चुप रहिए, और बोल कर आग पर घी डालने की आवश्यकता नहीं ।

आग पर पानी डालना–१ समझा-बुझा कर शांत करना । उ० हमने जाकर आग पर पानी डाल दिया, नहीं तो आज बड़ा तूल हो जाता । २ झगड़ा खतम कर देना या दबा देना ।

आग पर लोटना–शोक या विरह में व्याकुल होना । उ० वह उसके बिना आग पर लोट रही है ।

आग पानी का बैर–जन्म की शत्रुता । अमेरिका और रूस में तो आग पानी का बैर है ।

आग पानी में लगाना–१ शांत स्थान में झगड़ा-फसाद कराना । उ० वह तो पानी में आग लगाता फिरता है, और इसी की रोटी खाता है । २ असंभव काम करना ।

आग फाँकना–१. हानि उठाना । उ० व्यापार क्या है जब कि हमेशा आग ही फाँकना पड़ता है । २. जान-बूझकर अपने को खतरे में डालना या अपनी बुराई करना । ३. डींग हाँकना ।

आग फूँकना–१. बहुत क्रोधित होना । उ० तुम ऐसी बातें ही करते हो कि शरीर में आग फूँक दे । २. बहुत गर्मी होना । उ० आज तो आग फूँक दी है ।

आग फूँकना या फूँक देना–१ क्रोध को और बढ़ाना । उ० आग को न फूँको, नहीं तो खून हो जायगा । २ गुस्सा पैदा करना । ३. गर्मी करना । उ० आज की थोड़ी वर्षा ने तो और आग फूँक दी ।

आग फूस का बैर होना–जन्म की या स्वाभाविक शत्रुता । उ० बिल्ली और चूहे में तो आग फूस का बैर है ।

आग फूस की मैत्री–दो विरोधी प्रकृति के मनुष्यों की मित्रता जो सफल नहीं हो सकती । उ० तुम दोनों चाहे जैसे भी रहो मैं जानता हूँ कि आग फूस की मैत्री चल नहीं सकती ।

आग बढ़ना–१ गुस्से का बहुत बढ़ जाना । उ० इस समय बातें न करो, नहीं तो आग बढ़ जायगी । २ लड़ाई-झगड़े का और विकट रूप धारण करना । उ० तुम्हारे ही बोलने से आग बढ़ी है ।

आग बन जाना–दे० 'अंगार बनना' ।

आग बबूला बनना–दे० 'आग बबूला होना' ।

आग बबूला होना–अत्यन्त क्रोधित होना । उ० कमजोर आदमी बहुत जल्द आग बबूला हो जाते हैं ।

आग बरसना–खूब लू चलना । उ० आग बरस रही है । इस गर्मी में कौन निकलेगा ?

आग बरसाना–१ गोलियाँ चलाना । उ०सिपाहियों ने शत्रु के किले पर खूब आग बरसाई । २ बहुत क्रोधित होकर बिगड़ना । जली-कटी सुनना । उ० आग बरसाने में आप बड़े तेज है । ३ बहुत गर्मी देना । उ० आजकल तो सूरज आग बरसा रहा है ।

आग बुझना–१ लड़ाई-झगड़ा शांत होना । उ० बड़ी देर के बाद तो आग बुझी । २. भूख

शांत होना। उ० जब कुछ पेट में जाय तो आग बुझे।

आग बुझाना या बुझा लेना–१. बदला चुकाना। उ० कहीं अकेले में मिल गया तो अपनी आग बुझा लूँ। २. अपने हृदय को शांत कर लेना या अपनी इच्छा पूर्ण कर लेना।

आग बोना–१. आग लगाना, झगड़ा लगाना। उ० खूब आग बो लो, पर अगर उन दोनो मे किसी को भी पता चला तो तुम्हारी खैर नही। २ चुगली खाना।

आग भड़कना–लडाई पैदा होना। उ० दोनो भाइयो मे आजकल खूब आग भडकी हुई है।

आग भड़काना–झगडा लगाना। उ० तुमने ही यह आग भडकाई है, नही तो भला उसे क्या पता था ?

आग भभूका होना–गुस्से से लाल होना। उ० बात सुनते ही वह आग भभूका हो गया। यदि मै न रहता तो खून हो जाता।

आग भी न लगाना–तुच्छ समझना। कोई मूल्य न करना। उ० वह अपने को क्या समझता है ? मै तो उसके धन मे आग भी नही लगाऊँगा।

आगम बाँधना–आगे की सोचना। भविष्य के बारे मे प्रोग्राम बनाना। उ० हमारा तो आगम बाँधना हमेशा पूरा होता है।

आग मे आग डालना–व्यर्थ काम करना।

आग में ईंधन डालना–विरोध, लडाई या क्रोध को और बढने का कारण उपस्थित करना।

आग मे उतरना–किसी भयकर झगडे मे भाग लेना। उ० उनके लिए तुम क्यो आग मे उतरते हो।

आग मे करना–दूर फेकना नष्ट करना। उ० आग मे करो ऐसे आदमी को। मै उसे नही बुला सकता।

आग में कूदना–आफ़त मे पड़ना, जान-बूझकर आफत मोल लेना। उ० उस चोर की जमानत करके आप व्यर्थ मे आग मे न कूदे।

आग में घी डालना–दे० 'आग पर घी डालना'।

आग में झोंकना–सकट मे डाल देना। उ० दूसरे के लडके को तो सभी आग मे झोंकते है, अपने को झोंको तो समझें।

आग में पाँव डालना–जान-बूझकर खतरे मे पडना।

आग में पानी डालना–झगडा शांत करना। उ० दोनों में घमासान युद्ध हो जाता पर उस बूढ़े बेचारे ने आग में पानी डाल कर बड़ा उपकार किया।

आग में पेशाब करना–दे० 'आग मे मूतना'।

आग में मूतना–उत्पात करना। उ० यह तुम्हारा आग मे मूतना तुम्हें खाकर रहेगा। रावण और कंस की कहानी भूल गये क्या ?

आग लगना–१. डाह या कुढन होना। उ० जाने क्यो किसी की बढती देखकर आग लग जाती है। २ क्रोधित होना। उ० बेइज्जती की बाते सुनते ही शरीर मे आग लग गई। ३ महँगी होना। उ० सब चीजो मे तो आग लगी है। ४ हृदय के किसी उद्‌गार का उमडना। उ० पत्र पाते ही दिल मे आग लग गई। ५ बरबाद होना। उ० उसके धन मे आग लगे जो निर्धनो को नही देता। यह एक गाली भी है, जिसका प्रयोग स्त्रियाँ करती है। उ० आग लगे ऐसे मकान मे।

आग लगा कर तमाशा देखना–झगडा पैदा करके अपना मनोरजन करना या मौज लेना। उ० आग लगा कर तमाशा देखना दुष्टो का काम है।

आग लगाकर पानी को दौड़ना–झगड़ा पैदा करके फिर उसे शात करने की कोशिश करना। उ० आप ही ने तो हम दोनो को लडाया, और फिर अच्छा बनने के लिए शात कर रहे है। यह आग लगाकर पानी को दौडना ठीक नही है।

आग लगाना–१ उपद्रव मचाना। उ० कम्युनिस्टों ने तो पूर्वी जिलों मे आग लगा दी है। २ पेट मे गर्मी पैदा करना। उ० गर्मी मे चाय पी लो। बदन मे आग लगा दी। उ० व्याकुलता होना। उ० प्रेमिका के दिल मे प्रेमी बिना आग लगी है। ४ त्याग देना। उ० ऐसे स्कूल मे आग लगाकर दूसरी जगह चलो। ५ झगड़ा बढा देना। उ० तुमने तो उसकी शिकायत करके और भी आग आग लगा दी। ७ चुगलखोरी करना। उ० उसके आग लगाने से ही तो उन्होने तुम्हे निकाल दिया है। ८ नष्ट-भ्रष्ट करना। उ० बको न, नही तो तुम्हारे घर मे आग लगा कर चला जाऊँगा।

आग लगे पर कुँआ खोदना–ऐन मौकै पर विपत्ति निवारण का प्रयत्न करना। उ० सारी गर्मी बीत गई परन्तु तुमने घर का कोई प्रबन्ध नही

किया। अब बरसात आ गई तो आग लगे पर कुँआ खोदने चले हो !

आग लगे मेंह मिलना–समय पड़ने पर किसी काम के योग्य वातावरण होना। उ० परीक्षा की तैयारी कर ही रहा था कि उसके भाई भी आ गए, इसी को आग लगे पर मेंह मिलना कहते हैं।

आग लेने आना–उल्टे पाँव लौटना, तुरत लौटना, बहुत थोड़ी देर के लिए आना, तुरंत जाने के लिए आना। उ० आग लेने आना हो तो मेरे पास न आया करो।

आग से खेलना–कोई ऐसा काम करना, जो अपने लिए बहुत ही घातक हो।

आग से पानी होना–क्रोध शांत होना। शांत हो जाना। उ० बेचारा मेरा बहुत लेहाज करता है। मेरे समझाते ही वह आग से पानी हो गया।

आग होना–गर्म होना। उ० बात-बात पर तो आप आग हो जाते है, कुछ आदमियत भी है या नही ?

आगा तागा लेना–आदर सत्कार करना। उ० आगा तागा लेने के लिए पूरा प्रबन्ध कर दो नही तो बारात वाले क्या कहेंगे ?

आगा पीछा करना–१. हीला हवाला करना। उ० जब तुम्हारा भी जाना जरूरी है तो आगा पीछा क्यो करते हो ? २. हिचकिचाना। उ० यदि खरीदना है तो खरीद लो आगा पीछा करने से क्या लाभ ? वह यहाँ आने मे आगा पीछा कर रहा है, कोई बात है क्या ?

आगा पीछा देखना, विचारना, सोचना–भले बुरे फल पर विचार करना। उ० कोई भी काम करना हो तो उसका आगा पीछा सोच लिया करो।

आगा भारी होना–गर्भ रहना। उ० विचित्र बात है। अभी गोद का बच्चा १० महीने का भी नही हुआ और आगा फिर भारी हो गया !

आगा मारना–किसी की उन्नति मे रुकावट डालना। उ० किसी का आगा मारना कौन अच्छा कहेगा ?

आगा मारा जाना–भविष्य की उन्नति मे बाधा पहुँचाना। उ० पिता जी की मृत्यु से मेरा आगा मारा गया।

आगा रोकना–हमला रोकना। उ० आगा रोकने के लिए किसी बली को भेजो।

आगा सँभालना–सामने का प्रहार रोकना। उ० आगा सँभालने के लिए किसी मजबूत आदमी को भेजो।

आगी-पानी होना–१. बड़ा उपद्रवी होना। उ० वह तो आगी-पानी है, उसे यहाँ क्यो बुलाते हो ? २. जल्दबाज होना। ३. क्षण मे गर्म और क्षण मे ठंडा होने वाला।

आगी होना–दे० 'गर्म होना'।

आगे आगे–शनै शनै। उ० आगे आगे यह लडका और बढ़ना ही जाएगा।

आगे आना–सामने आना। उ० जैसा तुमने किया है वैसा अब आगे आएगा ही।

आगे करना–१. सामने करना। उ० वह मुझे ही आगे करके स्वयं गालियाँ देने लगा। २. विपत्ति मे फँसाना। उ० गलती दोनो की है परतु उसने तुम्ही को आगे कर दिया।

आगे का उठा–जूठा। उ० शास्त्र के अनुसार आगे का उठा भोजन कुत्ते को भी न देना चाहिए।

आगे का कदम पीछे पड़ना–अवनति होना। उ० एक वक्त ऐसा था कि इग्लैंड ससार मे सबसे शक्तिशाली था, पर अब तो उसका भी आगे का कदम पीछे पड रहा है।

आगे का कपड़ा खींचना–घूँघट काढ़ना। उ० ससुरजी आ रहे है, आगे का कपडा खीच लो।

आगे डालना–बिना प्रेम से दे देना। उ० जूठा कुत्ते के आगे डाल दो।

आगे डोलता–लडका। उ० मेरे कौन आगे डोलता है, जिसके लिए धन जमा करूँ ?

आगे धरना–अपना आदर्श बनाना। उ० गाधीजी के सिद्धान्तो को आगे धर के काम करो।

आगे-पीछे चलना–१. दो की बातें करना। २. दो विरोध की बात करना।

आगे-पीछे न होना–कुल मे कोई न होना। उ० उसके तो आगे-पीछे कोई नही है।

आगे-पीछे फिरना–१. सदा साथ रहकर खुशामद करना। उ० वह तो काग्रेसियो के आगे-पीछे फिरता है। २. सर्वदा साथ रहना। उ० उनके तो आगे-पीछे सी० आई० डी० फिरते है।

आगे-पीछे रहना–दे० 'आगे पीछे फिरना'।

आगे-पीछे होना–कुल मे और लोगों का होना। उ० हमारे आगे-पीछे तो बीसो आदमी हैं। अपनी जमीन तुम्हारे नाम क्यों लिखूं ?

आगे फिरना–दे० 'आगे डोलना'।

आगे बढ़ना–१. पथ-प्रदर्शन करना। उ० गाधी जी देश के आगे बढ़े। २ मुक़ाबिला करना। उ० चाहे मरो या जियो अब आगे जरूर बढो। ३. जाना। उ० आगे बढकर स्वागत करो। ४ प्रगति करना। उ० वह अपने काम मे आगे बढ़ता जा रहा है। ५. सामने आना। उ० आगे बढो तो मज़ा चखाऊँ।

आगे रंग लाना–१ और सुन्दर होना। उ० यह फूल आगे रंग लाएगा। २ आगे बरबाद करना। उ० शराब का पीना आगे रग लाएगा। ३ आगे बुराई पैदा करना। उ० इसकी दोस्ती आगे रग लाएगी। ४ उन्नति करना। उ० तुम्हारी पढ़ाई आगे रग लाएगी।

आगे रखना–१ पेश करना। उ० मैने तो सारी चीजे उनके आगे रख दी। २ बतलाना। उ० मैंने सारी बाते तुम्हारे आगे रख दी और अब तुम जानो तुम्हारा काम जाने।

आगे से–भविष्य मे। उ० अब तक उसके साथ घूमे, आगे से ऐसा मत करना।

आगे से लेना–अच्छी तरह आगे बढकर किसी आते हुए व्यक्ति का स्वागत करना। उ० अतिथियो को आगे से जाकर लो।

आगे होकर लेना–दे० 'आगे से लेना'।

आगो-मागो करना–मूर्खता करना। उ० आगो-मागो करना हो तो मेरे साथ काम न करो।

आज-कल करना–टाल मटोल करना। उ० देना हो तो दे दो, व्यर्थ मे आज-कल मत करो।

आज-कल में–जल्दी ही, एक-आध दिन मे। उ० वह आज-कल मे आने वाला है।

आज-कल लगना–१ मृत्यु का इंतजार होना। उ० अब तो उनकी आज-कल लगी है। २. देर होना। उ० काम मे आज-कल क्यों लगा है ? ३ टाल मटोल होना। उ० मै जानता कि काम मे उनकी ओर से आज-कल लगेगी तो उन्हें कभी न देता।

आज-कल होना–जल्दी ही होने या सामने आने की आशा होना। उ० उनके प्रसव का दिन अब आज-कल है। दो दिन और रुक जाने दो।

आज को–आज, इस समय। उ० आज को यदि गांधीजी रहते तो कांग्रेस का यह हाल न होता।

आज तक–अब तक। आज तक उसने रुपया नहीं दिया।

आज दिन–इस ज़माने मे। उ० आज दिन अमेरिका की तरह धनी देश कोई नही है।

आज मरे कल दूसरा दिन होना–मरने पर चाहे जो भी हो उसकी चिंता न होना। उ० बूढों को घर का कुछ भी ध्यान नही रहता। उनके लिए तो आज मरे कल दूसरा दिन होता है।

आ जाना–समागम मे स्खलित हो जाना। (इसका प्रयोग अनिष्ट बाजारू भाषा मे ही होता है।)

आजिज़ आना या आ जाना–तग हो जाना। उ० मै तो इस नौकर से आजिज़ आ गया।

आजिज़ होना–१. असमर्थ होना। उ० किसी सहायक बिना मै आजिज़ हूँ, नही तो कुछ कर डालता। २. परेशान होना। उ० मैं तो तुमसे आजिज हूँ।

आजिज़ी करना–गिडगिड़ाना। उ० क्या आजिज़ी करते हो, वह कभी किसी की नही सुनता।

आज्ञा माथे या सर-आँखों पर होना–आज्ञा स्वीकार होना।

आटा-आटा करना या कर देना–चूर्ण विचूर्ण कर देना। पीस डालना। उ० मारते मारते आटा-आटा कर दूँगा।

आटा-आटा होना या हो जाना–बरबाद हो जाना। टुकड़े-टुकड़े या चूर्ण हो जाना। उ० सारी मिठाई आटा-आटा हो गई।

आटा गीला होना–आफ़त का सामना होना। आफ़त पर आफत आना। उ० आजकल ज़माने भर का आटा गीला हो गया है।

आटा-दाल का भाव न मालूम होना–सांसारिक व्यवहार का ज्ञान न होना। उ० तुम क्या परदेश करोगे, तुम्हे तो आटे-दाल का भाव भी मालूम नही है।

आटा-दाल का भाव मालूम होना–होश ठिकाने होना। उ० आज ऐसी मार लगाऊँगी कि आटा-दाल का भाव मालूम हो जायगा।

आटा-दाल की फ़िक्र होना–जीविका की चिंता होना। उ० बाप मरा, अब तो तुम्हे आटा-दाल की फ़िक्र होनी चाहिए।

आटा-दाल के फेर में रहना–कमाने खाने की झंझट में पड़ना। उ० अभी तो लड़के हो बड़ा शौक सूझता है। आटे-दाल के फेर में पड़ोगे तो मै बात करूँगा।

आटा-दाल होना–१ कोई नई चीज होकर सामान्य होना । २. अत्यन्त आवश्यक होना ।

आटा माटी करना–बरबाद करना । उ० तुम ने तो उसका आटा माटी कर दिया ।

आटा माटी होना–बरबाद होना । उ० तुम्हारी ही वजह से उसका आटा माटी हुआ ।

आटे की आया–भोली-भाली स्त्री । उ० वह बेचारी दुनियादारी क्या जाने, वह तो आटे की आया है ।

आटे के साथ घुन पिसना–अपराधी के साथ निरपराधी का भी दंडित होना । उ० आटे के साथ तो घुन पिसता ही है । तुमने उसका साथ पकड़ा ही क्यो ?

आटे मे नमक–इतना कम कि जाना न जा सके । उ० उतनी ही चाल चलो, जितना आटे मे नमक । नही तो पता चल जायगा तो तुम्हारी हड्डी-पसली भी नही बच सकती ।

आठ-आठ आँसू रोना–बहुत रोना । उ० अभी क्या देखते है ? मुसीबत तो ऐसी आयेगी कि आठ-आठ आँसू रोना पड़ेगा ।

आठ आना–आधा ।

आठों गाँठ कुम्मैत होना–चतुर होना । चालाक होना । उ० जरा मेरे मुकाबिले मे आइए तो आपके आठों गाँठ कुम्मैत होने का पता चले ।

आठों पहर चौसठ घड़ी–हर समय, दिन-रात । उ० तुम तो आठो पहर चौसठ घडी काम मे व्यस्त रहते हो, यह भी कोई जिंदगी है ।

आडंबर फैलाना–१. दिखावे के लिए करना । उ० दावत मे इतना आडबर फैलाने की क्या आवश्यकता थी ? २ ढोंग रचना । उ० हिन्दू धर्म ने व्यर्थ मे इतना आडबर फैला रखा है ।

आड़े आना–अवरोध डालना । व्याघात पहुँचाना । उ० किसी के काम में आड़े न आओ ।

आड़े-तिरछे होना–दे० 'तेवर बदलना' ।

आड़े हाथों लेना–ताना देकर शर्मिन्दा करना । मीठे शब्दो में व्यंग्य करना । उ० उसे तो आज ऐसा आड़े हाथों लिया कि परेशान हो गया ।

आतिश का परकाला–दे० 'अगिया बैताल' ।

आतिश रश्क में जलना–१. किसी के धन-दौलत को देख कर जलना । २. रक़ाबत करना । उ० वे तो दोनों ही आतिश रश्क मे जलते है ।

आत्मा कल्पाना–दे० 'आत्मा सताना' ।

आत्मा ठंडी होना–प्रसन्न होना, तुष्टि होना । उ० बेटा तुम से मेरी आत्मा ठंडी हुई है, भगवान तुम्हारा भला करे ।

आत्मा मसोसना–१ भूख को दबाना । उ० जाने कितने आदमी अन्न न मिलने से आत्मा मसोस कर रह जाते है । २ इच्छाओं का दबाना ।

आत्मा में डालना–१ पेट मे डालना, खाना । २. खिलाना । उ० पहले कुछ आत्मा मे डालो तो बातें करूँ ।

आत्मा में पड़ना–भूख मिटना । पेट मे पडना । उ० पहले आत्मा मे कुछ पड़े तो बात करूँ ।

आत्मा सताना–दिल दुखाना । उ० किसी की आत्मा न सताओ ।

आत्मा होना–सार होना । सब कुछ होना । प्रधान करने वाला होना । उ० इस आन्दोलन की आत्मा तो तुम्ही हो ।

आदमियत उठ जाना–इन्सानियत या तमीज़ का जाता रहना । उ० इस नए ज़माने के लोगो मे से तो आदमियत उठ गई है ।

आदमियत करना–मनुष्यत्व का व्यवहार करना । उ० बड़े-छोटे सबसे आदमियत करनी चाहिये ।

आदमियत पकड़ना–सभ्यता या आचार सीखना । उ० बड़ो के साथ रह कर भी तो आदमियत पकड़ो ।

आदमी के लिबास में आना–शिष्टाचार से बर्तना । उ० आदमी हो तो आदमी के लिबास मे आओ ।

आदमी बनना–१. सभ्यता सीखना । उ० पहले आदमी बनो फिर बात करना । २. बड़ा नामी या गुनी हो जाना । उ० कलकत्ते जाने से वह भी आदमी बन गया ।

आदमी बनाना–आदमी कहाने योग्य, लायक़ शिष्ट, सभ्यना, गुणी बनना । उ० किसी तरह उसे भी अपने साथ रखकर आदमी बनाओ ।

आदमी होना–१. सच्चे अर्थ मे मनुष्य बनना । उ० हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य आदमी होना है । २. बालिग़ होना । उ० यह तो बड़ी जल्दी आदमी हो गया । ३. बड़ा होना,

इज्ज़तदार होना। उ० वह तो अब आदमी हो गया नही तो कोई पूछता भी नही था। ४. गुणी, सभ्य या शिष्ट होना।

आदाब बजाना—बड़ा मानना, झुकना, सिफ़ारिश करना। उ० क्या उनकी आदाब बजाते हो, वे वो तिल है जिनमे तेल नही होता।

आ धमकना—अचानक आ जाना। उ० उस की बात ही हो रही थी कि वह आ धमका।

आधा तीतर आधा बटेर होना—१. न इधर न उधर का होना। २ दोरंगा होना। ३ दो जबान वाला होना। उ० तुम तो आधे तीतर आधे बटेर हो, तुम्हारा किस को विश्वास? ४ बेमेल या बेढगा होना।

आधा मुर्गी आधा बटेर होना—दे० 'आधा तीतर आधा बटेर होना'।

आधान से होना—गर्भवती होना।

आधार होना—१. सहारा होना। उ० प्रत्येक चीज़ का एक आधार होता है। २. पेट मे पड़ना। उ० पहले कुछ आधार हो तो फिर बात हो।

आधा होना—दुबला-पतला हो जाना। उ० वह तो बीमारी से आधा हो गया है।

आधी कौड़ी का—मामूली, तुच्छ, नाचीज़।

आधी बात कहना—१ थोडा सा डाँटना या कुछ कहना। उ० तुमने तो अपने नौकरों को आधी बात भी न कही होगी। २ साफ न कहना। उ० क्या आधी बात कहते हो, कुछ मालूम नही होता।

आधी बात न पूछना—बिलकुल ध्यान न देना। कुछ भी इज्ज़त न करना। उ० मेरा आदमी गया था, पर उसने आधी बात तक न पूछी, क्या यही इनसानियत है?

आनंद के ढोल बजाना—प्रसन्नता मनाना। प्रसन्नता और मस्ती से जीवन बिताना। उ० पास हो जाने पर वह आनन्द के ढोल बजाता है। तुम तो आनन्द के ढोल बजा रहे हो।

आनंद के तार बजाना—दे० 'आनन्द के ढोल बजाना'।

आन की आन में—१. बहुत जल्दी। उ० बस आप देखते रहिए आन के आन मे सब हो जाएगा। २. प्रतिष्ठा का ध्यान करके। उ० उसने आन की आन में कल लाखों खर्च कर डाला।

आन की आन में आना—अपनी प्रतिष्ठा के रोब मे आना। उ० आन की आन में आकर उसने अपनी पूरी सपत्ति अनाथों को दे दी।

आन छोड़ना—प्रण छोड़ना।

आन तोड़ना या तोड़ देना—१ सम्मान घटाना। उ० आपने उससे सबन्ध करके अपनी आन तोड़ दी। २ प्राण छोड़ना। उ० वाह! क्या अपनी आन तोड कर हँसी कराऊँ? ३. हठ त्यागना। उ० आन तोड़ दो, इसी में भला है।

आनन-फानन—तुरंत, उसी समय।

आन पड़ना—दे० 'आ पडना'। उ० जब आफत आन पड़ी तो भागने से काम नही चल सकता।

आन बोलना—दुहाई देना।

आन मानना—१ लज्जित होना। उ० न्यूयार्क के भवनों के सामने हिमालय की चोटियाँ भी आन मानती है। २. डर मानना, आतंक मानना, रोब मानना।

आन में आना—लोक लाज से मरना, लोक लाज या अपनी इज्जत का ध्यान करना। उ० आन मे आकर उसने यह काम किया है, वर्ना कभी नही करता।

आन रखना—१ जिद्द रखना। उ० आखिर उसने आन रख कर ही छोड़ा। २ इज्जत रखना। उ० किसी तरह मेरी आन रख लो।

आन सँभालना—इज्ज़त कायम रखना। उ० सब कुछ खोकर आन सँभालना ही बुद्धिमत्ता है।

आन होना—रोक होना। उ० थोड़े दिनो तक विदेशी माल पर आन थी।

आनाकानी करना—दे० 'टाल मटोल करना'।

आनी-जानी—नश्वर, क्षणभगुर।

आप अपने हक़ में काँटे बोना—ऐसा काम करना जिससे अपनी हानि हो। उ० आप अपने हक़ में काँटे बोने की होशियारी तुम्हारे जैसे बुद्धिमान ही कर सकते हैं।

आप-आप करना—खुशामद करना। उ० मुझे आप-आप करना नहीं आता, चाहे काम हो या न हो।

आप आपकी—अपनी अपनी। उ० सभी को आप-आपकी पड़ी है।

आप आप की पड़ना–अपना अपना ख्याल होना। स्वार्थ में रत होना। उ० देश भर को आप आप की पड़ी है तो देश का भला हो चुका।

आपको आसमान पर खींचना–१ खुद को बहुत बड़ा जानना। उ० अब तो वह आप को आसमान पर खींचता है। उसका पैर तो जैसे ज़मीन पर है ही नहीं। २. अपनी बहुत बड़ाई करना। उ० आप को आसमान पर खींचते तुम्हें शर्म नहीं आती।

आपको दूर जानना–अपने को दूर की बात सोचने वाला समझना। उ० हिटलर आप को दूर जानता था, पर जब सामना पड़ा तो छट्ठी का दूध याद आ गया।

आपको भूलना–१ अपने को न समझना। उ० अब तक भारत आपको भूले हुए था। २ होश में न रहना। उ० छोटे इज्ज़त पाकर आपको भूल जाते हैं।

आ पड़ना–किसी दुखदाई चीज का ऊपर आना। उ० अब तो आ पडी है, सब सहना ही पड़ेगा।

आप में आना या आ जाना–होश-हवाश ठिकाने होना। उ० एक थप्पड में आप-आप में आ जाएँगे।

आप रूप–परमेश्वर। उ० लडके तो आप रूप होते है। उनका कहना पड जाता है।

आपस में गिरह पड़ना–मनमोटाव होना। उ० जब आपस में गिरह पड़ गई तो फिर वह बात कहाँ ? अब उनके यहाँ जाना ठीक नहीं।

आपस में रहना–व्याभिचारिक सम्बन्ध होना। उ० वे दोनों आपस में रहते है।

आप से आप–अपने आप। उ० आपसे आप वह आ जाएगा, तुम क्यों घबराते हो ?

आप ही अपना जवाब होना–लाजवाब होना, अप्रतिम होना। उ० गांधीजी तो आप ही अपना ज़वाब थे।

आप ही आप बातें करना–पागल होना। उ० न होश खोते अगर इस परी की बातों पर, तो आप ही आप ये बाते न किया करते तुम।

आप ही नाक (नाम) चोटी गिरफ्तार होना–अपनी इज्जत का बहुत ख्याल होना।

आपा खोना–१. नष्ट-भ्रष्ट हो जाना। उ० समाज के हित के लिए आपा खो देना उचित ही है। २ अपना गुण मिटा देना। उ० घी शहद मिलकर अपना आपा खो देते है। ३ गर्व छोड़ना, नम्र होना। उ० धनी होते हुए भी ऐसा आपा खोकर बोलता है कि तबियत प्रसन्न हो जाती है।

आपा खोलना–मन के सारे भेद खोल देना, मन की सारी बातें कह डालना।

आपा तजना–अहम् भाव को छोड़ना। उ० आपा तजने से ही प्रतिष्ठा होगी।

आपाधापी पड़ना–अपनी अपनी पड़ना। उ० कौन किसे पूछता है ? सभी को तो आपा-धापी पडी है।

आपाधापी होना–दे० 'आपाधापी पड़ना'।

आपा मिटाना–अभिमान जाता रहना। उ० उसका आपा इस गरीबी में भी नहीं मिटा।

आपे में आना–१ सुध बुध में होना। होश में आना। उ० घन्टों बाद तो आपे में आया है। जाओ कुछ पूछ लो। २ जरा दम लेना, साँस लेना। उ० अभी बहुत थका हूँ ज़रा आपे में आलूं तो तुम्हारा हिसाब कर दूँ। ३. सुधरना या सँभलना। उ० इतनी हानि हुई है कि कम से कम इस वर्ष तो आपे में नहीं आ सकते।

आपे में न रहना या न होना–बहुत क्रोधित होना। उ० वह तो कभी आपे में रहता ही नहीं, तुरन्त उखड जाता है। २. बहुत प्रसन्न होना। उ० उसे आज एक लाख रुपये मिले है। अब वह आपे में नहीं है। ३ बहुत घमंड करना।

आपे से निकलना–दे० 'आपे से बाहर होना'।

आपे से बाहर होना–१ क्रोधित होना। उ० वह बात सुनते ही आपे में बाहर हो गया। २ बहुत घमंडी होना। ३ बहुत प्रसन्न होना।

आफत उठाना–१ विपत्ति भोगना। उ० हमें तो इस साल वर्ष भर आफ़त उठानी पडी। २ उपद्रव मचाना। उ० जंगली जानवरों ने तो चारों ओर आफत उठा रक्खी है।

आफ़त का टुकड़ा–१ चुस्त तथा पटु। उ० ऐसे कामों में तो वह आफ़त का टुकड़ा है। २. विद्रोही। उ० सदा से बलिया वाले आफ़त के टुकड़े रहे है। ३. अबाध गति से यत्न करने वाला। उ० तुम तो यार आफ़त के टुकड़े हो। ४. बहुत खुराफ़ाती। उ० तुम जैसे आफत के टुकड़े मुझे नहीं मिले।

आफ़त का परकाला–दे० 'आफ़त का टुकड़ा'।

आफ़त का मारा–विपत्ति से सताया हुआ। उ० बेचारा आफ़त का मारा है उसे शरण दे दो।

आफ़त टूटना–मुसीबत आना।

आफ़त मचाना–१. जल्दी करना। उ० देखो आफ़त न मचाओ नहीं तो सब काम बिगड़ जायगा। २. उद्विग्न करना। ३ उपद्रव मचाना।

आफ़त में पड़ना–दे० 'आफ़त सिर पर लेना'।

आफ़त मोल लेना–दे० 'आफ़त सिर पर लेना'।

आफ़त सिर पर लेना–१ झगडा मोल लेना। उ० आपने उससे छेडखानी करके आफत सिर पर ले ली। २ झंझट लेना। उ० मैंने शादी क्या की, एक आफत सिर पर ले ली। ३ हानिकारक उत्तरदायित्व लेना। उ० निमंत्रण लेकर आफत सिर पर ले ली। पता नही कितना खर्च करना पड़े।

आब आना–गुलजार होना। जँचना। रौनक आना। उ० मकान पर अब जाकर आब आई है। अब उसके मुँह पर आब आई है।

आब आब करना–अप्रचलित भाषा का प्रयोग कर कोई वस्तु माँगना। उ० क्या आब आब करते हो? अरे! सीधा बोलो तब तो समझूँ।

आब आब होना–१ लज्जित हो जाना। उ० मुझे देखते ही वह आब आब हो गया।

आब चढ़ाना–१. वार्निश से चमक देना। उ० कुर्सियों पर आब चढाओ। रंग निखारना। उ० उसने मोतियो पर ऐसा आब चढाया कि नए दीख रहे हैं।

आब जाना–१ रौनक का जाता रहना। उ० यह मोती नकली था। इसी से इसका आब जाता रहा। २ इज्जत जाती रहना। उ० उनका आब जाता रहा, अब उन्हें कौन पूछता है?

आबदस्त लेना–पाखाना के बाद पानी से गुप्तांग धोना। उ० यूरोप मे लोग कागज से आब-दस्त लेते हैं।

आबदाना उठना–जीविका न रहना। उ० भारत से अंग्रेजो का आबदाना उठ गया।

आबदाना लगना–नौकरी लगना।

आब देना–चमक देना। उ० चाकू के फल पर आब दे दो।

आबनूस का कुंदा–बहुत काला तथा मोटा ताजा आदमी। उ० उस आबनूस के कुंदे से कौन विवाह करेगा?

आबपाशी करना–१. दम देना। उ० तुम्हारे आबपाशी करने से वह मेरे खिलाफ़ नहीं उठ सकता। २ सींचना, खेतों मे पानी देना।

आब रखना–१. रौनक कायम रखना। २. इज्जत रखना।

आबरू उतारना–बेइज्ज़त कर देना। उ० तुम दूसरे की आबरू उतारोगे तो तुम्हारी आबरू भगवान उतारेगा।

आबरू का लागू होना–इज्जत के पीछे पड़ना। उ० क्यों उसके आबरू के लागू हो गए हो, उसने तो तुम्हारा कुछ बिगाडा भी नही है?

आबरू के दर पै होना–दे० 'आबरू का लागू होना'।

आबरू खाक में खोना–अपनी इज्जत व्यर्थ के लिए गँवाना। उ० तुमने अपनी आबरू खाक मे खो दी।

आबरू ख़ाक मे मिलाना–अपनी या दूसरे की इज्जत खराब करना। उ० उसकी आबरू खाक मे न मिलाओ।

आबरू पर आ बनना–इज्जत खतरे मे होना।

आबरू पर पानी फिरना–इज्जत खराब होना। प्रतिष्ठा मे धक्का लगना। उ० इस नालायक के कारण मेरी आबरू पर पानी फिर गया।

आबरू पैदा करना–इज्जत पैदा करना। उ० गाँधीजी ने खूब आबरू पैदा की।

आबरू मिट जाना–इज्जत बरबाद हो जाना। उ० उसने ऐसा काम किया कि उसकी आबरू मिट गई।

आबरू मे फ़रक आना–दे० 'आबरू मे बट्टा लगना'।

आबरू में बट्टा लगना–प्रतिष्ठा मे दाग लगना। इज्जत मे धब्बा आना। उ० केवल इसी काम मे तुम्हारी आबरू मे बट्टा लग गया।

आबरू रहना–इज्जत रहना। उ० आबरू जग मे रहे तो जान जाना परम है।

'आ बला गले पड़' कहना–बिना किसी लाभ के झंझट सर पर लेना। जान बूझकर झंझट सर पर लेना। जान-बूझकर झंझट लेना। उ० तुम्ही ने तो 'आ बला गले पड़' कहा, अब पछता क्यो रहे हो?

जाना। उ० औरंगजेब का अत्याचार देखकर सभी का आसन डोल गया।

आसन तले आना–वश मे आना। उ० अब तो आप आसन तले आ गए हैं। कहीं जा नही सकते।

आसन देना–आदर से स्थान देना। उ० पहले सब को उचित आसन दो।

आसन पाटी लेकर पड़ना–क्रोध के साथ चारपाई पर पड़ना। उ० क्यो आसन पाटी लेकर पड़े हो। उठो खा लो, अब ऐसी गलती न होगी।

आसन बाँधना–जाँघों से जकड़ना। कुश्ती का एक पेंच लगाना। उ० इतना बनते हो तो आओ आसन बाँधूँ और उठो।

आसन लगाना–१. टिकना, ठहरना। उ० बाबा जी अब कुछ दिन यही आसन लगायेंगे। २ आसन लगाकर बैठना। उ० आसन लगाओ पूजा का सामान आ रहा है।

आसन होना–सम्भोग के लिये उद्यत होना। उ० ऊँट का आसन होना बहुत विचित्र होता है।

आस पूजना या पुज जाना–आशा पूरी होना। उ० यदि बूढ़ी को एक नाती हो गया तो बेचारी की आस पुज जायगी।

आस पूरना–दे० 'आस पूजना'।

आस बँधना–१ आस होना, उम्मीद होना। उ० उसके आने की आस अब भी बँधी हुई है। २ ढाढ़स होना। उ० जब मै नदी मे बाहर आया तो आस बँधी।

आसमान के तारे तोड़ना–कठिन से कठिन काम करना। उ० आपके लिए यह आसमान के तारे भी तोडने को तैयार है, जाने कौन सा जादू आपने चला दिया है।

आसमान-ज़मीन एक करना–दे० 'ज़मीन-आसमान एक करना'।

आसमान ज़मीन का अंतर–दे० 'आकाश पाताल का अंतर'।

आसमान ज़मीन के कुलाबे मिलाना–दे० 'ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाना'।

आसमान झाँकना–अकडना, अभिमान मे सिर ऊपर उठा। उ० अब किसके बूते पर आसमान झाँक रहे हो?

आसमान टूट पड़ना–१. सहसा आफ़त आ जाना। उ० देश पर खाद्य-समस्या के कारण आसमान टूट पडा। २ भयानक दुर्घटना होना। उ० गांधीजी के मरने से आसमान टूट पडा। ३ डर से काँप जाना। बहुत डर जाना। उ० तुम्हारा क्रोध देखकर तो मुझ पर आसमान टूट पडता है।

आसमान दिखाना–१ पछाड देना। उ० तुमने जो बात की बात मे उसे आसमान दिखा दिया। २ दाव दे जाना। ऐन मौके पर धोखा दे जाना। उ० उस दिन तो आपने देने का वादा किया और आज आसमान दिखा रहे है?

आसमान दीखना या सूझना–होना, दुरुस्त होना, विरोधी स्थिति के आभास मे घबराहट होना।

आसमान पर उड़ना–१ ऐंठना, इतरा कर चलना। उ० उसे जीतना दूर की बात है, जीत कर तो आसमान पर उडना। २ सामर्थ्य से बाहर का कार्य करने का निश्चय करना। उ० जब अपनी शक्ति जानते हो तो उससे होड लेने के लिए क्यो आसमान पर उडते हो।

आसमान पर कदम रखना–अपने को समझना। उ० क्यों आसमान पर कदम रखते हो, तुम से भी बड़े लोग है।

आसमान पर चढ़ना–अभिमान दिखाना। अपने को बहुत बडा समझना। उ० चार पैसे हो गए है और उसका दिमाग अब आसमान पर चढ गया है।

आसमान पर चढ़ाना–१ बहुत बडाई करना। उ० तुमने तो ऐसी बात की कि उसे आसमान पर ही चढा दिया। २ झूठी प्रशंसा करना। उ० जब सब लोग असलियत जानते है तो आसमान पर चढाने मे क्या लाभ।

आसमान पर थूकना–१ उत्तम मनुष्यों का निरादर करना। उ० ईसा मसीह को बुरा कहना आसमान पर थूकना है। २ बेवकूफी करना।

आसमानपर दिमाग चढ़ना–बहुत घमड होना। नौकरी मिलते ही उसका दिमाग आसमान पर चढ गया।

आसमान फट पड़ना–दे० 'आसमान टूट पडना'।

आसमान फाड़ डालना–बहुत शोर करना।

आसमान में उड़ना–दे० 'आसमान पर उडना'।

आसमान में चकती लगाना–दे० 'आसमान मे थिगली लगाना'।

आसमान में छेद करना–दे० 'आसमान में थिगली लगाना'।

आसमान में छेद होना–अतिवृष्टि। उ० चेरापूंजी में सदैव ही आसमान में छेद हुआ रहता है।

आसमान में थिगली लगाना–१ कठिन काम या असंभव काम करना। उ० अब तृतीय युद्ध से बचना आसमान में थिगली लगाना ही जान पड़ता है। उसकी इंग्लैंड जाने की कोशिश आसमान में थिगली लगाने के बराबर है। २ आश्चर्यजनक काम करना। उ० वह यदि पास हो गया तो कहना पड़ेगा कि उसने आसमान में थिगली लगा दी।

आसमान सिर पर उठाना–१. उपद्रव या शोर-गुल करना। उ० असभ्य आदमी है। लोग तिनके के लिए भी आसमान सिर पर उठा लेते है। २. बहुत परिश्रम करना। उ० इसमें रक्खा क्या है जो आसमान सिर पर उठाते हो।

आसमान सिर पर टूटना–दे० 'आसमान टूट पड़ना'।

आसमान से गिर कर खजूर पर अटकना–१ एक कष्ट से छूट कर दूसरे कष्ट में फँसना। उ० उसके स्वास्थ्य का क्या कहूँ, ज्वर ने छोड़ा तो फोड़ा हो गया। बेचारा आसमान से गिर कर खजूर पर अटक गया। २ किसी काम का बड़ी जगह में ठीक होकर छोटी जगह में रुक जाना। उ० बड़े साहब ने ठीक कर दिया था पर बाद में किसी बाबू ने रोक दिया और काम आसमान से गिरकर

आसमान से गिरना–१ आप से आप आ जाना। उ० अगर आपने यह कलम यहाँ नहीं रक्खा है तो क्या यह आसमान से गिरा है? २ बिना मेहनत के प्राप्त होना। उ० जानते नहीं हो कि रोटी कितनी महँगी है, आसमान से नहीं गिर सकती।

आसमान से टक्कर लेना–दे० 'आसमान से बातें करना'।

आसमान से बातें करना–दे० 'आकाश से बातें करना'।

आसमानी पिलाना–ताड़ी पिलाना। उ० शराब न सही तो आसमानी ही पिलाओ।

आसमानी बला–दैवी प्रकोप। उ० अतिवृष्टि एक आसमानी बला है।

आसरा टूटना–१. भरोसा न रहना। उ० आज तक तो प्रतीक्षा में था कि वह आएगा, पर जब आज उसका पत्र आ गया तो आसरा टूट गया। २. अशरण होना। उ० उस विधवा का वह भी आसरा टूट गया।

आसरा ताकना–आशा करना। उ० केवल भगवान का आसरा ताको।

आसरा ढूंढ़ना–सहायक ढूंढना। अब तो तुम्हे कोई और सहारा ढूंढना ही पड़ेगा।

आसरा देना–१. बचन देना। उ० आपने आसरा दे दिया था, इसी से मैं आया, नहीं तो कभी न आता। २. शरण देना। उ० मुझे भी आसरा दे दो।

आस होना–१ सहारा होना। उ० केवल भगवान की आस है। २. संतान होने की उम्मीद होना। उ० अभी तो तुम्हारे घर कोई आस नहीं है? ३ आशा होना। उ० अभी तक तो आस है कि वह आ जाएगा।

आसामी बनाना–१ काश्तकार बनाना। उ० कुछ खेत देकर इसे आसामी बना लो, काम करेगा। २ किसी को कुछ काम करके या कुछ दे ले के ऐसा बनाना कि उससे हमेशा कुछ न कुछ लाभ हुआ करे। उ० अगर खूब लाभ चाहते हो तो इन्हे आसामी बनाओ।

आसामी समझना–अपने वश का समझना। उ० आप मुझे आसामी समझते है क्या, कि हर वक्त बिगड़ा करते है।

आसुरी माया–षड्यंत्र, चाल। उ० मुझे आशा नहीं थी कि तुम उसकी आसुरी माया समाप्त कर सकोगे।

आसेब उतारना–मंत्र से भूत प्रेत उतारना। उ० आसेब उतारने में आज के लोगों का विश्वास नहीं है।

आस्तीन का साँप–ऐसा आदमी जो ऊपर से मित्र और अन्दर से शत्रु हो। उ० उसे आप मित्र न समझें, वह तो आस्तीन का साँप है।

आस्तीन चढ़ाना–कुश्ती लड़ने के लिए तैयार होना। उ० गर्म होकर इतनी जल्दी आस्तीन न चढ़ाओ, कुछ सब्र भी तो करो।

आस्तीन में साँप पालना–दुश्मन को अपने पास रख कर उसका पोषण करना। उ० आप जानते नहीं है कि ये कैसे आदमी है; वास्तव में आप आस्तीन में साँप पाल रहे है।

आह करना–कलपना। उ० बुढ़िया का आह

करना तुम्हारे पर अवश्य पड़ेगा।

आह खींचना–ठंढी साँस भरना। बेचारी ने आह खींच कर लाम पर जाते हुए पति को विदा दी।

आह पड़ना–शाप पडना। उ० आपने जवानी में गरीबों को खूब सताया था, अब उसी की आह पड रही है।

आह भर कर रह जाना–कुछ न कर सकने के कारण मन मे मसोस कर रह जाना। उ० अंग्रेजी अत्याचार से हम सभी आह भर कर रह जाते थे।

आह लेना–किसी पर जुल्म करके उसका शाप लेना। उ० गरीबों को सता कर उनकी आह न लो।

इ

इंगित पर नाचना–इशारे पर नाचना। उ० वह तो इंगित पर नाच सकता है, हाँ, यदि कोई नचाने वाला हो तब!

इंद्र का अखाड़ा होना–१. खूब सजा हुआ मकान होना। उ० कुछ ही रुपए और लगाने से उसका मकान इंद्र का अखाडा हो गया है। २. बहुत सजी हुई सभा होना, जिसमें खूब नाच रंग होता हो।

इंद्र की परी होना–बहुत ही सुन्दर होना। उ० वह तो इंद्र की परी है।

इंद्र बनना–सजना, सँवरना। उ० आज सुबह ही इंद्र बन कर कहाँ चल दिये?

इंद्रायन का फल–देखने मे सुन्दर पर भीतर से बुरा या कटु। उ० अरे भाई, वह तो इंद्रायन का फल निकला! उसके स्वभाव से आशा थी कि काम कर देगा, पर करना तो दूर रहा उसने उलटे और बिगाड दिया।

इकसठ बासठ करना–दे० 'सरका कूटना'।

इक्कीस बिस्वे होना या इक्कीस होना–बहुत बढ़कर होना।

इक्के दुक्के–बिना साथी के, अकेले दुकेले। उ० भाई, इक्के-दुक्के न जाना, वहाँ खतरा है।

इजलास पर चढ़ाना–मुक़दमा करना। उ० अब कभी ऐसी गलती किया तो इजलास पर चढ़ा कर छोड़ूँगा।

इज्जत उतारना–मर्य्यादा नष्ट करना। उ० ज़रा सी बात के लिए वह इज्जत उतारने पर तैयार हो जाता है।

इज्जत अपने हाथ होना–मर्यादा वश मे होना। उ० सबकी इज्जत अपने हाथ है, जैसा जो काम करेगा वैसी इज्जत पायेगा।

इज्जत कमाना–नाम कमाना। उ० धन के साथ-साथ इज्जत कमाना सब के बस का नहीं है।

इज्जत करना–सम्मान करना, मर्यादा करना। उ० अपने गुरु की इज्जत करना विद्यार्थियो का प्रथम कर्त्तव्य है।

इज्जत के पीछे पड़ना–इज्जत बिगाडने पर तुला होना। उ० तुम मेरी इज्जत के पीछे पड़े हो तो कहीं तुम्हें प्राण से हाथ न धोना पड़े।

इज्जत खाक में मिला देना–दे० 'इज्जत मिट्टी कर देना।'

इज्जत खोना–बेइज्जत होना। उ० नीच मनुष्यो को इज्जत खोने की कुछ भी परवाह नहीं रहती।

इज्जत गँवाना–आबरू खोना। उ० इज्जत गँवाना बडा आसान है पर उसे बनाना बडा कठिन है।

इज्जत जाना–बेइज्जती होना। उ० पैदल चलने से क्या तुम्हारी इज्जत चली जायगी?

इज्जत डुबोना–इज्जत खराब करना। उ० आपने थोड़े मे लाभ के लिए आज अपनी इज्जत डुबो दी।

इज्जत देना–१. आबरू खोना। उ० थोडे से लाभ के लिए मै अपनी इज्जत दे दूँ, यह कहाँ तक उचित है? २ सम्मान देना। उ० बारात मे शरीक होकर आपने मुझे बडी इज्जत दी।

इज्जत दो कौड़ी की करना–इज्जत बिलकुल बरबाद करना। उ० इस चाडाल ने मेरे कुल की इज्जत दो कौडी की कर दी।

इज्जत पर पानी फेरना–इज्जत बर्बाद करना। उ० बाप दादों की बनी बनाई इज्जत पर पानी फेरने के अतिरिक्त तुम जैसे दुष्ट लड़कों से आशा ही क्या की जा सकती है?

इज्जत पर हाथ डालना—बेइज्जत करने की कोशिश करना, बेइज्जत करना।

इज्जत पाना—प्रतिष्ठा प्राप्त करना। उ० उन्होंने इस दरबार में बड़ी इज्जत पाई।

इज्जत बिगाड़ना—आबरू नष्ट करना। उ० भलेमानुसों की इज्जत बिगाड़ने में उसे जरा भी देर नहीं लगती।

इज्जत बेचना—आबरू खोना, प्रतिष्ठा गंवाना। उ० इस मकान को बेचकर क्या पुरखों की इज्जत बेचना चाहते हो?

इज्जत मिट्टी करना या कर देना—आबरू खराब करना। उ० उसने नीच काम करके अपने पूर्वजों की भी इज्जत मिट्टी कर दी।

इज्जत मिलना—बड़ा पद मिलना, प्रतिष्ठित होना। उ० भगवान करें तुम्हें इज्जत मिले।

इज्जत में बट्टा लगना—आबरू खराब होना। उ० इस नीच काम के करने की वजह से तुम्हारी इज्जत में बट्टा लग गया।

इज्जत में बट्टा लगाना—इज्जत खराब करना। उ० तुम ऐसे नालायक हो कि बाप दादों की इज्जत में बट्टा लगाकर तो चैन लोगे।

इज्जत रखना—इज्जत बचा लेना। उ० रुपये देकर तुमने हमारी इज्जत रख ली।

इज्जत लेना—बेइज्जत करना। उ० किसी की इज्जत लेने से आपको क्या लाभ होता है?

इतने में—इसी बीच में। उ० इतने में रन-ठौर, रुधिर नदी प्रगटत भई। वह जुआ खेल रहा था, इतने में पुलिस आ पहुँची।

इति होना—समाप्त होना, अंत होना। उ० अब तुम्हारी पढ़ाई की इति हो गई।

इत्तफ़ाक़ पड़ना—संयोग पड़ना, मौका आना। उ० मुझे अकेले सफ़र करने का इत्तफ़ाक़ कभी नहीं पड़ा।

इत्तफ़ाक़ बढ़ना—मेलजोल बढ़ना, मोहब्बत का बढ़ना। उ० उन दोनों में आजकल बहुत इत्तफाक बढ़ रहा है।

इत्तफ़ाक़ होना—विशेष मित्रता होना। उ० उन दोनों से इत्तफाक होना ही चाहिये, इसी में सब का भला है।

इत्तला लिखना—राज कर्मचारियों का किसी बात की सूचना लिखना। उ० बिना घूस के थाने वाले इत्तला भी नहीं लिखते।

इत्ते-पित्ते जलना—बहुत क्रोधित होना।

इधर उधर—१. यहाँ वहाँ, अड़ोस-पड़ोस में। उ० क्या इधर-उधर घूम रहे हो? २. इनारे किनारे, आस-पास। उ० तुम्हारे घर के इधर उधर कोई नाई हो तो भेज देना। ३. चारों ओर। उ० आज तो मैदान के इधर उधर पुलिस है।

इधर उधर करना—१. तितर-बितर करना। उ० जहाँ मैं कमरे से बाहर गया तुम मेरी सब चीजें इधर उधर कर देते हो। २. हीला हवाला करना। उ० जब भी हम अपना रुपया माँगते हैं तो तुम इधर उधर करने लगते हो।

इधर उधर की बात—१. अफवाह। उ० इधर उधर की बात पर विश्वास नहीं करना चाहिये। २. बेठिकाने की बात। उ० तुम कोई काम तो करते नहीं, व्यर्थ इधर उधर की बात किया करते हो।

इधर उधर की लगाना—चुगली करना। उ० अगर फिर इधर उधर की लगाए तो बिना पीटे न छोड़ूँगा।

इधर उधर की हाँकना—१. झूठ-मूठ बकवाद करना। उ० तुमसे कोई काम नहीं हो सकता, तुम तो सिर्फ इधर उधर की हाँकना जानते हो। इधर उधर की हाँकने वाले का तो कोई विश्वास भी न करेगा। २. ठीक विषय पर बात न कर इधर उधर की बात करना। ३. इधर-उधर की न हाँको, ठीक विषय पर आओ।

इधर उधर में रहना—बेकार काम में व्यस्त रहना, इधर उधर बेकार घूमना। उ० दिन भर इधर उधर में रहने वाला कोई मतलब काम क्या कर सकता है?

इधर उधर रहना—पीछे लगा रहना। उ० चार पाँच माह से हर समय पुलिस मोहन के इधर उधर रहती है।

इधर उधर से—किसी से भी, कहीं से भी। उ० जब तक काम न मिले इधर-उधर से माँगकर दिन काटो।

इधर उधर होना—१. उलट पुलट होना। उ० हवा से सब कागज इधर उधर हो गए। २. टाल मटोल होना। उ० महीनों से इधर उधर हो रहा है, देखें रुपया कब मिलता है? ३. भाग जाना। उ० शेर के आते ही सब लोग

इधर उधर हो गए। ४. तितर बितर हो जाना। उ० पुलिस को देखते ही भीड़ इधर उधर हो गई।

इधर का उधर होना–१ बदल जाना। उ० दो मिनट उससे बात नहीं की और इधर के उधर हो गए। यही तो तुम्हारा व्यक्तित्व है। २ उलट-पुलट जाना। गड़बड़ हो जाना। उ० सामान इधर का उधर हो गया।

इधर का होना न उधर का–कहीं का न होना। उ० इतना पढ लिख कर भी वह न इधर का हुआ न उधर का। २ किसी पक्ष में न उसकी रहना। उ० हमारी शिकायत उनसे और हमसे करते थे, अंत मे न इधर के हुए न उधर के। ३ दो विरुद्ध उद्देश्यों में से किसी एक का भी पूरा न होना।

इधर की उधर करना–दे० 'इधर की उधर लगाना'।

इधर की उधर लगाना–कान भरना, चुगली करना। उ० इधर की उधर लगाना नीचों का काम है।

इधर की दुनिया उधर करना–बहुत परिश्रम या दौड़-धूप करना। उ० इधर की दुनिया उधर कर डालो पर तुम्हारा काम सिद्ध होने का नहीं।

इधर की दुनिया उधर होना–चाहे जो कुछ होना। उ० इधर की दुनिया उधर हो जाय पर मैं आज उसे अवश्य ही मारूँगा।

इधर कुआँ उधर खाई (बावड़ी) होना–दोनों ओर सकट होना।

इधर से उधर करना–गड़बड या अव्यवस्थित कर देना। उ० तुम क्यों सब सामान इधर से उधर कर देते हो?

इधर से उधर फिरना–चारो ओर फिरना। उ० तुम व्यर्थ इधर से उधर फिरा करते हो।

इनायत करना–१ कृपा करके देना। उ० जरा कलम तो इनायत कीजिये। २. रहने देना। उ० इनायत कीजिए, मै आप की चीज नहीं लेता।

इने गिने–थोड़े से ही। उ० मेरे पास इने गिने अच्छे कपड़े है। इने गिने आदमियो से उसका मुकाबिला क्या करोगे?

इन्हीं पावों लौटना–तुरन्त लौटना।

इमली घोंटना–विवाह के समय लडके या लड़की के मामा का एक रस्म विशेष करना और यथा शक्ति अपनी बहन को दक्षिणा देना। उ० तुम्हारे मामा इमली घोंटाने आए या अभी नहीं?

इलाइची बाँटना–दावत देना। उ० बड़े लड़के की शादी है, पूरे गाँव मे इलाइची बाँटनी पड़ेगी।

इल्लत कटना–झगडे का निर्णय होना। झगडा खतम होना। उ० कुछ भी हो आपके आने से इल्लत तो कटी।

इल्लत काटना–१ किसी तरह शीघ्र समाप्त करना। उ० इल्लत काटने में अच्छा है कि काम को छोड दो। २. आफत हटाना। उ० हे भगवान! किसी तरह यह इल्लत काटो।

इल्लत पालना–झझट लगा लेना। उ० इस मुकदमे मे गवाह बनकर तुमने व्यर्थ मे इल्लत पाल ली है।

इल्लत लगना–बेकार की झझट सर पर होना। उ० यह तो अच्छी इल्लत पीछे लगी।

इशारे पर नाचना–किसी के सकेत पर कुछ करना।

इशारो का गुलाम–किसी की इच्छानुसार काम करने वाला।

इस कान सुनना उस कान उड़ा देना–ध्यान से न सुनना। उ० तुमसे कैसी ही बात क्यो न कही जाय, तुम इस कान सुन कर उस कान उडा देते हो।

इस पर न जाना–१ ऐसा न सोचना। उ० इस पर न जाओ कि वह भला आदमी है, आजकल भले भी विश्वास के योग्य नहीं है। २ इस पर गर्व न करना। उ० इस पर न जाओ कि उसने तो मदद करने का वचन दे दिया है।

इस पर न भूलना–इस पर भरोसा न करना। उ० इस पर न भूलो कि वह तुम्हारा सहायक है। हर घडी कोई साथ नही रहता।

इस हाथ देना, उस हाथ लेना–जैसा काम वैसा फल मिलना। उ० मै उधार नहीं करता, सीधा हिसाब है, इस हाथ से पचास रुपये दो, और उस हाथ ले जाओ।

इस्तिंजा लड़ना–अत्यन्त मित्रता होना। दाँत काटी रोटी होना।

इस्तिंजा लड़ाना–घनिष्ठ मित्रता करना। उ० आजकल वे दोनों इस्तिजा लडा रहे हैं।

इस्तिंजे का ढेला–अनादृत व्यक्ति, तुच्छ मनुष्य। उ० वह तो इस्तिजे का ढेला है।

ई

ईंगुर होना–बहुत लाल होना । उ० घाम के कारण उसका चेहरा ईंगुर हो गया है ।

ईंट का घर मिट्टी करना–घर नष्ट करना । अच्छा घर बर्बाद करना । उ० बुरे कामो मे फँस कर उसने अपना ईंट का घर मिट्टी कर डाला ।

ईंट का छल्ला देना–कच्ची दीवाल से सटाकर ईंट की इकहरी जोडाई करना । उ० ईंट का छल्ला दे दो नही तो बरसात मे दीवाल गिर जायगी ।

ईंट का जवाब पत्थर से देना–कड़ा जवाब देना, किसी के किए के उत्तर मे और भी कड़े कदम उठाना ।

ईंट चुनना–जोड़ाई करना, दीवाल बनाना । उ० यह मिस्त्री ईंट चुनने का काम बड़ा अच्छा करता है ।

ईंट तक बिकवाना–सब कुछ ले लेना । निर्धन बना देना । उ० तुम मेरी ईंट तक बिकवा दो पर मुझे अपने सामने झुका नही सकते ।

ईंट-पत्थर–बेकार, कुछ नही । उ० साल भर परदेस से कमा कर क्या लाये हो, ईंट-पत्थर ?

ईंट से ईंट बजना–किसी नगर या घर का ध्वस हो जाना । उ० एटमबम के कारण जापान के दो नगरो की ईंट से ईंट बज गई ।

ईंट से ईंट बजाना–१ फूट डालकर लडाई करवाना । उ० मोहन ने दोनो भाइयो मे ईंट से ईंट बजा दी, फिर भी दोनो उसे अपना समझते है । उनसे बडा बेवकूफ़ मिलेगा कहाँ ? २ नष्ट-भ्रष्ट कर देना । उ० तुमने तो उसकी ईंट से ईंट बजा दी ।

ईद का चाँद–बहुत दुर्लभ वस्तु, जिसका दर्शन बहुत कम हो । उ० तुम तो आजकल ईद के चाँद हो गए हो ।

ईद के पीछे टर–समय पर काम न हो तो बेकार है । उ० परसो बारात आएगी, और तुम चौथे रोज शामियाने का प्रबन्ध करोगे । इसी को ईद के पीछे टर कहते है ।

ईमान काँपना–डरना । उ० भाई इस बुरे काम को करने मे मेरा ईमान काँप रहा है ।

ईमान का सौदा–ऐसा सौदा जिसमे बेईमानी न हो, विश्वास का काम । उ० आप की खुशी हो आप लें या न लें पर इतना मै अवश्य कहूँगा कि यह ईमान का सौदा है ।

ईमान की कहना–दे० 'ईमान की बात कहना' ।

ईमान की बात कहना–सच सच कहना । उ० भाई मैं तो ईमान की बात कहूँगा, आप खुश हो या नाराज़ ।

ईमान ठिकाने न होना–धर्म भाव दृढ न रहना । दिल मे बेईमानी होना । उ० जिसका ईमान ठिकाने नहीं है, उसका क्या विश्वास ?

ईमान डिगना–मन मे बेईमानी आ जाना । उ० इस तुच्छ चीज के पीछे ही ईमान डिग गया तो तुम्हारा विश्वास कैसे किया जाय ?

ईमान डोलना–दे० 'ईमान डिगना' ।

ईमान देना–सत्य छोडना, बेईमानी करना । उ० श्रेष्ठ पुरुष ईमान देने से मरना अच्छा समझते है ।

ईमान बगल में दबाना–बेईमानी करना । उ० ईमान बगल मे दबा कर काम करना हो तो तुमसे काम कराने से मै बाज आया ।

ईमान बह जाना–धर्म नष्ट हो जाना । बेईमानी समा जाना । उ० तुम्हारा तो ईमान बह गया है, तुमसे साझा कौन करेगा ?

ईमान बेचना–बेईमान होना, बेईमानी करना । उ० ईमान बेच कर कमाया गया रुपया किसी के काम नही आता ।

ईमान में फर्क आना–नियत बिगडना । दिल मे बेईमानी आना । उ० दो रुपए के पीछे जिसके ईमान मे फ़र्क आ गया, उसे आदमी कौन कहेगा ?

ईमान से कहना–सच कहना । उ० ईमान से कह रहा हूँ, मैंने आपके रुपये नही लिये हैं ।

ईमान हवा होना–दिल में बेईमानी आ जाना । उ० कौडी-कौड़ी के पीछे जिसका ईमान हवा हो जाय, उसका क्या विश्वास ?

ईश्वर को प्यारा होना–मर जाना । उ० सुना है कि रविवार को तुम्हारे मैनेजर ईश्वर को प्यारे हो गये ।

उ

उँगलियों पर आ जाना–समीप या सर पर आ जाना।

उँगलियों पर नचाना–दे० 'उँगली पर नचाना।'

उँगली उठना–१. इशारा होना। उ० वह जिधर जाता है उँगली उठने लगती है। २ बुरा कहना। उ० उँगली उठेगी तो ठीक न होगा। 'मैं जो कुछ करता हूँ अपने घर करता हूँ।

उँगली उठाना–बुरा कहना। उ० उस पर उँगली उठाना मजाक नही है। २ इशारे से कुछ कहना।

उँगली करना–हैरान करना। उ० बेकार मे क्यो उँगली करते हो? यार, दिन रात उँगली ही किए रहते हो कि कभी कुछ लाभ भी कराओगे?

उँगली काटना–विस्मय मे पडना। उ० इस मकान की खूबसूरती देखकर जमाना उँगली काटता है।

उँगली कान मे देना–कुछ न सुनना। उ० दुनियाँ जी भर कर बकवास कर ले, हमने तो कानो मे उँगली दे ली है।

उँगली चमकाना–जनखो की तरह हाथ मटकाना। उ० क्यों उँगली चमका रहे हो? क्या तुम्हें भी वही समझा जाय?

उँगली तोड़ना–थकावट दूर करने के लिए उँगली चटकाना। उ० जरा मेरी उँगली तोड़ दो।

उँगली दाँत से काटना–दे० 'उँगली काटना'।

उँगली दिखाना–निंदा करना। शिकायत करना। उ० आजकल लोग उनकी ओर उँगली दिखा रहे है।

उँगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना या पकड़ लेना–थोड़ा सा लेकर पूरा लेने की इच्छा करना। उ० भाई, तुम्हारा विश्वास मै नही कर सकता। ऐसे ही लोग उँगली पकड़ कर पहुँचा पकडते है।

उँगली पर नचाना–१ परीशान करना। उ० तुम सबको तो उँगली पर नचाया करते हो, आखिर दुर्दिन मे किसी का सहारा भी लोगे या नही? २ पूर्णतः वश में रखना। उ० वह तो तुम्हें उँगली पर नचाता है।

उँगली पर नाचना–किसी के वश में होना। कहने के अनुसार चलना। उ० आजकल मोहन के पडोसी उसकी उँगली पर नाच रहे है।

उँगली फोड़ना–दे० 'उँगली तोड़ना'।

उँगली रखना–दोष दिखाना। उ० मेरे ऊपर कोई उँगली रखने वाला आज तब जन्मा ही नही।

उँगली लगाना–१. किसी काम को छू तक देना या थोड़ा सा करना। उ० तुम तो घर के किसी काम में उँगली भी नही लगाते हो? २. थोडी सी मदद करना। उ० बस तुम उँगली भर लगा दो, पूरा तो मै करूँगा।

उखड़ी-उखड़ी बाते करना–गुस्सा से भरी बातें करना। उ० थोडी सी बात पर आप क्या उखडी-पुखडी बाते कर रहे है।

उखड़ी पुखड़ी सुनाना–अड बंड सुनाना। उ० उखडी पुखडी सुनाओगे तो मै भी वैसा ही करूँगा।

उखाड़ देना–बिगाड देना, समाप्त कर देना। उ० किसी दूसरे का क्या कहना, जब बड़े भाई ने ही व्यापार उखाड़ दिया है।

उखाड़ पछाड़–इधर का उधर, उलट-पलट। उ० यहाँ उखाड पछाड न करो।

उखाड़ी उखड़ना–कुछ किया हो सकना। उ० तुम्हारी उखाडी यहाँ कुछ न उखड़ेगी।

उगल उगल के खाना–१ बिना भूख के खाना। उ० उगल उगल के खाना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होना है। २ अच्छी तरह या स्वाद लेकर न खाना। उ० उगल उगल के खा रहे हो, क्या अच्छा नही बना है?

उगल देना–भेद की बात या माल बता देना। उ० बहुत कच्चे चोर हो, दो हाथ पड़ते ही सब उगल दिया।

उघटापुरान करना–गाली-गलौज करना। अपनी पुरानी या बाप-दादा की गलतियो के आधार पर शर्मिंदा करना। उ० पढ़े-लिखे होकर क्या उघटापुरान कर रहे हो?

उघड़ पड़ना–खुल पड़ना। अपने असली रूप मे प्रकट होना। उ० जरा भी बहका दोगे तो उघड़ पड़ेगा।

उघर कर नाचना–लोक लज्जा छोड़ कर मनमाना काम करना। उ० अब हौ उघरि नचन चाहत हौ तुमहि बिरद बिनु करिहौ।

उचक ले जाना–उड़ा ले जाना, भगा ले जाना। उ० उस लडकी को कोई उचक ले गया।

उचट जाना–१. न लगना, हट जाना। उ० मेरा दिल यहाँ से उचट गया है।

उछंग लेना–आलिंगन करना, हृदय से लगाना। उ० सूर स्याम ज्यों उछँग लई।

उछल कूद करना–१. बढ बढ कर बाते करना। उ० क्या उछल कूद करते हो, तुम्हारी हकीकत किसी से छिपी नही है। २. चंचलता करना।

उछल पड़ना–खूब खुश होना। खुशी या जोश से कूदने लगना। उ० मोहन परीक्षा मे उत्तीर्ण होने की खबर सुनते ही उछल पडा।

उजड़ जाना–लुट जाना, बरबाद हो जाना। उ० उस बैल के मर जाने से मै तो उजड गया।

उजड़ा घर बसना–एक स्त्री के मरने के बाद फिर से शादी होना। उ० उस बेचारे का उजड़ा घर बस गया, यह बहुत अच्छा हुआ।

उजड़ा पुजड़ा–रद्दी, बेकार, खराब। उ० उजड़े पुजड़े सामान मै नही लेना।

उजड़ी कोख–बेऔलाद, निःसन्तान।

उजरत पर देना–किराए या भाड़े पर देना। उ० यो न देना हो तो उजरत पर दे दो।

उजला मुँह करना–महत्त्व बढाना, इज्जत बढ़ाना, चार चाँद लगाना। उ० शाबास! तुमने आज मैदान मारकर सारे परिवार का उजला मुँह कर दिया।

उजली गुज़रान–आराम से जिंदगी बिताना। उ० उजली गुज़रान वाले हम गरीबो का दुख दर्द क्या समझें?

उजली तबियत–१. सुलझी हुई तबियत, होशियार अक्ल। उ० वह उजली तबियत का आदमी है। २. रंगीन तबीयत, रस लेने वाली तबीयत।

उजली समझ–बात की तह मे जल्दी पहुँचने वाली बुद्धि। उ० उसकी बडी उजली समझ है। वह तो तुरंत ताड़ जाएगा।

उजला मुँह करना–महत्व बढ़ाना, इज्जत बढ़ाना, चार चाँद लगाना। उ० शाबास! तुमने आज मैदान मार कर सारे परिवार का मुँह उजला कर दिया।

उटक्कर का फ़तीहा–व्यर्थ का घूमने वाला। उ० तुम जैसा उटक्टर का फ़तीहा मैंने नही देखा।

उठ खड़ा होना–बीमारी से अच्छा होना। उ० भगवान की कृपा से साल भर के बाद मै उठ खड़ा हुआ हूँ।

उठ जाना–१. खर्च हो जाना। उ० जो कुछ मेरे पास था, इस यात्रा मे सब उठ गया। २. मर जाना।

उठती उम्र–यौवन का प्रारंभ।

उठती कोंपल–१. जवानी। उ० मोहन की उठती कोंपल है, अब जोश न होगा तो कब होगा?

उठती जवानी–चढ़ती जवानी, नया यौवन। उ० उठती जवानी मे कुछ पाप हो ही जाते हैं।

उठते बैठते–हर समय। उ० उठते बैठते आपकी याद मुझे सताया करती है।

उठना बैठना–आना जाना। उ० मैने अब उसके यहाँ उठना बैठना बद कर दिया है।

उठाऊ चूल्हा–वह आदमी जो एक जगह जमकर न रहे। उ० तुम्हारा क्या ठिकाना? तुम तो उठाऊ चूल्हे हो।

उठा देना–१. किराए पर दे देना। उ० उन्होंने अपना मकान उठा दिया। २. सर पर बोझ उठा देना। उ० उठा दो तो मै भी चलूं।

उठा बैठी–हैरानी, दौड़ धूप। उ० इतनी उठा बैठी बेकार हुई।

उठा मारना–दे मारना, जमीन पर गिरा देना। उ० उस छोटे पहलवान ने अखाड़े मे उतरते ही ऐसा उठा मारा कि लोग दग रह गए।

उठा रखना–छोड़ रखना, बाकी रखना। उ० विश्वास रक्खो, मै तुम्हारे लिये कुछ भी नही उठा रक्खूंगा।

उड़ आना–शीघ्र आना। उ० तुम तैयार हो जाओ। वह तो उड़ आएगा।

उड़ चलना–१. नौ दो ग्यारह होना, भाग जाना। उ० मोहन! तुम यहाँ से उड़ चलो, नही तो पुलिस तुम्हें पकड़ लेगी। २. शोभित होना। ३. मजेदार होना। ४. गुमराह होना।

उड़ता बनना–दे० 'उड़ता होना'।

उड़ता होना–१. गायब होना, भाग जाना। उ० चोर मेरा सब धन लेकर उड़ता हो गया।

उड़ती ख़बर–अफ़वाह। उ० उड़ती खबर पर कभी भी विश्वास नही करना चाहिये। उसकी बदनामी की ख़बर अभी उड़ती है।

उड़ती चिड़िया के पंख गिनना–१. बहुत चतुर होना। २. थोड़े आभास से स्थिति भाँप लेना।

उड़ती चिड़िया को हल्दी लगाना–बहुत होशियार होना। उ० वह उड़ती चिड़िया को हल्दी लगाता है। तुम्हारे चक्कर मे कभी न आएगा।

उड़ती चिड़िया पहचानना–गूढ रहस्य जान जाना, मन की बात जानना। उ० मित्र, मै उड़ती चिड़िया पहचानता हूँ। मुझसे क्या छिपा रहे हो ?

उड़ती नज़र–सरसरी निगाह।

उड़कर पादना–छोटा मुँह बड़ी बात करना। उ० अरे बेटा उड़ कर न पादो, मैं तुम्हारी तीन पुश्ते तक जानता हूँ।

उड़द के आटे की तरह ऐंठना–बहुत नाराज होना। उ० तुम तो यार, उड़द के आटे की तरह ऐंठते हो।

उड़द पर सफेदी–बहुत कम। उ० उनमें सौंदर्य क्या है, उड़द पर सफेदी है।

उड़द मारना–टोना झाड़ना, भूत भगाना। उ० ओझा का उड़द मारना एक ढोंग होता है।

उड़न छू होना–लापता हो जाना। उ० मुझे मार कर राम उड़न छू हो गया।

उड़ानघाई–धोखा, जुए की चालाकी। उ० उसकी उड़ानघाई से होशियार रहना। [इसका प्रयोग जुआड़ियो की भाषा मे होता है।]

उड़ान भरना–उड़ान मारना, बहुत दूर तक आना जाना। उ० आजकल आप खूब उड़ान भर रहे है। आखिर बात क्या है ?

उड़ान मारना–दे० 'उड़ान भरना'।

उड़ाना–१ धोखा देना। उ० आप मुझ गरीब को उड़ाकर क्या पावोगे ? २ बहकाना। ३. मार लेना, चुरा लेना। उ० उसने मेरा कोट उड़ा लिया।

उड़ा रखना–प्रसिद्ध कर देना। उ० लोगो ने झूठी ख़बर उड़ा रखी है कि आज यहाँ नाटक होगा।

उड़ा लाना–मार लाना, झटक लाना, चुरा लाना। उ० कहो, क्या उड़ा लाए ?

उड़ी-उड़ी बातें करना–बेमन से बातें करना।

उड़ेंच निकालना–ऐब निकालना। उ० बेकार किसी के काम में उड़ेंच निकालने से क्या लाभ ?

उतर कर–कुछ कम। उ० मै तुमसे उतर कर ही धूर्त्त हूँ।

उतरती उम्र–ढलती आयु।

उतरा कर चलना–गर्व करना। उ० नौकरी पा गया तो उतरा कर चलने लगा। यही तो आज के लड़कों का हाल है।

उतार चढ़ाव बताना–धोखा देना, बहकाना। उ० आपके उतार चढाव बताने में वह नही आ सकता।

उतारू होना–तत्पर होना। उ० राम मुझसे लड़ने के लिये उतारू हो गया है।

उत्तम मध्यम कहना–भला बुरा कहना। उ० आपका उत्तम मध्यम कहना बेकार है। मैंने साफ कह दिया कि इस काम में मेरा बिलकुल हाथ नहीं था।

उतारे का माल–चोरी का या मुफ्त का माल। उ० उतारे का माल नही है, जो इतना सस्ता मिल जायेगा।

उल्लू-उल्लू करना या कर देना–मारते-मारते बदन उधेड़ देना। उ० उसने तो उस गरीब भिखारी को उल्लू-उल्लू कर दिया।

उल्लू करना–१. बेवकूफ बनाना। उ० उल्लू न करो, तुमने जितना चून खाया है, उतना मैंने नून खाया है। २. बड़ी मार मारना।

उल्लू हो जाना–बेवकूफ होना, बिना बुद्धि का होना। उ० उसके आगे तो तुम उल्लू हो जाते हो। केवल मुझ पर गेब गालिब करना तुम्हे आता है।

उथल-पुथल करना–१. उलट पुलट देना। उ० मेरे कमरे की सब चीजें किसने उथल-पुथल कर दी है। २ क्रांति करना।

उदय से अस्त तक–दे० 'उदय से अस्त लौ।'

उदय से अस्त लौ–सारी ज़मीन पर। उ० उदय से अस्त लौ भ्रमण करके देख लो, उसके जैसा शरारती आदमी मिलना मुश्किल है।

उदर जिलाना–पेट पालना। उ० नौकरी क्या करता हूँ, किसी तरह उदर जिला रहा हूँ।

उदर भरना–पेट भरना। उ० किसी तरह उदर भरता है।

उधर का चाला नहीं होना–उस ओर जाने लायक दिन न होना। उ० उधर का चाला नही है तो क्यो जाते हो, शायद कुछ हो जाय तो ?

उधार खाये बैठना–१. किसी आशा मे बैठे रहना। उ० क्या बेकार मे उधार खाए बैठे हो ? कुछ करते धरते क्यो नही ? २. कर्ज़दार होना। उ० वह तो मेरा उधार खाए बैठा है, देने का नाम नही लेता।

उधेड़ देना–१. भेद कह देना। उ० मुझे परेशान करोगे तो मै तुम्हारा और किस्सा उधेड़ दूँगा। २. खूब पीटना।

उधेड़बुन–सोच-विचार। उ० तुम कई दिन से किसी उधेड़बुन में हो, आखिर बात क्या है ?

उधेड़बुन में पड़ना–किसी समस्या के सोचने-विचारने मे परेशान या व्यस्त होना। उ० पड़ गये हो उधेड़बुन मे क्यो, तुम गए बार-बार बीछे हो।

उन्नीस–१. कमजोर। उ० यह पहलवान उससे कुछ उन्नीस है। २ कम। उ० इसका दाम कुछ उन्नीस होना चाहिए।

उन्नीस बिस्वे–प्रायः, अधिकाशत.। उ० मुझे तो उन्नीस बिस्वे उनके न आने की ही आशा है।

उन्नीस–बीस का फर्क होना–बहुत कम अतर होगा। उ० उन्नीस-बीस का फ़र्क कोई फ़र्क नही है।

उन्नीस-बीस होना–बहुत थोड़ा अतर होना।

उन्नीस होना–कम होना। उ० तुमसे उन्नीस कौन है ?

उपरी–उपरा–चढा-उपरी, एक दूसरे से बढ़ जाने की इच्छा। उ० उन दोनों में आजकल खूब उपरी-उपरा चल रही है।

उफन जाना– गुस्सा हो जाना। उ० छोटी सी बात पर उफन जाना ठीक नही है।

उफन पड़ना–दे० 'उफन जाना।

उबटना खेलना–मिलना। [इसका प्रयोग मुसलमानो की भाषा मे होता रहा है।]

उबल पड़ना–गुस्से मे आना, गुस्से मे दिल की गुबार निकालना, जली-कटी सुनाना। उ० बस उबल पड़े ! यही तो आपकी बिसात है, और समझते हैं अपने को गांधी का चेला।

उभर जाना–१. हालत ठीक होना। उ० अब वह बहुत उभर गया है। २. निकल आना। ३ उन्नति करना।

उभरना या उभर चलना–१. गर्व करना। उ० धनी होने का यह अर्थ थोड़े है कि उभर चलो। २. जवान होना। उ० वह अब उभर चला। ३ उन्नति करना। उ० आदमी ईमानदारी से रहे तो उभरते देर नही लगती। ४. किसी गुप्त बात को बताना। उ० पहले तो कुछ नही बतलाता था पर बाद में ऐसा उभरा कि सारा कच्चा-चिट्ठा खोल दिया।

उभर देना–१. उकसा देना। उ० तुमने मेरे भाई को उभार दिया और वह मुझसे लड़ बैठा। २. खोल देना। उ० इस सीयन को उभार दो।

उभार पर होना–उन्नति पर होना। उ० यह मान लिया कि तुम उभार पर हो, किन्तु सबसे झगडना ठीक नही है।

उभार लाना–उठा लाना। उ० अगर मै उभार लाऊँगा तो तुम क्या करोगे ?

उभार लेना–ऊपर आना। उ० डूबने के पूर्व बेचारे ने दो एक उभारे ली होगी, पर यहाँ था ही कौन, जो बचाता ?

उभारा लेना–किसी बीमारी का जाकर फिर से उभरना। उ० जरा ठीक से रहो, यह ज्वर यदि उभारा लेगा तो बचना मुश्किल हो जायगा।

उमड़ना-घुमड़ना–चारो तरफ छाना। उ० आज बादल खूब उमड़-घुमड़ रहे हैं।

उमर के दिन भरना–दुख से जिंदगी बिताना। उ० भाई, मै उमर के दिन भर रहा हूँ, अब इस जीवन में कोई आकर्षण नही।

उमर टेरना–किसी प्रकार जीवन के दिन पूरे करना। उ० किसी तरह उमर टेर रहा हूँ।

उमर पड़ना–बुढापा आना।

उमर भर का पट्टा लिखाना–हमेशा के लिए वचनबद्ध होना। उ० आपका मैंने उमर भर का पट्टा नही लिखाया है, अब आप खुद कमायें और अपना काम चलाएँ।

उमर भर की रोटियाँ सीधी कर लेना–जीवन भर के खाने-पीने का प्रबन्ध कर लेना। उ० मैं दो वर्ष भी आप के यहाँ नौकरी कर लूँगा तो उमर भर की रोटियाँ सीधी कर लूँगा।

उम्मीद होना–गर्भ होना, संतान की आशा होना। उ० मेरी घरवाली को अब कुछ उम्मीद

है। इन दिनों भाई साहब के घर मे कुछ उम्मीद है। आशा है लड़का ही होगा।

उम्र–'उम्र' के मुहावरों के लिए दे० 'उमर'।

उर लाना–प्यार करना। उ० अपने बच्चे को उर लाने से कौन माँ रोकी जा सकती है?

उरिण होना–ऋण-मुक्त होना?

उलझन में पड़ना–चक्कर मे पड़ना, फेर मे पड़ना। उ० मैं इस समय बड़ी उलझन मे पड़ गया हूँ।

उलझा सुलझा–भला बुरा, टेढ़ा सीधा। उ० उलझा सुलझा कुछ भी बतला दो।

उलट जाना–मदहोश हो जाना। उ० तुम तो पीते ही उलट गये।

उलट पड़ना–१. नाराज होना। उ० मैंने कौन सी ऐसी बात कही कि आप उलट पड़े? २. एक को छोड़ दूसरे पर आ जाना। उ० यार, तुम्हें उलट पड़ते तो देर नहीं लगती! कल तक उसे बुरा कह रहे थे, आज मुझे ही कहने लगे।

उलट-पेंच की बात करना–चालाकी की बात करना। उ० मै आपकी उलट-पेंच की बात करना समझ रहा हूँ, आप मुझे धोखा नही दे सकते।

उलटा घड़ा बाँधना–और का और करना। उ० उसे न दो, नहीं तो वह उलटा घड़ा बाँध देगा।

उलटा ज़माना–बुरा ज़माना। उ० आज-कल उलटा ज़माना है, सबको बहुत होशियारी से रहना चाहिये।

उलटा तवा–बहुत काला। उ० उसे सुन्दर कह रहे थे! अरे वह तो उलटा तवा है!

उलटा पाठ पढ़ाना–दे० 'उलटी पट्टी पढ़ाना'।

उलटा लटकना–किसी चीज के लिये बहुत परिश्रम करना। उ० अगर तुम उलटा लटक जाओ तो भी इस साल परीक्षा मे नहीं पास हो सकते।

उलटा सीधा–भला बुरा। उ० अच्छा अब आप चुप रहें, बहुत उल्टा सीधा बोल चुके।

उलटी आँते गले में आना या पड़ना–दे० 'उलटी टाँगे गले आना'।

उलटी खोपड़ी–बेवकफ़। उ० उलटी खोपड़ी के आदमी अपने को सबसे होशियार समझते है।

उलटी गंगा बहाना–अनहोनी बात करना। उ० आप क्या उलटी गंगा बहा रहे हैं? कही बन्दर भी लिख सकता है?

उलटी छूरी से काटना–बहुत दुःख देना। उ० भाई, क्यो उलटी छूरी से काट रहे हो? इससे तो अच्छा है कि जान से ही मार दो।

उलटी टाँगे गले में आना–अपनी करनी से आप फँसना। उ० अक्ल रखते हो या पत्थर? इस बात से तो उलटी टाँगे गले मे आएँगी!

उलटी पट्टी पढ़ाना–बहकाना। उ० आप की उलटी पट्टी पढ़ाना मै समझ रहा हूँ। मुझे बेवकूफ़ न समझिये। तुमने उसे ऐसी उलटी पट्टी पढाई कि अपने बाप से लड़ बैठा।

उलटी माला फेरना–बुराई करना, किसी के बुरे के लिए भगवान से प्रार्थना करना। उ० कोई तुम्हारी बुराई करे तब भी तुम उलटी माला न फेरो।

उलटी साँस चलना–मरने के निकट होना। उ० आज सुबह ही से उसकी उलटी साँस चल रही है।

उलटी सीधी सुनाना–बुरा भला कहना। उ० आपने मुझे बहुत उलटी सीधी सुनायी, अब चुप रहिये, नहीं तो खैरियत नहीं है।

उलटे काँटे तौलना–कम तौलना। उ० सबके लिये तुम उलटे ही काँटे तौलते हो।

उलटी हवा बहना–विपरीत अवस्था होना। उ० उलटी हवा बही है। एक स्त्री ने अपने पति को विष दे दिया।

उलटे छुरे से मूँड़ना–मूर्ख बनाना। उ० उसने तो मुझे उलटे छुरे से मूँड़ लिया।

उलटे पाँव फिरना–फ़ौरन लौट जाना। उ० मुझे देखते ही वह उलटे पाँव फिर गया।

उलटे पाँव लौटना–तुरत लौटना। उ० मोहन आज मेरे यहाँ आया और उलटे पाँव लौट गया।

उलटे पाँव वापिस जाना–दे० 'उलटे पाँव लौटना।'

उलटे बाँस बरेली भेजना–जहाँ जिस वस्तु की ज़रूरत न हो वहाँ उसे भेजना। उ० तुमने प्रयाग अमरूद भेजे है। अजीब आदमी हो, उलटे बाँस बरेली भेजते हो।

उलटे मुँह गिरना–दूसरो को नीचा दिखाने के प्रयास मे खुद नीचा देखना। उ० आप मेरे फेर में थे और उलटे मुँह गिरे। ईश्वर बुरे का भला कभी नही करता।

उलाहना उतारना–दे० 'ओलाहना उतारना'।

उलाहना देना–शिकायत करना। उ० मुझसे उसका उलाहना देकर क्या करोगे ? मैं उससे इसके बारे मे कुछ भी नहीं कह सकता।

उल्लू का गोश्त खिलाना–बेवकूफ़ बनाना। उ० मुझे उल्लू का गोश्त भी नही खिला सकते !

उल्लू का पट्ठा–बेवकूफ। उ० यार तुम तो पूरे उल्लू के पट्ठे हो, तुमसे कुछ भी नही हो सकता।

उल्लू की लकड़ी फेरना–मूर्ख बनना।

उल्लू के से दीदे–डरावनी और बड़ी-बडी आँखे। उ० अरे तुम्हारे तो उल्लू के से दीदे है ! तुम्हे देखकर तो भूत भी डर जायगा !

उल्लू फँसाना–१ अपने वश मे करना। उ० आजकल आपने उसे खूब उल्लू फँसाया है। २. बेवकूफ़ बनाना। उ० तुम्हारे में क्या रक्खा है, वह बड़ों-बड़ों को उल्लू फँसाता है।

उल्लू फाँसना–दे० 'उल्लू फँसाना।'

उल्लू बनाना–मूर्ख बनाना। उ० मुझे क्या उल्लू बनाते हो ? मै तो बड़ों को भी चराता हूँ !

उल्लू बोलना–उजाड़ होना। उ० जहाँ अच्छे अच्छे शहर थे, वहाँ आज उल्लू बोलता है।

उल्लू सीधा करना–काम बनाना। उ० उल्लू सीधा करना हो तो उसकी शिफ़ारिश करो।

उसास छोड़ना–दुःख या शोक की साँस छोड़ना। उ० दशरथ उसास छोडते परमधाम गए।

उसी पाँव लौट आना–तुरत लौट आना।

उस्ताद होना–छली, धूर्त या गुरुघटाल होना। उ० तुम भी तो उस्ताद हो। तुम्हारे साथ ऐसा करके उसने कोई बुरा तो नहीं किया।

ऊ

ऊँच नीच–भला बुरा, आला और अदना, बडा और छोटा। उ० दानव देव ऊँच अरु नीचू।

ऊँच नीच समझना–हानि-लाभ सोचना। उ० ऊँच नीच समझ कर किसी काम मे हाथ डालना चाहिये।

ऊँच नीच समझाना–भली बुरी बताना। उ० मैंने ऊँच नीच समझा दिया है, अब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने।

ऊँच नीच सुनना–भली बुरी सुनना। उ० बेफायदे मे किसी की ऊँच नीच सुनने क्यो जाऊँ।

ऊँच नीच सूझना–उचित ध्यान होना। बुरा भला दिखलाई देना। उसका ग्रेजुएट होना बेकार है, जब उसे ऊँच नीच भी नही सूझता।

ऊँच नीच सोचना–अच्छी तरह सोच-विचार लेना। भला बुरा समझ लेना। ऊँच-नीच सोच-कर तो काम शुरू करो नही तो पछताना पड़ेगा।

ऊँचा करना–ऊपर उठाना, तारीफ करना। उ० आप उसको ऐसे ही ऊँचा कर रहे है। वह इस काबिल नहीं है।

ऊँचा नीचा दिखाना–१. हानि लाभ दिखाना। २. बहकाना। उ० उसे ऊँचा नीचा दिखाकर तुमने अपना काम बना लिया।

ऊँचा नीचा सुनाना–खरी खोटी सुनाना। डाँटना-फटकारना।

ऊँचा सुनना–कुछ कम सुनना। उ० मेरे भाई कुछ ऊँचा सुनते है।

ऊँचा स्वर–ऊँची आवाज।

ऊँचा होना–अधिक होना, बढकर होना। उ० अगर सही-सही पूछते है तो वे किसी भी बात में ऊँचे नही है।

ऊँची नाक होना–अपनी इज्जत का बहुत ध्यान होना।

ऊँची नीची पचाना–भली-बुरी बातों को बर्दास्त करना या छिपा लेना।

ऊँची नीची सुनना–भला बुरा कहना, फट-कारना। उ० उसके पिता ने उसे आज खूब ऊँची-नीची सुनाई।

ऊँची साँस लेना–दुःख या शोक मे मग्न होना। उ० लेकर उन्होंने श्वास ऊँचा बदन नीचा कर लिया।

ऊँची हवा में होना–अपने को बहुत बड़ा सम-झना।

ऊँचे-खाले पैर पड़ना–१. गलती होना। भ्रष्ट होना। २. व्यभिचार में पुरुष या स्त्री का फँसाना। ३. ऊँचे खाले पैर किसके नही पड़ते ?

ऊँचे चढ़कर कहना–पुकार कर कहना। सबसे कहना। उ० मैं ऊँचे चढकर कह रहा हूँ कि जिसे हाथ मिलाना हो सामने आए।

ऊँचे चढ़ना–१. अभिमान करना। उ० आजकल

आप बहुत ऊँचे चढ़ रहे हैं। २. उन्नति करना।

ऊँचे नीचे पैर पड़ना—दे० 'ऊँचे खाले पैर पडना।'

ऊँचे बोल का मुँह नीचा होना—घमडी का घमड भंग होना। उ० ससार में यह देखा जाता है कि ऊँचे बोल का मुँह अवश्य नीचा होता है।

ऊँट का किसी करवट में बैठना—मामले मुकदमे या झगडे मे फैसला होना। उ० देखें ऊँट किस करवट बैठता है ?

ऊँट का सुई की नाक मे जाना—असम्भव काम। उ० तुम्हारा उसे पछाड देना ऊँट का सुई की नाक में जाना है।

ऊँट के मुंह मे जीरा देना—अधिक आवश्यकता पर थोडी वस्तु देना। उ० मेरे लिये एक पाव दूध। क्या ऊँट के मुँह मे जीरा दे रहे हो ?

ऊँट होना—१ लम्बी गर्दन वाला होना। २ बहुत लंबा होना। ३ ऊँट हो गए और शऊर नही आया।

ऊधम उठाना—दे० 'ऊधम मचाना'।

ऊधम जोतना—दे० 'ऊधम मचाना'।

ऊधम मचाना—उपद्रव करना। उ० क्या ऊधम मचा रहे हो, एक थप्पड मे तो जमीन पकड लोगे।

ऊधो की लेना न माधो की देना—किसी से कुछ सबध न रखना। उ० मुझसे किसी से क्यों झगडा होगा ? मैं न ऊधो की लेता हूँ न माधो को देता हूँ।

ऊपर ऊपर की—दिखावटी। उ० उनकी और आपकी दोस्ती बस ऊपर ऊपर की है।

ऊन की दून करना—छोटी सी बात को बडी बनाना।

ऊपर ऊपर जाना—१ न रुकना। तुरन्त जाना। उ० आप तो आते है और ऊपर ही ऊपर चले जाते है। २ किसी खास काम में न खर्च होकर यो ही खर्च हो जाना। उ० सारा रुपया ऊपर ही ऊपर चला गया। ३ नीचे की चीजो को छोडना या न देखना। ४. केवल ऊपर-ऊपर या ऊपरी चीजो को देखना। उ० कोई आता भी है तो ऊपर ही ऊपर चला जाता है।

ऊपर की आमदनी—इधर उधर की कमाई। उ० मेरी ऊपर की आमदनी ही तो कुछ है, नही तो भला वेतन मे क्या रक्खा है ?

ऊपर की दोनों जाना—अधा होना, दिखाई न देना। उ० जब से मेरी ऊपर की दोनों गई, मुझे बड़ा कष्ट है।

ऊपर की साँस ऊपर और नीचे रह जाना—दे० 'नीचे की साँस नीचे और ऊपर की साँस ऊपर रह जाना'।

ऊपर को दम भरना—१ ऊँची साँस लेना। उ० क्यों ऊपर को दम भरते हो ? २ ऊपरी मुहब्बत करना। उ० तुम्हारे सब दोस्त तो ऊपर को ही दम भरने वाले है।

ऊपर चढ़ना—आक्रमण करना। उ० थानेदार बिना कुछ पूछे मुडे के ऊपर चढ गया।

ऊपर छार पड़ना—मर जाना। उ० जो लौं ऊपर छार नहि परै। तो लौं यह तृष्णा नहि मरै।

ऊपर तले के—एक के बाद दूसरा। तर ऊपरिया। उ० उसके ऊपर तले के तीन पुत्र है।

ऊपर मढ़ना—जिम्मे करना। डालना। उ० यह अपराध आप मेरे ऊपर क्यो मढ रहे है ?

ऊपर वाला—भगवान। उ० ऊपर वाला बडा दयालु है।

ऊपर से ऊपर खा जाना—बिना किसी के जाने ले लेना या चट कर जाना। उ० घूस का सारा रुपया ये ऊपर से ऊपर खा जाते है, मुझे कुछ भी नही मिलता।

ऊपर से ऊपर लेना या ले लेना—१ पहले ही ले लेना। उ० आम आए थे, परन्तु तुम लोगों ने ऊपर से ऊपर ही ले लिए। २ ऐसा ले लेना कि किसी को पता न चले।

ऊपर ही ऊपर खा जाना—दे० 'ऊपर से ऊपर खा जाना'।

ऊपर ही ऊपर लेना—दे० 'ऊपर से ऊपर लेना'।

ऊपर होना—आगे बढ जाना। उ० अब वह मुझसे पढाई मे बहुत ऊपर हो गया है।

ऊपरी खर्च—फुटकर खर्च। उ० १०) तो उसका ऊपरी खर्च है।

ऊपरी दिल से—नकली तौर पर, यथार्थत नही। उ० मै जानता हूँ, वह तुम्हे ऊपरी दिल से चाहता है।

ऊल-जलूल—बेकार की बात। उ० क्या ऊल जलूल बकते हो ?

ऊसर की खेती—१ व्यर्थ का काम। २ असंभव काम।

ऋ

ऋण उतारना–कर्ज अदा होना। उ० हमारा ऋण उतर गया है।

ऋण करना–अपने ऊपर कर्ज़ा करना। उ० पिता जी ऋण करके मर गए, अब मुझे ही चुकाना है।

ऋण काढ़ना–कर्ज़ा लेना। उ० ऋण काढकर करने से कुछ न करना अच्छा है।

ऋण खाना–कर्ज लेना। उ० दुनिया भूखी मर जाये पर ऋण खाने वाला कभी भूखा नहीं मरता।

ऋण चढ़ना–कर्ज होना। कर्ज बढना। उ० मेरे ऊपर बहुत ऋण चढ गया, अब देने का उपाय करना चाहिए।

ऋण चढ़ाना–कर्ज बढाना। उ० ऋण बढाना बहुत बुरा होता है।

ऋण पटना–कर्ज वसूल होना। उ० इस आदमी से ऋण पट जाय तो बड़ा भाग्य समझो।

ऋण पटाना–कर्ज वसूल कराना। उ० उनसे ऋण पटा दो तो तुम्हे भी कुछ हिस्सा दे दूँ।

ऋण मढ़ना–किसी पर ऋण छोड जाना। उ० मेरे भाई मेरे ऊपर ऋण मढ़ कर अपने विदेश चले गये।

ऋण शुद्धि होना–कर्ज का अदा हो जाना। उ० किसी तरह ऋण शुद्धि हो जाती तो ईश्वर को धन्यवाद देता।

ऋद्धि-सिद्धि पाना–समृद्धि और सफलता पाना। उ० उसने तो ऐसी ऋद्धि-सिद्धि पाई है कि देखते ही बनता है।

ए

ऍंच करना–देर लगाना। उ० ऍंच न करो, इसको जल्दी समाप्त करो।

ऍंच पेंच डालना–उलझन या अटकाव डालना। उ० ऍंच पेंच डालकर उसने मेरा काम रोक दिया।

ऍंच पेंच बताना–चालबाजी करना। उ० मुझे ऍंच पेच न बताओ, मैं तुमको अच्छी तरह जानता हूँ।

ऍंड़ी बेंड़ी सुनाना–फटकारना, भला बुरा कहना। उ० रोज ऍंड़ी बेंडी सुनाओगे तो ठीक न होगा।

एक अंक–दे० 'एक आँक'।

एक अंग भी कच्ची न होना–अविचलित रहना।

एक आँक–एक ही बात। निश्चित रूप से। उ० एक आँक कहता हूँ कि मैं उससे कभी भी नहीं बोल सकता।

एक आँख देखना–एक झलक लेना।

एक आँख न भाना–ज़रा भी अच्छा न लगना। उ० आपका काम मुझे एक आँख भी नहीं भाता।

एक आँख से देखना–एक सा समझना। एक सा व्यवहार करना। उ० राजा को अपनी सारी प्रजा को एक आँख से देखना चाहिये।

एक–आध–कुछ, थोड़े से। उ० आज भी एक आध आदमी आ सकते है, अतः कुछ प्रबन्ध अवश्य रखना।

एक–एक–१. बारी बारी। उ० एक-एक करके मै सबको हरा सकता हूँ। २. अलग अलग। उ० एक-एक लडते तो बताता। ३. हर एक। उ० एक-एक को पीटूँगा।

एक-एक के दो-दो करना–दूना लाभ लेना। बहुत लाभ लेना। उ० एक-एक के दो-दो करने वालो की दूकान कभी नहीं चलती।

एक–एक कोना छान मारना–सब जगह खोजना। उ० मैने घर का एक-एक कोना छान मारा, पर मुझे अपनी कमीज नही मिली।

एक–एक नस पहचानना–सच्चाई जानना। उ० सब आपकी एक-एक नस पहचानते है। आप चुप ही रहें तो अच्छा है।

एक–एक पग चलना दूभर होना–निर्बलता से बिल्कुल चल न पाना। उ० मुझे तो एक-एक पग चलना दूभर हो रहा है, मै भला वहां तक कैसे जा सकता हूँ?

एक और एक ग्यारह होना–मेल से बहुत बल बढ जाना। उ० तुम दोनो मिल कर हमला करो फिर देखो कि क्या गुल खिलता है? जानते हो, एक और एक ग्यारह होते है!

एक कलम–पूर्णत., बिलकुल । उ० उसको नेक कलम बर्खास्त कर दिया ।

एक कहना न दस सुनना–किसी को भला बुरा न कहो न उसका सुनना पड़े । उ० नही भाई मै उनसे बात भी नही करूँगा । मै न एक कहूँ न दस सुनूं वाला सिद्धान्त पसद करता हूँ ।

एक कान से सुनना दूसरे से निकाल देना–(किसी) बात पर ध्यान न देना ।

एक की अट्ठारह लगाना, एक की चार जोड़ना, एक की कई बनाना–बढाचढाकर कहना या सीकायत करना ।

एक की दस सुनाना–एक के उत्तर मे दस कहना, एक ताने के बदले मे दस कड़े शब्द कहना । उ० भाई तुम एक की दस सुनाओ, मै कभी भी बुरा नही मानूंगा ।

एक की दो कह लेना–दुगुना बदला लेना । उ० यदि मेरे कहने पर नाराज हो, तो एक की दो कह लो ।

एक की दो-चार-अट्ठारह-लाख-जड़ना-जोड़ना-लगाना–बढा-चढाकर कहना ।

एक के पीछे दूसरा–धीरे-धीरे, बारी-बारी से । उ० एक के पीछे दूसरे चलते बने ।

एक कपड़े का नहलाया होना–दे० 'एक तरकश के तीर होना' ।

एक खालसा सवा लाख होना–हिम्मत बहुत बडी चीज होना । उ० जानते हो, एक खालसा सवा लाख होता है । हिम्मत करो तो क्या नही हो सकता ?

एक जबान–दे० 'एक बात' ।

एक जबान होना–दे० 'एक बात होना' ।

एक जान–बिलकुल हिले-मिले, बहुत बडे मित्र । उ० वे दोनो एक जान हैं ।

एक जान करना–मरना और मारना । उ० अगर फिर कुछ कहेगे तो एक जान कर दूंगा ।

एक टक–बिना पलक गिराए । उ० वह तुम्हे एक टक देख रहा था ।

एक टांग खडा रहना–काम करने को हर वक्त तैयार रहना । उ० मेरा नौकर दिन-रात एक टाँग खडा रहता है ।

एक टाँग पर खडा रहना–दे० 'एक टाँग खडा रहना' ।

एक टाँग पर घूमना–लगातार घूमना । उ० सुबह से वह एक टाँग पर घूम रहा है ।

एक डाल पर रहना–१ बात न बदलना । उ० मै तो मरने दम तक एक डाल पर रहने वाला हूँ । २ एक ओर रहना, एक पक्ष का समर्थन करना । उ० एक डाल पर रहो, नहीं तो दूध की मक्खी की तरह फेंक दिए जाओगे ।

एक ढेले से दो चिड़िया मारना–१ एक चाल से दो को हराना, २ एक काम से दुहरा लाभ करना ।

एक तरकश के तीर होना–एक गुट्ट के होना, एक सा होना । स्वभाव में बिलकुल एक होना । उ० तुम दोनों ही तो एक तरकश के तीर हो । किसे अच्छा कहूँ और किसे बुरा ?

एक तहसील गायब होना–दे० 'एक बाजार बद होना' ।

एक तार–बराबर । उ० दोनो एक तार है । कोई भी फर्क नही है ।

एक थैली के चट्टे बट्टे होना–दे० 'एक तरकश के तीर होना' ।

एक दो तीन बोलना–१ नीलाम करना । उ० कल उसका सभी सामान एक दो तीन बोल दिया जायगा । २ दौड इत्यादि शुरू करवाना । उ० जल्दी चलो । निर्णायक एक दो तीन बोलने वाले है ।

एक दो तीन होना या हो जाना–१ नीलाम होना । २ दौड आदि खेलो का आरंभ होना । ३. चल देना । उ० है वह विचित्र का स्वार्थी । अपने काम पर तो यहाँ रुकता है, और नही तो एक दो तीन हो जाता है ।

एक न चलना–कोई उपाय न लगना । उ० मेरे रहते उसकी एक न चलेगी ।

एक पथ दो काज करना–एक उपाय से दो काम करना । उ० घूमने तो चल ही रहे हैं, लौटते हुए पुस्तक भी ले लेगे । एक पथ दो काज कर लेगे ।

एक पर एक होना–एक से एक बढकर होना । उ० ससार मे अनेक विद्वान एक पर एक है ।

एक परगना गायब होना–दे० 'एक बाजार बद होना' ।

एक पान के दो टुकड़े करके खाना–बहुत घनिष्ठ होना ।

एक पास–पास पास । उ० रवीसार दोनो एक पासा ।

एक पेट के–सहोदर भाई । उ० वे दोनों एक पेट के है ।

एक पैर भीतर यहाँ एक पैर बाहर वहाँ होना–स्थिर न होना, दुचित्ता होना ।

एक बाजार बन्द होना–काना होना । उ० उनका तो खुद एक बाजार बद है, वे क्या मुझे एचा-तान कहेगे ?

एक बात–१. पक्का वादा। उ० मैं एक बात कहता हूँ, आप इस पर विश्वास करें। २. ठीक या निश्चित बात। उ० एक बात कहना तो तुम जानते ही नहीं हो।

एक बात पर होना–जो कहे उसी पर अटल रहने वाला होना। उ० अगर एक बात पर हो तो मेरे साथ चलो, और नहीं तो स्वीकार करो कि तुमने कल असत्य कहा था।

एक माँ-बाप का होना–१. मिल कर रहना। उ० एक माँ-बाप का होने से ही उन्नति संभव है। २ असल का होना, एक बाप का होना। उ० अगर एक माँ-बाप के होंगे तो अब मुझसे न बोलेंगे।

एकमुँह बोलना–१. एक राय होना। उ० सब पंच एक मुँह बोल रहे है तो अन्यथा कैसे हो सकता है ? २. जरा-सा बोलना। बोल देना। उ० वह जाने अपने को क्या समझता है कि जाने पर एक मुँह बोलता तक नही।

एकमुँह से कहना–एकमत होना, एक की राय दूसरे से मिलना। सब का एकसाथ कहना। उ० पंचायत मे सब एक मुँह से कहने लगे कि उसका कुछ भी दोष नही है।

एकमुँह होना–दे० 'एक मुँह बोलना'।

एकमुश्त–एकसाथ, इकट्ठे। उ० उसने एकमुश्त १०० रु० दिए।

एक म्यान में दो तलवार होना–एक अपेक्षित की जगह दो होना जो उचित या संभव न हो।

एक में एक करना–उलटा-सीधा करना। उ० सब सामान एक मे एक क्यों कर दिया ? ठीक से रक्खो।

एक रंग आना एक रंग जाना–मुँह पर हवाई उडना। उ० इस समाचार से उसके चेहरे पर एक रग आता और एक रंग जाता था।

एक लाठी से हाँकना–सबके साथ एक-सा व्यवहार करना। उ० सबको एक लाठी से हाँकना ठीक नहीं है। योग्य-अयोग्य, बड़ा-छोटा का विचार कर लेना चाहिये।

एक लेना न दो देना–कोई सबंध न रखना। उ० सब ते निस्पृह प्रेमिक लोय। लेना एक न देना दोय।

एकसमान होना–बराबर होना। उ० तुम दोनो मेरे लिए एकसमान हो।

एक साँचे के ढले–१. एक ही शक्ल-सूरत के। उ० ये दोनों बैल एक ही साँचे के ढले हैं। २. एक स्वभाव के। उ० तुम्हारा विश्वास नहीं तो उसका क्या ? आखिर तुम दोनों ही तो एक साँचे के ढले हो।

एक-सा होना–दे० 'एकसमान होना'।

एक सुर से बोलना–सब की एक आवाज़ होना, एक होना, मेल होना। उ० खोलते तो कान कैसे खोलते, एक सुर मे बोलते ही जब नही।

एक से इक्कीस करना–१. बढ़ाना। भगवान तुम्हें एक से इक्कीस करे। २. तिल का ताड़ करना। बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहना। उ० कुछ सच भी बोला करो। इस एक से इक्कीस करने से क्या लाभ ?

एक से इक्कीस होना–फलना-फूलना, बढ़ना। उ० अगर तुम मुझ गरीब को एक पैसा दोगे तो भगवान की दया से एक से इक्कीस होगे।

एक से एक–एक दूसरे से बढ़-चढ़ कर। उ० ये तीनो एक से एक धनी है।

एक से दिन न जाना–दु:ख या सुख हमेशा नही रहना। उ० प्रकृति का कुछ ऐसा नियम है कि एक से दिन नही जाते।

एक से दिन न रहना–सर्वदा एक ही हालत न होना। उ० मित्र ! एक से दिन नही रहते, आज दुःख है तो कल सुख भी आयेगा।

एक स्वर बोलना–दे० 'एकमुँह मे कहना'।

एक स्वर से बोलना–दे० 'एक सुर ..'।

एक हाथ से ताली न बजना–१. केवल एक आदमी मे झगड़ा न होना। २. झगड़े मे केवल एक पक्ष का दोष न होना। उ० रहने भी दो, एक हाथ से ताली नही बजती। तुम्हारे बेटे ने भी अवश्य गलती की होगी।

एक ही टाट के–१ भाई-बंधु एक जाति के। उ० हम सब एक ही टाट के हैं। २ एक ही विचार के।

एक ही थैली के चट्टे-बट्टे–दे० 'एक ही टाट के'।

एक ही भाव तोलना–सब को बराबर समझना। उ० मै तो एक ही भाव तोलता हूँ, चाहे कोई अमीर हो या गरीब।

एक ही हुक्के के–एक ही बिरादरी के। उ० एक ही हुक्के के हो तो शादी करने मे क्या हर्ज ?

एक ही होना–अप्रतिम होना। एकला होना। अपने गुण और धर्म मे अकेला होना। उ० फोटो खीचने मे तो वह शहर मे एक ही है।

एक होना–१ मेल कर लेना। उ० दोनों झगड करके फिर एक हो गये। २. दे० 'एक ही होना'।

एड़ देना–१. घोडे को ठोकर देकर चलाना। उ० एड़ देते ही घोड़ा बड़ा तेज भागा। २. ठोकर मारना। उ० चुप रहो नहीं तो ऐसी एड़ दूंगा कि लोट जाओगे। ३ व्याघात पहुँचाना। बाधा पहुँचाना। उ० तुम्हारी एड देने में मै नहीं डरता, भगवान चाहेंगे तो कार्य होकर रहेगा।

एड़ लगाना–दे० 'एड देना।'

एड़ियाँ घिसना-रगड़ना–१. बहुत श्रम करना. २ दु:ख सहना।

एड़ी चाटना–खुशामद करना। उ० बड़े साहब की एड़ी चाटना छोड दो। उससे कुछ नहीं मिल सकता।

एड़ी घिसना–१ कष्ट सहना। उ० बेचारा महीनों चारपाई पर एड़ी घिस कर मरा है। २ बहुत दौड़ना। उ० इतनी एड़ी घिस कर पैदा किया गया पैसा किसे न प्यारा होगा। ३ बहुत प्रयत्न करना। उ० मैं एड़ी घिस कर मर गया, पर वे नहीं ही आए।

एड़ी-चोटी का जोर लगाना या पसीना एक करना–बहुत परिश्रम या प्रयास करना। उ० इस काम के लिए एड़ी-चोटी का पसीना एक करना होगा।

एड़ी-चोटी पर से वारना–तुच्छ समझना। उ० तुम जैसों को तो मैं एड़ी-चोटी पर से वारता हूँ।'

एड़ी रगड़ना–दे० 'एड़ी घिसना'।

एड़ी से चोटी तक–पूरे शरीर पर। उ० सेठ जी की लडकी की शादी पर उसे एड़ी-चोटी तक गहनों से लाद दिया गया था।

एड़ी से चोटी तक आग लगना–जलना, बहुत क्रोधित हो जाना। उ० मुझे देखते ही उसे एडी से चोटी तक आग लग जाती है।

एतबार उठना–विश्वास का हट जाना। उ० उन पर से एतबार उठ गया।

एतबार जमना–विश्वास उत्पन्न होना। उ० एतबार जमा है तब तक जो चाहो ले लो।

एहसान उठाना–दे० 'एहसान लेना'।

एहसान करना–ऐसा काम करना जिससे करने वाले के प्रति किसी को आभारी या एहसानमंद होना पडे। किसी के साथ भलाई या नेकी करना। उ० आप मेरे ऊपर एहसान न करें, मैं यह नहीं चाहता।

एहसान का टोकरा लादना–एहसान करना या एहसान करके उसकी याद दिलाना। यह मुहावरा प्राय: व्यंग्य में प्रयुक्त होता है।

एहसान का नमदा कसना–एहसान लादना।

एहसान जताना–अपने किए काम की याद दिलाना। उ० तुम्हें एहसान जताने में शर्म नहीं आती?

एहसान मानना–शुक्रगुजार होना, आभारी होना। उ० यदि आप इस काम को कर दें तो मैं ताजिंदगी एहसान मानूँगा।

एहसान फरामोश होना–एहसान या आभार को भुला देने वाला होना। उ० इस दुनियाँ में एहसान फरामोश होना सीखो, नहीं तो गुजर नहीं।

एहसान रखना–आभारी बनाना। उ० वह मेरे ऊपर एहसान रखकर यह करना चाहता है।

एहसान लेना–शुक्रगुजार या ममनून बनना। एहसानमंद होना। आभारी होना। उ० मैं इस छोटे से काम के लिए उनका एहसान नहीं लेना चाहता।

ऐ

ऐंचातानी–तनाव, विरोध। उ० ऐंचातानी में ही नौकरी से हाथ मत धो लेना।

ऐंचातानी करना–खींचातानी करना। अपनी-अपनी ओर लेने का प्रयत्न करना। उ० ऐंचातानी न करो नहीं तो खिलाना टूट जायेगा।

ऐंठ-ऐंठ कर रह जाना–दिल मसोस कर रह जाना। उ० पिता जी के रहने से ऐंठ-ऐंठ कर रह जाना पड़ा, नहीं तो ऐसी सुनाता कि उनकी यहाँ आने की फिर हिम्मत भी न पडती।

ऐंठ कर चलना–गर्व से चलना। उ० पहलवान ऐंठ कर चलते है।

ऐंठ जाना–१ क्रोधित हो जाना। उ० जरा-सी बात में ऐंठ जाते हो। २. कड़ा पड जाना। उ० बात-बात में ऐंठते क्यों हो? ३. जिद करना। उ० तुम तो लडकों की तरह ऐंठ जाते हो।

ऍंठ रखना–दे० 'ऍंठ लेना'।

ऍंठ लेना–धीरे से ले लेना, दबा लेना। उ० वह बड़ा नीच है, जहाँ किसी की कोई चीज देखता है, तुरंत ऍंठ लेता है।

ऍंठ निकल जाना–गर्व दूर हो जाना।

ऐंड़ हो जाना–१ निकम्मा हो जाना। उ० वह तो ऐंड़ हो गया। २. नष्ट-भ्रष्ट होना।

ऐंड़ा-ऐंड़ा डोलना–दे० 'ऐंड़ा-ऐंड़ा फिरना'।

ऐंड़ा-ऐंड़ा फिरना–घमड मे चूर रहना। उ० आजकल तो वह ऐंड़ा-ऐंड़ा फिरता है।

ऐन मैन–ठीक वैसा ही। उ० मेरा बैल ऐन मैन तुम्हारे बैल जैसा है।

ऐबजोई करना–दोष खोजना, छिद्रान्वेषण करना। उ० तुम क्यो सबकी ऐबजोई किया करते हो?

ऐरा गैरा नत्थू खैरा–टुटपुँजिया। उ० ऐसे ऐरे गैरे बहुत देखे है।

ऐरे गैरे पँचकल्यानी–ऐसा आदमी जिसे कोई जानता न हो तथा जो बिलकुल जिम्मेदार न हो। उ० ऐरे गैरे पँचकल्यानी को मै वह चीज कैसे दे सकता हूँ?

ऐसा-वैसा–साधारण, तुच्छ, नाचीज। उ० तुम उनको ऐसे वैसे समझते होगे, पर वे असल मे वहाँ के हीरे है।

ऐसी की तैसी करना–कोई परवाह न करना।

ऐसी-तैसी करना–इज्जत नष्ट करना।। उ० अगर ज्यादा बकोगे तो यहीं ऐसी-तैसी करके छोड़ूँगा।

ऐसी-तैसी में जाना–बरबाद हो जाना। उ० जब वह हमारे काम आता ही नही है तो ऐसी-तैसी में जाय। मुझ से क्या मतलब?

ऐसा-वैसा न होना–असाधारण होना, विशेष होना। उ० मोहन कोई ऐसा-वैसा नही है। उससे झगड़ना हो तो जरा समझ कर आगे बढ़ना।

ऐसा-वैसा होना–नाश होना। उ० बुढ़िया ने रुष्ट होकर शाप दिया 'तुम्हारा ऐसा-वैसा हो'।

ऐसी-वैसी बात करना–कोई गंदी या ओछी बात करना। उ० देखो, भाई के सामने कोई ऐसी-वैसी बात मत कर देना।

ऐसे भोले होना–बहुत चतुर होना, भोले न होना। उ० आप ऐसे भोले है कि एक पाई भी अतर नही पड सकता।

ऐसे लड़के बहुत खिलाये होना–ऐसो को तो बच्चे की तरह खिलाये होना और जरा भी परवाह नही करना। उ० तुम शात रहो, मै नही डरता। ऐसे लडके तो बहुत खिलाए है।

ओ

ओंठ–ओंठ के मुहावरो के लिए ओठ, होठ और होठ देखिए।

ओक लगाना–अँजुरी लगाना। उ० ओक लगा कर पानी पी लो।

ओखली में सिर देकर मूसलो को क्या गिनना/डरना–काम प्रारभ कर के कष्टो या कठिनाइयो के लिए क्या डरना।

ओखली में सिर देना–विपत्ति मे जान कर पडना। उ० तब भला वह मूसलो को क्या गिने, जब किसी ने ओखली मे सिर दिया।

ओछा–कमीना, नीच, छिछला। उ० वह ओछा आदमी है, उसका विश्वास मै नही करूँगा।

ओछा होना–१ कम होना। २. छोटा होना। ३ नीच होना।

ओछी कोख होना–ऐसी कोख होना, जिससे उत्पन्न लडके मर जायँ। उ० उस बेचारी की ओछी कोख है। अब उसका वश न चलेगा।

ओछा हाथ पड़ना–हलकी चोट पड़ना। उ० चोट गहरी नही है, हाथ ओछा ही पडा है।

ओछे की प्रीति–नीच के साथ मित्रता। उ० ओछे की प्रीति बालू की भीत कही गयी है।

ओझाई करना–१ रूठे आदमी को मनाना। २. भूत आदि झाड़ना। उ० ओझा ओझाई करने आए है।

ओट में–आड मे, बहाने। उ० धर्म की ओट मे अनेक पाप होते है।

ओट लेना–दे० 'ओढ लेना'।

ओठ उखाड़ना–परती खेत को पहली बार जोतना। उ० आज ओठ उखाड़ना है, जरा बैलो को अच्छी तरह से खिला देना।

ओठ काँपना–१. अधिक जाड़े से ओठ काँपना। उ० आज रात भर मेरा ओठ काँपता रह

गया। २. क्रोध में ओठ काँपना। क्रोध के कारण ओठ फड़कना। उ० गुस्से के कारण उसका ओठ इतना काँप रहा था कि वह कुछ बोल भी न सका।

ओठ काटना–गुस्से मे ओठ को दाँतों तले दबाना। बहुत क्रोधित होना। उ० वह ओठ काटता ही रह गया, पर कुछ न कर सका।

ओठ चबाना–क्रोधित होना। गुस्सा आ जाना। उ० तुम क्यों ओठ चबाते हो? तुम्हे तो उसने कुछ भी नही कहा।

ओठ चाटना–१. स्वाद लेने की इच्छा होना। उ० ओठ क्या चाट रहे हो? कहो तो और खीर दे दूँ। २ झेंप जाना। मैंने तो ऐसी बात कह दी कि वे ओठ चाटने लगे।

ओठ चूसना–ओठों का चुम्बन लेना।

ओठ तक न हिलाना–मुख से शब्द न निकालना। उ० ऐसा डर गया है कि ओठ तक नही हिला सकता, कोतवाली मे बयान देना तो दूर की चीज है।

ओठ पपड़ाना–हवा या खुश्की के कारण ओठ पर पपड़ी पड़ना।

ओठ फड़कना–१ क्रोध मे ओठों का काँपना। उ० उस दिन उसके अत्याचार देखकर मेरे ओठ फड़कने लगे। २ कहने की इच्छा होना। उ० कवि सम्मेलनों में एक कवि को कविता सुनाते देख दूसरे के ओठ फड़कने लगते है।

ओठ बिजकाना–१. घृणा प्रदर्शित करना। २ पसंद न होने का भाव प्रकट करना।

ओठ मटकाना–कुछ कहने की इच्छा होना फिर कुछ सोच-समझ कर न कहना। उ० बेकार मे क्या ओठ मटका रहे हो, जो कहना चाहते तो कह डालो।

ओठ मलना–कड़ुई बात कहने का दंड देना। उ० चुप रहो, नही तो तुम्हारे ओठ मल दूंगा।

ओठ सी देना–चुप करा देना। उ० वह बात नही कर सकता उसके, ओठ सी दिये गये है।

ओठ हिलाना–कुछ धीरे-धीरे कहना। उ० क्या ओठ हिला रहे हो, साफ कहो?

ओठों पर आना–कहे जाने के समीप आना। उ० उस दिन वह बात मेरे ओठो पर आकार रह गई। यदि जरा भी प्रसंग आता तो मै जरूर कह दिए होता।

ओठों पर नाचना–१. कुछ-कुछ याद आना। उ० उसका नाम मेरे ओठो पर नाच रहा है, मैं अभी बतलाता हूँ। २. बिल्कुल याद या बर्ज़बान होना। उ० कोर्स की पुस्तकें उसके ओठो पर नाचती है।

ओठो पर लाना–मन में कहना, धीरे से कहना। उ० आपकी बुराई मै ओठो पर भी नही ला सकता, आप विश्वास रक्खे।

ओठो में कहना–धीमे से कहना। उ० ओठो मे कहना हो तो जरा समीप आओ।

ओठों से खाना–ऐसी नरम चीज खाना जिसमे दाँत लगाने की जरूरत ही नही हो। उ० आज तुमको ऐसा खाना खिलाऊँगा कि तुम ओठो से खा जाओगे।

ओठो से टूटना–बहुत मुलायम होना। उ० आज की पूड़ियाँ तो ओठो से टूट रही है।

ओठों से मुसकराना–उ० आप ओठो से मुसकरा कर रह जाते है, जरा खुल कर हँसिये।

ओढ़ना उतारना–१ गुप्त बात खोलना। उ० मेरा ओढ़ना उतार कर तुम क्या पाओगे? २ बनी बनाई प्रतिष्ठा बिगाड़ना। उ० मै तुम्हारा ओढ़ना उतार कर चैन लूँगा।

ओढ़ना-बिछौना बनाना–हर समय काम मे लाना। साधारण चीज समझना। उ० यह महँगी चीज है इसको ओढ़ना-बिछौना न बनाओ।

ओढ़ना-बिछौना बाँधना–चलने का उपक्रम करना। उ० मालूम होता है कि तुम्हे भी अपना ओढ़ना-बिछौना बाँधना पड़ेगा।

ओढ़ना-बिछौना समेटना–द० 'ओढ़ना-बिछौना बाँधना'।

ओढ़नी डालना–विधवा की सगाई करना (छोटी जाति की एक रस्म)। उ० आज चमेली को ओढ़नी डाली जायेगी।

ओढ़नी बदलना–सखी बनाना। उ० तुम महलो मे रहने वाली मुझ गरीब से क्या ओढ़नी बदलोगी?

ओढ़ लेना–अपने पर लेना। जिम्मेदारी लेना। उ० मेरा सारा कर्ज उसने अपने पर ओढ़ लिया। दूसरे की बदनामी ओढ़ लेने वाला ससार मे कौन होगा?

ओढ़ें या बिछावें–क्या करे। उ० यह आपकी पुस्तक हम ओढ़े या बिछावें?

ओर आना–नाश का समय आना। उ० हँसता ठाकुर खँसता चोर। इन दोनों का आया ओर।

ओर निबाहना–दे० 'ओर निभाना'।

ओर निभाना–अंत तक फर्ज अदा करना। कर्त्तव्य का पालन करना, वादा पूरा करना। ओर निभाने वाले संसार में कम हैं।

ओर लेना–पक्ष लेना। उ० आप तो उनका ओर ले रहे हैं। इस तरह फैसला नही हो सकता।

ओलहना उतारना–जी छुड़ाना, काम मन से न करना। उ० ओलहना उतार रहे हो या काम कर रहे हो। इस करने से तो न करना अच्छा था।

ओस का मोती–सुन्दर पर जल्दी नाश होने वाला। उ० भाई, यह संसार ही ओस का मोती है।

ओस चाटना–दिल को भुलावा देना। आवश्यकता से बहुत कम पाना या मिलना।

ओस पड़ना या पड़ जाना–१. शर्म करना। उ० उस पर तो सभी को देख कर ओस पड़ जाती है। २. हौसला पर धक्का पहुँचना। उ० उसके मरते ही तुम पर ओस पड़ गई। ३. मलीन हो जाना। उ० पौदो पर ओस पड़ गई है।

ओसाना–१. फटकारना। २. बहुत बात करना। उ० वह बहुत ओसाता है।

औ

औंट डालना–१. परीशान करना। २. गर्मी से भूंज डालना।

औंधी खोपड़ी का होना–बेवकूफ होना। उ० वह समझ नही सकता, औंधी खोपडी का है।

औंधी समझ–उलटी समझ, जड़ बुद्धि। उ० वह औंधी समझ का आदमी है।

औंधे मुँह गिरना–बुरी तरह धोखे मे आना। उ० मित्र क्या करूँ, ऐसे औंधे मुँह गिरा हूँ कि उठना भी कठिन है।

औंधे होना–१ बेमुध होना। उ० थोड़ी देर मे वे औंधे होकर गिर पडे। २. गिर पडना।

औघट घाट उतारना–आफत मे डालना।

औचट में पड़ना–संकट मे पडना। उ० मै ऐसी औचट मे पड़ा हूँ कि कुछ कहे नहीं बनता।

औझड़ मारना–दे० 'औझड़ लगाना'।

औझड़ लगाना–धडाधड़ चाँटे लगाना। उ० वह औझड़ लगाने लगता है तो दम नही लेता।

औतारी–१ विचित्र, अनोखा। उ० यह लड़का औतारी मालूम हो रहा है। २ शैतान। ३. देवता की शक्तिवाला, असाधारण। उ० सचमुच ही गांधी जी औतारी थे।

औने-पौने करना–जो कुछ मिले, उसी में बेच डालना। उ० औने-पौने करने से दुकान मे बड़ा घाटा होगा।

औने-पौने निकालना या बेचना–हानि से बेचना। मुझे बाहर जाना है, इसलिये अपनी सारी चीजें औने-पौने बेच रहा हूँ।

और इरादा–बुरी नीयत। उ० इस सुन्दरी को देखकर बड़े-बड़ो के इरादे और हो जाते है।

और का और–कुछ का कुछ।

और का और हो जाना या होना–बदल जाना। स्थिति मे परिवर्तन आ जाना। कुछ का कुछ हो जाना। उ० मैं क्या जानता था, इतनी जल्दी ओर का और हो जायगा।

और घर देखना–दूसरे के यहाँ जाना। उ० जाओ बाबा घर देखो यहाँ कुछ नही मिलने का।

और ही कुछ होना–अनोखी बात होना। उ० मुझे पूरा विश्वास है कि आज और ही कुछ होगा।

और ही रंग खिलना–कुछ विचित्र होना। अनोखा कार्य होना। उ० तुम जैसे जहाँ दो लड़के इकट्ठे होंगे, और ही रग खिलेगा।

औसान उड़ना–दे० 'औसान जाता रहना'।

औसान खता होना–दे० 'औसान जाता रहना'।

औसान जाता रहना–१ धैर्य न रहना। उ० अकेले जंगल में भेड़िया देख कर मेरे औसान जाते रहे। २. सुध-बुध भूलना। ३. मतिभ्रम होना।

औसान भलना–दे० 'औसान जाता रहना'।

क

कँउधा होना—अच्छा और चमकीला होना, पर क्षणिक होना। उ० तुम्हारा सारा ठाटबाट कँउधा है।

कंकड़-पत्थर—बेकार की चीजे। उ० इस कंकड़ पत्थर की यहाँ आवश्यकता नही है।

कंक होना—१ भक्खड़ और लालची होना। २ दे० 'खंक होना'।

कंगन बोहना—पंजा मिलाना। उ० कंगन बाहो तो जोर का पता चले।

कंघी-चोटी—सिंगार-पटार, बनाव-सिंगार। उ० कंघी-चोटी में ही रहोगी कि कुछ और काम भी होगा ?

कंघी-चोटी करना—शृंगार-पटार करना। उ० कंघी-चोटी करके मै आप के साथ घूमने चलूंगी।

कंघी-चोटी में रहना—बनाव-चुनाव मे ही रहना। उ० तुम तो दिन-रात कंघी चोटी मे ही रहती हो, आखिर कुछ घर का काम-काज भी होगा या नही।

कंचन का कौर खिलाना—किसी के लिए बहुत खर्च करना। उ० आपको तो वह कंचन का कौर खिलाने को तैयार है।

कंचन बरसना- १ बहुत धन प्राप्त होना। उ० आजकल रमेश का क्या पूछना है, उसके यहाँ तो कंचन बरस रहा है। २ शोभा देना। उ० काली के मंदिरो पर कंचन बरसता है।

कंटक होना—बाधा होना। उ० इस काम मे आप क्यो कंटक हो रहे है ?

कंठ करना—कंठस्थ कर लेना। उ० इस कविता को कंठ कर लो।

कंठ का हार बनना—दे० 'कंठ का हार होना'।

कंठ का हार होना—१ बहुत प्रिय होना। उ० आप मेरे कंठ के हार है, भला आपको मै कैसे भूल सकता हूँ। २. सदा साथ रहना। उ० उसके कंठ का हार न हो जाओ, नही तो लोग क्या सोचेंगे ?

कंठ खुलना—आवाज निकलना। उ० कंठ भी तो खुले, आखिर क्या चाहते हो ?

कंठ न खुलना—१. कुछ न बोलना। उ० कमजोरी के कारण मेरा कंठ नही खुल रहा है। २. गला फँसना। उ० जुकाम से मेरा कंठ नही खुलता है। ३. बोलने मे संकोच करना या शर्माना। बोलने की हिम्मत न पड़ना। उ० उसके सामने तो आपका कंठ ही नही खुलता।

कंठ फूटना—१. ठीक-ठीक शब्द निकलना। उ० बच्चे का अब कंठ फूट रहा है। २. गले की घाँटी का निकलना। उ० तुम्हारा कंठ अभी नही फूटेगा।

कंठ फूट निकलना—दे० 'कंठ फूटना'।

कंठ बैठना—आवाज भारी होना। गले का बैठ जाना। उ० आज मेरा कंठ बैठ गया है, मै गा नही सकता।

कंठ रखना—याद रखना। उ० इस कविता को उस दिन के लिए कंठ रक्खो।

कंठ सींचना—पानी या किसी भी पेय [प्राय थोड़ी मात्रा मे] से गला तर करना, कुछ प्यास बुझाना।

कंठ सूखना—गला सूखना। उ० प्यास के मारे कंठ सूख रहा है।

कंठी उठाना—कसम खाना। दे० 'कंठी छूना'।

कंठी छूना—अपनी कंठी की कसम खाना। उ० कंठी छूकर कह रहा हूँ, मैंने उनसे नही कहा था।

कंठी छोड़ना—संकल्प तोडना। उ० शराब की बोतल देखते ही उसने कंठी छोड दी।

कंठी देना—चेला मूँडना। उ० उसने बहुतो को कंठी दी है।

कंठी बाँधना—१ चेला बनाना। उ० उन्होंने मुझे आज कंठी बाँधी है। २ संसार से विरक्त होना। उ० उसने कंठी बाँध ली है। ३. बिना सोच-विचारे चेला बनाना। उ० उसने तुम्हें कंठी बाँध दी है, यह अच्छा नही हुआ। ४. नशीली चीज छोडना। उ० अब भी कंठी बाँध लो।

कंठी लेना—चेला बनना। उ० योग्य आदमी से कंठी लेना चाहिये। २. साधु बनना। उ० कंठी लेने से स्वर्ग नही मिलता।

कंडा होना—१ सूख कर उपले की तरह कड़ा होना। उ० पूरियाँ तो कंडा हो गई है। २ दुबला हो जाना, शरीर में केवल हड्डी रह जाना। उ० तुम क्यो कंडा होते जा रहे हो।

कंदल गलाना—चाँदी और सोने को एकसाथ गलाना। [इसका प्रयोग सोनारो की भाषा में होता है।]

कंधा डाल देना–मदद करने से इन्कार करना, समय पर सहायता करने से जी चुराना। उ० जब कि कंधा था लगाना चाहता, आह ! हमने डाल अब कधा दिया।

कंधा डालना–१. हिम्मत छोड़ देना। उ० बहुतो ने इस काम में कंधा डाल दिया, अब आप चले है ! २. बैल का कधे से जुआ अलग कर देना। उ० यह बैल तो कधा डाल रहा है, शायद कंधे मे दर्द हो। ३. थक कर बैठ जाना। उ० इतने ही काम मे कधा डाल दिया !

कंधा देना–१ मदद करना। उ० अगर आप इस काम में कधा दे दिये होते तो अवश्य मै इसे पूरा कर लेता। २ लाश की टिकटी कंधे पर रखना। उ० घाट तक न जाओगे तो न जाओ पर कम से कम थोडी दूर तक कधा तो दे आओ।

कंधा पकड़ कर चलना–१ दूसरे के सहारे काम करना। उ० तुम हर काम मे कधा पकड कर क्यो चलना चाहते हो ? २. बहुत कमजोर होना। उ० वह तो कधा पकड़ कर चलने लगा है।

कंधा लगना–गाडी के जुए मे रगडकर बैल का कंधा छिल जाना। उ० इस बैल का कंधा लगा हुआ है, इसे न जोतो।

कंधा लगाना–१. बोझ उठाना, २ छाना को कधा देना, ३. किसी की सवारी मे सम्मान के लिए कंधा देना।

कंधे उचकाना–अनजान बनना। उ० मेरा परिचय सुनकर उसने कधे उचका दिये।

कंधेला डालना–साड़ी का छोर बाएँ कधे पर से ले जाना। ऐसा करने में सर पर साड़ी नही रक्खी जाती। उ० वह बहे तो कँधेला डालती रहेगी ?

कंधे लगाना–बच्चे को उठाना। उ० राजू को कंधे लगा लो। चुप हो जायगा।

कंधे से कंधा छिलना–बहुत भीड़ होना। उ० आज मेले में कधे से कधा छिल रहा था।

कंधे से कंधा मिलाकर करना–मेल से करना, एक राय होकर करना। उ० जाति की और देश की सेवा लोग कंधे-से कंधा मिला कर करें।

कंधों पर उठाना–जिम्मेदारी लेना।

कँपकँपी चढ़ना–१. जाड़े से ठिठुर जाना। उ० इस ठडी हवा मे सबको ही कँपकँपी चढ़ रही हैं। २. बहुत डर कर काँपने लगना। ३. जाड़ा देकर आने वाले ज्वरों में ज्वर के पहले जोर का जाड़ा लगना। उ० कँपकँपी चढ़ रही है, अब ज्वर आएगा।

कँपा मारना–दे० 'कँपा लगाना'।

कँपा लगाना–१ किसी को फँसाने के लिए जाल बिछाना। २. चिड़ियो को फँसाने के लिए बाँस की तीलियो पर गोंद लगा कर रखना। उ० आज कँपा लगाओ, गोश्त खाने को जी चाहता है।

कँपास लगाना–किसी को फँसाने के घात में लगना। उ० देखो कँपास लगा रहा हूँ, शायद वह फँस जाय।

कंपू का बिगड़ा हुआ–१. बगावत करने वाला, क्रांतिकारी। २ बदमाश। उ० उस कपू के बिगडे को अपने घर न आने दिया करो।

कंबल ओढ़ाकर लूटना–मूर्ख बना कर रुपया निकालना। उ० आप कंबल ओढ़ा कर मुझे लूट नही सकते, इस तरह जितना माँगिये मै मैं देने को तैयार हूँ।

कंबल तानकर/ओढ़ कर सोना–निश्चित होना।

ककड़ी के चोर को कटारी से मारना–छोटे कसूर पर कठिन दंड देना। उ० प्राचीन काल मे ककड़ी के चोर को कटारी से मारा जाता था, इसी से अपराध कम होते थे। ककड़ी के चोर को कटारी से मारना कहाँ का न्याय है ?

ककड़ी-खीरा करना–कुछ कदर न करना। उ० जब ककड़ी-खीरा करना है तो मुझे अपने यहाँ बुलाते क्यो हो ?

ककड़ी-खीरा समझना–दे० 'ककड़ी-खीरा करना'।

कक्कन छोड़ना–१. बहुत मारना। २. बहुत परिश्रम कराना। उ० आज तो उसने तुम्हारा कक्कन छोड़ा दिया।

क ख ग–आरम्भ। साधारण ज्ञान। शुरू का ज्ञान। उ० मै तो अंग्रेजी का क ख ग भी नही जानता।

कचकच करना–झगड़ा करना। उ० तुम्हारा हर समय का कचकच करना ठीक नही है। दिन-रात का कचकच करना अच्छा नही लगता।

कचकच मचाना–दे० 'कचकच करना'।

कचर-कचर कर खाना–पेट भर खाना। खूब खाना। उ० आज तो दावत मे खूब कचर-कचर कर खाए होंगे।

कचर कूट करना–खूब मारना। उ० अगर अधिक बोलेगा तो कचर कूट करने लगूंगा।

कचर कूट खाना–खूब खाना। उ० तल की चीज है, कचर कूट मत खाओ नही तो हैजा हो जायगा।

कचर-पचर खाना–दे० 'गजर-बजर खाना'।

कचहरी के कुत्ते–कुत्ते की तरह कचहरी आने वालों का मुंह जोहने वाले। उ० ये वकील मुख्तार तो कचहरी के कुत्ते हैं।

कचहरी चढ़ना–१. अदालत मे मुकदमा ले जाना। उ० कचहरी चढकर भी आप मेरा कुछ नही कर सकते। २ कचहरी के अफसरों का आना। उ० आज तो उस गाँव के पास कचहरी चढी है।

कचहरी लगना–बहुत से आदमियों का बैठा रहना। उ० तुम्हारे यहाँ तो हर वक्त कचहरी लगी रहती है, मै आऊँ भी तो कब ?

कचालू करना–खूब मारना। उ० अगर ज्यादा बोलोगे तो कचालू कर दूँगा।

कचालू बनाना- दे० 'कचालू करना'।

कचोची बँटना–दाँत पीसना।

कचोची बँधना–दांत बैठ जाना। उ० बेहोशी मे उसकी कचीची बँध गई है।

कचोची लेना–मरने का समय आना। उ० मरीज कचीची लेने लगा है, अब कोई आशा नही है।

कचूमर करना–दे० 'कचूमर निकालना'।

कचूमर निकालना–१ खूब मारना। उ० उसने छोटे से अपराध के लिए लडके का कचूमर निकाल दिया। २ खराब कर देना। उ० तुमने तो घडी का कचूमर दिया। ३ ज्यादा जोर से कूटना। उ० इन चीजो का कचूमर न निकालना।

कचूर होना–कचूर की तरह खूब हरा होना। उ० तुम्हारा खेत तो यों ही कचूर हुआ है, उसमे पानी देने की क्या आवश्यकता ? नयन कचूर भरे जनु मोती।

कच्चा करना–१. झूठा ठहरना। उ० उसने सारी बातें कच्ची कर दी। २. लज्जित करना। उ० उसे कच्चा न करो, नहीं तो इसका फल बुरा होगा। ३ कच्ची सिलाई करना। उ० उसने कच्चा कर दिया है, दर्जी से सिलवा लो। ४. उत्साहहीन करना। उ० बार-बार ऐसी बाते कह कर उसे कच्चा न करो।

कच्चा खा जाना–बहुत क्रोधित होकर मारने की धमकी देना। उ० ज्यादा शरारत मत करो नही तो कच्चा ही खा जाऊँगा। तुम मेरा गुस्सा नही जानते !

कच्चा खाना–दाल, भात, रोटी आदि ऐसे भोजन जो पूर्णत: घी में न बनाए गए हों। उ० ब्राह्मण सबके हाथ का कच्चा खाना नही खाते।

कच्चा खेल खेलना–ऐसा काम करना जिससे अबुद्धिमत्ता टपके, मूर्खता करना।

कच्चा घडा–एक बार ही प्रयोग मे आने वाली वस्तु। उ० कौमार्य कच्चा घडा होता है।

कच्चा चबाना–दे० 'कच्चा खा जाना'।

कच्चा-चिट्ठा खोलना–गुप्त बातो को खोलना। भंडा-फोड करना। उ०व्यर्थ मे उसका कच्चा-चिट्ठा खोल कर तुमको क्या मिला ?

कच्चा-चिट्ठा सुनाना–१ दे० 'कच्चा-चिट्ठा खोलना'। २ रोना रोना। उ० क्या अपना कच्चा चिट्ठा सुनाते रहते हो।३.बहुत छोटी-छोटी बाते भी विस्तार से बतलाना। उ० वह अपना पुराना कच्चा चिट्ठा सुनाने लगा, इसी मे देर हो गई।

कच्चा जाना–गर्भपात हो जाना। उ० उसके घर मे तो कई बार कच्चा गया।

कच्चा ठहरना–दे० 'कच्चा होना'।

कच्चा धागा–१ अविश्वसनीय। उ० तुम्हारी बात तो कच्चा धागा है, कभी भी टूट सकती है। २ अस्थायी। उ० यह नौकरी तो कच्चा धागा है, कोई और ठीक कर दो।

कच्चा-पक्का करना–१. ठीक न करना। निश्चित न करना। उ० हमारी उनकी बाते अभी कच्ची पक्की की गई है, बाद मे निश्चित होंगी। २. अपूर्ण छोड़ना। उ० हाथ में लेकर कच्चा-पक्का करना हमे नही आता। ३ खराब कर देना। उ० बना-बनाया काम तुमने कच्चा पक्का कर दिया।

कच्चा जी–छोटे दिलवाला, विचलित होने वाला। उ० ऐसी आशा न थी कि तुम इतने कच्चा जी होगे।

कच्चा पड़ना–१. असत्य सिद्ध होना, झूठा पड़ना। उ० आपकी हर एक बात कच्ची पड़ जाती है। २. नीचा देखना। उ० वह तो हर जगह कच्चा पडता है।

कच्चा बैठना–१. आँख का फूट जाना। उ० कच्चा बैठा है क्या कि सामने की चीजें दिखाई नही देतीं ? २. दाँत बैठ जाना।

कच्चा मकान–मिट्टी का बना मकान। उ० बरसात मे बहुत से कच्चे मकान गिर जाते है।

कच्चा मन–दे० 'कच्चा जी'।

कच्चा होना–१. धैर्य का जाता रहना। उ० अगर इस समय आप कच्चे हो जायेंगे तो कही के भी नही रहेगे। २ झूठा होना। उ० हर जगह आप कच्चे होते है।

कच्ची कली–छोटी उमर की तरुणी। उ० वह तो अभी कच्ची कली है।

कच्ची कली टूटना–छोटी उम्र मे मरना।

कच्ची खा जाना–उत्साह न रहना, हिम्मत का छूट जाना। उ० जब आप अभी कच्ची खा गये, तो बाद मे कुछ नही कर सकते।

कच्ची गोटी खेलना–१. अनाडी होना, अनुभवहीन होना। उ० उससे क्या कहूँ, इस मामले में वह भी अभी कच्ची गोटी खेलता है। २ बेवकूफ़ी करना, ऐसा काम करना जिसमे असफलता हाथ रहे। उ० तुम तो हमेशा कच्ची गोटी खेलते हो।

कच्ची गोली खेलना–दे० 'कच्ची गोटी खेलना'।

कच्ची नींद–अधूरी नीद।

कच्ची-पक्की–१. उलटी-सीधी, भली-बुरी। २. गाली। उ० कच्ची-पक्की न निकालो, नही तो ठीक न होगा।

कच्ची-पक्की खिलाना–उचित भोजन न देना। उ० घर मे सब लोग चारपाई पर पड़े है, क्या करूँ, किसी तरह उन्हें कच्ची-पक्की खिलाता हूँ।

कच्ची बात–लज्जाजनक बात। उ० ऐसी कच्ची बात मुँह से न निकालो।

कच्ची बात सुनना–डाँट-फटकार या बुरी बात सुनना। अपमान की बात सुनना। उ० क्यों भला बात हम सुनें कच्ची, हैं न बच्चे न कान के कच्चे।

कच्चे घड़े की पीना–नशे मे अनाड़ीपन करना। उ० यार तुम तो जैसे कच्चे घड़े की पिये हो, ऐसा करना हो तो नशा न किया करो।

कच्चे घड़े चढ़ना–ताडी पीना। उ० तुम्हारी आँखें कह रही हैं कि तुम कच्चे घड़े चढ़े हुए हो।

कच्चे घड़े पानी भरना–१. कठिन कार्य करना। उ० संसार मे कच्चे घड़े पानी भर कर ही नाम पैदा होता है। २. असंभव कार्य करना। ३. कच्चे घड़े पानी भरने के लिए क्यों सर खपाते हो ?

कच्चे घड़े पानी भरवाना–असभव या मुश्किल काम कराना। उ० कच्चे घड़े पानी भरवाना चाहो तो मै नही कर सकता।

कच्चे दिन–गर्भ का तीसरा-चौथा महीना। कच्चे दिनो मे मेले न ही जाओ तो अच्छा है।

कच्चे दिल का–दुर्बल मन, दिल का कमजोर।

कच्चे-बच्चे–छोटे-छोटे बच्चे। उ० घर मे कच्चे-बच्चे इतने है कि देख कर ही तबीयत घबड़ा जाती है।

कच्छ की उखेड़–कुश्ती मे नीचे वाले का ऊपर के पहलवान द्वारा विशिष्ट रीति से चित किया जाना। उ० प्राय: पहलवान कच्छ की उखेड़ देखकर कुश्ती मार लेते है। [यह मुहावरा पहलवानो की बोली मे प्रयुक्त होता है।]

कछनी काछना–१. घुटनो तक धोती पहनना। उ० देहातो में लोग कछनी काछे खेतो मे दिखाई पड़ते हैं। २. धोती को ऊपर उठाकर फेंटे में खोंसना। धोती खूँटना।

कज निकालना–१. दोष दिखाना। उ० प्रत्येक बात मे कज निकालना ठीक नही है। २. वक्रता मिटाना। उ० अब इस छड़ी का कज निकालना कठिन है। ३. दोष दूर करना। उ० पहले अपने कज निकालो तब दूसरों के निकालना।

कज़ा आना–मौत या मुसीबत आना। उ० क्या कज़ा आई है जो इस तरह भाग रहे हो ?

कट-कट के मरना–१. जान देना। उ० देश की स्वतन्त्रता के लिए कट-कट के मरना ही पड़ता है। २. आपस मे झगड़ना। उ० कुछ दिनों पूर्व हिंदू-मुस्लिम कट-कट के मरते थे।

कट-कट जाना–१. लज्जित होना। उ० घर मे एक के नालायक हो जाने से सब कट-कट-

जाना पड़ता है। २. कुढ़न होना, कुढ़ना। उ० वह तो मेरी उन्नति देखकर कट-कट जाता है।

कटकटा कर चढ़ बैठना–दे० 'कुत्ते ऐसा चढ़ बैठना'।

कटका भरना–चोंच मारना। उ० कौवे शुकों को कटका भर कर मार डालते हैं।

कटजाना या कटना–१. हार जाना। उ० कल की बहस में वह कई बार कट गया। २. मोहित होना। उ० उसकी तिरछी नजर से बहुतों को कट जाना पड़ता है। ३. छेद हो जाना। उ० घड़ा कट गया और सब पानी बह गया। ४. दूसरी ओर जाना। उ० उसी दिन से वह मुझे देखते ही कट जाता है। ५. मर जाना। उ० शरीर की सार्थकता सत्कर्मों के लिए कट जाने में ही है। ६. समाप्त होना। उ० गप-शप में ही दिन कट गया। ७. दूर होना। उ० तीर्थ करने से सारे पाप कट जाते हैं। ८. गलत सिद्ध होना। उ० दास द्वारा तिलक का उत्तराधिकार विवाद कट गया। ९. बिक जाना। उ० माल की कमी के कारण सारा माल ही कट गया। १०. जलन होना। उ० एक-दूसरे का उत्थान देख कर लोग कट जाते हैं। ११. झेंप जाना। उ० मेरी बातों से वह ऐसा कटा कि फिर बोलने की हिम्मत भी न हुई।

कटती नाक बच जाना–जाती इज्जत बच जाना।

कटती कहना–मार्मिक बात कहना। उ० लड़का जवान हुआ और तुम सदा कटती कहते रहते हो, भला सोचा तो!

कटनी काटना–इधर-उधर काट कर भागना। उ० चूहे-बिल्ली के खेल में कटनी काट कर भागना ही चतुरता है।

कटनी मारना–खेत को जोताई के पहले साफ करना। उ० कटनी मार कर जोतना अधिक लाभदायक होगा।

कटवाँ ब्याज–वह ब्याज जो थोड़ा कर्ज दे देने पर लगे। उ० किश्त दे दो, कटवा ब्याज देना पड़ेगा। नहीं तो सारे रुपयों पर ब्याज लगेगा।

कटहल फोड़ना–अत्यावश्यक कार्य करना। उ० वहाँ कौन-सा कटहल फोड़ रहे थे कि नहीं आए? [इसका प्रयोग व्यंग्य में किया जाता है।]

कटी उँगली पर न मूतना–थोड़ी भी भलाई न करना।

कटे पर नमक छिड़कना–१. दुःखी को और दुःखी बनाना। उ० आजकल सरकार किसानों पर तरह-तरह के कर लगा कर कटे पर नमक छिड़क रही है। २. नाराज आदमी को चिढ़ाना। उ० वह तो क्रोधित है ही, तुम कटे पर नमक मत छिड़को।

कटोरा चलाना–मंत्र से कटोरा चला कर अपराधी पहचानना। उ० अशिक्षित मनुष्यों में कटोरा चलाने की प्रथा अब भी है।

कट्टे लगना–१. दूसरे को खटकने वाली चीज का नष्ट होना। उ० हमारी घड़ी तुम्हें बड़ी खटकती रही, आज भीड़ में वह कट्टे लग गई। २. दूसरे के द्वारा अपनी वस्तु नष्ट होना। उ० इतने दिन की बची-बचाई चीज तुम्हारे कट्टे लगी।

कठपुतली की तरह नाचना–दूसरे के कथनानुसार काम करना। दूसरे के वश में होना। उ० मैं उनके वश में नहीं हूँ कि उनके इशारे पर कठपुतली की तरह नाचूँ।

कठपुतली होना–१. खिलौने की तरह वश में होना। उ० वह तो अपनी औरत के हाथ की कठपुतली है। २. चुपचाप रहना। उ० विद्वानों की मण्डली में मूर्ख का कठपुतली होना ही अच्छा है।

कटती जबान–कठोर वचन।

कड़ाका गुजरना–दे० 'कड़ाका बीतना'।

कड़ाका बीतना–तकलीफ में उपवास करके दिन काटना। उ० भारतीय किसानों के घर सदैव ही कड़ाका बीतता है।

कड़ाके का–बहुत जोरदार। उ० टुंड्रा में कड़ाके का जाड़ा पड़ता है। माल तो है कड़ाके का।

कड़ा पड़ना–कठोर पड़ना, न दबना। उ० मेरे जरा कड़ा पड़ते ही नौकर ने चोरी क़बूल दी।

कड़ाही चढ़ना–खाने के लिए पकवान तैयार होना। उ० आज उनके बच्चे का जन्म-दिन है, इसलिए कड़ाही चढ़ी हुई है।

कड़ाही में हाथ डालना–कड़ी परीक्षा करना। उ० कड़ाही में हाथ डाल कर देख सकते हो कि मैं कैसा आदमी हूँ।

कड़ियल जवान–हट्टा-कट्टा जवान। उ० वह बड़ा कड़ियल जवान है।

कड़ी आँख रखना–दे० 'कड़ी नज़र रखना'।

कड़ी उठाना–कठिनाई झेलना। उ० प्रताप को जंगलों में कड़ी उठा कर ही अपनी आज़ादी कायम रखनी पड़ी।

कड़ी-कड़ी सुनाना–दे० 'कड़ी कहना'।

कड़ी कहना–खरी-खोटी सुनाना। उ० कोई उनका ताबेदार थोड़े हूँ कि सदा कड़ी कहा करते है।

कड़ी झेलना–दे० 'कड़ी उठाना'।

कड़ी धरती–१. वह प्रदेश जहाँ लोग मोटे-ताज़े हों। उ० पहाड़ मे कड़ी धरती होती है, इसलिए गोरखे बहादुर होते हैं। २. भूत के रहने की जगह। उ० रात को जहाँ कड़ी धरती हो, न जाना चाहिये।

कड़ी नज़र रखना–सदा देखभाल करना। उ० १० से १६ वर्ष के बच्चो पर कड़ी नज़र रखनी चाहिये।

कड़ी नज़र रहना–१. ईर्ष्या रहना। उ० समाजवादियो की सरकार पर कडी नजर रहनी है। २. पूरा ध्यान रखना। उ० चोरो पर पुलिस की कडी नजर रहती है।

कड़ी नज़र होना–दे० 'कड़ी नज़र रहना'।

कड़ी बोलना–धरन चटकने की आवाज निकलना जो रहने वाले के लिए बुरा शकुन समझा जाता है। उ० कड़ी बोल रही है, हे भगवान क्या होगा ?

कड़ुआ करना–१. कुछ और रुपया लगाना। और खर्च करना। उ० जब थोडा और कड़ुआ करने से ही इज्जत बनेगी तो ले लो। २. खराब करना। उ० जलसे को क्यो कड़आ करते हो ?

कड़ुआ घूँट–१. कठिन काम। २. अरुचिकर काम। उ० उसे तो सभी ने किया, अब कड़ई घूंट पीने को कोई भी तैयार नही है।

कड़ुआ लगना–बुरे दिल का। उ० सेठ को कम मत समझना, वह कड़आ करैला है।

कड़आ करैला–बुरे दिल का। उ० सेठ को कम मत समझना, वह कड़आ करैला है।

कड़ुआ होना–बुरा लगना। उ० अभी तो मेरा कहना तुम्हें कड़ुवा लग रहा होगा, पर बाद में तुम इसे ठीक समझोगे।

कड़ुआ होना–१. बुरा बनना। उ० आज के संसार में कड़ए होकर नही रह सकते। २. नाराज़ होना। उ० थोड़ी-सी बात पर क्यों कड़ए होते हो ?

कड़ुए-कसैले दिन–बुरे दिन। उ० कड़वे-कसैले दिन के लिए कुछ बचाते चलो।

कड़ुए मुख–कड़ी बात बोलने वाला। उ० हम भाई कड़ुए मुख वालो को कतई पसद नही करते। खीरा को मुख काटिए, मलिए लोन लगाय। रहिमन कड़ुवे मुखन को, चहियत यही सजाय।

कड़े दम होना–मज़बूत होना।

कढ़ जाना–किसी के साथ भाग जाना। उ० आज रात को उनकी लड़की कढ़ गई।

कढ़ी का सा उबाल होना–क्षणिक जोश होना। उ० आज के नवयुवकों में केवल कढी का-सा उबाल है।

कढ़ी में कोयला होना–१. किसी अच्छी वस्तु मे छोटा-सा दोष होना। २. दे० 'दाल में कुछ काला होना'।

कतरनी-सी ज़बान चलना–१ बहुत जल्दी-जल्दी बोलना। उ० उसकी तो-कतरनी-सी जबान चलती है। २. सब को काटते चलना। उ० तुम्हारी तो कतरनी-सी ज़बान चलती है, तुम से कौन बहस कर सकता है ?

कतरब्योंत करना–१. किफ़ायत करना। उ० कोई कितना ही बडा क्यो न हो, सबको कतरब्योंत करनी चाहिये। २. काट-छाँट करना। तरकीब से बनाना। उ० कपड़ा कम है तो क्या, कतरब्योंत करने से एक कमीज तो बन ही सकती है। ३ सोच-विचार मे पड़ा रहना। उ० गाधीजी जीवनपर्यन्त भारतीय स्वाधीनता के लिए कतरब्योत करते रहे।

कतरब्योंत में लगा रहना–१ नई-नई तजवीज सोचते रहना। उ० वह हमेशा कतरब्योत मे लगा रहता है। अब तक केवल प्रकाशक था, अब मुद्रक भी हो गया। २. इधर-उधर के खर्च मे कटौती करके कुछ रुपया बचाने के फेर मे रहना। उ० कतरब्योंत में लगे रहने से कोई धनी नही होता।

कतरब्योंत से–हिसाब से। उ० थोड़ी आमदनी में कतरब्योत से चला कर वह बड़ा सुखी रहता है।

कतराकर निकलना–बच कर निकलना। उ० गत रात चोर पुलिस से कतरा कर निकल गया, नही तो जरूर पकड़ा जाता।

कताकलाम करना–बात काट कर बोलना। उ० कताकलाम करना शिष्टाचार के विरुद्ध है।

कतार बाँधना–१ एक सीध मे खड़ा होना। उ० स्टेशन पर टिकट लेते समय कतार बाँध कर खड़े होने मे सुविधा रहती है। २ बहुत बड़ी सख्या मे आना। उ० यहाँ कतार न बाँधो, नही तो किसी को न दूँगा।

कथक्कड़ होना–वाचाल होना। उ० कथक्कड़ होना भी एक प्रकार का रोग है।

कथा उठना या उठ जाना–कथा समाप्त होना। उ० नवरात्रि के समाप्त होते ही कथा उठ जाएगी।

कथा चुकाना–१. झगड़ा मिटाना। उ० छोटो से कथा चुकाने मे ही भला है। २. मार डालना। उ० वह यदि इसी तरह करता रहा तो किसी दिन कथा चुकानी ही पड़ेगी।

कथा बैठना–कथा का आरभ होना। उ० आज ही तो कथा बैठी है।

कथा बैठाना–कथा के लिए पडित नियुक्त करना। कथा शुरू करवाना। उ० कल से हम कथा बैठायेंगे।

कथा मुकाना–दे० 'कथा चुकाना'।

कदम आगे रखना–दे० 'कदम बढ़ाना'।

कदम उठाना–१ उन्नति करना। उ० तुम्हारे कदम उठाने से सब लोग जल रहे है। २ तेज चलना। उ० कदम उठाओ, दूर जाना है। ३ आगे बढ़ना। उ० तुम कदम उठाओ तो सभी चलेंगे, नही तो यों किसी की हिम्मत नही। ४ नया काम शुरू करना। उ० कदम उठाने के पहले सोच-समझ लो।

कदम कदम जाना–धीरे-धीरे चलना। उ०कदम-कदम जाने से समय के बाद पहुँचोगे। २ पैदल चलना। उ० कदम-कदम जाने मे दो घटा लगता है। ३. सुस्ती करना। उ० तुम हर काम में कदम-कदम जाते हो।

कदम-कदम पर–जगह-जगह। उ० इस दुनियाँ मे कदम-कदम पर मुसीबतें है।

कदम को हाथ लगाना–१ अनुनय करना। उ० वह इतना निर्दयी है कि कदम को हाथ लगाने पर भी नही सुनता। २ सौगध लेना। उ० मैं तुम्हारे कदमो को हाथ लगा कर कहता हूँ कि मै वहाँ नही गया था।

कदम गाड़ कर बैठना–धरना देना। उ० क्यो कदम गाड़ कर बैठे हो, रुपया होता तो अवश्य देता।

कदम चूमना–१ खुशामद करना। उ० पता नही लोग क्यों कदम चूमना पसंद करते हैं? २ अत्यन्त आदर करना। उ० अंत में लोगो ने गाधीजी का कदम चूम ही लिया।

कदम छूना–१ प्रणाम करना। २. कसम खाना। उ० आपके कदम छूकर कहता हूँ, मैने कुछ भी नही कहा।

कदम न निकालना–१ परदे मे रहना। भारतीय स्त्रियाँ कदम नही निकालतीं। २. किसी की बात के भीतर ही रहना। उ० उसकी बात सोलह आने ठीक है, मै अब उससे कदम नही निकाल सकता।

कदम पड़ना–क्षमा माँगना। उ० अब कदम पड रहे हो और तब छाती तान रहे थे।

कदम पर कदम रखना–१ अनुकरण करना। उ० हमको अब पुराने रीति-रिवाजों के कदम पर कदम रखना नही है। २ पीछे चलना। उ० उस आगे वाले आदमी के कदम पर कदम रख कर जाओ, पहुँच जाओगे।

कदम बढ़ाना–१ दे० 'कदम उठाना'। २. ज्यादती करना। उ० अब यदि कदम बढ़ाए तो असह्य होगा।

कदम भरना–१. आगे बढ़ना। उ० कहाँ तक कदम भरते जाओगे, रुको भी। २. घोड़े का कदम चलना।

कदम मारना–१ दौड़-धूप करना। उ० उसने बहुत ही कदम मारा, पर पास न हो सका। २ व्यस्त रहना। उ० भाई के शादी के कारण मुझे बड़ा कदम मारना पड़ता है। ३. तेज चलना। उ० कदम मारो तो पहुँच जाओगे।

कदम रखना–प्रवेश करना। उ० अगर यहाँ कदम रक्खे तो पिट जाओगे।

कदमों पर झुकना–दे० 'कदम चूमना'।

कदमों से लगे रहना–हमेशा साथ रहना। उ० तुम बदमाशो के कदमों से तो लगे रहते हो। यह ठीक नही है।

कदु करना–तकाजा करना। उ० उसने रुपया तो ले लिया, परन्तु बड़ा आदमी है, रोज कदु करना भी अनुचित है।

कन करना–अन्दाज लगाना। उ० गुरुजी दूर से ही आदमी को कन कर लेते है।

कनकौआ काटना–१. पतंग की डोरी काटना, संबंध-विच्छेद कराना। उ० मेरा कनकौआ काटोगे तो मै भी वही करूँगा।

कनकौआ बढ़ाना–डोरी बढाना। उ० कनकौआ बढाओ तब वह पतंग मिलेगी।

कनकौआ लड़ाना–पतंग की डोरी फँसाना। उ० कुछ लोग कनकौआ लडाने मे बड़े चतुर होते है।

कनखियाँ लगना–सीधे न देख कर आँख के कोनों से इस प्रकार देखना कि कोई न जाने। उ० मैंने कनखियाँ लगा कर उनके सारे कारनामे देख लिये।

कनखियाना–इशारा करना। उ० कनखिया कर कह दो, कही दे न दे।

कनखी मारना–१ आँखो से इशारा करना। तुम तो यार इतने पटु हो कि कनखी मार कर ही काम चला लेते हो। २. आँखो के संकेत से मना करना। उ० घबड़ाओ मत, मैंने कनखी मार दी है।

कनखंयन लगना–छिप कर देखना।

कनसुआ लेना–दे० 'कनसुइयाँ लेना'।

कनसुइयाँ लेना–१. भेद लेना। २. सगुन विचारना। ३. आहट लेना। उ० क्या कनसुइयाँ ले रहे हो?

कनसुई लेना–दे० 'कनसुइयाँ लेना'।

कनाई काटना–चालबाजी करना। उ० मेरे साथ कनाई काटोगे तो ठीक न होगा।

कनी खाना–दे० 'कनी चाटना'।

कनी चाटना–हीरा चाट कर मर जाना। उ० मुगल साम्राज्ञी ने आवेश मे आकर कनी चाट ली।

कनेव छेदना–पाए के छेदो को टेढ़ा छेदना, जिससे चारपाई कन्नी हो जाय। उ० बढ़ई ने पायो को कनेव छेदा है। [यह बढइयों की विशिष्ट बोली है।]

कनौड़ा करना–नीचा दिखाना। उ० अमेरिका ने प्रण कर लिया है कि रूस को कनौड़ा करके ही छोड़ूँगा।

कनौती उठाना–होशियार होना। उ० खरगोश ने शिकारी को देखते ही कनौती उठा ली।

कनौती खड़ा करना–दे० 'कनौती उठाना'।

कनौती बदलना–चौकन्ना होना। उ० चोर का पता लगते ही पुलिस ने कनौती बदली।

कन्ना निकालना–अपमान करना। उ० समय आने दो, तुम्हारा कन्ना निकाल कर छोड़ूँगा।

कन्नी काट जाना या काटना–बचकर निकल जाना। उ० कन्नी काट गए नही तो बुरी तरह फँसते।

कन्नी खाना–पतग का झुकना। उ० अब पतंग नही बढेगी क्योंकि कन्नी खा गई।

कन्नी दबना–१. पराधीन होना। उ० अब भारत की कन्नी नही दब सकती। २. शर्मिंदा होना। ३. पुरुषो के सामने बोलने पर औरतो की कन्नी दबती है।

कन्नी बाँधना–पतग बाँधना। उ० कन्नी बाँधना सबको नही आता।

कन्ने ढीले पड़ जाना–दे० 'कन्ने ढीले हो जाना'।

कन्ने ढीले होना–१ थक जाना। उ० दूर तक चलते-चलते मेरे तो कन्ने ढीले हो गए। २ अपमान होना। उ० उनके व्यवहारों से मेरे कन्ने ढीले हो गए। ३. जोश ठडा हो जाना।

कन्यारासी होना–चौपट या निकम्मा होना। उ० तुम तो बडे कन्यारासी हो। हमारा-तुम्हारा रोजगार नही चल सकता।

कपड़ा से होना–दे० 'महीने मे होना' [इसका प्रयोग केवल स्त्रियाँ करती है।]

कपड़े उतरवाना–१. सब कुछ ले लेना। उ० कपडे उतरवा लो, पर उसे नही दे सकता। २ बेइज्जत करना। उ० तुम्हारे कपडे न उतरवा लिये तो मेरा नाम नही।

कपड़े उतारना–कुछ भी न छोडना, सब कुछ ले लेना। उ० कल तक रुपये न दिए तो कपड़े उतार लूंगा।

कपड़े बिक जाना–दिवाला होना। उ० यदि यह नया टैक्स लग गया तो अपने कपड़े बिक जायँगे।

कपड़े रँगना या रँग लेना–सन्यास लेना। उ० यदि झझटो से मुक्त होना चाहो तो कपड़े रँग लो।

कपड़ों में न समाना–१. अति हर्षित होना। उ० अपना परीक्षाफल सुन कर मै कपडो में न समाता था। २. जोश मे आना। उ० प्रताप की वीरता को सुन कर लोग कपड़ो मे नहीं समाते। ३. बहुत मोटा होना। उ० थोडे ही दिनों मे वह कपड़ों में नही समाएगा।

कपड़ों में होना–ऋतुवती होना। उ० वह कपड़ों में होने के कारण खाना नहीं पका सकती।

कपड़ों से होना–दे० 'कपड़ों में होना'।

कपार खाना–दे० 'सिर खाना'।

कपार पर सनीचर चढ़ना–अभागा होना। उ० तुम्हारे कपार पर सनीचर चढ़ा है, तुम क्यों वह नौकरी करोगे?

कपालक्रिया करना–चिता के कुछ जल जाने पर सिर फोड़ कर एक क्रिया करना। उ० चार बेटे हैं, परन्तु कोई कपालक्रिया करने वाला नहीं।

कपाल खुलना–१ सिर फट जाना। उ० आज के झगड़ों में बहुतों के कपाल खुल गए। २ भाग्य खुलना। उ० क्यों घबड़ाते हो, कपाल खुलते ही नौकरी मिल जायगी।

कपाल फूटना या फूट जाना–१ सिर फूटना। उ० उसने ईंट से मारा और कपाल फूट गया। २. भाग्य फूटना, अभाग्य आना। उ० कपाल ही फूट गया तो दोष किसको दूं?

कपास ओटना–संसार में फँसना। उ० कपास ओटने में हरिभजन सम्भव नहीं है।

कपूर खाना–जहर खाना।

कपोत व्रत लेना–चुपचाप अत्याचार को सहना। उ० सच्चा अहिंसक कपोत व्रत लेकर लड़ाई लड़ता है।

कपोल कल्पना–गप्प, झूठ। उ० यह कोरी कपोल कल्पना है।

कफ़न की ओर पैर बढ़ाना–मौत नजदीक होना।

कफ़न को कौड़ी न होना–अति निर्धन होना। उ० भारतीय किसानों के पास तो कफ़न को कौड़ी तक नहीं है।

कफ़न फाड़ कर उठना–१ एक-ब-एक चिल्ला उठना। उ० अभी तो मुनिवत् थे इस बात को सुन कर क्या कफ़न फाड़ कर उठ गए? २ सहसा उठ जाना। उ० पुरोहित के आते ही सब लोग कफ़न फाड़ कर उठ गए। ३. मरते-मरते बचना। उ० इस बीमारी से मोहन कफ़न फाड़ कर ही उठा है।

कफ़न फाड़ कर चिल्लाना–दे० 'कफ़न फाड़ कर उठना'।

कफ़न सिर से बाँधना–मरने को तैयार होना। उ० स्वाधीनता-प्रेमियों को कफ़न सिर से बाँधे चलना पड़ता है।

कफ़न-खसोटी करना–जबर्दस्ती, निर्दयतापूर्वक या बुरे ढंग से पैसा कमाना। उ० बुढ़ापे में तो कफ़न-खसोटी छोड़ दो।

कब का–जाने कितनी देर से, बहुत पहले से। उ० पता नहीं संसार का निर्माण कब का हुआ है। कब का मैं इन्तजार कर रहा हूँ, पर तुम्हारा पता ही नहीं चला।

कब के–दे० 'कब का'।

कबड्डी खेलते फिरना–बेकार फिरना, आवारा-गर्दी करना।

कब से–दे० 'कब का'।

कबाब करना–१ दुःख देना। २ बहुत मारना। ३. बोटी-बोटी काटना। उ० अब कभी इस गली में आए तो कबाब कर डालूँगा। ४ जलाना।

कबाब लगना–कबाब का पकाया जाना।

कबाब होना–१ क्रोधित होना। उ० केवल थोड़ी-सी बात पर वह कबाब हो गया। २. जलाना।

कबाबी-शराबी–मद्य मांस खाने वाला, अधर्मी। उ० कबाबी-शराबी के साथ कौन खाएगा।

कबाला लिखना–अधिकार दे देना।

कबाला लिखाना–अधिकार करना। लिखापढ़ी करके मालिक बनना। उ० मैंने इस मकान पर कबाला लिखा लिया है।

कबाला लेना–दे० 'कबाला लिखाना'। उ० मैंने कबाला लिया है।

कबाहट में पड़ना–दिक्कत या तरद्दुद में पड़ना। उ० तुम्हारे लिए मुझे भी कबाहट में पड़ना पड़ा।

कबूतर की तरह लोटना–बहुत तड़पना।

कब्जा उठना–अधिकार चला जाना। अधिकार न रहना। उ० बर्मा से अँग्रेजों का कब्जा कभी उठ गया।

कब्जा करना–जबर्दस्ती दखल करना। उ० उसने रातों रात दीवार उठा कर जमीन पर कब्जा कर लिया।

कब्जे पर हाथ रखना–१ तलवार पकड़ना। उ० वीर पुरुष कब्जे पर दिखाने के लिए हाथ नहीं रखते। २. दूसरे को तलवार न

निकालने देना। उ० भला हुआ कि तुमने कब्जे पर हाथ रख लिया नहीं तो पता नहीं आज क्या हो गया होता ?

कब्र का मुँह झाँक आना–दे० 'कब्र का मुँह झाँकना'।

कब्र का मुँह झाँकना–मरते-मरते बचना। उ० मेरे जीवन में ऐसी कई घटनाएँ आईं कि मुझे कब्र का मुँह झाँकना पड़ा।

कब्र के मुर्दे उखाड़ना–१ बीती बातों को सामने लाना। उ० हिंदुस्तान-पाकिस्तान में अब हार्दिक मित्रता कब्र के मुर्दे उखाड़ने में नहीं हो सकती। उ० रिसर्च या खोज का कार्य करना। उ० एम० ए० कर चुका। कहीं जगह नहीं मिलेगी तो कब्र के मुर्दे उखाड़ूँगा।

कब्र खोद कर लाना या ला देना–१ कहीं से भी ला देना। उ० मैं कब्र खोद कर लाऊँगा, तुम से क्या मतलब ? तुम रुपया देना स्वीकार तो करो। २ किसी बहुत गुप्त जगह में पता लगा कर निकाल लाना। उ० सी० आई० डी० बड़े दिमागी होते हैं। वे इस षड्यंत्र की पूरी स्कीम को कब्र खोद कर भी ला देंगे।

कब्र खोदना–किसी के मारने का उपक्रम करना। उ० जो किसी के लिये गड्ढा खोदेगा, उसके लिये खुदा कब्र खोदेगा।

कब्र में पाँव होना या लटकाए बैठना–मरणासन्न होना। उ० बूढ़े दादा अब कब्र में पाँव लटकाए बैठे हैं।

कभी–बहुत पहले। उ० तुम अब तक कहाँ रहे, वह तो कभी आ गया।

कभी का–बहुत देर से। उ० कभी का बैठा हूँ, तुम अब तक कहाँ रहे ?

कभी कुछ कभी कुछ–बदलते रहना। उ० ओछे आदमियों का क्या ठिकाना ? कभी कुछ कहते हैं और कभी कुछ।

कभी न कभी–किसी न किसी समय। उ० आखिर मैं तो कभी न कभी किसी योग्य हो जाऊँगा, क्यों चिढ़ाते हो ?

कमर कस कर बाँधना–दृढ़ निश्चय करना। उ० मैंने तो कमर कस कर बाँध ली है कि इस साल परीक्षा में अवश्य बैठूँगा।

कमर कसना–१. प्रस्तुत होना, तैयार होना। उ० सिपाही रण-प्रांगण में प्रस्थान के लिए कमर कस चुके हैं। २. दृढ़ निश्चय करना। उ० इस काम के लिए कमर कस लो तो पूरा क्यों न होगा ?

कमर का ढीला–कामचोर, सुस्त। उ० यदि इसी तरह कमर का ढीला रहना है, तो अपना हिसाब कर लो।

कमर खोलना–१. अपने दृढ़ निश्चय को बदलना। उ० फिर उससे मेल करने के लिये तुमने कमर खोल दी। २. हिम्मत हारना। उ० बाबर के सिपाहियों ने इब्राहिम की भारी फौज देखते ही कमर खोल दी। ३ आराम करने लगना। उ० युद्ध के बाद सैनिकों ने कमर खोल दी है।

कमर झुकना–१ वृद्ध हो जाना। उ० अरे यहाँ क्या आते हो, उनसे राय लो, जिनकी कमर झुक गई है। २. थक जाना। उ० आज तो काम करते-करते कमर झुक गई।

कमर टूटना–उत्साहहीन होना। उ० एक ही बार के घाटे से कमर टूट गई ? २. असहाय होना। उ० उनके मरने से मेरी कमर टूट गई। ३. भारी दुःख पड़ना। उ० जवान पुत्र की मृत्यु से कमर टूट गई।

कमर ठोंकना–हिम्मत बाँधना। उ० विपत्ति पड़ने पर कमर ठोंकना चाहिए।

कमर तोड़ना या तोड़ देना–१ सहारा छीन लेना। उ० जमींदार ने बैल लेकर हमारी कमर ही तोड़ दी। २. बहुत बड़ी विपत्ति डालना। उ० पुत्र की मृत्यु ने मेरी कमर तोड़ दी।

कमर थामना–दे० 'कमर पकड़ना'।

कमर पकड़ कर उठना–बहुत निर्बल होना। उ० झूठे ही नाराज होते हो, वह कैसे आवे ? बेचारा कमर पकड़कर तो उठता है।

कमर पकड़ कर बैठना या बैठ जाना–विपत्तिग्रस्त होना, अति दुखी होना। उ० इसी माह के अन्दर उसके यहाँ चोरी हो गई और जवान बेटा मर गया। बेचारा क्या करे, कमर पकड़ बैठा है !

कमर पकड़ना–सहायता करना। उ० तुम कमर पकड़ लो तो मेरा बेड़ा पार हो जाय।

कमर बाँधना–१ काम के लिए तैयार होना। उ० अरे अब इस अन्तिम क्षण में तो कमर बाँध लो। २. हिम्मत देना, बढ़ावा देना। उ० अपने चाचा के विरुद्ध तुम कभी नहीं जा

सकते थे, केवल उसके ही कमर बाँधने से चले गये। ३. किसी काम के करने के लिए किसी को तैयार करना।

कमर लगना–चारपाई पर सोए-सोए पीठ दुखना। उ० इस बीमारी में तो सोए-सोए कमर लग गई। २ घोड़े की पीठ में घाव होना। उ० हमारे घोड़े की कमर लग गई है।

कमर सीधी करना–१ आराम करना। उ० आज कई दिनों के बाद तो कमर सीधी करने का अवसर मिला है। २. कमर टेढी कर या कमर झुका कर देर तक काम करने के बाद खड़ा होकर या बैठ कर कमर को आराम देना। उ० देर से लिख रहे हो, जरा कमर तो सीधी कर लो।

कमल उलटना–गर्भाशय का मुँह उलट जाना। उ० उसका तो पिछली बीमारी में कमल उलट गया। अब उसे बच्चा होना कठिन है।

कमल खिलना–प्रसन्न होना। उ० क्या आज कोई निधि मिल गई है कि तुम्हारा कमल खिल रहा है?

कमल से पैर बाहर निकालना या फैलाना–१ शक्ति से अधिक काम करना। आमदनी से अधिक खर्च करना।

कमाई खाना–आश्रित रहना। उ० एक बेटे की कमाई पूरा परिवार खाता है।

कमान चढ़ना–१ क्रोधित होना। उ० आज की सभा में न जाने क्यों उनकी कमान चढ़ गई थी। २ दौरदौरा होना।

कमान पर जाना–१. रण में जाना। उ० कमान पर जाना बड़ा ही खतरनाक है। अब कमान पर जा रहे हो क्या? २ नौकरी पर जाना। उ० थोड़े ही दिनों में मुझे कमान पर जाना पड़ेगा।

कमान बोलना–आज्ञा देना (कमाड देना)। उ० सेनापति ने अपने सैनिकों को प्रस्थान का कमान बोल दिया है।

कमाना-खाना–कमाकर अपनी आवश्यकताएँ पूरी करना। उ० आजकल कमाना-खाना आसान नहीं है।

कमाना धमाना–काम-काज करके रुपया पैदा करना। उ० कमा धमा कर कुछ लाओ तो घर का खर्च चले।

कमाल करना–१ विचित्र काम कर देना। बड़ी तारीफ का काम करना। उ० आज के मैच में तो गोलकीपर ने कमाल कर दिखाया। २. बुरा करना। (व्यंग्य) उ० यार तुमने तो कमाल किया! मैं ऐसा जानता तो तुम्हें कभी न बुलाता।

कमाल का–दे० 'कयामत का'।

कमाल को पहुँचाना–पराकाष्ठा को पहुँचाना। उ० तुलसीदास ने काव्य-कला को कमाल को पहुँचा दिया है। २ बड़ी बुरी अवस्था को पहुँचाना। उ० आपने तो उसे कमाल को पहुँचा दिया। आपसे और क्या हो सकता है?

कमाल हासिल करना–बड़ी अच्छी जानकारी प्राप्त करना। बड़ा अच्छा होना। उ० नेहरू ने वैदेशिक नीति में कमाल हासिल किया है।

कमी न करना–१. पूरी कोशिश करना। उ० जिलाधीश ने तो अपने तरफ से कोई कमी नहीं की है, अब तुम्हारा भाग्य जाने। २. पूरा देना। उ० खाने भर को दे देना, कमी न करना।

कमेला करना–जान से मारना।

कयामत का–अलौकिक। गजब का। उ० उसकी काव्य पटुता कयामत की है।

कयामत बरपा करना–१ विचित्र कार्य कर देना। उ० वाह! खूब! तुमने तो इस चुनाव में कयामत बरपा कर दी। २. बहुत बड़ा परिवर्तन कर देना। उ० भारतेन्दु ने हिन्दी में कयामत बरपा कर दी।

कर-कर करना–झगड़ा करना। उ० दिन-रात का कर कर अच्छा नहीं है।

कर गहना–१ आश्रय देना। उ० बिना भगवान के कौन कर गह सकता है? २. विवाह करना। उ० मैंने तो निश्चय कर लिया है कि किसी का कर नहीं गहूँगा।

कर गुजरना–हठ पूरी करना। उ० वह जो कहेगा, कर गुजरेगा।

कर तर कर धरना–माँगना, दान लेना। रहिमन कर पर कर धरो, कर तर कर न धरो। जा दिन कर तर कर धरो, ता दिन मरन करो।

कर तल कर धरना-दान लेना, माँगना। उ० रहिमन कर पर कर धरो, करतल कर न धरो। जा दिन करतल कर धरो, ता दिन मरन करो।

करधन टूट जाना या टूटना–हिम्मत न रहना। उ० आते ही करधन टूट गई, तो काम क्या करोगे?

करधन ढीली होना—१. दुबला होना। उ० लड़के की करधन ढीली हो गई, आखिर कुछ दवा क्यों नहीं करते ? २. दुर्दशा होना। उ० ऐसा मारूँगा कि करधन ढीली हो जायगी।

करधन में बूता होना— शरीर में शक्ति होना। उ० करधन में बूता हो तो आओ लड़ लो।

कर पर कर धरना--दान देना। उ० रहिमन कर पर कर धरो, करतल कर न धरो। जा दिन करतल कर धरो, ता दिन मरन करो।

करम का बली--भाग्यवान। उ० यदि तुम करम के बली न होते तो तुम्हें इतनी अच्छी नौकरी न मिलती।

करम टेढ़ा होना--भाग्य बुरा होना। बदक़िस्मत होना। उ० क्या करूँ, करम ही टेढ़ा हो गया है, नहीं तो इतना प्रयत्न पर भला कौन असफल होगा ?

करम ठोंकना--भाग्य को दोषी ठहराना। उ० मोहन ने कुछ अध्ययन तो किया नहीं और फ़ेल हो गया तो करम ठोंक रहा है।

करम तिरछा होना--दे० 'करम टेढ़ा होना'।

करम पकड़ कर रोना--तक़दीर को दोष देना।

करम फूटना--भाग्यहीन होना। बुरे दिन आना। उ० हमारा तो करम ही फूट गया, क्या करूँ, कुछ कहे नहीं बनता ?

करम रेख मूठियों में होना-- अपना भाग्य अपने अधिकार में होना। अपनी किस्मत का आप मालिक होना। कर्मठ होना। उ० है करम रेख मूठियों में ही, बेहतरी बाँह के सहारे है।

करवट न लेना--१. ध्यान न देना। उ० रुपया ले तो गए, पर देने के नाम पर करवट ही नहीं लेते। २. न लौटना। उ० भाई साहब को गए कई दिन हुए, पर अभी तक करवट ही नहीं ली।

करवट बदलते रात बीतना—रात बहुत बेचैनी में कटना।

करवट बदलना—१. समय या ऐन मौक़े पर दूसरी ओर जा मिलना। उ० तुम्हारी तो करवट बदलने की आदत से विश्वास नहीं होता कि क्या करोगे ? २. पलटा खाना। बदलता रहना। उ० उसे भला कौन-सी संस्था लेगी ? वह तो रोज़ करवट बदलता है।

करवट बैठना—पक्ष में होना। उ० यदि जज मेरे करवट बैठे, तो जीत हो जाएगी।

10

करवट लेना—दे० 'करवट बैठना'।

करवटें बदलना—तड़पना। स्मरण करके बेचैन होना। उ० उसकी याद में करवटें बदलते ही बीतती है।

करवटों में काटना—दु:ख में जाग कर बिताना। उ० उनकी प्रतीक्षा में आज कई दिन से करवटों में काट रहा हूँ।

करवटों में बिताना—दे० 'करवटों में काटना'।

क़रार आना—चैन पड़ना। उ० जब तक तुम्हारा पत्र नहीं आयेगा, मुझे क़रार नहीं आयेगा।

करारा दम—१. बहुत तेज़। उ० आज की भाँग तो करारी दम रही।

करोड़ की एक—अमूल्य, चुनी हुई। उ० समझते क्या हो, मेरी घड़ी करोड़ की एक है।

करोड़ में एक—दे० 'करोड़ की एक'।

कर्ज़ उठाना—ऋण लेना। उ० मैंने महाजन से केवल सौ रुपये कर्ज़ उठाया है।

कर्ज़ उतारना—ऋण चुकाना। उ० पहले कर्ज़ उतार डालो, तो गहने बनवाना।

कर्ज़ खाए बैठना—ऋणी होना। उ० भला वह कोई आदमी है जो कर्ज़ खाए बैठा हो और उतारने का नाम न ले। २. एहसानमंद होना। उ० तुम्हारा कर्ज खाए थोडे बैठा हूँ कि दिन-रात बुलाते रहते हो !

कर्ज़ खाना—१. ऋण लेकर काम चलाना। २. एहसान लेना, आभारी होना। उ० अब असह्य हो गया, बस आगे क़दम न रखना। कोई तुम्हारा कर्ज़ नहीं खाये हूँ।

कर्णकुहर में आना—दे० 'श्रुतिपथ में आना'।

कर्ता-धर्ता—सर्वेसर्वा, सब कुछ करने वाला।

कर्रा करना—बहुत शोर करना। उ० यहाँ कर्रा न करो, उसकी तबीयत ख़राब है।

कलंक चढ़ना—दे० 'कलंक लगना'।

कलंक लगना—बदनाम होना। उ० इस साल मैंने चौथ का चाँद देखा है, क्योंकि कलंक पर कलंक लग रहे हैं।

कलंक लगाना—बदनाम करना। उ० उस पर क्यों कलंक लगाते हो ?

कलई खुलना—भेद मिलना। रहस्य खुलना। उ० अब तो तुम्हारे बड़प्पन की कलई खुल गई। इसी पर इतना रोब था !

कलई न लगना–उपाय न लगना। धोखा न चलना। उ० मैं कोई वैसा आदमी नही हूँ। सीधे से चले जाओ, यहाँ तुम्हारी कोई कलई न लगेगी।

कल ऐंठना–१ किसी का चित्त दूसरी ओर खींचना। उ० उस कामिनी को देखते ही उसकी कल ऐंठ गई, अब तो वह अपनी पत्नी की भी परवाह नहीं करता। २ किसी को इच्छानुसार घुमाना। उ० ऐसा कल ऐंठो कि उन दोनों मे झगडा हो जाय।

कलक गुजरना–दे० 'कलक होना।'

कल-कल करना–१ आज-कल करना। उ० देना हो तो रुपया दे दो, कल-कल क्या करते हो? २ मधुर ध्वनि करना, नदियो तथा झरनों आदि का कल-कल करते हुए बहना।

कल-कल तोड़ना–जोड़-जोड तोड देना। उ० ज़ालिम ज़मीदार ने इस ग़रीब की कल-कल तोड़ दी।

कल-कल लगाना–आज-कल करना, टालमटोल करना। उ० कल-कल लगाना हो तो मै एक पैसा नही दूंगा।

कलक होना–दु ख या क्लेश होना। उ० कलक तो उसे है, वही जानता है। इस बात से उसे बडा कलक हुआ।

कल का–थोडे दिनो का; अनुभवहीन। उ० जा जा, कल का बच्चा हमारे मुँह लगता है।

कल का अंडा–कम उम्र का। उ० यह कल का अडा, मुझे शिक्षा दे रहा है!

कल का पुतला–१ अन्य की मनोवृत्ति के अनुसार चलने वाला। उ० कही-कही कल का पुतला होना भी काम कर जाता है। २ बहुत ही मेहनती और विश्राम न करने वाला। उ० कल के पुतले की तरह काम करना हानि-कारक है।

कल की बात होना–१ बीती बात होना। उ० कल की बात है, जाने भी दो। २. गत दिवस की बात होना। उ० अभी कल की ही बात है, वह यही गाली बक रहा था। ३ बहुत की बात या घटना होना।

कल को कहना–भविष्य मे कहना। उ० जैसा होगा, लोग कल को कहेगे।

कल न हो–भावी दिनो मे ऐसा न हो। मास्टर ने कहा, 'अच्छा बच्चो! कल ऐसा अनुशासन भंग न हो, नही तो विद्यालय का नाम बदनाम होगा'।

कल पकड़ना–भविष्य में रहना। एक दिन रुकना। उ० मुझे जल्दी है, मैं कल नहीं पकड़ सकता, आज ही जाऊँगा।

कल पड़ना–१ चैन मिलना। उ० पैर के दर्द से कल नही पड रहा है। २ संतोष होना।

कल पाना–ढंग मालूम होना। उ० वह भी कल पा गया, अब तुम इस चीज़ के बनाने वाले अकेले न रहे।

क़लम करना–विशेष ढग से काटना, क़लम काटना। उ० बीजू आम क़लम करने से अच्छे फल देगे।

क़लम कसाई–घूसखोर। इस विभाग में सब कलम कसाई हैं।

कलम की जीभ–क़लम का वह भाग, जिससे लिखते है। उ० कलम की जीभ ठीक नहीं है।

क़लम खींचना–लिखे हुए को गलती काटना। उ० बडे लोगो के लिखे पर क़लम खींचना सबका काम नही है।

कलम घिसना–बराबर लिखते रहना। उ० आज तो कार्यालय मे कलम घिसते-घिसते नाक मे दम आ गया।

क़लम चलना–लिखना। उ० १. इस कोश के लिखने मे दिन भर बिना खाये-पिये क़लम चलाता रहा। २. अच्छा कलम होना, जो ठीक लिखे। उ० जब तक क़लम न चले, लिखने मे मज़ा नहीं आता।

क़लम चलाना–लिखना। उ० विद्यार्थियो को कलम चलाने का अभ्यास करना चाहिये। २. तेज लिखना। उ० अरे क्या बात है, कलम चलाओ, एक घटे में पूरा हो जाएगा।

कलम चूमना–लिखने की प्रशंसा करना। उ० तुम्हारी लिखावट देख कर तबियत यही होती है कि क़लम चूम लूं।

क़लम जारी रहना–१. लिखते रहना। उ० कलम जारी रक्खो। शायद पुरस्कार मिल जाय। २. आज्ञा का अधिकार रहना। उ० यदि हमारे एम० एल० ए० का क़लम जारी रहा, तो मैं कोई अच्छा पद पाऊँगा।

क़लम तोड़ना–१. मार्मिक बात लिखना।

उ० इस कविता के लिखने में तो कवि ने क़लम ही तोड़ दिया है। २. ज़्यादा लिखना। उ० आज तो इतिहास का नोट लिखते-लिखते क़लम तोड़ दिया।

क़लम डाल देना–लिखने की नौकरी देना।

क़लम न रुकना–लिखते ही रहना। उ० कितनी बार सज़ा हो चुकी, तिस पर भी क़लम नहीं रुकता, वह सरकार की बुराई करता ही रहता है।

क़लम न उठ सकना–लिख न सकना। उ० एक सप्ताह से क़लम नही उठ रही है, लिखूं क्या।

क़लम फेरना–दे० 'क़लम खीचना'।

क़लम-बंद–पूरे-पूरे। गिन कर। उ० कलम बंद मुझे १००) दे दो।

क़लम बंद करना–नोट कर लेना। लिख लेना। उ० उसकी बातें कलम बद कर लो।

क़लम बंद लगाना–पूरे-पूरे, गिन कर लगाना। उ० कलम बंद दस बेंत लगाऊँगा, तब समझोगे।

क़लम बंद सुनाना–बुरा-भला कहना। उ० अच्छा हुआ तुम्हारे जैसे आदमी को खूब कलम बंद सुनाया।

क़लम मारना–दे० 'क़लम खीचना'।

क़लम में जादू होना–बहुत ही प्रभावशाली कवि या लेखक होना।

क़लम में ज़ोर होना–लिखने में प्रभाव होना। उ० तुलसीदास की कलम मे ज़ोर था, तभी तो उनका सम्मान जनता हृदय से करती है।

क़लमा पढ़ना–१. दुआ मनाना। उ० तुम्हारा क़लमा सभी पढ़ते हैं, क्योंकि तुम सब की खबर लेते रहते हो। २. मुसलमान होना।

कल हाथ में होना–पूर्णतः अधीन होना। उ० उसकी चिन्ता न करो, उसकी कल मेरे हाथ में है।

क़लमा पढ़ाना–मुसलमान बनाना। उ० जाने कितने हिन्दुओं को मुसलमानो ने क़लमा पढाया है।

कलाई पकड़ना–किसी स्त्री का सतीत्व नष्ट करने के लिए उसका हाथ पकड़ना। उ० कल बाज़ार मे किसी गुंडे ने उस बेचारी की कलाई पकड़ी थी।

कला बजाना–बंदरों का मजीरा बजाना। [इसका प्रयोग मदारियों की भाषा में होता है।]

कलाबाज़ी खाना–सिर नीचे करके पलटा खाना। उ० कलाबाजी खाने में नट निपुण होते हैं। वह कबूतर खूब कलाबाज़ी खाता है।

क़लाम होना–शुबहा होना। उ० कहते चलो, मुझे तुम्हारी बातों पर क़लाम नही होता।

कली खिलना–खुश होना। उ० उसे देख कर तुम्हारी कली खिल उठती है।

कलेजा उछलना–१. घबड़ाहट होना। उस रात के दृश्य को देखकर मेरा कलेजा उछलने लगा। २. मुग्ध होना। उ० उसने कल खेल मे ऐसा कमाल दिखाया कि कलेजा उछलने लगा।

कलेजा उड़ा जाना–होश उड़ा जाना। उ० देख रहे हो, उसका कलेजा उड़ा जा रहा है, पर जी कड़ा करके खड़ा है।

कलेजा उलटना–१. होश न रहना। बेहोश होना। उ० आज उसका कलेजा उलट गया था, और जीवन की कोई आशा नही थी। २. वमन से जी घबड़ाना। उ० कलेजा उलट रहा है, कोई कै की दवा दे दो।

कलेजा कटना–१. आँतों में छेद होना। उ० यदि उसका कलेजा कट गया है, तो कै मे खून आना स्वाभाविक है। २. मार्मिक चोट होना। उ० नोआखाली का वर्णन सुनकर किसका कलेजा नहीं कटता। ३. बुरा लगना। उ० दूसरे की सम्पत्ति भी देने में उसका कलेजा कटता है। ४. डाह करना। उ० यदि उसे मालिक मानता है, तो क्यों तुम्हारा कलेजा कटता है?

कलेजा काँपना–दहलना, डरना। उ० डाकू को देखते ही मेरा कलेजा काँप गया।

कलेजा काढ़ के देना–सबसे प्रिय या बहुत बड़ी वस्तु देना। उ० अजी कैसी छोटी बात करते हो? १,००० रु० दे दिये तो जानते हो कि कलेजा काढ़ कर दे दिया।

कलेजा काढ़ना–१. अमूल्य या प्रिय वस्तु ले लेना। उ० तुम्हें तो ऐसी आदत है कि तुम कलेजा ही काढ़ लेते हो। २. मोहित करना। उ० उसकी बातों ने तो कलेजा काढ़ लिया। ३. सर्वस्व ले लेना। ४. बहुत दुःख देना। उ० लड़कों को मार कर तुमने कलेजा काढ़ लिया।

कलेजा काढ़ लेना–दे० 'कलेजा काढ़ना'।

कलेजा खाना–१. बहुत तकाज़ा करना। उ० मैं जानता हूँ कि तुम्हें बुरा लगता होगा, परन्तु बड़ा हर्ज है, इसलिए कलेजा खा रहा

हूँ। २. परीशान करना। उ० जमीदार के कारिन्दे लगान के लिए कलेजा खा रहे हैं।

कलेजा खिलना–प्रसन्न होना। उ० तुमको यहाँ देख कर मेरा कलेजा खिल गया।

कलेजा खिलाना–प्यार से पालन-पोषण करना। उ० वाह रे दुनिया! जिसको कलेजा खिला कर रक्खा, आज वही जानी दुश्मन हो गया।

कलेजा चलनी होना–व्यथा के कारण हृदय का निर्बल होना। दिल टुकड़े-टुकडे हो जाना। उ० उसका कलेजा लगातार तीन विपत्तियो को सहते-सहते चलनी हो गया है।

कलेजा चीर कर दिखाना–१. पूर्ण विश्वास देना। २ कोई कपट न रखना स्पष्ट कहना। उ० कलेजा चीर कर दिखा सकता हूँ कि मेरे मन मे अब उनके प्रति कोई वैर नही है।

कलेजा चीर कर रखना–दे० 'कलेजा चीर कर दिखाना'।

कलेजा छिदना–कठोर बातो से जी दुखना। उ० उसकी बात मे तो कलेजा छिद गया. अब उससे नही बोलूँगा।

कलेजा छेदना–१ कटु बात कहना। चुभती कहना। २. कुछ कह कर किसी का जी दुखाना। उ० वह तो ऐसा कलेजा छेदता है कि उससे फिर बोलन की हिम्मत नही होती।

कलेजा जलाना–१ कष्ट देना। उ० क्यो उस गरीब का कलेजा जला रहे हो। २. चुभती बात कह कर दुःख पहुँचाना।

कलेजा जली–दुखिया। उ० इस कलेजा जली को परीशान कर के तुम्हे क्या मिलेगा?

कलेजा टूक-टूक होना–हृदय पर गहरा आघात पहुँचना। उ० पिता जी की मृत्यु का समाचार सुनते ही कलेजा टूक-टूक हो गया।

कलेजा टूटना–उत्साहहीन होना। हिम्मत जाती रहना। उ० इस बार फिर फ़ेल होने से उसका कलेजा टूट गया, अब परीक्षा मे नही बैठ सकता।

कलेजा ठंडा करना–संतोष पहुँचाना। शांति देना। उ० तुम्हारी बातो ने कलेजा ठंडा कर दिया।

कलेजा ठंडा होना–संतोष होना। शांति मिलना। उ० तुम्हारे कामों से उसके सारे परिवार का कलेजा ठंडा हो गया।

कलेजा डोलना–मन अस्थिर होना।

कलेजा तर होना–१. तरावट आना। उ० लस्सी के पीते ही कलेजा तर हो गया। २. हृदय को शांति मिलना। उ० उसकी बात सुन कर कलेजा तर हो जाता है।

कलेजा तोड़-तोड़ कर कमाना–परिश्रम से रोज़ी कमाना। उ० बेचारे गृहस्थ कलेजा तोड़-तोड़ कर कमाते है, फिर भी एक जून उपवास ही से बीतता है।

कलेजा थर-थर करना–१ हृदय धड़कना। उ० कल मौखिक परीक्षा है, आज ही से कलेजा थर-थर कर रहा है। २. डरना। उ० इतनी सी बात पर तुम्हारा कलेजा थर-थर कर रहा है।

कलेजा थाम कर बैठ जाना–१. जी मसोस कर रह जाना। उ० तुम्हारे रहने से कलेजा थाम कर बैठ गया, नही तो उन्हे मज़ा चखा देता। २ सब्र कर लेना। उ० आखिर पुत्र तो मर ही गया, अब कलेजा थाम कर बैठो।

कलेजा थाम कर रह जाना–दे० 'कलेजा थाम कर बैठ जाना'।

कलेजा थाम कर रोना–हृदय कचोट कर रोना। रुक-रुक कर रोना।

कलेजा थामना–१ विपत्ति पडने पर दिल कड़ा करना। २. धैर्य धारण करना। उ० डाँट लो, जिस तरह ६० साल बीते, उस तरह कलेजा थाम कर कुछ दिन और बिता लूँगा।

कलेजा दहलना–दिल मे डर होना, दिल का धक करना। उ० आज न्यायालय मे जिरह है, अभी से कलेजा दहल रहा है।

कलेजा दहलाना–डरा देना। क्यों परीक्षा-फल की याद दिला कर कलेजा दहलाते हो?

कलेजा धक-धक करना–भयभीत होना। उ० जिस दिन लडके काम पूरा नही करते, मास्टर को देखते ही उनका कलेजा धक-धक करने लगता है।

कलेजा धक से हो जाना–१ भय से स्तब्ध हो जाना। उ० शेर को देखते ही मेरा कलेजा धक से हो गया। २. आश्चर्य मे पड़ जाना। उ० कौन जानता था कि गांधीजी भी मारे जायँगे। मैंने तो जब यह सुना तो कलेजा धक से हो गया।

कलेजा धड़कना–दिल का डर से थर्राना। उ० तुम तो अजीब जानवर हो। छोटी-छोटी बात पर भी कलेजा धड़कने लगता है।

कलेजा धड़काना–डरा देना। धक से कर देना। उ० तुमने तो यह बात कह कर कलेजा धड़का दिया।

कलेजा धुकड़-पुकड़ होना–दे० 'कलेजा दहलना'।

कलेजा निकलना–१. बहुत दुःख होना। २. बहुत कष्ट कर परिश्रम पड़ना। उ० क्या करूँ यार, कर तो देता, परन्तु इसे करने में कलेजा निकल जाएगा। ३. तत्त्व चला जाना। असली चीज़ निकल जाना। उ० हमारा तो कलेजा ही निकल गया। ४. बहुत प्यारी चीज़ का जाना।

कलेजा निकाल कर रख देना–१. हृदय की बात कहना। उ० भाषण क्या था, उन्होंने कलेजा निकाल कर रख दिया। २. सर्वस्व समर्पण कर देना। उ० उसके पास है ही क्या, हाँ यो तुम्हारे लिए कलेजा निकाल कर रखने को तैयार है। ३. हृदय खोल कर दिखा देना। कुछ न छिपाना। ४. बहुत प्रयत्न करना।

कलेजा निकालना–१. बहुत प्यारी वस्तु ले लेना। उ० उसके बच्चो को लेकर उसका कलेजा न निकालो। २. मोहित करना। उ० उसके नृत्य ने कलेजा निकाल लिया। ३. बहुत कष्ट देना। उ० इन ग़रीबो का कलेजा न निकालो।

कलेजा पक जाना–दुःख से ऊब जाना। उ० रोज कमाओ रोज खाओ। आराम का तो नाम नही है। इस ज़िंदगी से तो कलेजा पक गया है।

कलेजा पकाना–दिल जलाना। तुम्हारी इन्ही बातों ने तो मेरा कलेजा पका दिया है।

कलेजा पकड़ना–कष्ट सहने के लिए जी कड़ा करना। उ० जैसे इतना सहा, वैसे और के लिए भी कलेजा पकड़ लूँगा, तुम अपना काम देखो।

कलेजा पकड़ लेना–१. कष्ट सहने के लिए दिल कठोर करना। उ० चाहे जो हो, मैंने भी अपना कलेजा पकड़ लिया है। २. कलेजे में भारी मालूम होना। कलेजे से सट जाना। उ० जमने के कारण कफ़ ने कलेजा पकड़ लिया है।

कलेजा पकड़ कर रह जाना–दे० 'कलेजा मसोस कर रह जाना'।

कलेजा पत्थर करना–१. कठोर बनना। उ० पुलिस की नौकरी ही ऐसी है कि कलेजा पत्थर करना पड़ता है। २. हिम्मत करना, अपने को कड़ा करना। उ० घबड़ाने से काम नहीं चलेगा। कलेजा पत्थर करके घर चलो।

कलेजा पत्थर का होना–दुःख का सामना करने के लिए दिल कड़ा होना। उ० जंगल का काम ही ऐसा है कि कलेजे को पत्थर का होना पडता है। २. कठोर हृदय का होना। उ० उसका कलेजा पत्थर का है। पुत्र मर गया पर उसकी आँखें तक न भीगी।

कलेजा पसीजना–दे० 'कलेजा पानी होना'।

कलेजा पानी होना–१. दया आना। करुणा से ओत-प्रोत हो जाना। उ० काशी में जाने पर सडक पर बैठे हुए सहस्रो अपाहिज मँगनों को देख कर कलेजा पानी हो जाता है।

कलेजा पुदीने के पत्ते के बराबर होना–दिल का बहुत कमज़ोर होना।

कलेजा फटना–१. डाह होना। उ० यदि वह अपने परिश्रम से इतना तेज़ है तो तुम्हारा कलेजा क्यों फटता है ? २. हृदय में दुःख होना। उ० बस करो, अब इस करुण कहानी को बन्द करो, सुन कर कलेजा फटता है।

कलेजा बढ़ जाना–उत्साह होना। उ० आज पुरस्कार पाकर उसका कलेजा और बढ़ गया।

कलेजा बल्लियों या बाँसों उछलना–दे० 'कलेजा उछलना'।

कलेजा बींधना–दे० 'कलेजा छेदना'।

कलेजा बैठा जाना–१. हृदय में हृदस होना। उ० तुम्हारे साथ में पड़ कर इस कुकर्म को कर तो दिया, परन्तु मारे डर के मेरा कलेजा बैठा जा रहा है। २. जोश का कम होना। उ० इस बात को सुनकर तो मेरा कलेजा बैठा जा रहा है।

कलेजा मलना–किसी का दिल दुखाना। उ० अब अधिक कलेजा न मलो, कुछ रहम भी खाओ।

कलेजा मसोस कर रह जाना–१. सब्र कर लेना। उ० इतना घाटा तो हुआ, पर वह कलेजा मसोस कर रह गया। २. मन मसोस कर रह जाना। उ० तुम्हारे रहने से कलेजा मसोस कर रह जाना पड़ा, नहीं तो उन्हे बता दिए होता।

कलेजा मुँह को आना–१. कष्ट से पीड़ित

होना। उ० खाने-कमाने की झंझट से तो कलेजा मुंह को आ गया है। २. दिल घबड़ाना। उ० उसका पत्र नहीं आया, सोच कर कलेजा मुंह को आ रहा है।

कलेजा मुँह तक आना–१. बहुत कष्ट होना। उ० वह जीवन क्या मरण है जिसमे कलेजा मुँह तक आ जावे। इस बार की चढाई में तो कलेजा मुँह तक आ गया। २. विकल या बेचैन होना। उ० पानी के मारे कलेजा मुंह तक आ गया है।

कलेजा सँभालना–दिल क़ाबू मे रखना। उ० इस तरह रोने से काम नही चलेगा, कलेजा सँभालो ज़रा।

कलेजा सन्न होना–हृदय धक से हो जाना। उ० गाँधीजी की मृत्यु का समाचार सुनते ही सारे भारतवर्ष का कलेजा सन्न हो गया।

कलेजा सालना–दे० 'कलेजा छिदना'।

कलेजा सुलगना–हृदय जलना। उ० अधिक न कहो, मारे क्रोध के कलेजा सुलग रहा है।

कलेजा हाथ भर का होना–१. उत्साह होना। उ० इस बात को सुनकर तो उसका कलेजा हाथ भर का हो जायगा। २. हिम्मतवाला होना उ० हाथ भर का कलेजा है, जो कुछ सोचते हैं, उसे पूरा ही करते हैं। ३. सहन-शक्ति होना।

कलेजा हिलना–दे० 'दिल दहलना'।

कलेजा होना–हिम्मत होना।

कलेजे का टुकड़ा–अति प्यारा। उ० मेरा पुत्र मेरे कलेजे का टुकड़ा है।

कलेजे पर चोट आना–मार्मिक चोट पहुँचना। दुःख होना। उ० तुम्हारे व्यवहारों से पिताजी के कलेजे पर चोट आई है। उनकी मृत्यु से मेरे कलेजे पर चोट आई है।

कलेजे पर चोट देना–शोकित करना। दिल पर आघात पहुँचाना। उ० उसकी मृत्यु ने माताजी के कलेजे पर ऐसी चोट दी कि वे बेहाल हो गईं।

कलेजे पर छुरी चलाना–कष्ट देना। दुःख पहुँचाना। उ० सरकार गरीबों के ही कलेजे पर छुरी चलाती है।

कलेजे पर छुरी फेरना–दे० 'कलेजे पर छुरी चलाना'।

कलेजे पर पत्थर या सिल रखना–दिल को कड़ा बनाना, धैर्य धारण करना। उ० वह मर गया तो कलेजे पर पत्थर रखकर सहना ही पड़ेगा।

कलेजे पर मक्खन मला जाना–शत्रु की हानि देखकर दिल प्रसन्न होना।

कलेजे पर साँप लोटना–किसी बात को सोचकर या देख कर ईर्ष्या, जलन, क्रोध या शोक होना। उ० जब गांधीजी भारत को अंग्रेजो के अधिकार मे देखते थे, तो उनके कलेजे पर साँप लोट जाता था। दूसरो का धन देख कर उसके कलेजे पर साँप लोट जाता है।

कलेजे पर हाथ धरना–दे० 'कलेजे पर हाथ रखना'।

कलेजे पर हाथ रख कर देखना–ठंडे दिल से सोचना। उ० कलेजे पर हाथ रख कर देखना कि अपराध किसका था।

कलेजे पर हाथ रखना–कलेजा टटोलना, सच्चाई स्वीकार करना। उ० कलेजे पर हाथ रख कर मैं कह रहा हूँ कि मैने उसे नही मारा।

कलेजे मे आग लगना–१ कष्ट होना। उ० मारे भूख के कलेजे मे आग लगी है। २ द्वेष होना। उ० इस बार उसे हज़ारो रुपये का लाभ देख कर बहुतों के कलेजे मे आग लग गई होगी।

कलेजे में उतरना–प्रमाणित करना।

कलेजे मे घुसना–विश्वास जमा कर भेद ले लेना। उ० भरत बड़ा सीधा है, यदि चाहो तो उसके कलेजे मे घुस कर सारी बात पूछ लो।

कलेजे में घूँसा लगना–अत्यधिक दुःख होना। उ० इस समाचार से तो कलेजे पर घूँसा लगा है।

कलेजे में डालना–समीप रखना। उ० उस बच्चे की मीठी बातों को सुन कर जी चाहता है कि हर समय कलेजे में डाले रहूँ।

कलेजे में पैठना–दे० 'कलेजे मे घुसना'।

कलेजे वाला–हिम्मती।

कलेजे से धुआं उठना–आह निकलना। उ० उसके मरने से गाँव भर के कलेजे से धुआँ उठ रहा है।

कलेजे से लगा कर रखना–१. आँख से ओझल न होने देना। पास रखना। उ० माँ यही चाहती है कि अपने पुत्र को कलेजे से लगा कर रक्खे। २. सचेष्ट होकर रक्षा करना। उ० इन

किताबों को मैंने कलेजे से लगा कर रखा है, ग़ायब न कर देना।

कलेजे से लगाना–मारे प्यार के छाती से लगा लेना। उ० पुत्र को पिता ने कलेजे से लगा लिया।

कलेवर चढ़ाना–मूर्ति पर सिंदूर और घी का लेप करना। उ० बंगाल में काली की मूर्ति पर कलेवर चढ़ाया जाता है।

कलेवर बदलना–१. स्वर्गवास होना। उ० इस किचकिच के जीवन से अच्छा है कि कलेवर बदल जाय। २. पुराना उतार कर नया कपड़ा पहनना। उ० तुम तो प्रत्येक क्षण नये कलेवर बदला करते हो। ३. अधिक दिन की बीमारी से अच्छा होना। ४. स्वाँग रचना।

कलेवा करना–सबेरे खाना, जलपान करना। उ० आज इतना काम था कि दो बज गए और अब तक कलेवा तक नही किया।

कल्ला दबाना–अपने सामने दूसरे को न बोलने देना। उ० वह अजीब वकील है, जब कचहरी मे बहस करने लगता है तो अच्छे-अच्छे बैरिस्टरो तक का कल्ला दबा देता है। २. गला दबाना। उ० आज कुछ डाकुओ ने किसी आदमी का कल्ला दबा कर जान से मार डाला है।

कल्ला मारना–डीग मारना। उ० तुम तो दूर से ही कल्ला मारते हो, जब मौका आता है तो फिर बोल देते हो।

कसक निकालना–दे० 'कसक मिटाना'।

कसक मिटाना–१. पूर्व वैर का प्रतिकार लेना। उ० चलो देखें, कब तक बचते हो, कहीं तो भेंट हो जायगी और सारी कसक मिटा लूंगा। २. हृदय की चिन्ता दूर करना। उ० पुत्र का विवाह हो गया। यही कसक शेष थी, वह भी मिट गई।

कसकर–ज़ोर से, खींचकर। उ० कसकर एक चाँटा मारो।

कसकर रखना–१. रोक लेना। प्रकट न करना। उ० सभ्य मंडली में बुरे भावों को कस कर रक्खो। २. बाँध रखना, कहीं जाने न देना।

कसब करना–वेश्यावृत्ति अपनाना। जो लड़कियाँ घर से भागती हैं, वे लाचार होकर क़सब करती हैं।

क़सम उतारना–थोड़ा कुछ कर देना, जिससे क़सम उतर जाय। उ० केवल कसम उतारता हूँ, नहीं तो खाने की इच्छा नहीं थी।

क़सम खाने को–१. कोई भी, एक भी। उ० जो चाहो सो करो, अकेले तो मैं हूँ। यहाँ क़सम खाने को भी कोई नही है। २. ज़रा भी। उ० तुम्हें दूँ तो कहाँ से, क़सम खाने को भी मेरे पास चीनी नही है।

कसर करना–कमी करना। उ० मैंने ज़रा भी उसके लिए अपने परिश्रम में कसर नहीं की, आगे उसका भाग्य जाने।

कसर खाना–नुक़सान उठाना। उ० अधिक से अधिक दो रुपये की कसर खा सकता हूँ, इसके बाद गुंजाइश ही नही है।

कसर निकालना–१. बदला लेना। उ० आज मोहन के घर चोरी हो गई है। वह तो एक बदमाश है, इसकी कसर निकाल ही लेगा। २. कमी पूरी करना। उ० इस बार के गुड की कसर अगले बार चावल मे निकाल लूंगा।

कसर पड़ना–नुक़सान होना। उ० इतना ही दबाओ, कि हमे भी कुछ कसर न पड़े।

कसर रखना–१. बैर रखना। डाह रखना। उ० सयुक्ता की शादी के बाद ही जयचद पृथ्वीराज से कसर रखने लगा। २. कमी रखना। उ० परिश्रम मे ज़रा भी कसर न रखना, फल तो भगवान के हाथ है।

कसर रहना–अधूरा रह जाना। उ० आप चिन्ता न कीजिये, कल तक कोई कसर नही रहेगी।

कसाई के खूंटे से बाँधना–निर्दयी के अधिकार मे देना। उ० पहले तो पता नही चला, पर मैं अब सोचता हूँ कि वास्तव मे अपनी बेटी को मैंने कसाई के खूंटे से बाँध दी।

कसा-कसाया–प्रस्थान के लिये प्रस्तुत, तैयार। उ० समर-भूमि के लिए सैनिक कसे-कसाये हैं।

कसाला पड़ना–कष्ट होना। उ० प्रेम के मार्ग मे कसाले पड़ते हैं। यहाँ आने मे कसाला करना पड़ा।

कसौटी पर कसना–अच्छी तरह जाँच करना। उ० सोने का खोटा और खरा होना, कसौटी पर कसने से ही पता चलता है। कसौटी पर कस कर उसे अपने गिरोह में शामिल करना।

क़हक़हा उड़ाना–हँसी उड़ाना। उ० अरे कुछ

सुनो भी तो, हर बात का हर वक्त क़हक़हा उड़ाना उचित नहीं है।

क़हक़हा मारना–१. दे० 'क़हक़हा उड़ाना'। २. ठठा कर और ज़ोर से हँसना। उ० उसे फँसा तो लिया होता, पर तुमने क़हक़हा मार कर सारा काम बिगाड़ दिया।

क़हक़हा लगाना–दे० 'क़हक़हा मारना'।

कहते न आना–अवर्णनीय होना।

कहना-बदना–१. तय करना। उ० देखो अब बात न छोड़ो, क्योंकि यह तो पहले से ही कहा-बदा था। २. ललकार कर कहना। उ० कोई स्त्री तो हूँ नहीं, जो कुछ करना है, कह-बद कर ही करूँगा। ३. प्रतिज्ञा करना। उ० तुमने उस दिन आने को कहा-बदा था, पर नहीं आए।

कहना-सुनना–गाली-गलौज देना, डाँटना-फटकारना। उ० उसे कहना-सुनना व्यर्थ है। वह सुधर नहीं सकता।

कहने की बातें–कोरी गप्प। उ० यह सब कहने की बाते है, वह तुम्हें काम नहीं दिला सकता।

कहने पर जाना–किसी पर विश्वास कर लेना। उ० उनके कहने पर क्यों जाते हो, भला मै तुम्हें गाली दे सकता हूँ!

कहने में आना–१ बहकावे मे आना। उ० इस बार के जाने से एक फ़ायदा हुआ कि इतना तो जान गया कि किसी के कहने मे आकर नहीं जाना चाहिए। २. धोखे मे आना। उ० कल एक साधु के कहने में आकर मैने ५० रु० खो दिए।

कहने-सुनने के लिए। को–नाम मात्र को, दिखावे को। उ० कहने-सुनने को वह मेरा है, यों उससे कोई भी मतलब नहीं है।

कहने-सुनने में आना–दे० 'कहने में आना'।

क़हर करना–१. ज़ुल्म करना। उ० इतना क़हर न करो, आखिर मैं भी तो आदमी हूँ। २. असभव बात करना। उ० किसी को विश्वास नहीं था कि तुम्हें रुपया मिलेगा, परंतु तुमने तो क़हर कर दिया।

क़हर का–१. बहुत अधिक। २. बहुत कठिन। उ० क़हर के काम को कौन करेगा? ३. आफ़ती।

क़हर गिरना या टूटना या पड़ना या बरसना–विपत्ति का पहाड़ गिरना। उ० इतना बड़ा क़हर शायद किसी पर नहीं टूटा होगा।

क़हर पड़ना–दे० 'क़हर टूटना'।

कह बैठना–१ मुँहतोड़ उत्तर देना। उ० छोटा हो या बड़ा, वह सभी को कह बैठता है। २. भेद खोल देना, एक-ब-एक कह देना। उ० औरतो के दिल मे कोई बात नहीं पचती। वे समय आने पर सब कुछ कह बैठती हैं। ३. ताना देना।

कहाँ का–१ किसी ओर का नहीं। उ० कहाँ के सत्यवादी हो कि तुम्हारी बात मान लें। २. बड़ा भारी। उ० चल हट, कहाँ का चुग़लखोर है।

कहाँ का कहाँ–१ बहुत दूर। उ० यही न है कि जहाँ का अन्न-जल रहता है, वहाँ जाना ही पड़ता है, हम कहाँ से कहाँ चले आए। २ व्यर्थ मे। उ० कहाँ का कहाँ मैंने उन्हें बुलाया भी, वे न आते तो यह बखेड़ा क्यो उठता?

कहाँ की बात–१. अशुद्ध बात। झूठी बात। उ० कहाँ की बात करते हो, वे कल आए तो थे। २. गंदी बात। उ० यह आप कहाँ की बात करते है, कम से कम पिताजी का तो ख्याल किया कीजिए।

कहाँ सर फोड़ना–कुछ समझ मे न आना। उ० सुबह से सारा घर छान लिया है, पर पुस्तक का कहीं पता नहीं लगा। अब कहाँ सर फोड़ूँ?

कहाँ से–१ व्यर्थ मे। उ० अब पश्चाताप होता है कि कहाँ से शादी कर ली, नहीं तो अकेले मौज करता था। २. नहीं। कहीं से नहीं। उ० जब महात्मा चले गए, तो उनका दर्शन कहाँ से हो सकता है?

कहाँ से टपक पड़ना–अचानक आ जाना। उ० अरे भई सुबह ही सुबह कहाँ से टपक पड़े।

कहा-सुनी होना–झगड़ा-तकरार होना, वाद-विवाद होना। उ० कल बात ही बात मे दोनो मे कहा-सुनी हो गई और मारपीट तक की नौबत आ गई।

कहीं आकर–बहुत दिन बाद। उ० युग बीत गए, तब कहीं आकर आप के दर्शन हुए।

कहीं और–अन्यत्र। उ० हम तो स्वयं भिक्षुक है, कहीं और माँगो।

कहीं-कहीं–१. बहुत कम। उ० सज्जन संसार में कहीं-कहीं मिलते हैं। २. किसी-किसी स्थान पर। उ० दक्षिणी वनो मे कहीं-कहीं चंदन मिलता है।

कहीं का–दे० 'कहाँ का'।

कहीं का न रहना–कहीं आदर या पूछ न होना। उ० अब वह कहीं का न रहा, इसीलिये तो मुँह काला करके भाग गया।

कहीं तो नहीं–ऐसा न हो कि। ऐसा तो न हुआ कि। उ० कहीं गाड़ी तो नहीं छूट गई।

कहीं न–यह न हो कि। उ० कही तुम भी पास न हुए तो और बनेगा।

कहे में होना–किसी की बात मानने वाला होना।

कांकरी चुनना–वियोग या चिंता के कारण मन न लगना। उ० भैया के साथ दिन-रात रहता था और वे चले गए। अब क्या करूँ, काँकरी चुनते दिन बिताता हूँ।

कांख-कूंख कर–कठिनता से। उ० यह पचास रुपये-कांख कूंख कर दिये हैं, इन्हीं से काम चलाओ।

कांच खोलना–१. मैथुन करना। २. हिम्मत छोड़ना। बस एक कुत्ते ने भोंक दिया और काँच खोल दी।

कांच निकलना–किसी आघात या परिश्रम से बुरी दशा होना। उ० ऐसा मारेंगे कि कांच निकल आयेगी।

कांच निकालना–१. अथक परिश्रम कराना। उ० आज मालिक ने काँच निकाल ली। २. बेदम करना। उ० आज के काम ने कांच निकाल दी।

कांचा मन होना–हृदय दृढ़ न होना। उ० औरतों का मन कांचा होता है। वह तो कांचा मन है, उससे काम न होगा।

कांछी देना–टाल-मटोल करना। उ० आखिर जब रुपया देना ही है, तो काँछी क्यों देते हो?

कांटा खटकना–१ संदेह होना। उ० इतनी स्पष्ट बात होने पर भी क्या अभी काँटा खटकने की गुंजाइश है? २. बुरा लगना, अखरना।

कांटा चुभोना–परीशान करना। उ० क्यों काँटा चुभो रहे हो? क्या मेरी बारी कभी न आएगी?

कांटा निकल जाना–हृदय से द्वेष, बाधा या वेदना का मिटना। उ० आपकी बातों से हमारे दिल का काँटा निकल गया।

कांटा निकालना–१. संदेह दूर करना। उ० उनके दिल से किसी तरह काँटा निकाल दो। २. कष्ट दूर करना।

काँटा बिछाना–दे० 'काँटा बोना'।

कांटा बोना–१. अनिष्ट करना। उ० भरसक शत्रु के लिए भी काँटा न बोना चाहिए। २. बाधा पैदा करना। उ० यदि ईश्वर चाहेगा तो तुम्हारे काँटे बोने से कुछ न होगा।

कांटा-सा करना–दुबला करना। उ० अनशन करके तुमने शरीर काँटा-सा कर दिया है।

कांटा-सा खटकना–दे० 'काँटे-सा खटकना'।

कांटा-सा होना–अतिक्षीण होना। उ० केवल अपनी स्त्री की चिंता के कारण वह सूख कर काँटा-सा हो गया। २. कष्टकर होना।

कांटा होना–१. सूखकर दुबला हो जाना। २. दुःखदायी होना। ३. बाधा बनना।

कांटी खाना–कारागार भुगतना। उ० अरे डाकुओं को क्या है, उनका तो पेशा ही काँटी खाना है। [यह जुआरियों की बोली में प्रयुक्त होता है।]

कांटे का–१. कड़ा। २. अत्यधिक। ३. हिम्मती।

कांटे की–१. नपी-तुली। उ० जो भी हो, वे है तो कटुवादी, पर काँटे की बात कहते हैं। २. कड़ई। उ० उसकी काँटे की बात सुनते-सुनते तबीयत आजिज आ गई।

कांटे की तौल–ठीक-ठीक, न कम न बेश। उ० काँटे की तौल देने वाले दूकानदार कहाँ मिलते हैं?

कांटे में तुलना–बहुत महँगा होना।

कांटे-सा खटकना–बुरा लगना, अखरना। उ० हमी है अब की काँटे-सा खटकते है, हर एक दिल में।

कांटों पर लोटना–१. कष्ट में दिन बिताना। उ० अरे हम-तुम सुखी हैं, परंतु सारा विश्व तो काँटों पर ही लोट कर जीवन-यापन करता है! २. द्वेष होना। उ० कोई स्त्री सपत्नी को देख कर काँटों पर लोट जाती है।

कांटों में उलझना–संकट में पड़ना। उ० तुम्हारे जैसे धोखेबाज आदमी इसी तरह काँटों मे उलझा करते हैं।

कांटों में खींचना–१. आवश्यकता से अधिक प्रशंसा करना। उ० कृपा करके अब अधिक मुझे काँटों में न खीचिए। २. बहुत कष्ट देना। उ० अब मुझे काँटों में न खींचिए। वह हाथ में आ जाता तो ऐसा काँटों में खींचता कि उसे होश हो जाता।

काँटों में घसीटना—दे० 'काँटो में खींचना'।

काँटों में फँसना—कठिनाई मे पड़ना। उ० रमा के चले जाने के कारण मैं तो काँटों में फँस गया हूँ।

काँटों में लथारना—दे० 'काँटो मे खीचना'।

काँध देना—१. सहारा देना। उ० ज़रा भी काँध दे दो तो मेरा बेड़ा पार लग जाय। २. मुर्दे की अरथी को काँध पर रखना।

काँध मारना—समय पर काम न आना। उ० तुम्हारे ऐसे मित्र से बाज आए। उस दिन मुझे केवल १०० रु०की आवश्यकता थी और तुम काँध मार गए।

काँधी देना—टाल-मटोल करना। उ० क्यो काँधी दे रहे हो, मेरी भी बारी आएगी।

काँस में तैरना—असमजस मे पड़ना। उ० तो वह काँस मे तैर रहा है, और तुम भी साफ नही कहते, ऐसा मै जानता तो कभी साझा न करता।

काँस में फँसना—सकट मे फँसना। उ० वह तो ऐसा काँस मे फँसा है कि जो चाहो करा सकते हो।

काई छुड़ाना—१. दु:ख-दरिद्रता दूर करना। उ० सेठजी ने सहायता करके हमारी काई छुडा दी। २. साफ़ करना। उ० पहले अपने मन की काई छुडा लो तो दूसरे को कहना।

काई-सा फट जाना—तितर-बितर हो जाना। उ० सिपाही के जाते ही भीड़ काई-सी फट गई।

कागज़ करना—१. दस्तावेज़ पर किसी संपत्ति का अधिकार लिखना। उ० पिछले रुपये मे मैने उन्हे यह खेत कागज़ कर दिया। २. किसी की बात के सम्बन्ध में लिखा-पढ़ी करना। उ० कागज कर लो, ताकि वक्त के लिए सनद रहे।

कागज़ का घर होना—शीघ्र नष्ट हो जाने वाला होना। उ० यह कागज का घर नही है। एक बार खरीद लेगे, तो २० वर्ष के लिए स्थिर हो जायँगे।

कागज़ काला करना—व्यर्थ का लिखना। उ० क्या कागज़ काला कर रहे हो ? तुम्हारा लिखा किस काम आएगा ?

कागज़ की नाव—१. क्षणिक और अस्थायी वस्तु। उ० कागज़ की नाव कभी चलती नही, जुल्म की टहनी कभी फलती नही। यह तुम्हारा मकान क्या है, कागज़ की नाव है। २. धोखा।

कागज़ की नाव होना—दे० 'कागज़ का घर होना'।

कागज़ के घोड़े दौड़ाना—दे० 'कागज़ी घोड़े दौड़ाना'।

कागज़ खोलना—दोष दिखाना। उ० सरकार का कागज़ खोलने के लिए देश मे कुछ दलों की आवश्यकता पड़ती ही है।

कागज़ पर चढ़ाना—१. लिख लेना। उ० आपका नाम कागज़ पर चढा लिया गया है। अब आप कल आएँ। २. पटवारी के खेत के अधिकार-सबधी कागजो मे लिखना। कागज़ पर चढ़ाने के लिए पटवारी ५० रु० घूस माँगता है।

कागज़ी घोड़े दौड़ाना—खूब लिखा-पढी करना। किसी काम के लिए इधर-उधर पत्र आदि भेजना। उ० केवल कागज़ी घोड़े दौड़ाने से काम नही चलेगा। जाकर मिला भी करो।

कागज़ी पहलवान—बहुत दुबला। उ० भई, तुम तो कागजी पहलवान बन रहे हो। कुछ खाया-पिया करो।

काग बोलना—शुभ सूचना या मेहमान का आना। उ० आज भय्या अवश्य आयेंगे। वो देखो, सुबह से ही काग बोल रहा है।

कागा उड़ाना—जीवन व्यर्थ नष्ट करना। उ० धिक मो कहँ मो वचन लगि, मो पति लह्यो विराग। भई वियोगिनि निज करनि, रहूँ उड़ावति काग।

कागा-रौल मचाना—शोर-गुल करना। उ० भाई, तुम लोग तो मछली बाज़ार से भी अधिक कागा-रौल मचा रहे हो।

काछ काछना—१. भेष बदलना। उ० बिना काछ काछे भिक्षा भी नहीं मिलती। २. धोती ऊपर करना। उ० काछ-काछ कर काम में डट जाओ।

काजल की कोठरी—कलंक का स्थान। उ०-काजल की कोठरी मे जाना मूर्खों का काम है।

काजल छालना—दे० 'काजल देना'।

काजल देना—आँखों मे काजल लगाना। उ० सोते समय काजल देना अच्छा है।

काजल लगना—कलक लगना, बदनामी होना। उ० जाय वह मुँह तुरंत जल, जिसमें गा बुरी कजलिया लगे काजल।

काट खाना—१. हानि उठाना । उ० मैंने इस सौदे में सैकड़ों रुपये काट खाए । २. दे० 'काटने दौड़ना' । ३. अप्रिय लगना ।

काट खाने को दौड़ना—दे० 'काटने दौड़ना' ।

काट-छाँट करना—१. चुन कर कम करना । उ० अफ़सर ने काट-छाँट कर केवल बीस आदमियो को लिया । २. अड़चन डालना । उ० उसके विवाह में तुम काट-छाँट क्यों करते हो ?

काटने दौड़ना—१. क्रोध से आपे से बाहर होना । उ० उसकी ऐसी प्रकृति है कि यदि अपनी भी चीज़ माँगो तो काटने दौड़ता है । २. कष्टकर होना । उनके न रहने से वह मकान काटने दौड़ता है । ३. अप्रिय लगना ।

काट पर रहना—विरुद्ध रहना । उ० वह सदा ही मेरी काट पर रहता है ।

काट-फाँस करना—चुग़ली करना । झगड़ा लगाना । उ० नारद मुनि का नाम काट-फाँस करने वालो में प्रथम आता है ।

काटी उँगली पर न मूतना—१. ऐसा काहिल और निर्दयी हो जाना कि अगर किसी की उँगली कटी हो तो उसे अच्छा होने को पेशाब करने के लिए कहे तो वह भी न करे । २. क्रूर होना ।

काटे खाना—हृदय को दुखित करना । क्या कहूँ, समय ऐसा आ गया कि ये कपड़े भी काटे खाते हैं ।

काटे न कटना—१. अत्यन्त सख्त होना । उ० यार यह लकडी तो काटे नही कटती है । २. बिताए न बीतना । उ० क्लेश की राते काटे भी नही कटती है ।

काटो तो खून न होना—भय या अपमान जनक बात सुन कर सन्न रह जाना । उ० सिंह को देखते ही मैं तो ऐसा डर गया कि काटो तो खून न था ।

काठ-कबाड़—कूड़ा-कबाड़ । कूडा-करकट । उ० काठ-कबाड़ यहीं भेजना था ।

काठ का उल्लू—महामूर्ख । उ० अजीब काठ के उल्लू से पाला पड़ा है ।

काठ का कलेजा—निष्ठुर ।

काठ का घोड़ा—१. लँगड़े की लकड़ी । उ० कल्लू का तो यही काठ का घोड़ा है । नही तो वह कहीं आ-जा भी नहीं सकता । २. मूर्ख । वह तो काठ का घोड़ा है ।

काठ की हाँडी—१. अस्थायी चीज़ । उ० रहिमन हाँडी काठ की चढ़े न दूजी बार । २. धोखा । आखिर फँस ही तो गया । काठ की हाँडी कब तक चल सकती है ।

काठ कोड़ा चलना—ज़ोर चलना, बाना चलना, हुक्म चलना ।

काठ चबाना—रूखा-सूखा खाना । उ० ग़रीब को क्या, वे तो बेचारा काठ चबा कर ज़िन्दगी बिता देते है ।

काठ मारना या मार जाना—काठ की तरह सूख जाना । सन्न हो जाना । उ० मेरी बात सुनते ही उन्हें काठ मार गया ।

काठ में पाँव देना—स्वयं बन्धन में फँसना । विपत्ति मे पड़ना । उ० विवाह करके लोग काठ मे पाँव देते हैं ।

काठ में पाँव पड़ना—मुश्किल में पड़ना । उ० मेरे तो पाँव अच्छे काठ में पड़े । अब क्या करूँ और क्या न करूँ, कुछ समझ मे नहीं आता ।

काठ होना—१. सन्न हो जाना । उ० अपने भाई की मृत्यु का समाचार सुनकर वह काठ हो गया । २. सूख कर दुर्बल होना । उ० अपनी प्रिया के वियोग में वह काठ हो गया । ३. सूख कर कड़ा होना । उ० रोटी काठ हो गई है ।

कान आ लगना—कानो मे गुप्त सवाद कहना । उ० आज सुबह ही वह कान आ लगा । कोई बात ज़रूर है ।

कान उठाना—सुनने के लिए प्रस्तुत होना । उ० मै तो कान उठाए हुए था, परन्तु उनकी आवाज़ ही धीमी थी । २. सतर्क होना । उ० शिकारियों को देखते ही खरगोश ने कान उठा लिए ।

कान उड़ जाना—१. कानो का सन्न हो जाना । बहुत शोरगुल सुनने से कानों का परीशान हो जाना । २. किसी की बात सुनते-सुनते परीशान हो जाना । उ० कहाँ तक सुनूँ, कान तो उड़ गए, तेरी सुनते-सुनते हेकायाते रोज़ ।

कान उमेठना—१.सावधान करना । उ०अध्यापक ने आज कान उमेठ कर कहा कि काम पूरा किया करो । २. न करने का प्रण करना । उ० आज हमने कान उमेठ लिये कि उससे नहीं बोलूँगा । ३ अपराध स्वीकार करना । उ० उसे मार कर मैंने भूल की, मैं कान उमेठता हूँ । ४. साधारण सज़ा देना । उ० इतने बड़े अपराधी के लिए केवल कान उमेठना क्या था !

कान ऐंठना—दे० 'कान उमेठना' ।

कान कतरना–१. सबसे एक कदम आगे रहना। उ० वह केवल १६ वर्ष का है, परन्तु बड़े-बड़े पहलवानों के कान कतरता है। २. धोखे में डाल देना। उ० आज के जादूगर ने तो हम सबके कान कतर लिए।

कान करना–ध्यान से सुनना। उ० मूर्ख तो अच्छी बातों पर भी कान नहीं करते हैं।

कान का कच्चा होना–१. सुनी बात या शिकायत का जल्दी विश्वास करने वाला होना। उ० कान के कच्चे न बनो, नहीं तो इसी में धोखा खा जाओगे। २ सुन कर कह देने वाला होना। उ० स्त्रियाँ कान की कच्ची होती हैं।

कान काटना–दे० 'कान कतरना'।

कान का पतला होना–'दे० कान का कच्चा होना'।

कान का परदा फटना–दे० 'कान फटना'।

कान का मैल निकलवाना–सुनने योग्य होना। (कटाक्ष)। उ० पहले कान का मैल निकलवा लो, तो आकर सुनना।

कान का हलका होना–दे० 'कान का कच्चा होना'।

कान के पीछे मारना–ध्यान न देना, बेकार समझना। दे० 'कान पर जूँ न रेंगना'।

कान खड़े करना–होशियार होना। उ० सिपाही को देखते ही चोरों ने कान खड़े किए और नौ दो ग्यारह हो गए।

कान खड़े होना–ध्यान आना। होशियार होना। उ० इतनी हानि उठाने पर भी तुम्हारे कान न खड़े हुए तो तुम जैसा मूर्ख संसार में न मिलेगा।

कान खाना या खा जाना–१. कई बार कहना। उ० तुम तो यार कान खाते हो। कह तो दिया कि तुम्हारा काम हो जायगा। २. हल्ला करना। उ० चुप हो जाओ, क्यों कान खाते हो? ३. बात के मारे परीशान करना। उ० वह तो आता है तो कान खा जाता है।

कान खा लेना–दे० 'कान खा जाना'।

कान खुजाने की फुरसत न होना–बहुत व्यस्त रहना। उ० आजकल कार्यालय में सीजन वर्क के कारण कान खुजाने की भी फुरसत नहीं है।

कान खुलना या खुल जाना–भविष्य के लिए सावधान होना। उ० भला तुमने बतला तो दिया, अब ऐसा नहीं करूँगा। आज कान खुल गए।

कान खोलना या खोल देना–सावधान कर देना। उ० मैंने तो पहले ही तुम्हारा कान खोल दिया, पर तुमने नहीं माना तो मैं क्या करूँ?

कान गरम करना–१ दबाव डालना। उ० मैंने जब उसका कान गरम किया तो वह मान गया २. सज़ा देना। उ० फिर गलती करोगे तो ज़रूर कान गरम करूँगा।

कान दबना–दबाव पड़ना। उ० कान दबेगा तो वह काम कर ही देगा।

कान चीरना–किसी तेज़ आवाज़ का कान को फाड़े डालना।

कान ठनकना–किसी आने वाले संकट की आशंका होना।

कान दबाना–१. हिचकिचाना, सहमना। उ० जब तुम्हारी समझ में कोई गड़बड़ नहीं है तो फिर मेरे पास आने में क्यों कान दबाते हो? २ दबाव डालना। ३ उसका कान किसी तरह दबाओ तो काम हो जाय।

कान देना–दे० 'कान करना'।

कान धरना–१. दे० 'कान देना'। २. दे० 'कान उमेठना'। ३ स्वीकार करना। उ० वह किसी की भी शिक्षा कान नहीं धरता।

कान न दिया जाना–१ शोर के कारण कुछ न सुना जाना। शोर आदि के कारण कान फटना। उ० मछली बाज़ार में पहुँचने पर कान नहीं दिया जाता। २. कारुणिक बोली, दया के कारण न सुनना चाहना। उ० उस स्त्री के रुदन पर तो कान नहीं दिया जाता। ३. न सुना जाना। उ० अपना काम करो। उनकी बात तो ऐसी होती है कि कान नहीं दिया जाता।

कान न हिलना–चूँ तक न करना। उ० वह तो इतना दब्बू है कि बारात में उसका इतना अपमान हुआ, परन्तु उसका कान तक न हिला।

कान पकड़ कर निकाल देना–अपमान से निकालना। उ० आखिर तुम्हारा हक़ ही क्या है, यदि इस तरह नहीं माने तो कान पकड़ कर निकाल दूँगा।

कान पकड़ना–१. दे० 'कान उमेठना'। २. पश्चात्ताप के साथ कोई प्रण करना। उ० मैंने

तुम्हारी बात नहीं मानी और उससे अपना व्यवहार जारी रक्खा। आज फल देखकर अपना कान पकड़ता हूँ। ३. दूर भागना। उ० कुछ भी हो जाय, मैं तो झगड़ा करने से कान पकड़ता हूँ। ४. जबरदस्ती करना। उ० तुम्हारा मुझ पर अधिकार है, कान पकड़कर करा सकते हो। ५. दबाव डालना।

कानपकड़ी छोरी—आज्ञाकारिणी। उ० तुम्हारी स्त्री तो कानपकड़ी छोरी है।

कान पकड़ना—किसी बात को बार-बार सुनते-सुनते ऊब जाना।

कान-पड़ी आवाज न सुनना—बड़ा शोर होना। उ० हावड़ा स्टेशन पर तो इजनों के मारे कान-पड़ी आवाज भी नही सुन सकते।

कान पर जूं तक न रेंगना—ज़रा भी ध्यान न देना, न सुनना, ख्याल न करना। ३. हम भला कान क्या हिलाएँगे, कान पर रेंगती नही जूं तक।

कान पर जूं न रेंगना—१. ज़रा भी ध्यान न देना। उ० राम तो ऐसे सहनशील थे कि हज़ारों, कहो पर कान पर जूं तक नही रेंगती थी। २ लापरवाह होना। उ० इतना सब कुछ हो गया, पर तुम्हारे कान पर जूं तक नही रेंगी।

कान पर रखना—स्मरण रखना। उ० अध्यापक की बात को सर्वदा कान पर रक्खो।

कान पर से गोली जाना—किसी आपदा से बिल्कुल साफ बच जाना। उ० कदाचित् कोई भी घर यहाँ प्लेग से नही बच सका, परन्तु मेरे कान पर से गोली चली गई।

कान पर हाथ धरना—१. सहम जाना। उ० उस रात की भयंकरता देखकर मैने कान पर हाथ धर लिये। २. कहा न मानना। उ० जब मैंने कहा तो उसने कान पर हाथ धर लिए। ३. अजानकारी जानाना। उ० इस घटना को सुनते ही कान पर हाथ धर लिया।

कान पर हाथ रखना—दे० 'कान पर हाथ धरना'।

कान-पूंछ दबा कर चला जाना—चुपचाप चला जाना। उ० दुष्टों के समाज से कान-पूंछ दबा-कर चला जाना ही उचित है।

कान-पूंछ फटकारना—होशियार होना। उ० धीरे से जाओ कि उसे कान पूंछ फटकारने का मौक़ा तक न मिले।

कान फटना—तेज आवाज़ से परेशान होना। उ० प्रदर्शनी में आतिशबाज़ी की आवाज़ से कान फटा जाता था।

कान फूंकना—१. शिष्य बनाना। मंत्र देना। उ० मैंने आज उसका भी कान फूंक दिया। २. शिकायत करना। उ० अच्छा समय आया है, उनका कान फूंको और झगड़ा लग जायगा। ३. कान भरना।

कान फोड़ना—बहुत शोर करना।

कान बहरा करना—सुनी-अनसुनी करना।

कान भर जाना—१. सुनते-सुनते ऊब जाना। उ० तुम्हारी बकवादों से तो कान भर गया। उ० पिंदे वाइज़ सुनते-सुनते कान अपने भर गए; क्या एबादत को हमी है, सब फ़रिस्ते मर गए?

कान भरना या भर देना—१. शिकायत करना। उ० उसके खिलाफ़ तुम मेरे कान न भरो।

कान में उंगली डालना या देना—न सुनना, सुनने से इन्कार करना।

कान में कान लगाना—चुप-चुप बात करना (किसी से)।

कान में ठेंठी लगाना—१. न सुनाई देना। कान के छेद मे किसी चीज़ का कस जाना। उ० कान में ठेंठी लगी है कि नही सुनते हो?

कान में डाल देना—१. लापवाही से बता देना। २. कह देना। उ० इस चीज़ को ज़रा उनके कान में भी डाल देना कि वे भी होशियार हो जायँ।

कान में तेल डाल कर बैठना—१ सुनी-अनसुनी करना। उ० आज का संसार तो ऐसा है कि कान में तेल डाल कर बैठ न जाय तो झगडा होते देर नही लगती। २. लापरवाही होना। उ० जब मेरे पास रुपये नही है तो मैं कैसे दे सकता हूँ, इसलिए कान मे तेल डाल कर बैठ गया।

कान में पड़ना—सुनाई देना। उ० बात उसके कान में पड़ेगी तो फैलते देर न लगेगी। २. ज्ञात हो जाना।

कान में फूंकना—दे० 'कान भरना'।

मान में भनक पड़ना—किसी के बारे में उड़ती खबर मिलना।

कान में रखना—दे० 'कान पर रखना'।

कान में रुई डाल कर बैठना—दे० 'कान मे तेल डाल कर बैठना'।

कान रखना–१. जानने के लिए उत्सुक रहना। २. सुनने के लिए उत्सुक रहना। उ० तुम तो हमारी प्रत्येक बात पर कान रखते हो।

कान रोपना–ध्यान से सुनना। उ० क्या कान रोपते हो, यहाँ तुम्हारी बात नहीं हो रही है।

कान लंबे होना–हर बात सुनने का इच्छुक होना, हर बात सुनने को उत्सुक होना।

कान लगाकर सुनना–प्रत्येक शब्द को ध्यान से सुनना। उ० कोई मजाक नही कर रहा हूँ, कान लगा कर सुनो नही तो पछताओगे।

कान लगाना–ध्यान देना। सुनने की कोशिश करना। उ० दूसरो की बातों पर क्यो कान लगाते हो?

कान से निकल जाना–सुनी बात भूल जाना। उ० हमारा मस्तिष्क ऐसा नही है कि सभी बातें कान से निकल जाया करें।

कान से लगना–१. धीरे से या गुप्त रूप से कहना। उ० कान से क्या लगते हो, जो कहना है, ज़ोर से कहो। २. कान के पीछे घाव होना। ३ स्वीकार किया जाना। उ० हमारी बात उनके कान से नहीं लगती।

कान होना–लापरवाही के बाद होश होना, सचेत होना। उ० सैकड़ो रुपये खोकर तो कान हुए।

कानाफुस्की या कानाफूँसी करना–१ धीरे-धीरे बात करना। उ० पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक कानाफूँसी करती है। २. छिप-छिप कर आलोचना करना। उ० कानाफूँसी करने दो, सामने कहने की तो किसी की हिम्मत नही है!

कानाबाती करना–चुपके-चुपके कान मे बात करना। उ० वे कानाबाती कर रहे है, कोई बात अवश्य है।

कानी के ब्याह को सौ जोखो होना–जहाँ कोई भी त्रुटि हो वहाँ बडा भय रहना। उ० अभी इस काम मे हाथ नही डालूँगा, क्योकि तुम जानते हो कि कानी के ब्याह को सौ जोखो होते हैं।

कानी कौड़ी का न होना–अति मूल्यहीन होना। निरर्थक होना। उ० हमारे पास ये वस्तुएँ कानी कौड़ी की भी नही हैं, यदि तुम्हे आवश्यकता हो तो ले जाओ।

कानी कौड़ी न होना–बहुत ग़रीब होना। पास में एक टका न होना। उ० उसके पास तो कानी कौड़ी भी नही है तुम्हे उधार कहाँ से दे।

कानून छाँटना–तर्क-वितर्क करना। उ० यदि करना हो तो करो, कानून क्यों छाँटते हो?

कानून सिखाना या पढ़ाना–बेवकूफ़ बनाना, समझाना। उ० जाओ अपना रास्ता लो, मुझे कानून न पढाओ।

कानून बघारना–दे० 'कानून छाँटना'।

कानों-कान ख़बर न होना–बिल्कुल पता न चलना। उ० देखना इस बात की लोगों को कानो-कान खबर न हो, नही तो बडा ख़तरा है।

कानों-कान फैलना–धीरे-धीरे ख़बर का एक के मुँह से दूसरे के कान और फिर दूसरे के मुँह में तीसरे के कान होते हुए फैलना। उ० भला यह बात छिपाने की है, अरे यह तो कानो-कान फैल जायगी।

कानों को हाथ लगाना–तौबा करना। उ० कानों को हाथ लगाना हूँ जो कभी भी तुम्हारे साथ जाऊँ।

कानो में उँगली देना या दे लेना–जान-बूझकर न सुनना। उ० अपनी तो आप सुना लेते है और मेरी बारी आती है तो कानो में उँगली दे लेते हैं।

कानों से काम लेना–इधर-उधर सुनकर हित-अनहित समझना। उ० उससे सबंध करने में कोई हर्ज नही है, लेकिन जरा कानो से काम ले लेना अच्छा होगा।

काफ़िया तंग करना–बहुत परीशान करना। उ० क्यो मेरा काफ़िया तग कर रहे हो, तुम्हें कुछ मिल जायगा क्या?

काफ़िया तंग रहना–आजिज़ रहना, परीशान रहना। उ० तुम्हारी बकवादो से तो मेरा काफ़िया तग रहता है।

काफ़िया तंग होना या हो जाना–परीशान या आजिज़ होना। उ० तुम्हारा काफ़िया तंग न हो गया तो मेरा नाम बदल देना।

काफ़िया मिलाना–१. मित्र बनाना। उ० यहाँ कुछ लोगो से काफ़िया मिला लो। २. तुकबंदी करना। उ० मै तो कुछ कर भी लेता हूँ, तुम तो काफ़िया मिलाना भी नहीं जानते।

काफ़ूर हो जाना– उड़ जाना, भग जाना । उ० मुझे देखते ही वह काफ़ूर हो गया ।

काफ़ूर होना–चंपत होना। उ० वह ऐसा चालबाज़ है कि देखते ही देखते काफ़ूर हो गया ।

क़ाबू पर चढ़ना–चालबाजी से अधिकार में आना । उ० यदि मेरे क़ाबू पर चढ गया तो कुछ ले ही लूँगा ।

क़ाबू पर चढ़ाना–चालबाजी से अधिकार में करना ।

क़ाबू पाना–स्वत्व होना । अधिकार पाना । उ० किसी की सम्पत्ति पर क़ाबू पाना आसान नहीं है ।

क़ाबू में करना–अपने अधीन करना । उ० केवल थोड़ा-सा चिट्टा देकर क़ाबू में कर लिया, अब जो चाहूँ, करा सकता हूँ ।

क़ाबू से बाहर होना–वश का न होना, आपे में न होना। उ० इस पुस्तक को दो दिन में पढना अपने काबू से बाहर है ।

काम अटकना–काम में बाधा पड़ना, काम रुकना । उ० केवल कुछ ही रुपयों के लिए मेरा काम अटका हुआ है ।

काम आख़िर करना–दे० 'काम तमाम करना' ।

काम आख़िर होना–दे० 'काम तमाम होना'।

काम आना–१. वीरगति प्राप्त करना । मरना । उ० पिछले युद्ध में असंख्य वीर काम आए । २. उपयोग करना । उ० इस साल तुम्हारी बहुत सी किताबें मेरे काम आ रही है । ३. चल जाना । उ० यदि हमारी चाल काम आ गई, तो अवश्य कुछ मिल जाएगा ।

काम उठाना–काम प्रारभ करना ।

काम करना–१. प्रभाव डालना । उ० दवा ने कुछ भी काम नही किया । २. अपना कर्त्तव्य पूरा करना । उ० उसने केवल दो ही प्रश्न रटे थे, परन्तु वे काम कर गए । ३. अपना मतलब निकालना । उ० संसार अपने काम करने मे व्यस्त है ।

काम का–लाभदायक । उ० इस अवसर पर तुम्हारा मंतव्य बड़े काम का है । यह आदमी है बड़े काम का ।

काम के सिर रहना–दे० 'काम के सिर होना' ।

काम के सिर होना–कार्यरत होना । काम में व्यस्त होना । उ० इस वक्त तो वह काम के सिर है, उसका कही जाना संभव नही ।

काम खुलना–काम शुरू होना । उ० उनका काम खुले तो मुझे भी रोजी मिले ।

काम खोलना–काम आरंभ करना । उ० अभी नया काम मत खोलो, लोगों को घाटा लग रहा है ।

काम गिर जाना–व्यवसाय या काम-धाम मंदा पड़ना ।

काम चमकना–व्यापार सफल होना, काम में उन्नति होना । उ० आजकल बिड़ला का काम खूब चमका हुआ है ।

काम चलना–१. निर्वाह होना ; उ० भारतीय कृषकों का काम कर्ज से ही चलता है । २. मद गति से कार्य बढना । उ० कन्ट्रोल के कारण व्यापार क्या है, किसी तरह से काम चल रहा है । ३. काम बन जाना । उ० हमारा काम सौ रुपये से चल जाएगा । काम चल गया तो ४-६ महीने में कर्ज चुका दूंगा ।

काम चलाना–किसी तरह से काम निकालना । उ० केवल १०० रु० तो पाता हूँ और पाँच आदमियों का व्यय, किसी तरह काम चलाता हूँ ।

कामचोर होना–दिल से काम न करना ।

काम तमाम करना या कर देना–१. खतम करना । उ० मकान का काम तमाम भी करो । २ मार डालना । उ० बदमाशों ने उस बुड्ढे का काम तमाम कर दिया ।

काम तमाम होना–१ कार्य का समाप्त हो जाना । उ० आज का काम किसी तरह तमाम हुआ, अब आगे देखना है। २. मर जाना । उ० आज के झगड़े में एक निर्दोष का ही काम तमाम हो गया ।

काम देखना–१. गतिमान या होते हुए कार्य पर निगाह रखना । उ० अरे नौकरों का क्या भरोसा, काम देखना आवश्यक है । २. काम से सरोकार रखना । उ० मुझे संसार से क्या तात्पर्य, अपना काम देखना है ?

काम देना–उपयोग मे आ जाना । उ० प्रत्येक वस्तु का संग्रह अच्छा ही है, कभी काम ही देगा । इस चारपाई ने बड़ा काम दिया ।

काम निकालना या निकल जाना–काम चलना, आवश्यकता की पूर्ति होना । उ० केवल पाँच रुपया है, यदि काम निकल जाये तो ले जाओ ।

काम निकालना–दे० 'काम चलाना' । २. अपनी स्वार्थसिद्धि करना । उ० संकुचित दृष्टि वाले केवल काम निकालना जानते हैं ।

काम पड़ना—१. जरूरत आना। उ० अभी चुप रहो, काम पड़ने पर देखा जाएगा। २. सम्बन्ध हो जाना। उ० उसका क्या दोष है ? उसका काम ही ऐसे आदमी से पड़ा है कि कुछ कर नहीं पाता।

काम पर तुल जाना—दे० 'बात पर तुल जाना'।

काम बँटाना—काम में सहयोग देना। उ० थोड़ा-थोड़ा काम बँटा लो तो जल्दी हो जाय।

काम बढ़ाना—१ व्यापार बढाना। उ० अब तो धीरे-धीरे मैंने काम बढा लिया है। २ कार्य समाप्त करना। उ० तुम्हारे पास मैं काम बढा कर शाम को आऊँगा।

काम बनना—अपना मतलब पूरा होना। काम या बात का पूरा होना। उ० तुम तो यही समझते हो कि हमारा काम बन गया, बस सब हो गया।

काम बनाना—१ सहयोग प्रदान करना। उ० कल की पचायत में केवल उसने काम बनाया नही तो मैं हार जाता। २ काम बिगाडना (व्यंग्य)। उ० आपने तो खूब काम बनाया। यदि यही दशा रही तो रेड मार देंगे।

काम बना रहना—काम उन्नति पर रहना, तरक्की करते रहना। उ० किसी का काम सदा नही बना रहता।

काम बिगाड़ना या बिगड़ जाना—१. कारबार मे गडबडी पडना। रोजगार खराब हो जाना। उ० केवल कर्ज़ देने मे ही उसका काम बिगड गया। २ बात या कार्य का बिगड जाना। उ० तुम्हारे न रहने से ही काम बिगड गया।

काम भुगतना—समाप्त होना। उ० मेरा काम भुगत गया।

काम भुगतना या भुगता देना—अत करना, काम खत्म करना। उ० मैने उसका काम भुगता दिया।

काम मे आना—व्यवहृत होना। प्रयोग मे आना। उ० हमे तो कम आशा है कि कभी यह भी काम मे आयेगा।

काम में नाधना या नाधे रहना—काम मे लगाना या लगाये रहना। उ० वह अपने नौकर को रात-दिन काम मे नाधे रहता है।

काम में काम निकालना—एक पथ से दो काम करना।

काम में लाना—प्रयोग करना। उ० घी को काम मे लाओ, तो असली-नक़ली का पता चले।

काम रखना—१. कठिन कार्य होना। उ० परीक्षा पास करना भी काम रखना है। २. वास्ता रखना। उ० केवल खाने से काम न रक्खो, कमाने पर भी ध्यान दो।

काम लगना—काम शुरू होना। उ० इस कोश पर काम लग गया है। २. नौकरी पाना। उ० जीवन-यापन के लिए काम लग गया।

काम लगा रहना—काम मे लीन रहना। उ० बड़े आदमियो का हर समय काम लगा ही रहता है। २. काम आता रहना। उ० वहाँ जाने की फ़ुरसत नहीं लगती, कोई न कोई काम लगा रहता है।

काम लेना—१ काम कराना। उ० इन आदमियों मे काम ले लो, नही तो फिर ये चले जाएँगे। २ प्रयोग मे लाना। उ० तुम्हारी साइकिल से काम ले रहा हूँ।

काम सँवारना—बिगडते काम को बनाना।

काम समेटना—काम या व्यापार समाप्त करना। इस काम को जल्द समेट लो तो कुछ और किया जाय।

काम से काम रखना—अपने काम से काम रखना। दूसरे से व्यर्थ मे सम्बन्ध न करना। उ० संसार में बहुत कम लोग ऐसे है जो केवल अपने काम से काम रखते है।

काम से जाता रहना—१ नौकरी से छूट जाना। उ० कुछ ही दिनो में वह काम से जाता रहेगा। २ काम का न होना। बेकार होना। उ० हमारा बैल अब काम से जाता रहा।

काम होना—१. आवश्यकता की पूर्ति होना। उ० आज के मेहमानो के लिए तो घर के ही दूध से काम हो गया। २ बहुत कष्ट होना। उ० मेरा तो काम हो रहा है और आपको हँसने से फ़ुरसत नही है। ३ मृत्यु होना। उ० रिक्शे से मोटर के लडते ही दो आदमियो का काम हो गया।

कायथ की खोपड़ी—चालबाज और धूर्त मनुष्य। उ० तुम तो कायथ की खोपडी हो।

क़ायम उठाना या उठा देना—शतरंज के खेल में कोई निर्णय न होना। उ० आज का खेल कायम ही उठा दिया गया। [शतरंज खेलने वालों की बोली में प्रयुक्त]

क़ायल करना या कर देना—१ तंग करना। उ० तुमने तो मुझे क़ायल कर दिया। २. किसी तरह से बात मनवाना। उ० तुम्हारी दलीलो ने तो उसे क़ायल कर दिया।

क़ायल होना या हो जाना—१. लज्जित होना। २. आजिज होना, तंग होना। उ० मैं तो तुम्हारी शरारत से क़ायल हो गया हूँ। ३. मान लेना। ठीक समझना। उ० तुम्हारे तर्क से मुझे क़ायल होना पड़ा।

कायाकल्प करना—पूरी तरह बदल देना।

कायाकल्प होना—पूरी तरह बदल जाना, कुछ-से-कुछ हो जाना।

काया पलट जाना—बिल्कुल परिवर्तित हो जाना। उ० जब से नौकरी मिली, तुम्हारी काया पलट गई।

काया पलट देना—स्वरूप मे परिवर्तन कर देना। बिल्कुल बदल देना। उ० इस औषधि ने तुम्हारी काया पलट दी।

कारख़ाना फैलाना—सामान अस्त-व्यस्त रखना। उ० क्या हर समय कारख़ाना फैलाये रहते हो। कभी तो ढग से रहा करो।

कारख़ाना लगा रहना—लोगों का जमा-कड़ा लगा रहना। उ० यहाँ दिन भर कारख़ाना लगा रहता है, पढ़ूँ क्या ख़ाक ?

कारगर होना—लह जाना, मुफ़ीद होना। उ० यह दवा कारगर हुई तो ठीक होते देर नहीं लगेगी। हाथ तो हलका पडा था यार की शमशीर का, जख्म पर किस्मत से मेरे कारगर अच्छा हुआ।

कारबंद होना—काम पर लगा रहना, फ़र्ज़ अदा करना।

कारस्तानी करना—शरारत करना। चालाकी करना।

कारूँ का खज़ाना—कुबेर का खज़ाना, बहुत अधिक धन।

कारूरा मिलना—घनिष्ठ मित्रता होना। उ० मुझसे तो किसी का कारूरा ही नही मिलता।

कालकर जाना—मर जाना।

काल काटना—कठिनाई से समय बिताना। उ० जीना क्या है, काल काट रहा हूँ।

काल के गाल में जाना—यमलोक जाना। मर जाना। उ० देखते ही देखते वह काल के गाल में चला गला।

कालक्षेप करना—१. देर करना। उ० जब जाना ही है तो कालक्षेप क्यों करते हो ? २. समय बिताना। उ० जब भगवान ने जन्म दे दिया तो किसी तरह कालक्षेप करना ही है।

कालचक्र में पड़ना—विपत्ति में पड़ना। उ० वह बेचारा दो साल से कालचक्र में पड़ा है, उसकी सहायता करनी चाहिये।

काल पाकर—अवसर देख कर। उ० काल पाकर मैं तुम्हारे घर आऊँगा।

काल सामने नाचना—मरणासन्न होना।

काला करइत—दे० 'काला नाग'।

काला करना—कलंक लगाना, दाग़ लगाना।

काला चोर—चोरों का सरदार, पक्का चोर। उ० यह काला चोर हमारे पड़ोस में कहाँ से आ गया ?

काला नाग—१. साँप की तरह विषधर। उ० हमी में से कुछ लोग काले नाग भी तो हैं, जो रह कर काटते हैं। २. बहुत काला। उ० वह तो काला नाग है।

काला पहाड़—१. भयानक और न कटने योग्य। उ० वियोग के क्षण काले पहाड़ हो जाते हैं। २. बहुत मोटा, बड़ा और काला आदमी। उ० उस काले पहाड़ से कौन शादी करेगा ?

काला बाजार—चोर बाजार।

काला बाल जानना—दे० 'काला बाल समझना'। उ० चोर कब उसका जोर माने है। काला बाल उसको अपना जाने है।

काला बाल समझना—अति क्षुद्र या तुच्छ समझना। उ० यदि सम्मान चाहो तो किसी को भी काला बाल न समझो।

काला भुजंग—कौवे की तरह काला। उ० विषुवतीय प्रदेश के लोग काले भुजंग होते हैं।

काला मुँह करना—१. अपकृत्य करना। उ० काला मुँह करने से मर जाना अच्छा है। २. कलंकित होना। उ० तुम्हारे साथ रह कर मुझे भी काला मुँह करना पड़ा। ३. बुरे का दूर हटना। उ० चलो हटो यहाँ से, अपना मुँह काला करो। ४. झंझट दूर करना। उ० अब तो हिसाब हो गया। मुँह काला भी करो। ५. दूर हटना (मजाक)। उ० अब तो काला मुँह करो। ६. अनुचित संभोग करना। उ० उस लड़की के साथ तुमने काला मुँह किया।

काला मुंह होना—दोष लगना, कलंक लगना। उ० शायद हमने चौथ का चाँद देखा है कि व्यर्थ के लिये मुँह काला हुआ।

कालिख का टीका लगाना—दे० 'कालिख लगाना'।

कालिख के हाथ लगाना–किसी को बदनाम करना। उ० उस पर कालिख के हाथ न लगाओ।

कालिख लगना–अपकीर्ति पाना। बेइज्ज़ती होना। उ० तुम्हारी इसी आदत के कारण कालिख लगी।

कालिख लगाना–१. कलंकित करना। उ० समझ-बूझकर तो कालिख लगाओ, ज़बान मुझे भी है। २. बेइज्ज़ती का कारण होना। उ० इसी काम ने तुम्हारे मुँह में कालिख लगाया।

काली करतूत–कुकर्म।

काली-पीली आँखें करना–गुस्सा करना।

काली माई खेलने लगना–भय से काँपना। उ० कोतवाल के देखते ही चोर काली माई खेलने लगा।

काली हाँडी सिर पर रखना–कलंक लेना। उ० जान-बूझकर क्यों काली हाँडी सिर पर रखते हो? उस बदजात से विवाह करके काली हाँडी सिर पर मत रक्खो।

काले कोसों–अधिक दूर, बहुत दूर। उ० अरे जाना कठिन है, कोई काले कोसों तो नहीं है?

काले कौवे खाना–दीर्घायु होना। उ० वह तो काले कौवे खा चुका है, ज्ञात होता है कि मरेगा ही नहीं।

काले तिल चबाना–१ पराधीन होना। उ० मैंने काले तिल नहीं चबाये हैं कि तुम्हारे लिए एक पैर पर खड़ा रहूँ। २. कष्ट में रहना। उ० मैं तो काले तिल ही चबाया करता हूँ।

काले पानी भेजना–जलावतन करना। आजीवन कारावास का दंड देकर अंडमान द्वीप भेजना।

कावा काटना–१. वक्रगति से चलना। उ० आज के खेल में मैंने खूब कावा काटा। २. आँख की ओट बचा कर भाग जाना। उ० बच्चे कावा काट कर खेलने निकल ही जाते हैं।

काशी करवट लेना–१ काशी में गला कटवा कर मरना। २. कठिन दुःख सहना। उ० क्या इस छोटे से काम के लिये काशी करवट ले रहे हो?

कास में तैरना–दे० 'काँस में तैरना'।

कास में फँसना–दे० 'काँस में फँसना'।

किचकिची बाँधना–१ क्रोध से दाँत पीसना। उ० अपमान की बात सुनकर वह किचकिची बाँधने लगा। २. दाँत पर दाँत दबाना। उ० सुपारी को किचकिची बाँध कर मैं तोड़ सकता हूँ।

कितने पानी में होना–स्थिति कैसी होना, क्या योग्यता होना।

किताब का कीड़ा–१. हर घड़ी किताब लेकर पढ़ने वाला। उ० तुम तो किताब के कीड़े हो। २ केवल लिखी हुई बात जानने वाला। उ० केवल किताब का कीड़ा होना ही अच्छा नहीं है।

किताब चाटना–१. प्रकांड विद्वान् होना। उ० संसार में कम ही लोग किताबें चाट कर बैठे हैं। २. किताब को बिल्कुल कंठस्थ कर जाना। उ० बिना समझे किताब चाटना व्यर्थ है।

किताबी कीड़ा–दे० 'किताब का कीड़ा'।

किताबी चेहरा–अति सुन्दर (कविता में वर्णित सुन्दरता के समान) चेहरा। उ० लता को तो वास्तव में किताबी चेहरा मिला है।

किताबी ज्ञान–ऐसा ज्ञान जो प्रयोग, अनुभव या जीवन से न मिल कर किताबों से मिला हो। उ० उसके पास किताबी ज्ञान है, दुनियावी मामलों को वह क्या जाने?

किधर का चाँद निकलना–असंभव बात होना। उ० किधर का चाँद निकला कि आपने दर्शन दिया।

किधर जाना क्या करना–कठिन समस्याओं में पड़ना। कुछ समझ में न आना। उ० बहन की शादी ठीक नहीं होती, और कर्ज़ भी पड़ा है, किधर जाऊँ क्या करूँ।

किनारा करना या किनाराकशी करना या किनारा कसना–त्याग देना, विमुख होना, दूर हटना, अलग हो जाना। उ० यहाँ से किसी तरह किनारा कसो, नहीं तो ख़ैर नहीं?

किनारा काटना–दगा देना। उ० तुम्हारे ही सहारे हैं, इस समय कहीं किनारा न काट जाना।

किनारे करना–दूर करना। उ० मोहन को किनारे करो, मैं इसे नहीं देखना चाहता।

किनारे न जाना–क़रीब न जाना। उ० मैं तो बुरे काम के किनारे भी नहीं जाता।

किनारे न लगना–पास न आना। उ० काम पड़ेगा तो कोई भी किनारे न लगेगा, और आज खाने के लिये सभी तैयार हैं।

किनारे बैठना–अलग हो जाना। उ० तुम किनारे बैठो, तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं है।

किनारे लगना या लग जाना—समाप्त होना। मर जाना। उ० वह बुड्ढा तो किनारे लगा, अब बुढ़िया भी मर जाती तो जायदाद मिल जाती। किसी तरह यह काम किनारे लग जाता तो अच्छा होता।

किनारे लगाना—समाप्त करना। उ० बिना इस काम को किनारे लगाये कहीं मत जाना।

किनारे होना—१. अवकाश पाना। उ० बहन की शादी करके हम किनारे हो गये। अब घर का सारा भार तुम्हारे ऊपर है। २. पार लगाना, उत्तीर्ण होना। उ० उसका किनारे होना संभव नही ज्ञात होता।

किरकिरा हो जाना—काम ख़राब हो जाना। मज़ा बिगड जाना। उ० तुम्हारे बिना यात्रा का आनन्द किरकिरा हो जायगा।

किराये का टट्टू—भाड़े का आदमी। उ० यदि टट्टू किराये का ही लेना है, तो मित्र से क्यो लिया जाय। कही से भी ले लेंगे।

किराना उतारना—किराया दे देना। उ० आज मैंने सब किराया उतार दिया।

किलकारी मारना—१ बहुत प्रसन्न होना। उ० हमारे ऊपर आफ़त आई है तो आप किलकारी मार रहे हैं। २. बन्दरों या लड़को का खेलना।

क़िला टूटना या टूट जाना—१. कठिन काम आसान होना। उ० अगर तुम थोड़ी भी मेहनत कर दोगे तो क़िला टूट जायगा। २. बहुत कठिन काम हो जाना। उ० तुम्हारे आते ही किला टूट गया।

किल्ली ऐंठना—उपाय करना। उ० मैं ऐसी किल्ली ऐंठूंगा कि तुम सब एक दिन मे ठीक हो जाओगे।

किल्ली घुमाना—दे० 'किल्ली ऐंठना'।

किवाड़ तोड़-तोड़ कर खाना—कष्ट से दिन व्यतीत करना। उ० भाई मेरा हाल न पूछिये, आजकल मैं किवाड़ तोड़-तोड़ कर खा रहा हूँ।

किवाड़ देना—दरवाज़ा बंद करना।

किवाड़ लगाना—दरवाज़ा बंद करना। उ० किवाड़ लगा दो, बाहर दिखाई दे रहा है।

किस का मुंह है—किसकी हिम्मत है।

किस खेत का बथुआ—किसी गिनती में नही, तुच्छ, व्यर्थ। उ० वह किस खेत का बथुआ है? तुम किस खेत के बथुए हो कि दावत में बुलाऊँ?

किस खेत की मूली—दे० 'किस खेत का बथुआ'।

किस गली के—दे० 'किस खेत का बथुआ'।

किस गली के भड़ुवे—दे० 'किस गली के'।

किस घाट लगना—न जाने क्या हाल होना, बुरी हालत होना।

किस बाग़ का बथुआ—दे० 'किस खेत का बथुआ'।

किस बाग़ की मूली—दे० 'किस खेत का बथुआ'।

किस मर्ज़ की दवा—किस काम के लिए। उ० नौकर किस मर्ज़ की दवा है; यदि तुम्हीं को सारा काम करना है?

किस मुंह से—क्या खाकर, किस हैसियत से। उ० किस मुँह से मेरा मकान खरीदोगे?

किसी का चमकना—किसी का दबदबा या रोब होना। उ० आजकल उनकी ख़ूब चमकी हुई है।

किसी की चलना—किसी की इज्ज़त होना। रोब होना। दबदबा होना। उ० आजकल उसकी गाँव में ख़ूब चली हुई है।

किसी की थाप देना—सौगंध देना या खिलाना। उ० मै ईश्वर की थाप देता हूँ, बताओ क्या बात थी?

किसी की धूल उड़ाना—किसी की बदनामी करना। उ० उसकी धूल मत उड़ाओ। बेचारा बड़ा सीधा आदमी है।

किसी के नीचे बैठना—किसीं को विना विवाह किए पति रूप में स्वीकार करना।

किसी के बल पर कूदना—किसी के सहारे की आशा पर बढ-बढ कर बातें करना। उ० बेकार उनके बल पर कूद रहे हों। उनसे तुम्हारा कुछ भी भला नहीं हो सकता।

किसी के सिर होना—१. दे० 'पीछे पड़ना'। २. झगड़ा कर बैठना। उ० वह तो सीधा है, उसके सिर न हो। ३. परीशान करना। उ० हमारे सिर न हो, चले जाओ।

किसी के हक़ में काँटे बोना—किसी की बुराई करना या बुराई का सामना करना। उ० किसी के हक़ में काँटे बोने से तुम्हारा क्या लाभ होता है?

किसी तरफ़ होना—किसी की ओर होना। उ० मैं इस झगड़े में किसी तरफ़ होना पसन्द नहीं करता।

किसी पर ज़हर खाना–किसी के कारण आत्म-हत्या पर उतारू होना। उ० किसी पर ज़हर खाना सरासर मूर्खता है। प्राण अपना जायगा, उसका क्या होगा ?

किसी पर धब्बा रखना–किसी की बदनामी करना, किसी पर दोष लगाना। उ० किसी की इज्ज़त खराब करना। उ० वे तो चुप रह गए, पर मुझ पर धब्बा रक्खोगे तो तुम्हारी खैर नहीं।

किस्तान होना–विधर्मी होना। उ० उसका बेटा विलायत जाकर किस्तान हो गया। तुम तो किस्तान हो, मेरा खाना न छूना।

क़िस्मत उलटना–अभाग्य आना, कु-अवसर आना, काम में सफलता न मिलना। उ० क्या करूँ, मेरी क़िस्मत ही उलट गई, नही तो सब को दिखा दिये होता।

क़िस्मत का धनी–भाग्य वाला।

क़िस्मत का लिखा पूरा होना–भाग्य का लिखा (भला या बुरा) मिलना। उ० आपकी क़िस्मत का लिखा पूरा हुआ, इसमें किसी का दोष न दीजिये।

क़िस्मत खुलना या चमकना–१. नाम फैलना। उ० आपकी क़िस्मत चमक गई, अब आपका क्या पूछना है ? २. दे० 'क़िस्मत जागना'।

किस्मत जागना–सुअवसर आना, भाग्य खुलना। उ० अब आपकी किस्मत जाग गई, मौज कीजिये।

क़िस्मत पलटना–भाग्य फिरना। भाग्य का अच्छे से बुरा या बुरे से अच्छा होना। उ० भाई क़िस्मत पलटने मे किसी का दोष नही है। वह तो पूर्णत: ईश्वराधीन है।

क़िस्मत फिरना–दे० 'क़िस्मत पलटना'।

क़िस्मत फूटना–बुरा समय आना। अभागा होना, उ० भाई मेरी क़िस्मत ही फूट गई, तो अब सब लोग क्यों न हँसेगे।

क़िस्मत बिगड़ना–दे० 'क़िस्मत उलटना'।

क़िस्मत लड़ना या अनुकूल होना–भाग्य खुलना। उ० जिसकी क़िस्मत लड़ेगी, वही उस पद पर होगा। क़िस्मत लड़ गई तो उस पूरी जायदाद का मालिक मैं होऊँगा ?

क़िस्मत सो जाना–दुर्भाग्य होना।

क़िस्सा उठाना–१. झगड़ा खड़ा करना। उ० क्यों बेकार का क़िस्सा उठा रहे हो। तुम कमज़ोर हो, मार खा जाओगे। २. कोई लम्बी बात शुरू करना। उ० फिर तुमने क़िस्सा उठाया। अरे! चुप भी रहो।

क़िस्सा कोताह करना–संक्षेप में कहना। उ० भई क़िस्सा कोताह करो, मुझे इतनी फ़ुरसत नहीं है।

क़िस्सा खड़ा करना–दे० 'क़िस्सा उठाना'।

क़िस्सा खतम करना–१. झगड़ा समाप्त करना। उ० जाने भी दो, क़िस्सा खतम करो, जो हुआ सो हुआ। २. मार डालना। उ० पहले उस बदमाश का क़िस्सा खतम करो, फिर तो काम बना-बनाया है।

क़िस्सा खतम होना–१. झगड़ा मिटना। उ० भाई क़िस्सा खतम हो गया, अब आप लोग मेल से रहिये। २. मर जाना। आज उस बेचारे का भी किस्सा खतम हो गया। ३. किसी भी चीज़ या काम का समाप्त होना।

क़िस्सा चुकना–दे० 'क़िस्सा खतम होना'।

क़िस्सा चुकाना–दे० 'क़िस्सा क़तम करना'।

क़िस्सा तमाम करना–दे० 'क़िस्सा खतम करना'।

क़िस्सा तमाम होना–दे० 'क़िस्सा खतम होना''।

क़िस्सा पाक करना–दे० 'क़िस्सा खतम करना'।

क़िस्सा पाक होना–दे० 'क़िस्सा खतम होना'।

क़िस्सा मोल लेना–झगड़ा सिर पर लेना। उ० भइया, काहे को क़िस्सा मोल ले रहे हो, इससे तुम्हारा क्या लाभ होगा ?

कीचड़ उछालना–बदनाम करना।

कीचड़ में पड़ना–दु:ख में पड़ना। उ० संसार में वही मित्र है, जो कीचड़ मे पड़ने पर सहायता करे।

कीचड़ में फँसना–दे० 'कीचड़ में पड़ना'।

कीड़े काटना–१. जी उकताना। उ० यार पाँच ही मिनट में तुम्हें कीड़े काटने लगे, आखिर कहाँ जाना है ? २. शरारत करना, शरारत करने की इच्छा होना। उ० फिर तुम्हें कीड़े काटने लगे।

कीड़े पड़ना–१. बुरा फल मिलना। उ० अगर नीच कर्म करोगे, तो मरते वक़्त कीड़े पड़ेंगे। २. सड़ जाना।

कीड़ा कुलबुलाना–दे० 'कीड़े काटना'।

क़ीमत ठहराना–दाम ठीक करना। उ० पहले क़ीमत ठहरा लो, फिर रुपये देना।

कील-कांटे से दुरुस्त होना—खूब तैयार होना। उ० कील-कांटे से दुरुस्त होकर वहाँ जाना। शायद लड़ाई-झगड़ा भी करना पड़े।

कील घुमाना—मोड़ना, प्रेरित करना।

कुंजरो नरो—दुविधा या संदेह। [द्रोण को मारने के लिये युधिष्ठिर द्वारा कहे गये वाक्य पर यह आधारित है।] उ० स्वारथ औ परमारथ हूँ को नहिं कुंजरो नरो। सुनियत सेतु पयोधि पषाननि करिकिषि कटक तरो।

कुंजी हाथ में होना—वश में होना। उ० साहब की कुंजी तो मेरे हाथ मे ही है, तुम बेखटके रहो।

कुंडा ले आना—१. सौगात ले आना। २. धन ले आना। उ० कुडा लेकर नहीं आए हो कि खाना दूं।

कुंडे जैसा मुंह फुलाना—बहुत नाराज़ होना। उ० छोटी बात पर क्या कुंडे जैसा मुंह फुला रहे हैं।

कुंदन-सा चमकना—सोने की तरह चमकना। उ० भाई सचमुच वह बड़ा भारी महात्मा है, उसका शरीर कुंदन-सा दमकता है।

कुआं खोदना—१. कठिन परिश्रम करके जीवन व्यतीत करना। उ० भाई मेरा आप क्या लिए हैं, मैं कुआं खोद कर अपना जीवन बिताता हूँ। २. दूसरे को गिराने के लिए कुछ करना। उ० मैंने आपका क्या बिगाडा है कि मेरे लिए कुआं खोद रहे हैं।

कुआं चलाना—खेत को कुएँ के पानी से सीचना। उ० इस साल सबको कुआं चलाना पड़ेगा। ताल-पोखरों का कोई आसरा नही।

कुआं झंकाना—दुःख देना, परेशान करना। उ० मुझे क्यों कुआं झंकाते हो? मुझ ग़रीब को कष्ट देकर क्या पाओगे?

कुआं झांकना—किसी काम के लिये इधर-उधर भाग-दौड़ करना। उ० मुझे इसके लिए बहुत कुएँ झांकने पड़े हैं?

कुआं-पोखर ढूंढ़ना—बहुत खोजना। उ० तुम कहाँ थे? सुबह से कुआं-पोखर ढूंढ़ रहा था।

कुएँ का मेढक या बेंग होना—बाहर भीतर न आना-जाना।

कुएँ की मिट्टी कुएँ में डालना—जहाँ की कमाई हो, वहीं खतम होना। उ० मित्र न पूछिये, ऐसे फेर में पड़ा हूँ कि कुएँ की मिट्टी कुएँ में लग जाती है। इस खेती से एक पैसे का भी लाभ नहीं है।

कुएँ में गिरना—कष्ट में फँसना। उ० भाई तुम जान-बूझ कर कुएँ में गिर रहे हो।

कुएँ में फेंकना या ढकेलना—१. जाने देना। उ० भाई इस समय इस बात को कुएँ में फेंको, फिर बाद में देखा जायगा। २. बर्बाद करना। ३. क्यों इसे कुएँ में फेंकते हो?

कुएँ में डालना—जन्म बेकार करना। उ० उस वर से विवाह कर लड़की को कुएँ में न डालो। उसका नाम उस स्कूल में लिखा कर कुएँ में न डालो।

कुएँ में बांस डालना—बहुत तलाश करना। उ० कुएँ में बाँस डाला, फिर भी उसका पता न चला, न चला।

कुएँ में भाँग पड़ना—सभी लोगो का नशे में चूर होना, सबका पागल या मूर्ख होना। उ० तुम मूर्ख और तुम्हारे तीनों साथी मूर्ख। ऐसा लग रहा है कि तुम्हारे यहाँ कुएँ में भाँग पड़ी है।

कुएँ में से बोलना—बहुत धीरे-धीरे बोलना। साफ़ न बोलना। उ० क्या कुएँ मे से बोल रहे हो? ज़रा ज़ोर से बोलो कि सब लोग सुन सकें।

कुएँ से प्यासे आना—जहाँ किसी चीज़ की आशा हो, वहाँ से भी निराश आना। उ० ऐसे बड़े आदमी के यहाँ से निराश लौटना कुएँ से प्यासे आना है।

कुछ ऐसा-वैसा—१. मामूली, ओछा। उसे कुछ ऐसा-वैसा न समझिये। बिहार का सबसे बड़ा लेखक है। २. गड़बड। उ० सावधान रहना वह कुछ ऐसा-वैसा ज़रूर करेगा।

कुछ कहना—भला-बुरा कहना। उ० तुम ऐसा काम करते हो, जिसमें कुछ कहना ही पड़े।

कुछ का कुछ—उलटा। उ० आप तो कुछ का कुछ समझ जाते है।

कुछ न गाँठना या गिनना या समझना—तुच्छ समझना।

कुछ न चलना—१ वश न चलना। उ० बहुत कोशिश की, पर इस झगड़े में मेरा कुछ न चला। २. कोई उपाय न लगना। उ० कुछ भी न चलने की उम्मीद हो तो मैं लौट जाऊँ।

कुछ लगाना–अपने को बड़ा समझना। उ० न मालूम किस बात पर वह अपने को कुछ लगाता है।

कुछ सुनना–भला-बुरा या गाली सुनना। उ० कुछ सुन के ही हटोगे क्या ?

कुछ से कुछ हो जाना–बहुत बड़ा परिवर्तन हो जाना। उ० उस मास्टर ने बच्चे को दो ही महीने पढ़ाया, पर वह बच्चा कुछ से कुछ हो गया।

कुछ होके रहना–१ किसी लायक़ हो जाना। उ० परिश्रम कर रहा है तो कुछ होके रहेगा। २. विशेष बात। उ० इनका झगड़ा यों ही चलता रहा, तो कुछ होके रहेगा।

कुछ हो रहना–दे० 'कुछ होके रहना'।

कुट्टी करना–दोस्ती ख़तम करना। उ० कल मैंने उनसे कुट्टी कर ली।

कुठला होना–बहुत मोटा होना। उ० आजकल आप हराम का खाकर कुठला हो रहे है।

कुठाँव मारना–१. शरीर के नाज़ुक जगहों पर मारना। उ० तुम खेल में लड़कों को कुठाँव मार दिया करते हो, यह ठीक नहीं है। २. निर्जन मे या बुरी जगह मारना। उ० तुम्हे तो ऐसे कुठाँव मारना चाहिए कि कोई सहायता भी न करे।

कुठाराघात करना–आघात करना।

कुत्ता काटना–१. बेवकूफ़ी करना। उ० भाई आज हमे कुत्ता काट दिये था, जो यहाँ चला आया। २. पागल होना।

कुत्ता होना–१ वफ़ादार होना। २. घर-घर का जूठन चाटने वाला होना। ३ गंदा रहने वाला होना।

कुत्ते का दिमाग़ होना–बहुत बक-बक करना। हर समय बोलना। उ० मालूम होता है, आपका कुत्ते का दिमाग़ हो गया है, जरा शांत तो रहिये।

कुत्ते का भेजा होना–दे० 'कुत्ते का दिमाग़ होना'।

कुत्ते की तरह चढ़ बैठना–गुर्रा कर या बहुत नाराज़ होकर टूट पड़ना। उ० वह तो मुझे देखते ही कुत्ते की तरह चढ़ बैठा और मारने लगा। मैं उसे समझाता क्या ?

कुत्ते की दुम–अपना कटु स्वभाव न छोड़ने वाला। उ० तुम कुत्ते की दुम हो। लाख समझाने पर भी नही मान सकते।

कुत्ते या कुत्ते-बिल्ली की मौत मरना–बुरी मौत मरना। बहुत कष्ट सहकर मरना। उ० अगर इसी तरह पाप करोगे, तो कुत्ते की मौत मरोगे।

कुत्ते-बिल्ली भी न पूछना–बिलकुल बेकार होना। उ० भगवान करे, तुम्हें कुत्ते-बिल्ली भी न पूछें।

कुप्पा-सा मुँह करना–क्रोध करना। नाराज़ होना। उ० मैंने कौन ऐसी बात कह दी जो आप कुप्पा-सा मुँह करके बैठे हैं।

कुप्पा होना या हो जाना–१ बहुत खुश होना। उ० जिस समय मोहन अपना परीक्षाफल सुनेगा, वह फूल कर कुप्पा हो जायेगा। २. फूल जाना। उसका गाल फोड़े के कारण कुप्पा हो गया है। ३ नाराज़ होकर मुँह फुलाना। उ० बस आप तो मजाक में भी कुप्पा हो जाते है। ४. बहुत मोटा हो जाना।

कुप्पे की तरह मुँह करना–दे० 'मुँह फुलाना'।

कुफेर–बुरे दिन। उ० अभी कुफेर है। समझ-बूझकर काम करो।

कुफ्र बकना–बेहूदी बाते करना। उ० बड़ों के सामने कुफ्र बकते हो, शर्म नही आती ?

कुम्हड़बतिया होना–निर्बल होना।

कुम्हड़े की बतिया–कमज़ोर मनुष्य। उ० यहाँ कोई कुम्हड़े की बतिया नही है, जो आपकी गर्जना सुन कर डर जाय।

कुरान उठाना–मुसलमानो का क़सम खाना। उ० हनीफ, तुम सब के सामने क़ुरान उठा लो, बस मैं मान लूँगा।

कुर्सी तोड़ना–व्यर्थ बैठे रहना।

कुर्सी देना–आदर देना। उ० आपका क्या पूछना है, आपको तो हर जगह कुर्सी दी जाती है।

कुल का दीपक या लाल अथवा कुल की नाक–कुल की मान-मर्यादा बढ़ाने वाला।

कुल गुर गोबर होना–दे० 'कुल गुर माटी होना'।

कुल गुर माटी होना या हो जाना–सब काम खराब होना। उ० तुम्हारे आ जाने से

काम बन गया, नहीं तो कुल गुर माटी हो गया होता।

कुल बखानना–१. वंश के पूर्वजों के नाम लेकर गाली देना। उ० भाई इसी कुल के तुम भी हो, कम से कम तुम्हें कुल नहीं बखानना चाहिये। २. कुल के यश का वर्णन करना। उ० भाट लोग कविता में कुल बखानते हैं।

कुलाँच भरना–दे० 'कुलाँच मारना'।

कुलाँच मारना–१. बड़ी पहुँच होना। उ० उसका आजकल क्या पूछना है, वह तो बड़े-बड़े आदमियों के यहाँ कुलाँच मार रहा है। २. चौकड़ी मारना। उ० ख़रगोश कुलाँच मारते हुए निकल गया।

कुलाँच लेना–दे० 'कुलाँच मारना'।

कुल्हड़ में गुड़ पकाना–दे० 'कुल्हिया मे गुड़ पकाना'।

कुल्हिया में गुड़ फोड़ना–१. किसी कार्य को इस प्रकार करना, जिससे किसी को ख़बर तक न हो। उ० सचमुच तुमने उस विधवा से शादी कर ली ? वाह, किसी को पता तक न चला। इसी को कुल्हिया मे गुड़ पकाना कहते है। २. छोटे आधार पर बहुत बडा काम करना। ३. थोड़े आदमियो से बड़ा काम करवाना।

कुल्हिया में गुड़ फोड़ना–दे० 'कुल्हिया में गुड़ पकाना'।

कुल्हिया-सा–बहुत छोटा। मुंह तो कुल्हिया-सा और ज़बान गज भर की।

कुश्ती खाना–'कुश्ती में हार जाना'। पटका जाना। उ० तुमको इतना खिलाया, फिर भी तुम आज कुश्ती खा गये। मेरा तो माथा जैसे शर्म से गड़ गया।

कुश्ती मारना–कुश्ती में जीतना। उ० तुम ने तो आज बहुत बड़े पहलवान से कुश्ती मारी है।

कुहराम पड़ना–दे० 'कुहराम मचना'।

कुहराम मचना–रोना-पीटना। रोना-पीटना पड़ना। उ० लड़के के मरते ही सारे घर में कुहराम मच गया।

कूच करना या कर देना या बोलना–चल देना। उ० पुलिस को देखते ही चोरों ने यहाँ से कूच कर दिया।

कूंची फेरना–१. सफ़ेदी करना। उ० अगर मकान की मरम्मत यहीं कर रहे हो, तो कम से कम कूंची तो फेर दो। २. ख़राब कर देना। उ० तुमने सारे किये-कराये पर कूंची फेर दी।

कुएँ में डालना–१ सत्यानाश करना। २. दूर हटाना। उ० ऐसे आदमी को कुएँ में डालो।

कुएँ में बोलना–अस्पष्ट कहना। उ० क्या कुएँ में बोलते हो, ज़रा ज़ोर से बोलो।

कूट-कूट कर भरना–ठसाठस भरना। अच्छी तरह भरना। उ० आप राम को सीधा समझते है, पर उसमे शरारत कूट-कूट कर भरी है।

कूट-कूट कर भरा होना–बहुत अधिक होना। उ० अहं तो उसमें कूट-कूट कर भरा है।

कूट-पीस कर पेट चलाना–दे० 'कूट पीस कर पेट पालना'।

कूट पीस कर पेट पालना–किसी तरह कडी मेहनत करके जीवन निर्वाह करना। उ० किसी तरह कूट-पीस कर पेट पाल रही हूँ, अब कौन अपना रक्खा है जो खाना दे।

कूट-पीस कर पेट पोसना–दे० 'कूट पीस कर पेट पालना'।

कूड़ा-करकट समझना–१. बेकार समझना। उ० मेरी इन पुस्तको को कूड़ा-करकट मत समझो। २. कुछ न गिनना, तुच्छ समझना। उ० आपको मैं कूड़ा-करकट समझता हूँ।

कूम्हल देना–सेंध देना। उ० आज रात चोरो ने मेरे मकान मे कूम्हल देकर सब सामान निकाल लिया।

कूला मटकाना–नाज़-नख़रा करना। उ० क्या रंडियों की तरह कूला मटका रहे हो ?

कैंचुल बदलना–१. पोशाक़ बदलना। २. रूप बदलना। उ० तुम तो रोज़ ही केंचुल बदलते हो। ३. सिद्धांत बदलना। उ० उसे कौन अपनी पार्टी में लेगा, वह तो रोज़ ही केंचुल बदलता है।

केंचुली बदलना–दे० 'केंचुल बदलना'।

केले के लिए ठीकरे तेज होना–निर्बल के लिए सभी का बलवान होना।

कैंची करना–काटना, कतरना। उ० गाड़ी में मेरी जेब किसी ने कैंची कर ली। मेरा बाल ज़रा कैंची कर दो।

कैंची काटना–१. वचन देकर इन्कार कर जाना। उ० समय पर कैंची काट जाना ठीक नहीं है, नहीं करना हो तो पहले ही कह दो। २. नजर बचाना, सामने न आना। उ० आज-कल रोज़ आप कैंची काट कर निकल जाते हैं, कुछ रुष्ट हैं क्या ?

कैंची की तरह ज़बान चलाना–बहुत तेज़ ज़बान। उ० क्या कैंची की तरह ज़बान चला रहे हो, चुप रहो।

कैंची चलाना–षड्यंत्र करना। उ० दल में तुम्हारे खिलाफ़ कैंची चलाई जा रही है। बच कर रहना।

कैंची लगाना–१. छाँटना। उ० कैंची लगाकर मेरे उपवन को ठीक कर दो। २. एक के ऊपर एक कैंची की तरह तिरछी रखना। उ० लकड़ियों की कैंची लगाओ, तो अपने आप जलेंगी।

क़ैद काटना–जेलखाना में अपनी मियाद पूरी करना। उ० मैंने २ वर्ष की क़ैद काटी है।

क़ैद भरना–दे० 'क़ैद काटना'।

क़ैद लगाना–१. शर्त लगाना। उ० काम सीधे करवाना चाहो तो मै कर दूं। यह क़ैद लगाना मुझे पसंद नहीं। आप एक क़ैद लगा दें। उसके बाहर आना मैं पसंद नहीं करूँगा।

कैफ़ियत तलब करना–सबब पूछना। उ० बात-बात में कैफ़ियत तलब करना मुझेद पसंद नहीं। या तो यह आदत छोड़िये या अपनी नौकरी लीजिये।

कोई दकीक़ा बाक़ी न रखना–दे० 'दकीक़ा बाक़ी न रखना'।

कोई दम का मेहमान होना–थोड़े समय में मर जाने वाला। उ० उस वेचारे का क्या है, वह तो कोई दम का मेहमान है।

कोई न कोई–यह न सही वही। उ० कोई न कोई आज अवश्य आयेगा। आप जमा खातिर रहें।

कोख उजड़ना–लड़का मर जाना। उ० बेचारी बुढ़िया की आज कोख उजड़ गई, अब वह कैसे रहेगी ?

कोख खुलना–१. बहुत दिन बाद संतान का पैदा होना। उ० बहुत दिनों के बाद उसकी कोख अब खुली है। २. प्रथम बार संतान होना। उ० भगवान करे, बहू की कोख जल्दी खुले।

कोख ठंडी होना–पुत्र से सुख मिलना। जिसकी कोख ठंडी हो, उसे और क्या चाहिये ?

कोख मारी जाना–सन्तान न होना। उ० उसकी कोख मारी गई है। चालीस वर्ष की हुई, आज तक उसे एक भी बच्चा नही हुआ।

कोठा बिगड़ना–१. बदहज़मी होना। उ० दो दिन से मेरा कोठा बिगड़ गया है। २. गर्भाशय का खराब होना। उ० कोठा बिगड़ गया है, तो झाड़-फूंक करने से थोड़े संतान होगी।

कोठा साफ़ होना–१. मन मे कुछ बुरा भाव न होना। उ० महात्माओं का कोठा साफ़ होता है। आपकी ओर से मेरा कोठा बिल्कुल साफ़ है, आप विश्वास रक्खे। २. पेट साफ़ होना। उ० कोई ऐसी दवा दे दो कि कोठा साफ़ हो जाय।

कोठी करना–रुपया लेने-देने का काम शुरू करना। उ० कोठी करने मे अब लाभ नही रहा।

कोठी खोलना–दे० 'कोठी करना'।

कोठी चलना–महाजनी कारबार से होना। उ० आपको क्या चिन्ता है, जब कि शहर मे दो-दो कोठियाँ चल रही हैं।

कोठी बैठना–दिवाला होना। उ० इस साल तो उनकी कोठी बैठ जायगी।

कोठे पर बैठना–रंडी बनना। उ० आजकल की हिन्दू विधवाएँ घर-बार छोड़ कर कोठे पर बैठ जाने के लिये समाज द्वारा मजबूर की की जाती हैं।

कोढ़ की खाज–एक कष्ट के बीच में आ जाने वाला दूसरा कष्ट। उ० एक तो आँखो में यों ही धुंध की शिकायत थी, दूसरे रतौंधी भी होने लगी। भगवान को मेरे ही लिए यह कोढ़ की खाज भेजनी थी !

कोढ़ में खाज–दे० 'कोढ़ की खाज'।

कोढ़ी होना–आलसी या सुस्त होना। उ० तुम तो बड़े कोढ़ी हो। ये कपड़े साफ़ क्यों नही कर डालते ?

कोदो दरना या दलना—छुद्र और बहुत परिश्रम का काम करना। उ० तुम कोदो दरो, मुझसे यह न होगा।

कोदो देकर पढ़ना—बिना कुछ खर्च किए तालीम पाना। उ० यार तुम्हें तो कुछ आता ही नही है। मालूम होता है कि कोदो देकर पढे हो।

कोदो-सँवा समझना—तुच्छ समझना। उ० आप इन रोटियों को कोदो-सँवा समझ लें, पर मेरे लिए तो ये ही मोहनभोग हैं।

कोयले पर छाप और मुहरों पर लूट होना—बड़े-बड़े खर्चों को न रोकना और छोटे खर्च मे कंजूसी करना। उ० नये राजा भी कितने मूर्ख हैं, उनके यहाँ तो कोयले पर छाप और मुहरो पर लूट हो रही है।

कोयले की दलाली में हाथ काले करना—धर्म मे बदनामी ही मोल लेना।

कोयले पर छाप पड़ना—दे० 'कोयले पर छाप लगना'।

कोयले पर मोहर लगना—दे० 'कोयले पर छाप लगना'।

कोयले पर छाप लगना—मामूली खर्च मे कजूसी करना। उ० बड़े आदमियो के बडे-बड़े खर्च तो कम नही होते हैं और कोयले पर छाप लगती है।

कोर दबना—दबाव या वश मे होना। उ० भाई साहब, मेरी कोर न दबी होती तो आपको अभी ठीक कर देता।

कोरम कोर चवाल सौ—एकदम बेवकूफ़। उ० इनको भी मैं कोरम कोर चवाल सौ ही समझता हूँ।

कोरा जवाब—स्पष्ट नाही। साफ़ इन्कार। उ० भाई अगर न देना हो तो कोरा जवाब दे दो, मुझे लल्लो-चप्पो अच्छी नहीं लगती।

कोरा होना—अनुभवहीन होना।

कोरे उस्तरे से मूँड़ना—१. बेवकूफ़ बना कर अपना काम निकालना। उ० मित्र तुम ऐसे चतुर हो गये हो कि सभी को कोरे उस्तरे से मूँड़ रहे हो। २. लूटना। ३. कष्ट देना।

कोल्हू काट कर मुँगरा बनाना—आवश्यक वस्तु को नष्ट करके अनावश्यक वस्तु का निर्माण करना।

कोल्हू का बैल—१. बहुत मेहनती। उ० मोहन कोल्हू का बैल है, जिस काम में लग जाता है, उसे पूरा करके ही छोड़ता है। २. एक ही लकीर पर सर्वदा चलने वाला। उ० तुम तो कोल्हू के बैल हो। आफ़िस से घर और घर से आफ़िस। और किसी से तुम्हें क्या मतलब ?

कोल्हू ढकेलना—१. बहुत आवश्यक काम करना। उ० क्या कोल्हू ढकेल रहे थे कि सवेरे नहीं आये ? २. बहुत परिश्रम का काम करना। उ० कोल्हू नही ढकेलना है कि डर रहे हो।

कोल्हू में डाल कर पेरना—१. बहुत कष्ट देकर मारना। उ० तुम्हारे ऐसे पापी को कोल्हू में डाल कर पेरने में तनिक भी दोष नही। २. बहुत कष्ट देना।

कोश देखना—कोश में अर्थ आदि देखना। उ० ज़रा कोश तो देखो, मुझे इस शब्द का अर्थ कुछ और ही मालूम हो रहा है।

कोसों दूर रहना—क़रीब न जाना। दूर रहना। उ० बुरे आदमियो से मैं कोसों दूर रहना पसंद करता हूँ।

कौआ बोलना—सबेरा होना।

कौड़ी का—१ बेकार। उ० वह तो कौड़ी का आदमी है। २. बेइज्ज़त, गिरा हुआ।

कौड़ी का कर डालना—१. बरबाद कर देना। उ० केवल आवारापंती मे तुमने अपनी तन्दुरुस्ती कौड़ी की कर डाली। २. इज्ज़त बिगाड़ डालना। उ० तुम अपने को लाट का दादा समझते हो। अगले चुनाव मे तुम्हें कौड़ी का न कर डाला तो कहना।

कौड़ी का बल न पड़ना—हिसाब का एकदम ठीक-ठीक होना। उ० मेरा मुनीम बड़ा होशियार है। कौड़ी का भी बल नहीं पड़ने पाता है।

कौड़ी काम का नहीं—बेकार, कुछ भी काम का नही। उ० इतना रुपया भी लगाया और एक भी चीज़ कौड़ी काम की नही है। यही तो तुम्हारी अक्ल है।

कौड़ी के तीन-तीन होना—१. कुछ क़दर न होना। उ० आजकल तो ग्रेजुएट कौड़ी के तीन-तीन हो रहे है ? २. बहुत सस्ता होना। उ० अब तो उसके चित्र कौड़ी के तीन-तीन हो रहे हैं।

कौड़ी को न पूछना—१. एकदम बेकार समझना। उ० ऐसी खराब मिठाई बनारस में कोई कौड़ी को भी न पूछेगा। २. मुफ्त में भी न लेगा। उ० इसे तो कोई कौड़ी को भी न पूछेगा।

कौड़ी कोस दौड़ना—थोड़े से लाभ या पैसे के लिये कड़ी मेहनत करना। उ० मोहन की दो माह से ऐसी हालत हो गई है कि आप उसे कौड़ी कोस दौड़ा सकते हैं।

कौड़ी-कौड़ी अदा करना—कर्ज़ का पैसा-पैसा चुका देना। उ० भाई अगर मैं दो वर्ष भी जी गया तो कौड़ी-कौड़ी अदा कर दूँगा, तुम ज़रा भी परीशान न हो ?

कौड़ी-कौड़ी को मुहताज होना—पास में रुपया-पैसा बिलकुल न होना। उ० आजकल उसकी हालत बड़ी ख़राब है, बेचारा कौड़ी-कौड़ी को मुहताज़ है।

कौड़ी-कौड़ी चुकाना—दे० 'कौड़ी-कौड़ी अदा करना'।

कौड़ी-कौड़ी जोड़ना—थोड़ा-थोड़ा करके रुपये इकट्ठा करना। उ० बाप ने कौड़ी-कौडी जोड़ा था, तुमने सब फूंक दिया।

कौड़ी-कौड़ी भरना—दे० 'कौडी-कौड़ी अदा करना'।

कौड़ी-कौड़ी भरपाई कर लेना—थोड़ा भी बाक़ी न रखना। पूरा लेना। उ० मैं आज तुमसे कौड़ी-कौड़ी भरपाई कर लूंगा। जहाँ से भी हो, तुमको देना ही पड़ेगा।

कौड़ी-कौड़ी लेना—पूरा लेना। हिसाब मे कौडी-कौड़ी तक ले लेना। उ० भाई, आज मै अपनी कौड़ी-कौड़ी ले लूंगी। मोटी मसल है 'खायें-पिएँ एक में हिसाब करे अलगाँ'।

कौड़ी ग़लत पड़ना—बात या उपाय का उलटा असर होना।

कौड़ी पास न होना—पास मे कुछ पैसा न होना। उ० भाई, आज तो कौड़ी भी पास में नही है, कहाँ से दूं ?

कौड़ी फिरना—जूए मे दाँव उलटना। उ० अब कौड़ी फिरने लगी है, चलना चाहिये।

कौड़ी भर का—बहुत छोटा। उ० यह कौड़ी भर का लड़का, कितनी बातें करता है !

कौन-सा मुंह लेकर—किस हिम्मत से, कैसे ?

कौन होना—अनधिकारी होना। उ० तुम कौन हो, जो मेरी चीज़ लेते हो ? २. कोई नाता-रिश्ता न होना। उ० वह मेरा कौन है, जो निमंत्रण दूं।

क़ौल का धनी—दे० 'क़ौल का पूरा'।

क़ौल का पक्का—दे० 'क़ौल का पूरा'।

क़ौल का पूरा—जो कहे उसे पूरा करने वाला। उ० मेरे पिता जी क़ौल के पूरे थे। अंत में इसी के पीछे उन्हें प्राण से भी हाथ धोना पड़ा।

क़ौल पर जमना—कही बात पर जमा या अड़ा रहना। उ० मैं क़ौल पर जमा रहूँगा, चाहे जान भले ही चली जाय।

कौले लगाना—किसी बात को सुनने के लिए चुपचाप आड़ मे खड़ा रहना। उ० चुपचाप जाकर कौले लगाओ। वे सब कुछ षड्यंत्र अवश्य रच रहे है।

कौवा-गुहार में पड़ना—बेकार के झगड़ा-फसाद मे पडना। उ० इस कौवा-गुहार में पड़ने से मुझे क्या लाभ होगा ?

कौवा-गुहार में फँसना—दे० 'कौवा-गुहार में पड़ना'।

कौवा फँसाना—चालाक को चकमा देना। उ० बेटा, तुमने मुझे कितनी चोटें दीं, पर अबकी मैंने भी कौवा फँसा ही लिया।

कौवारोर—बहुत बक-बक। उ० कौवारोर मत करो।

कौवा होना—१. मक्क़ार और चालाक होना। २. भला-बुरा सब कुछ खाने वाला होना।

कौवे उड़ाना—बेकार काम करना। उ० तुम दिन भर कौवे उड़ाया करते हो, आख़िर क्या चाहते हो ? अगले महीने से मै खाना-कपड़ा बंद कर दूँगा।

कौवे की नज़र रखना—बहुत तेज़ नज़र रखना। उ० कौवे की नज़र रक्खो, नही तो नौकर चोरी कर लेंगे।

कौवे खाना—दे० 'काले कौवे खाना'।

क्या—नही, कुछ नहीं। उ० तुम क्या खाते हो ? [सभी तरह के वाक्यो मे 'क्या' रखकर नही का अर्थ प्रकट करते है।]

क्या उखाड़ना—कुछ न कर सकना। उ० आप मेरे ऊपर नाराज़ होकर क्या उखाड़ लेंगे ?

क्या-क्या न करना—सब कुछ करना। उ० भाई, तुमने हमारे लिये क्या-क्या न किया ? इसका बदला तुम्हें मैं सात जन्म में भी नही चुका सकता।

क्या खाकर—किस हिम्मत से, किस बल पर। उ० मुझसे तुम क्या खाकर लड़ोगे। एक मिनट में हड्डियाँ चूर-चूर कर दूंगा।

क्या खूब–बहुत अच्छा। उ० उसकी कविता सुनकर लोग 'क्या खूब' कहने लगे।

क्या ग़म है–कोई परवाह नहीं है। उ० अरे तुम जाते हो तो जाओ, यहाँ क्या ग़म है?

क्या जानना–कुछ नही समझना। उ० मूर्ख, तुम क्या जानो इन बातों को? इसे तो विद्वान लोग ही समझ सकते है।

क्या जाना–तनिक भी नुक़सान न होना। कुछ न बिगड़ना। उ० मेरा क्या जाता है जो मै उनके झगड़े मे पड़ूँ।

क्या पड़ना–तनिक भी आवश्यकता न होना। उ० मुझे क्या पड़ी है जो इनके बीच मे बोलूँ?

क्या मुँह दिखाओगे–क्या उत्तर दोगे। उ० सब रुपया नष्ट कर दिया, आखिर घर वालों को क्या मुँह दिखाओगे?

क्या समझना–कुछ न समझना। उ० वह अपने घर का कुछ भी हो, मैं उसे क्या समझता हूँ?

क्या होना–कुछ न होना। उ० गाली ही दे दो तो क्या हुआ, कौन वे लाट साहब है?

क्यों नहीं–१. कैसे नहीं। उ० आखिर यह तुमसे क्यों नही होगा? २. निश्चितता का उत्तर देना। उ० यह करोगे? क्यों नहीं। ३. वही हो। उ० क्यों नही; जो तुम कहते हो, वह ज़रूर सत्य होगा। ४. ज़रूर। उ० क्यों नहीं, तुम सभी कुछ कर सकते हो। (व्यंग्य) क्यों नही, वह अच्छा गाता है?

क्रम-क्रम करके–१. धीरे-धीरे। उ० क्रम-क्रम करके कठिन काम भी आसानी से हो सकता है। २. एक-एक करके, तरक़ीब से। उ० क्रम-क्रम करके पुस्तकों को सजा दो।

क्रम-क्रम से–दे० 'क्रम-क्रम करके'।

क्रोध पी जाना–क्रोध दबा जाना।

क्वारछल उतारना–दे० 'क्वारपन उतारना'।

क्वारपन उतरना–१ विवाह होना। उ० उसका भी क्वारपन उतर गया, यह अच्छा ही हुआ। २. दे० 'नथुनी उतरना'।

क्वारपन उतारना–१. विवाह करना। २. किसी का सतीत्व नष्ट करना।

क्षण मात्र में—थोड़ी देर मे। उ० क्षण मात्र और रुको।

ख

खंक होना–१. कमज़ोर होना। उ० बीमारी के कारण वह बहुत खक हो गया हैं। २. लालची या भुक्खड़ होना।

खंगर लगना–१. कमजोरी का रोग होना। उ० तुम्हें कौन खंगर लग गया है जो दिन-प्रतिदिन सूखते जा रहे हो? २. सूखा रोग लगना। उ० लड़के को खंगर लगा है, दवा करो।

खंगाल डालना–गुप्त रूप से मार डालना। उ० पता चला है कि आगरा के एक बड़े डाकू ने कुछ लोगों को खंगाल डाला है।

खंगाल ले जाना–सब कुछ ले जाना। उ० रात हरीश के घर चोर आये और खंगाल ले गये।

खंजन देखना–शुभ शकुन होना। उ० इस वर्ष मैंने खंजन देखा, देखें क्या होता है?

खंड-खंड करना–चकनाचूर करना। टुकड़े-टुकड़े करना। उ० तुमने तो शीशे को खंड-खंड कर दिया।

खंडी करना–किस्त बाँधना। उ० यों न दे सकते हो तो खंडी कर दो। इस प्रकार देने में आसानी रहेगी।

खचाखच कसना–दे० 'खचाखच भरना'।

खचाखच भरना–खूब ठूँस कर भरना। उ० इस डिब्बे में आदमी खचाखच भर गये है, अब बिलकुल जगह नहीं है। हाल खचाखच भरा है।

खचाखच माचना–खूब मारकाट होना।

ख़ज़ाना मारना–बहुत धन लूटना। उ० आपका मैने ख़ज़ाना नही मारा है कि इतने रुष्ट हो रहे हैं।

खटकरमी होना–१. वाह्य आडम्बर करने वाला होना। २. बहुधन्धी होना। उ० वह तो खट-करमी है, उसे ये सब चीज़े लिखने की फ़ुरसत कहाँ?

खटके पर होना–खटके के सहारे रहना। उ० कमरे के बीच मे खटके पर एक पत्थर था, जो ऊपर दबाते ही नीचे की ओर झूलने लगा।

खटपट होना–लड़ाई, विरोध होना। उ० दोनो में खटपट है।

खटपाटी लगना–दे० 'खटपाटी लेना'।

खटपाटी लेना–हठ या क्रोध के कारण स्त्रियों का खाना तथा काम-धन्धा छोड़ देना। उ०

कुछ कहो भी तो, आखिर यों खटपाटी लेने से क्या लाभ ?

खटराग करना—झंझट करना । उ० यहाँ खटराग न करो ।

खटराग फैलाना—१. आडम्बर बढ़ाना । तूल-तवाला करना । उ० यह सब बेकार का खट-राग फैलाना मैं पसंद नहीं करता । २. झंझट बढाना । उ० यहाँ खटराग न फैलाओ, नहो तो ठीक न होगा ।

खटराग मचाना—दे० 'खटराग फैलाना' ।

खटराग में पड़ना—बखेड़े में पड़ना । उ० खटराग में पड़ने से सारा काम चौपट हो रहा है ।

खटराग लाना—झगड़ा-झंझट खड़ा करना ।

खट से—तत्काल, तुरन्त । उ० माँगने की देर है, मुझे विश्वास है कि वह खट से दे देगा ।

खटाई करना—बिगाड़ना । उ० सारा मजा खटाई मत करो ।

खटाई में डालना—१. दुविधा में छोड़ देना । कोई निश्चय न करना । उ० केवल आपकी वजह से मेरा मामला खटाई मे डाल दिया गया । २. बीच मे झंझट पैदा करना । उ० पहले कहे होते तो मैं मान गया होता, पर अब काम को खटाई में न डालो ।

खटाई में पड़ना—१. कुछ ठीक न होना, उ० जब तक आप न आयेंगे, मेरी नौकरी का मामला खटाई में पड़ा ही रहेगा । २. रुक जाना । बीच में कोई व्याघात या झंझट आ जाना । उ० मेरा मामला तो खटाई में पड़ गया ।

खटापटी रहना—झगड़ा-तक़रार रहना । उ० दोनों में खटापटी रहती है ।

खटापटी होना—दे० 'खटापटी रहना' ।

खटिया तोड़ना—१. निश्चिंत होकर आराम करना । ३. बेकार रहना । उ० क्या दिन भर खटिया तोड़ते हो,.कुछ न मिलता हो तो मेरे आफ़िस में एक एवजी है, उसी को कर लो ।

खटिया निकालना—मर जाना । उ० उसके घर से २ माह के अन्दर ४ खटिया निकलीं ।

खटिया सेना—बीमारी से चारपाई पर पड़ा रहना । उ० आज वर्षों से वह खटिया से रहा है ।

खटिया हुचकती जाना—मर कर टिकठी पर हुचकते हुए जाना । उ० ईश्वर करेगा तो तुम्हारी खटिया जल्दी ही हुचकती जाएगी । [यह स्त्रियों की एक गाली है ।]

खट्टा खाना—अप्रसन्न रहना । मुँह फुलाना । उ० तुम तो हमेशा खट्टा खाए रहते हो ।

खट्टा जी होना—दिल टूट जाना । उ० तुमसे हमारा खट्टा जी हो गया है, बात न करो ।

खट्टा-मीठा जी होना—मन में लालच होना । उ० अच्छी-अच्छी मिठाइयाँ देखकर उसका खट्टा-मीठा जी होने लगा ।

खट्टा होना—अप्रसन्न होना । उ० मुझसे क्यों खट्टे होते हो ?, मैने कुछ नहीं किया ।

खट्टी-मीठी बातें सुनना—१. भली-बुरी बातों को बर्दाश्त करना । २. बुरा-भला सुनना ।

खट्टे-मीठे दिन—सुख-दुःख के दिन । उ० जीवन में खट्टे-मीठे दोनों ही तरह के दिन बिताने पड़ते है ।

खड़मंडल करना—१ उपद्रव करना । २. किसी व्यवस्थित या ठीक से चलने वाले काम को गड़बड़ कर देना । उ० उसे न बुलाओ, नहीं तो जरूर खड़मंडल करेगा ।

खड़ा जवाब देना या दे देना—तुरन्त इन्कार कर देना । उ० मैंने १० रु० माँगे, पर उसने खड़ा जवाब दे दिया ।

खड़ा-पड़ा पीटना—हर समय शोक से रोते रहना । उ० आज दो माह से वह खड़ा-पड़ा पीट रहा है ।

खड़ा होना—चुनाव के लिये उठना । उ० हमारे इलाके से रामलाल सरपंच के लिए खड़े होंगे ।

खड़िया में कोयला—बेमेल चीज़ । उ० खड़िया में कोयला किसी को अच्छा नहीं लगता ।

खड़ी जवानी—भरा यौवन ।

खड़ी पछाड़ें खाना—दुःख से जमीन पर गिर पड़ना । उ० वह लड़के की मृत्यु सुनते ही खड़ी पछाड़ें खाने लगा ।

खड़े-खड़े—१. तुरन्त, झटपट । उ० मैं खड़े-खड़े इस काम को कर लूँगा । २. पल भर के लिए । उ० खड़े-खड़े वहाँ से लौट आऊँ । ३. बिना रुके । उ० वह खड़े-खड़े चला गया । ४. खड़े होकर । उ० खड़े-खड़े पानी न पियो ।

खड़े-खड़े करना—१. तुरन्त या झटपट करना । उ० इस तरह खड़े-खड़े करना ठीक नहीं है । २. खड़े होकर करना । खड़े-खड़े जलपान न करो ।

खड़े-खड़े फिरना–दे० 'खड़े-खड़े लौटना'।

खड़े-खड़े लौटना–तुरन्त लौटना। उ० वह आज आया था, पर खड़े-खड़े लौट गया।

खड़े-खड़े होना–तुरन्त हो जाना। उ० सब्र करो, काम खड़े-खड़े हो जायगा।

खड़े घाट कपड़े धुलवाना–जल्दी कपड़े धुलवाना।

खड़े पाँव–खड़ा होकर। उ० मैं तीन स्टेशनों से खड़े पाँव आ रहा हूँ। दे० 'खड़े-खड़े'।

खड़े पानी भी न पीना–तुरन्त चला जाना।

खड़े पीर का रोज़ा रखना–बराबर खड़ा रहना। बैठने का नाम तक न लेना। उ० क्या तुमने खड़े पीर का रोज़ा रखा है जो नहीं बैठते?

खड़े सिर डुबाना–बहुत परेशान करना।

ख़त आना–मुँह पर बाल जमना। उ० अरे तुम्हें इतनी कम उम्र में ख़त आने लगे।

ख़त काटना–कान के पास बाल सीधा काटना। उ० फिर से काटो, ख़त अच्छा नहीं कटा।

ख़त काटना–कान के पास बाल को छूरे से सीधा काटना या बराबर करना। उ० यह नाई अच्छा ख़त नहीं काटता।

ख़त-क़िताबत करना–पत्र-व्यवहार करना। उ० उनसे ख़त-किताबत करो तो कुछ पता चले।

ख़त निकलना–दे० 'ख़त आना'।

ख़त बनाना–दे० 'ख़त काटना'।

ख़तम करना–मार डालना। उ० चोर को पकड़ कर वहीं ख़तम कर डाला।

ख़तम होना या हो जाना–मर जाना। उ० मेरे दुश्मन ख़ुद ही ख़तम हो गये।

ख़तरा दूर होना–संकट दूर होना। उ० बंदूक ख़रीद लेने से मेरा सब ख़तरा दूर हो गया।

ख़तरे की घंटी–आफ़त की सूचना।

ख़त लगाना–दे० 'ख़त काटना'।

ख़त लिफ़ाफ़ा देख कर पहचानना–ऊपर से देखकर ही भीतर की हालत जान लेना। उ० वह ऊपर से चाहे जैसा हो, भीतर से बहुत शरारती है। मैं तो ख़त लिफ़ाफ़ा देखकर ही पहचान जाता हूँ।

ख़त से ख़त मिलाना–जाली दस्तख़त बनाना। उ० वह ख़त से ख़त बहुत बढ़िया मिलाता है।

ख़ता खाना–१. धोखे में पड़ना। उ० अगर अनजान जगह पर जाओगे तो अवश्य ख़ता खाओगे। २. अशुद्धि करना। उ० क्यों बार-बार ख़ता खाते हो?

ख़दशा में डालना–सोच-विचार में डालना। उ० पत्र ने मुझे ख़दशा में डाल दिया।

खपच्ची भरना–गोद में ले लेना।

खपरैल डालना–खपड़े से छत छाना।

खपा देना–१. मर मिटना, बर्बाद कर देना। उ० मैं इस काम में अपने को खपा दूँगा। २. अर्पण कर देना। उ० उसने सारा धन धर्म में खपा दिया। ३. फँसा कर मार डालना। उ० ऐसे आदमियों को कहीं खपा दो। ४. काम में लगा देना। उ० इसे भी कहीं खपा दो। ५. ख़र्च कर देना।

खप्पर भरना–खप्पर में मदिरा आदि भर कर देवी पर चढ़ाना। उ० खप्पर भरो तो शायद तुम्हारा काम हो जाय।

ख़बर उड़ाना–ख़बर फैलना। अफ़वाह फैलना। उ० उसके मरने की ख़बर उड़ गई है, मैं नहीं कह सकता, यह कहाँ तक सत्य है?

ख़बर फैलना–अफ़वाह होना। उ० दंगे की ख़बर ज़ोरों से फैल रही है।

ख़बर लेना–१. लालन-पालन करना। उ० बिना भगवान के कौन हमारी ख़बर ले? २. पता लगाना। उ० अब तक उसकी बीमारी की ख़बर ली या नहीं? ३. देखभाल करना। उ० घर-द्वार की ख़बर लेते रहना। ४. दंड देना, मारना। उ० पुलिस ने चोर की अच्छी ख़बर ली। ५. बुरी दशा पर ख़्याल करना। उ० गरीबों की ख़बर लिया करो। ६. डाँटना-फटकाना।

ख़ब्त सवार हो जाना या होना–सनक चढ़ना, पागलपन रहना। उ० आख़िर तुम पर किस चीज़ का ख़ब्त सवार है?

ख़ब्त हो जाना–पागल हो जाना। उ० तुम तो ऐसी बात कर रहे हो, जैसे तुम्हारा दिमाग़ ख़ब्त हो गया है।

ख़म खाना या खा जाना–१. नीचा देखना। उ० आपकी धमकी से ख़म नहीं खा सकता, मैं यहाँ मर मिटने को तैयार हूँ। २. झुकना, मुड़ना। उ० तलवार ख़म खा गई।

ख़म ठोक कर–१. डंके की चोट पर। घोषणा करके। उ० मैं ख़म ठोक कर यह बात सबके सामने कह दूँगा, चाहे कोई नाराज़ हो या ख़ुश। २. ताल ठोक कर। उ० वह ख़म ठोक कर लड़ने को तैयार हो गया।

खम ठोकना—१. लड़ने से लिये तैयार होना। उ० मैं इस सभा में खम ठोकता हूँ, जो लड़ना चाहे, लड़ ले। २. अपनी मजबूती प्रकट करना। उ० उसने तो सब के सामने खम ठोका।

खम बजाना—दे० 'खम ठोकना'।

खम मारना—दे० 'खम ठोकना'।

ख़मीर खट्टा होना—दे० 'खमीर बिगड़ना'।

ख़मीर बिगड़ना—१. गूँधे हुए आटे का अधिक देर तक रखे रहने के कारण बहुत खट्टा हो जाना। २. स्वभाव या व्यवहार आदि मे भेद पड़ना।

ख़याल—दे० 'ख़्याल'।

खरंड बाँधना—घाव पर पपड़ी पड़ना।

खर करना—बहुत गरम करना। उ० घी को खर कर दो।

खरतल कहना—साफ़-साफ़ कहना।

खरतल रहना—१ खरा और साफ होना। २ अलग और आज़ाद रहना।

खर-दिमाग़—घमंडी, अक्खड़ या ज़िद्दी। उ० भगवान बचाये उस खर-दिमाग से।

खरल करना—महीन कूटना। उ० दवा खरल कर दो।

खरा आदमी—चटपट दाम देने वाला आदमी। उ० खरे असामी से व्यवहार करना अच्छा होता है।

खरा आदमी—१. ईमानदार आदमी। उ० भाई, मै खरे आदमी को पसन्द करता हूँ। २. साफ-साफ कहने वाला आदमी।

खरा खेल फ़र्रुख़ाबादी—खरा और साफ़ व्यवहार। फ़र्रुखाबादी रुपये की तरह खरा व्यवहार। उ० मुझे तो खरा खेल फ़र्रुखाबादी पसन्द है।

खरा-खोटा परखना—भले-बुरे की पहचान करना। उ० बिना खरा-खोटा परखे आपने मित्रता कर ली, इसी का यह आज फल मिला है।

खरा-खोटा होना या हो जाना—नियति बिगड़ना। मन ख़राब होना। उ० लाख की चीज़ देखो भी तो खरे-खोटे न हो जाओ।

ख़राद उतरना—दे० 'ख़राद पर चढ़ना'।

ख़राद चढ़ना—दे० 'ख़राद पर चढ़ना'।

ख़राद पर चढ़ना—१. क़ाबू मे आना। उ० कभी ख़राद पर चढ़ोगे तो मज़ा चखा दूँगा। २. बिल्कुल ठीक होना। उ० मिस्त्री आ जाय तो मशीन ख़राद पर चढ जाएगी। ३. व्यावहारिक होना। उ० ८० साल का हुआ, क्या अभी ख़राद पर चढ़ना बाक़ी है ? ४. काम पड़ने पर। उ० रहने दो, ख़राद पर चढ़ कर स्वयं सुधर जाएगा। ५. मशीन की मरम्मत होना। उ० हमारी कल, कल ख़राद पर चढ़ेगी।

ख़राद पर चढ़ाना—१. सुधारना। उ० एक बार उसे ख़राद पर चढ़ा दो, वह ठीक हो जायेगा। २ काट-छाँट कर ठीक करना।

खरापन बघारना—अपनी सच्चाई की बड़ाई करना। उ० तुम हमेशा खरापन बघारते रहते हो। क्या चाहते हो, तुम्हारा भी सब भंडाफोड कर दूं ?

ख़राब करना या कर देना—बरबाद करना, बिगाड़ना। उ० अगर लड़को के साथ तुम रहोगे तो अपनी ज़िन्दगी ख़राब कर दोगे।

ख़राबी में डालना—१. दु:ख पहुँचाना। २ हानि पहुँचाना। उ० ग़रीबों को ख़राबी में डालने से क्या फायदा ?

ख़राबी में पड़ना—बुरी दशा में होना।

खरी-खरी सुनाना—दे० 'खरी सुनाना'।

खरी-खोटी सुनाना—भला-बुरा कहना। उ० आज तो उसने ऐसी खरी-खोटी सुनाई कि उनकी हुलिया बिगड़ गई।

खरी सुनाना—१. साफ-साफ़ बात कहना, चाहे बुरी लगे या भली। उ० भाई अगर हमसे पूछोगे तो मै खरी सुनाऊँगा, चाहे खुश हो या नाराज़। २. फटकारना। उ० आज तो उसे ऐसी खरी सुनाऊँगा कि वह भी याद करेगा।

ख़र्च उठाना—१ ख़र्च का भार सहना। उ० ख़र्च उठाना पड़ेगा तो पता चलेगा, अभी तो दूर हो। २. ख़र्च बन्द कर देना। उ० यह ख़र्च उठा दो। तुम्हारी हैसियत के लिग बिलकुल बेकार है।

ख़र्च चलाना—ख़र्च के लिए रुपया देना। उ० जब घर का ख़र्च चलाना पड़ेगा तो मालूम होगा। अभी तो खेल-खा लो।

ख़र्च तोड़ना—ख़र्च घटाना।

ख़र्च में डालना—१. व्यय मे लिखना। उ० मेरे ही ख़र्च मे डाल दो, फिर देखा जायेगा। २. ख़र्च करने पर मजबूर करना। उ० मुझे ख़र्च मे मत डालो, मैं तो यों ही तबाह हूँ।

ख़र्च में पड़ना–व्यय करने को लाचार होना। उ० लड़का होने की वजह से मुझे काफ़ी ख़र्च में पड़ना पड़ा।

ख़र्ची पर चलना–दे० 'ख़र्ची पर जाना'।

ख़र्ची पर जाना–किसी स्त्री का धन के लिए पर-पुरुष से प्रसंग कराना।

खर्राटा भरना या लेना–बेख़बर सोना। उ० वह तो चारपाई पर पड़ते ही खर्राटा भरने लगता है।

खर्राटा मारना–दे० 'खर्राटा भरना'।

खर्राटा लेना–दे० 'खर्राटा भरना'।

खल करना–दे० 'खरल करना'।

खलबली पड़ना–दे० 'खलबली मचना'।

खलबली मचना–हल्ला मचना, भगदड़ मचना। उ० शेर के आने की अफ़वाह सुन कर सारे शहर मे खलबली मच गई।

ख़लल पडना–विघ्न पड़ना। उ० तुम्हारे आते ही काम मे ख़लल पड़ गया।

खलाल देना–मात करना। उ० तुम्हारी बैठक तो महाराजाओं के दरबार को भी खलाल देती है।

खलाल मानना या मान जाना–पूर्णतः हार मानना। उ० अब तो वह भी खलाल मान गया।

खलित होना–वीर्यपात होना। स्खलित होना।

खलियान करना–१. इकट्ठा करना। उ० चीज़ो को यहाँ मत खलियान करो। २. तितर-बितर करना। ३. कटी फ़सल को इकट्ठा करना। ४. मार डालना। उ० उसने युद्ध-क्षेत्र मे वीरों का खलियान कर दिया।

ख़वे से ख़वा छीलना–बहुत भीड़ होना। उ० आज मैं मेले में गया था, वहाँ ख़वे से खवा छिल रहा था।

खसम करना–किसी को पति के रूप में ग्रहण करना। उ० खसम किया, बुरा किया, छोड़ दिया और बुरा किया।

ख़ाक उड़ना–१. उजाड़ होना। उ० हम लोगों के चले जाने पर यहाँ ख़ाक उड़ेगी। २. नष्ट होना। उ० तुम्हारी तो ख़ाक ऐसी उड़ेगी कि पता न चलेगा। ३. बदनाम होना। उ० चारों ओर उसकी ख़ाक उड़ रही है।

ख़ाक उड़ाते फिरना–मारे-मारे फिरना। उ० क्या ख़ाक उड़ाते फिरते हो? आखिर कैसे अपना गुज़र-बसर करोगे।

ख़ाक उड़ाना–बेकार रहना। उ० शर्म नहीं आती, दिन भर तो ख़ाक उड़ाता है और शाम को खाना माँगता है। २. स्वप्रतिष्ठा भग करना। उ० नीचों से बोल कर बनी-बनाई इज़्ज़त की ख़ाक उड़ाता है। ३. मजाक उड़ाना। उ० दूसरों की ख़ाक उड़ाना उचित नही है।

ख़ाक करना या कर देना–१ नष्ट-भ्रष्ट कर देना। उ० आवारापन्थी मे उसने अपना सारा काम ख़ाक कर दिया। २. जला देना। आज की आग ने सारा घर ख़ाक कर दिया।

ख़ाक चाट कर बात करना–विनम्र होकर बोलना। वह मेरे सामने ख़ाक चाट कर बात करता है, तो मैं उसे क्या डाटूँ?

ख़ाक चाटना–अनुनय-विनय करना। उ० ख़ाक नही चाटूँगा, चाहे काम हो या न हो।

ख़ाक छानना–बहुत खोजना। उ० सारे घर की ख़ाक छान डाली, पर मेरी कमीज़ न मिली। २. मारा-मारा फिरना। उ० पैसे थे, तब तो सीधे बात नही करते थे और आज जब ख़ाक छान रहे हैं तो मिलने पर सलाम करते है।

ख़ाक डालना–१. बात भी न चलाना। उ० उस पर तो ख़ाक डालो। २. ढकना, किसी को मालूम न होने देना। उ० उस बात पर ख़ाक डालने में ही भला है। ३. बेइज़्ज़त करना। उ० उस पर क्यों ख़ाक डालते हो?

ख़ाक फाँकना–१. मारा-मारा फिरना। उ० वह नौकरी के लिए चारों तरफ ख़ाक फाँकता है। २. झूठ बोलना।

ख़ाक बरसना–अच्छी दशा न रहना।

ख़ाक में मिलना या मिल जाना–१. चौपट हो जाना। उ० राम अपने आप ख़ाक में मिल गया। २. नेस्तनाबूद हो जाना, अस्तित्व मिट जाना, हस्ती मिट जाना। उ० कितने ही गाँव ख़ाक मे मिल गये।

ख़ाक में मिलना–मिटा देना। बर्बाद कर देना। उ० उसने अपनी सारी ज़ायदाद ख़ाक में मिला दी।

खाकर डकार न लेना–बिलकुल हज़म कर लेना। उ० उसने मेरा धन खाकर डकार तक न ली।

ख़ाक सिर में डालना–शोक से पागल होना। उ० ख़ाक सिर में डालने से क्या होगा, जो होना था, हो गया।

ख़ाका उड़ाना–१. बदनामी करना। उ० मेरा ख़ाका उड़ा कर आप क्या पायेंगे? २. हँसी उड़ाना।

ख़ाका उतारना–१. एकदम नक़ल करना। उ० वह ख़ाका उतारने में बड़ा चालाक़ है। २ ढाँचा बनाना।

ख़ाका खींचना–१ मज़ाक उड़ाना। २. वर्णन करना।

ख़ाकी अंडा–१. हरामज़ादा। २. ऐसा अंडा, जिसमें बच्चा न निकले। ३. बेकार चीज। उ० इन ख़ाकी अंडों को कौन ख़रीदेगा?

खा जाना–१ चट कर जाना, ले लेना। उ० वह जिसकी चीज़ खा जाता है, फिर देने का नाम नही लेता। २ बर्बाद कर देना। उ० मैं ख़ूब जानता हूँ कि तुम मुझे खा कर ही चैन लोगे।

खाट कट जाना–किसी का इतना अधिक बीमार होना कि उसके पाख़ाने-पेशाब के लिए नीचे से चारपाई काट देना पड़े।

खाट-खटोला–गृहस्थी का सामान। उ० अभी नये मकान में खाट-खटोला ले जाने हैं।

खाट तोड़ना–निष्क्रिय पड़े रहना।

खाट निकलना–अर्थी निकलना। उ० हैज़े से हर साल हज़ारो खाटें निकल जाती हैं।

खाट पड़ना–दे० 'खाट पर पड़ना'।

खाट पर पड़ना–बीमार होना। उ० वह तीन महीने से खाट पर पड़ा है।

खाट पर पड़े खाना–बीमारी की हालत मे व्यय करना। उ० क्या करूँ, इस ग़रीबी हालत मे सैकड़ो खाट पड़े खा गया। भविष्य की चिन्ता खाए डालती है।

खाट लगना–दे० 'खाट से लगना'।

खाट से उतार लेना–मरने के क़रीब आदमी को चारपाई से उतार कर ज़मीन पर रखना।

खाट से उतारा जाना–मरणासन्न होना। उ० वह वृद्ध आज सुबह से ही खाट पर से उतार दिया गया है।

खाट सेना–बीमार होकर खाट पर पड़ा रहना। उ० तीन महीने से वे खाट से रहे हैं।

खाट से लगना–बीमारी के कारण चारपाई से उठने की भी ताक़त न होना। उ० वह बेचारा वर्षों से खाट से लगा है।

खाता-कमाता–ख़र्च भर कमा लेने वाला। उ० वह कोई बड़ा आदमी नही है, हाँ खाता-कमाता है। भरपेट भोजन के लाले नहीं पड़ते।

ख़ाता पड़ना–१. लेन-देन आरम्भ होना। २. हिस्से पड़ना। उ० तुम्हारे ख़ाते बहुत नहीं पड़ा है।

खाता-पीता' होना–साधारण आराम से दिन बिताना, न बहुत धनी, न बहुत गरीब होना। उ० धनी तो नहीं है पर गरीब भी नहीं कहा जा सकता, 'खाता-पीता' है।

ख़ातिर जमा रखना–विश्वास रखना। उ० मै तुम्हारे साथ हूँ, ख़ातिर जमा रक्खो।

ख़ातिर में आना–क़दर होना। उ० हर जगह वह ख़ातिर में आता है।

ख़ातिर में न लाना–इज्ज़त न करना। उ० छोटों की तो कोई बात नही, पर बड़े आदमियो को ख़ातिर मे न लाना ठीक नही है।

खाते-पीते लातें मारना–बड़ा और धनी होने पर भी अपनी हालत से ख़ुश न रहना।

ख़ाते बाक़ी–किसी के यहाँ कर्ज। उ० मेरे सैकडों रुपये मोहन के ख़ाते बाक़ी हैं।

खादर लगना–चरने योग्य घास उगना। उ० वहाँ मवेशियो को ले चलो, ख़ूब खादर लगा है।

खान-पान करना–खाने-पीने का संबंध रखना, खाना-पीना। उ० आप तो अब शूद्रों के साथ भी खान-पान कर रहे हैं।

खाना और गुर्राना–जिसके भरोसे अपना जीवन निर्वाह करना, उसी पर ऐंठ दिखाना। उपकार न मानना। उ० शर्म नहीं आती है कि खाते हो और गुर्राते हो? क्या यहाँ तुम्हारे बाप का कोई नौकर है?

खाना-कमाना–मेहनत-मज़दूरी करके जीवन निर्वाह करना। उ० भाई आजकल ज़माना नाज़ुक है, किसी तरह खाना-कमाना चल जाय, यही बहुत है।

ख़ाना ख़राब करना–१. घर उजाड़ देना। उ० क्यो किसी शरीफ़ का ख़ाना ख़राब करते हो। २. झंझट डालना।

खाना न पचना–बेचैन रहना । उ० तुम्हारे बिना उसे खाना नहीं पचता ।

खाना-पीना लहू करना–दे० 'खाना-पीना लहू-मिट्टी करना' ।

खाना-पीना लहू मिट्टी करना–लड़ाई-झगड़े, क्रोध या शोक के कारण घर का सारा मज़ा जाता रहना । उ० केवल तुम्हीं ने घर भर का खाना पीना लहू-मिट्टी कर दिया है ।

खाना यहाँ तो पानी पीना वहाँ–बहुत जल्दी करना । उ० खाना यहाँ और पानी पीना वहाँ हो, तो मेरे यहाँ आप न आया करें ।

खाने के दाँत और दिखाने के दाँत और होना–बाहर-भीतर मे फ़र्क होना । उ० भाई, आपको मैं अच्छी तरह जानता हूँ, आपके खाने के दाँत और है और दिखाने के और हैं । जो इन बातो को न जाने उन्हें चकमा दीजिये ।

खाने के लाले पड़ना–खाने को न मिलना ।

खाने को दौड़ना–१ बुरी तरह पेश आना । २ क्रोध करना । ३ चढ़ बैठना ।

खा-पका जाना–दे० 'खा-पका डालना ।'

खा-पका डालना–खतम कर डालना । उ० भाई जो कुछ मेरे पास था, सब खा-पका डाला, अब केवल आप लोगो का आसरा है ।

ख़ाविंद करना–नया पति करना ।

खाया-बरदारी करना–बहुत चापलूसी करना । उ० खाया-बरदारी करना मै पसद नही करता ।

खार खाना–१ बुरा मानना । उ० इसी बात पर तुम खार खा गए ? २. रुष्ट या क्रुद्ध होना । उ० तुम खार खाए अपने घर बैठे रहो । मेरा क्या करोगे ?

खार-खूर करना–छोटा-मोटा काम करना । उ० मुझे इस वक्त काम ही क्या है ? कभी इच्छा होती है तो खार खूर-कर लेता हूँ ।

खार गुज़रना–बुरा लगना । उ० अगर आपको खार गुज़रता है तो मै कही और जाऊँ ?

खार निकालना–बदला लेना । उ० आज तुम्हारी बन आई है, जो चाहो कर लो, मैं भी कभी खार निकालूँगा ।

खारी कुएँ में डाल देना–बर्बाद कर देना, ज़ाया कर देना । उ० दुश्मन से सारा हाल कहेंगे विशाल का, डालेंगे अपनी बात को खारी कुएँ मे हम ।

ख़ाल उड़ाना–बहुत मारना । उ० अब उस मोहल्ले में गए तो बिना ख़ाल उड़ाए न छोड़ूंगा ।

ख़ाल उधेड़ना–दे० 'ख़ाल खीचना' ।

ख़ाल उपाड़ना–१. किसी का चमड़ा खींच लेना । २. सख़्त सजा देना ।

ख़ाल खींचना–बहुत ज्यादा मारना । इतना मारना कि चमड़ा छिल जाय । उ० पुलिस जब चोरो को पकड़ती है तो इतना मारती है कि ख़ाल खीच लेती है ।

खाल बिगड़ना–शामत आना, पिटने को जी चाहना । उ० तेरी ख़ाल तो नही बिगड़ी, जो उसे छेड़ता है ।

ख़ाल में मस्त होना–अपने आप में खुश रहना । उ० वह तो खाल मे मस्त है, जैसे संसार से उसका कोई वास्ता ही नही ।

ख़ालसा करना–बरबाद करना । उ० बहुत से हिन्दू पाकिस्तान मे खालसा कर दिए गये ।

ख़ाल से लगाना–दे० 'खालसा करना' ।

खाला-ऊँचा–१ भला-बुरा । २. हानि-लाभ । उ० व्यापार में खाला ऊँचा दोनों ही देखना पड़ता है ।

ख़ाला जी का घर–१. आसान काम । उ० इसे खाला जी का घर मत समझो । ज़रा परिश्रम करो । २ ऐसा स्थान जहाँ अपने को हर तरह की सुविधा हो । उ० यह अस्पताल क्या है, खाला जी का घर है ।

ख़ाली करना या कर देना–१ छोड़ देना । उ० इस मकान को दिन भर मे खाली कर दो । २ रिक्त करना । ३ केवल करना । उ० खाली यही काम करने आए हो या और ?

ख़ाली जाना–१ बेकार होना, बेकार जाना । उ० उसका रहना ख़ाली गया । यह भी वार ख़ाली गया । २ असफल लौट जाना । बिना कुछ लिए जाना । उ० उसे भी ख़ाली जाना पड़ा ? ३. झूठा सिद्ध होना । उ० देखो बात ख़ाली न जाय ।

ख़ाली ढोल–बातों का धनी, भडभड़िया ।

ख़ाली दिन–ज्योतिष के अनुसार अशुभ दिन । जिस दिन कोई नया या शुभ काम न किया जा सके । उ० आज तो ख़ाली दिन है, काम शुरू करना ठीक नही ।

ख़ाली बैठना–बिना रोज़गार के बैठना । उ० ख़ाली बठना हो तो घर जाओ ।

ख़ाली हाथ–१. जिसके पास रुपये-पैसे न हों। उ० वह बेचारा भी ख़ाली हाथ है। २ बिना हथियार के। उ० लड़ाई में ख़ाली हाथ मत जाओ। ३. बिना भेंट-उपहार के। उ० राजा के यहाँ खाली हाथ कैसे जाऊँ? ४. विचार या भावना से रिक्त। उ० खाली हाथ लिखेंगे तो इससे अच्छा क्या लिखेंगे। ५ बिना कुछ लिए दिए। उ० ख़ाली हाथ से काम होना संभव नही ज्ञात होता।

ख़ाली होना–१. बेकार होना। उ० आजकल मै ख़ाली हूँ, अगर आप कही चलें तो मै भी चल सकता हूँ। २. रुपया-पैसा पास मे न होना। उ० उससे क्या माँगोगे, वह तो ख़ुद ख़ाली है। ३. रिक्त होना। यह बर्तन ख़ाली है। ४. कमज़ोर होना।

ख़ास ख़ास–१. अच्छे और प्रतिष्ठित। उ० ख़ास ख़ास लोगों को निमंत्रित कर दो। २ चुने हुए। उ० ख़ास ख़ास फूलो को भेजना, सब लेकर क्या करेंगे।

खिंच जाना–१. मोहित होना। उ० उसको देखते ही मेरा मन खिंच गया। २. विरुद्ध हो जाना। उ० उसी दिन की बात से मैं तो खिंच गया। ३. खींच ली जाना, निकलना। उ० राजपूतों में बात-बात पर तलवारें खिंच जाती थीं।

खिंचे रहना–विरक्त, नाराज़ या दूर रहना।

खिचड़ी खाते पहुँचा उतरना–बहुत कोमल होना। उ० मनुष्य को इतना नाज़ुक नहीं बनना चाहिये कि खिचड़ी खाते पहुँचा उतर जाय।

खिचड़ी खिलाना–दे० 'खीर खिलाना'।

खिचड़ी छुआना–नववधू से पहले-पहल भोजन बनवाना।

खिचड़ी पकना–गुप्त भाव से कोई सलाह होना। उ० यहाँ भी कुछ खिचड़ी पक रही है, पर इसका परिणाम बुरा होगा।

खिचड़ी पकाना–१. आपस मे धीरे-धीरे सलाह करना। उ० यहाँ खिचड़ी पकाना ठीक नही है। २. षड्यंत्र रचना। उ० उनके विरुद्ध खिचड़ी पकाओ तो तुम्हें मानूं।

खिचड़ी होना–१ कुछ बाल सफ़ेद होना। उ० अरे तुम तो अभी लड़के हो, तुम्हारे भी बाल खिचड़ी हो गये? २. मिल-जुल जाना। उ० सारी चीजें खिचड़ी हो गई।

ख़िदमत करना–१. सेवा करना। उ० सबको अपने बड़ों की ख़िदमत करनी चाहिये। २ मारना। आज उनकी ऐसी ख़िदमत करूँ कि कुछ दिन याद रक्खेंगे।

ख़ियानत करना–रुपया चट कर जाना। रुपया मार लेना। उ० तुम बेईमान का क्या ठिकाना तुम्हें खियानत करते देर नही लग सकती।

खिल उठना–१. प्रसन्न हो जाना; २. सुन्दर लगने लगना।

खिलखिला कर हँसना–ज़ोर से हँसना। उ० मेरी बात सुनते ही वह खिलखिला कर हँस पड़ी।

खिल जाना–प्रसन्न होना। उ० परीक्षाफल देखते ही वह खिल गया।

खिल्लियों में उड़ाना–दे० 'खिल्ली मे उड़ाना' उ० जरा-सी बात मे रोये ये हाल हो जिसका वो खिल्लियो मे फिर क्या उड़ाए किसी को

खिल्ली उड़ाना–हँसी उड़ाना। उ० उसकी खिल्ली न उड़ाओ।

खिल्ली में उड़ाना–मूर्ख बनाना।

खींच-खाँच कर–किसी तरह, जैसे-तैसे, येन-केन प्रकारेण। उ० खीच-खाँच कर काम खतम करो।

खींच-तान करना–१. किसी वस्तु को पाने के लिए छीना-झपटी करना। २. किसी बात का कोई विशेष अर्थ निकालने के लिए घुमा-फिरा कर अर्थ निकालना।

खीर खिलाना–लड़के वाले की ओर के चार कुँवारे लडके तथा वर को बेटी वाले का कुछ देकर खीर खिलाना। उ० खीर खिलाने के लिए एक सायकिल और एक अँगूठी तो चाहिये ही।

खीर चढ़ाना–बच्चे का अन्नप्राशन संस्कार करना।

खीरा-ककड़ी समझना–बहुत छोटा या तुच्छ समझना। उ० सच्ची बात यह है, कि वह आपको खीरा-ककड़ी समझता है चाहे आप खुश हों चाहे नाराज।

खीरे के मोल बिकना–बहुत सस्ता होना। उ० आज से १०० वर्ष पहले घी तो खीरे के मोल बिकता था।

खीस काढ़ना–१. गरीब बन कर कुछ आरजू करना। छोटी-छोटी चीज़ के लिए क्यों खीस

काढ़ते फिरते हो? २. दाँत निकाल कर हँसना। उ० क्या बात-बात पर खीस काढते हो? ३. मर जाना। उ० (व्यंग्य, घृणा या क्रोध के अर्थ में) एक लाठी में ही खीस काढ़ दोगे!

खुगीर की भर्ती–बेकार आदमियों का जमावड़ा। उ० घर में केवल खुगीर की भर्ती है, कुछ करने वाला कोई भी नही है।

खुजलाना–१. कोई काम करने की इच्छा होना। उ० वहाँ भी कुछ बोलने के लिये तुम्हारा मुँह खुजला रहा था। २. कुछ पाने की इच्छा होना। उ० थप्पड़ पाने के लिए तुम्हारा मुँह खुजला रहा है। अन्य प्रयोग–तुम्हारी खुजला रही है जो यहाँ आई हो। मेरा हाथ किसी को पीटने के लिए खुजला रहा है। हाथ खुजला रहा है, कुछ प्राप्ति होगी। पैर खुजलाता हो तो चले जाओ, नही तो जाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

खुजली उठना–१. कामातुर होना। स्त्री मे सहवास की इच्छा उत्पन्न होना। २. मार खाने की इच्छा होना। उ० खुजली बहुत उठती है, डडा उठाऊँ?

खुजली मिटना–१. सभोग से स्त्री का आसूदा या शांत होना। २. अच्छी तरह पिटना। उ० दो-चार दिन मे तुम्हारी भी खुजली मिटती है न।

खुदा की मार–भगवान का प्रकोप। उ० जब तुम्हारे ऊपर खुदा की मार पड़ी है, तो कोई क्या सहायता करेगा?

खुदा-खुदा करके–किसी तरह से, राम-राम करके बड़ी कठिनाई से। खुदा-खुदा करके उसने इस काम को तो पार लगाया।

खुदा दिखाई देना–भगवान याद आना। विपत्ति में खुदा ही दिखाई देता है।

खूब जाना–चुभ जाना, गड़ जाना। उ० खूब गई रंग सुनहरी यों दिले बेताब मे। जिस तरह से डूब जाता है तिला सीमाब मे।

खुरखार करना–छोटा-मोटा काम करना। उ० खुरखार किया करो, यों किसी के यहाँ खाना ठीक नहीं।

खुरपी-जाली सँभालना–१. साईस का पेशा अपनाना। २. घास काटने का काम शुरू करना।

खुरी करना–बहुत जल्दी करना। उ० खुरी करोगे तो काम बिगड़ जायगा।

खुर्रे चने बन जाना–बेमुरव्वत हो जाना। बिना शील वाला होना। उ० न बहुत मिलनसारी अख्तियार करो, न खुर्रे चने ही बन जाओ।

खुल कर–मजे में, अच्छी तरह, बिना रुकावट के। उ० आज खुल कर देखो। आज खुलकर खाया। आज खुल कर पाखाना हुआ। आज खुल कर बात की।

खुल कर कहना–१. बेधड़क कहना। अगर सच्ची बात है, तो खुल कर कहो। २. साफ़-साफ़ कहना। पूरी बताना। उ० खुल कर कह डालो। कोई कोना गोशा छोड़ना मत।

खुल कर खेलना या खुल खेलना–आज़ादी से काम करना। बिना सकोच या बाधा के काम करना या खेलना। उ० जब खुल खेलने का मौक़ा मिले तो अपनी योग्यता दिखाऊँ।

खुल जाना–१. साफ़-साफ़ बतला देना, सारा रहस्य कह देना। उ० मार पड़ेगी, तो चोर स्वय खुल जायगा। २. कोई काम शुरू करना। ३ घुल-मिल जाना। उ० खुल जाएगा, तो अच्छी तरह बात करेगा।

खुलता रंग–१. हलका रग। उ० साड़ी का खुलता रग होता, तो और भी अच्छी लगती २. अच्छा रंग, जँचने वाला रंग। उ० किसी भी खुलते रंग मे रँग देना।

खुल पड़ना–दे० 'खुल जाना'।

खुला-खुला फिरना–आज़ादाना या बेरोक-टोक के फिरना। उ० वह तो खुला खुला फिरता है, भला उस पर वारट कहाँ है?

खुला खेल–१. सामने का खेल, स्पष्ट काम। उ० भाई मुझे खुला खेल पसद है। २. किसी की हानि के लिये किया गया चालबाज़ी का काम, जो छिपकर या भीतर ही भीतर न किया जाकर सामने या खुले रूप मे किया जाय। उ० मै तो कहता हूँ कि वे चाहे जो भी कहना चाहें, मुझे जरा भी परवाह नही। लेकिन हाँ, मर्द है तो खुला खेल खेलें। छिप कर घात करना हिजड़ों का काम है।

खुला हाथ–खर्च करने वाला, शाहखर्च।

खुला होना–दे० 'खुल जाना'।

खुली मुट्ठी का होना–उदार होना, दिल वाला होना। उ० हमारे मालिक खुली मुट्ठी के हैं, कभी इन्कार नही करते।

खुली सोढ़ कहना–खुल्लम-खुल्ला कहना, अलानिया कहना, सबके सामने कहना।

खुली सोढ़ गाना–दे० 'खुली सोढ़ कहना'।

खुले मैदान–दे० 'खुले आम'।

खुले आम–दे० 'खुले खज़ाने'।

खुले खज़ाने या खुले मैदान–सबके सामने। प्रकट में। उ० खुले खज़ाने उसने खून किया है।

खुले दिल से–उदारतापूर्वक। उ० है तो यह गरीब ही, पर दान खुले दिल से देते हैं।

खुले बाज़ार–दे० 'खुले खज़ाने'।

खुल्लम-खुल्ला कहना–१. साफ़-साफ कहना। उ० मैंने तो बात खुल्लम खुल्ला कह दी। २ सबके सामने कहना। उ० खुल्लम-खुल्ला गाली न दो।

खुशामदी टट्टू होना–सामने बड़ाई करने वाला होना। उ० भाई खुशामदी टट्टू होना मैं पसंद नहीं करता। सच्ची बात कहो, वह मीठी हो या कड़वी।

खुशी से ज़मीन पर पाँव न पड़ना–बहुत प्रसन्न होना।

खुश्की देना–ताना मारना। उ० खुश्की मत दो, तुम भी मुझसे कम नहीं।

खुसर-फुसर करना–१ जालसाज़ी-करना। उ० मैंने सुना है कि आप आज कल कुछ खुसर-फुसर कर रहे है। मुझे तुम्हारे खुसर-फुसर करने की परवाह नहीं। २. धीरे-धीरे बात करना। उ० क्या इतनी देर मे खुसर-फुसर कर रहे हो?

खुसुर-फुसुर करना–दे० 'खुसर-फुसर करना'।

खूँटा गाड़ना–१ हद बाँधना। उ० यह मैंने खूंटा गाड़ दिया। इसके आगे मत जाना। २ शर्त बदना। ३ अधिकार करना, कब्जा जमाना। उ० किस कागज़ में देख कर आपने यहाँ खूंटा गाड़ा है?

खूँटी निकलना–उस्तरा आदि से बनाने के बाद दाढ़ी का ज़रा-ज़रा जमना। उ० तुम्हे शीघ्र ही खूँटी निकल आती है।

खूंटे निकालना–नाई का छुरे से दाढी इस प्रकार बनाना कि ज़रा भी न मालूम हो।

खूँटी के बल कूदना–किसी दूसरे के बल पर अभिमान करना। उ० तुम जिस खूंटे के बल कूद रहे हो, उसको मै मिनटों में खतम कर दूँगा।

खूँटे पर मारना–१ अपमान करना। उ० किसी को खूंटे पर मारना ठीक नहीं है। २. बाँध कर मारना। ३ बहुत निर्दयता करना।

खूँटे से बाँधना–शादी हो जाना। उ० खूँटे से बँधते ही सब शौक हवा हो जायेंगे।

खून उतरना–गुस्से से आँख और मुँह लाल होना। उ० तुम्हें बहुत खून उतर आता है। ज़रा गंभीर बनो।

खून उबलना–दे० 'खून खौलना'।

खून करना–मार देना। उ० तुम वहाँ से किसका खून करके भगे हो?

खून का जोश आना–अपने कुल का प्रेम उमडना। उ० भाई को देखते ही खून का जोश आ गया और वह गले से लिपट गया।

खून पानी करना– बहुत मेहनत करना।

खून का प्यासा–प्राण लेने का इच्छुक। उ० मैं उसके खून का प्यासा हूँ, जब भी मिलेगा मार डालूंगा।

खून की नदी बहाना या बहा देना–बहुत मार-काट करना। उ० नादिरशाह ने खून की नदी बहा दी।

खून के आँसू बहाना–दिल से रोना।

खून खच्चर या खून खराबा करना–मार-काट करना। उ० खून खराबा करना हो, तो यहाँ से जाओ।

खून खुश्क होना–बहुत डर जाना। उ० उस पागल आदमी को देखते ही मेरा खून खुश्क हो गया।

खून खौलना–बहुत क्रोधित हो जाना। उ० आपकी बातें सुनते ही मेरा खून खौलने लगता है।

खून गर्दन पर चढ़ना–दे० 'खून सिर पर सवार होना'।

खून गर्दन पर सवार होना–दे० 'खून गर्दन पर चढ़ना'।

खून चूसना–१. कष्ट देना। २. सार या तत्त्व चूस लेना। ३. निस्सार कर देना।

खून ठंडा होना–डर जाना। उ० बहुत बढ़-बढ़ कर बातें कर रहा था, पर मुझे देखते ही उसका खून ठंडा हो गया।

खून पानी हो जाना–बहुत अधिक कष्ट होना। उ० दो महीने की बीमारी में बेचारे का खून पानी हो गया।

खून पीना–१. मार डालना। २. तंग करना। ३. कष्ट सहना। ४. बहुत कड़ा दंड देना। उ० अब ऐसी शरारत की तो खून पी जाऊँगा।

खून-पसीना एक करना–बहुत मेहनत करना।

खून बहाना–१. मार डालना। उ० आज मै खून बहा कर ही छोड़ूँगा। २. अपना बलिदान करना। उ० देश के लिये मै खून बहाने को तैयार हूँ।

खून मुंह लगना–आदत पड़ना, मुफ्त का मज़ा मिलना। उ० तुमने उसे पिला क्या दी। उसके मुंह में खून लगा दिया। अब वह रोज़ाना आ जाता है।

खून सफ़ेद होना या हो जाना–क्रूर बनना। उ० आजकल आपका खून सफेद हो गया है।

खून (सिर पर) सवार होना–१. किसी को मार डालने को तैयार होना। उ० आज खून सिर पर सवार है, मैं मान नही सकता। २. खून करने के बाद खूनी का इस ढंग से होना कि देखते ही लोग पहचान जायँ। उ० उसके सिर पर खून सवार है, वह अवश्य पकड़ा जायगा। ३. मरने के समीप आना।

खून सुखाना–दुःख या चिंता से कमजोर होते जाना। उ० क्यों तुम व्यर्थ में खून सुखा रहे हो ?

खून सूखना–भयभीत होना। उ० मुझको देखकर तुम्हारा खून क्यों सूख जाता है ?

खेत आना–लड़ाई मे मारा जाना। उ० इस लड़ाई में सैकड़ों खेत आये।

खेत कमाना–जोत और खाद आदि से खेत की पैदावार बनाना। उ० भाई खूब खेत कमाया हुआ था, अब भी काफ़ी अनाज न होगा तो कब होगा ?

खेत करना–युद्ध करना। उ० खेत करने के लिए डेढ़ बीते का कलेजा चाहिये।

खेत का लिखा-पढ़ा–बेवकूफ़, किसान। खेती करने वाला। उ० खेत का लिखा-पढ़ा, पत्र लिखना क्या जाने ?

खेत छोड़ना–रण छोड़ कर भाग जाना। उ० खेत छोड़ना कायरों का काम है।

खेत पड़ना–दे० 'खेत आना'।

खेत रखना–जीतना, विजय पाना। उ० केवल तुमने खेत रक्खा नहीं तो सब डर गये थे।

खेत रहना–युद्ध मे मारा जाना। उ० अबकी बार बहुत थोड़े आदमी खेत रहे।

खेत हाथ रहना–जीतना, विजय होना। उ० बहुत कोशिश करने पर भी खेत उनके हाथ न रहा।

खेती मारी जाना–पैदावार बरबाद होना। उ० इस साल सूखे से सारी खेती मारी गई।

खेती लोट जाना–ज्यादा पानी पड़ने या ओले पडने या तेज़ हवा बहने से फ़सल का ज़मीन पर लोट जाना। उ० इस साल खेती लोट गई है, अब अकाल पड़ेगा।

खेल करना–ठीक से काम न करना। तमाशा करना। उ० खेल करने से काम न चलेगा, यदि करना हो तो मन लगा कर करो।

खेल ख़राब करना–काम बिगाड़ना। उ० तुमने सारा खेल खराब कर दिया, नही तो कम से कम १० हज़ार का लाभ था।

खेल ख़राब होना–काम बिगड़ना। उ० खेल खराब होने पर सभी हँसते है।

खेल खेलना–१. चाल चलना। उ० क्या आप मेरे साथ खेल खेल रहे है ? २. मज़ाक करना। उ० खेल मत खेलिए। ३. आसानी से करना। उ० यह काम क्या है, खेल खेलना है।

खेल खेलाना–बहुत परेशान करना। उ० चार दिन के लड़के, क्या मुझे खेल खेला रहे हो ?

खेल जानना–दे० 'खेल समझना'।

खेलना खाना–आनन्द से दिन बिताना। उ० अभी खेलो खाओ, तुम्हे किस चीज़ की चिन्ता है ?

खेल समझना–आसान जानना। उ० हम तो इस काम को खेल समझते हैं।

खेल होना–आसान होना।

खेला-खाया–अनुभवी, चालाक़। उ० सँभल कर हाथ डालना, वह भी खेला-खाया है।

खेला-खेलाकर मारना–कष्ट दे-देकर मारना। उ० अरे भाई अगर मारना ही है तो अभी मार दो, खेला-खेलाकर मार कर क्या पाओगे ?

खेली-खाई–पुरुष-समागम की अनुभवी। उ० वह खेली-खाई लड़की है।

खेह खाना–१. बुरी दशा में रहना। उ० आजकल वह खेह खा रहा है। २. बेकार समय खराब करना। उ० क्यों महीनों से खेह खा रहे हो, कुछ काम करने में जी नही लगता क्या ?

खैर मनाना–खतरे से बचने की दुआ करना। उ० बेटा लड़ाई में जा, मैं यही मे तेरी खैर मनाया करूँगी।

खोइछा भरना–बिदाई के समय स्त्री के अंचल में चावल, गुड़ तथा रुपया आदि देना।

खोगीर की भर्त्ती–बेकार लोगों का जमाव। उ० खोगीर की भर्त्ती से यहाँ क्या लाभ होगा; दो-चार अच्छे आदमी काफी है।

खोज मारना–दे० 'खोज मिटाना'।

खोज मिटाना या मिटा देना–ऐसे चिह्नों को मिटाना जिनसे खोज हो सके। उ०चोर चोरी करने के बाद जब सामान लेकर चलते है तो खोज मिटा देते है।

खोटाई करना–खोटा या बुरा काम करना।

खोटा खाना–बेईमानी से कमा कर खाना। उ० भाई खोटा खाना मुझे अच्छा नही लगता।

खोटा पैसा–१ ऐसा धन जो बुरे कामों से कमाया गया हो। उ० भाई खोटा पैसा मै हाथ से नही छू सकता। २ खराब या न चलने वाला पैसा। उ० खोटे पैसे मेरी दूकान पर न लाया करो। ३ बुरी चीज। उ० तुम्हारा खोटा पैसा है तो मै क्या करूँ ?

खोटी-खरी सुनाना–फटकारना। उ० मै उसे खूब खोटी खरी सुनाता हूँ, पर उस पर कुछ भी असर नही होता।

खोद खोद कर पूछना–तर्क के साथ सभी बातें पूछना, अच्छी तरह छानबीन करना। उ० बिना खोद-खोद कर पूछे मै कैसे सब बातें जान सकता हूँ।

खोद-विनोद करना–दे० 'खोद-खोद कर पूछना'।

खोपड़ी खा जाना–व्यर्थ बकवाद करना। व्यर्थ की बात से दिमाग़ खराब करना। उ० क्यों खोपड़ी खा जा रहे हो, हमारी तबीयत ठीक नहीं है।

खोपड़ी खुजलाना–पीटे जाने की इच्छा होना। पिटने के लिये उपाय करना, शामत आना। उ० आज तुम्हारी खोपड़ी खुजला रही है क्या ? जो इतनी ग़लतियाँ कर रहे हो ?

खोपड़ी गंजी करना–मार कर खोपड़ी के बाल उड़ा देना। उ० जब तक खोपड़ी गंजी न करूँगा, तुम न मानोगे।

खोपड़ी गंजी होना या हो जाना–ऐसी मार खाना कि सर के सब बाल ख़तम हो जायें। उ० पुलिस की मार के कारण चोर की खोपड़ी गंजी हो गई।

खोपड़ी चलना–पागल होना। उ० बहुत पढ़ने से भी खोपड़ी चल जाती है।

खोपड़ी चाट जाना–दे० 'खोपड़ी खा जाना'।

खोपड़ी पर खड़ा होना–बिल्कुल पास होना, सर पर होना।

खोया-खोया–गुम-सुम।

खोपड़ी लाल करना–मारकर सर फोड़ना।

खोया जाना–चकमका जाना।

ख्याल बाँधना–कल्पना करना। उ० केवल ख्याल बाँधने से काम न चलेगा, कुछ करो भी।

ख्याल में रहना–१ याद मे रहना। उ० मै हर समय आपके ही ख्याल मे रहता हूँ। २. ताक मे रहना।

ख्याल रखना–१. ध्यान रखना। उ० मैं अब जा रहा हूँ, ज़रा मेरे बच्चे का ख्याल रखना। २ दया-दृष्टि रखना। उ० जरा इस गरीब पर ख्याल रक्खा करे।

ख्याल रहना–१. याद रखना। उ० आपकी सब बाते मुझे ख्याल रहेगी। २ दया-दृष्टि रहना।

ख्याल से उतरना या उतर जाना–भूल जाना। उ० आज ही यह बात मेरे ख्याल से उतर गई।

ख्याली पोलाव पकाना–१. असंभव बातें सोचना। उ० ख्याली पोलाव पकाने से क्या लाभ। २. सिर्फ़ सोचना। उ० आप केवल ख्याली पोलाव पकाना जानते है, कुछ काम करना नही। ३. बिना सर-पैर की बात करना। असंभव बातें करना। उ० मेरे सामने ख्याली पोलाव मत पकाओ।

ख्वाब की बात–असंभव बातें। उ० ख्वाब की बातें करते रहोगे, तो उम्र ऐसे ही कट जायगी।

ख्वाब हो जाना–स्वप्न दोष हो जाना। उ० रोज़ रोज़ ख्वाब होना ठीक नहीं है, इसका इलाज कराओ।

ग

गंगई की तरह बोलना—बहुत बोलना। उ० यार गंगई की तरह बोलते हो, तुम्हारा मुँह भी नहीं दुखता ?

गंगा उठाना—गंगा की क़सम खाना। उ० उसने छोटी सी चीज़ के लिये गंगा उठा ली, अब उसे क्या कहा सकता है ?

गंगाजल उठाना—गंगा की क़सम खाना। उ० गंगाजल उठा लो, तो मै मान लूँ।

गंगाजली उठाना—गगाजल हाथ मे लेकर क़सम खाना। उ० उसने गगा जली उठाकर कह दिया कि मै तुम्हारे धन के बारे मे कुछ भी नही जानता।

गंगा नहाना या नहा लेना—१. पाप खतम करना। उ० जीवन मे बहुत जगह पैर ऊँचे-नीचे पडे थे, कल चारों धाम की यात्रा खतम कर गंगा नहाया। २. निश्चित होना। उ० लड़की का विवाह करके गगा नहा लिया। ३. कृतार्थ होना।

गंगा पार कर देना—१. देश से निकाल देना। उ० बदनाम कर गगा पार कर देना चाहते हो क्या ? ३. झंझट से निकाल देना।

गंगा लाभ होना—मरना। उ० वर्षों की बीमारी के बाद कल उनका गंगा लाभ हो गया।

गंज डालना—बाज़ार लगाना। उ० मेरा विचार है कि अपने गाँव मे एक नया गंज डालूँ।

गँजेड़ी यार—मतलब का साथी। उ० गँजेड़ी यार किसके। दम लगा के खिसके।

गंडा ताबीज़ करना—झाड़-फूंक करना। उ० गंडा-ताबीज़ करने पर मेरा विश्वास नही है।

गंदा करना या होना—भेद बता देना या खुलना। उ० (जुआरियों की भाषा) तुम्हारी वजह से सब गंदे हो गये, नही तो मैं बहुत माल कमाता।

गंदा पानी निकालना—संभोग करना।

गँवं से—१. चुपके से। २. ढंग से। उ० गँवें से रुपया निकाल लो।

गचक्का खाना—धोखा खाना। उ० यही स्वभाव रहा तो एक दिन ऐसा गचक्का खाओगे कि याद करोगे।

गच्चा खाना—दे० 'गचक्का खाना'।

गच्चे में डालना—धोखे में या हैरानी मे डालना।

गज़ट करना—१. बहुत मशहूर करना। उ० इस बात को गज़ट करने में अपनी शिक़ायत है। २. सरकार का गज़ट द्वारा सर्वसाधारण को सूचित करना। ३. गज़ट में निकालना।

गज़ट होना—सरकारी गज़ट द्वारा सर्वसाधारण को सूचित होना। उ० उसका तबादला आज गज़ट हो गया।

गज़ब-इलाही—ईश्वरीय कोप। उ० यह वर्षा नहीं ग़ज़ब इलाही है, सारी फसल बह रही है।

गज़ब करना—१. विचित्र बात या अनोखा कार्य करना। उ० भाई तुमने तो आज ग़ज़ब कर दिया। सब लोग तुम्हारी तारीफ़ कर रहे हैं। २. जुल्म करना, मुसीबत ढाना। उ० इतना गजब न करो, नही तो भोगोगे।

गज़ब का—विचित्र, अपूर्व। उ० तुम्हारा लड़का ग़ज़ब का ख़ूबसूरत है।

गज़ब टूटना—आफ़त मे पड़ना। आफ़त आना। उ० गजब टूटने पर कोई मित्र नहीं बनता।

गज़ब ढाना—दे० 'ग़ज़ब तोड़ना'।

गज़ब तोड़ना—१. विचित्र काम करना। उ० आपने तो गजब तोड़ दिया। भला ऐसा कभी हुआ था। २. बहुत बड़ी मुसीबत ढाना। उ० ईश्वर ने यह ग़ज़ब तोड़ दिया।

ग़ज़बनाक़ होना—क्रोधित होना। उ० हर एक बात पर ग़ज़बनाक़ होना ठीक नही है।

गज़ब पड़ना—दे० 'ग़जब टूटना'।

गज़ भर की छाती करना—बहुत साहस करना। उ० इस काम को करने के लिए गज़ भर की छाती करनी होगी।

गज़ भर की छाती होना—साहस होना। उ० अपने साथ मुझे देखकर उसकी गज़ भर की छाती हो गई।

गज़ भर की जीभ होना—१. खाने का लालची होना। उ० बहुत ज्यादा घूमने से उसकी गज भर की जीभ हो गई है। २. बहुत बड़-बड़ करना। उ० चुप रहो। आजकल तुम्हारी जीभ गज़ भर की हो गई है।

गज़रदम—बहुत तड़के। उ० वह सर्वदा गजरदम उठ कर पढता है।

गज़रदम करना—ख़ूब थुरना या पीटना। उ० ऐसा गज़रदम करूंगा कि छठी का दूध याद आ जायगा।

गजर-बजर खाना—गड़बड़ खाना। इधर-उधर की चीजें खाना। उ० आजकल हैजा फैला है, गजर-बजर न खाया करो।

गजरबजे—दे० 'गजरदम'।

गटई काटना—दे० 'गला काटना'।

गटकना—दे० 'गट करना'।

गट करना—खा जाना। उ० देखते ही देखते वह सारा खाना गट कर गया।

गट-गट सुनना—चुपचाप सुनना।

गटपट करना—१ गड़बड़ी करना। २ घालमेल करना। ३. प्रसग करना।

गटपट होना या हो जाना—१. प्रेम से लिपट जाना। २ गडबड़ होना। उ० पता नही कैसे सामान रक्खा कि सब गटपट हो गया।

गट्ट करना या कर जाना—१ हड़प जाना। उ० मेरा सारा धन मोहन गट्ट कर गया। २ खा जाना। उ० इतनी जल्दी सब पूड़ियाँ गट्ट कर गए!

गट्टा उखाड़ना—हरा देना, परास्त कर देना। उ० पहली ही बार उसने गट्टा उखाड़ दिया, अब क्या लडोगे?

गठरी करना—बचा कर रखना। उ० उसका आज तक गठरी किया रुपया सब मिला कर पाँच हजार हुआ है।

गठरी बाँधना—१ सर्दी के मारे घुटना और छाती एक करना। २ जाने को तैयार होना। उ० अब गठरी बाँधो, नही तो देर हो जायेगी।

गठरी कर देना—हाथ-पैर तोड देना। उ० सीधी तरह से मेरी रकम दे दो, नही तो गठरी कर दूंगा।

गठरी मारना—चालाकी से किसी का माल चुरा लेना। उ० गठरी मारने से काम न चलेगा, कुछ काम करो।

गठाव गोठना—उपाय निकालना। उ० कोई गठाव गोठिये, नही तो काम न चलेगा।

गडंग मारना—१. डीग हाँकना। उ० केवल गडग मारना तुम जानते हो, कुछ काम करना तो चाहते ही नही। २ गप्प मारना। उ० आज-कल गडग ही मार रहे हो या कुछ कर भी रहे हो? ३. घमड करना।

गडंग हाँकना—दे० 'गडग मारना'।

गड्ड का गड्ड—समूह का समूह, बहुत-सा। उ० गड्ड का गड्ड कपड़ा रोजाना कहाँ से लाते हो?

गड्ढा खोदना—१. हानि करना। नुकसान पहुँचाना। २. किसी को नीचा दिखाने या गिराने का उपाय करना। उ० क्यों उसके लिए गड्ढा खोद रहे हो?

गड़ जाना—लजा जाना। उ० औरतें अनजान पुरुष को देखकर शर्म से गड़ जाती हैं। मुझे देखकर क्यो गड़ रही हो?

गड़प कर जाना—दे० 'गट्ट करना'।

गड़रिया पुरान—मूर्खो या गँवारों की बात। उ० मेरे आगे गडरिया पुरान न गाओ।

गड़हा पड़ना—गड्ढा हो जाना।

गड़हा पाटना या पाट लेना—१. कमी को पूरा करना। उ० भाई हमारी कमाई से गड़हा पाटना कठिन है। २. गड़ढो को भरना। ३. रूखा सूखा खाकर पेट भरना। उ० भोजन क्या मिलता है, किसी तरह गड़हा पाट लेता हूँ ४ विरोध दूर करना।

गड़हा भरना—दे० 'गडहा पाटना'।

गड़हे पड़ना—गहरा हो जाना। उ० दरवाजे पर जितने गड़हे पड़ गये है, सब को पाट दो।

गड़हे में पड़ना—१. कष्ट मे पडना। उ० गडहे मे पडने पर कोई मदद नही करता। २. असमजस मे पडना। कठिनाई मे पड़ना। उ० क्या करूँ, ऐसे गड़हे मे पड़ा हूँ कि कुछ कहा नही जाता।

गड़े कोयले उखाड़ना—बीती बातो को फिर से सामने लाना, पुरानी बातो की याद दिलाना उ० गडे कोयले उखाडने से क्या लाभ, जो सामने है उसे देखो।

गड़े मुर्दे उखाड़ना—दे० 'गड़े कोयले उखाड़ना'

गढ़-गढ़ कर बातें करना—नमक-मिर्च लगा कर बाते करना। झूठ-मूठ की बात बना कर कहना। उ० गढ़-गढ़ कर बातें करने मे आप बडे पटु है।

गढ़-गढ़ कर बातें बनाना—दे० 'गढ़-गढ़ कर बातें करना'।

गढ़ जीतना या जीत लेना—१. बहुत कठिन काम करना। उ० उसे मारना तुम्हारे लिए गढ जीतना है। २. विजयी होना। उ० क्या

तुमने उनको अपनी ओर कर लिया ? यदि ऐसी बात है, तो तुमने गढ़ जीत लिया ।

गणना होना–दे० 'गिनती होना' ।

गत करना–दे० 'गत बनाना' ।

गत का होना–अच्छा होना, ढंग का होना । उ० यह शहर किस गत का है जो यहाँ घूमने आये हो ।

गत नाचना–नाचने का कोई ठाठ दिखाना ।

गत बनाना या बना डालना–१. खराब हालत करना । उ० तुमने तो बेकार मे उसकी गत बना डाली । २. डाँटना । ३. मारना-पीटना । ४. स्वरूप बिगाडना । होली मे रंग या कीचड़ आदि डालना । उ० होली में एक साल आप आए थे । याद है, कैसी गत बनाई थी ! ५. हँसी उड़ाना ।

गत होना–मरना । उ० दुख के साथ लिखना पड़ता है कि कल आपके पिता गत हो गए ।

गति होना–पैठ होना ।

गत्ताल खाते में जाना–बेकार होना । व्यर्थ जाना । उ० मेरा सब रुपया गत्ताल खाते मे चला गया ।

गत्ताल खाते समझना–डूबा हुआ समझना । उ० मै अपना वह रुपया गत्ताल खाते समझता हूँ ।

गटर-गों करना–हड़प लेना, ले लेना, खा जाना । उ० उसका भी धन आप गटर-गों कर गए ।

ग़दर मचाना–विद्रोह मचाना । उ० भारत-वासियों ने आजादी के लिये कई बार ग़दर मचाया ।

गदरा जाना–यौवन आना । उ० लड़की गदरा गयी है, इसका ब्याह शीघ्र होना चाहिये ।

गदहाचंद–बहुत मूर्ख । उ० अरे, उससे क्या पूछते हो, वह तो पूरा गदहाचंद है ।

गदहा होना–बिना अक्ल का या मूर्ख होना । उ० तुम तो गदहे हो !

गदहे का हल चलना–खँडहर हो जाना । उ० अब वहाँ गदहे का हल चलता है ।

गदहे पर क़िताबें लादना–मूर्ख को पुस्तकें देना, निरा गँवार को पढ़ाना । उ० अरे यह कुछ पढ़ नही सकता, महामूर्ख है । क्यों गदहे पर क़िताबे लाद रहे हो ?

गदहे पर चढ़ाना–खूब बदनाम करना । उ० आप मुझे गदहे पर चढ़ा कर क्या पा गये ?

१५

गदाका सुनाना–फटकारना । उ० इस बार आयें तो ऐसे गदाका सुनाना कि उनकी फिर आने की हिम्मत भी न पड़े ।

गद्द करना–पेट में जाकर किसी चीज़ का न पचना । उ० दही तो मुझे गद्द करेगा, कुछ और दो ।

गद्द धरना–गद्द करने या अपच का रोग होना । बदहज़मी की शिकायत होना ।

गद्द मारना–अपने वश में करना ।

गद्द मारा जाना–बेवकूफ़ हो जाना ।

गद्दी पर बैठना–राजा बनना । उ० मुगल-वंश में बहुत से गद्दी पर बैठे, पर अक़बर सबसे अच्छा माना जाता है ।

गधे पर झूल डालना–कुरूप को क़ीमती तथा सुन्दर वस्त्र पहनाना । उ० उसको बनारसी साडी पहना रहे हो या गधे पर झूल डाल रहे हो ।

ग़नीमत समझना–बहुत समझना । उ० यही ग़नीमत समझो कि मैं बचकर चला आया ।

ग़नीमत होना–अच्छा और मिलनसार होना । उ० वह बड़ा ग़नीमत आदमी है ।

गप-गप खाना–निगलना, जल्दी-जल्दी खाना ।

गपड़चौथ–दे० 'गप्पचौथ' ।

गपसड़ाका करना–१ गप मारना । २. गप-शप करना । उ० गपसडाका ही करोगे या कुछ काम भी !

गपागप–जल्दी-जल्दी । उ० वह गपागप खा रहा था ।

गप्प उड़ाना–१. अफ़वाह फैलाना । उ० उसने हर जगह यह गप्प उडा दी है कि वह मर गया । २. झूठ बोलना । उ० गप्प मत उड़ाओ ।

गप्पचौथ–बेकार की बातें । उ० तुम्हारे यहाँ तो हमेशा गप्पचौथ जमी रहती है, आकर क्या करें ?

गप्प मारना–१. झूठ-मूठ की बात करना । उ० क्यो गप्प मारते हो ? मैं विश्वास नही कर सकता । २. व्यर्थ की बकवाद करना । उ० तुम दिन भर गप्प मारा करते हो, क्या कोई दूसरा काम नही है ?

गप्प लड़ाना–दे० 'गप्प मारना' ।

गप्प-शप हाँकना–दे० 'गप्प मारना' ।

गप्प हाँकना–दे० 'गप्प मारना' ।

गफ्फा मारना–बड़े-बड़े कौर खाना ।

ग़म खाना–१. क्षमा करना । उ० गम खाना सब से बड़ी चीज है । २ सब्र करना, संतोष करना । उ० गम खाओ । अब रोक कर आँख फोड़ने से क्या लाभ ? ३. कुछ देर सब्र से प्रतीक्षा करना, ठहरना । उ० गम खाओ मैं भी चलूंगा ।

ग़म गलत करना–दुख भुलाने की कोशिश करना । उ० गम गलत करने मे नही भूल सकता है, वह अपने आप कुछ दिनो मे भूल जाता है ।

गया करना–गया जाकर पिंडदान करना ।

गया-गुज़रा–बुरी दशा को पहुँचा हुआ, अधम । उ० वह गया-गुज़रा आदमी है ।

गया घर–दुर्दशा प्राप्त घर । उ० गए घर से उसका क्या मुक़ाबिला ।

गया-बीता–दे० 'गया-गुज़रा' ।

गया-बीता होना–किसी काम का न होना । उ० तुमसे कुछ नही हो सकता है, तुम सबसे गये बीते हो गये ।

गया वक्त–बीता अवसर । उ० गया वक्त हाथ नही आता ।

ग़रकी देना–दु ख देना । उ० गरीबो को गरकी देकर क्यो उनकी आह लेते हो ?

ग़रक़ी में डालना–दे० 'ग़रकी देना' ।

ग़रज़ का बावला–अपने काम करवाने के लिये सब कुछ करने वाला । उ० इस समय वह गरज का बावला है, जो चाहो उससे करवा लो ।

ग़रज़ गाँठना–अपना मतलब सिद्ध करना । उ० अपनी गरज गाँठने को मनुष्य छोटो से भी मिलने को तैयार हो जाता है ।

ग़रज़ रखना–१. मेल-मिलाप रखना । उ० ऐसे नीच आदमी से गरज़ रखने की क्या ज़रूरत है ? २ मतलब रखना । उ० कुछ गरज़ न रखते तो यहाँ न आते ।

गरदन उठाना–१. विरोध करना । उ० मेरे सामने गरदन उठाने की हिम्मत नही है । २ क्रांति या बगावत करना ।

गरदन उड़ाना–गरदन काट कर मार डालना । उ० अगर ज़्यादा बोलोगे तो गरदन उड़ा दूंगा ।

गरदन ऐंठी रखना–अभिमान से भरा रहना उ० वह तो अपनी गरदन ऐंठी रखता है, जा अपने को क्या समझता है ?

गरदन ऐंठी रहना–१. अभिमान मे रहना । उ उनकी हर समय गरदन ऐंठी ही रहती है न मालूम अपने को क्या समझते हैं ? २. रूठ रहना ।

गरदन कटना या कट जाना–१. बुराई होना २. हानि होना । ३ अपमानित होना । उ तुम्हारे कारण आज मेरी गरदन कट गई ४ गला कटने मे मर जाना ।

गरदन काटना–१ अपमानित करना । उ तुमने तो मेरी गरदन काट ली । २. हानि पहुँचाना । उ० मेरी गरदन न काटो । ३ गल काट डालना । ४. बुराई करना ।

गरदन का बोझ–उत्तरदायित्व, कर्त्तव्य । उ यह तो तुम्हारी गरदन का बोझ है ।

गरदन छूटना–किसी ज़िम्मेदारी से छुट्टी पाना

गरदन झुकना–१ लज्जित होना । उ० उ दिन के बाद जब भी वह मेरे सामने आत है, मेरी गरदन झुक जाती है । २ नम्रत दिखलाई पडना ।

गरदन झुकाना–१ शर्मा जाना । उ० तुम्हे देख ही उसने गरदन झुका ली और तुम कह र थे, वह अच्छी तरह बात करती है । २ विनी या आज्ञाकारी होना । नम्र होना । उ० व गरदन झुका कर चलना है ।

गरदन ढलकना–१. मरना । २. मरने के करीब होना ।

गरदन ढलना–दे० 'गरदन ढलकना' ।

गरदन दबोचना–दबाव डालना ।

गरदन न उठाना–१ कमजोरी के कारण सर न उठाना । उ० आज महीनो से वह गरदन नहीं उठा रहा है । २. एतराज़ न करना, स लेना, विरोध न करना । उ० गरदन न उठाना नही तो समझ लूंगा । ३. लज्जित होना । उ अब तो वह गरदन नही उठा रहा है ।

गरदन नाचीज़ होना–जान का कुछ भी मूल्य न होना । उ० आपके लिए मेरी गरदन नाचीज है । उ० उसकी भी गरदन नाचीज समझने की चीज नही है ।

गरदन नापना–१. अपमान करना । उ० भरी सभा में उनकी गरदन नापना आपके लि

उचित न था। २. झुकना। उ० वह तुम्हारे सामने गरदन नापने को तैयार है।

गरदन नीची होना—शर्मिन्दा होना।

गरदन पकड़ कर करा लेना—जबरन करा लेना। उ० गरदन पकड़ कर कराना चाहे तो वह कर देगा, पर राजी राज़ी-ख़ुशी कभी न करेगा।

गरदन पकड़ कर निकालना—१. बेइज्ज़ती करके या गलबाही देकर बाहर करना। उ० अगर ज्यादा बोलोगे तो गरदन पकड़ कर निकाल दूंगा। २. ज़बर्दस्ती निकालना।

गरदन पर—ऊपर, जिम्मे। उ० इन सब बुराइयो का पाप तुम्हारी गरदन पर है।

गरदन पर छुरी फेरना—१. हानि पहुँचना। अनहित करना। उ० आपने अपने लाभ के लिए उसकी गरदन पर छुरी फेर दी। २. तग करना। ३. बुराई करना।

गरदन पर जुआ रखना—१, जिम्मेदारी लेना। जिसे कुछ फायदा है, वह गरदन पर जुआ रक्खे, हमसे क्या मतलब जो इस फेर मे पडें। २ जिम्मेदारी देना, सौपना। मेरी गरदन पर जुआ न रक्खो।

गरदन पर बोझ होना—१. सिर पर भार होना। ज़िम्मेदारी होना। उ० तुम्हारे सब काम का बोझ हमारी गदरन पर ही है। २ बुरा लगना, भारस्वरूप लगाना। उ० मै तुम्हारी गरदन पर बोझ हूँ, तो चला जाऊँ।

गरदन पर लेना—उत्तरदायित्व लेना। अस्वीकार करना, भार लेना। उ० मै इसे अपनी गरदन पर क्यों लूं ? क्या तुम्हारे कोई और नही है ?

गरदन पर सवार होना—पीछा न छोड़ना। उ० क्यों गरदन पर सवार हो, मै तुम्हारे साथ आज नही जा सकता।

गरदन फँसना—मुश्किल में पडना। उ० मेरी तो गरदन फँसी है, किसी तरह भी मुझे सौ रुपये का प्रबंध कर दो।

गरदन मरोड़ना—१. गरदन मरोड़ कर जान मार डालना। उ० रास्ते में किसी ने बेचारे की गरदन मरोड़ दी। २. दबाव डालना। उ० मेरी गर्दन मत मरोड़ो। यह काम मेरे वश का नहीं है। ३. कष्ट देना।

गरदन मारना—अहित करना।

गरदन में हाथ डालना—दे० 'गरदन में हाथ देना'।

गरदन में हाथ देना—१. अपमान करना। उ० खबरदार, गरदन में हाथ दिया तो ठीक न होगा। २. स्नेह दिखलाना। ३. गरदनिया देना, अर्द्धचंद्र देना। उ० तुम्हारी मजाल कि तुम गरदन में हाथ दो।

गरदन सही करना—गरदन पर थप्पड़ मारना। उ० ऐसी गरदन सही करूँगा कि उम्र भर याद रखोगे।

गरदन हिलने लगना—बहुत वृद्ध होना। उ० अब तो उसकी गरदन हिलने लगी है।

गरदन हिलाना—नाहीं करना। उ० तुम हर काम मे गरदन हिला देते हो, क्या हाँ करना सीखा ही नही।

गरदनिया देना—गरदन पकड़ कर बाहर निकाल देना।

गरम करना—१. क्रोधित करना। उ० उन को गरम करना मामूली बात है, जब चाहूँ झगड़ा करा दूं। २. उत्तेजित करना, उकसाना।

गरम खबर होना—बहुत चर्चा होना।

गरम मामला—१ नयी घटना। उ० अभी गरम मामला है, अगर कुछ बोलोगे तो बात बढ़ जायगी। २. सगीन मामला। उ० बड़ा गरम मामला है।

गरममिज़ाज—तुनकमिज़ाज। उ० खुदा बचाये इस गरम मिज़ाज से, मै तो इसके नजदीक भी नही जाता।

गरम हो उठना—गुस्सा हो जाना। उ० बात-बात पर गरम हो उठना तुम्हें शोभा नहीं देता।

गरमा-गरमी से—१ क्रोधित होकर। उ० मालूम हो रहा है, आप लोग गरमा-गरमी से बात कर रहे हैं। २ जोश से। उ० बड़ी गरमा-गरमी से काम हो रहा है। ३. तेजी से, जल्दी से।

गरमी छाँटना—अभिमान दूर करना। उ० अगर ज्यादा बकोगे तो अभी गरमी छाँट दूंगा।

गरमी निकालना—दे० 'गरमी छाँटना'।

गरियार बैल—१. दे० 'अड़ियल टट्टू'। २. वह बैल जो चलते-चलते बैठ जाय। उ० गरियार बैल कौन खरीदेगा ?

गरीबी आना–धनहीन होना। उ० गरीबी ने आकर मेरी सारी शान-शौक़त मिटा दी।

गर्क़ होना–१. लीन होना। उ० इस समय उससे बात मत करो। वह पढ़ने में गर्क़ हो रहा है। २. नष्ट होना। उ० तुम्हारा सारा गर्व गर्क़ हो जायगा।

गर्क़ी में आना या आ जाना–१. जल-मग्न होना। उ० इस वर्ष नदियों के किनारे के सभी गाँव गर्क़ी में आ गये। २. नष्ट होना। उ० उनका विरोध न करो, नहीं तो तुम भी गर्क़ी मे आ जाओगे।

गर्द उड़ना–नष्ट हो जाना।

गर्द उड़ा देना–नष्ट कर देना।

गर्द उड़ाना–बरबाद करना। उ० डाकुओं ने बहुत से गाँवों की गर्द उड़ा दी।

गर्द को न पहुँचना–मुक़ाबिला न कर सकना। उ० आपका घोड़ा मेरे घोड़े की गर्द को भी नहीं पहुँच सकता।

गर्द झड़ना–साधारण रूप मे पीटा जाना, ऐसा पीटा जाना जो कुछ ज्ञात न हो। उ० उस दिन तो गर्द झड़ी, आज पीटे जाओगे।

गर्दन झुकाना–१. नम्र होना। उ० मेरे सामने क्या अमीर क्या ग़रीब, सभी गर्दन झुका लेते है। २ हार मानना।

गर्दन टीपना–गला दबा कर जान मार डालना। उ० बहुत बनोगे तो गर्दन टीप दूंगा।

गर्दन पर छुरी फेरना–१. अत्याचार करना। उ० इन गरीबों की गर्दन पर छुरी फेर कर क्यो इनकी आह ले रहे हो? २. बहुत बड़ी हानि करना। उ० मित्र, तुमने मेरी भी गर्दन पर छुरी फेर दी।

गर्दन पर सवार होना–पीछे-पीछे लगा रहना। उ० हम लोगों का मास्टर हर समय गर्दन पर सवार रहता है तनिक भी खेलने का मौक़ा नही देता।

गर्दन रेतना–अहित करना। उ० मेरी गर्दन रेतोगे तो ठीक न होगा।

गर्दनिया देना–दे० 'अर्द्धचन्द्र देना'।

गर्द फाँकना–इधर-उधर बेकार घूमना। उ० क्यो गर्द फाँकते हो, क्या इसी तरह जीवन बिताने का विचार है?

गर्द भी न पाना–तनिक भी समान न होना, तुलना में न ठहर सकना।

गर्द से अटना–गर्द से भर जाना। उ० यह सड़क इतनी खराब है कि इस पर से एक बार भी जाना हो तो सारे कपड़े गर्द से अट जाते हैं।

गर्द होना–१. चौपट होना। उ० तुम्हारे साथ घूम कर वह भी गर्द हो गया। २. तुच्छ होना, बेकार होना। उ० यह सब तो गर्द है।

गर्दिश आना–विपत्ति आना, बुरे दिन आना। उ० राम-नाथ पर ऐसी ग़र्दिश आयी कि घर-द्वार सब बिक गया।

गर्म-सर्द उठाना–सुख-दुःख सहना। भले-बुरे दिन काटना। उ० इसी उमर मे गर्म-सर्द सब उठा चुका हूँ।

गर्म-सर्द देखना–दे० 'गर्म-सर्द उठाना'।

गर्म-सर्द सहना–दे० 'गर्म-सर्द उठाना'।

गर्म साँस छोड़ना–निराशा-भरी आह लेना।

गल गाजना–१ प्रसन्न होना। उ० बहुत गल गाज रहे हो। २. अठखेलियाँ करना।

गल जाना–बेकार मे व्यय होना। उ० आने-जाने मे सैकड़ो रुपये गल गये।

गलती में पड़ना–भ्रम में पड़ना। उ० मैंने गलती में पड़ कर यह सब कर दिया है, वर्ना कभी न करता।

गलफटाकी करना–अपनी बड़ाई आप करना। उ० आप अपने को क्या समझते है जो सदा गलफटाकी किया करते है।

गलबहियाँ डालना–प्रेम से गले मे हाथ डाल कर मिलना। उ० आपका गलबहियाँ डालना मुझे खतरनाक मालूम होता है।

गला उतरना–गरदन कटना।

गला काटना–१. अत्याचार करना। उ० मित्र, मेरा गला क्यों काट रहे हो, मैंने तो कभी तुम्हारी बुराई भी नही की। २. सर को धड़ से अलग करना। बहुत कष्ट देना। ४. बहुत बड़ा नुकसान, अहित या बुराई करना। उ० मैं यदि जानता कि तुम मेरा गला काटोगे तो तुम्हारे पास स्वप्न मे भी न आता।

गला खुलना–१ गला साफ़ होना। २. गला मधुर होना। ३. बात मुंह से निकलना।

गला घुंटना–साँस रुक-रुक कर आना। उ० आज उसका गला घुंट रहा है, अब वह न बचेगा।

गला घोंटना–गला दबाकर हत्या कर डालना। उ० जी चाहता है कि इस नीच का गला घोट दूं। न रहेगा, न ऐसा काम करेगा।

गला छुटाना–दे० 'गला छुड़ाना'।

गला छुड़ाना–१ छुटकारा पाना। उ० मैं तो किसी तरह उससे गला छुड़ाना चाहता हूँ। २. मुक्ति या छुटकारा दिलाना। उ० मेरा गला किसी तरह छुड़ा दो तो जिंदगी भर गुलामी करूँ।

गला छूटना–झंझट मिटना। झंझट से निकलना। उ० लो, अब तुम्हारा भी गला छुटा।

गला टीपना–दे० 'गला घोंटना'।

गला दबाना–दे० 'गला घोंटना'।

गला फँसना–लाचार होना। उ० मेरा गला फँस गया है। नही तो मैं कभी भी यह काम नहीं करता।

गला फँसाना–१. बंधन मे डालना। उ० हमारा गला फँसा कर आप छुटकारा पा गये। २ जान-बूझकर किसी आफ़त में पड़ना। उ० तुमने तो नाहक ही अपना गला फँसाया।

गला फाड़ना–चिल्लाना, बहुत ज़ोर से बोलना। उ० क्यों बेकार में गला फाड़ रहे हो?

गला बँधना–१. शादी से बन्धन मे पड़ना। उ० अभी खेल लो जब गला बँध जायगा, तब सब खेल भूल जायेगा। २. बधन मे पड़ना।

गला बाँध कर धन जोड़ना–खाने-पीने की तकलीफ़ सहकर भी रुपये जमा करना। उ० यह धम कही सेंत का थोड़े मिला है, जो आप माँग रहे हैं। गला बाँध कर जोड़ा गया है।

गला भर आना गला भर्रा आना–भावातिरेक के कारण आवाज़ भारी हो जाना या न बोल पाना।

गला मरोड़ना या मरोड़ देना–दे० 'गला ऐंठना'। उ० उसने मेरी बिल्ली का गला मरोड़ दिया।

गला रेतना–१. अधिक कष्ट देना। उ० क्या गला रेत रहे हो, इससे तो अच्छा जान से ही मारना होता। २. बहुत नुक़सान पहुँचाना। उ० तुमने तो मेरा गला रेत दिया। ३. मार डालना, गला काट देना। उ० उसका तो किसी ने गला रेत दिया है।

गली कमाना–गली साफ करना। उ० आज चार दिनों से गली कमाई नही गई।

गली-गली छानना–दे० 'गली-गली फिरना'।

गली-गली फिरना–बिना प्रतिष्ठा के इधर-उधर घूमना। मारे-मारे फिरना। उ० यही तो संसार है। कल तक वे यहाँ के सरताज थे और आज गली-गली फिरते हैं।

गली-गली मारे-मारे फिरना या ठोकर खाना–बेकार और बेइज्ज़त इधर-उधर घूमना। उ० गली-गली मारे-मारे फिरना तुम्हारे ऐसे निकम्मों का काम है, हम इसे पसन्द नही करते।

गली झँकाना–व्यर्थ मे इधर-उधर परेशान करना। उ० अगर गली ही झँकाना था तो घर ही पर क्यों नही जवाब दे दिया।

गले उतरना–दे० 'गले के नीचे उतरना।

गले का ढोल या ढोलना–१. गले का बोझ। २. बहुत प्यारा। उ० वह तुम्हारे ही गले का ढोलना है, मै तो देखना भी नहीं चाहती।

गले का हार–१. बहुत प्यारा। उ० मै घर मे सबके गले का हार हूँ। २. जी न छोड़ने वाला। उ० आप मेरे गले का हार न बनें।

गले के नीचे उतरना–समझ में आना, समझ में बैठना। उ० उसे यह बात मैने बहुत समझाई, पर उसके गले के नीचे न उतर सकी।

गले पड़ना–जी को लगना। उ० जब वह गले पड़ने लगा तो उसे भी साथ रखना ही पड़ा।

गले पर छुरी चलाना या फेरना–१. बहुत नुक़सान पहुँचाना। उ० क्यो गरीबों के गले पर छुरी फेरते हो? २. मारना। ३. गला काटना।

गले बाँधना–इच्छा के खिलाफ़ देना। जबर्दस्ती देना। उ० क्यो आप इसे मेरे गले बाँध रहे है, मैं इसे हर्गिज़ नही ले जा सकता।

गले मढ़ना–१. इच्छा के खिलाफ़ शादी कर देना। उ० भाई ऐसी अनपढ़ स्त्री क्यों मेरे मढ़ रहे हो? २. किसी के ज़िम्मे देना। उ० इस चीज़ को मेरे गले मत मढ़ो। ३. आदत देना। उ० तुमने ही तो यह नशा मेरे गले मढ़ा तो फिर खरीदने को पैसे कौन देगा?

गले मिलना–आपसी मनमुटाव दूर होना या दूर करना। उ० ये दोनों कल तो सिर-फुटौवल कर रहे थे और आज गले मिल रहे हैं।

गले में जंजीर या तौक़ पड़ना–१. शादी हो जाना। उ० मित्र गले में जंजीर पड़ गई, अब कुछ कमाना ही होगा। २. बंधन में पड़ना।

गले में थूक अटकना–कह न पाना।

गले लगना–गले मिलाना। उ० हम-आप बहुत दिनो पर गले लगे है। गले लगना तो दूर रहा, उसने बात तक न की।

गले लगाना–प्रेम करने लगना। प्रेम करना। उ० असली साधू बनना चाहते हो तो दोनो को गले लगाओ।

गले से उतारना–रद्दी भोजन से पेट भरना, निगलना। उ० दो कौर गले से उतारने भी कठिन है, इस होटल मे।

गश्त जाना–चक्कर लगाने या घूमने की ड्यूटी पर जाना। उ० आज गश्त जाओगे या नही? सिपाही गश्त गया है।

गश्त मारना–चक्कर लगाना। उ० आजकल रात में पुलिस वाले खूब गश्त मार रहे है।

गश्त लगाना–दे० 'गश्त मारना'।

गस्सा मारना–कौर खाना। उ० दो गस्सा तुम तुम भी मार लो। पता नही फिर कब मिले?

गहकी पटना–सौदा तय होना। उ० गहकी पट गया, कल मेरा माल बिक जायगा।

गहकी काटना–ग्राहक को बहका कर न खरीदने देना। उ० अगर मेरा गहकी काटा तो तुम्हारा गला काट दूंगा।

गहरा असामी–अधिक देने वाला। उ० यह गहरा असामी है, इससे खूब रुपये चूसा।

गहरा पेट–१. बात हज़म करने वाला आदमी। २. रुपये लेकर न देने वाला। ३. कोई भी चीज लेकर न लौटाने वाला। ४ बहुत खाने वाला।

गहरा रंग पकड़ना–बात का और बढ़ता ही जाना। उ० मामला गहरा रंग पकड़ता जा रहा है।

गहरा हाथ पड़ना–काफ़ी धन मिलना। उ० इस बार गहरा हाथ पड़ा है, दो-चार पुश्त के लिये काफ़ी होगा।

गहरा हाथ मारना–कही से काफ़ी धन या सामान उड़ा लेना। उ० पहले तो वह चोर था, पर अब डाकू हो गया और गहरे हाथ मारता है।

गहरा हाथ लगाना–दे० 'गहरा हाथ मारना'।

गहरी घुटना–दे० 'गहरी छनना'।

गहरी घोटना–दे० 'गहरी छानना'।

गहरी चाल चलना–गहरा धोखा देना, बहुत छल करना।

गहरी छनना–१. खूब मित्रता होना। उ० उन दोनो मे गहरी छनती है। २. छक कर भंग का पिया जाना। उ० आज तो खूब गहरी छनी है।

गहरी छानना–खूब मजे मे भाँग छानना, छक कर भाँग पीना। उ० आजकल खूब गहरी छानते हो।

गहरी निगाह–पैनी दृष्टि।

गहरी नींद सोना–पूर्णतः या प्रगाढ़ निद्रा में सोना। उ० जब आप बुला रहे थे, मैं गहरी नींद सो रहा था।

गहरी बात–भेद की या ऊँची बात। उ० यह बहुत गहरी बात है, तुम्हारी समझ मे नही आयेगी।

गहरी रक़म–बहुत बड़ी रकम।

गहरी साँस लेना–दे० 'ऊँची साँस लेना'।

गहरे उतरना–१ किसी बात को गंभीरता से सोचना। उ० जरा गहरे उतरो तो समझोगे। २ बहुत गभीर चीज कहना या लिखना। उ० आजकल बहुत गहरे उतर रहे हो।

गहरेबाज़–बहुत तेज़ ताँगा या घोडा चलाने वाला। उ० यह आदमी यहाँ का प्रसिद्ध गहरेबाज़ है।

गहरे लोग–बहुत चालाक़ लोग। मक्कार लोग। उ० वे गहरे लोग है, उनसे मैत्री न करने मे ही कुशल है।

गाँगू होना–प्रत्येक काम में देर करने वाला होना। उ० तुम तो गाँगू हो, यह जल्दी का काम है, कोई और जायगा।

गाँठ उखड़ना–शरीर के किसी अंग का अपने जोड़ के स्थान से हट जाना। उ० कुश्ती मे मेरी गाँठ उखड़ गई है।

गाँठ कतरना–१ जेब काटना। उ० गाड़ी में आज किसी ने मेरी गाँठ कतर कर ५०० रु० ले लिये। २. गठरी मारना। ३. धोती के फेटे आदि कतर कर रुपया ले लेना।

गाँठ करना–१. दे० 'गाँठ पकड़ना'। २ मन-मुटाव करना। उ० व्यर्थ के लिए उससे गाँठ न करो। ३. बटोरना, इकट्ठा करना। उ० इधर-उधर से काफ़ी गाँठ कर लिया है।

गाँठ कर रखना—याद रखना । उ० तुम उनकी बात गाँठ कर रखना, कभी बदला अवश्य लिया जायगा ।

गाँठ का खोना—अपना रुपया बर्बाद करना । उ० रोजगार मे गाँठ का न खोना और चाहे जो हो ।

गाँठ काटना—दे० 'गाँठ कतरना' ।

गाँठ का पूरा—धनी, रुपये वाला । उ० है तो यह आदमी गाँठ का पूरा, अगर किसी तरह फँस जाता तो मज़ा आ जाता ।

गाँठ का पूरा आँख का अंधा—धनी परंतु मूर्ख । उ० तुम तो बैठे-बैठे किसी गाँठ के पूरे तथा आँख के अंधे को चाहते हो कि तुम्हें पैसे मिलने लगें ।

गाँठ का पक्का—कंजूस, सावधान । उ० साथ तो ले जा रहे हो उसे, पर वह गाँठ का पक्का एक पैसा भी खर्च नही करेगा ।

गाँठ का पैसा—अपने पास का धन । उ० गाँठ का पैसा खर्च करने मे सबको कष्ट होता है ।

गाँठ खुलना—१ समस्या का सुलझना या हल होना । उ० गाँठ खुल गई, अब मै इस काम को ठीक कर लूंगा । २. मनमुटाव दूर होना ।

गाँठ खोलना—१ अड़चन दूर करना । उ० इस गाँठ को खोलना मामूली बात है, पर उन लोगो की समझ में ही नही आ रहा है और मुझे बोलने नहीं देते । २. मनमुटाव दूर करना ।

गाँठ-गिरह में होना—पास होना, पल्ले में होना । उ० रुपये गाँठ-गिरह में हों तो अभी दे दूं, मगर जब है नही तो क्या करूँ ?

गाँठ पकड़ना या पकड़ जाना—१ जम जाना । उ० तुम्हारा कहना उसके मन में गाँठ पकड़ गया है । २ बुरा लगना । उ० मेरी बाते तुम्हारे दिल मे क्यो नही गाँठ पकडती है ?

गाँठ पड़ना—मनमुटाव हो जाना । अनबन होना । उ० उन दोनो में गाँठ पड गई है ।

गाँठ पर गाँठ पड़ना—बहुत मनमुटाव हो जाना । उ० उनसे हमसे गाँठ पर गाँठ पड रही है, देखे क्या होता है ?

गाँठ बाँधना—१. न भूलना, याद रखना । २. न भूलने के लिए धोती, रूमाल या अँगोछे में गाँठ बाँधना । उ० अभी गाँठ बाँधे लेता हूँ, नही शायद फिर भूल जाऊँ ।

गाँठ में ज़र बाँध कर रखना—रुपये को बहुत एहतियात से रखना । धन को बचाकर और बहुत छिपाकर रखना ।

गाँठ में ज़र या पैसा होना—नकद रुपये पास होना । धनी होना ।

गाँठ में बाँधना—सर्वदा याद रखना । उ० यदि इस काम मे सफल होना चाहो तो मेरी सीख गाँठ मे बाँध लो ।

गाँठ में रखना—१. धनी होना । उ० गाँठ मे कुछ रखता हूँ, यों ही नही खरीदने आया ।

गाँठ में होना—पास में होना । उ० जब तक पैसा गाँठ में है, खूब मौज कर लो, फिर तो भीख माँगना ही है ।

गाँठ रखना—मन में जलन रखना । उ० मैं जानता हूँ कि तुम मुझसे गाँठ रखते हो ।

गाँठ से—अपने पास से । उ० गाँठ से इस काम मे मैं कुछ नही लगा सकता ।

गाँठ से जाना—अपनी हानि होना । उ० रुपये आपकी गाँठ से तो गए नही कि अफ़सोस कर रहे है ।

गाँड़ की खबर न होना—बेसुध होना ।

गाँड़ खोल देना—दब कर बात मान लेना ।

गाँड-गरदन एक होना—बुरी तरह थकना, खूब पिटना । उ० तुम्हें मजाक सूझता है, यहाँ गाँड़-गरदन एक हो रही है ।

गाँड़ जलना—बुरा लगना ।

गाँड़ चाटना—चापलूसी करना ।

गाँड़ दिखाना—पीठ दिखाना । उ० कुछ तो सोचो-पहले ही दिन गाँड दिखा रहे हो ।

गाँधी बनना—सच्चा और अहिंसक बनना । उ० गाँधी बनने वाले तो कांग्रेस मे बहुत हैं, पर सचमुच कोई नही है ।

गाँस निकालना—शत्रुता साधना । उ० अब वक्त आया है, गाँस निकाल लो ।

गाँस में करना—वश मे करना । उ० मैंने सबको गाँस मे कर लिया है । अब किसी की चूँ करने की मजाल नही ।

गाँस में रखना—दे० 'गाँस मे करना' ।

गाउँज-माउँज करना—एक मे मिला देना । उ० क्यों सारा सामान गाउँज-माउँज करते हो ?

गाज गिरना—बिजली गिरना, बुरा होना । उ० क्यो न महल पर गाज गिरे झोंपड़ी तड़पती ?

गाज पड़ना–दे० 'गाज गिरना'।

गाजर-मूली समझना–तुच्छ समझना। उ० आप मुझे गाजर-मूली न समझें। जिस दिन खड़ा हूँगा, हुलिया बिगड़ जायगी।

गाड़ी काटना–१. चलती गाड़ी मे से कुछ चुरा लेना। २. पूरी गाड़ी मे से किसी एक या कुछ डिब्बो को अलग करना।

गाड़ी को देखकर पाँव फूलना–सहारा पाकर हिम्मत छोड़ना। सवारी देख कर थकने लगना।

गाड़ी छूटना या छूट जाना–गाडी न पकड पाना। [अंग्रेजी मुहावरे के अनुवाद 'गाड़ी पकड़ना' के 'पकडना' का उलटा 'छूटना' यह स्पष्ट करता है कि इस पर भी अंग्रेजी छाप है।] उ० जाते-जाते गाड़ी छूट गई। अब क्यों जाते हो, गाडी छूट जायेगी।

गाड़ी पकड़ना–ठीक वक्त पर स्टेशन पर पहुँच कर गाड़ी पर चढना। [यह अंग्रेजी मुहावरा To Catch the Train का अनुवाद है] उ० जल्दी करो, आज गाडी जरूर पकडनी है।

गाडी भर–बहुत ज्यादा, ढेर सा। उ० गाडी भर मै कहाँ से हूँ?

गाढ़ पड़ना–मुसीबत पडना। उ० मित्र वही है जो गाढ पडने पर काम आये।

गाढ़ा प्रेम–अत्यधिक स्नेह।

गाढ़ा रंग चढ़ना–बहुत प्रभाव होना।

गाढ़ा समय–बुरे दिन।

गाढ़ी छनना–१ खूब गहरी दोस्ती होना। उ० उन दोनो मे अब तो गाढी छनती है। २ खूब गाढी भाँग बनायी जाना। उ० आज तो गाढी छनी है, इसका मजा भी ले लो।

गाढ़े का संगी–दे० 'गाढे का साथी'।

गाढ़े का साथी–कष्ट मे दोस्ती निभाने वाला। मुसीबत मे सहायता करने वाला। उ० आप मेरे गाढे के साथी है।

गाढ़े दिन–कष्ट का समय। उ० भाई कुछ रुपया बचाते चलो, वही गाढे दिन में काम आयेगा।

गाढ़े बैठना–घात मे बैठना, छिप कर किसी मौके की ताक मे चुपचाप बैठना।

गाढ़े की कमाई–बहुत परिश्रम से कमाया हुआ पैसा। उ० भाई, यह पिताजी की गाढे की कमाई है, इसे बहुत समझ-बूझ कर खर्च करना।

गाढ़े पड़ना–विपत्ति में पड़ना।

गात से होना–गर्भ रहना। उ० वह बहुत दिनों पर गात से हुई है, जरा उसे हिफ़ाजत से रखना।

गाती बाँधना–बच्चों आदि के गले में सर्दी आदि से बचाने के लिए छोटा दुपट्टा बाँधना।

गाती मारना–दे० 'गाती बाँधना'।

गाती लगाना–दे० 'गाती बाँधना'।

गाद बैठना–तलछट का नीचे इकट्ठा होना।

गाभ डालना–गर्भ गिराना। उ० उस व्यभिचारिणी स्त्री ने किसी तरह गाभ डाल ही दिया।

गामा बनना–पहलवान बनना। हर वक्त कसरत आदि करते रहना। उ० केवल गामा ही बनने के फेर में न रहो, कुछ पढो भी।

गाय की तरह काँपना–बहुत भयभीत हो जाना। उ० उसकी स्त्री उसे देख कर गाय की तरह काँपती है।

गाय को बछिया तले बछिया को गाय तले करना–१. इधर का उधर करना। उ० चतुर आदमी गाय को बछिया तले बछिया को गाय तले करके अपना काम निकाल लेते है। २ गडबड करना। उ० गाय को बछिया तले और बछिया को गाय तले मत करो।

गायब करना या कर देना–चुरा लेना। उ० मेरी कमीज यही पर किसी ने गायब कर दी।

गाय होना–बहुत सीधा होना। उ० वह बेचारी तो गाय है। जो उसका बुरा ताकेगा, वह भगवान से बैर लेगा।

गारद करना–तहस-नहस करना। उ० सन् ४२ मे अंग्रेजो ने कुछ गाँवो को ऐसा गारद किया कि अभी तक नही सुधरे।

गारद बैठना–पहरा बैठना, पहरे के लिए पुलिस आदि का बैठना।

गारद बैठाना–पहरा बैठाना। उ० चोर को पकड़ने के लिये पुलिस ने गाँव के चारो तरफ़ गारद बैठा दी है।

गारद में डालना–जेलखाने मे रखना। उ० गारद में डालने से वह खुश ही रहता है, क्योंकि कम से कम दोनों वक्त भोजन तो मिल जाता है।

गाल करना–१. डींग हांकना । उ० यहाँ गाल न करो, मै तुम से अपरिचित नहीं हूँ। २. गाली-गलौज बकना।

गाल तोड़ना–ज़बर्दस्ती चुम्बन लेना।

गाल पर गाल चढ़ना–खूब मोटा-ताज़ा होना। उ० अगर तुम ऐसे माल खाओगे तो एक माह मे तुम्हारे गाल पर गाल चढ़ जायेंगे।

गाल पिचकना–कमज़ोर होना। उ० चार ही दिन की बीमारी में तुम्हारे गाल पिचक गये।

गाल फुलाना–रूठना। उ० क्यो गाल फुलाये हो, कुछ कहो भी तो ?

गाल बजाना–बढ़-बढ कर बात करना। उ० क्या गाल बजा रहे हो ? तुम जितने मे हो, मै खूब जानता हूँ।

गाल मारना–दे० 'डींग हाँकना'।

गाल में जाना–मुँह मे जाना। उ० गाल में जाने से उसका स्वाद मालूम होगा, इस तरह देख कर मै क्या बताऊँ ?

गाल सुजाना–दे० 'गाल फुलाना'।

गाल सेंकना–गाल पर मारना। उ० यदि कहना नही मानोगे तो दोनो गाल सेक दूँगा।

गालियों का झाड़ बाँधना–बहुत गालियाँ देना। लगातार गालियाँ देना।

गालियों की बौछार करना–दे० 'गालियो का झाड बाँधना'।

गालियों पर उतरना–गालियाँ देना। उ० जब बातों से काम न चला तो गालियो पर उतर आये।

गालियों पर जबान खोलना–देखिए नीचे।

गालियों पर मुख खोलना–गाली देनी शुरू करना। उ० गालियो पर मुख न खोलो, शरीफ़ आदमी की तरह बात करो।

गाली खाना–गाली सुनना। उ० मैने तुमसे पहले ही कहा कि अगर वहाँ जाओगे तो गाली खानी पड़ेगी।

गाली पड़ना–गाली का सच्चा होना, शाप पडना। उ० मैं ऐसा-वैसा आदमी नही हूँ, मेरी तो गाली पड़ती है।

गालों में चावल भरना–चबा-चबा कर बाते करना। मठार-मठार कर बातें करना। उ० वो एक दिन था कि मेरे आगे फ़रिश्तों की भी न दाल गलती, भरे हैं गालों में अब तो चावल, करें वो बातें चबा-चबा कर।

गावखुर्द होना–१. नष्ट-भ्रष्ट होना। उ० दो-चार वर्ष में वे सब गावखुर्द हो गये। २. गायब होना। उ० वह कहाँ गावखुर्द हो गया ?

गिटकिरी लेना–गाते-गाते आवाज़ लहरा देना। उ० मर गया मैं तो गिटकिरी ऐसी, तू ने ऐ बुलबुल सहर ली है।

गाह-गाहे–गाहे-बेगाहे, वक़्त-बेवक़्त, ज़रूरत पड़ने पर। उ० पास करना अगर पसंद नहीं, गाह-गाहे निगाह तो रखिए।

गिटपिट करना–१. ग़लत अंग्रेजी बोलना। उ० क्या गिटपिट कर रहे हो, अगर न आता है तो अंग्रेज़ी मत बोलो। २. अंग्रेज़ी बोलना। उ० साहब लोग गिटपिट कर रहे थे, मैं मूर्ख आदमी भला क्या समझता ?

गिन-गिन कर दिन काटना–बहुत दुःख से दिन गुज़ारना। उ० भाई क्या करूँ, गिन-गिन कर दिन काट रहा हूँ। इससे अच्छा तो मर ही जाना है।

गिन-गिन कर देना–१. बहुत भला-बुरा कहना। उ० मैने तो ऐसी गिन-गिन कर दी कि रोने लगे। २ एहतियात से देना। उ० यों मत फेक देना, गिन-गिन कर देना।

गिन-गिन कर पैर रखना–सावधानी से रहना या चलना। उ० इस नगर मे रहना हो तो पैर गिन-गिन कर रखो।

गिन-गिन कर लगाना–बहुत मारना। जूते से खूब मारना। उ० अगर फिर गलती करोगे तो गिन-गिन कर लगाऊँगा।

गिन-गिन कर सुनाना–दे० 'गिन-गिन कर देना'।

गिनती कराने के लिए–कहने-सुनने भर को, नाम को। उ० गिनती कराने के लिए वह हमारा भाई है।

गिनती का होना–योग्य समझा जाना। उ० इतनी बड़ी सभा में गिनती का होना बड़े भारी विद्वानों का काम है।

गिनती के–१. थोड़े। उ० गिनती के ही तो सामान है, इसी बार लेते जाओ। २. बड़े, ऊँचे। उ० इस सभा में गिनती के विद्वान् आने वाले हैं।

गिनती गिनाने के लिए–दे० 'गिनती कराने के लिए'।

गिनती पर जाना—हाज़िरी देने जाना । उ० तुम गिनती पर क्यो नहीं जाते हो ?

गिनती में न होना—पूछ न होना, महत्त्वहीन होना ।

गिनती में होना—किसी श्रेणी में समझा जाना । उ० यही क्या कम बात है कि आप गिनती मे हो गये ? कल तक तो आपको कोई जानना भी नही था ।

गिनती होना—१. गणमान्य समझा जाना, बडे लोगों मे गिना जाना । उ० अब तो उसकी भी गिनती होने लगी, वह मेरे घर क्यो आए ? २ किसी विशेष वर्ग या सप्रदाय मे समझा जाना । उ० उसकी गिनती चोरों मे होती है ।

गिने-गिनाये—बहुत थोडे । उ० मेरे यहाँ शादी मे गिने-गिनाये लोग आये थे । गिनी-गिनायी तो पुस्तके हैं, उनमे से कुछ तुम भी ले जाना चाहते हो ।

गिरगिट की तरह रंग बदलना—बहुत जल्दी-जल्दी विचार बदलना । उ० वह गिरगिट की तरह रंग बदलता है, उसकी बातों का क्या विश्वास ?

गिरते-पड़ते—ज्यो-त्यों, किसी तरह । उ० समय तो नही है, पर शादी मे गिरते-पडते पहुँच ही जाऊँगा ।

गिरफ्त करना—ऐब निकालना । उ० हर एक वस्तु मे गिरफ्त करना ठीक नही है ।

गिरफ्त में लेना—वश मे करना । उ० अब उसे गिरफ्त मे ले आया हूँ, जो करना चाहो, करा लो ।

गिरह का बल होना—रुपये-पैसे का अभिमान होना । उ० तुम्हारा जो गिरह का बल है, दो दिन मे समाप्त हो जायगा ।

गिरह लगाना—गाँठ बाँधना, निश्चित रूप से प्रण कर लेना । उ० इस काम को न करने का गिरह लगा लो ।

गिरे दिन—दरिद्रता या दुर्दशा का समय । उ० मेरे गिरे दिन है ।

गीत गाना—१. प्रशसा करना । उ० आप सर्वदा उन्ही के गीत गाया करते है । २ खुशी मनाना । उ० वह तो गीत गा रहा है और आप रो रहे हैं ।

गीदड़ बोलना—१. अशुभ शकुन होना । उ० मेरे गाँव में आज चार दिन से रोज गीदड़ बोलते हैं, अवश्य कोई अशुभ बात होगी । २. उजाड़ होना । उ० आजकल उस पुराने गाँव मे गीदड़ बोलते हैं ।

गीदड़-भभकी—सिर्फ़ डराने के लिए डाँट या कोई बात । उ० आपकी गीदड़-भभकी से मै नही डर सकता ।

गीदड़ होना—दे० 'सियार होना' ।

गीली कहानी—करुण कहानी ।

गीली आँख—रोते नेत्र ।

गुड़ खाना गुलगुलों से घिनाना—१ कोई बड़ी बुराई करना और छोटी बुराई से बचना । २. किसी कार्य का बडा अश करना और छोटे से दूर रहना । ३ किसी कम हानिकारक चीज को बचाना और ज्यादा हानिकारक को खाना ।

गुड़ खाना गुलगुलों से परहेज करना—दे० 'गुड खाना गुलगुलों से घिनाना' ।

गुड़-गोबर कर देना—बना-बनाया काम बिगाड देना । उ० आपने यहाँ आकर सारा गुड गोबर कर दिया ।

गुड़ दिये मरने वाले को जहर देना—आसानी से काम निकलने वाला हो, फिर भी सख्ती करना । उ० उससे एक बार माँगो, पहले ही पीटने की आवश्यकता नहीं । गुड दिए मरने वाले को जहर क्यो दे ?

गुड़ होगा तो मक्खियाँ बहुत आ जायँगी—माल होगा तो चखने वाले अपने आप आ जायँगे । कोई चीज होगी तो उसकी जरूरत वाले अपने आप पहुँचेगे ।

गुड़िया-सी—अतीव सुन्दरी । उ० गुड़िया-सी बीबी घर मे है, फिर भी तुम आवारागर्दी करते हो ।

गुड़ियों का खेल जानना—बहुत आसान काम समझना । उ० मै तो इसे गुडियो का खेल जानता हूँ, आप भले ही कठिन समझे ।

गुड़ियो का खेल समझना—दे० 'गुड़ियो का खेल जानना' ।

गुड़ियों का ब्याह—बहुत छोटी लड़कियो का विवाह । उ० हमारे यहाँ छोटी जातियो मे गुडियो का ब्याह होता है ।

गुड्डा बाँधना—निंदा करना । उ० उनका गुड्डा मत बाँधो ।

गुण गाना—बडाई करना । उ० अपने मालिक का गुण गाना तुम्हारा कर्त्तव्य है ।

गुण मानना—कृतज्ञ होना। उ० मैं क्या आपका गुण मानूं, आपने मेरा कौन-सा काम किया है?

गुदड़ी का लाल—१. देखने में मूर्ख पर भीतर से योग्य। उ० अरे यह तो गुदड़ी का लाल है। रहता तो है मूर्ख की तरह, पर है बहुत बड़ा विद्वान्। २. साधारण या बुरी जगह में असाधारण चीज़। उ० यह चमार का बेटा गुदड़ी का लाल है!

गुद्दी नापना—सिर के पीछे थप्पड़ मारना। उ० ऐसी गुद्दी नापी कि जीवन भर याद रहेगी।

गुद्दी में आँखें होना—१ देख कर काम न करना। उ० सामने चीज है और ठोकर मारते हो। क्या आँखे गुद्दी में है कि नही देखते? २ मूर्ख होना। उ० उसकी आँखे तो गुद्दी में है, तभी तो उससे कोई भी काम ठीक नही होता।

गुद्दी से जीभ निकालना—गुद्दी से जीभ निकाल लेने की धमकी देना। बहुत कड़ी सज़ा देना। उ० अगर फिर कभी ऐसी ग़लती करोगे तो गुद्दी से जीभ निकाल लूँगा।

गुनाह बख़शना या बख़श देना—क्षमा करना। उ० हे खुदा! मेरे गुनाहों को बख्श दो।

गुनाह बेलज्ज़त होना—व्यर्थ मे कोई पाप या बुरा काम करना।

गुफा में बैठना—सन्यास या फ़क़ीरी लेना।

गुम करना—लापता करना। उ० मेरी चीज़ों को कौन गुम करता है?

गुम-सुम बैठना—कुछ न बोलना-चालना। चुपचाप बैठा रहना। उ० क्या गुम-सुम बैठे हो, जाकर कुछ काम करो: जो हुआ सो हुआ।

गुरूघंटाल होना—१. बहुत होशियार तथा चालबाज होना। उ० आप ही तो इन सब मे गुरूघंटाल है, भला आप न जानेंगे तो कौन जानेगा? २ बदमाशों का सरदार होना।

गुरू होना—१. चालबाज़, धूर्त या मक्कार होना। [यह बनारस मे विशेषतः प्रयुक्त होता है।] २ ज्ञानी होना।

गुर्गे छूटना—खुफ़िया लगना। पता लगाने वालों का हर जगह घूमना। उ० इस चोरी का पता लगाने के लिये चारो तरफ़ गुर्गे छूटे है, देखे कब तक पता लगता है?

गुर्गे छोड़ना—सी० आई० डी०, गुप्तचर या खुफ़िया छोड़ना। उ० तुम्हारे पीछे गुर्गे छोड़े गए हैं।

गुर्गे लगाना—दे० 'गुर्गे छोड़ना'।

गुर्गे होना—दे० 'गुर्गे छूटना'।

गुर्दा तोड़ना—घमंड चूर-चूर करना।

गुर्दा होना—हिम्मत होना।

गुर्रा करना—१. टालमटोल करना। उ० क्या आप गुर्रा कर रहे है, अगर नही देना है तो साफ़ इन्कार कर दीजिये। २ अवकाश देना। उ० अब गुर्रा कर दो नहीं तो देर होगी। ३. नागा करना। उ० कल गुर्रा मत करना।

गुर्रा देना—दे० 'गुर्रा करना'।

गुल बताना—दे० 'गुर्रा करना'।

गुल कतरना—१. दीपक की बत्ती का जला भाग काटना। उ० मालूम होता है, तुमने गुल नहीं कतरा, इसी से रोशनी ठीक नही हो रही है। २ कपड़े या काग़ज़ का बेल-बूटा बनाना। उ० वह गुल कतरना बड़ा अच्छा जानता है। ३. कोई विचित्र काम करना। उ० उसने तो गुल ही कतर दिया।

गुल करना—दीपक बुझाना। उ० जब सोने जाना तो चिराग गुल कर देना।

गुल खिलना—१. विचित्र बात होना। अनहोनी बात सामने आना। उ० अभी तो ऐसे-ऐसे गुल खिलेगे कि देखते ही बनेगा। २ हलचल होना, झंझट होना। उ० जब वह आ जाय तो गुल खिलेगा।

गुल खिलाना—१. अनोखा काम करना। २. हलचल पैदा करना।

गुल-गपाड़ा करना—शोरगुल करना। उ० यहाँ गुल-गपाड़ा न करो।

गुलछर्रे उड़ाना—१. बड़ी आरामतलबी से जीवन बिताना। उ० भाई जब तक नौकरी किया है, खूब गुलछर्रे उड़ाया है, पर अब नही कह सकता कि कैसे बीतेगी। २. व्यंग्य करना।

गुलझट निकालना—मनमुटाव दूर करना। उ० अगर गुलझट निकालना है तो यह काम कर दो।

गुलझट पड़ना—मनमुटाव होना। उ० उसमे-मुझमे पहले तो खूब पटती थी; हाँ, इधर कुछ दिनों से अवश्य गुलझट पड गई है।

गुलझटी निकालना—दे० 'गुलझट निकालना'।

गुलझटी पड़ना—दे० 'गुलझट पड़ना'।

गुलाब का फूल—सुन्दर, कोमल। उ० यह बच्चा तो गुलाब का फूल है।

गुलाब चटकना—१. गुलाब का खिलना। उ० गुलाब चटकने का यही समय है। २. लड़की का युवती होना। तरुणाई आना। उ० उसका तो अब गुलाब चटक रहा है।

गुलाब छिड़कना—गुलाब-जल छिड़कना। उ० जनवासे में गुलाब छिड़क दो।

गुलाबी आना या आ जाना—चेहरे पर लाली आना। उ० इस दवा में बहुत गुण है, एक महीने भी सेवन नही किया और गुलाबी आने लगी।

गुलाम करना—एकदम अपने वश में करना। उ० उसने तो सारे गाँव वालो को गुलाम कर लिया है, जो भी आज्ञा देना है, एक मिनट में पूरी हो जाती है।

गुलाम का तिलाम—बहुत छोटा नौकर। उ० अरे भाई, मै आपके गुलाम का तिलाम बनने को तैयार हूँ, पर आप मेरे ऊपर दया तो रक्खें।

गुलाम बनाना—दे० 'गुलाम करना'।

गुलाम होना—अधिकार मे होना। उ० क्या मै आपका गुलाम हूँ जो दिन-रात आपकी सेवा करूँ?

गुलामी अख्तियार करना—दासत्व स्वीकार करना। उ० बादशाह ने अपने दुश्मनो से कहा कि गुलामी अख्तियार करो, नही तो तुम लोगो का सिर धड़ से अलग कर दिया जायगा।

गुल्ली बँधना—जवानी आना। प्रौढता आना। उ० लड़के की गुल्ली बँध गई है, अब उसकी शादी कर देनी चाहिये।

गुस्सा उड़ना—गुस्सा दूर होना।

गुस्सा उतारना—क्रोध शात करना। उ० मास्टर साहब ने मुझे पीट कर अपना गुस्सा उतारा।

गुस्सा उबलना—क्रोध का आवेग होना।

गुस्सा थूक देना—क्रोध दूर करना। उ० अरे भाई जो हुआ सो हुआ, जाने दो, अब गुस्सा थूक दो।

गुस्सा नाक पर रहना—जल्दी क्रोधित होना, चिड़चिड़ा होना। उ० गुस्सा तो आपकी नाक पर रहता है, किसकी शामत आई है जो आप-से कुछ कहे।

गुस्सा नाम पर होना—दे० 'गुस्सा नाक पर रहना'।

गुस्सा पीना—क्रोध रोकना। उ० गुस्सा पीना सहज काम नही है।

गुस्से के मारे भूत होना—बहुत अधिक क्रोधित होना। उ० मेरी बातें सुनते ही वह गुस्से के मारे भूत हो गया।

गुस्से के मारे लाल होना—बहुत क्रोधित होना। उ० मेरी बाते सुनते ही वह गुस्से के मारे लाल हो गया।

गुहा-छीछी होना—झिकझिक होना, तकरार होना। उ० न क्योकर हो आपस मे फिर गुहा-छीछी, मै नाजुक मिज़ाज और वो तुन्द-खूं है।

गुहार लगना—१ पुकार पर ध्यान देना, २ पुकार पड़ना।

गूंगा होना—प्रतिवाद न करने वाला होना।

गूंगे का गुड़—वह बात जिसका अनुभव हो, परन्तु वर्णन न हो सके। उ० सतसगति का लाभ गूंगे का गुड है, कौन कहे?

गूदा निकालना—बड़ी मार मारना। उ० अगर सब सही-सही न बता दोगे तो गूदा निकाल लूंगा।

गूलर का कीड़ा—बिना अनुभव का। ससार की बातो से बहुत दूर। कूपमडूक। उ० आप तो गूलर के कीडे है, आपको क्या पता कि दुनियाँ मे आज क्या हो रहा है?

गूलर का पेट फाड़ना—गुप्त बात को प्रकट करना, रहस्य खोलना। उ० अभी क्या आश्चर्य करते हो, गूलर का पेट फाड़ूंगा तो उनके कारनामे सुनना।

गूलर का फल फोड़ना—गुप्त रहस्य को प्रकट करना।

गूलर का फूल होना—दुर्लभ वस्तु होना। उ० आप तो गूलर के फूल हो गये, कई वर्षों पर आज भेंट हुई है।

गूलर का भुनगा—दे० 'गूलर का कीड़ा'।

गूलर फोड़ कर जीव उड़ाना—१. छिपी बात प्रकट करना। उ० आज हमने गूलर फोड़ कर सब जीव उड़ा दिये, अब मेरी तरफ़ से उनकी सारी शकाये दूर हो गई। २. खूब भडा फोडना।

गूह उछालना—किसी पर कलक या दोष लगाना। उ० क्यो उस गरीब पर गूह उछालते हो, बेचारे का जीवन बरबाद हो जायगा।

गूह उठाना—१. छोटे से छोटा काम करना । उ० मुझे कोई खाना दे, मैं उसका गूह उठाने को तैयार हूँ । २. सेवा करना । उ० गाधीजी ने मानवता का गूह उठाया, पर बदले मे मानवता ने उनका गला रेत दिया ।

गूह कर देना—गदा कर देना, निहायत मैला कर देना । उ० तुमने तो इसे गूह कर दिया ।

गूह का चोंत—१ बेकार आदमी । उ० वह तो गूह का चोंत है । उससे क्या हो सकता है ? २. सुस्त आदमी । उ० वह तो गूह का चोंत है । किसी तेज़ आदमी को भेजो ।

गूह का कीड़ा—अत्यन्त नीच । उ० वह तो गूह का कीड़ा है, उससे यही आशा थी ।

गूह का टोकरा सिर पर रखना—१. बदनाम होना । उ० क्यों अत समय मे गूह का टोकरा सिर पर रख रहे हो ? २. किसी दूसरे को बदनाम करना ।

गूह का टोकरा सिर से फेंकना—बदनामी की बात से बचना । उ० गूह का टोकरा सिर से फेंकना चाहते हो तो उस जगह को छोड दो ।

गूह की तरह छिपाना—बहुत छिपाना । ढाकते फिरना । उ० रखता हूँ गूह की तरह से इस वास्ते छिपा, देखें न गैर तो तेरी तस्वीर हाथ मे ।

गूह खाना—१ बहुत क्षुद्र काम करना । उ० गूह खा कर अपने वश का नाम न डुबाओ । २ कलक या अपमान का काम करना । उ० मै गूह नही खा सकता । तुम्हारा दबाव डालना बेकार है ।

गूह गोड़ते फिरना—जो ही औरत मिल जाय, उससे प्रसंग करते फिरना । उ० सर्वदा गूह गोडते फिरते हो, शर्म नही आती !

गूह मुंह में देना—१. किसी की छीछा-लेदर करना । उ० क्यो उसके मुँह में गूह देते हो, ग़लती तो सबसे होती है । २. धिक्कारना । उ० मुँह मे गूह न दो, उसका कोई दोष नही है । ३. बात असत्य सिद्ध करना । उ० मैने तो उसके मुंह मे गूह दे दिया ।

गूह-मूत करना—पेशाब-पाखाना साफ़ करना । छोटी से छोटी सेवा करना । उ० माताएँ बच्चो के गूह-मूत करने में तनिक भी सकोच नही करती ।

गूह में ढेला फेंकना—नीच आदमी से छेडखानी करना । उ० मैने तुमसे कई बार कहा कि गूह मे ढेला फेंकोगे तो उसका नतीजा बुरा ही होगा, पर तुम ख्याल ही नही करते ।

गूह में नहलाना—खूब जलील करना । दुर्दशा करना या बदनाम करना ।

गूह में नहाना—१. बहुत बदनाम होना । उ० बुरे काम करने से ही तुम्हे गूह मे नहाना पड़ है ! २. दुर्दशा या दुर्गति होना ।

गृद्धदृष्टि होना—लेने की लालसा होना, आँख लगी होना ।

गृहस्थी का चरखा—गृहस्थी की झंझट ।

गृहस्थी सँभालना—घर का सब काम-काज देखना-भालना । उ० अब तो तुम्हे अपनी गृहस्थी सँभालनी चाहिये, आखिर कब तक लड़के बने रहोगे ?

गेहूँ के साथ घुन पिसना—बड़ो के साथ छोटो का नाश होना या उनकी दुर्गति होना ।

गैल करना—किसी को साथ कर देना । उ० अकेले बहू कहाँ जायगी, किसी को गैल कर दो तो ठीक रहेगा ।

गैल जाना—१ नकल करना, कदम पर कदम रखना । उ० यदि संसार मार्क्सवाद की गैल जाय तो कल्याण निश्चित है । २. सग जाना । उ० आप अकेले थे या किसी की गैल गए थे ?

गैल लगे फिरना—पीछे-पीछे रहना । उ० जब तक उनके गैल लगे नही फिरोगे, तुम्हारा काम वे नही कर सकते ।

गोंदनी-सा लादना—दे० नीचे ।

गोंदी-सा लदना—१. फलो से लद जाना । उ० मेरे दरवाजे का आम इस साल गोंदी-सा लदा हुआ है । २. बदन मे चेचक या फुसी के बहुत अधिक दाने पड़ जाना । उ० बच्चे का शरीर गोंदी-सा लदा हुआ है ।

गोटी चित पड़ना—युक्ति सफल होना ।

गोटी जमना—१. उपाय सफल होना । उ० मेरी गोटी जम गई है, अब कुछ आमदनी होगी । २. टिप्पस भिडना । उ० देखिये, गोटी जम गई तो काम होते देर न लगेगी ।

गोटी बैठना—दे० 'गोटी जमना' ।

गोटी मारना–१. हराना। गोली जीतना। उ० बड़ा चतुर है, हमारी गोटी मार कर जीत गया। २. चाल चलना। उ० उसने तो ऐसी गोटी मारी कि हम सब ताकते रह गए और वह ले लिया गया।

गोटी लाल होना–लाभ होना। उ० आजकल उनकी ही तो गोटी लाल है।

गोटी हाथ से जाना–उपाय का बिगड़ जाना। उ० हमारी गोटी हाथ से निकल गई, वरना बड़ा लाभ हुआ होता।

गोटी हाथ से निकल जाना–दे० 'गोटी हाथ से जाना'।

गोड़ टूटना या टूट जाना–१ असहाय होना। उ० आपके न आने से हमारे गोड टूट गये। २ निराश या आशाहीन होना। उ० उसके गोड टूट गए है।

गोड़ पड़ना–पैरो पड़ना। प्रार्थना करना। उ० बाबू जी इस बार मुझे माफ़ कर दीजिये, आपके गोड़ पड रहा हूं।

गोड़ पसारना–१ मर जाना। उ० ससार मे सबको एक दिन गोड़ पसारना ही पडेगा। २ कुछ उन्नति के साधन बढाना। उ० जब चार पैसे हो जायें तो गोड पसारूँ। ३ पैर पसार कर सोना। ४ पहले से अधिक जगह घेरना। उ० बैठने की जगह मिल जाय तो धीरे-धीरे गोड पसारूँ।

गोड़ी करना–कमाना। आमदनी करना। उ० केवल मेरे गोडी करने पर घर भर का सब काम चलता है।

गोड़ी जमना–कार्य मे सफल होना।

गोता खाना–१. भ्रम मे पडना। उ० मैने भी उसकी बातो मे एक बार गोता खाया था, पर बाल-बाल बच गया। २ विपत्ति में पड़ना। उ० साल भर मै गोता खाता ही रहा। ३. पानी मे डुबकी लेना। उ० वह गिरा और नदी मे गोते खाने लगा। ४ हानि उठाना। उ० इस रोजगार मे मैने तो ऐसा गोता खाया कि कहे नहीं बनता।

गोद पसार कर विनती करना–बहुत अधीरता से प्रार्थना करना। उ० मै गोद पसार कर विनती कर रही हूँ, आप किसी तरह मेरी इज्जत बचा दे।

गोद फलना–सतान की प्राप्ति होना।

गोद भरना या भर देना–१. सतान होना। उ० भगवान करे, उसकी गोद भरे। २. शुभ अवसर पर बहू की गोद मे नारियल, पुंगीफल आदि शुभ पदार्थ देना। उ० उसकी गोद भर दो।

गोद भरी रहना–हमेशा बच्चे वाली बनी रहना। उ० मेरा तुझे यही आशीर्वाद है कि तुम्हारी गोदी सर्वदा भरी रहे।

गोद लेना–दत्तक लेना। उ० उसने पिछले दिनो मे ही अनाथ आश्रम से लडका गोद लिया है।

गोद सूनी होना–१ सतान की मृत्यु होना। २. सतान न होना।

गोबर करना–१ गाय-बैल का मल त्यागना। उ० गोबर करते समय बैलो को खडा कर देना चाहिये। २ खराब कर देना। उ० उसने तो सारा काम गोबर कर दिया। ३ गोबर के उपले आदि बनाना। ४ गोबर को हटाना या दूर करना। उ० सबेरे पहले गोबर करके तो और काम करना।

गोबर-गणेश होना–भोदा, सुस्त या बेवकूफ़ होना। उ० आप पूरे गोबर-गणेश हैं, आपको यह भी ज्ञात नही।

गोबर पाथना–१ व्यर्थ का काम करना। २ मूर्खता का काम करना।

गोबरी निकालना–जहाज के पेदे मे छेद करना।

गोमड़ा बढ़ना–चोट के कारण फूल जाना।

गोमुख नाहर–देखने मे सीधा पर असल मे क्रूर। उ० तुम तो गोमुख नाहर हो। तुम्हारे साथ मेरा लड़का नही जा सकता।

गोरखधंधा होना–उलझा हुआ या उलझा लेने वाला होना।

गोल-गाल–१. अनुमानतः, मोटे हिसाब से। उ० वह गोल-गाल हिसाब देकर चला गया, कभी आये तो ठीक हिसाब लूं। २. अस्पष्टतः। उ० गोल-गाल क्यों कहते हो, जो कहना हो तो साफ कहो। ३. गोला। उ० उसका मुँह गोल-गाल है।

गोल डालना–दे० 'गोल पारना'।

गोल पारना–१. हलचल कर देना। उ० वहाँ से तो ऊधम करके आया ही है, यहाँ भी पहुँचते ही गोल पारना शुरू किया। २. गिरोह बनाना।

गोल बात—घुमाव-फिराव की बात । जिस बात से कुछ स्पष्ट न प्रकट हो । उ० अगर गोल बात बतानी हो तो रहने दो ।

गोलमाल करना—१. मिलावट करना । मिला देना । उ० आजकल देशी घी मे भी दूकानदार कुछ गोलमाल अवश्य कर देते है । २ गड़बड करना । उ० यह सब तुम्हीने गोलमाल किया है । ३ इधर-उधर हटाना । उ० हमारी चीजो को क्यो गोलमाल कर देते हो ?

गोलमाल होना—गडबड़ होना । हलचल होना । उ० क्या गोलमाल है, यह पुलिस क्यो आई है ?

गोल होना—१ शात हो जाना । उ० आपको देखते ही वे गोल हो गये । २. जीत जाना । उ० उस पार्टी पर हम लोगो की गोल हो गई । ३. चूक जाना, खतम हो जाना । ४ चुपके से खिसक जाना, चला जाना । उ० उस दिन आप लोग क्यों गोल हो गये ? ५ गैरहाजिर हो जाना । उ० आज तो बहुत से सदस्य गोल है ।

गोलाधार बरसना—बहुत तेज वर्षा होना । उ० गोलाधार बरसने के कारण बहुत से मकान गिर गये ।

गोली खाना—बदूक की गोली का शिकार बनना । उ० मेरा मित्र लडाई मे गोली खाकर मर गया ।

गोली-बारूद—लडाई का सामान । उ० पाकिस्तान गोली-बारूद इकट्ठा कर रहा है ।

गोली मारना—उपेक्षा मे त्याग देना । घृणा करना । उ० ऐसा सामान लेकर क्या करोगे ? गोली मारो इसे । अगर लेना होगा तो बाज़ार से अच्छा ले लोगे ।

गोहार पड़ना—कही सहायता के लिये पुकार पड़ना । उ० सुनो जरा, देखो कही गोहार पड़ रही है ।

गोहार मारना—सहायता के वास्ते चिल्लाना । उ० चोरो के आने पर बेचारे ने बहुत गोहार मारी, पर कोई नहीं आया ।

गोहार लगाना—दे० 'गोहार मारना' ।

गोहार लड़ना—१. अकेला कई आदमियों से लड़ना । उ० रुस्तम गोहार लड़ता था । २ चैलेंज देकर या ललकार कर लड़ना । उ० मै तो गोहार लड़ता हूँ, चाहे जो भी आये ।

गौं का—१. मतलबी, खुदगरज़ । उ० वैसा गौ का आदमी हमने कही नहीं देखा । २ मौके का, अपने लायक़ । उ० कोई गौ का मकान मिले तो मै खरीद लूं ।

गौ का यार—अपने लाभ के लिये साथ रहने वाला । उ० वह गौ का यार है, उसे मै खूब जानता हूँ ।

गौ के टेको—मतलबी, स्वार्थी ।

गौ गाँठना—अपना स्वार्थ साधना । उ० आप गौ गाँठने के लिये मुझसे मित्रता कर रहे है ।

गौ ताकना—अवसर की खोज मे होना ।

गौं निकलना—काम निकल जाना । उ० गौ निकलने पर तुम्हे कौन पूछेगा ?

गौं निकालना—१. काम पूरा करना । अपना मतलब साधना । उ० हमने तो गौ निकाल ही लिया । अब चाहे मित्रता रक्खो या न रक्खो ।

गौ पड़ना—आवश्यक काम पडना । मतलब अटकना । उ० हमें क्या गौ पड़ा है जो आपकी खुशामद करें ?

गौना देना—वधू को पहले-पहल वर के साथ ससुराल भेजना ।

ग्रंथ रँगना—ग्रंथ लिखना ।

ग्राहक टूटना—ग्राहकों का कम हो जाना ।

ग्राहक पटाना—ग्राहक को राज़ी कर लेना ।

ग्लानि से गलना—अत्यन्त ग्लानि का अनुभव करना ।

घ

घंट बँधना—घर मे किसी की मृत्यु होना । उ० भगवान करे, तुम्हारे घर घट बँधे । [यह स्त्रियों की गाली है ।]

घंटा दिखाना—याचक को चीज़ न देना । अँगूठा दिखाना, साफ़ इन्कार कर जाना । उ० जाओ इस बार दे दिया, अगर फिर कभी माँगने आये तो घंटा दिखा दूंगा ।

घंटा हिलाना—१. व्यर्थ का काम करना । उ० क्या घटा हिला रहे हो, कुछ करो । २. दे० 'हाथ हिलाना' ।

घंटे पर रखना या मारना—कुछ न समझना। उ० दस-बीस रुपये तो मैं घंटे पर मारता हूँ।

घट-घट में समाना—सर्वव्यापक होना।

घटती का पहरा—अवनति का समय। उ० भाई इस समय मेरा घटती का पहरा है, जो मन चाहे कह लो।

घटती के पहर चढ़ना—अवनति के दिन आना। उ० घटती के पहर चढने चुपचाप बैठ रहना ही अच्छा है।

घट में बसना—१. मन मे जमना। उ० आपकी बात मेरे घट मे बस गई है। अब मैं वैसा ही करूँगा। २. शरीर मे रहना। उ० ईश्वर तो घट-घट मे बसता है। ३. घट मे रहना। उ० गाली तो जैसे तुम्हारे घट मे बसी है।

घट मे बैठना—दे० 'घट मे बसना'।

घट में रमना—दे० 'घट मे बसना'।

घट में व्यापना—दे० 'घट में बसना'।

घटाव पर होना—पानी की बाढ़ का कम होना। उ० आज सुबह से ही नदी घटाव पर है, आशा है, शाम तक पानी काफ़ी घट जायगा।

घटिकाशतक होना—एक घटे के भीतर सौ काम पूरा करने वाला होना। उ० आप जो घटिका-शतक है, मुझसे छिपा नही है, कही और जा-कर बनिए.

घटी आना—हानि होना। उ० इस साल तो आपको आलू मे घटी आई है।

घटी पड़ना—दे० 'घटी आना'।

घट्टा खुलना—छेद हो जाना। यदि मरम्मत न करो तो पक्के मकानों की छत मे भी जल्दी ही घट्टा खुल जाता है।

घट्टी आना—हानि होना। उ० इस वर्ष व्यापार मे मुझे काफ़ी घट्टी आई है।

घट्ठा पड़ना—१. अभ्यास हो जाना। उ० मुझे इस काम को करते-करते घट्ठा पड़ गया है। अब कोई कष्ट नही होता। २. हाथ या पर मे निशान होना।

घड़ी कूकना—घड़ी मे चाभी देना। उ० घड़ी कूक दो। [यह To cook the watch का रूपातर है।]

घड़ी गिनना—१ समय की प्रतीक्षा करना। उ० मैं बैठे-बैठे घड़ी गिन रहा था कि कब पर्चा मिले और अपना भाग्य आज़माऊँ। २. मौत की प्रतीक्षा करना। उ० अब तो उनकी घड़ी गिनी जा रही है।

घड़ी-तोला घड़ी-माशा करना—थोडी-थोड़ी देर मे विचार का बदल जाना। उ० अरे भाई आपकी बात का कोई विश्वास कैसे करे, आप तो घड़ी-तोला घडी-माशा किया करते हैं।

घड़ी में घड़ियाल बजना—दे० 'घड़ी में घड़ियाल होना'।

घड़ी में घड़ियाल होना—हालत बदलते देर न होना। उ० घडी मे घड़ियाल हो जाता है, हम कल की बात का कैसे विश्वास दिलाये?

घड़ी सायत पर होना—मौत का दिन क़रीब होना। उ० आपकी घडी सायत पर है, अब ज़रा आप शुद्ध विचार से रहिये।

घड़े को ठोंकना—परखना।

घड़ों नशा चढ़ना—गहरा प्रभाव होना।

घड़ों पानी पड़ जाना—बहुत अधिक शर्मिन्दा हो जाना। उ० उस दिन उस पर घड़ों पानी पड गया, अब कभी हम लोगो के यहाँ नही आ सकता।

घन का होना—बहुत घना होना। उ० आप का जगल खूब घन का है।

घनचक्कर में आना—१ कष्ट मे फँसना, फेर मे आना। उ० हम तो घनचक्कर मे आ गए है, जो मन चाहे कर लो। २. धोखे मे आना। झझट मे फँसना।

घनचक्कर में पड़ना—दे० 'घनचक्कर मे आना'।

घनचक्कर होना—बेवकूफ़ होना। उ० तुम तो पूरे घनचक्कर हो. जाकर अपना काम क्यो नही करते?

घपची बाँध कर पानी में कूदना—क़मर कस कर काम मे लग जाना। उ० वह घपची बाँध कर पानी मे कूदा है, अवश्य ही काम पूरा कर लेगा।

घपले में पड़ना—१. चक्कर में पड़ना। उ० हम तो आज ऐसे घपले में पड़ गये कि कुछ काम ही न कर सके। २. रुकावट या बाधा में पडना। उ० मेरा काम तो ऐसे घपले मे पड़ा है, कुछ कहते नही बनता।

घमंड टूटना—अभिमान खतम होना। उ० मेरे सामने आते ही उसका घमंड टूट गया।

घमंड निकालना–अभिमान दूर करना। उ० आपका सारा घमंड निकाल दूँगा, आप क्या समझते हैं।

घमंड पर आना–घमंड करना। क्यों मेरे सामने घमंड पर आ रहे हो? तुम्हारे पुरखों तक को जानता हूँ।

घमंड पर होना–दे० 'घमंड पर आना'।

घमक्का खाना–१. हानि उठाना। २. मुक्के से पीटा जाना। उ० उस दिन तो तुमने ऐसा घमक्का खाया कि बेहोश हो गए।

घमसान करना या कर देना–लड़ाई-झगड़ा मचा देना। उ० यार तुम लोग तो बड़े विचित्र हो, छोटी-सी बात पर घमसान कर देते हो!

घमसान ठानना–दे० 'घमसान करना'।

घमसान मचाना–दे० 'घमसान करना'।

घर-आँगन होना–घर के समान परिचित होना।

घर आबाद करना–विवाह कर लेना। उ० आपने इस वर्ष घर आबाद कर लिया, यह बड़ा अच्छा हुआ।

घर उजड़ना–१ परिवार का नाश हो जाना। उ० अपना घर तो उजड़ ही गया, अब किसकी मोह-माया है? २ घर वालो का एकसाथ न रहना। उ० सब लोग नौकरी पेशे के है, कोई कही रहता है, कोई कही, घर उजडा ही जानो। ३ घरवालो का एकमत न रहना।

घर करना–दे० 'जड़ करना'। उ० यह बात उसके दिल मे घर कर गई है।

घर का–१. आप का। उ० यह घर का झगडा है, इसमे दूसरों के बोलने की क्या जरूरत है? २. अपना। उ० ये सारी चीज़े घर की है। ३. अपने भाई-बन्धु। उ० जितने भी आदमी घर के है, उनको पहले खिलाओ। ४. मालिक, पति। उ० उसके घर में नौकरी करते है।

घर का अच्छा–मालदार। उ० अरे उसका क्या पूछना है, वह तो घर का अच्छा है।

घर का आँगन हो जाना–१. घर खडहर हो जाना। उ० कितने प्राचीन घर आज आँगन हो गए हैं। २. घर में लड़का पैदा होना। उ० भला, घर आँगन तो हुआ!

घर का आदमी–बहुत नजदीकी। उ० अरे वह तो घर का आदमी है, उसे अवश्य बुलाऊँगा।

घर का उजाला–१. परिवार की इज्जत बढाने वाला। उ० वह तो वास्तव मे अपने घर का उजाला है। २ घर भर मे खूबसूरत। उ० तुम्हारा छोटा भाई तुम्हारे घर का उजाला है।

घर का काट खाने दौड़ना–किसी के बिना घर का सूना लगना। उ० वह चली गई, तभी से घर काट खाने दौडता है।

घर का काटे खाना–दे० 'घर का काट खाने दौड़ना'।

घर का न घाट का–१. बेकार। उ० वह वहाँ मे हटा दिया गया, अब तो न घर का है, न घाट का। २. कही का भी नही। उ० धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का। ३. निकम्मा।

घर का नाम उछालना–१ परिवार का यश फैलाना। उ० अगर अच्छी तरह से रहा तो घर का नाम अवश्य उछालेगा। २. दे० 'घर का नाम डुबोना'।

घर का नाम डुबोना–घर की बदनामी करना। उ० आपने यह काम करके घर का नाम डुबो दिया।

घर का दीपक बुझ जाना–निर्वंश हो जाना।

घर का बबर–दे० 'घर का शेर'।

घर का बहादुर–दे० 'घर का शेर'।

घर का वीर–दे० 'घर का शेर'।

घर का बोझ उठाना–१. घर का सब काम-काज करना। उ० मेरे लड़के ने दो वर्ष से घर का पूरा बोझा उठा लिया है। २. घर का खर्च चलाना।

घर का बोझ सँभालना–दे० 'घर का बोझ उठाना'।

घर का भेदिया–अपनी गुप्त बातों को जानने वाला। उ० घर के भेदिये से होशियार रहना चाहिए। घर का भेदिया लंका दाह।

घर का भोला–बहुत सीधा-साधा। उ० आप तो घर के भोले हैं, आप से इन लड़ाई-झगडो की बातों से क्या मतलब?

घर का मर्द–दे० 'घर का शेर'।

घर का रास्ता जानना–दे० 'घर का रास्ता समझना'।

घर का रास्ता नापना—अपने काम से काम रखना। उ० आप घर का रास्ता नापिये, आपसे इन बातों से क्या मतलब ?

घर का रास्ता पकड़ना—दे० 'घर का रास्ता नापना'।

घर का रास्ता लेना—दे० 'घर का रास्ता नापना'।

घर का रास्ता समझना—बहुत आसान काम समझना। उ० मै तो इसे घर का रास्ता समझता हूँ, आप चाहे जो समझें।

घर का शेर—अपने घर पर बहादुर बनने वाला पर असल मे कायर और डरपोक। उ० अरे मै आपको खूब जानता हूं, आप केवल घर के ही शेर हैं।

घर का होना न घाट का—कही का भी न रहना।

घर की—उ० भाई, मेरी स्त्री घर की बडी लायक़ है। वही बेचारी, घर का बोझ सँभाले है।

घर की तरह बैठना—आराम से बैठना। उ० घर की तरह बैठिये, थोडी देर में आते ही होगे।

घर की बात—१ आपस की बात। उ० यह हमारे घर की बात है, इसमे आपके बोलने की क्या आवश्यकता है ? २. गुप्त बात। उ० घर की बात सबसे न कहो। ३ परिवार की बात। उ० हमारे घर की बात कौन नही जानता ?

घर की पूंजी—पास का रुपया। उ० घर की पूंजी है, हानि भी होगी तो कोई बात नही।

घर की मुर्गी—अपनी वस्तु। उ० घर की मुर्गी दाल बराबर।

घर की लक्ष्मी होना—कुशल व भाग्यवान् गृहिणी होना।

घर के घर बंद होना—परिवार के परिवार का सफाया हो जाना। बहुत आदमियो का मर जाना। उ० इस वर्ष मेरे गाँव मे ऐसा प्लेग आया कि घर के घर बद हो गये।

घर के घर रहना—न कुछ हानि न लाभ होना। घर का कुछ न जाना। उ० साल भर परीशानी तो हुई, परन्तु ख़ैरियत यही रही कि घर के घर रह गए।

घर के घर साफ़ हो जाना—दे० 'घर के घर बद होना'।

घर के भरे-पूरे होना—धन-जन से सम्पन्न होना।

घर को सिर पर उठाना—१. परिवार के सब आदमियो को परीशान कर देना। उ० मेरा छोटा लडका ऐसा शरारती है कि सारे घर को सिर पर उठा रक्खे है। २. शोर-गुल मचाना। उ० जरा शात रहो, घर को सिर पर न उठाओ।

घर ख़ाली छोड़ देना—१. गोटी के खेल में आगे के लिये जगह छोडना। २ कोई उपाय बाक़ी न रखना। उ० उसके लिए तुमने कोई घर खाली छोडा ही नही ? ३. हमला न करना। उ० सामने पाकर भी मैने घर खाली छोड़ दिया।

घर खोना—घर की सारी सपत्ति नष्ट कर देना। उ० मुकदमे के फेर में पड़ कर उसने अपना घर खो दिया। अब रोटी-रोटी का मोहताज है।

घर-घर के हो जाना—१. मारे-मारे फिरना। बिना घर के होना। उ० युद्ध के जमाने मे बहुत से लोग घर-घर के हो गए। २. सब जगह आदर पाना। उ० वह तो अपने व्यवहारो से घर-घर का हो गया है।

घर-घर मिट्टी का चूल्हा होना—सबकी एक-सी दशा होना।

घर-घर होना—हर जगह पर होना। उ० बाप-बेटे और सास-पतोहू की लड़ाई तो घर-घर है।

घर-घाट एक करना—१. बहुत शोरगुल करना। उ० उसने आज घर-घाट एक कर दिया, पर उसमे कुछ लाभ नही हुआ। २ बहुत प्रयास या परिश्रम करना। उ० घर-घाट एक करके वह मिनिस्टर हो गया।

घर-घाट का—ढङ्ग का, तरह का। उ० तुम तो दूसरे ही घर-घाट के आदमी हो।

घर-घाट देखना—१. घर की पूरी हालत देखना। उ० पहले घर-घाट देख लो तो शादी की बातचीत करो। २. सब कुछ देखना। उ० घर-घाट देख कर तो कुछ करो।

घर-घाट मालूम होना—घर की पूरी हालात का बोध होना। सब कुछ ज्ञात होना। उ० घर-घाट मालूम ही है तो फिर पूछना क्या है ?

घरघुसना—१. घर में ही रहने वाला। उ० आप ऐसे घरघुसने हम लोगों के सामने क्या

बात करें ? २. घर में जाने वाला । उ० इन चोरों को घरघुसना बना कर पछताओगे ।

घर चढ़ कर लड़ने आना–झगडा करने को किसी के घर जाना । उ० घर चढ कर लड़ने आए हैं और पास मे एक लाठी भी नही है ।

घर चलना–१ जीवन-निर्वाह करना । उ० किसी तरह घर चल रहा है, यही बहुत है । २ घर का काम चलना । ३. घर के लोगो का एकमत रहना । उ० वहाँ के बाबुओ का घर खूब चला ।

घर जाना–घर का विनाश होना । उ० इन नालायको के कारण हमारा घर चला गया । २. घर के सभी सदस्यो का कही जाना । उ० मेरा तो घर ही तीर्थ पर जा रहा है ।

घर डूबना–१. घर नष्ट होना । उ० आपकी लापरवाही से हमारा घर डूब गया । २. धन खतम होना । उ० रडीबाजी मे ही घर डूब गया ।

घर डुबोना–१. परिवार की बेइज्जती करना । उ० आपने ही अपना घर डुबो दिया । २ घर का धन बरबाद करना । उ० क्यो घर डुबोते हो ? पीछे से पछताओगे ।

घर तक पहुँचना–१. घर के आदमियो तक से शिकायत करना । उ० अब कर ही क्या सकते हैं ? बहुत करेंगे घर तक पहुँचा देंगे । २. मा-बहन की गाली देना । उ० घर तक न पहुँचो, नही तो मै भी कुछ कह दूंगा ।

घर तक पहुँचाना–१. खतम करना । उ० मनुष्य को चाहिये कि जिस काम को शुरू करे, उसे घर तक पहुँचाये । २ समझ ठिकाने लाना । क़ायल करना । उ० उसे मार कर घर तक पहुँचा दिया, अब शरारत नहो करेगा ।

घर-द्वार देखना–१. घर के कार्यों की देखभाल करना । २. घर की स्थिति का पता लगाना ।

घर फूंक कर तमाशा देखना–अपना घर बरबाद करके खुशी मनाना । उ० हम तो यह समझते हैं कि आप ऐसे घर फूंक कर तमाशा देखने वाले ससार मे बहुत कम व्यक्ति मिलेंगे ।

घर-फूंक होना–सब कुछ ख़र्च कर देने वाला होना ।

घर फोड़ना–परिवार में लड़ाई-झगड़ा पैदा करना । उ० मेरा घर फोड़ कर आपको क्या मजा मिला ?

घर बंद होना–१ घर भर का मर जाना । उ० इस वर्ष चेचक की बीमारी से मेरे गाँव मे बहुत से घर बंद हो गये । २ किसी के घर से सबंध न रखना । उ० उन दोनो का घर बन्द हो गया है । ३ आगे बढ़ने का रास्ता न होना । उ० जो पढा नही है, उसके लिये सब घर बन्द है । ४ गोटी के खेल मे चलने की जगह न होना । उ० आप तो चल नहीं सकते, क्योकि घर बन्द है ।

घर बनना–१ धनी होना । उ० थोड़े ही दिन बाहर रहने से उसका घर बन गया । २. इमारत तैयार होना । उ० मेरा घर बन गया । ३ घर का बिगड़ना (व्यग्य) । उ० मेरा घर खूब बना है । ४ घर के लोगो का मेल से रहना ।

घर बरबाद होना–१. परिवार नष्ट होना । उ० आपकी वजह से मेरा घर बरबाद हो गया । २. घर के लोगो मे फूट होना ।

घर-बार की होना या हो जाना–१. घर की मालकिन होना । उ० आजकल तो वह घर-बार की हो गई है । २ विवाह होना । उ० अब तो तुम्हारी पुत्री घर-बार की है ।

घर बिगाड़ना या बिगाड़ देना–१ घर मे फूट पैदा करना । उ० आपने ही मेरे लडके को बहका कर मेरा घर बिगाड़ दिया । २. घर बरबाद करना । उ० शराब पीकर अपना घर न बिगाड़ो । ६. दूसरे घर की औरत को बहकाना । उ० इसने तो बहुत से घर बिगाड़ दिये है ।

घर बैठना–१. काम पर न जाना । उ० अगर अच्छी तरह से काम नही करना है तो घर बैठो । २ मकान का गिरना । उ० वर्षा से उसका घर बैठ गया । ३ व्यर्थ बैठे रहना । उ० आजकल तो वह घर बैठा है । ४. घर मे एकात मे रहना । ५. किसी के घर स्त्री बन कर रहना । उ० वह तो दूसरे के घर जा बैठी है ।

घर-बैठे–१. बिना मेहनत के । उ० घर बैठे इतना मिल रहा है, यह कहाँ का कम है ? २. बिना आए-गए । उ० किताबो से घर-बैठे ही संसार का हाल मालूम हो जाता है ।

घर-बैठे की नौकरी होना–बिना मेहनत किये रुपये मिलना । उ० घर-बैठे की नौकरी है, इसे कभी न छोड़ना ।

घर-बैठे की शीरनी होना–अत्यधिक सरल होना। **घर-बैठे रोटी मिलना**–बिना मेहनत के गुजर होना। उ० आपको घर-बैठे रोटी मिल रही है और क्या चाहिये?

घर-बैठे शिकार खेलना–बिना परिश्रम किये रुपये कमाना। उ० आपका क्या पूछना है, आप तो घर बैठे शिकार खेल रहे है।

घर भरना–१. घर मे खूब माल लाना। उ० दूसरे का धन लेकर आपने अपना घर भर लिया। २ घर मे ज्यादा आदमी होना। ३. बिल बन्द करना। उ० साँपो का घर भर दो। ४. हानि पूरी होना। उ० सभी तो रोते है, किसका किसका घर भरूँ? ५ आगे जाने की जगह न होना।

घर में आग लगाना–परिवार मे झगडा पैदा करना।

घर में कहना–स्त्री से कह आना, घर के लोगों से कहना। उ० मैने घर मे कह दिया है कि उसे रुपया द देना।

घर में गगा होना–घर ही मे सब कुछ प्राप्त होना। उ० तुम्हारे तो घर मे ही गगा है, तुम्हे कही जाने की क्या जरूरत?

घर में घाम आना–बड़ी कठिनता का सामना होना। उ० जब घर मे ही घाम आ रहा है तो कोई और रास्ता पकड़ो।

घर में धूप आना–दे० 'घर मे घाम आना।'

घर में बैठा लेना–रखैल रख लेना।

घर में बैठे शिकार खेलना–बिना मेहनत किये लाभ करना या रुपये कमाना। उ० आपका इस समय भाग्य खुल गया है, आप घर मे बैठे शिकार खेल रहे है।

घर में भूँजी भाँग न होना–बहुत अधिक निर्धन होना।

घर लुटाना–अपनी सम्पत्ति लुटाना।

घर समझना–निसंकोच रहना। उ० मै तो इसे अपना घर समझता हूँ, शर्म करने की क्या बात है?

घर से देना–१. अपने पास से देना। उ० मैं पहले ही बता देता हूँ कि इस काम में घर से कुछ भी नहीं दूँगा। २. स्वयं हानि उठाना। उ० उसका साथ न करो, नही तो घर से भी देना पड़ेगा। ३. मूलधन से व्यय करना। उ० इस काम में तो घर से ही देना पड़ा।

घर से पाँव निकालना–१. बाहर जाना। उ० तुम तो घर से पाँव निकालना ही नहीं चाहते हो। २. स्वतन्त्र होकर घूमना। उ० इतना घर से पाँव न निकालो, नहीं तो बदनामी होगी। ३. स्त्रियो का बाहर-भीतर जाना। उ० अभी तो बहू घर से पाँव भी नही निकालती।

घर से बाहर पाँव निकालना–अपनी शक्ति से बाहर काम करना। उ० घर से बाहर पाँव निकालना किसी भी आदमी के लिए उचित नही है।

घर से बेघर करना–बिना शरण का कर देना। निकाल देना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो घर से बेघर कर दूँगा।

घर सेना–१ कही बाहर न जाना। उ० आपका कैसा स्वभाव है कि हमेशा घर सेते रहते हैं। २ व्यर्थ मे घर पर बैठे रहना। उ० आज के जमाने में घर सेना ठीक नही है, कुछ काम-धाम करो।

घर से मढ़ी अच्छी होना–गृहस्थी से सन्यास लेना ही अच्छा होना।

घर्राटा भरना–गहरी नीद मे सोना। उ० बेचारा आज चार दिन के बाद घर्राटा भर रहा है, उसे अभी न जगाओ।

घर्राटा मारना–दे० 'घर्राटा भरना।'

घर्राटा लेना–दे० 'घर्राटा भरना।'

घाँइयाँ बताना–धोखा देना। बहका देना। उ० मुझे घाँइयाँ न बताइए, मै आप जैसो को तो रोज ही चराता हूँ।

घाँख होना–चालाक या मक्कार होना। उ० वह बडा घाँख है, उससे बहुत मेल न कीजिए।

घाइयाँ बताना–१. धोखा देना। २. टालना, टाल देना। ३. आक्रमण बचाना।

घाईं-माईं कर देना–इधर-उधर कर देना, गायब कर देना। उ० यह सब किसने घाईं-माईं कर दिया, मेरे जाने के वक्त तो यहाँ बहुत-सी चीजें थीं।

घार का पत्थर समझना—सब के सामने उपयोग की वस्तु समझना।

घाट-घाट का पानी पीना–१. बहुत तजुर्बा हासिल करना। उ० आपने घाट-घाट का पानी पिया है, आपको कोई धोखा नहीं दे सकता। २. रमता जोगी बनना। उ० जो घाट-घाट का पानी पीता है, उसे एक जगह रहना अच्छा नही लगता। ३. काफ़ी स्थानो

से भिज्ञ होना । उ० उसने घाट-घाट का पानी पिया है ।

घाट में आना या आ जाना–चक्कर में आना । फंदे में आना । उ० अगर एक बार भी घाट में आ गए तो सब रुपया वसूल कर लूंगा ।

घाट लगना–१. ठिकाना पाना । उ० जी रहा हूँ, देखें कही घाट लगता हूं या नही । २. नाव का किनारे पर आना । उ० नाव घाट लग गई है । ३. काम खतम होना ।

घाटा आना–दे० 'घटी आना ।'

घाटा उठाना–नुक़सान मे पडना । उ० इस काम मे आपको घाटा उठाना पडेगा ।

घाटा भरना–हानि को पूरा करना । उ० साल भर से तो घाटा भर रहा हूँ, कमाऊँगा क्या ?

घात चलाना–टोना करना । उ क्या घात चलाते हो, मेरे पर कुछ भी असर न होगा ?

घात ताकना–उचित समय की प्रतीक्षा करना, मौके की ताक मे रहना । उ० उससे होशियार रहो, वह घात ताक रहा है ।

घात पर चढ़ना–वश मे आना । मौके पर चढ़ना । उ० अगर घात पर चढ गये तो सब काम करवा लूंगा ।

घात में आना–दे० 'घात पर चढना' ।

घात में फिरना–मौक़ा खोजना । किसी को नुक़सान पहुँचाने का अवसर ढूंढना । उ० वह घात मे फिर रहा है, ज़रा बच कर रहिये ।

घात में बैठना–१. आक्रमण करने के लिए छिप कर प्रतीक्षा में रहना । उ० वह घात में बैठा ही रह गया और मै दूसरे रास्ते से चला आया । २. दे० 'घात ताकना' ।

घात में रहना–किसी के खिलाफ़ कुछ करने के लिये समय के इन्तज़ार मे रहना । उ० वह आप के घात में रहता है, अवश्य बदला लेगा ।

घात में होना–मौक़े की फ़िक्र मे होना, मौक़ा ताकना ।

घात लगना–अवसर मिलना । उ० जब भी घात लगेगा, मैं इसे खतम कर दूंगा ।

घात लगाना–१. उपाय करना । उ० कोई घात लगा कर काम कर डालो । २. ताक में रहना । उ० देखो बगुला मछली के लिए घात लगाए है । ३. अवसर खोजना । उ० घात लगा कर मैं आऊंगा ।

घातें बताना–१ चालें बताना, चालबाज़ियां सिखाना । उ० ऐसी घातें तो बता देते हैं हम औरों को, जाइए-जाइए बस दीजिए दम औरों को । २ धोखा देना ।

घातें याद होना–ढब याद होना । दाँव जानना । उ० जान लेने की तो है याद हज़ारों घाते, दिल-फ़रेबी का भी तुझको कोई ढंग आता है ?

घाम खाना–धूप खाना । उ० जाड़े के दिनों में घाम खाना अच्छा लगता है ।

घाम-छाँह सहना–दे० 'गर्म सर्द उठाना' ।

घास न गिनना–तुच्छ समझना । उ० मै तो तुम्हारे जैसे धनिको को घास नही गिनता ।

घालमेल करना–मिला-मिला देना, गडबड़ कर देना । उ० घालमेल न करो, सबके सामान अलग रहने दो ।

घालमेल रखना–मेल-मिलाप रखना ।

घाव पर नमक छिड़कना–दुःख पर दुःख देना । उ० मरे को और मार कर क्यो घाव पर नमक छिड़क रहे हो ?

घाव पर मरहम लगाना–दुःख बंटाना, हमदर्दी दिखाना । उ० आपकी बातो ने घाव पर मरहम लगा दिया ।

घाव पूजना–ज़ख़म अच्छा होना । उ० अब मेरा घाव पूज रहा है, आशा है दस दिन मे ठीक हो जाऊँगा ।

घाव भरना–दे० 'घाव पूजना' ।

घाव में ज़हर देना–और अधिक अनिष्ट करना या कष्ट देना ।

घाव हरा हो आना–दुःख की याद से दुःखी होना । उ० मेरे लडके को मरे दस वर्ष हो गये, पर अब भी जब किसी लडके के मरने की ख़बर सुनता हूँ तो मेरे घाव हरे हो आते है ।

घाव हरा हो जाना–दे० 'घाव हरा हो आना' ।

घास काटना–१. छोटा काम करना, आसान काम करना । उ० काटता तो है घास, पर बनता है इतना । २. बिना सँभाले जल्दी-जल्दी काम करना । उ० काम करते हो या घास काट रहे हो ? ३ बेकार कोशिश करना । उ० दुष्टो को समझाना घास ही काटना है ।

घास खाना–१. तुच्छ चीज़ पर गुज़र करना। उ० भाई इस समय न पूछिये, किसी तरह घास खाकर जी रहा हूँ। २. जानवर हो जाना।

घास खोदना–दे० 'घास काटना'।

घास-फूस उठा लाना–१ बेकार वस्तु लाना। उ० जब भी आप बाजार जाते है तो इसी तरह घास-फूस उठा लाते है।

घिग्घी बँधना–रोते-रोते हिचकी आने लगना।

घिरिया मे घिरना–दुविधा मे फँसना। उ० हम तो ऐसे घिरिया मे घिरे है कि कुछ समझ मे ही नही आता।

घिस-घिस करना–१ ठीक से काम न करना। उ० घिस-घिस करना हो तो कही और जाओ। २ साफ न कहना, हीला-हवाला करना। उ० घिस-घिस मत करो, साफ़ कहो।

घिस-घिस लगाना–दे० 'घिस-घिस करना'।

घिस देना–धता बताना। उ० वाह दोस्त ! मुझी को घिस रहे हो ?

घिसा हुआ होना–अनुभवी होना।

घिसनी चलना–१ बच्चो का घुटनो के बल चलना। उ० मेरा लड़का कुछ दिनो से घिसनी चल रहा है। २ पैर आदि खराब हो जाने से खिसक-खिसक कर चलना। उ० भगवान करेंगे तो बुढापे मे तुम्हे घिसनी चलनी पड़ेगी।

घी का कुप्पा लुढ़कना–बहुत हानि हो जाना। उ० कौन घी का कुप्पा लुढक गया है कि रो रहे हो ?

घी का कुप्पा लुढ़ना या लुढ़ जाना–किसी अमीर या राजा आदि का मरना। उ० आज घी का कुप्पा लुढ गया, अब बला दूर हो जायेगी।

घी के कुप्पे से जा लगना–जहाँ खूब धन मिले, वहाँ पहुँच जाना। उ० वह जहाँ भी पहुंचता है, घी के कुप्पे से जा लगता है।

घी के जलना–दे० 'घी के दिये जलना'।

घी के दीये जलना–१ खुशी या आनन्द होना। उ० स्वतन्त्रता-दिवस पर भारत मे घी के दीये जले। २. सपति होना। उ० बिड़ला के घर तो घी के दीये जलते है। ३ कामना पूरी होना।

घी के दीये भरना–१. खुशी मनाना। उ० अगर लड़का होगा तो घी के दीये भरूँगा। २. मौज उड़ाना। उ० अब कौन है कि बोले, खूब घी के दीये भरो।

घी-खिचड़ी होना–१. बहुत दोस्ती होना। उ० आप दोनो में इस समय घी-खिचड़ी हो गई है। २ खाने का आनन्द होना। उ० वहाँ तो खूब घी-खिचड़ी है।

घी-दूध की नदी बहना–अत्यधिक सम्पन्न होना।

घी में पाँचों होना–खूब लाभ होना। खूब भोग का अवसर मिलना। उ० आजकल कहाँ सुनते हो तुम, घी मे पाँचों है तुम्हारी।

घुंघरू-सा लदना–देह पर बहुत फुसी आदि होना। उ० उसे चेचक इतनी अधिक है कि देह घूंघरू-सी लद गई है।

घुघुनियाँ मुँह में डाल कर बैठना–बिलकुल चुपचाप बैठना। उ० क्या घुघुनियाँ मुँह में डाल कर बैठे हो।

घुडी दिल की खोलना–दिल साफ़ करना, रंजिश दूर करना।

घुट-घुट कर मरना–१. हवा या पानी के बिना मर जाना। उ० काल-कोठरी मे इतने ज्यादा आदमी ठूस दिये गये कि सब घुट-घुट कर मर गये। २. चिंता या मानसिक दुःख के कारण भीतर ही भीतर घुलना। उ० क्यो यहाँ घुट-घुटकर मर रहे हो, मेरे यहाँ चलो।

घुटना टेकना या टेक देना–१ घुटनो के बल बैठना। २. झुक कर प्रार्थना करना। ३. हार मानना। उ० इतने ही में घुटने टेक दिये।

घुटने तोड़ना–नुकसान करना।

घुटने से लगाकर बिठाना–१. आँख से ओझल न होने देना। २. बेटी को पास से अलग न हटने देना। ३ बहुत प्यार करना।

घुटनों के बल चलना–१ बकइयाँ चलना। २ बहुत छोटा होना या अनुभवहीन होना।

घुटनों मे सिर देकर बैठना–अत्यन्त उदास होकर बैठना।

घुटनों में सिर देना–१ सिर नीचा किये उदास बैठना। उ० आज क्या बात है कि आप घुटनो में सिर दिये बैठे है ? २. लज्जित होना।

उ० क्यों घुटनों में सिर दिये हो; ग़लती तो सबसे होती है।

घुटनों में सिर दे लेना–शरमा जाना।

घुटनों से लग कर बैठना–हर समय पास ही रहना। उ० आजकल आप उसके घुटनों से लग कर बैठते हैं, आखिर क्या बात है?

घुटा हुआ–बहुत चालाक। उ० भाई साहब उससे बच कर रहना, वह बहुत घुटा हुआ है।

घुट्टी में पड़ना–स्वभाव के अन्तर्गत होना। उ० क्रोध तो तुम्हारी घुट्टी मे पड़ा है।

घुड़कियाँ जमाना–डाँटना।

घुघुनियाँ मुंह में भर कर बैठना–चुप होकर बैठना। खामोशी अख़्तियार करना।

घुन लगना–चिंता के कारण शरीर का दुर्बल हो जाना।

घुन्ना होना–सूरत से सीधा, मगर भीतर से चालाक होना। उ० कैसा घुन्ना है, सुनता सब है, पर जवाब नही देता।

घुन्नी साधना–चुप होकर बैठ जाना।

घुमा-घुमा कर पूछना–हेर-फेर से पूछना। खोद-विनोद करके पूछना। उ० जब चोर से पुलिस ने घुमा-घुमा कर पूछा तो उसने सभी कुछ उगल दिया।

घुमा-घुमा कर बातें करना–१ दे० 'घुमा-घुमा कर पूछना'। २. स्पष्ट बात न करना।

घुमा-फिरा कर पूछना–दे० 'घुमा-घुमा कर पूछना'।

घुमाव-फिराव की बात–पेचीदी बात। अस्पष्ट बात। उ० जो कुछ कहना हो, साफ़-साफ़ कहिये, घुमाव-फिराव की बात मै पसन्द नही करता।

घुल-घुल कर काँटा होना–१ बीमारी आदि से बहुत दुर्बल हो जाना। उ० वह बीमारी में घुल-घुल कर काँटा हो गया। २ चिंता के कारण सूख जाना। उ० क्यों घुल-घुल कर काँटा हुए जा रहे हो?

घुल-घुल कर बातें करना–खूब मिल-जुल कर बातें करना। उ० अब तो आप उनसे खूब घुल-घुल कर बातें कर रहे हैं।

घुल-घुल कर मरना–कष्ट सहकर मरना। उ० पापी लोग घुल-घुल कर मरते हैं।

घुल-मिल कर–१. खूब मेलजोल से। उ० हम सबको खूब घुल-मिल कर रहना चाहिये। २. मिल कर। उ० पानी दूध घुल-मिल कर एक हो जाते हैं।

घुला-घुला कर मारना–१. परेशान करना। उ० आपने उस बेचारी को घुला-घुला कर मार कर क्या फ़ायदा पाया है? २ बहुत कष्ट देना। उ० इन गरीबों को घुला-घुला कर न मारो।

घुला हुआ होना–बहुत बूढा होना। उ० वह तो घुला हुआ है, उसकी भला क्या शादी होगी?

घुस कर बैठना–१ छिपा रहना। उ० क्या घुस कर बैठते हो, सामने आकर बात पूछो। २. एक मे एक सट कर बैठना। उ० गर्मी है, घुस कर न बैठो।

घुस-पैठ होना–पहुँच होना।

घूंघट उठाना–पर्दा हटाना। उ० घूंघट उठाओ, ये तो तुमसे छोटे है।

घूंघट करना–१. मुँह छिपाना। दुपट्टे या साड़ी के सर पर रहने वाले भाग से मुँह ढकना। उ० कौन ऐसी बात है कि आप घूंघट कर रही है। २. शर्माना, झेंपना।

घूंघट काढ़ना–दे० 'घूंघट करना'।

घूंघट खाना–१ युद्ध मे पीठ दिखाना। फ़ौज का पीछे हटना। उ० घूंघट खाना कायरो का काम है। २ हारना।

घूंघट निकालना–दे० 'घूंघट करना'।

घूंघट मारना–दे० 'घूंघट करना'।

घूंट-घूंट कर मारना–बुरी तरह या बहुत तकलीफ दे देकर मारना।

घूंट-घूंट पीना धीरे-धीरे पीना।

घूंट पीना–आक्रोश आदि को जब्त करना।

घूंट भरना–दे० 'घूंट लेना'।

घूंट लेना–१. थोड़ा-थोड़ा करके पीना। उ० क्या आप अभी तक उतने ही दूध में घूंट ले रहे हैं।

घूंसा पिलाना–दे० 'घूँसा लगाना'।

घूंसा लगाना–घूँसे से मारना। उ० मैंने ज्योंही एक घूंसा लगाया, वह बेहोश हो गया।

घूंसों का क्या उधार–मार-पीट का बदला तुरन्त लेना चाहिये। उ० अरे घूंसों का क्या उधार ? अब तुमने वैसा किया तो उसके लिए भी वही चारा था।

घूर-घूर कर देखना–टकटकी लगा कर देखना। उ० क्यो घूर-घूर कर देख रहे हो, आखिर क्या बात है ?

घूरे के दिन फिरना–तुच्छ वस्तु या व्यक्ति की हालत मे परिवर्तन आना।

घूरे को पलट कर हीरा खोजना–गदगी मे से सार-वस्तु खोज लेना।

घूंसे का जवाब घूंसे से देना–जैसे से तमा व्यवहार करना।

घोघा होना–मूर्ख या जड होना।

घोट-घोट कर मारना–तकलीफ़ दे-दे कर मारना। उ० जिसने ऐसा नीच काम किया है, उसे घोट-घोट कर मारना चाहिये।

घोटना–१. पीसना। उ० भाँग घोटो, मै आ रहा हूँ।

घोड़ा फेंकना–घोडा तेज भगाना। उ० सिपाही ने अपना घोडा फेंक कर चोर को पकड लिया।

घोड़ा बेच कर सोना–१. गहरी नीद मे सोना। २. बिलकुल निश्चित होकर सोना। उ० तुम तो जैसे घोडा बेच कर सो रहे हो।

घोड़ा भर जाना–अधिक दौडने से घोडे का दम फूल जाना। उ० मेरा घोडा भर गया है, अब यही थोड़ी देर आराम करूँगा।

घोड़े का थान से खुल जाना–मर्यादाहीन हो जाना।

घोड़े का रोग बंदर के सिर पड़ना–किसी का दोष किसी दूसरे पर आना।

घोड़े की शादी करना–घोडा बेचना।

घोड़े के आगे गाड़ी रखना–उलटा काम करना। [यह अंग्रेज़ी मुहावरा To put the cart before the horse का अनुवाद है।] उ० तुम तो हमेशा घोड़े के आगे गाडी रखते हो, आखिर दिमाग मे गोबर भरा है क्या ?

घोड़े चढ़ना–शादी होना। उ० हमारे गाँव के तो लंगड़े-लूले भी घोड़े चढ़ चुके हैं।

घोंघा-बसंत–मूर्ख। उ० अजीब घोंघा-बसत हो, कुछ समझते ही नहीं हो।

घोल कर पिला देना–बिलकुल याद करा देना। उ० अभी से याद करो, नही तो दो दिन मे कोई घोल कर पिला नहीं देगा।

घोल कर पी जाना–१. देखते-देखते खतम कर जाना। उ० आप ऐसे घूर रहे हैं, जैसे घोल कर पी जायँगे।

घोल पीना–१ कुछ न समझना। उ० तुम्हारे-जैसे पहलवानो को तो वह घोल पियेगा। २. सहज मे मार डालना। उ० चलो चलो, उसे घोल पीना आसान नही है ! ३. शरबत बना कर पीना। उ० वह आम का घोल पीता है।

घोल-मट्ठा करना–हलचल मचाना। उ० हमारे गाँव मे अहीरो ने बडा घोल-मट्ठा कर रक्खा है।

घोल में डालना–१ दुविधा में डालना। उ० आपने ही मेरे काम को घोल में डाल रक्खा है। २. हीला-हवाला करना। उ० क्यो घोल मे डालते हो, जल्दी दे दो।

घोल में पड़ना–झंझट मे पडना। उ० आप यहाँ आकर बेकार घोल मे पड़ गये।

घोलुआ घोलना–किसी काम मे ज्यादा समय लगाना। उ० आप हर एक काम में घोलुआ घोलते है।

घोलुआ पीना–तीखी चीज़ पीना। उ० बीमारी मे मुझे बड़ा घोलुआ पीना पड़ा था।

घोले में डालना–रोक रखना, फँसा रखना। उ० कार्य को घोले मे न डालो।

घोले में पड़ना–दिक्कत में पडना।

घोह देना–दे० 'घोह बाँधना'।

घोह बाँधना–१ धोखा देने के लिये आडंबर करना। उ० घोह न बाँधो, मै तुम्हारा चचा हूँ ! २. व्यर्थ का रोब दिखाना।

च

चंक्रमन करना–बहुत घूमना। उ० चंक्रमन करने से तुम्हारा दिल भी नही ऊबता ?

चंग उमहना–दे० 'चग चढना'।

चंग चढ़ना–१ काफ़ी रोब-दाब होना। उ० आपका आजकल खूब चग चढ़ा हुआ है। २. यश होना।

चंग पर चढ़ाना या चढ़ा देना–१. प्रशंसा करके कुप्पा बनाना। उ० आपने उसे चंग पर चढा कर अपना काम निकाल लिया। २. बहुत ऊँचा कर देना, दिमाग़ बढ़ा देना। उ० तुम्हें किसी ने चंग पर चढ़ा दिया है, उसी पर फूले-फूले फिरते हो। ३. घात पर चढ़ाना।

चंगुल में पड़ना–वश में आना। उ० बहुत दिनों के बाद आप मेरे चंगुल में पडे है, अब न छोड़ूँगा।

चंगुल में फँसना–दे० 'चंगुल में पड़ना'।

चंगुल से बचना–फँसाव से बचना।

चंड-मुंड लड़ाना–दो आदमियो मे लडाई-झगडा करा देना। उ० चंड-मुँड लडाना दुष्टो का काम है, सज्जन लोग ऐसा कभी नही कर सकते।

चंडाल-चौकड़ी–दुष्टो का समूह। उ० चडाल-चौकडी मे रहना आप ऐसे व्यक्ति के लिए उचित नही है। यहाँ चडाल-चौकडी न इकट्ठी किया करो।

चंडूखाने की गप–झूठी कल्पना। झूठी बात। उ० चंडूखाने की गप मै नही सुनना चाहता।

चंडूखाने की गप हाँकना–झूठी बाते कहना। उ० यहाँ चंडूखाने की गप हाँकने न आया करो।

चंडूल–१. बहुत झगडालू। उ० आप तो पुराने चंडूल है। २. बे-डीलडौल का। ३. मूर्ख। उ० वह तो महा चंडूल है।

चंदन उतारना–चंदन को पानी के साथ घिसना। उ० चदन उतारो, पूजा का समय हो गया।

चंदन चढ़ाना–घिसा हुआ चंदन लगाना।

चँदिया खाना–१. बात से सिर खाना। उ० मेरी चँदिया न खाइये, मुझे आराम करने दीजिये। २. सब कुछ छीन कर निर्धन कर देना। उ० जमीदारो ने किसानों की चँदिया खा ली।

चँदिया खुजलाना–मार खाने की इच्छा होना। उ० आज तुम सुबह से खेल रहे हो, मालूम होता है, तुम्हारी चँदिया खुजला रही है।

चँदिया पर बाल न छोड़ना–१ मारते-मारते सिर के बाल तक उड़ा देना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो चँदिया पर बाल तक न छोड़ूँगा। २. सर्वस्व ले लेना। उ० डाकुओं ने उसकी चँदिया पर बाल तक न छोड़ा।

चँदिया मूड़ना–१. खूब लूटपाट कर ले भगना। उ० बदमाशों ने बेचारी की चँदिया मूड़ ली। अब उसके पास कुछ भी नही है। २. मग के बाल बनाना।

चँदिया से परे सरकना–पास से हट जाना। उ० भाई मेरी तबीयत ठीक नहीं है, चँदिया से परे सरक कर बातचीत करो।

चंद्रमा बलवान होना–अच्छा समय होना। उ० आजकल उसका चंद्रमा बलवान है, जहाँ भी जाता है, उसकी जीत होती है।

चंपत बनना–गायब हो जाना। उ० वह सिपाही के आते ही चंपत बना।

चंपत होना–दे० 'चंपत बनना'।

चँवर ढुरना–वैभव की स्थिति मे होना।

चंबल लगना–बाढ आना, खूब पानी बढना। उ० घाघरा में हर साल चंबल लगता है।

चक काटना–ज़मीन के भाग करना।

चकचुहिया बोलना–सवेरा होना। उ० उठो, चकचुहिया बोल रही है।

चक जमना–रग जमना। उ० उसका आजकल सब पर चक जमा हुआ है।

चकत्ता पड़ना–खाल पर उभरा हुआ धब्बा पडना। उ० टिड्डे के काटने ही चकत्ता पड जाता है।

चकत्ता भरना–दाँतो से काटना। उ० लडके ने चकत्ता भर दिया, जिससे खून निकल आया।

चकत्ता मारना–दे० 'चकत्ता भरना'।

चकनाचूर करना–टुकडे-टुकडे करना। उ० बच्चे ने शीशे को चकनाचूर कर दिया।

चकफेरी देना–चारों तरफ घूमना। उ० तुम व्यर्थ क्यो चकफेरी दिया करते हो?

चक बँधना–दिन पर दिन अधिक होता जाना।

चकमा उठाना–१. किसी के धोखे मे आ जाना। उ० मैंने वहाँ जाकर खूब चकमा उठाया। २. हानि सहना। उ० साल भर चकमा उठाते ही बीता। ३ शोकित होना।

चकमा खाना–धोखा खाना। उ० मैं तो ऐसा चकमा खा गया कि कहते नही बनता।

चकमा देना–धोखा देना। उ० आप चकमा देकर मेरा कुछ नहीं कर सकते।

चकमे में आना–धोखा खाना। उ० चकमे मे आकर मैंने अपना सब कुछ नष्ट कर दिया।

चकाचक घुटना–अच्छी गाढी भंग घुटना और पिया जाना।

चकाचौंधी आना–१. तेज़ रोशनी के सामने आँख का न ठहरना। उ० सूरज की ओर देखो तो चकाचौंधी आ जाती है। २. आँखो के आगे अँधेरा छा जाना। उ० उसने ऐसा थप्पड़ मारा कि चकाचौंधी आ गई।

चकाचौंधी लगना–दे० 'चकाचौंधी आना'।

चकाबू का जाल होना–फँसाने तथा उलझाने वाली स्थिति मे होना।

चकाबू में पड़ना–१. फेर मे पड़ना, चक्कर मे पड़ना। उ० आपके चकाबू मे जो पड़ जायगा, उसका सब कुछ नष्ट हो जायगा।

चकाबू में फँसना–दे० 'चकाबू मे पड़ना'।

चकोर होना–प्रेमी होना। चंद्रमुख का प्रेमी होना।

चक्कर आना–१. सर चकराना, घुमटा आना। उ० मुझे कल से ही चक्कर आ रहा है। २. विपत्ति आना, आफत आना।

चक्कर काटना–१. इधर-उधर घूमना। उ० क्या तुम दिन भर चक्कर काटा करते हो? २. वृत्ताकार घूमना।

चक्कर खाना–१. हैरान होना। उ० घंटो चक्कर खाने के बाद मैं यहाँ पहुँचा हूँ। २. टेढ़े-मेढ़े जाना। उ० सड़क काफ़ी चक्कर खा कर गई है, इसी से दूर पड़ता है।

चक्कर देना–१. सिर मे दर्द होना। उ० मेरा सिर चक्कर दे रहा है। २. परेशान कर देना। उ० मुझे चक्कर न दो, तुम स्वय कर डालना। ३. प्रदक्षिणा करना। उ० मन्दिर को चक्कर देकर तो प्रवेश करो। ४. घुमाव-फिराव मे डालना। ५. धोखा देना।

चक्कर पड़ना–१. घुमाव या फेर पड़ना। उ० वहाँ से जाने मे चक्कर पड़ेगा। २. दे० 'चक्र पड़ना'।

चक्कर मारना–१. चारो तरफ घूमना। उ० आप क्या दिन-रात चक्कर मारा करते है? २. चले आना। उ० यहाँ भी चक्कर मार लिया कीजिए।

चक्कर में आना–१. अचम्भे मे आना। उ० औरत की वीरता देखकर सब लोग चक्कर में आ गये। २. धोखे मे आना। उ० आप भी उसके चक्कर मे आ गए।

चक्कर में डालना–१. परीशान कर देना। उ० आपने गाँव भर को चक्कर मे डाल रखा है। २. असमंजस मे छोड़ना। उ० मेरी पार्टी को इस समस्या ने चक्कर मे डाल दिया है। ३. धोखे मे डालना।

चक्कर में पड़ना–असमंजस, दुविधा या हैरानी मे पड़ना।

चक्कर में फँसना–दे० 'पेच मे आना'।

चक्कर लगाना–१. घूमना-फिरना। उ० हम रोज़ सुबह बड़ी दूर तक चक्कर लगाते है। २. प्रदक्षिणा करना। उ० हमने पशुपतिनाथ के मंदिर का चक्कर लगाया। ३. फेरी देना। उ० क्या चक्कर लगाते हो?

चक्की के दो पाटों में पिसना–दोनो ओर से कठिनाई मे पड़ना।

चक्की छेड़ना–अपनी कथा छेड़ना।

चक्की पिसवाना–जेल मे बंद करवाना।

चक्की पीसना–लगातार काम करना। उ० मुझसे चक्की पीसना नहीं हो सकता।

चक्की मे जुतना–काम मे लगना। उ० मै तो दिन भर चक्की मे जुता रहता हूँ।

चक्की रहाना–चक्की को कुटवाना, खुरदरा कराना।

चक्र गिरना–वज्रपात होना, दुःख आना। उ० अगर ज्यादा पाप करोगे तो तुम्हारे ऊपर चक्र ही गिरेगा।

चक्र पड़ना–दे० 'चक्र गिरना'।

चखचख करना–कहा-सुनी करना, झकझक करना। उ० क्या छोटी-सी बात के लिए चखचख कर रहे हो?

चख डालना–सब कुछ खतम कर डालना। उ० जो कुछ रुपया चार साल मे कमाया था, दो ही माह मे चख डाला।

चखाचखी होना–लाग डाट या प्रतिद्वंद्विता होना। उ० दोनो मे खूब चखाचखी है।

चु-चु करना–दुःख या करुणा प्रकट करना।

चचा होना–बहुत चालाक होना, बढ़ कर होना। उ० वह तुम्हारा चचा है।

चटक जाना–रुष्ट होना।

चटकन देना–तमाचा मारना। उ० ऐसी चटकन दूँगा कि होश उड़ जायँगे।

चटक-मटक—१. मसाला मिर्चा आदि पड़ा हुआ या चटपटा भोजन। २. ठाट-बाट। उ० मुझे चटक-मटक पसंद नहीं है।

चट कर जाना—१. सब समाप्त कर जाना। उ० वह अपने बाप के मरते ही सब रुपया चट कर गया। २. पचा लेना, न देना। उ० एक दो का नही, पचीसो का रुपया वह चट कर गया। ३. खा जाना।

चटकारे का—१. स्वादिष्ट। उ० आज की चटनी बड़ी चटकारे की बनी है। २. ज़ोर से, खुल कर। उ० चटकारे का एक गाना गाओ।

चटकारे भरना—१. खाने की इच्छा होना। उ० हमारी जीभ दही के लिये चटकारे भर रही है। २ ज़ोर से गाना। उ० कोई चटकारे भर रहा है।

चट-चट बलैया लेना—किसी प्रिय व्यक्ति की विपत्ति या बाधा दूर करने के लिए या मंगल के लिए स्त्रियों का उँगलियाँ चटका कर प्रार्थना करना।

चटनी कर डालना—दे० 'चटनी बनाना'।

चटनी करना—दे० 'चटनी बनाना'।

चटनी बनाना—१. बहुत बारीक़ करना। उ० मैंने चटनी बनाने के लिये नहीं कहा है; आप केवल इसे थोडा छोटा कर दे। २. पीस डालना। उ० तुमने तो हमारी चीज़ो की चटनी बना डाली। ३. बहुत मारने की धमकी देना। उ० अधिक बोले तो चटनी बना दूंगा।

चट से—दे० 'झट से'।

चट से करना—बहुत जल्दी करना। उ० उससे कुछ भी कहो, चट से कर देता है।

चट से होना—बहुत जल्दी होना।

चटाक-पटाक करना—१. बहुत जल्दी करना। उ० सभी कामो को वह चटाक-पटाक करता है। २. चट-पट का शब्द करना।

चटा देना—रिश्वत देना। उ० पचास रुपये चटा दो तो काम बने।

चटोरी ज़बान होना-चटपटा खाने का लालची होना।

चट्टी धरना—दंड लगाना।

चट्टी भरना—हानि पूरी करना। उ० घबड़ाओ मत, मैं चट्टी भर दूंगा।

चड्डी गठना—काम बन जाना।

चढ़ आना—आक्रमण करने के लिए आना।

चढ़ कर—दे० 'चढ़-बढ़ कर'।

चढ़ती आयु—युवावस्था।

चढ़ता यौवन, **चढ़ती जवानी**—युवावस्था का प्रारम्भ।

चढ़ने के लिए उतरना—बहुत उन्नति करने के लिए थोडी अवनति करना, झुकना या नीचे आना। उ० बातचीत से यह कभी उतरे नहीं, हैं उतरते फूल चढ़ने के लिए।

चढ़ बजना—खूब चलती होना। पौ-बारह होना। उ० आजकल उसकी चढ़ बज रही है।

चढ़-बढ़ कर होना—अधिक अच्छा होना। उ० वह हमसे हर एक बात मे चढ़-बढ कर है।

चढ़ा-उतरी लगाना—बार-बार चढना-उतरना। उ० तुम तो दिन भर चढ़ा-उतरी लगाए रहते हो, शांत बैठना जानते ही नहीं!

चढ़ा-ऊपरी लगाना—एक-दूसरे से आगे जाने की कोशिश करना। उ० हम से और महेश से हर एक काम मे चढ़ा-ऊपरी लगी रहती है।

चढ़ा जाना—खा-पी जाना।

चढ़ा देना—उत्सर्ग करना।

चढ़ा-बढ़ा होना—१ मशहूर होना। उ० आजकल मेरा भाई खूब चढ़ा-बढा है। २. प्रतिष्ठित या धनी होना। उ० देश में बिड़ला ही तो चढा-बढा है। ३ बल, धन, ज्ञान या किसी और बात में बढ कर होना। उ० वह तुमसे चढा-बढा है।

चढ़ा लाना—१. आक्रमण के लिए किसी को ले आना। २. बहकावा देकर अपने घात पर ले आना।

चढ़ाव। चढ़ाना या चढ़ना—१. भेंट-पूजा देना, २. विवाहोत्सव पर अनेक वस्तुओं का वधू को दिया जाना।

चढ़ावा-बढ़ावा देना—उत्तेजित करना। उत्साह-वर्धन करना। उ० चढावा-बढ़ावा देकर आपने ही उन दोनों को लड़ा दिया।

चतुराई छोलना—चालाकी करना, धोखा देना। उ० मेरे साथ चतुराई न छोलिए।

चतुराई तोलना—दे० 'चतुराई छोलना'। उ० मेरे साथ चतुराई न तोलो।

चतुराई छाँटना–१ चालाक बनना। २. अपनी चतुराई की बड़ाई करना। उ० यहाँ चतुराई न छाँटिए। मैं आपके रग-रेशे से खूब वाकिफ़ हूँ।

चतुराई छोलना–दे० 'चतुराई छाँटना'।

चतुराई झाड़ना–चालाकी को दूर कर देना।

चतुराई तौलना–दे० 'चतुराई छाँटना'।

चने का मारा मरना–इतना बलहीन होना कि चने के बराबर चीज से मारने पर भी मर जाना। उ० राजयक्ष्मा ने तो उसे ऐसा बना दिया कि चने के मारे मर जाय।

चपत जमाना–तमाचा मारना। उ० उसने लड़के को आज चार-पाँच चपत जमा दिये।

चपत झाड़ना–दे० 'चपत जमाना'।

चपत धरना–दे० 'चपत जमाना'।

चपत पड़ना–बेकार में खर्च होना।

चपनी चाटना–बहुत थोड़ा अंश पाकर रह जाना।

चपनी भर पानी में डूब जाना–बहुत लज्जित होना। उ० उसी दिन से जब कभी भी वह मेरे सामने आता है तो चपनी भर पानी में डूबने लगता है।

चपरगट्टू बनाना–मूर्ख बनाना।

चपाट होना–दे० 'मूर्ख होना'।

चपाती-सा पेट होना–ऐसा पेट होना जो हर समय पचका रहे। उ० तुम खाओ या न खाओ, तुम्हारा पेट ही चपाती सा है।

चबड़-चबड़ करना–बकवास करना। उ० कितनी बार तुम्हें समझाया है, बड़ों के सामने अधिक चबड़-चबड़ न किया करो।

चबा-चबा कर बातें करना–बहुत बन-बन कर धीरे-धीरे बातें करना। उ० जरा कांग्रेसी हो गए तो अपने को देश के प्रधान मंत्री ही समझने लगे। देखो न चबा-चबा कर बातें कर रहे हैं।

चबे को चबाना–किये हुये काम को फिर करना। उ० इतना समय नहीं है कि चबे को चबाऊँ।

चमक देना–१. चमकना। उ० आपकी कोट का कपड़ा खूब चमक दे रहा है। २. चमकाना। उ० जरा इस पर भी चमक दे दो।

चमकना–१. यश फैलना। उ० आजकल आप की खूब चमकी हुई है। २. रोब होना। दबदबा होना।

चमक मारना या मार देना–१. दे० 'चमक देना'। २. चमक को समाप्त कर देना। उ० धोबी ने कपड़े की सारी चमक मार दी।

चमगादड़ झूलना–सूनापन होना, सुनसान होना।

चमगादड़ होना–दोनों पक्ष में रहने वाला होना। उ० वह तो चमगादड़ है, भला उसका क्या विश्वास?

चमड़ा उधेड़ना–१ बहुत मारना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो चमड़ा उधेड़ दूँगा। २ चमड़े को देह से विलग करना। उ० मरने पर जानवरों का चमड़ा उधेड़ा जाता है।

चमड़ा खींचना–दे० 'चमड़ा उधेड़ना'।

चमड़ा सिझाना–चमड़ा को मसाला में डाल कर पकाना। उ० अभी तो चमड़ा सिझाना है, बाद में जूता बनेगा।

चमर्रचिट्ट होना–१. कजूस होना। २. बहुत गंदा रहना। उ० वह तो चमर्रचिट्ट है, उसके हाथ का कौन खाएगा?

चमार-चौदस मचाना–१ चमारों का एक त्यौहार करना। २ जरा भी धन पा जाने पर खुशी और धूम-धाम से तुरन्त खर्च कर डालना। ३. अस्थायी खुशी मनाना। उ० यही तो हाल है, कुछ मिल जाएगा तो चमार-चौदस मचाओगे और नहीं तो उपवास करोगे।

चमार-सियार–१. नीच प्रवृत्ति का। २. तुच्छ या छोटा। उ० मुझे चमार-सियार समझेंगे तो मैं भी वही उन्हें समझूँगा।

चमार होना–१. कजूस होना। २. दिल का छोटा या नीच होना। ३ गंदा रहने वाला होना।

चरका खाना–धोखा खा जाना।

चरका चराना–दे० 'झाँई बताना'।

चरका देना–दे० 'झाँई बताना'।

चरका पढ़ाना–दे० 'झाँई बताना'।

चरण चूमना–१. अत्यधिक आदर करना। २. सहज में प्राप्त हो जाना।

चरण छूना–प्रणाम करना। उ० बड़ों का चरण छूना छोटों का कर्तव्य है।

चरण पड़ना–१. आगमन होना। आना। उ० यहाँ आपके चरण पडते ही सब लोग खुश हो गये। २ चरण पर माथा रखना। ३. विनती या सिफारिश करना।

चरण धो-धो कर पीना–बहुत आदर करना।

चरण लेना–पैर छूकर प्रणाम करना। उ० वह रोज़ सवेरे सास का चरण लेती है।

चरणामृत देना–१. कोई चीज़ बहुत कम मात्रा मे पीने के लिए देना। उ० यह मुझे चरणामृत दे रहे है या शरबत? २ किसी पूज्य व्यक्ति का चरण धोकर देना। उ० गुरूजी हमे भी चरणामृत दे दे। ३ शालिग्राम का नहलाया जल देना।

चरणामृत लेना–१ किसी बडे का चरण धोकर पीना या आचमन करना। २ शालिग्राम का धोया जल पीना या आचमन करना।

चरणों का दास होना–पूर्ण अनुगत होना।

चरणों के नीचे आँख बिछाना–अत्यधिक आदर करना।

चरणों में लोटना–अधीन होना।

चरबा उतारना–१ चित्र खीचना। उ० किसका चरबा उतार रहे हो? २ अनुकरण करना। उ० सभी गाधी जी का चरबा उतारने की कोशिश करते है, पर वास्तव मे कोई नही।

चरबी चढ़ना–१. खूब मोटा होना। उ० इस बकरे पर चरबी चढी हुई है। २. शरारत सूझना। उ० चरबी बहुत चढी हो तो ठीक कर दूँ।

चरबी छाना–१ बहुत मोटा हो जाना। २ दे० 'आँखों मे चरबी छाना'।

चरबी बढ़ना–गर्व होना।

चराना–बेवकूफ़ बनाना। उ० मुझे ही चरा रहे हो, कोई और नहीं मिला तुम्हे।

चरित्तर दिखाना–१. आडबर दिखाना। २. धूर्त्तता की चाल दिखाना।

चल-चलाव लगना–मृत्यु के समीप होना।

चलता करना–१. आगे बढ़ाना। उ० किसी तरह मेरी दरख्वास्त चलती करो, फिर देखा जायगा। २. झगडा मिटाना। उ० केवल आप ही इसे चलता कर सकते हैं। ३. धीरे से हटा देना। उ० कुछ दे ले कर इसे चलता करो।

चलता खाता–दे० 'चलता लेखा'।

चलता गाना–वह गाना जो बहुत प्रचलित हो। उ० यह तो बड़ा चलता गाना है।

चलता-पुरजा होना–चालाक होना। व्यावहारिक होना। उ० वह तो बड़ा चलता-पुरजा है, उसे साथ ले ले तो आराम रहेगा।

चलता लेखा–वह हिसाब, जिसमे अभी लेन-देन हो रही हो। उ० अभी चलता लेखा है, जितना मन चाहे ले लो।

चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना–होते काम मे अडचन डालना। उ० चलती गाडी मे रोडा न अटकाओ।

चलती हवा से लड़ना–बात-बात पर झगड़ा करना। बिना किसी कारण के भी लड बैठना। उ० तुम्हारी कैसी आदत है कि चलती हवा से लड़ बैठते हो।

चलते बनना–१. भाग जाना। उ० वह मेरी किताब लेकर चलता बना। २. धूर्तता की बाते करना। उ० हमसे क्यो चलते बनते हो?

चलन से चलना–मर्यादा के अनुसार काम करना। उ० हर एक व्यक्ति को चलन से चलना चाहिये।

चल निकलना–किसी कार्य मे उन्नति करना। उ० व्यापार मे अब वह चल निकला।

चलनी कर डालना–दे० 'छलनी कर डालना'।

चल पड़ना–रवाना होना। चलना, प्रस्थान कर देना। उ० हम लोग भी तुम्हारे पीछे ही चल पड़े।

चल बसना–मर जाना। उ० बहुत दिनो की बीमारी के बाद बेचारा आज चल बसा।

चलित्तर उछलना–ग़लत व्यवहार होना।

चले चलना–आगे बढ़ना। उ० अभी चले चलो, जब वह मिलेगा तो मै सकेत मे बता दूँगा।

चलते-फिरते नज़र आना–खिसक जाना।

चश्मपोशी करना–१. सामने न आना। नज़र बचाना। २. चापलूसी करना। उ० मुझे चश्मपोशी करना नहीं आता, जो होता है, साफ़ कह देता हूँ।

चस्का लगना या लग जाना–आदत पड़ना। उ० मुझे उपन्यास पढ़ने का चस्का लग गया है।

चहका देना–१. चिढ़ाना। चुभती हुई बात कहना। उ० अगर उसे चहका दोगे तो वह लड़ बैठेगा। २. आग लगाना। (गाली) ३. चिड़ियों का चहकना। उ० प्रातःकाल पक्षियों का चहका देना बड़ा सुहावना लगता है।

चहका लगाना–दे० 'चहका देना'।

चहर देना–धूमधाम होना। उ० यह दुनिया चार दिन की चहर है।

चहलक़दमी करना–धीरे-धीरे टहलना।

चहल-पहल होना–धूम-धाम होना। उ० बहन की शादी के कारण उसके यहाँ खूब चहल-पहल है।

चांडाल-चौकड़ी–नीचों की टोली। उ० इस चांडाल-चौकड़ी को यहाँ से भगाना चाहिये।

चांडाल होना राक्षस होना। क्रूर, बेधर्मी, गंदा या नीच होना।

चाँद का कुंडल बैठना–बहुत बदली पर प्रकाश पड़ने के कारण चन्द्रमा के चारों ओर एक वृत्त या घेरा-सा बन जाना। उ० चाँद का कुंडल बैठना सूखे का चिह्न है।

चाँद का खेत करना–चन्द्रमा के चारों ओर फैला हुआ प्रकाश होना। उ० चाँद का खेत करना बड़ा सुहावना लगता है।

चाँद का टुकड़ा–अत्यन्त खूबसूरत। उ० उसका लड़का चाँद का टुकड़ा है।

चाँद का मंडल बैठना–दे० 'चाँद का कुंडल बैठना'।

चाँद चढ़ना–१. चन्द्रमा निकल आना। उ० चाँद चढ़ रहा है, अब उजेला हो जायगा। २. भाग्य चमकना। उ० अब उसका चाँद चढ़ रहा है।

चाँद ढलना–दे० 'सूरज ढलना'।

चाँदनी का खेत करना–दे० 'चाँद का खेत करना'।

चाँदनी खिलना–चन्द्रमा का स्वच्छ प्रका[श] होना। उ० जब चाँदनी खिल जाती है [त]ब बड़ा सुहावना लगता है।

चाँदनी छिटकना–दे० 'चाँदनी खिलना'।

चाँदनी मे चुर जाना–बहुत सुकुमार होना। उ० वह तो चाँदनी मे चुर जाने वाली है।

चाँद पर थूकना–१. निर्दोष पर कलंक लगाना। २ मूर्खता करना। ३. दूसरे को इस प्रका[र] कलंकित करना कि उसका कुछ न हो औ[र] अपने को स्वयं कलंकित होना पड़े।

चाँद पर धूल डालना–किसी निर्दोष पर कल[ंक] लगाना। उ० चाँद पर धूल डाल कर करो[गे] क्या, उसका कुछ भी न बिगड़ेगा।

चाँद पर बाल न छोड़ना–बिल्कुल लूट लेना, सब कुछ ले लेना। उ० डाकुओं ने बेचारे [के] चाँद पर बाल तक न छोड़ा।

चाँद में दाग़ लगना–सुन्दर वस्तु मे दोष होना। उ० दुर्घटना ने तुम्हारा चेहरा ऐसा कर दि[या] जैसे चाँद मे दाग़ लग गया हो।

चाँद-सा मुखड़ा–बहुत सुन्दर मुख। उ० उस[का] चाँद-सा मुखड़ा देखते ही बनता है।

चाँदी कटना–आराम से दिन बीतना। उ[०] अब तो नौकरी मे खूब चाँदी कट रही है।

चाँदी कर डालना–१. सब बेच कर रुपया क[र] लेना। उ० जब तुम्हें यहाँ रहना ही न[हीं] है तो अपने घर का सब सामान बेच क[र] चाँदी कर डालो। २. जरा कर भस्म क[र] डालना।

चाँदी का जूता मारना–रुपया देकर अपने व[श] मे करना। उ० भाई आजकल तो व[ह] जमाना है कि चाँदी का जूता मार कर जिस[से] जो चाहो करवा लो।

चाँदी का जूता लगाना–दे० 'चाँदी का जूत[ा] मारना'।

चाँदी काटना–१. खूब धन कमाना। उ० आज[-] कल तो व्यापार में तुम चाँदी काट रहे हो। २. मजे लूटना।

चाँदी का पहरा–सुख के दिन। उ० मेरा [भी] चाँदी का पहरा कभी लौटेगा।

चाँदी खोलवाना–सिर के बाल बीच मे चाँ[द] के पास मुड़वाना। उ० चाँदी खोलवा ल[ो], दवा नहीं लगानी होगी।

चाँप चढ़ाना–१. धनुष की डोरी खींचना। २. डाँटना। उ० बच्चे पर क्या चाँप चढ़ाते हो ? ३. ज़बर्दस्ती करना, दबाव डालना। उ० चाँप चढ़ाने से वह नहीं देगा।

चांस आना–दे० 'चांस भिड़ना'।

चांस पड़ना–दे० 'चांस भिडना'।

चांस बैठना–दे० 'चांस भिडना'।

चांस भिड़ना–१. ठीक मौका और परिस्थिति आना। उ० चांस भिडा तो मै भी पास हो जाऊँगा। २. संयोग लगना।

चांस लगना–दे० 'चांस भिड़ना'।

चाक करना–चीरना, फाड़ना।

चाक चौबंद–१ हृष्ट-पुष्ट, तगडा। २. फुर्तीला, चुस्त।

चाक देना–दे० 'चाक करना'।

चाकर होना–अनुवर्ती या आज्ञाकारी होना।

चाट पड़ना–चस्का लगना, आदत होना। उ० आजकल मुझे अखबार पढने की चाट पड गई है।

चाट-पोंछ कर खाना–सब खतम कर जाना। उ० बडी मेहनत से माँग लाया था, आप सब चाट-पोंछ कर खा गए।

चादर उतारना–बेइज्ज़त करना। उ० अगर आप वहाँ गये तो अवश्य ही आपकी चादर उतारी जाएगी।

चादर की लाज रखना–इज्ज़त रखना। कुछ इज्ज़त रख लेना।

चादर की लाज रहना–दे० 'चादर रहना'।

चादर की शिकन गिनना–दे० 'छत की कड़ियाँ गिनना'।

चादर-चूडी रख लेना–वैधव्य से बचा लेना।

चादर तान के सोना–बेफ़िक्र हो जाना।

चादर देखकर पाँव फैलाना–अपनी शक्ति के अनुसार काम करना। उ० चादर देखकर पाँव फैलाना बुद्धिमानो का काम है।

चादर रह जाना–थोड़ी भी इज्जत रहना। उ० आपके आ जाने से मेरी चादर रह गई।

चादर से बाहर पैर फैलाना–१. शक्ति से ज़्यादा खर्च करना। उ० चादर से बाहर पैर फैलाओगे तो बाद में कष्ट होगा। २. मर्यादा का उल्लङ्घन करना। उ० चादर से बाहर पैर न फैलाओ, नहीं तो जग में हँसी होगी।

चाबी घुमाना–परिस्थिति को प्रभावित करना।

चाम के दाम चलाना–१. अन्याय करना। अपनी ज़बर्दस्ती के भरोसे कोई काम करना। उ० सिर पै सौति हमारे कुबजा चाम के दाम चलावै। २. बहुत नफ़ा कमाना।

चार अच्छर घसीटना–कुछ जल्दी से लिख देना। उ० पत्र क्या लिखते हैं, चार अच्छर घसीट देते है।

चार अच्छर पढ़ लेना–थोडा पढ लेना।

चार आँखें करना–आँख से आँख मिलाना। उ० मेला देखने गए थे या अपने मित्रो से चार आँखे करने ?

चार आँखें होना–देखादेखी होना। उ० तुम दोनो मे चार आँखें हो रही थीं।

चार उँगलियाँ तक सिर पर न रखना–थोड़ा भी ख़याल न करना। बिल्कुल खबर न लेना। उ० वह यों तो इतना प्रेम दिखाता है, परन्तु मेरा पुत्र मर गया और उसने चार उँगलियाँ तक सिर पर न रक्खी।

चार क़दम–थोड़ी-दूर। उ० पैदल ही चलो, चार क़दम पर तो है।

चार क़दम आगे होना–बढकर होना।

चार के कंधे पर चढ़ना–१ मर जाना। उ० कुछ ठीक नही है कि कब चार के कंधे पर चढना पडे। २. डोली मे जाना। उ० चद्रगुप्त प्रायः चार के कधो पर चढता था।

चार के कंधे पर चलना–दे० 'चार के कधे पर चढना'।

चार के कंधे पर जाना–दे० 'चार के कधे पर चढ़ना।

चार चाँद लगना–बढना, शोभा का अधिक होना।

चार चाँद लगाना–१. चौगुनी इज्जत करना। उ० मोहन ने अपने कामो से बाप की इज्ज़त मे चार चाँद लगा दिये। २. सौदर्य अत्यन्त बढा देना। उ० यह अहाता बनवा कर तुमने मकान में चार चाँद लगा दिये।

चार दिन–कुछ समय। उ० इनका क्रोध चार दिन का है, अपने आप ठीक हो जायेगा।

चार दिन का मेहमान होना–कुछ ही दिन जीने वाला होना।

चार दिन की चाँदनी–थोड़े समय का सुख। उ० अरे भाई, समार मे चार दिन की ही चाँदनी है, फिर तो वही अँधेरी रात।

चार दिन की चाँदनी होना–थोड़े समय का ही सुख होना। उ० धन का घमंड नहीं करना चाहिये, यह चार दिन की चाँदनी है, फिर वही अँधेरी रात है।

चार-पाँच करना–१. हीला-हवाला करना। क्या चार-पाँच कर रहे हो, जो कहना हो साफ-साफ कहो। २. बात बढाना। उ० बेकार चार-पाँच न करो, आपस मे समझ लो। ३. व्यर्थ बहस या हुज्जत करना। उ० तुम्हारी तो चार-पाँच करने की आदत है। ४. गड़बड़ करना।

चार-पाँच लाना–दे० 'चार-पाँच करना'।

चारपाई धरना–दे० 'चारपाई पर पड़ना'।

चारपाई पकड़ना–दे० 'चारपाई पर पड़ना'।

चारपाई पर पड़ना–१. बहुत बीमार होना। उ० वह आज दस दिन से चारपाई पर पड़ा है। २. सोना। ३. लेटना। उ० कैसे तुम्हें हरदम चारपाई पर पड़ा रहना पसन्द आता है?

चारपाई लेना–दे० 'चारपाई पर पड़ना'।

चारपाई सेना–दे० 'चारपाई पर पड़ना'।

चार पैसे कमाना–कुछ कमाई करना।

चार पैसे होना–पास मे कुछ रुपये होना। उ० थोड़े दिनो मे चार पैसे हो गये है, नही तो पहले बहुत गरीब था।

चारा डालना–किसी को फँसाने के लिये कुछ धन खर्च करना। उ० कुछ माल दो, चारा डालना है, एक मोटा शिकार फँसा रहा हू।

चारा पास न होना–कोई वश न होना। लाचार होना। उ० वह बने आस छोड़ बेचारा, पास जिसके न रहा चारा है।

चारा बदलना–दे० 'दाना बदलना'।

चार सौ बीस–अत्यन्त धूर्त्त, ठग, धोखेबाज।

चारों खाने चित्त गिरना–दे० 'चारो खाने चित्त पड़ना'।

चारों खाने चित्त पड़ना–१. अचानक कोई शोक या हानि सुन कर चौंधिया जाना। २. हाथ-पैर पसार कर उतान गिरना। उ० वह तो पेड़ से चारों खाने चित्त पड गया। ३. बुरी तरह हारना।

चारो फल पाना–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारो की प्राप्ति करना।

चारो खाने चित्त पड़ना–दे० 'चारो खाने चित्त पड़ना'।

चारों हाथ-पाँव से दौड़े आना–उत्साह एवं तत्परता से आना।

चाल खेलना–धोखा देना। चालबाजी चलना। उ० मेरे साथ चाल मत खेलो, उलटे तुम्हारी ही हानि होगी।

चाल चलना–१. धोखे से काम पूरा करना। उ० सबसे तुम चाल ही चलना चाहते हो। आदमी नही देखते, यही बुरा है। २. धोखेबाजी करना। उ० अब कम से कम हमसे तो चाल न चलो।

चाल ठीक करना–१. आदत सुधारना। चाल-चलन ठीक करना। उ० अपनी चाल ठीक कर लो, नही तो मार खा जाओगे। २. गति ठीक करना। उ० घडी की चाल ठीक कर दो।

चाल पट पड़ना–१. उपाय न लगना। उ० ससार मे सब हो जाये, पर तुम्हारी चाल पट नही पड सकती। २. अच्छे दिनो का जाता रहना। उ० अब उनकी भी चाल पट पड़ गई।

चाल सुधारना–आचरण ठीक करना। उ० अपने लडके की चाल सुधारो, नही तो बाद में पछताओगे।

चालाकी खेलना–होशियारी से काम निकालना। उ० चालाकी खेल गया, नही तो उसका काम कभी भी न हुआ होता। २. मक्कारी करना। उ० मेरे साथ तो कम से कम चालाकी न खेलो।

चाला देखना–यात्रा का मुहूर्त निकालना।

चाला निकालना–मुहूर्त निश्चित करना।

चाव निकालना–इच्छा पूरी करना। उ० इस समय तुम भी चाव निकाल लो, नही तो फिर पछताओगे।

चावल भर–बहुत थोड़ा। उ० मुझे चावल भर अफ़ीम दे दो।

चिउटा-गुड़ होना१. गुत्थमगुत्था होना। भिड़ जाना। उ० दोनो भाई आपस मे चिउटा-गुड हो गये थे और छुड़ाने से भी न छूटते थे। २. आपस मे बहुत प्रेम होना।

चिउटियाँ लगना—अप्रिय बात से तिलमिलाहट होना ।

चिउटी की चाल चलना—बहुत मन्द चाल से चलना । उ० तुम तो इस काम में चिउटी की चाल चल रहे हो । इस तरह तो यह काम पूरा नहीं हो सकता !

चिउटे की गिरह पेट में होना—बहुत थोड़ा भोजन करना । उ० उसके लिए इतना काफ़ी है, उसके पेट में तो चिउटे की गिरह है ।

चिउटे को पर निकलना—१ मौत का समय आना । उ० चिउटे को पर निकल रहे है । २. नष्ट होने के या समाप्त होने के पूर्व किसी का शरारत करना । ३. ऐसा काम करना जिससे मृत्यु हो । मरने पर होना ।

चिउटे को पर लगना—दे० 'चिउटे के पर निकलना' ।

चिंता लगना—किसी बात की हर समय फ़िक्र रहना । उ० इसके करने की चिंता लगी रहती है, देखे कब पूरा होता है ?

चिंता सवार होना—दे– 'चिंता लगना' ।

चिंता-सागर में गोते खाना—अत्यधिक चिन्ता-मग्न होना ।

चिंदी-चिंदी करना—छोटे-छोटे टुकड़े कर डालना । उ० लड़के ने कागज को चिंदी-चिंदी कर डाला ।

चिकना घड़ा होना—१ किसी की बात का कुछ असर न होना । उ० वह चिकना घड़ा है, लाख समझाओ, मानता ही नही । २. ओछे स्वभाव का होना, मन मे बात न रखने वाला होना । उ० आप तो चिकने घडे है, आपमे मैं कुछ भी नहीं कह सकता ।

चिकना-चुपड़ा होना—१ बनाव-सिंगार किये होना । २ साफ़-सुथरा होना । उ० साधू की कुटिया बड़ी चिकनी-चुपड़ी थी ।

चिकना देख फिसल पड़ना—१ खूबसूरत स्त्री देखकर मोहित हो जाना । उ० चिकना देख फिसल पड़ते हो और बनते हो अपने को ब्रह्मचारी ? २. साधारण लाभ देख कर अपना नैतिक पतन करना । उ० चिकना देख फिसल पड़े तो ससार की दृष्टि से गिरा ही समझो ।

चिकना मुँह—१. सुन्दर मुँह । चिकने मुँह की औरत देखकर मोहित हो गया ।२. मधुरभाषी । उ० चिकने मुँह का व्यक्ति सर्वत्र ही इज्ज़त पाता है ।

चिकनी-चुपड़ी बातें करना—मीठी बातें करना । ऐसी बात करना जो वास्तव मे चालबाज़ी की हो । उ० वह चिकनी-चुपडी बातें करके अपना काम निकाल लेता है ।

चिकने घडे पर पानी न ठहरना—दे० 'चिकने घड़े पर पानी न पडना' ।

चिकने घडे पर पानी न पड़ना—सीख का प्रभाव न पडना । बात का असर न होना । उ० इन नीचों को क्या सिखा रहे है, जानते नही कि चिकने घडे पर पानी नही पडता ।

चिकने मुँह का ठग—ऊपर से मीठी कहने वाला और अन्दर मे धोखेबाज़ । उ० उसकी बात का तुम कभी भी विश्वास न करना । वह चिकने मुँह का ठग है ।

चिट्ठा खोलना—गुप्त बात कहना ।

चिट्ठा बँटना—भुगतान होना ।

चिट्ठी करना—किसी को रुपया देने के लिये लिखित आज्ञा देना ।

चिड़िया उड़ जाना—फँसे हुए व्यक्ति का भाग जाना ।

चिड़िया का दूध—असभव वस्तु । नामुमकिन चीज । उ० यह बात तो चिडिया का दूध है, इसका मैं कैसे विश्वास करूँ ? २. अप्राप्य या न मिलने वाली वस्तु ।

चिड़िया का पूत नहीं—किसी का भी न होना, सुनसान ।

चिड़िया के छिनाले में पकड़ा जाना—व्यर्थ की आपत्ति मे फँसना ।

चिड़ियानोचन होना—चारो तरफ़ से तकाज़ा होना । उ० कुछ ही रुपये के लिए इतना चिड़ियानोचन हो रहा है ।

चिड़िया फँसाना—१. किसी मालदार को अपने दाँव पर चढ़ाना । उ० मैंने खूब चिड़िया फँसाई है, अब सब काम हो जायगा । २. पराई स्त्री को बहका कर सभोग के लिये सहमत करना ।

चित करना—कुश्ती मे पछाड़ना ।

चित-पट करना—परीशान करना, हैरान करना ।

चितवन का वार करना—तिरछी नज़रो से घायल करना । उ० उस वेश्या ने तो अपनी चितवन का वार कर बहुतों को गिरा दिया ।

चितवन चढ़ाना–क्रोधित होना। तेवर बदलना। उ० क्यो चितवन चढ़ाये हो, आख़िर बात क्या है ?

चिता में बैठना–१. सती होना। पति के शव के साथ जलना। उ० लोगों ने उसे चिता मे बैठने से मना किया, पर वह न मानी और सती हो गई। २. बहुत ख़तरनाक काम करना।

चित्त अटकना–मन का अन्यत्र लग जाना।

चित्त उचटना–जी न लगना। दिल हटना। उ० मेरा चित्त उचट गया है, अब यहाँ न रहूँगा।

चित्त करना–दे० 'चित करना'।

चित्त चिहुँटना–चित्त मे चुभना।

चित्त चुराना–मन मोहित करना। उ० क्या उसने तुम्हारा चित्त चुरा लिया है, जो दिन-रात उसी के फेर मे रहते हो ?

चित्त पर चढ़ना–मन मे बैठना। पसद आना। उ० लड़की की शादी के लिए वही लड़का चित्त पर चढ़ा है। २. स्मरण होना। उ० जब उसकी बातें चित्त पर चढ़े तो बताऊँ।

चित्त फटना–दे० 'मन फटना'।

चित्त बँटना–ध्यान इधर-उधर जाना। उ० चित्त बँटेगा तो समझ मे नही आएगा।

चित्त में जमना–दे० 'चित्त मे बैठना'।

चित्त थिराना–मन स्थिर होना।

चित्त में धँसना–दे० 'चित्त मे जमना'।

चित्त में बैठना–किसी बात का दिल मे पक्का हो जाना। उ० मेरे चित्त मे विदेश भ्रमण करने की बात बैठ गयी है।

चित्त में होना–जी चाहना। उ० मेरे जी मे है कि अब घर जाऊँ।

चित्त मैला करना–मन मे दुर्भावना रखना; बुरा मानना।

चित्त लगना–१. प्रेम होना। उ० उससे मेरा चित्त लग गया है। काफ़ी समय तक जी का अचंचल रहना। उ० अब उसका चित्त यहाँ बच्चो मे लगने लगा है। ३. दे० 'मन लगना'।

चित्त लेना–१. हृदय की थाह लेना। उ० उसका चित्त लो, तब मालूम होगा कि वह क्या चाहती है ? २. चित्त खीचना या आकर्षित करना।

चित्त से उतरना–१. हृदय में स्थान न रहना। उ० कुछ कारणवश अब वह चित्त से उतर गया है। २. स्मरण न रहना। उ० इस समय तो उसका नाम चित्त से उतर गया है, पीछे बतायेंगे।

चित्त से न टलना–दिल में जमा रहना।

चित्त होना–१. दे० 'चित्त में होना'। २. पटका जाना।

चित्ती पड़ना–१. दाग पड़ना। २. रोटी का थोडा-सा जल जाना। ३. जूए मे जीत जाना।

चित्र उरेहना–चित्र बनाना।

चित्र खीचना–स्थिति का हूब-हू चित्रण करना।

चित्र लिखे से–स्तब्ध, अवाक्।

चिथड़े लपेटना–१. दु:ख से दिन बिताना। उ० आजकल भारत मे ज्यादातर आदमियो को चिथड़े लपेटने पड़ते है। २. बहुत फटे कपड़े पहनना। ३. गदा रहना।

चिनगारी छोड़ना–क्रोध पैदा करने वाली बाते कहना। उ० आपने चिनगारी छोड कर हमे उससे झगड़ा करा ही दिया।

चिनगारी झाड़ना–क्रोधपूर्ण बातें कहना।

चपिका देना–नौकरी लगाना। उ० इसको कही चपका दो।

चिर के रह जाना–घाटा हो जाना। उ० इस रोजगार मे तो मै चिर के रह गया।

चिराग का हँसना–दे० 'दिये का हँसना'।

चिराग गुल पगड़ी गायब होना–अवसर पाते ही माल चुरा लिया जाना। उ० उन्हे तुम अपने समझते हो, अरे देखना, वे तो चिराग़ गुल पगडी गायब होने वाली बात चरितार्थ करेंगे।

चिराग़ गुल होना–१. रौनक मिटना। उ० आजकल चौक का भी चिराग गुल हो गया २. चिराग़ बुझना। उ० चिराग़ गुल हो गया। ३. कुल का समाप्त हो जाना। उ० उनका तो चिराग़ ही गुल हो गया। अब कोई रोने वाला भी नही रहा।

चिराग़ ठंडा करना–१. किसी का कुल समाप्त कर देना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे, तो तुम्हारा चिराग़ ही ठंडा कर दूँगा। २. चिराग़ बुझा देना।

चिराग़-तले अँधेरा होना–१ किसी सम्मानित व्यक्ति द्वारा ही बुराई होना। उ० कांग्रेस के आदमी ही घूस लें, यह तो चिराग़-तले अँधेरा है! २. विरुद्ध बात होना। उ० विदेशों को कपड़ा जाता है और हम लोग एक-एक सूत के लिए तरसते है, सरकार को पता नहीं कि चिराग़-तले अँधेरा है।

चिराग़ बढ़ाना या बढ़ा देना–दीपक ठंडा करना। उ० चिराग बढ़ा दो।

चिराग़-बत्ती करना–दिया जलाना। उ० अँधेरा हो रहा है, चिराग़-बत्ती करो।

चिराग़ लेकर ढूंढ़ना–बहुत खोज करना। उ० चिराग लेकर ढूंढ़ोगे तो भी ऐसा सच्चा नौकर न मिलेगा।

चिराग़ शेर करना–रोशनी तेज करना। उ० चिराग़ शेर कर दो, पढ़ने मे दिक्क़त होती है। चिराग़ इतना शेर न करो कि आँख न ठहरे।

चिरायँध फैलना–बदनामी फैलना। उ०तुम्हारी तो बड़ी चिरायँध फैल रही है।

चिलम चढ़ाना–१. गुलामी करना। उ० जीवन भर तो आपकी चिलमे चढ़ाया, अब कहाँ जाऊँ? २. चिलम पर तम्बाकू रख कर आग रखना।

चिलम पीना–चिलम पर तम्बाकू पीना। उ० चिलम पी लूं तो चलूं।

चिलम भरना–दे० 'चिलम चढाना'।

चिल्ल-पों मचाना–१ शोर-गुल करना। उ० गाँव वालों ने बड़ा चिल्ल-पों मचाया, पर पुलिस ने अपनी मन वाली ही की। २ रोना-पीटना। उ० अब क्या चिल्ल-पो मचाए हो, जो गया, वह तो आ नही सकता।

चिल्ले का जाड़ा–बहुत काफ़ी जाड़ा। उ० आजकल चिल्ले का जाड़ा पड रहा है।

चिल्हक उठना–दर्द होना, दर्द उठना। उ० चिल्हक उठ रही है।

चिहर जाना–फूटने का निशान पड़ जाना। पूर्णतः फूट कर अलग होने के पहले किसी चीज़ मे बाल-जैसा निशान पड़ जाना। उ० यह घड़ा चिहर गया है, बचा कर खीचना, नहीं तो फूट जायगा।

चीं-चपड़ करना–विरोध या प्रतिवाद करना, ना-नू करना।

चींटी की चाल चलना–बहुत धीरे-धीरे चलना। उ० क्या चींटी की चाल चल रहे हो? ऐसे तो घर पहुँचने में महीनो लग जायँगे।

चीं बोलाना–हार मनवाना। उ० बस बच्चू एक ही हाथ में ची बोला दूंगा।

चीख मारना–१. शोर-गुल करना। उ० बच्चा क्यो चीख मार रहा है? २. ज़ोर से रोना। उ० वह मर गया क्या? लोग चीख मार रहे हैं।

चीरा उतारना–दे० 'नथुनी उतारना'।

चील के घोंसले से मांस छीनना–दुष्कर कार्य करना।

चुकौता लिखना–भरपाई की रसीद लिखवाना। उ० उसको सब रुपया देकर चुकौता लिखवा लो।

चुगली करना–दे० 'चुगली खाना'।

चुगली खाना–किसी की शिकायत करना। आपकी चुगली खाने से वह मेरे ऊपर नाराज़ न होगा।

चुगली लगाना–दे० 'चुगली खाना'।

चुटकियाँ लेना–हँसी करना। उ० बड़ों की चुटकियाँ लेते तुम्हे शर्म नही आती? २ चुभने या लगने वाली बात कहना। उ० तुमने तो ऐसी चुटकियाँ ली कि वह पस्त पड़ गया।

चुटकियों पर मुहिम सर होना–आसानी से जीत होना। हँसते-हँसते मोर्चा जीतना। उ० जी ठिकाने है अगर रहता नही, चुटकियो पर तो मोहिम होगी न सर।

चुटकियों में उड़ाना–१ कुछ परवाह न करना। उ० ऐसे आदमियों को मैं चुटकियों मे उड़ाता हूँ। २ हँसी में उड़ाना। उ० इस बात को चुटकियों मे मत उड़ाओ। ३. आसान समझना। ४. आसानी से निपटारा करना।

चुटकियों में होना–१. जल्दी होना। उ० चुटकियों में यह काम हो जायेगा। २. आसानी से होना। उ० तुम इससे डरते हो! यह तो चुटकियों में हो जायगा।

चुटकी देना–चुटकी बजाना। उ० मोहन चुटकी दे-देकर खूब गा रहा है।

चुचका आम होना–दुर्बल, सूखा हुआ सा आदमी।

चुटकी बजाते–बहुत जल्दी। उ० इस काम को मैं चुटकी बजाते कर लूँगा। २ बहुत आसानी से। हँसी में।

चुटकी भरना–चुटकी काटना।

चुटकी भरे लोहू टपकना–बहुत कोमल, गोरा और लाल होना। उ० उसे तो चुटकी भरे लोहू टपकता है, मैंने ऐसा शरीर नहीं देखा।

चुटकी माँगना–भिक्षा माँगना। उ० वह आजकल चुटकी माँगता फिरता है।

चुटकी लेना–हँसी उड़ाना, व्यंग्य करना।

चुटकुला छोड़ना–१ मौके की या चुभती बात कहना। २. हँसी की बात कहना। उ० जब दो-चार आदमी एक जगह बैठते हैं, तो वह सब चुटकुला छोडता है।

चुटिया हाथ में होना–अधिकार में होना। उ० उसकी चुटिया अब हाथ में हो गई है, जब चाहूँ, अपना काम करवा लूँ।

चुनचुना लगना–बहुत बुरा लगना। उ० अपनी बार चुनचुना क्यों लगता है?

चुनौती देना–१ उत्साहित करना। उ० तुम उसे चुनौती न दो। जरा उसे भी तो देखा। २ ललकारना। उ० मैं इस मजमे के हर एक आदमी को चुनौती देता हूँ, जो चाहे मेरे लड़के से लड़ ले।

चुपके से–धीरे से, गुप्त तौर से। उ० चुपके से चले जाओ।

चुपड़ी और दो-दो होना–अत्यधिक लाभ होना, वैभव से भरा-पूरा होना।

चुप साधना–१ कुछ न बोलना। उ० आप क्यों चुप साधे हैं, क्या कोई खास बात हो गई है?

चुप होना–१ उत्तर न देना। उ० जब मैं उसे डाटने लगता हूँ तो वह चुप हो जाता है। २ स्वीकार करना।

चुभती हुई कहना–तीखी बात कहना।

चुभती हुई आँख से देखना–मर्मभेदी दृष्टि डालना।

चुराना-चबराना–चोरी करना। उ० चुरा-चबरा कर वह कुछ न कुछ रोज ले आता है, किसी तरह पुलिस जान जाती तो अच्छा गुल खिलता।

चुल्लुओं खून पीना–बहुत अधिक दुःखी करना। उ० यह समाचार देकर तुमने चुल्लुओं खून पी लिया।

चुल्लुओं रोना–बहुत अधिक रोना। उ० आपके चले जाने पर वह बेचारा चुल्लुओं रोया।

चुल्लू-चुल्लू साधना–थोड़ा-थोड़ा बचा कर रखना। उ० चुल्लू-चुल्लू साध कर ही इस बनिये ने यह मकान खड़ा किया है।

चुल्लू भर पानी देना– जलांजलि देना।

चुल्लू भर पानी में डूबना–लज्जा के मारे मर जाना। उ० आप ऐसे नीच आदमी को चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिये।

चुल्लू भर पानी में डूब मरना–बहुत ज्यादा शरमा जाना। उ० ऐसा नीच काम करके कैसे तुम लोगों के सामने बात करते हो? तुम्हें तो चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिये।

चुल्लू में उल्लू होना–थोड़ी-सी नशा की वस्तु खाने से अधिक नशा होना। उ० क्या आप भँगेड़ी बनते हैं, जबकि चुल्लू में उल्लू हो जाते हैं।

चुल्लू में समुद्र न समाना–छोटे में बड़ी चीज का न समाना। उ० क्या आप इस बक्स में यह गटठर रखना चाहते हैं? भला चुल्लू में समुद्र समा सकता है?

चूँ-तक (भी) न करना–थोड़ा-सा भी विरोध न करना।

चूक-पड़ना–भूल हो जाना।

चूजा फँसाना–शिकार फँसाना। उ० नित नया चूजा फँसाना छोड़ दो, नहीं तो किसी दिन खोपड़ी साफ हो जायगी।

चूड़ियाँ ठंडी करना–अपने शौहर के मरने पर औरत का अपनी चूड़ियाँ तोडना। उ० बेचारी को २० वर्ष की अवस्था में ही चूड़ियाँ ठंडी करनी पड़ी।

चूड़ियाँ तोड़ना–दे० 'चूड़ियाँ ठंडी करना'।

चूड़ियाँ पहनना–१ स्त्री बनना। उ० जब तुममें साहस और हिम्मत है ही नहीं, तो चूड़ियाँ पहन कर घर बैठो। २ कायर बनना।

चूड़ियाँ बँधाना–'चूड़ियाँ बढ़ाना'।

चूड़ियाँ बढ़ाना–चूड़ियाँ हाथों से अलग करना। उ० ये चूड़ियाँ हमें पसन्द नहीं है, इन चूड़ियों को बढ़ा दो ['चूड़ी उतारना' कहना स्त्रियों में बुरा समझा जाता है, इसलिए वे 'चूड़ियाँ बढ़ाना' का प्रयोग करती है।]

चूड़ी उतारना–दे० 'चूड़ियाँ बढ़ाना'।

चूड़ी फोड़ना–दे० 'चूड़ियाँ तोड़ना'।

चूतड़ दिखाना–डर कर भाग जाना। उ० चूतड़ दिखाना कायरों का काम है।

चूतड़ पोंछना–खुशामद करना।

चूतड़ सिकोड़ना–धीरे-धीरे चलना। उ० क्या चूतड़ सिकोड़ते हो, जरा जल्दी करो, नहीं तो बहुत देर हो जायगी।

चूतिया चक्कर में–१. बेकार में। उ० आप क्यों चूतिया चक्कर में इसके साथ घूमते है। २. मूर्खता मे। उ० चूतिया चक्कर में पडकर मैंने यह कर डाला।

चूतिया बनाना–मूर्ख बनाना। उ० आपने खूब चूतिया बनाया उसे।

चून के बराबर नून खाना–अधिक जीवन देखना। अधिक अनुभवी होना। उ० मुझे न पढाओ, तुम्हारे खाए चून के बराबर तो हमने नून खाया है?

चूना लगाना–१ हानि पहुँचाना। उ० तुमने बातों ही बातो में चूना लगा दिया मुझ गरीब को। २ बेवकूफ बनाना।

चूम कर छोड़ देना–१ काम शुरू करके फिर छोड देना। उ० चूम कर छोड देने से काम नही पूरा होगा। अगर करना है तो ठीक से करो। २ बिना पूरा उपयोग किए या खाये छोड़ देना। उ० तुमने तो चीज ली, परन्तु चूम कर ही छोड दी।

चूर कर देना–नष्ट कर देना।

चूर-चूर हो जाना–अधिक थक जाना।

चूस लेना–सार खीच लेना।

चूल उठना–१. खुजलाहट होना। २ स्त्रियो में प्रसग करने की इच्छा होना।

चूल न बैठना–बात ठीक न होना। उ० आदमी ज्यादा थे, इसलिए चूल न बैठ पाई।

चूल मिटना–काम-वासना का तृप्त होना।

चूल मिलाना–ठीक-ठीक हिसाब बैठाना।

चूलें ढीली होना–अधिक परिश्रम के कारण बहुत थकावट होना। उ० आज तो मालिक के घर चूले ढीली हो गई।

चूल्हा-चक्की–गृहस्थी का काम।

चूल्हा न जलना–खाना न बनाया जाना। उ० वह ऐसा ग़रीब हो गया है कि कई दिनो से उसके यहाँ चूल्हा भी न जला।

चूल्हा न्योतना–घर के सब आदमियों को भोजन के लिए बुलावा देना। उ० आज मेरी बिरादरी में चूल्हा न्यौता गया है, इसी से मेरे घर भोजन नहीं बना।

चूल्हा फूँकना–रसोई बनाना। उ० बहू को दिन भर तो चूल्हा फूँकना पड़ता है, दूसरा काम वह कैसे करे?

चूल्हे का उपास करना–खाने को बिलकुल न मिलना। उ० मेरा चूल्हा कई दिनो से उपास कर रहा है।

चूल्हे-भाड़ में पड़ना–दे० 'चूल्हे मे पडना'।

चूल्हे में चूहे दौड़ना–दे० 'चूल्हे का उपास करना'।

चूल्हे में जाना–जहन्नुम में जाना, नष्ट होना।

चूल्हे में डालना–१ फेंक देना। उ० ऐसी चीज चूल्हे मे डालो, मै इसे नही देखना चाहती। २ दूर करना। उ० अपनी बातो को चूल्हे में डालो, मैं नही सुनना चाहता।

चूल्हे से निकल कर भट्ठी में पड़ना–दे० 'चूल्हे से निकल कर भाड मे पडना'।

चूल्हे से निकल कर भाड़ में पड़ना–एक छोटी आफ़त से बच कर दूसरी बडी आफत मे पड़ना।

चेक काटना–चेक लिख कर देना। उ० इन्हे चेक काट कर दे दो, रुपये भुना लेंगे।

चेला मूँड़ना–चेला बनाना। उ० मैने इस वर्ष चार चेले मूँड़े है।

चेहरा उतरना–१. मुख पर चिंता के लक्षण होना। उ० तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ है, क्या बात है? सही-सही बताओ। २. उदास होना।

चेहरा खिलना–खुश दिखाई देना। उ० आज चेहरा खिला हुआ है, कोई मिल गया क्या?

चेहरा तमतमाना–मुख पर लाली होना। उ० क्रोध के मारे उसका चेहरा तमतमा उठा।

चेहरा बिगड़ना–मुँह उदास होना। उ० दो ही दिन की बीमारी में आपका चेहरा बिगड़ गया है।

चेहरे का रंग उड़ जाना–(डर के कारण) कांतिहीन होना, पीला पड़ जाना।

चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना–मुँह का रग फीका पड़ जाना। उ० आज क्या बात है कि आपके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही हैं?

चैन उड़ाना–सुख से समय बिताना, आनंद करना। उ० आप तो यहाँ खूब चैन उड़ा रहे हैं।

चैन की बंशी बजाना–आनन्द से समय या जीवन बिताना। उ० जब से आप यहाँ आये, चैन की बंशी बजा रहे है।

चैन पड़ना–१. उद्विग्नता समाप्त होना। उ० जब वे आयेंगे, तभी मुझे चैन पड़ेगा। २ शांति मिलना। उ० भारत स्वतन्त्र हुआ तभी गाधी जी को चैन पडा।

चैन से कटना–सुखपूर्वक समय बीतना। उ० आजकल तो खूब चैन से कट रही है न ?

चोंचले बघारना–इतराना।

चोट उभरना–चोट लगी हुई जगह पर फिर से दर्द होना। उ० लड़कपन की चोट उभर गई है, यह मरते दम तक परेशान करेगी।

चोट खाना–१ अपने ऊपर आघात लेना, प्रहार सहना। उ० एक बार चोट खा जाएगा तो शांत हो जायेगा। २ नुकसान उठाना। उ० तुम्हारा मुँह देख कर ही मैंने चोट खाई।

चोट खाली जाना–निशाना न बैठना। उ० अगर मेरी चोट खाली जायगी तो सबकी ही खाली जायगी।

चोट बचाना–चोट न लगने देना। उ० झगडा मे जाओ, पर चोट बचाते रहना।

चोटियां नोची जाना–दुर्गति होना।

चोटी का पसीना एड़ी तक आना–दे० 'चोटी का पसीना एड़ी पर आना।'

चोटी का पसीना एड़ी पर आना–कठिन मेहनत पडना। उ० इस काम मे मेरा चोटी का पसीना एडी पर आ गया।

चोटी दबना–दे० 'चोटी हाथ में होना'।

चोटी हाथ में होना–वश मे होना, अधिकार मे होना। उ० उसकी चोटी तो मेरे हाथ मे है, जो चाहूँ करवा लूं।

चोन्हा करना–१. नखरा करना। नखरा दिखाना। २. पशुओं का अपने मालिक के प्रति प्रेम प्रदर्शित करना। ३. लडको का अपने बडो के प्रति प्रेम दिखाना।

चोर की दाढ़ी में तिनका होना–अपराधी का स्वयं शंकित होना।

चोर-चोर मौसेरे भाई होना–सब एक से होना।

चोर पर मोर पड़ना–धूर्त से धूर्तता करना। उ० चोर पर मोर पड़ना ही ठीक है। २. जैसे को तैसा मिलना।

चोरी उघरना–भेद या रहस्य प्रकट होना।

चोरी-चमारी करना–लूटना-खसोटना, चुराना-पचराना। उ० इस लड़के मे चोरी-चमारी करने की आदत नही है।

चोरी-चोरी–छिपे तौर पर। उ० चोरी-चोरी वह यहाँ आया था और चला भी गया।

चोरी-छिपे–दे० 'चोरी-चोरी'।

चोरी लगना–चोरी का अपराध लगना। उ० मै वहाँ गया और मुझे भी चोरी लग गई। अगर न गया होता तो काहे को ?

चोला छोड़ना–मर जाना। उ० उसने कल चोला छोड दिया।

चोला प्रसन्न होना–तबीयत खुश होना। उ० कभी-कभी आ जाया करो। तुमको देखकर चोला प्रसन्न हो जाता है।

चोला बदलना–१. एक शरीर छोड़ कर दूसरा शरीर धारण करना। उ० उसने आज चोला बदल दिया। २ नया रूप धारण करना। उ० आज तो तुमने चोला ही बदल दिया है।

चोली-दामन का साथ–गहरी दोस्ती। उ० हमारा उनका चोली-दामन का साथ है, हम उनके बिना बाहर नही जा सकते।

चौसठ घड़ी–दिन-रात। उ० चौसठ घड़ी आपकी ही बात मै सोचा करता हूँ।

चौकड़ा भरना–छलाँग मारना। उ० खरगोश कुत्ते को देखते ही चौकड़ी भरते हुए आगे निकल गया।

चौकड़ी भुला देना–सारी हेकडी भुला देना।

चौकड़ी भूल जाना–कोई उपाय न सूझना। उ० अभी बहुत बात कर रहे हो, जब काम पड़ेगा तो सब चौकडी भूल जाओगे।

चौकन्ना होना–होशियार होना। उ० बंदूक की आवाज सुनते ही हिरन चौकन्ना हो गया।

चौका करना–चार अँगुलियो पर तागा लपेटना। उ० चौका करो, जनेऊ बनाना है।

चौका-बर्तन करना–लीपने-पोतने तथा बर्तन माँजने का काम करना। उ० वह चौका-बर्तन करता है।

चौकी देना–१. आदर-सत्कार करना । उ० उसके यहाँ जो कोई भी आता है, वह चौकी देता है । २. पहरा देना, रखवाली करना । उ० यहाँ का चौकीदार गाँव की चौकी देता है !

चौखट पर माथा रगड़ना–सेवक-सा होना ।

चौखट लाँघना–घर के अंदर या बाहर जाना । उ० अब अगर मेरी चौखट लाँघी तो कुशल नहीं ।

चौचंद पारना–बदनामी करना। उ०.मेरा चौचद न पारो ।

चौथ का चाँद–ऐसी वस्तु जिसके देखने से कलंक लगे । उ० निरखि चौथ के चद यह, सोचत सुमुखि ससक ।

चौथ का चाँद देखना–व्यर्थ के लिए कलंकित होना । उ० झूठ-मूठ मे इतने कलंक लग रहे है, मैंने चौथ का चाँद तो नही देखा है ? [हिंदुओ का विश्वास है कि जो भादो के शुक्लपक्ष की चौथ का चाँद देखता है, उसे कोई न कोई कलंक अवश्य लगता है ।]

चौदह पुश्तों में–लम्बे अरसे से, कभी भी न ।

चौपट करना–बरबाद कर देना ।

चौपट-चरण–ऐसा चरण, जिसके पहुँचते ही सब कुछ नष्ट हो जाय । उ० तुम्हारे जैसे चौपट-चरण की यहाँ आवश्यकता नही है ।

चौपट होना–बिगड़ जाना ।

चौमुखा दिया जलना–१. दिवाला हो जाना । उ० उस महाजन बेचारे का तो चौमुखा दिया जल गया है । २. बहुत खर्च होना । उ० चौमुखा दिया जलेगा तो उसे बुझते कितनी देर लगेगी ।

चौरंग उड़ाना–१ बिलकुल निराश कर देना । २. किसी हथियार से कोई चीज़ बहुत सफ़ाई से काटना ।

चौरासी पर नाचना–दे० 'चौरासी में पड़ना' ।

चौरासी में पड़ना–आवागमन में फँसना । उ० चौरासी मे पडकर छुटकारा पाना बडा कठिन है ।

चौरासी में भरमना–दे० 'चौरासी में पड़ना' ।

चौरासी लाख योनियों में भटकना–जन्म-मरण के बन्धन मे पडे रहना ।

चौसर का बाज़ार–चौक बाज़ार । यहाँ का चौसर का बाज़ार बड़ा अच्छा है ।

चौसरी का बाज़ार–दे० 'चौसर का बाज़ार' ।

छ

छँटा–दे० 'छँटा हुआ' ।

छँटा हुआ–१. चतुर, चालाक । उ० राम बडा छँटा हुआ है, उससे कोई पार नही पा सकता । २. बडा भारी । उ० तुम तो छँटे हुए बदमाश हो । ३. बदमाश । उ० तुम भी छँटे हुए हो ।

छँटे-छँटे फिरना–साथ बचाना । दूर-दूर रहना । उ० वह तो मुझसे छँटे-छँटे फिरते है ।

छँटे-छँटे रहना–दे० 'छँटे-छँटे फिरना' ।

छकड़ा लादना–छकड़े मे सामान लादना । उ० यहाँ छकड़ा लाद कर आये हो न, कि हमसे खाने को माँग रहे हो !

छक्का-पंजा–१. दाँव-पेंच । चालबाज़ी । उ० आपका छक्का-पंजा मुझ पर नहीं चल सकता । २. जुआ ।

छक्का-पंजा करना–जुआ खेलना । उ० इनका तो काम ही छक्का-पंजा करना है, इनकी रोटी इसी से चलती है ।

छक्का-पंजा भूलना–चाल का न चलना । चाल का कामयाब न होना । बुद्धि का काम न करना । उ० आपके सामने तो मेरा सब छक्का-पंजा भूल जाता है ।

छक्का हाथ मारना–बहुत बडा कार्य कर लेना ।

छक्के छुड़ाना–१. पैर उखाड देना । उ० सिक्खों ने क़ाबुलियों के छक्के छुड़ा दिये । २. चकित करना, हैरान करना । उ० कीट्स ने छोटी उम्र मे ही लिख कर बड़े-बडे लेखकों के छक्के छुड़ा दिये । ३. दुर्दशा करना । उ० उसने तो छक्के छुडा दिए ।

छक्के छूटना–१. बुद्धि चकरा जाना । उ० उसके सवाल का उत्तर देने में मेरे छक्के छूट गये । २. हिम्मत हारना, साहस छूटना । उ० उसके बोलने के बाद तो बड़ो-बडो के छक्के छूट गए । ३. शारीरिक परिश्रम के कारण बहुत थक जाना ।

छछूंदर छोड़ना–१ हलचल मचा देना। उ० उसने यहाँ आकर ऐसी छछूंदर छोड़ दी कि सब लोग परीशान हो गये। २. अफ़वाह फैलाना। उ० तुम तो रोज ही कोई न कोई छछूंदर छोड़ते ही रहते हो।

छटाँक भर–बहुत कम। उ० छटाँक भर मिठाई लेकर सबको आप बाँटने चले है!

छठी का दूध निकलना–अधिक मेहनत पड़ना। उ० ऐसा काम था कि छठी का दूध निकल गया।

छठी का दूध निकालना–कठिन काम लेना, बहुत परीशान करना। उ० मालिक ने ऐसा काम करवाया कि छठी का दूध निकाल लिया।

छठी का दूध याद आना–१ कठिन परिश्रम पड़ना। २ सुख भूल जाना, बहुत कष्ट होना। उ० ऐसी मार मारूँगा कि छठी का दूध याद आ जाएगा।

छठी का राजा–पुराना अमीर। उ० वह छठी का राजा है, उसे कोई क्या पायेगा?

छठी में नहीं पड़ना–१. भाग्य में न होना। उ० आराम तो तुम्हारी छठी में पड़ा ही नहीं। २ स्वभाव के प्रतिकूल होना। उ० पत्रोत्तर देना तो उसकी छठी में ही नहीं पड़ा है।

छठे कान में पड़ना–तीसरे व्यक्ति का सुनना।

छठे-छमासे–कभी-कभी। उ० मित्र, छठे-छमासे यहाँ भी आ जाया करो।

छड़ी छटाँक–१ अकेले, एकाकी। उ० वह छड़ी छटाँक तो है, भला दो आदमियों का क्या कर सकता है? २. बिना सामान के। उ० तीसरे दर्जे में तो छड़ी छटाँक भी तकलीफ़ होती है।

छड़ी सवारी–दे० 'छड़ी छटाँक'।

छत की कड़ियाँ गिनना–बेकार होना, समय बर्बाद करना। उ० जब तुम पढ़-लिख कर भी छत की कड़ियाँ गिन रहे हो, तो हमारी बात ही क्या है?

छत बँधना–बादल छा जाना। उ० आज सुबह ही से छत बँधी है, वर्षा अवश्य होगी।

छत्तीसापना करना–चालबाज़ी करना। उ० यह छत्तीसापना करना इस बुढ़ापे में तो छोड़ दो।

छत्र-छाँह में होना–शरण में होना। उ० मैं आपकी छत्र-छाँह में हूँ, अब आप जो चाहें, करें।

छत्रछाया में होना–दे० 'छत्र-छाँह में होना'।

छनन-मनन होना–पकवान बनना। उ० आज किस खुशी में आपके यहाँ छनन-मनन हो रहा है?

छप्पन-छुरी होना–छल-कपट से भरा होना।

छप्पर टूट पड़ना–१ आफत पड़ना। आफ़त आना। उ० बेचारे का पुत्र क्या मरा, छप्पर टूट पड़ा। २. किसी तरह का आघात आना।

छप्पर पर फूँस न होना–बहुत गरीब होना। उ० बेचारी के छप्पर पर फूँस तक नहीं है, वह क्या रुपया खर्च करेगी?

छप्पर पर रखना–अलग रखना। कोई बात न चलाना। जाने देना। उ० अपने आमदनी-खर्च को छप्पर पर रक्खो, हमको रुपये दो।

छप्पर फाड़ कर देना–बिना प्रयास देना। उ० भगवान जिस पर खुश होता है, छप्पर फाड़ कर देता है।

छप्पर रखना–१. एहसान रखना। २ कलंक लगाना।

छमछाम हो जाना–एकदम शान्त हो जाना। उ० उसको देखते ही सब लोग छमछाम हो गये।

छर्रा खींचना–चरस पीना। उ० वह सुबह से रात तक छर्रा खींचता है।

छलके दूध से लाभ उठाना–नष्ट होती हुई वस्तु से लाभ उठाना।

छल-छंद–धोखेबाज़ी, चालबाज़ी। उ० आपका छल-छंद यहाँ न चलेगा।

छल-छंदों से दूर रहना–छल या चालाकी से दूर रहना। उ० छल छंदों से दूर रह कर वह बेचारा अपने काम से काम रखता है।

छल छंद–दे० 'छल-छन्द'।

छलनी कर डालना–बहुत ज्यादा छेद कर डालना। उ० यह आपने क्या किया।

इतने ही दिन में इस चादर को छलनी कर डाला !

छलनी कर देना–दे० 'छलनी कर डालना' ।

छलनी में डाल छाज में उड़ाना–थोड़ी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहना । उ० छलनी में डाल कर छाज मे न उड़ाओ, ठीक-ठीक बतलाओ ।

छलनी हो जाना–बहुत छेद हो जाना । उ० खोंच लग-लग कर सारी धोती छलनी हो गई ।

छल पिलाना–धोखेबाजी सिखाना । उ० अपने साथ रख कर आपको भी उसने छल पिला दिया ।

छलाँग मारना–१ कूदना । उ० छलाँग मारते हुये खरगोश बहुत आगे निकल गया । २. बहुत तरक्की करना । उ० उसने तो खूब छलाँग मारी । कल तक क्लर्क था, आज अफ़सर हो गया ।

छलावा खेलना–इधर-उधर छिपना । उ० तुम छलावा खेलो, जिस दिन पकड़े जाओगे, पता चलेगा !

छलावा-सा–बहुत चचल । उ० वह तो छलावा-सा है ।

छाँह की तरह साथ रहना–प्रत्येक क्षण साथ रहना ।

छाँह न छूने देना–पास न फटकने देना । निकट न जाने देना । निकट न आने देना । उ० उस नीच आदमी के लड़के को छाँह न छूने दूंगा, नही तो मेरा लड़का भी खराब हो जायगा ।

छाँह बचाना–दूर ही रहना । पास न जाना । उ० उसे चेचक निकल रही है, उसकी छाँह बचाना ।

छाँह में कमाना–आराम से रह कर धन कमाना । उ० भाग्य की बात है कि बिना पढ़ा-लिखा होने पर भी वह छाँह मे कमा रहा है ।

छाँह में बैठ कर कमाना–दे० 'छाँह मे कमाना' ।

छाँह में होना–१. शरण मे होना । उ० जब मैं आपकी छाँह मे हूँ तो कोई मेरा क्या कर सकता है ? २. छिपाना । उ० रात को सूर्य छाँह मे हो जाते है ।

छाए रहना–बने रहना; प्रभाव होना , हृदय में ध्यान बने रहना ।

छाकटेबाजी चलना–धोखा देना । चालबाजी करना । उ० सबसे छाकटेबाजी चलना ठीक नहीं है ।

छाज-सी दाढ़ी–बड़ी और चौड़ी दाढ़ी । उ० उसकी छाज-सी दाढी जाने कैसी लगती है ।

छा जाना–ढक लेना, सबके ऊपर प्रभाव डालना । उ० यह नया विद्यार्थी कालेज पर इस तरह छा गया है कि सब इसी के बारे में बात करते रहते है ।

छाजों मेंह बरसना–मूसलाधार पानी बरसना । उ० वहाँ तो छाजो मेंह बरसा है ।

छाती उड़ी जाना–१. जी घबराना । उ० न मालूम क्यो आज मेरी छाती उड़ी जा रही है । २ दुःख या आशंका से चित्त व्याकुल होना । उ० उसका पत्र आए बहुत दिन हो गया, अब मेरी छाती उडी जा रही है ।

छाती उभरना–युवा अवस्था में स्त्रियों के स्तनों का बढना ।

छाती उमड़ आना–१ किसी की याद मे बेचैन हो जाना । उ० अपने पति के लिए उसकी छाती उमडी आती है । २. प्रेम या करुणा से गद्गद् होना । उ० पुत्र को देख कर माँ की छाती उमड़ आई ।

छाती ऊँची होना–गर्व होना ।

छाती कड़ी करना–मन को कठोर बनाना ।

छाती करना–साहस करना । उ० यहाँ आने की छाती कौन कर सकता है ?

छाती का जम–दुःखदायक वस्तु या व्यक्ति । उ० तुम तो मेरी छाती के जम हो जाते हो ।

छाती कुलिश होना–हृदय कठोर होना ।

छाती कूटना–दे० 'छाती पीटना' ।

छाती के किवाड़ खुलना–१ ज्ञान हो जाना । उ० कुछ दिन के सत्सग से ही उसकी छाती के किवाड खुल गए । २. कठ से चीत्कार निकलना । उ० मैं तो आता ही था, तेरी छाती के किवाड़ क्या खुल गए ? ३. बहुत आनन्द होना । उ० पास होने की खबर सुनते ही उसकी छाती के किवाड़ खुल गए । ४. छाती फटना । ५. दिल खोल कर बाते करना । उ० आज दोनों के छाती के किवाड़ खुल गए ।

छाती के किवाड़ खोलना–१. मन की बात साफ़-साफ़ कहना । उ० मेरा यह स्वभाव है

कि सबसे छाती के किवाड़ खोल देता हूँ। २. कलेजा टुकड़े-टुकड़े करना। उ० डाकुओं ने मेरी सारी संपत्ति मेरे सामने ही लेकर मेरी छाती के किवाड़ खोल दिए। ३. अज्ञान मिटाना। उ० महात्मा जी ने बहुतों की छाती के किवाड़ खोल दिए। ४. प्रसन्नता देना। उ० अकस्मात् पुत्र ने आकर माँ के छाती के किवाड़ खोल दिए।

छाती के पट खुलना–दे० 'छाती के किवाड़ खुलना'।

छाती के पट खोलना–दे० 'छाती के किवाड़ खोलना'।

छाती खोलना–१ हृदय में कोई भेद, छल या कपट न रखना। उ० मैं हर एक व्यक्ति के सामने छाती खोल कर रख देता हूँ। २ दिलेर होना। उ० हर काम में वह छाती खोल देता है। ३. उदार होना।

छाती गज भर की होना–खुशी और गौरव होना।

छाती चूर-चूर होना–अत्यधिक दुःख होना।

छाती छलनी करना या कर देना–दिल पर बहुत बड़ा आघात पहुँचाना, बहुत कष्ट देना। उ० इस खबर ने मेरी छाती छलनी कर दी।

छाती छलनी होना–हृदय पर बहुत दुःख पड़ना, कष्ट सहते-सहते दिल घबरा जाना। बहुत आघात सहना। हृदय विदीर्ण हो जाना। उ० दुःखों को सहते-सहते उसकी छाती छलनी हो गई है।

छाती जलना–१ दुःख होना। उ० जब भी मैं उसे देखता हूँ तो मेरी छाती जलने लगती है। २. डाह होना, जलन होना। उ० वह पापिन दाहि कुल आई देखि जरत मोरि छाती। ३. दिल व्याकुल होना। उ० तुमसे मिलने के लिए छाती जल रही थी।

छाती जुड़ाना–१ इच्छा पूरी होना। उ० तुम्हारी गोद मे बच्चा देख कर मेरी छाती जुड़ा गई। २ हृदय शीतल होना। उ० गरीबो को सुखी देख कर उनकी छाती जुड़ाएगी।

छाती टूक-टूक होना–दुःख से अत्यधिक संतप्त होना।

छाती ठंडी करना–संतोष पाना, संतुष्ट होना।

छाती ठंडी होना–दे० 'छाती जुड़ाना'।

छाती ठुकना–हिम्मत होना। चित्त में दृढ़ता आना। उ० अगर आपकी छाती ठुकती हो तो आप इस काम को शुरू कर दें।

छाती ठोकना–प्रतिज्ञा करना। उ० मैं छाती ठोक कर कहता हूँ कि आज उसे अवश्य मारूँगा।

छाती तले रखना–१. बहुत प्यार से रखना। उ० मैं इस लड़की को छाती तले रखता हूँ। २ अपने समीप रखना। उ० इस कुत्ते को वह छाती तले रखता है।

छाती तले रहना–१ बहुत प्यारा होकर रहना। उ० वह अपने माँ-बाप के छाती तले रहता है। २ सदा सामने रहना।

छाती थाम कर रह जाना–ऐसा शोक होना जिसका अनुभव हो, परन्तु व्यक्त न किया जा सके। उ० गाधीजी की मृत्यु पर भारत छाती थाम कर रह गया।

छाती दरकना–दे० 'छाती फटना'।

छाती धक-धक करना–भयभीत होना, डरना; डर जाना।

छाती धड़कना–१. डर जाना। डर से दिल का काँपना। उ० दुश्मन को देख कर मेरी छाती धड़कने लगी। २ कुछ-कुछ जान बाकी होना। उ० इतने जोर से वह गिरा कि मैने समझा कि गया; पर देखने पर पता चला कि अभी छाती धड़क रही है। ३ शुबहा या अपशकुन का शुबहा होना। उ० मेरी छाती धड़क रही है, जाने क्या होगा?

छाती निकाल कर चलना–अकड़ कर चलना। उ० आजकल के युवक छाती निकाल कर चलते हैं।

छाती निकाल कर रख देना–१ दिल की असली बात सामने रखना। उ० मैने तो छाती निकाल कर रख दी, तुम विश्वास करो या नहीं। २. दिल का सच्चा अनुभव रखना, असली चीज कहना। ३. कही-कही तो शेरों मे गालिब ने छाती निकाल कर रख दी है।

छाती पत्थर की करना–दिल सख्त कर लेना। उ० आफ़त के समय छाती पत्थर की कर लेनी चाहिये।

छाती पर का पत्थर–दे० 'छाती पर का पहाड़'।

छाती पर का पहाड़–ऐसी वस्तु, जिसके कारण हमेशा चिंता बनी रहे । उ० यह विधवा लडकी तो उसकी छाती पर का पहाड़ है ।

छाती पर कोदो दरना–दे० 'छाती पर कोदो दलना' ।

छाती पर कोदो दलना–१. किसी के सामने उसे चिढाने, जलाने या कष्ट पहुँचाने वाला काम करना । उ० अब तक पीठ पीछे गाली देते थे, अब आप सामने गाली देने लगे । इस छाती पर कोदो दलने का परिणाम बड़ा बुरा होगा । २ दे० 'छाती पर मूंग दलना' ।

छाती पर चढ़ कर ढाई चुल्लू लहू पीना–मार डालना, बदला लेना । उ० उसकी छाती पर चढ़ कर ढाई चुल्लू लहू पी लूंगा, तब मुझे शाति मिलेगी ।

छाती पर चढ़ कर लहू पीना–दे० 'छाती पर चढ कर ढाई चुल्लू लहू पीना' ।

छाती पर चढ़ना–कष्ट देने के लिये तैयार रहना । उ० इन ग़रीबों की छाती पर न चढो, ये तो स्वय ही दु खी है । २. कोई काम करवाने के लिए हर समय आने या कहने रहना या हर समय सामने रहना । उ० छाती पर चढे रहने से तो मै काम न करूँगा ।

छाती पर छुरी चलना–मन को अत्यधिक दुःख होना ।

छाती पर से बोझ उतरना–चितामुक्त होना ।

छाती पर झेलना–स्वय दुःख सहना । उ० छाती पर झेल कर तो तुम्हे मैंने पढ़ाया है और अब तुम पूछते तक नही !

छाती पर दाल दलना–दे० 'छाती पर मूंग दलना' ।

छाती पर धर कर ले जाना–मरते समय अपने साथ ले जाना । उ० अब धन से क्या ममता है, क्या छाती पर धर कर ले जाओगे ?

छाती पर पत्थर रखना–१ चुपचाप दुःख सह लेना । उ० मैं कष्ट मे छाती पर पत्थर रख लेता हूँ । २ दिल कड़ा करना । उ० इसे छाती पर पत्थर रख कर सहो ।

छाती पर फिरना–हर समय याद आना । बराबर स्मरण होना । उ० उस दिन की भेंट तो छाती पर फिरा करती है । उसकी सूरत तो छाती पर फिरा करती है ।

छाती पर बने रहना–१. हर समय पास रहना । उ० आप हमारी छाती पर बने रहते हैं, आखिर और कोई काम नही है ? २ किसी काम के लिए हमेशा सामने रहना या आता रहना । उ० जब देखो यह छाती पर बना रहता है । मैं तो डाट दूंगा ।

छाती पर बाल होना–१. उदार होना । उ० उसकी छाती पर बाल हैं । २ विश्वासपात्र होना । उ० जाके छाती पर ना बाल । वाको ना कबहूं एतबार ।

छाती पर मूंग दरना–दे० 'छाती पर मूंग दलना' ।

छाती पर मूंग दलना–१. बहुत दुःख देना । उ० आप बहुत दिनों से मेरी छाती पर मूंग दल रहे है । २. व्यंग्य बोल कर दुःखी करना । उ० छाती पर मूंग न दलिए, ज़रा आदमीयत भी सीखिए ।

छाती पर सवार रहना–दे० 'सर पर सवार रहना' ।

छाती पर सवार होना–दे० 'छाती पर चढ़ना' ।

छाती पर साँप लोटना–कष्ट से कलेजा दहल जाना । उ० उसकी मृत्यु सुनते ही छाती पर साँप लोट गया । २ डाह होना, जलन होना । उ० उसका धन देखकर तुम्हारे छाती पर साँप क्यों लोटता है ?

छाती पीटना–१. बहुत विलाप करना । उ० पुत्र के मर जाने पर माता छाती पीटने लगी । २ हाय-हाय करना । उ० अब छाती पीटने से क्या लाभ, दूसरी ख़रीद लेना ।

छाती फटना–१. बहुत कष्ट होना । उ० आपकी तकलीफ़ देखकर मेरी छाती फट रही है । २. ईर्ष्या होना । उ० उसका धन देखकर तुम्हारी छाती क्यों फटती है ?

छाती फाड़ कर कमाना–बहुत परिश्रम से कमाना । उ० छाती फाड कर कमाया था, सब चोरों ने लूट लिया ।

छाती फाड़ कर रोना–करुण विलाप करना ।

छाती फुलाना–१ अकड़ दिखाना, अकड़ना । उ० आजकल जिसके पास कुछ भी नहीं है, वह भी छाती फुलाता है । २. घमंड करना । उ० अब क्यों छाती फुलाते हो, सब पोल तो खुल गयी ?

छाती फूल उठना–खुशी होना ।

छाती भर आना–१. प्रेम या दया से गद्‌गद् हो जाना। उ० बेचारी की तकलीफ़ देखकर मेरी छाती भर आई। २ स्तनों में दूध आना। उ० बच्चे को पिए देर हुई। उसकी छाती भर आई होगी।

छाती मजबूत होना–हिम्मत तथा साहस होना।

छाती मसलना–स्तन दबाना। [यह संभोग का एक अंग है।]

छाती मसोसना–मन ही मन दु:खी होना। उ० उस दिन बेचारा छाती मसोस कर रह गया।

छाती में छुरी भोंकना–अहित करना।

छाती में छेद पड़ना–दे० 'छाती मे छेद होना'।

छाती में छेद होना–कष्ट या अपमान सहते-सहते हृदय का जर्जर हो जाना। दुःख से जी ऊब जाना। उ० भेदिया सो भेद कहिबो छेद सो छाती परो।

छाती से छाती और आँख से आँख मिलाना–बराबरी करना, सामने मुकाबिले के लिए दृढ़ता के साथ खड़ा होना। उ० जब तक तुम छाती से छाती और आँख से आँख मिलाने को तैयार न होगे, वह दब नही सकता।

छाती से पत्थर टलना–१. बहुत बड़े खटके का काम कर डालना। उ० लो छाती से पत्थर टल गया, अब निश्चिन्त रहो। २ बहुत बड़ा भार दूर होना। उ० आज वह अपनी धरोहर ले गया। अच्छा हुआ, छाती से पत्थर टला।

छाती से लगा कर रखना–बहुत प्यारा समझना। उ० वह लड़के को छाती से लगा कर रखती है।

छान डालना–बहुत खोज करना। उ० सारे शहर को छान डाला, पर लड़के का पता न लगा।

छान-पगहा तोड़ाना–किसी चीज से निकलने की कोशिश करना। उ० छान-पगहा न तोड़ाओ, कल तक तो रहना ही होगा।

छान पर होरहा भूंजना–असभव काम करने की कोशिश करना। उ० क्यो छान पर होरहा भूँजते हो, यह बोझा तुम्हारे बस का नही है।

छानबीन करना–१. बहुत तहकीकात करना। पूछ-ताछ करना। उ० बहुत छानबीन करने के बाद इस चोर का पता लगा है। २ बहुत सोच-विचार करना। उ० बहुत छानबीन करता रहा, परन्तु उस शब्द की व्युत्पत्ति का पता न चला।

छान मारना–दे० 'छान डालना'।

छान्ह पर फेंकना या रखना–दे० 'छप्पर पर रखना'।

छाप डालना–प्रभाव डालना।

छापा मारना–१ डाका डालना। उ० डाकुओं ने कल उनके मकान पर छापा मार कर सब धन लूट लिया। २ एक-ब-एक चढ आना। उ० पुलिस आज कही छापा मारने वाली है।

छाया की तरह साथ रहना–हर क्षण साथ रहना।

छाया भी न छू पाना–ज़रा भी पास न पहुँच पाना।

छिगुनी छूकर पहुँचा गिलना या पकड़ना–पहले थोड़ा लेकर अधिक लेना। धीरे-धीरे अपना मतलब साधना। धोखा से धीरे-धीरे अपना काम निकालना। उ० छुवै छिगुनी पहुँचो गिलत अति दीनता दिखाय। बलि-बामन को ब्योंत मुनि को बलि तुम्हे पत्याय।

छिपे रुस्तम–१ देखने मे कमजोर पर वास्तव मे बहादुर। २ भीतर ही भीतर काम करने वाला। उ० तुम तो यार छिपे रुस्तम निकले मैं नही जानता था कि ऐसे धोखा दोगे। ३ ऊपर से कुछ और भीतर मे और।

छिपे-छिपे चोट करना–चोरी से नुकसान करना या पहुँचाना। उ० छिपे-छिपे चोट करना नीचो का काम है।

छिया-छरद करना–१ बहुत घृणा करना। उ० तुम तो दिखाने के लिए छिया-छरद करते हो, पाओ तो गप कर जाओ। २ खराब करना। उ० तुमने सारा कपड़ा छिया छरद कर दिया, कोई दूसरा दर्जी रहता तो कितना अच्छा बनाता !

छिया-छिया होना–अत्यधिक निन्दा होना।

छीकते नाक कटना–मामूली बात पर सजा होना। उ० वहाँ न जाओ, नही तो छीकते नाक कट जाएगी। बड़े निर्दयी हैं सब।

छींक होना–अपशकुन होना। उ० छींक हो रही है, आज वहाँ न जाओ।

छीका टूटना–दे० 'बिलारी के भाग छींका टटना'।

छींटे कसना–व्यग्य करना। उ० छींटे न कसो, मेरी भी बारी आएगी।

छींटे पड़ना–व्यंग्य कहा जाना। उ० तुम्हारे पर तो अब छींटे पड़ रहे हैं।

छीछालेदर उड़ाना–१ पोल खोलना। इज्जत बिगाड़ना। उ० आखिर इतने आदमियों के बीच उसकी छीछालेदर उड़ाकर आपने क्या पाया? २. चुटकी लेना, हँसी उड़ाना। उ० वह इतना मुँहफट है कि सभी की छीछालेदर उड़ाया करता है।

छीछालेदर करना–दे० 'छीछालेदर उड़ाना'।

छीछालेदर होना–१. दुर्दशा होना। २ हँसी उड़ाया जाना। ३. कटु आलोचना होना।

छुईमुई होना–ज़रा सी बात मे घबड़ा जाना, अत्यत नाजुक होना।

छुछहँड़ दिखाना–इन्कार कर देना। 'नही' कहना। उ० क्यो छुछहँड दिखाते हो, मै खराब नही करूँगा।

छुटा-छरिंदा–१. स्वतत्र, अनियंत्रित। उ० उसका लड़का तो छुटा छरिंदा है, इसी से तो बिगड़ता जा रहा है। २. अकेला। बेफ़िक्र। उ० वह छुटा-छरिंदा है, उसे किस बात की फ़िक्र है?

छुट्टी पर होना–छुट्टी लेकर कही जाना। उ० वे छुट्टी पर है, चार दिन आफ़िस नही आएँगे।

छुट्टी पाना–१. अवकाश पाना। २ झझट से बचना। उ० तुम तो छुट्टी पा गए, अब हमे मरना पड़ेगा।

छुट्टी मनाना–१. छुट्टी का दिन खुशी-खुशी बिताना। २ काम न करना। उ० रोज़ छुट्टी मनाना ठीक नहीं है।

छुरी फेरना–किसी का बुरा करना।

छुरियाँ कटखन में पड़ना–१. ले जा कर प्रयोग करना। उ० हमारी सारी चीजें तो न जाने किसकी छुरियाँ कटखन में पड़ती हैं। २. रक्त का पाखाना होना। उ० उसकी छुरियाँ तो कटखन में पड़ गई है।

छुरी-कटारी दिखाना–मारने की धमकी देना। उ० छुरी-कटारी दिखाने से मैं नही डर सकता हूँ, जो करना हो आप कर लीजिये।

छुरी-कटारी बताना–दे० 'छुरी-कटारी दिखाना'।

छुरी-कटारी रहना–शत्रुता रहना। उ० मेरे सभी भाइयों में सर्वदा छुरी-कटारी रहती है।

छुरी चलाना–१. हानि पहुँचाना। उ० उस गरीब पर छुरी चला कर क्या पाओगे? २. गला काटना। ३. मार डालना।

छुरी तले दबाना–बहुत दुःख देना। उ० उन्हें क्यों छुरी तले दबाते हो, जमींदार सुनेगा तो क्या कहेगा?

छुरी तेज़ करना–१ हानि करने की तैयारी करना। उ० क्यो छुरी तेज़ करते हो, वह तो पहले ही से कमजोर और गरीब है। २. किसी के मारने की तैयारी करना।

छूँछे हाथ–१. रुपये-पैसे से ख़ाली हाथ। उ० छूँछे हाथ कहीं नहीं जाना चाहिए। २. बिना अस्त्र-शस्त्र के। उ० छूँछे हाथ रात में न जाओ।

छू-छू बनाना–उल्लू बनाना, बेवकूफ़ बनाना।

छूटा साँड़ होना–बधनहीन होना।

छूते सोना होना–काम शुरू करते ही लाभ ही लाभ होना।

छूने को होना–दे० 'छूने से होना'।

छूने से होना–रजस्वला होना।

छूबनना–चपचाप भाग जाना। उ० पुलिस को देखते ही चोर छू बना।

छूमंतर–१. मतर की फूंक। उ० दवा का उस पर कुछ भी असर नही हुआ और छूमतर से अच्छा हो गया। २. गायब। उ० एक मिनट मे वह छूमतर हो गया।

छूमंतर होना–१ उड जाना। चला जाना। उ० मुझे देखते ही वह छूमतर हो गया। २ बिलकुल शात होना। उ० उसका गुस्सा छूमतर हो गया। ३. समाप्त हो जाना। उ० दवा देने से दर्द छूमंतर हो गया।

छू होना–दे० 'छू बनना'।

छेड़खानी करना–छेड़ना, छेडछाड करना। उ० मुझसे इस वक्त छेड़खानी न करो।

छेद निकालना–१ बुराई खोजना। उ० तुम्हे तो किसी का छेद निकालने मे बडा आनन्द मिलता है।

छैल-चिकनियाँ–बन-ठन कर रहने वाला।

छोटा भाग्य होना–अभागा होना।

छोटे मुंह बड़ी बात करना–अपनी स्थिति से अधिक बात करना।

छोटी हँड़िया–छोटे दिल का। उ० छोटी हँड़िया में जल्दी उबाल आता है।

छोप-छाप करना–दे० 'छोपना-छापना'।

छोपना छापना–घर आदि की मरम्मत करना। उ० बरसात नजदीक है, जल्दी छोप-छाप लो।

छोह करना–प्यार करना। उ० वह अपने लडके की बड़ी छोह करता है।

छोह दिखाना–ऊपरी प्रेम दिखाना।

छौना चढ़ाना–सुअर का बच्चा चढा कर देवी की पूजा करना। उ० छौना चढ़ा दो तो तुम्हारा लडका बच जाएगा।

ज

जंग चढ़ना–लडाई करना। उ० जग चढे दसरथ के ढोटा।

जंग मचाना–लडाई ठानना, लडाई करना। उ० जग मचाते है बुड्ढे और लडते मरते है नौजवान।

जंगल जाना–पाखाने जाना। उ० अभी जगल जाना है, लौटकर खाऊँगा।

जंगल में मंगल होना–किसी शून्य या निर्जन स्थान मे चहल-पहल होना। उ० आपकी कृपा से आज जगल मे मगल हो गया।

जंगल मे रोना–व्यर्थ विलाप करना, ऐसा रोना रोना जिसे कोई न देखे तथा जिसका कोई अर्थ न हो।

जंगल होना–उजड़ जाना। उ० वह शहर जगल हो गया।

जंग लेना–लड़ाई लडना। उ० उनसे जग लेने के लिये तैयार रहो।

जंगी लाट–प्रधान सेनापति। उ० करिअप्पा भारत के जगी लाट है।

जँचा-तुला होना–ठीक होना। उ० उसकी बाते जँची-तुली होती है।

जंजाल में पड़ना–चक्कर मे पडना। उ० यहाँ आकर ऐसे जजाल मे पड़ गया कि कही जाने की फ़ुरसत भी नही मिलती।

जंजाल में फँसना–दे० 'जजाल मे पड़ना'।

जंजीर डालना–१. बाँधना। २. बदी बनाना।

जंजीर लगाना–किवाड की कुडी बद करना। उ० जजीर लगा दो, नही तो कुत्ता चला जायगा।

जंतरी मे खींचना–सीधा करना, टेढ़ापन दूर करना।

जबरा ढीला होना–१. थकावट आना। उ० दिन भर काम करने से जदरा ढीला हो गया है। २. कल-पुर्जो का ढीला होना। उ० मशीन पुरानी हुई, अब तो जदरा ढीला हो जाना स्वाभाविक ही है।

जकड़बंद करना–१ अच्छी तरह से अपने अधिकार मे कर लेना। उ० अपने यहाँ रख कर उसने हमे जकडबद कर लिया है, अब चूं करने की भी हिम्मत नही है। २ अच्छी तरह बाँधना। उ० पुलिस ने चोर को जकड़बद कर लिया।

जक पकड़ना–हठ पकड़ना। उ० जक पकड़ोगे तो बाद मे पछताओगे।

जक बाँधना–रट लगना, धुन लगना।

जख्म खाना–घायल होना। उ० झगड़े मे चार आदमी जख्म खाकर गिर पड़े।

जख्म ताजा होना–१ भूली हुई विपत्ति या बात फिर से याद आ जाना। उ० अब भी उसका चित्र देख कर मेरा जख्म ताजा हो जाता है।

जख्म देना–चोट पहुँचाना। उ० मुझे सोते समय जख्म देकर वह नौ दो ग्यारह हो गया।

जख्म पर नमक छिड़कना–कष्ट मे और कष्ट देना। उ० क्यो गरीबो के जख्म पर नमक छिडक रहे हो?

जख्म हरा होना–दे० 'जख्म ताजा होना'

जग-जाल मिटना–सासारिकता से मुक्ति पाना

जग-जाहिर–सब को पता। उ० तुम्हारी हुलिया जग-जाहिर है, क्या छिप रहे हो।

जगता–प्रभावशाली। उ० वह ब्रह्म बड़े जगता है।

जगहँसाई करना–ऐसा काम करना, जिससे ससार मे हँसी हो। उ० मेरी जगहँसाई करोगे तो ठीक न होगा।

जगहँसाई कराना–ससार मे हँसी कराना उ० जगहँसाई कराने की इच्छा हो तो इसे कर डालो।

जगहँसाई होना–ससार में हँसी होना, समाज मे हँसी होना। उ० इस काम मे उसकी बड़ी जगहँसाई हुई।

जगह्-जगह्–१. सब स्थानों पर, सब जगह। उ० गर्मी के दिनो में जगह्-जगह पानी का प्रबन्ध रहता है। २. थोड़ी दूर पर। उ० आज जगह् जगह् सिपाहियो की डियुटी लगी है, कोई आयेगा क्या ?

जगह् देना–नौकरी देना। उ० आपने यह् जगह देकर मेरे ऊपर बहुत कृपा की है।

जटल काफिया–ऊटपटांग बात। उ० तुम्हारे जटल काफियों से तो मैं आजिज आ गया।

जटल मारना–दे० 'जटल हाँकना'।

जटल हाँकना–झूठ-मूठ या व्यर्थ की बाते करना। उ० क्या जटल हाँकते हो, चुप भी रहो।

जठर में धरना–गर्भ धारण करना।

जड़इया आना–जाड़ा देकर एक-दो या तीन दिन के अंतर से आने वाला बुखार आना। उ० उन्हें जड़इया आई है, जरा जडी तो माँग लाओ।

जड़ उखाड़ना–१. हानि या बुराई करके किसी की स्थिति बिगाडना। उ० उसने मेरी जड उखाड़ दी है, अब लोगो मे मेरे प्रति वे भाव नही रहे। २. समूल नष्ट कर देना। उ० चाणक्य ने नन्द-वश की जड़ ही उखाड दी।

जड़ करना–अच्छी तरह् घर कर लेना। उ० इस बीमारी ने अब जड कर ली, उसका बचना मुश्किल है।

जड़ खनना–नाश करना। उ० दूसरो की जड़ जमाने के लिए क्यो बहक कर आप अपनी जड़ खन रहे है ?

जड़ खोदना–दे० 'जड़ उखाड़ना'।

जड़ जमना–जड़ या बुनियाद का मजबूत होना। उ० तुम्हारी जड़ जम गई, अब कोई कुछ नहीं कर सकता।

जड़ जमाना–जड़ को मजबूत करना। उ० अभी मै जड़ जमा रहा हूँ।

जड़ ढीली करना–दे० 'जड़ उखाड़ना'।

जड़ पकड़ना–१. जमना या अच्छी तरह् जम जाना। उ० उसकी बात किसी के हृदय मे जड़ नही पकड़ सकती, क्योकि उसका किसी को विश्वास ही नहीं है। २. अंकुरित होना। झगड़े ने जड़ पकड़ ली। ३. मजबूत होना।

जड़ पड़ना–१. बुनियाद पड़ना। उ० जड़ पड़ गई तो काम होकर ही रहेगा।

जड़ पर कुल्हाड़ी चलाना–आधार को नष्ट करने की चेष्टा करना।

जड़ हिला देना–स्थिति कमजोर कर देना।

जत्था बाँधना–गुट बनाना। उ० वे लोग जत्था बाँध कर आ रहे है।

जदा-कदा–दे० 'यदा-कदा'।

जनाज़ा निकलना–लाश की अर्थी निकलना।

जनाना करना–पर्दा करना।

जन्म गँवाना–१ समय नष्ट करना। उ० मनुष्य को यहाँ आकर कुछ काम करना चाहिये, जन्म गँवाना ठीक नही। २. जीवन का समय नष्ट करना। जिंदगी मे कुछ न कर सकना।

जन्म-घंटी में पड़ना–जन्म से ही आदत पड़ना। उ० झूठ बोलना तो इसकी जन्म घूंटी में पड़ा है।

जन्म-जन्म–दे० 'जन्म-जन्मातर'।

जन्म-जन्मान्तर–सर्वदा, कई जन्म तक। उ० भगवान करे आप जन्म-जन्मातर इसी तरह फलते-फूलते रहे।

जन्म डुबोना–जीवन बरबाद करना। उ० इन कामों मे फँस कर क्यों अपना जन्म डुबो रहे हो ?

जन्म बिगड़ना–जन्म नष्ट होना। उ० इन नीचो के साथ रहने से मेरा जन्म बिगड़ गया।

जन्म मे थूकना–घृणा से थू-थू करना, धिक्कारना। उ० नीच काम करते हो तो सभी तुम्हारे जन्म में थूकेगे।

जन्म लेना–उत्पन्न होना। उ० भगवान जन्म लेते है।

जन्म सफल होना–जीवन सार्थक होना।

जन्म हारना–१. दूसरे के वश में होकर रहना। उ० मैं तो अब अपना जन्म हार गया हूँ, वे जो चाहें करे। २. जीवन को व्यर्थ मे गँवाना। ३. जन्म हारने की बाजी रखना या प्रतिज्ञा करना। उ० यदि यह बात सच न हो तो मैं जन्म हार जाऊँ।

जबड़ातोड़ जवाब–मुँहतोड़ उत्तर। उ० उसने बड़ा जबड़ातोड़ जवाब दिया।

जब तक गगा की धारा है–अंत काल तक।

जब तक जीना, तब तक सीना–जिन्दगी भर कार्य मे लगा रहना। उ० पेट के लिए जब तक जीना है, तब तक सीना है।

जब तब–कभी-कभी । उ० जब-तब आ जाया करो ।

जब देखो तब–हर समय । उ० जब देखो तब वह बाजार में घूमता रहता है ।

जब होता है तब–दे० 'जभी होता है तभी' ।

जबान उलटना या उलट देना–कहकर इन्कार कर जाना । बात दोद देना । उ० तुम्हारी यह आदत है कि तुम जबान उलट देते हो ।

जबान का गोता खाना–शीघ्र बोलने से उलटे शब्द निकल जाना । उ० माफ़ कीजिये, जबान गोता खा गई ।

जबान का तेज़–कटु बोलने वाला ।

जबान काट कर देना–१. जीभ काट कर अलग कर देना । उ० कहने का एतबार हो तो ठीक, नहीं तो कोई जबान काटकर नहीं दे सकता । २ प्रतीक्षा करना । उ० मैंने जबान काट कर दे दिया है, अतः अवश्य जाऊँगा ।

जबान की कतरनी या कैंची चलाना–बहुत बोलना ।

जबान के नीचे जबान रखना– १ कह कर इन्कार कर जाना । २ दो तरह की बातें कहना । उ० जबान के नीचे जबान रखने वालों का क्या विश्वास ? ३ दोनों पक्षों की तरफ़दारी करना ।

जबान के नीचे जबान होना–दे० 'जबान के नीचे जबान रखना' । उ० उसके तो जबान के नीचे जबान है ।

जबान खर्च करना–१ कहना । उ० उसके लिए ज़रा-सा जबान खर्च करने में आपको क्या आपत्ति है ? २. माँगना । उ० जबान खर्च करो, शायद दे दे ।

जबान खींचना–जबान को बाहर खींच लेने या उखाड़ लेने की धमकी देना । उ० अगर ज्यादा बकवाद करोगे तो जबान खींच लूंगा ।

जबान खुलना–१ मुँह से शब्द निकालने या बोलने की हिम्मत पड़ना । उ० इतने आदमियों के बीच में अगर जबान खुले तो कुछ बोलूं । २ कुछ कहा जाना ।

जबान खोलना–१ माँगना । उ० बेकार के लिए जबान न खोलो । वह कुछ न देगा । २. बोलना । उ० जबान तो खोलो, आखिर क्या चाहते हो ?

जबान घिस जाना–दे० 'जबान घिसना' ।

जबान घिसना–१ कहते-कहते थक जाना । उ० मेरी ज़बान घिस गई, पर आप नहीं गये । २. बहुत कहना ।

जबान चलना–१. अनुचित शब्द निकलना । २ मुँह से शब्द निकलना । उ० दिन भर आप की जबान चलती ही रहती है, क्या आप बोलते-बोलते थकते भी नहीं ? ३. दे० 'मुँह चलना' ।

जबान टूटना–१. साफ बोलना शुरू करना । उ० लड़के की जबान अब टूट रही है । २. जीभ में दर्द या तकलीफ़ होना । उ० जाने क्यों जबान टूट रही है । ३ मुँह सूखना । ४. मरने के क़रीब होना ।

जबान डालना–१ माँगना । उ० वह किसी के आगे जबान डालने में तनिक भी नहीं हिचकता । २ सवाल करना, कुछ पूछना । उ० जबान डालने में तो तेज है, मगर जानता कुछ भी नहीं ।

जबान थामना–बोलने के लिए मना करना । उ० मुझे भी कुछ बोलने दो, जबान क्यों थामते हो ?

जबान दबा कर कहना–१ डरते हुए कहना । उ० मैंने जबान दबाकर ही बात कही, फिर भी वे बिगड़ गए । २ धीरे से कहना । उ० ऐसी कौन-सी बात है, जो जबान दबा कर कहते हो ?

जबान देना–वादा करना । उ० जबान देकर हटना मर्दों का काम नहीं है ।

जबान निकालना–थोड़ा भी बोलना । उ० आपके आगे तो जबान निकालना भी मुश्किल है ।

जबान पकड़ना–दे० 'जबान थामना' ।

जबान पर आना–१ कहने के लिए उत्सुक होना । कहने की इच्छा होना । उ० मेरी जबान पर आ गया है, पहले मुझे कहने दो २ याद आना । उ० जबान पर आ जाय तो कह दूँ ।

जबान पर ताले पड़ना–कुछ कहने का साहस न होना । कुछ भी न बोलने पाना ।

जबान पर धरा होना–दे० 'जबान पर रहना'

जबान पर रखना–१. स्मरण रखना । उ० बिरले ही सारी पुस्तकें जबान पर रखते हैं २. स्वाद लेना । उ० बिना जाने प्रत्येक पदार्थ को जबान पर नहीं रखना चाहिए ।

ज़बान पर रहना–१. हर वक़्त याद रहना। उ० सूत्र उसकी ज़बान पर रहते है। २. हर वक्त कहना। उ० गाली तो आपकी ज़बान पर रहती है।

ज़बान पर लाना–१. मुँह से कहना। उ० व्यर्थ की बातें मै ज़बान पर नहीं लाता। २. चखना।

ज़बान पर होना–अच्छी तरह याद होना। उ० वह पुस्तक तो मेरी ज़बान पर है।

ज़बान बंद करना–१ शास्त्रार्थ मे पराजित करना। उ० शकराचार्य ने तत्कालीन बौद्ध विद्वानो की ज़बान बंद कर दी थी। २ बोलने से रोकना। उ० अपना देखो, मेरी ज़बान न बद करो।

ज़बान बन्द होना–१ हार जाना। उ० आज तो विपक्षियो की ज़बान बन्द हो गई। २. बोलने का साहस न होना। उ० न्यायालय में जाते ही मेरी ज़बान बंद हो गई।

ज़बान बदल जाना–दे० 'ज़बान बदलना'।

ज़बान बदलना–प्रतिज्ञा भग करना। बात पर से टल जाना। उ० ज़बान बदलना मर्द का काम नही है।

ज़बान बिगड़ना–१ मुँह से गाली निकलना। उ० तुम्हारी ज़बान दिन पर दिन बिगडती जा रही है। २. मुँह का स्वाद बिगडना। उ० ज्वर मे ज़बान बिगड़ जाती है। ३. चटोर होना। उ० ज़बान बिगडने पर केवल अच्छी चीजें ही पसन्द आती है।

ज़बान मुँह में रखना–चुप रहना। उ० अभी ज़बान मुँह मे रक्खो, तुम्ही सबसे बडे नही हो।

ज़बान में काँटा होना या हो जाना–प्यार से गला सूखना। उ० शीघ्र पानी दो, ज़बान मे काँटे हो गए है।

ज़बान में पड़ना या पड़ जाना–१. पूर्ण रूप से याद होना। उ० जो कुछ पढता है, वह उसकी ज़बान मे पड़ जाता है।

ज़बान में लगाम देना–१ सोच-समझ कर बोलना। उ० आज के युग में ज़बान में लगाम देना ही उचित है। २. चुप रहना।

ज़बान में लगाम न होना–१. अनुचित बातें कहने का अभ्यास होना। उ० तुम्हारी ज़बान मे तो जरा भी लगाम नहीं है। २. कहने में अनुचित-उचित का ख्याल न होना।

ज़बान रोकना–दे० 'ज़बान पकड़ना'।

ज़बान लड़ाना–१ वार्तालाप करना। उ० आज तो ज़बान लड़ाने में ही दिन बीत गया। २. सवाल-जवाब करना। उ० ज़रा शऊर सीखो, बडों से ज़बान न लडाओ। ३. कुछ याचना करना, माँगना। उ० जाओ, ज़बान लड़ाना व्यर्थ है।

ज़बान सँभालना–दे० 'ज़बान मे लगाम देना'।

ज़बान सीना–बोलने से रुकना या रोकना। उ० क्यो ज़बान सीते हो ? आखिर मुझे भी कुछ कहने दोगे या नही ?

ज़बान से निकलना–१ न चाहने पर भी कह देना। उ० उसका स्वभाव देखकर कुछ बातें ज़बान से निकल ही गईं। २. कहना।

ज़बान से निकालना–१ कहना। उ० कुछ जबान से निकालो तो सही। २ उच्चारण करना, बोलना।

ज़बान हारना–दे० 'ज़बान देना'।

ज़बान हिलाना–१ कुछ भी बोल देना, थोड़ी-सी सिफ़ारिश करना। उ० ज़बान हिला दो, हमारा काम हो जायगा। २ बोलने का प्रयत्न करना। उ० यह बालक अब तो ज़बान हिलाना चाहता है। ३ विरोध करना।

ज़बानी जमा-खर्च करना–१ केवल बात करना, कुछ काम न करना। उ० आजकल के सबधी केवल ज़बानी जमा-खर्च करना जानते हैं, कुछ काम करना नही। २. सिर्फ कहना। उ० ज़बानी जमा-खर्च करने से काम न होगा।

जभी होता है तभी–अवसर, बराबर, प्रायः। उ० जभी होता है तभी वह बाहर घूमने चला जाता है, यह ठीक नही है।

जमघट लगना–बहुत से लोगों का जुटना।

ज़माना देखना–खूब अनुभव होना। उ० उसे आप क्या धोखा दे सकते है, वह ज़माना देख चुका है।

ज़माना बीत जाना–वैभव और गौरव की स्थिति का न रहना।

ज़माना होना–रोब होना, प्रभाव होना, अच्छा समय होना। उ० आपका ज़माना है, जो मन चाहे कर लें।

ज़माने का–बहुत पुराना। उ० वह तो ज़माने का बदमाश है।

जमाने का जानना–सब लोगों का जानना। उ० उसे जमाना जानता है कि वह चोर है।

जमाने की हवा लगना–युगीन विचारधारा का प्रभाव पड़ना।

जमाने भर का–बहुत बडा। उ० वह तो जमाने भर का चोर है।

जमा मारना–बेईमानी से किसी का धन ले लेना। उ० तुम्हारा तो जमा मारना ही काम है। और दूसरो का भला क्या करोगे ?

जमीन-आसमान एक करना–दे० 'आसमान-ज़मीन एक करना'।

ज़मीन-आसमान का फ़रक़ होना–दे० 'आसमान-ज़मीन का अंतर होना'।

ज़मीन-आसमान के कुलाबे मिलाना–दे० 'आसमान-ज़मीन के कुलाबे मिलाना'।

ज़मीन उठना–खेत का लगान पर दिया जाना। उ० सब ज़मीन उठ गई, अब बाहर जाकर कोई नौकरी करो।

ज़मीन का पैबंद होना–मर जाना। उ० संसार में जो पैदा हुआ है, वह अवश्य ही जमीन का पैबंद होगा।

ज़मीन का पैरों के तले से खिसकना या खिसक जाना–होश-हवास जाता रहना। उ० बन्दूक की आवाज़ सुनते ही मेरे तो पैरों के तले से ज़मीन खिसक गई।

ज़मीन चूमने लगना–१. नीचा देखना। उ० आप बहुत बढ-बढ़ बातें कर रहे हैं, पर जब काम पड़ेगा तो ज़मीन चूमने लगेंगे। २ ज़मीन पर गिरना। उ० एक थप्पड़ में ज़मीन चूमने लगोगे।

ज़मीन नापना–यहाँ से वहाँ जाना।

ज़मीन दिखाना–१ पटक देना, हरा देना। उ० उसके सामने जो भी आयेगा, उसको वह ज़मीन अवश्य दिखायेगा। २. लजवाना।

ज़मीन देखना–हारना। नीचा देखना। उ० अगर इतने बड़े आदमी का सामना न करते तो क्यों ज़मीन देखने की नौबत आती ! २ शर्म से दृष्टि गड़ा लेना। उ० मेरे सामने आते ही वह ज़मीन देखने लगता है।

ज़मीन पकड़ना–१ जम कर बैठना। उ० वह जब ज़मीन पकड लेता है तो उठाये नहीं उठता। २. पहलवानों का ज़मीन पर पट पड़ना। उ० ज़मीन पकड लेने पर उसको पछाड़ना असम्भव हो जायेगा।

ज़मीन पर आ रहना–१. किये हुए पर पश्चात्ताप करना। उ० अब जमीन पर आ रहना बेकार है। २. दे० 'मुंह की खाना'।

ज़मीन पर गिरा देना–पराजित करना।

ज़मीन पर चढ़ना–घोड़ा तेज़ दौड़ाने का अभ्यस्त होना।

ज़मीन पर पैर न पड़ना–१. बहुत गर्व होना। उ० जब से वह पद पा गया है, उसके पैर ज़मीन पर नहीं पडते। २. बहुत प्रसन्न होना।

ज़मीन पर पैर न रखना–१ बहुत अभिमान करना। उ० जब से उसे ससुराल की रकम मिल गई है, वह तो जमीन पर पैर नहीं रखता। २ अत्यधिक प्रसन्न होना।

ज़मीन पर सिर धरना–१ वंदना करना। २. विनम्रतापूर्वक कुछ कहना।

ज़मीन बाँधना–किसी कार्य के लिए पहले से प्रणाली या करने का तरीका निश्चित करना। उ० ज़मीन बाँध लो तो करने में आसानी रहेगी।

ज़मीन में समा जाना–बहुत लज्जित होना। उ० उसी दिन से वह जब भी मुझे देखता है, जमीन में समा जाता है।

ज़मीन सूँघना–दे० 'जमीन चूमने लगना'।

ज़मीन से पीठ न लगना–१. कुश्ती में पछाड न खाना। उ० कौन कहता है कि वह हार गया ! उसकी पीठ ज़मीन से कभी नहीं लगी।

जयचंद होना–गद्दार होना, देशद्रोही होना। उ० वह भी जयचंद ही है।

जयचन्दी करना–देश के साथ गद्दारी करना। उ० जयचंदी करने वालों को डूब मरना चाहिये।

जय मनाना–विजय की कामना करना। उ० अपने राजा की जय मनाओ।

जय सीता राम होना–बहुत साधारण परिचय होना।

जय हो–एक आशीर्वाद जो ब्राह्मण लोग देते है। कभी-कभी भिखारी या माँगन भी इसका प्रयोग करते हैं।

जरफ़री-तुरफ़री–बात का बतंगड़, छोटी बात का बहुत बढ़ाना। उ० जरफ़री-तुरफ़री करके तुमने उन्हे और भी बहका दिया।

ज़रब आना—आघात पहुँचना । उ० अगर लड़के पर ज़रब आया तो कुशल नहीं ।

ज़रब देना—१. मारना, पीटना । उ० उसे ज़रब दिए तो ठीक न होगा । २ गुणा करना ।

ज़रर पहुँचाना—आघात या हानि पहुँचाना । उ० उसे ज़रर न पहुँचाना, नही तो भला लोग क्या कहेंगे ?

ज़र्द पड़ना—१ बीमारी से सूख जाना, पीला पड जाना । उ० दस दिन की बीमारी मे ही वह जर्द पड गया । २ डर या शर्म से चेहरे का रग उड़ जाना । उ० मुझे देखते ही वह ज़र्द पड़ गया ।

ज़र्दी छाना—१. चेहरा पीला पड जाना । उ० दु:ख के कारण उसके चेहरे पर जर्दी छाई हुई है । २ बहुत डर जाना । ३. बीमारी आदि से बहुत दुर्बल या रक्तहीन हो जाना । ४. उदास होना ।

जलंधर होना—अत्यन्त वृद्ध होना । उ० वह ता जलधर हुआ, अब क्या शादी करेगा ?

जल उठना—१. बहुत गुस्सा होना । उ० वह मेरी बात सुनते ही जल उठा । २ कुढ़ना ।

जल कर कोयला हो जाना—दे० 'जल कर खाक हो जाना' ।

जल कर ख़ाक हो जाना—१ गुस्सा से पागल हो जाना । उ० वह मुझे देखते ही जल कर खाक हो जाता है । २. बिल्कुल नष्ट हो जाना । उ० उसकी सारी सपत्ति जल कर खाक हो गई ।

जल कर पतंगा हो जाना—दे० 'जलकर खाक हो जाना' ।

जलता घर छोड़ कर घूरा बुझाना—आवश्यक छोड़ कर अनावश्यक काम करना ।

जलती आग बुझाना—१. झगड़ा शांत करना । उ० सामने आकर जलती आग बुझा दी, नही तो आज यहाँ बहुत कुछ हो जाता । २. झगडा हटाना ।

जलती आग में कूदना—आफ़त में पड़ना । उ० क्यों जलती आग मे कूद रहे हो, अपने से दुश्मनी है क्या ?

जलती आग में घी डालना—क्रोध को और भड़काना । उ० इस समय राम से कुछ कहना जलती आग मे घी डालना है, कम से कम उसे शान्त तो हो जाने दो ।

जलती आग में पानी डालना—दे० 'जलती आग बुझाना' ।

जलती हुई आग में हाथ सेंकना—किसी के अहित से अपना लाभ कर लेना ।

जलते हृदय पर पानी के छींटे देना—दु:खी को सान्त्वना देना ।

जल-थल एक होना—१. खूब वर्षा होना । उ० आज ऐसी वर्षा हुई कि जल-थल एक हो गया । २. बडी उथल-पुथल मचाना । उ० डाके के कारण आज चार दिन से जल-थल एक हो गया । ३. खूब बाढ आना ।

जलन निकालना—१. द्वेष या ईर्ष्या से उत्पन्न इच्छा पूरी करना । २. जलन बुझाना ।

जल-बर कर अँगीठी होना—तीव्र पीडा से व्याकुल होना, बहुत रुष्ट होना ।

जल-भुन जाना—बहुत लाल या रुष्ट हो जाना । उ० तुम्हारे नाम पर तो वह जल-भुन जाता है ।

जल मरना—१. कुढना । २. बहुत क्रोधित होना । ३. आत्महत्या करना । उ० इस काम को करके तो तुम्हे जल-मरना चाहिए ।

जला कर भस्म कर देना—समूल नाश कर देना ।

जला-जला कर मारना—बहुत कष्ट देना । उ० गरीब को जला-जला कर मार रहे हो, इसने तुम्हारा क्या बिगाडा था ?

जलापा सहना—ईर्ष्या या डाह बर्दाश्त करना ।

जली-कटी कहना—दे० 'जली-कटी सुनाना' ।

जली-कटी पर आना—दे० 'जली-कटी सुनाना' ।

जली-कटी सुनाना—१ व्यग्यपूर्ण बात कहना । उ० यह हँसी-हँसी मे जली-कटी सुनाना ठीक नही । २. गाली-गलौज देना । ३ डाटना, खरी-खोटी सुनाना, भला-बुरा कहना । उ० मुझे क्यो जली-कटी सुनाते हो ? जिसकी गलती है, उसे सुनाना ।

जली-भुनी बात सुनाना—दे० 'जली-कटी सुनाना' ।

जले पर नमक छिड़कना—दे० 'ज़ख़्म पर नमक छिड़कना' ।

जले पर नमक लगाना—दे० 'जख़्म पर नमक छिड़कना' ।

जले पर लोन छिड़कना—दे० 'जले पर लोन लगाना' ।

जले पर लोन लगाना—जले को और जलाना । दु:खी को और दुखाना । उ० जले पर लोन

लगाना महापाप है। वह तो फेल है और तुम पूछ रहे हो कि आगे कौन-सा विषय लोगे, क्या यह जले पर लोन लगाना ठीक है?

जले पाँव की बिल्ली–इधर-उधर घूमने वाली स्त्री। उ० इस जले पाँव की बिल्ली को अपने घर न आने दिया करो।

जले फफोले फोड़ना–दुःखी को और दुःख देना। मरे को मारना। उ० क्यों जले फफोले फोड़ते हो, वह बेचारा तो खुद ही परेशान है।

जवानी उठना–जवानी आना। उ० जवानी उठ रही है, अब शादी कर दो।

जवानी उतरना–बुढ़ापा आना। उ० अगर हम लोग जवानी में कुछ नहीं कर सकते तो जवानी उतरने पर भला क्या करेंगे?

जवानी उभरना–दे० 'जवानी उठना'।

जवानी चढ़ना–१ यौवन आना। युवावस्था आना। २ जवानी की मस्ती आना।

जवानी ढलना–दे० 'जवानी उतरना'।

जवाब तलब करना–कारण पूछना। उ० आफिस में पहुँचते ही सुपरवाइजर साहब ने जवाब तलब कर दिया कि क्यों देर हुई?

जवाब देना–इन्कार करना। उ० न करना चाहो तो जवाब दे दो।

जवाब मिलना–नौकरी से बरखास्त किया जाना।

जवाब-सवाल करना–उत्तर-प्रति-उत्तर करना, मुँह लगना। उ० शर्म नहीं आती है, बड़ों से जवाब-सवाल करते हो।

जवाल में डालना–दे० 'जवाल में फाँसना'।

जवाल में पड़ना–आफ़त में पड़ना। उ० उसे लाकर मैं जवाल में पड़ गया, वह कुछ करने ही नहीं देती।

जवाल में फँसना–दे० 'जवाल में पड़ना'।

जवाल में फाँसना–आफ़त में डालना। उ० मुझे इस जवाल में क्यों फाँसते हो, मैं तो झगड़े के वक्त यहाँ था भी नहीं।

जवाल में सानना–दे० 'जवाल में फाँसना'।

जहन्नुम में जाना–चूल्हे में जाना, खतम हो जाना। बरबाद हो जाना। उ० तुम जहन्नुम में जाओ, हमसे क्या मतलब?

जहन्नुम होना–दे० 'जहन्नुम में जाना'।

जहमत उठाना–कष्ट भोगना। दुःख उठाना। उ० उसकी बीमारी की वजह से घर भर को जहमत उठानी पड़ी।

जहमत में पड़ना–झंझट में पड़ना। उ० उसके लिए तुम क्या जहमत में पड़ते हो?

ज़हर उगलना–जली-कटी बातें कहना। उ० ज़हर क्यों उगल रहे हो? मैंने तो उससे कुछ कहा भी नहीं था।

ज़हर कर देना या करना–१ ऐन मौक़े पर बिगाड़ देना। २ खाने में मिर्च या नमक तेज कर देना। ३ असहनीय बना देना। उ० तुमने तो ज़हर कर दिया, अब तो भाई हद हो गयी।

ज़हर का घूँट–१ बहुत कड़वा। उ० यह दवा तो ज़हर का घूँट है।

ज़हर का घूँट पीना–क्रोध को भीतर ही भीतर हज़म कर जाना। उ० आपकी वजह से ज़हर का घूँट पीकर रह गया, नहीं तो उसे बता देता।

ज़हर का बुझाया होना–१ बहुत खतरनाक होना। उ० वह ज़हर का बुझाया हुआ है, उससे होशियार रहना। २ बहुत क्रोधी होना।

ज़हर का बुताया छुरा–अत्यन्त कष्टदायक; बहुत तेज, बहुत खतरनाक।

ज़हर की गाँठ–दे० 'विष की गाँठ'।

ज़हर की पुड़िया–बहुत तेज़-तर्रार। उ० लड़की क्या है, ज़हर की पुड़िया है।

ज़हर खाना–१ अपनी बुराई आप करना। २. आत्म हत्या करना।

ज़हर मालूम होना–१ रुचिकर न लगना। उ० क्या बात है कि आज का भोजन ज़हर मालूम हो रहा है? २ बुरा लगना। उ० तुम्हारा हँसना उसे ज़हर मालूम हो रहा था।

ज़हर मिलाना–१ अपनी ओर से बुरी बात जोड़ कर बात को अप्रिय बनाना। उ० तुम तो मेरी बातों में ज़हर मिलाते चलते हो जिससे दुश्मनी बढ़ती ही जाती है। २. ख़राब, अप्रिय या अरुचिकर करना।

ज़हर में बुझा हुआ होना–दे० 'ज़हर का बुझाया होना'।

ज़हर लगना–१. दुःखप्रद लगना । उ० आज का उत्सव मुझे ज़हर लग रहा है । २. स्वादिष्ट न लगना । उ० यह अचार तो ज़हर लग रहा है ।

जहाँ का तहाँ रह जाना–१. ज़रा भी टस से मस न होना । उ० वह तो जहाँ का तहाँ रह गया । २. उन्नति न करना । उ० उम्मीद थी कि बहुत तरक़्क़ी करेंगे, पर जहाँ के तहाँ रह गए । ४. न उभरना, कार्रवाई न होना । उ० वह ग़बन का मामला जहाँ का तहाँ रह गया ।

जहाँ की तहाँ साँस रह जाना–दे० 'साँस जहाँ की तहाँ रह जाना' ।

जहाँ-तहाँ होना–१ कहीं-कहीं होना, बहुत कम जगह पर होना । उ० भारतवर्ष मे भी जहाँ-तहाँ चुकंदर होता है । २. हर जगह या चारो ओर होना ।

जहाज़ का का होना–दे० 'जहाज़ का पक्षी होना' ।

जहाज़ का कौआ होना–ऐसा होना जिसे एक ही आश्रय हो, अतः घूम-फिर कर वही आना पड़े । उ० तुम तो जहाज के कौए हो । जाओगे भी तो किधर ?

जहाज़ का पक्षी होना–दे० 'जहाज़ का कौआ होना' ।

ज़हूर में आना–ज़ाहिर होना । उ० छिप-छिपकर कीचड़ उछालना कौन-सी बहादुरी है ? ज़हूर मे आओ तो ज़रा देखूं ।

जाँगर चुराना–परिश्रम से काम न करना । उ० जाँगर चुराओगे तो तनख्वाह काट लूंगा ।

जाँगर-चोर होना–काम करने मे जी चुराने वाला । उ० वह जाँगर-चोर है ।

जाँघ का भरोसा–शक्ति का सहारा ।

जाँच-पड़ताल–छानबीन । उ० मामले की जाँच-पड़ताल कर लो ।

जागता–दे० 'जागता हुआ' ।

जागता हुआ–१. साक्षात् । उ० उसके गुण जागते हुए है । २. चमकता हुआ । उ० उसका भाग्य जागता हुआ है ।

जाति दिखाना–वास्तविक रूप प्रकट करना ।

जाति से ख़ारिज करना–कुजाति निकालना । जाति से निकालना । उ० उसने एक गंधर्व-विवाह कर लिया, जिससे लोगो ने उसे जाति से ख़ारिज कर दिया ।

जादू उतरना–प्रभाव दूर होना ।

जादू चढ़ना–असर पड़ना ।

जादू मारना–१ जादू करना । उ० मदारी ने जादू मार कर लड़के को उड़ा दिया । २. मोहित करना । उ० तुम्हारी आँखें जादू मारती हैं ।

जादू सिर पर चढ़कर बोलना–गहरा या बहुत अधिक प्रभाव होना ।

जा धमकना–अचानक ही पहुँचना या जाना । उ० कल मेरे साहबजादे वहाँ जा धमके ।

जान आना–१. चेतना आना । उ० अब तक तो बेहोश था, परन्तु अब दवा से जान आई है । २. प्रभावशाली होना उ० केवल गांधी के वाक्यो को कह देने से ही तुम्हारे भाषण मे जान आ गई । ३ भय दूर होना । ४ शांति आना । तृप्ति होना ।

जान एक कर देना–मरने-मारने पर उतर आना ।

जान क़फ़स में फँसना–कठिनाइयो मे पड़ना । उ० आजकल तो ससार की ही जान क़फ़स में फँसी हुई है ।

जान का गाहक बनना–१ पीछे पड़ना । उ० तुम तो मेरी जान के गाहक बने हो, कुछ आराम भी तो करने दो । २. जानी दुश्मन होना । प्राण लेने को तत्पर होना । उ० वह तो तुम्हारी जान का ग्राहक बना है, अवसर पाते ही काम तमाम कर देगा ।

जान का जंजाल होना–१ आफ़त आना । उ० रिश्तेदारो के मारे तो जान का जंजाल हो गया है । २ आफ़त होना । उ० तुम तो मेरी जान के जजाल हो ।

जान का रोग–१ बहुत बड़ी विपत्ति । उ० शादी क्या है, महँगी मे जान का रोग है । २. भयानक रोग । प्राण लेने वाला रोग । उ० राजयक्ष्मा जान का रोग है ।

जान का लागू होना–दे० 'जान का गाहक बनना' ।

जान की नौबत आना–दे० 'जान पर आ बनना' ।

जान की बाज़ी लगाना–काम को पूरा करने के लिये प्राणो तक की परवाह न करना ।

जान के लाले पड़ना–प्राणों पर आना । जीना दूभर होना । उ० जानते नही हो, कैसा समय है, सब को अपनी जान के लाले पड़े हैं; दूसरे की रक्षा कौन करे ?

जाना को आना—बहुत कठोर दंड देना ।

जान को आ पड़ना—बड़ी दुर्गति होनी ।

जान को जान न समझना—१ प्राण का मोह न करना । उ० स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए वीरो ने जान को जान न समझी । २ बहुत मेहनत करना । उ० जान को जान न समझ कर मैंने आपका काम किया, समझ-बूझ कर मजदूरी दे दे ।

जान को रोना—धोखा देने वाले, काम करने वाले या सताने वाले का स्मरण करके दुःखी होना । उ० तुमने उसका काम नहीं किया, अब तक वह तुम्हारी जान को रोता है ।

जान खाना—१ परेशान करना । उ० देखो, जान न खाओ, तुम्हारा काम कर दूंगा । २ बार-बार कहना । उ० जान न खाओ, कुछ सोचूंगा ।

जान खोना—जान कर मरना । उ० पिता जी ने हमारे पीछे ही अपनी जान खो दी ।

जान गाढ़े में डालना—कठिनाई मे होना ।

जान चुराना—दे० 'जी चुराना' ।

जान छिड़कना—दे० 'जान देना' ।

जान छुड़ाना—१ जी चुराना । उ० ऐन मौके पर तो जान छुड़ा कर भाग जाना तुम्हारा काम ही है । २ प्राण बचाना । उ० दो रुपये देकर सिपाही से जान छुड़ायी थी ।

जान छूटना—झंझट से मुक्ति पाना । उ० इन कामो से जान छूट जाय तो कुछ और करूँ ।

जान जाना—१ मरना । उ० सन् '६२ मे कितनी जानें गई, कोई ठिकाना नही । उसकी तो जान गई । २ बहुत परिश्रम पड़ना । उ० मेरी तो जान जा रही है, और आप कहते है कि काम ही नहीं होता । ३. बहुत कष्ट होना ।

जान-जोखों का काम करना—ऐसा काम करना जिसमे जान जाने का डर हो । उ० जान-जोखो का काम क्यों करते हो, बूढी माँ का जरा भी ख्याल नही है ?

जान दूभर होना—१. जीने की इच्छा न करना। उ० अब तो मेरा जान मुझको ही दूभर हो गया है । २. रक्षा का कोई उचित प्रबंध न होना, जान बचना असंभव होना । उ० यहाँ तो अपनी ही जान दूभर है, तुम्हारी रक्षा कैसे करे?

जान देना—१. किसी के लिए न्यौछावर होना । उ० वह तो तुम पर जान देता है । २. बहुत चाहना, बहुत प्रेम करना । ३. मरना । उ० जान देना चाहते हो तो वहाँ जाओ ।

जान पर आ बनना—संकट या आफ़त का बहुत विकराल रूप धारण करना । परिस्थिति का ऐसा हो जाना कि मर जाने या प्राण खोने का खतरा हो, उ० कुछ बनाए नही बनी । अब तक जान पर आ बनी, बचा न सके ।

जान पर खेलना—जान की परवाह न करना । उ० प्रताप ने जान पर खेल कर अपने देश की रक्षा की ।

जान बचाना—१. पीछा छुड़ाना । उ० रोटी फेंक कर मैंने कुत्ते से जान बचाई । २. रक्षा करना । ३ लुकना-छिपना । उ० तुम अपनी जान बचाते फिरते हो ।

जान-बूझ कर आग में कूदना—अपना नुकसान जान बूझ कर करना ।

जान-बूझ कर करना—समझ कर करना । अनजाने न करना । उ० मैने तो जान-बूझ कर ही इसे किया ।

जान भारी होना—जीने की इच्छा न होना । जीवन भार होना । उ० इस बीमारी के मारे मेरी जान भारी हो गई है ।

जान मार कर काम करना—बहुत मेहनत करना । उ० मैं जान मार कर काम करता हूँ, फिर भी खाने को नही मिलता ।

जान मारना—बहुत ज्यादा परिश्रम करवाना । उ० काम कराकर अपने नौकरों का वह जान मार डालता है ।

जान मुसीबत में डालना—परेशानी में डालना ।

जान में जान आना—कठिनाई दूर होना, शांति होना, धैर्य बँधना । उ० कचेहरी का खोया हुआ कागज आज जब मिल गया, तो जान में जान आई है ।

जान लड़ाना—अधिक कोशिश करना । उ० इस काम मे यदि जान लड़ा दो तो यह पूरा हो जाय ।

जान लब पर आना—दे० 'जान क़फ़स मे फँसना'।

जान सूखना—१ होश-हवास उड जाना । उ० उस पागल को देखते ही मेरी तो जान सूख गई । २. बुरा लगना । उ० उसका किसी को प्यार करना देख कर तुम्हारी जान क्यों सूखती है ?

जान सूली की नोंक पर होना–संकटग्रस्त अवस्था में होना।

जान सूली पर चढ़ी होना–अत्यधिक मुसीबत मे होना।

जान से जाना–मरना। उ० अगर तुम अकेले इस जगल में जाओगे तो जान से जाओगे।

जान से हाथ धोना या धो देना–मारा जाना, प्राण गंवाना। उ० नदी में कूद कर क्यो जान से हाथ धो रहे हो ?

जान से हाथ धो बैठना–दे० 'जान से हाथ धोना'।

जान हलाकान करना–बहुत परीशान करना। उ० क्यों उस पागल की जान हलाकान कर रहे हो ?

जान होठों पर आना–दे० 'जान होठो पर होना'।

जान होठों पर होना–१ जान निकलने पर होना। उ० खाने बिना मेरी जान होठों पर है, मुझे कुछ भोजन दे दो। २. बहुत कष्ट मे होना। ३. बड़ी तगी में होना।

जानी दुश्मन–प्राणों के पीछे पडने वाला शत्रु। उ० वह मेरा जानी दुश्मन है।

जानी दोस्त–दिली दोस्त। उ० वह मेरा जानी दोस्त है।

ज़ाब्ता बरतना–कानून के अनुसार चलना। उ० झगडा तो हो ही गया, अब ज़ाब्ता बरतना बहुत जरूरी है, नही तो और कुछ हो जायगा।

जामे में फूला न समाना–बहुत प्रसन्न होना। उ० लड़के की पैदाइश सुन कर वह जामे में फूला न समायेगा।

जामे से बाहर होना–१. बहुत गुस्सा होना। उ० मेरी बातें सुनते ही वह जामे से बाहर हो गया। २. बहुत प्रसन्न होना।

ज़ाया करना–बरबाद करना। उ० क्यों वक़्त ज़ाया कर रहे हो ?

ज़ार-ज़ार रोना–फूट-फूट कर रोना। उ० बेचारा ज़ार-ज़ार रो रहा है।

ज़ार-बेज़ार रोना–दे० 'ज़ार-ज़ार रोना'।

ज़ारी करना–१. आरम्भ करना। उ० अभी काम ज़ारी करूँगा। थोड़ी देर और ठहर जाओ। २. भेजना। उ० नोटिस ज़ारी करूँगा, तब पता पड़ेगा।

जाल फेंकना–किसी को फंसाने या चंगुल में लाने के लिए कोई युक्ति लगाना। किसी काम के लिए कोई उपाय करना। उ० देखिए, जाल फेक रहा हूँ, शायद लह जाय।

जाल फैलाना–१. किसी को अपने वश में करने के लिए आडंबर करना या चाल चलना। उपाय लगाना। उ० आपका जाल फैलाना बेकार है, क्योंकि वह सब समझ रहा है। २. भरमार होना। उ० शहर मे गुप्तचरों का जाल फैला हुआ है।

जाल बिछाना–दे० 'जाल फैलाना'।

जाल मारना–धोखा देना। उ० तुम सबके साथ जाल मारते हो, यह ठीक नही है।

जाल में फँसना–चंगुल मे आना। उ० बातचीत पर ही मुग्ध होकर लोग धर्तों के जाल मे फँस जाते हैं।

जाल में फँसाना–धोखे मे लाना। उ० उस स्त्री ने बहुत से मर्दों को अपने जाल मे फँसा लिया है।

जाल से मुक्त होना–प्रभाव या अधिकार से मुक्त होना।

जाहिल-लट्ठ होना–मूर्ख या उजड्ड होना।

जिंदगी के दिन पूरे करना–१ मरणासन्न होना। उ० अब क्या है, डाक्टर ने भी जवाब दे दिया, जिन्दगी के दिन पूरे कर रहे हैं। २. कष्ट से दिन बिताना। उ० निम्न श्रेणी के लोग केवल जिन्दगी के दिन पूरे करते हैं।

जिंदगी के दिन भरना–दे० "जिंदगी के दिन पूरे करना'।

जिगर का खून पीना–१ कष्ट देना। उ० दूसरों के जिगर का खून न पिओ। २ कष्ट सहना। उ० जब कोई बस नही चलता है तो जिगर का खून पी लेना ही अच्छा है। ३ मार डालना।

जितनी चादर उतना पैर फैलाना–सामर्थ्यानुसार कार्य करना।

जितनी डफली उतने राग होना–सबकी अलग-अलग राय होना। उ० जब घर मे जितनी डफली उतने राग हैं तो घर का चलना असंभव ही समझो।

जिद्द चढ़ना–दे० 'जिद पकड़ना'।

ज़िद पकड़ना–हठ करना । उ० ज़िद न पकड़ो, होता तो अवश्य दे देता ।

ज़िद पर आना–दे०, 'ज़िद पकड़ना' ।

जिन चढ़ना–१. भूत चढ़ना । उ० जिन चढ़ता है तो अभी डंडे से उतार दूंगा । २ क्रोधित होना । ३ किसी काम के करने की धुन सवार होना ।

ज़िम्मे करना–भार सौंपना । उ० आज से भाई ने सब काम मेरे ज़िम्मे कर दिये ।

ज़िम्मे डालना–१ कर्ज़ देना । उ० कुछ रुपया मेरे ज़िम्मे डाल दो । २ दे० 'ज़िम्मे निकालना' ।

ज़िम्मे निकलना–ऋणी होना । उ० पिछले साल के हिसाब से १५रु०) तुम्हारे ज़िम्मे निकलते है ।

ज़िम्मे निकालना–किसी के यहाँ ऋण बतलाना । उ० मेरे ज़िम्मे १००रु०) कहाँ से निकालते हो?

जिरह करना–दे० 'जिरह काढ़ना' ।

जिरह काढ़ना–खोद-विनोद करना । उ० छोटी-छोटी बातों में जिरह काढ़ना ठीक नहीं है । २ मुकदमे में वकील का किसी का बयान लेने में खोद विनोद करना । उ० उस वकील को जिरह काढ़ना खूब आता है ।

जिरह निकालना–दे० 'जिरह काढ़ना' ।

ज़िल्लत उठाना–१ अपमानित होना । उ० इस काम के करने मे हमको बड़ी ज़िल्लत उठानी पड़ी । २ परेशानी उठाना । उ० तुम्हारे लिए मैं ज़िल्लत नहीं उठा सकता ।

ज़िल्लत देना–१ बेइज़्ज़त करना । उ० बिरादरी वालों ने मुझे बड़ी ज़िल्लत दी । २ परेशानी देना ।

ज़िल्लत पाना–दे० 'ज़िल्लत उठाना' ।

जिस कल बैठाएँ बैठना–जो कहे वैसा ही करना ।

जिस गाँव मे न जाना, उसका रास्ता न पूछना–जो कार्य नहीं करना, उसमे रुचि न रखना ।

जिस पत्तल मे खाना-उसी में छेद करना–अपने हितकारी का नुकसान करना ।

जिहाद का झंडा खड़ा करना–बगावत करना खिलाफत करना

जिह्वाग्र होना–अच्छी तरह स्मरण होना । उ० तुमको तो कभी कोई चीज़ जिह्वाग्र नहीं होती है ।

जी अच्छा होना–स्वस्थ-चित्त होना । उ० कई दिन के बाद तो आज जी अच्छा है ।

जी आना–किसी को चाहना । उ० उस क़लम पर मेरा जी आ गया है ।

जी उकताना–मन न लगना । उ० मेरा यहाँ जी उकता रहा है, अब चलूंगा ।

जी उचटना–१ मन हटना । उ० बुढ़ापे मे सभी कामनाओं से जी उचट जाता है । २. जी लगना । उ० आज मेरा जी कुछ उचटा है ।

जी उचाट होना–दे० 'जी उचटना' ।

जी उड़ जाना–१. धैर्य का जाता रहना । उ० इसकी हालत देखकर मेरा जी उड़ जाता है । २. दे० 'जी करना' ।

जी उड़ा रहना–जी स्थिर न रहना । काम पर ठीक से जी न लगना । उचाट रहना । उ० तो उड़ेगे फूंक से दुखड़े नहीं, जी हमारा है उड़ा रहता अगर ।

जी उलट जाना–१ होश-हवास ठीक न रहना । उ० उसका जी उलट गया है, मालूम होता है कि बीमारी कुछ बढ़ गई है । २ मन का बदल जाना ।

जी ऊपर-तले होना–१ कै आने को होना, मिचली या उबकई आना । उ० मेरा जी ऊपर-तले हो रहा है, कुछ दवा दे दो । २. जी घबड़ाना । उ० इस घटना से मेरा जी ऊपर-तले हो रहा है ।

जी कड़ा करना–दे० 'दिल कड़ा करना' ।

जी करना–१. इच्छा होना । उ० मेरा जी कर रहा है कि आज सत्तू खाऊँ । २. हिम्मत होना ।

जी कलपाना–चित्त को दुःख पहुंचाना ।

जी काँपना–१ डर से हृदय काँपना । उ० जब मै उस पागल को देखता हूँ तो मेरा जी काँपने लगता है । २ चित्त का स्थिर न रहना ।

जी का गाहक–१ जान का इच्छुक । उ० वह तुम्हारे जी का गाहक है, जान लेकर ही दम लेगा । २ प्राण खाने वाला, परीशान करने वाला । उ० यह भी एक जी का गाहक आया ।

जी काटना–पछताना । पश्चात्ताप होना । उ० उसको मैने यह नहीं दिया, अब तक जी काट रहा है ।

जी का गुबार निकालना–मन के आक्रोश और असंतोष को व्यक्त कर देना ।

जी का जंजाल—व्यर्थ की झझट। उ० आजकल मेहमान भी जी के जंजाल होते हैं।

जी का जोखिम—जान का खतरा। उ० वहाँ जाना जी का जोखिम है, तो कौन जायगा।

जी का बुखार निकालना—१ कुछ कह-सुन कर हृदय की जलन निकालना। उ० अगर उसने तुमको गाली दी है, तो तुम भी जी का बुखार निकाल लो। २ दिल का गुबार निकालना। ३. इच्छा पूरी करना।

जी का बोझ हलका होना—कोई बहुत बड़ा भार हट जाना। उ० बेटी की शादी कर देने से उस बुड्ढे के जी का बोझ हलका हो गया।

जी की भड़ास निकालना—हृदय के दबे रोष को निकालना।

जी की जलन बुझाना—मन के दु:ख को दूर करना।

जी की जी में रहना—इच्छा पूरी न होना। उ० हमारी तो जी की जी मे रह गई, और वे चले भी गये।

जी की निकालना—इच्छा पूरी करना। उ० तुम भी जी की निकाल लो, नही तो पछताओगे।

जी की पड़ना—जान बचाना कठिन होना। उ० मुझे तो जी की पड़ी है और आप मजाक कर रहे हैं।

जी को आ लगना—जान बचना कठिन होना। उ० इस मुकदमे मे जी को आ लगी है, अब मैं क्या करूँ?

जी को जी समझना—१. दया करना। उ० सबके जी को जी समझना चाहिये। २. सहानुभूति करना। दूसरे के कष्ट का अनुभव करना।

जी को भरोसा आना—ढाढ़स बँधना।

जी को मारना—मन को उच्छृखल न होने देना। इच्छाओं को दबाना। उ० बड़े-बड़े महात्मा लोग ही जी को मार सकते है।

जी खट्टा करना—१ घृणा करने लगना। उ० तुम्हारे ऐसे पापी को देखते ही वह जी खट्टा कर लेता है। २. उदास या हतोत्साह होना। उ० जी खट्टा न करो, फिर से कोशिश करो। ३. किसी के जी को खट्टा करने का कारण उपस्थित करना। उ० उसका जी खट्टा न करो।

जी खट्टा-मीठा होना—जी ललचाना, मुँह में पानी भर आना।

जी खट्टा होना—१ अरुचि होना। उ० संसार के सुखो से मेरा जी खट्टा हो रहा है। २. उत्साह जाता रहना। ३. मन फिर जाना। उ० उससे जी खट्टा हो गया।

जी खपाना—किसी काम मे जी-जान से लग जाना। उ० मैंने इस काम से जी खपा दिया, फिर भी यह पूरा नही हुआ।

जी खरा-खोटा होना—बुरी नीयत होना। उ० इतनी छोटी चीज के लिए तुम्हारा जी खरा-खोटा हो गया तो क्या विश्वास किया जाय।

जी खोल कर कहना—१ जो मन मे हो वह कहना। उ० जी खोल कर कहो, इसमे शर्माने की क्या बात है? २. बिना हिचक के कहना।

जी गँवाना—प्राण खोना। उ० अगर रात को जंगल मे जाओगे तो जी गँवा बैठोगे। जी गँवाना चाहो तो उससे लड़ाई करो।

जी गिरा जाना—१ तबीयत सुस्त होना। उ० आज सुबह ही मेरा जी गिरा जा रहा है। २ उत्साह जाता रहना। उ० लाभ न होने से जी गिरा जा रहा है।

जी घबराना—१ मन न लगना। उ० मेरा जी घबरा रहा है, मै अब यह काम नही करूँगा। २ अरुचि या घृणा होना। उ० इस भोजन से तो जी घबरा रहा है।

जी चलना—१. इच्छा होना। उ० जी चले तो वह भी खा लो। २ आशिक होना। उ० तुम्हारा जी उस पर चलता है।

जी चुराना—१. मन मोहित करना। उ० उसने मेरा जी चुरा लिया है। २ परिश्रम से काम न करना। उ० काम मे जी चुराओगे तो तुम्हे कौन पूछेगा?

जी छितराना—हृदय को दु:ख होना।

जी छोटा करना—१. कजूसी करना। उ० तुम्हारे स्तर के आदमी को जी नही छोटा करना चाहिए। २. हतोत्साह होना। उ० जी छोटा न करो, पास हो जाओगे। ३ मन उदास करना।

जी छोड़ कर भागना–१. हिम्मत हार कर भाग जाना। उ० बहुत से आदमी इस काम को करने आये, पर सभी जी छोड़ कर भाग गये। २. बहुत तेज़ भागना। उ० शेर को देखने ही वह जी छोड़ कर भागा।

जी जलना–१ क्रोध आना। उ० मैं तुम्हे देखता हूँ तो मेरा जी जलने लगता है। २ ईर्ष्या होना, डाह होना। उ० उसकी उन्नति देख कर तुम्हारा जी क्यों जलता है।

जी-जान लड़ाना–१ बहुत मेहनत से करना। उ० मैं हर एक काम जी-जान लडाकर करता हूँ। २ जान की परवाह न करना।

जी-जान होम करना–बहुत प्रयत्न करना।

जी जुड़ाना–हृदय शांत होना।

जी टँगा रहना–खटका लगा रहना। उ० मेरा जी टँगा रहता है कि वह कहाँ गया ?

जी टँगा होना–दे० 'जी टँगा रहना'।

जी टूट जाना–१ दिल हट जाना। उ० अब तो मेरा जी आपसे टूट गया है। २ निराश हो जाना। उ० आपकी बाते सुन कर मेरा जी टूट गया है, अब मै यहाँ से जा रहा हूँ।

जी ठंडा होना–१ शान्त होना। उ० उनका जी ठंडा हो गया है, अब तुम न डरो। २ इच्छा पूरी होना। उ० जब वह हार जाय तो तुम्हारा जी ठंडा हो।

जी डालना–१. मरने से बचाना। जिंदगी बचाना। उ० डाक्टर ने उसमे जी डाल दिया है, नही तो वह मर गया होता। २ मुहब्बत करना। उ० एक ही से जी डालो, सौ से नही।

जी डूबना–१. जी घबराना। उ० जब मैं उस नीच के काम को सोचता हूँ तो मेरा जी डूबने लगता है। २ मूर्छा आना। उ० कमज़ोरी से जी डूबा जाता है।

जी तरसना–१ पाने को व्याकुल होना। उ० आपके दर्शनों का जी तरस रहा है। २. ललचना, दिल न भरना। उ० बेचारों का जी दाने-दाने को तरसता है।

जीता खून–देह से निकला हुआ ताज़ा खून। उ० कुछ लोग जीते खून पीने के शौकीन होते हैं।

जीता चुनवाना–१. दुसह दंड देना। २. जीते जी दीवाल मे चुनवाना। उ० औरंगज़ेब ने गोविंद सिंह के दो पुत्रों को जीता चुनवा दिया।

जीता-जागता–१. भला-चंगा। २. प्रत्यक्ष, ज्वलंत। उ० इसका यह जीता-जागता उदाहरण है। ३ हिम्मत वाला।

जीता-जागता चित्र खींचना–किसी का सजीव वर्णन करना। उ० तुलसी ने अपनी कविताओं में मानव-मन-स्थिति का जीता-जागता चित्र खीचा है।

जी दब जाना–निरुत्साहित होना।

जी धक्-धक् करना–आशंका होना।

जीती मक्खी घोंटना–१ जान-बूझ कर कोई ऐसा पाप करना, जिसके कारण पीछे से हानि हो। उ० मै आपके कहने से जीती मक्खी नही घोंट सकता। २. दोष की ओर ध्यान न देना। उ० वह मूर्खों की तरह जीती मक्खी नही घोंटता।

जीती मक्खी निगलना–१ जान कर पाप करना। उ० सच्चा हाल जान कर भी मैं यदि झूठ बोलूँ तो इससे बढ़कर जीती मक्खी निगलना और क्या हो सकता है ? २ जान कर धोखा खाना।

जीते जी–१ प्राण रहते। उ० जीते जी तो उसको नही लेने दूँगा। पीछे चाहे जो हो। २. आजन्म। उ० उसकी कृतज्ञता मै जीते जी मानूँगा।

जीते जी मर जाना–१ जीवन में ही किसी ऐसी घटना का घटना कि मृत्यु से भी बढ़कर दुःख हो। उ० पिता जी की मृत्यु से तो मै जीते जी मर गया। २. जीवन से निराश होना। उ० मेरा क्या है, मै तो जीते जी मर गया हूँ। ३. बहुत बेइज्जत होना। उ० इस काम को करके तुम जीते जी मर गए।

जी तोड़ कर काम करना–दिल लगा कर परिश्रम से काम करना। उ० नौकर हो तो ऐसा कि जहाँ लगा दो, जी तोड कर काम करे।

जी दहलना–डर से काँपना। डर के कारण दिल का धक-धक करना। उ० उसे देख कर मेरा जी दहलने लगता है।

जी दान देना–जान छोड़ देना, न मारना। उ० शत्रु के सामने उसने सिर नवा कर कहा कि मुझे जी दान दे दो।

जीदार होना–बहादुर होना। उ० शिवा जी बड़े जीदार थे।

जी दुखाना–१. कष्ट देना। उ० क्यों ग़रीबों का जी दुखाते हो ? २. ऐसी बात कहना जिससे दिल को ठेस पहुँचे।

जी देना–१. प्राण देना। उ० अगर आप मेरा कहना न करेंगे तो मैं जी दे दूँगा। २. दे० 'जान देना'।

जी दौड़ाना–मन चलाना। उ० अधिक जी दौड़ाना ठीक नहीं है। सीमा के अंदर रहो।

जी धँसा जाना–मूर्छा-सी आना। उ० कमजोरी के कारण जी धँसा जा रहा है। २. उदासी होना। उ० उसका जी धँसा जाता है, वह सन्यास लगा। ३. चित्त विह्वल होना। उ० उसके न आने से मेरा जी धँसा जाता है।

जी धकधक करना–दे० 'जी धड़कना'।

जी धकधक होना–दे० 'जी धकधक करना'।

जी धक से होना–डर जाना। उ० उस पागल को देखते ही लडके का जी धक से हो गया।

जी धक हो जाना–१. चौंक जाना। २. भयभीत हो जाना। उ० उसकी बात सुनते ही मेरा जी धक हो गया।

जी धक होना–दे० 'जी धक से होना'।

जी धड़कना–१. डर से घबराहट होना। उ० मेरा जी धड़क रहा है कि कहीं यहाँ भी डाकू न आ जायें। २. हिम्मत न पड़ना। उ० उसे तो कुछ देते जी धड़कता है कि ख़राब कर देगा।

जी न होना–तबीयत ठीक न होना, बीमार होना।

जीना अपनी ख़ुशी से–अपने सुख से आनन्दित होना। उ० मैं तो अपनी ख़ुशी से जीता हूँ।

जीना भारी होना–जीवन में दुख ही दुःख होना। जीवन का आकर्षक या सुखमय न होकर भारस्वरूप होना। उ० आजकल तो ग़रीबों का जीना और भी भारी हो गया है।

जी पक जाना–१. दुःख सहते-सहते एक आदत-सी पड़ जाना। उ० इनको क्या, इनका तो जी पक गया है, चाहे जितना सता लो। २. दिल ऊब जाना। उ० उसके झगडे में तो जी पक गया है।

जी पकड़ लेना–कलेजा थामना, दुःख सहने के लिए छाती पर हाथ रख कर हिम्मत बाँधना। उ० जैसे इतना सहा, वैसे और के लिए भी जी पकड़ लूँगा।

जी पकड़ा जाना–मन में संदेह होना। उ० उसकी रजिस्टरी चिट्ठी आते ही मेरा जी पकड़ा गया कि कोई बात अवश्य है।

जी पड़ना–निराशा में आशा मिलना। उ० जंगल में उस खूँखार आदमी को देखते ही मेरी हवाई उड़ने लगी, परन्तु कुछ बटोहियों को देखा तो जी पड़ा।

जी पत्थर करना–दे० 'दिल कड़ा करना'।

जी पर आ बनना–प्राण संकट में पड़ना। उ० पिछले महायुद्ध में सारे पूर्वी भारत के लोगों के जी पर आ बनी थी।

जी पर खेलना–जान को ख़तरे में डालना। उ० वह तो डरने का नाम ही नहीं जानता है, जी पर खेलने के लिए हमेशा तैयार रहता है।

जी पाना–१ किसी के स्वभाव या चरित्र को समझ लेना। उ० जब मैं तुम्हारा जी पा लूँगा तो कुछ करूँगा। २ दिल का रहस्य जानना। उ० उसका जी पा लेने दो तो मैं कोई रास्ता निकालूँ। ३. प्रेम पाना। उ० तुम उसका जी पा गए।

जी पानी करना–किसी के प्रति दया उत्पन्न करना। उ० उसकी करुणा-भरी पुकार ने मेरा जी पानी कर दिया।

जी पानी होना–१ करुणा से ओत-प्रोत होना। उ० कल के असहाय व्यक्तियों को देख कर जी पानी हो गया। २. शर्मिन्दा होना।

जी पिघलना–१. द्रवित होना। उ० तुम्हारा जी तो शायद कारुणिक दृश्यों पर भी नहीं पिघलता। २ बहुत जल्दी आकर्षित होना।

जी पीछे पड़ना–चित्त के बँट जाने से दुःख भूल जाना। उ० आख़िर कब तक अफ़सोस करोगे, कुछ काम-धाम करो, जिससे जी पीछे पड़े।

जी फट जाना–१ प्रेम में अन्तर पड़ना। उ० तुम्हारे व्यवहारों से जी फट गया। २. चित्त उदास होना। इस समाचार से जी फट गया।

जी फटना–दे० 'मन फटना'।

जी फड़क उठना–दिल एकाएक ख़ुश हो जाना। उ० आज पाँच साल बाद तुमसे मिल कर जी फड़क उठा।

जी फिर जाना–चाह न होना। चित्त हटना। उ० तुम्हारी ओर से मेरा जी फिर गया है।

जी फिरना–जी हट जाना। उ० उसके व्यवहार से मेरा जी फिर गया है, अब उससे बात भी न करूँगा।

जी फिसलना–मन मोहित होना। चित्त विचलित होना। उ० उसे देखते ही मेरा जी फिसल गया।

जी फीका होना–दे० 'जी खट्टा होना'।

जी बँटना–एकाग्रचित्त न होना। उ० पढते समय बोलने से जी बँट जाता है।

जी बंद होना–घृणा होना, पसंद न आना। उ० जब एक बार जी बन्द हो गया तो फिर कैसा प्रेम ?

जी बढ़ना–साहस या उत्साह बढ़ना। उ० यदि वह इस साल पास हो गया तो उसका जी बढ़ जाएगा।

जी बहलना या बहल जाना–१ आनन्द का संचार होना। मनोरंजन होना। उ० नदी की ओर चले जाओ, जी बहल जाएगा। २ चित्त के बँटने से दुःख आदि भूल जाना। उ० आने-जाने से जी बहलता है।

जी बहलाना–१. मनोरंजन करना। उ० जी बहलाने के लिए कभी क्रीडा-स्थल पर भी चले जाया करो। २ दे० 'जी बँटना।

जी बिखरना–दे० 'जी बँटना'।

जी बिगड़ना–१ अरुचि होना। उ० उसके फोड़े देखकर जी बिगड़ गया। २ दे० 'जी ऊपर-तले होना'।

जी बुरा करना–१ दूसरों के विचार बदलना। उ० तुमने तो हरि का जी हमारी ओर से बुरा कर दिया है। २. वमन करना। उ० क्या खाए थे कि जी बुरा कर दिया। ३. घृणा उत्पन्न करना। उ० उसकी गंदी बातों ने मेरा जी बुरा कर दिया।

जी बुरा होना या हो जाना–१ घृणा उत्पन्न होना। उ० उसे देखकर जी बुरा हो गया। २ किसी के प्रति बुरा भाव होना। ३ प्रसन्नता जाती रहना। ४ उदासी, रंज या क्रोध आना।

जी बैठा जाना–१ उद्विग्नता होना। उ० आज तो उसके समाचार से जी बैठा जाता है। २ मूर्छा-सी आना। उ० शरीर में इतना भी रक्त नहीं है कि चल सकूँ, जैसे जी बैठा जाता हो। ३. उदास होना। उ० जाने क्यों जी बैठा जाता है, काम में तबीयत ही नहीं लगती। ४. जोश या उत्साह का जाता रहना।

जीभ करना–धृष्टता से उत्तर देना। उ० इतना बड़ा हो गया और बड़ों से जीभ करता है। इसे कुछ भी तमीज नहीं।

जीभ काटना–दण्ड के कारण बोलती बन्द हो जाना।

जीभ के नीचे जीभ होना–कह कर बदल जाना, निश्चित न रहना। उ० स्टैम्प पर लिखो तो मानूँगा, नहीं तो तुम्हारे तो जीभ के नीचे जीभ है, कौन विश्वास करे ?

जीभ खोलना–मुँह से कुछ बोलना।

जीभ चलना–१ चटक-मटक खाने की इच्छा होना। २ बात करना। ३ शिकायत करना। उ० अच्छा, अब आपकी भी जीभ चलने लगी।

जीभ चलाना–१. शेखी मारना। उ० अपने बड़ों के सामने जीभ चलाना उचित नहीं है। २ बहुत बोलना।

जीभ थोडी करना–कम बोलना। उ० तुम हर समय बकते रहते हो, जरा जीभ थोड़ी करो।

जीभ दबा लेना–चुप्पी साधना।

जीभ पकड़ना–१ बोलने से रोकना। उ० उसके सामने कोई भी आये, सबकी जीभ पकड़ लेता है। २ हरा देना। उ० आज तो पंडित जी ने उनकी जीभ खूब पकड़ी।

जीभ पर सरस्वती बसना–१ दैवी या आन्तरिक शक्ति के कारण विद्वान् होना। उ० उसका अध्ययन कुछ भी नहीं है, पर उसकी जीभ पर सरस्वती बसती है। २ कवि होना, आशुकवि होना।

जीभ बंद करना–चुपचाप रहना। उ० जीभ बन्द करो, नहीं तो अब मार दूँगा।

जीभ बढ़ाना–चटोरेपन की आदत लगना।

जी भटकना–१. चित्त एकाग्र न होना। उ० कितना भी ध्यान लगाता हूँ, जी भटकने लगता है। २ अरुचि या घृणा होना। उ० गंदे स्थलों को देख कर जी भटकने लगता है।

जीभ में ताला पड़ना–कुछ भी न कह पाना।

जी भर आना–१. करुणा से द्रवित हो जाना। उ० उसकी दुःख-भरी आवाज को सुन कर जी भर आता है। २. दुःख के कारण आँसू निकल आना। उ० स्वय अपना पेशा देख कर मेरा जी भर आता है।

जी भर कर–दे० 'जी खोल कर'।

जी भरना–१. सतुष्ट होना। उ० अब मिठाई से जी भर गया है। २. मनोकामना पूर्ण होने पर प्रसन्नता या तृप्ति होना। उ० नौकरी मिल जाने पर ही जी भरेगा। ३ मन के मुताबिक होना। उ० गुंडो से बातचीत करते हो, जाने कैसे तुम्हारा जी भरता है। ४. शका दूर होना। उ० अब तक कुछ सदेह था, परन्तु तुमसे बात करने पर जी भर गया।

जी भरभरा उठना–रोमाचित होना या विह्वल हो जाना। उ० नोआखली की घटनाओं को सुनकर जी आज भी भरभरा उठता है।

जीभ लपलपाना–१. चखने की इच्छा करना। उ० हर एक चीज के लिए उसकी जीभ लपलपाया करती है। २ चाहना, जी का आकर्षित होना। ३ काटने के लिए तैयार होना। उ० साँप जीभ लपलपा रहा है।

जीभ हिलाना–१. कुछ बोलना। उ० अगर जरा भी जीभ हिलाया तो बिना मारे न छोड़ूंगा। २ थोड़ी शिफ़ारिश करना। उ० तुम जीभ भी हिला दो तो मेरा काम बन जायगा।

जी भारी करना या कर देना–१ उदास होना। उ० यह तो ससार का ही काम है, क्यो जी भारी करते हो? २. बीमार करना, तबीयत खराब करना। उ० कल की तेल की पकौड़ियो ने मेरा जी भारी कर दिया।

जी भारी होना या हो जाना–१ तबीयत खराब होना। उ० रात की पूरी खाने से ही जी भारी हो गया है। २. गमगीन होना, चितित होना। उसकी बीमारी का समाचार सुनकर जी भारी हो गया है।

जी भुरभुराना–आकर्षित होना। उ० उसके नृत्य से जी भुरभुराने लगा।

जी मचलना–किसी वस्तु पर दिल आ जाना। उ० लगता है, इस साड़ी को देखकर आपका दिल मचल गया है।

जी मचलाना या मतलाना–१. मिचली आना, चित्त फरियाना। क़ै की इच्छा होना। उ० जाने क्यो जी मचला रहा है? २. घृणा होना। उ० उसका चेहरा देखकर मेरा तो जी मतलाता है।

जी मलमलाना–पश्चात्ताप करना। अफसोस होना। उ० जब कार्य सपन्न हो गया तो जी मलमला कर कोई क्या करेगा?

जी मारना–दे० "जी को मारना"।

जी मिचलाना–दे० "जी मचलाना"।

जी मिलना–१. अनुकूल प्रकृति का होना। उ० यदि तुम दोनों का जी मिल गया तो निभ जाएगी। २. हृदय की गुप्त बात का पता चलना। उ० किसी तरह उसका जी मिल जाय तो सारा काम बन जाय।

जी मे आना–१. ख्वाहिश होना। उ० जी में आता है कि वहाँ चला जाऊं। २. मन मे भाव होता। उ० जी मे आया और मैंने उसे कहानी का रूप दे दिया। ३ जँचना। उ० यह चीज मेरे जी मे नही आती। ४. हृदय मे स्थान पाना।

जी में खुभना–दे० 'जी मे गड़ना'।

जी मे गड़ना–१ निश्चय हो जाना। उ० जी मे गड़ गया है, परीक्षा अवश्य दूंगा। २. हृदय मे चुभना। उ० उसके कटु शब्द जी मे गड़ गए है। ३ खूब प्रभाव करना। उ० नेहरू के भाषण के प्रत्येक शब्द जी मे गड़े है। ४. हमेशा के लिए याद होना। उ० तुम्हारा पढाया जी मे गड़ गया, भूल नही सकता।

जी में घर करना–१. सदैव याद बनी रहना। उ० तुमने तो मेरे जी मे घर कर लिया है। २ अच्छी तरह जम जाना। उ० उसकी बातो ने जी मे घर कर लिया है, अब भूल नही सकता। ३. हृदय मे बस जाना, हृदय मे जगह कर लेना। उ० उसके रूप ने तो जी मे घर कर लिया।

जी में जलना–१. कुढन होना। उ० वह तो स्वजातियों की उन्नति देखकर जी मे जलता है। २. मन ही मन डाह करना। उ० मुझमे तो जी मे जलने की आदत है ही नही।

जी में जी आना–मन की उद्विग्नता दूर होना। उ० जब हम लोगो ने उस जगल को पार किया, तब जी में जी आया।

जी में जी डालना–१ विश्वास जमाना। उ० जी मे जी डाल कर वह धोखा देता है। २.

चिन्ता दूर करना। उ० तुम्हारी बातों ने जी में जी डाला, नहीं तो मैं बहुत ही परेशान था।

जी में धरना–१. बुरा मानना। उ० उनकी बातों को जी में न धरना, उनका तो स्वभाव ही ऐसा है। २. ध्यान में रखना। उ० जरा इसकी पढ़ाई को भी जी में धरना, नहीं तो चौपट हो जाएगा। ३. याद रखना।

जी में धँसना–मन में बैठना। उ० आप सब लोग समझा रहे है, पर यह बात मेरे जी में नहीं धँस रही है।

जी में पैठना–दे० 'जी मे गड़ना'।

जी में बसना–दे० 'जी मे घर करना'।

जी में बैठना–१. निश्चय होना। उ० जी मे बैठ गया है, अब नहीं जाऊँगा। २. जँच जाना। उ० यह बात मेरे जी मे नहीं बैठती। ३. जी में जगह करना, हृदय में प्रवेश करना। उ० उसकी सूरत मेरे जी मे बैठी है।

जी में रखना–१. डाह रखना। उ० मै तो कुछ भी जी में नहीं रखता। २. छिपाए रखना। उ० कृपाकर ऐसी बाते जी मे रक्खा करो। ३ स्मरण रखना। उ० मेरी बातो को भी जी मे रखिएगा। ४ प्यार से हृदय के कोने मे रखना। उ० आप क्या जानें, उसे मैं जी में रखता हूँ।

जी रखना–१ मन रखना, इच्छा पूरी करना। उ० इतनी-सी तो वस्तु है, किस-किसका जी रक्खूँ। २ बात मानना। उ० वह मेरा जी रखता है, जो चाहे करवा ले।

जी रुकना–हिचकिचाहट होना। उ० वहाँ जाने से जी रुकता है, क्या करूँ।

जी लगना या लग जाना–१ आसक्ति होना। उ० जिसमे जी लग जाता है, उसके दुर्गुण भी गुण ही लगते हैं। २. मन लगाना। उ० अब पढ़ने मे जी नहीं लगता है। ३ दिल या जी का उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करना। उ० जी लगा है,वे आ जाते तो जाने के पहले देख लेता।

जी लगाना–१ प्रेम करना। उ० जीवन है तो कभी न कभी किसी से जी लगाना ही पड़ेगा। २ मन लगाना, जुटना। उ० जी लगा कर पढ़ो। ३ प्रतीक्षा करना। उ० जी न लगाओ, पता नहीं वे आएँगी या नहीं।

जी लरजाना–डर जाना। कांपना। उ० साहब के सामने जाते ही उसका जी लरजाने लगता है।

जी ललचाना–१. लालच होना, तरसना। गरीबो के बच्चों का जी दूध के लिए लल है। २. जी का आकर्षित होना। उ० देखकर कितनो का जी ललचता है।

जी ललचाना–१. पाने के लिए लाला होना। उ० क्या छोटी-छोटी चीज के ि जी ललचाते हो ? २. आकर्षित होना। उसके स्वरूप से जी ललचा गया।

जी लुटना–चित्त मोहित होना। उ० उ व्यवहारो से मेरा जी लुट गया। उसका अ रूप देखकर किसका जी नहीं लुटता ?

जी लुभाना–हृदय खिचना। उ० इस ि को देखकर भला किसका जी नहीं ह जाएगा ? २. हृदय खीचना। उ० चीज तो जी लुभाती है !

जी लूटना या लूट लेना–चित्त खीच ले मन मोहित कर लेना। उ० उसका सौ किसका जी नहीं लूट लेता ?

जी लेना–१. रहस्य पा जाना। उसने तो बात ही में जी ले लिया। प्राण लेना। उ० किसी का जी ले आसान काम नहीं है।

जी लोटना–१. बड़ा दुःख होना। जी खलबली होना। उ० उस घोड़े के मर ज से जी लोट रहा है। २ प्रसन्न होना। उसे देखकर तुम्हारा जी लोटने लगता

जीव गाढ़े पड़ना–प्राण संकट मे पड़ना उ० इस वक्त तो अपना जीव गाढ़े प है, कभी फिर आना तो चलूँगा।

जीवन का कार्य समाप्त हो जाना–मृत्यु प्राप्त होना।

जीवन की संध्या होना–जिन्दगी का निकट होना।

जीवन भरना–जीवन के दिन पूरे करन उ० किसी तरह जीवन भर रहा हूँ।

जीवन भाररूप होना–जीवन कष्टमय हो जीवन मे कोई आकर्षण न होना। उ० भ रूप जीवन भयो, छिन-छिन जिय अकुला

जीवन भारी होना–जीवन में आकर्षण न हो जिंदगी बहुत दु:खमय होना। उ० क्या दो बच्चे हो गए और आमदनी कुछ भी है, बेचारे का जीवन भारी हो गया है।

जीविका लगना–भरण-पोषण-का उपाय होना। नौकरी लगना। उ० किसी तरह जीविका लग गई।

जीविका लगाना–रोजी का उपाय करना। उ० कही जीविका लगा दें तो मै यहाँ रह सकता हूँ, इस तरह बेकार क्या रहूँ ?

जी सनसनाना–भयभीत या आशंकित होना। उ० आज की रात तो ऐसी है कि जी सन-सना रहा है।

जी सन होना–होश-हवाश उड़ जाना। बहुत डर जाना। उ० शेर को देखते ही मेरा जी सन हो गया।

जी सायँ-सायँ करना–दे० जी सनसनाना'।

जी से उतर जाना–१. इच्छा न रहना। उ० चलो, जब जी से उतर गए, तब क्या कहना है ? २. प्रतिष्ठा न रहना। उ० लोग अपने कार्यों से ही दूसरो के जी मे उतर जाते हैं। ३ प्रेमपात्र न रहना, हृदय से निकल जाना। उ० विचित्र आदमी हो ! अब वह भी तुम्हारे जी से उतर गई ?

जी से करना–मन लगाकर करना। उ० कम ही काम करो, परन्तु जी से करो।

जी से जाना–मर जाना। उ० लड़ाई मे हजारो तो जी से जाते है, परन्तु नाम दो-चार का होता है।

जी से जी मिलना–आपस मे प्रेम होना। उ० जब जी से जी मिल जाय, तब सच्ची मित्रता जानो।

जी हट जाना–प्रेम न रहना, विरक्ति होना। इच्छा न रहना। उ० स्वय मेरे कामो से मेरा ही जी हट गया है।

जी हटाना–दे० 'दिल उठाना'।

जी हवा हो जाना–घबराहट होना। उ० उसकी मृत्यु सुन कर जी हवा हो गया। २. मर जाना।

जी हाथ में रखना–१. किसी के विचारो को अपने प्रति अच्छा रखना। उ० मैं तो ऐसा काम करता हूँ कि अपने मालिक का जी सर्वदा अपने हाथो में रखता हूँ। २. अपने वश या चगुल में रखना। उ० उसका जी किसी भी तरह हाथों में रक्खो। ३. दिल दे देना। उ० मैंने तो अपना जी उनके हाथों में रख दिया।

जी हारना–१. पस्तहिम्मत होना। उ० बार-बार की असफलता से जी हार गया। २. दिल ऊब जाना। उ० तुम्हारी बक-बक से तो जी हार गया। ३. दिल देना, प्रेम करने लगना। उ० मैं तो जी हार चुका हूँ, अब यदि वह शादी करना चाहती है तो मैं भी इन्कार नही कर सकता।

जी हिलना–भय या दया से उद्विग्न होना। उ० उसके करुण शब्दों से जी हिल गया।

जी ही जी में–अपने ही मन में। उ० जो ही जी मे मैने समझ लिया, अब तुमसे क्या कहूँ ?

जुंबिश खाना–हिलना-डोलना। उ० इतना हो गया, पर उसने जुंबिश तक न खाई।

जुआ हारना–दाँव खोना।

जुए को कंधे से उतारना–दायित्व से मुक्त हो जाना।

जुग-जुग जीना–बहुत दिनो तक जीवित रहना। उ० जुग-जुग जिये जवाहरलाल।

जुग टूटना–१ मडली का तितर-बितर होना। २ जोड़े का अलग-अलग होना।

जुगत लगाना–उपाय सोचना। युक्ति लगाना। उ० कोई जुगत लगाओ तो काम बने।

जुग फूटना–साथी का न रहना। दो साथियो में एक का कही चला जाना या मर जाना। जोडी बिछुडना। उ० मेरा जुग फूट गया, अब मै अकेले क्या करूँ ?

जुटा देना–१. काम मे लगा देना। उ० नौकरो को काम मे जुटा दो, तो कही जाओ २. इकट्ठा कर देना।

जुम्मा-जुम्मा आठ दिन दुनियाँ में आये होना–अनुभवरहित होना।

जुलाहे का गुस्सा दाढ़ी पर उतारना–किसी का क्रोध किसी और पर उतारना।

जुल्म टूटना–बहुत बड़ी विपत्ति आना। उ० उस पर तो जुल्म टूट गया, अब वह क्या रह सकता है ?

जुल्म ढाना–अत्याचार करना। उ० गरीबों पर तो जुल्म ढाना मनुष्यता के विरुद्ध है।

जुल्ल देना–बहकाना, झाँसा देना। उ० जुल्ल न दो, मै बच्चा नही हूँ।

जुल्ल में आना–धोखे मे आना । भ्रम मे आना । उ० वह तुम्हारे जुल्ल में आ गया ।

जूँ न रेंगना–प्रभाव न होना ।

जूठे हाथ से कुत्ता न मारना–बहुत कजूस होना । उ० जो जूठे हाथ से कुत्ता नही मारता, वह गरीबो को भोजन क्या देगा ?

जूड़ी आना–डर जाना ।

जूता उछालना–दे० 'जूता चलाना' ।

जूता उठाना–१ मारने को हाथ मे जूता लेना । उ० उसने क्रोधित होकर जूता उठा लिया, पर फिर रुक गया । २ सेवा करना । उ० गरीबी के कारण वह सबका जूता उठाता फिरता है ।

जूता चलना–जूते से मारपीट होना । उ० आज उन दोनों म खूब जूता चला है ।

जूता चलाना या चला देना–जूते मे मारना । उ० थोड़ी-सी बात पर उसने जूता चला दिया ।

जूता चाटना–१ अपनी इज्जत का कुछ भी ख्याल न करके दूसरो की सेवा करना । उ० वह तो अब जूता चाटता फिरता है । २ खुशामद करना । उ० तुमसे तो जूता चाटना भी बनता है, पर मै तो वह भी नही जानता ।

जूताचोर–छोटी-छोटी चोरी करने वाला । उ० कल कोई जूताचोर हमारा लोटा ही उठा ले गया ।

जूता जड़ना–जूते से मारना । उ० उसने ऐसा जूता जडा कि चोर बेहोश हो गया ।

जूता देना–दे० 'जूता जडना' ।

जूता बरसना–जूते से मार खाना । उ० उस चोर पर इतने जूते बरसे कि वह बेहोश हो गया ।

जूता बरसाना–जूते से खूब मारना । उ० उस बदमाश पर पुलिस ने खूब जूते बरसाये ।

जूतियाँ उठाना–छोटी से छोटी सेवा करना । उ० कई साल तक मैंने ससार की जूतियाँ उठायी है, तब कही इस जगह पर पहुँचा हूँ ।

जूतियाँ चटकाते फिरना–१ बेकार इधर-उधर घूमना । उ० क्यो दिन भर जूतियाँ चटकाते फिरते हो ? क्यो नही कुछ काम करते ? २. बुरी दशा मे कुछ प्राप्ति के लिए घूमना ।

जूतियाँ चटकाना-बेकार इधर-उधर घूमना । उ० क्या दिन-रात जूतियाँ चटकाया करते हो ?

जूतियाँ सिर पर रखना–१. बहुत सेवा करना । उ० अगर जूतियाँ सिर पर रखना पसन्द हो तो नौकरी करो । २. बेइज्जत करना । उ० मेरे सर पर जूतियाँ रक्खोगे तो मैं भी बाज नही आ सकता ।

जूतियाँ सीधी करना–खुशामद करना । उ० नौकर को हर समय अपने स्वामी की जूतियाँ सीधी करनी पडती हैं ।

जूती की नोक पर मारना–एकदम छोटा समझना । उ० तुम जैसो से बात कौन करेगा ? तुम्हे तो मै जूती की नोक पर मारता हूँ ।

जूती के तेल चुपड़ना–खुशामद करना ।

जूती के बराबर न होना–एकदम तुच्छ होना । उ० मै तो उनकी जूती के बराबर भी नही हूँ ।

जूती पर रख कर रोटी देना–१ निरादर से खाना देना । उ० उसके यहाँ कोई क्या जायगा ? वह तो जूती पर रख कर रोटी देती है । २ निरादर के साथ कुछ देना ।

जूती-पैजार होना–जूतो से लडाई-झगडा होना । उ० कल उन दोनों मे खूब जूती-पैजार हुई ।

जूती बगल मे दबाकर भागना–जूते उतार कर बिना किसी प्रकार का शब्द किए भागना । उ० जूती बगल मे दबाकर भागो, नही तो कोई भी जगा तो खैर नही ।

जूते का आदमी–बिना डर के काम न करने वाला । मार की डर से काम करने वाला । उ० मेरा नौकर जूते का आदमी है, बिना मारे तो वह कुछ करता ही नही ।

जूते के यार–दे० 'जूते का आदमी' ।

जूते लगाना–जूतो से मारना । उ० उसे दस जूते लगाओ ।

जूते से ख़बर लेना–जूते से मारना । उ० अगर फिर ऐसी शरारत करोगे तो जूते से खबर लूंगा ।

जूतों में दाल बँटना–लड़ाई-झगडा होना । उ० आज तो दोनो भाइयो मे जूतो मे दाल बँटी ।

जूतों से आना–जूतो से मारना । उ० जरा सी गलती हो जाने पर वे जूतो से आते हैं । उनकी नौकरी भला कौन करेगा ?

जूतों से ख़बर लेना–जूतो से मारना । उ० पुलिस ने चोर की जूतों से खूब खबर ली ।

जूतों से बात करना–दे० 'जूतों से आना ।'

जेब कट जाना–पैसा खर्च होना ।

जेब खाली होना–धन का अभाव होना ।

जेब गरम होना–अत्यधिक लाभ होना, रिश्वत मिलना ।

जेब में पड़े रहना–वश में होना ।

जेर करना या करा देना–परास्त करना । उ० बात की बात में जेर कर दिया ।

जेल काटना–जेलखाने की सजा भोगना । उ० भगवान करे तुम्हारे ऐसे नीच को जीवन भर जेल काटना पड़े ।

जेल की हवा खिलाना–१. जेल भेजना । उ० अगर जीता रह गया तो इसी महीने आपको जेल की हवा खिला दूँगा ।

जेहन खुलना–अस्तिष्क का विकास होना । उ० १० वर्ष के बाद तो भी की जेहन खुल जाती है ।

जेहननशीन करना–दिल में बैठाना । उ० लड़कों को चाहिये कि मास्टर जो कुछ भी कहे, उसे तुरन्त जेहननशीन कर लें ।

जेहन लड़ना–दिमाग लड़ना । उ० जरा भी जेहन लड़ी तो प्रश्न हल हो जायगा ।

जेहन लड़ाना–सोचना-विचारना । उ० जेहन लड़ाओगे तो कुछ समझ में आ ही जायगा ।

जेहाद का झंडा करना–विधर्मियों से लड़ना । उ० मुसलमान जेहाद का झंडा करने के लिए बहुत प्रसिद्ध है ।

जै-जैकार करना–सम्मान देना । उ० केवल देश में नहीं, अपितु विदेशों की जनता भी नेहरू जी का जै-जैकार करती है ।

जैसे का तैसा होना–१. ज्यों का त्यों होना । उ० वैद्य की दवा से वह जैसे का तैसा हो गया । २ पहले ही जैसा होना । उ० बूढ़े होने पर भी वह जैसा का तैसा है । ३. न कम न बेश होना । उ० शर्बत तो जैसा का तैसा है । तुमने पीया भी या नहीं ?

जैसे को तैसा देना–जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना । उ० भगवान जैसे को तैसा देते है ।

जैसे चाहे नचाना–मनमानी करना । उ० मेरी है, जैसे चाहे नचाऊं, तुम कौन हो बीच में बोलने वाले ।

जैसे बने–जिस तरह भी सभव हो । उ० जैसे बने तुम्हे यह काम करना ही पड़ेगा ।

जैसा बोना वैसा काटना–कर्म के अनुसार फल की प्राप्ति होना ।

जैसा सूखा सावन वैसा हरा भादों–हर स्थिति एक-सी होना ।

जैसे हो– दे० 'जैसे बने' ।

जो कहा जाए सो थोड़ा–वर्णनातीत होना ।

जोक की तरह लिपटना–१. हर समय पीछे लगा रहना । उ० जोक की तरह लिपटने से काम न होगा, होना होगा तो स्वयं हो जायेगा । २. बुरी तरह लपटना ।

जोक होकर लिपटना–दे० 'जोक की तरह लिपटना' ।

जोखिम उठाना–१. हानि उठाना । उ० मुझे व्यर्थ में यह जोखिम उठाने से क्या प्रयोजन ? २ खतरे का काम करना । उ० तुम क्यो उसके लिए जोखिम उठाते हो ?

जोखिम में जान होना–जान जाने का भय होना । उ० इस झगडे मे पडने से मेरी जोखिम मे जान है ।

जोखिम में पड़ना–दे० 'जोखिम उठाना' ।

जोखिम सहना–दे० 'जोखिम उठाना' ।

जोग-छेम पूछना–दे० 'योग-क्षेम पूछना' ।

जोगी का बैल होना–व्यर्थ होना । उ० वह चीज तो तुम्हारे लिए जोगी का बैल है ।

जोगीड़ा गाना–गंदी या अश्लील बात कहना ।

जोड़ उखड़ना–शरीर के किसी जोड का अपनी जगह से हटना ।

जोड़ का जोड़ मिलना–जैसे को तैसा मिलना । उ० उसे जोड़ का जोड़ मिल जाता तो उसकी सारी शरारत भूल जाती ।

जोड़ खाना–दे० 'जोड़ा खाना' ।

जोड़-जोड़ धरना–कंजूसी से रुपया इकट्ठा करना । उ० बेचारा जोड़-जोड़ धरे था, आज सब डाकू ले भागे ।

जोड़-तोड़ करना–दे० 'जोड़-तोड़ मिलाना, ।

जोड़-तोड़ मिलाना–उपाय करना । उ० मैंने बहुत जोड़-तोड़ मिलाया, पर काम न बन सका ।

जोड़ा खाना—पशुओं पक्षियों आदि का सभोग करना। उ० कौवे जोड़ा खा रहे है।

जोत से जोत मिलाना—आत्मा का ब्रह्म मे लीन हो जाना।

जोड़ा-पाड़ी का होना—एक उम्र तथा योग्यता का होना। उ० ये दोनों लड़के जोड़ा-पाडी के है।

जोर करना—१. शक्ति लगाना। उ० थोड़ा और जोर करो तो यह हट जाय। २ कोशिश करना। उ० जोर करो तो मै भी प्रार्थना-पत्र भेज दूँ।

जोर कराना—बडे पहलवानो का छोटे पहलवानों को लडाना।

जोर चलना—अधिकार होना। उ० यदि वहाँ मेरा जोर चलेगा तो सब काम बन जायगा।

जोर देना—१ बोझ डालना। उ० अगर ज्यादा जोर दोगे तो यह चारपाई टूट जायगी। २ ताकत लगाना। उ० जोर दो, शायद गाड़ी टसक जाय। ३ आवश्यक या महत्वपूर्ण बतलाना। ४. दबाव डालना। उ० जोर देना तो वे अवश्य लिख देंगे। ५ हठ करना।

जोरदार होना—बहुत बढ़िया होना। उ० यह सेब तो बहुत जोरदार है।

जोर पकड़ना—प्रबल या बलवान होना। उ० अगर बीमारी जोर पकड लेगी तो फिर कुछ न कर सकोगे।

जोर बाँधना—दे० 'जोर पकडना'।

जोर मारना—१ बल दिखाना। उ० यहाँ जोर न मारो, नहीं तो ठीक कर दूंगा। २ जोर लगाना। उ० जोर मारो तो शायद उठ जाय। ३ कोशिश करना। उ० जोर मारो तो काम हो जायगा।

जोर लगाना—दे० 'जोर मारना'।

जोरों पर होना—पूरे बल पर होना। उ० मेरे गाँव में आजकल प्लेग जोरो पर है।

जोश खाना—१. उबलना, खौलना। २. क्रोधित होना। उ० बात भी तो सुनो। थोडा ही सुने और जोश खा गए। ३. जोश मे आना। उ० सुभाषचन्द्र के जीवन की कथाओं को सुनकर जोश खाना स्वाभाविक है।

जोश ठण्डा होना—उत्साह कम हो जाना।

जोश देना—१. उबालना। उ० दूध को जोश देकर पीया करो। २. भडकाना, उकसाना। उ० उसे तो तुमने ऐसा जोश दिया कि वह मेरे यहाँ आकर गाली देने लगा।

जोश में आना—१ गुस्से मे हो जाना। उ० वह मुझे देखते ही जोश मे आ जाता है। २. उत्साहित होना। ३ आवेश में आना।

जोश में लाना—१. भडकाना, क्रोधित करना। उ० उसे जोश मे न लाओ, नहीं तो लड़ पड़ेगा। २. उबालना। उ० दूध को जोश मे लाओ।

जौ-जौ हिसाब लेना—कौड़ी-कौड़ी का हिसाब देखना। उ० हिसाब ठीक से रखना, मै जौ-जौ का हिसाब लूंगा।

जौहर खुलना—१ भेद प्रकट होना। उ० अब जौहर खुला है कि यह कैसा आदमी है। २. खबी या गुण का स्पष्ट होना। उ० जौहर खुलने पर तुम भी उसकी इज्जत करोगे।

जौहर खोलना—खूबी दिखाना। उ० कुछ अपना जौहर भी खोलो या केवल बात ही करते हो।

जौहर दिखाना—दे० 'जौहर खोलना'।

जौहर होना—विशिष्ट रीति से राजपूत स्त्रियो का जल मरना। उ० मध्य युग मे राजपूतों की स्त्रियों मे जौहर होने का बडा प्रचलन था।

ज्ञान छाँटना—१. व्यर्थ मे विद्वान् बनना। उ० तुमको कुछ आता-जाता है ही नहीं, ज्ञान क्या छाँट रहे हो। २ उपदेश देना। उ० ज्ञान कही और जाकर छाँटिए।

ज्ञान झाड़ना—दे० 'ज्ञान छाँटना'।

ज्ञान दौड़ाना—खूब सोचना-विचारना। उ० ज्ञान दौडाओ तो शायद समझ जाओ।

ज्योति जगाना—ज्ञान कराना। उ० सन्यासी ने मेरे हृदय मे ज्योति जगा दी।

ज्यौनार बैठना—अतिथियों का भोजन करने बैठना।

ज्यौनार लगाना—भोजन की तश्तरियां को सजाना।

ज्वर उतरना—बुखार का जाता रहना।

ज्वर उतारना—१ मार या डाँट कर क्रोध शांत करना। उ० मै अभी तुम्हारा ज्वर उतारता हूँ। २. खूब मारना।

ज्वर चढ़ना—१. ज्वर हो आना। २. क्रोध

चढ़ना, गुस्सा आना । उ० तुम्हे देखता हूँ तो मुझे ज्वर चढ आता है ।

ज्वाला फूंकना–शरीर मे बहुत गर्मी होना ।

ज्वालामुखी होना–क्रोध से लाल होना । उ० आप ज्वालामुखी क्यो हो रहे है, भला मैंने आपका क्या बिगाड़ा है ?

झ

झंख मारना–दे० 'झख मारना' ।

झंखाड़ होना–बुड्ढा होना । अधिक उम्र का होना । उ० झंखाड हो गये और अब शादी करने चले हैं !

झंझट उठाना–दिक्क़तों का सामना करना, प्रपंच में पड़ना । उ० बहुत झझटे उठा कर मैंने यहाँ तक पढा है ।

झंझट मोल लेना–जान कर झगडे मे पडना । उ० क्यों झझट मोल लोगे ? उन्होंने तुम्हारे लिये किया क्या है ?

झंझट खड़ा करना या कर देना–१ पाखंड करना । उ० क्या झडा खड़ा कर रहे हो, तुमको सब लोग जानते है । २. अधिकार मे करना । उ० गांधी की बुद्धिमत्ता से कांग्रेस ने भारत में अपना झंडा खड़ा कर दिया । ३ सैनिको को बुलाने के लिए झंडा ऊँचा करना । ४ राज्य स्थापित करना ।

झंडा गाड़ना–अच्छी तरह अधिकार में करना । उ० चीन में साम्यवादियों ने झडा गाड दिया है ।

झंडा फहराना–१ राज्य-चिह्न-स्वरूप झंडा गाडना । उ० भारत पर लगभग २५० वर्षों तक अँग्रेजी झंडा फहराता रहा । २. पूर्णतः अधिकार मे रहना । उ० चीन पर कम्युनिस्ट झडा फहरा रहा है ।

झंडी दिखाना–१ अवसर पर नाही करना । उ० मैंने आज तक किसी को झंडी नहीं दिखायी । वक़्त पर झंडी मत दिखला देना । २. झडी से इशारा करना । उ० स्काउट झडी दिखाना सीखते हैं । ३. स्टेशनों पर गाड़ी के रुकने या जाने के लिये झडी से संकेत करना ।

झंडे तले आना–१. युद्ध में किसी का पक्ष लेना । उ० अँग्रेज अमेरिकनो के झंडे के तले आ गए हैं । २. संगठित होना । उ० अगर भारत झंडे तले न आता तो उसे कभी स्व-राज्य न मिलता ।

झंडे-तले की दोस्ती–सफ़री जान-पहचान । उ० ट्रेनो मे झंडे-तले की दोस्ती प्राय. हो ही जाती है ।

झंडे पर चढ़ना–बडा बदनाम होना । उ० ऐसे कामो मे बिना झंडे पर चढे सफलता नही मिलती ।

झंडे पर चढ़ाना–बदनाम करना । उ० चलो हटो, तुमने मुझे वहाँ ले जाकर झडे पर चढा दिया ।

झंप देना–कूदना । उ० मै झप देकर नीचे जा सकता हूँ ।

झक चढ़ना–दे० 'झक सवार होना' ।

झक-झक करना–१ व्यर्थ की हुज्जत करना । उ० क्यो झक-झक करते हो अपने, घर जाओ । २ झगड़ा करना ।

झक सवार होना–ज़िद चढ़ना । धुन होना । किसी काम को कर डालने का हठ होना या धुन होना । उ० हर चीज के लिए झक सवार होना ठीक नही है । तुम्हे झक सवार होती है तो किसी की सुनते ही नही ।

झक समाना–दे० 'झक सवार होना' ।

झकोले खाना–गोते खाना । कभी पानी मे डूबना, कभी ऊपर आना । उ० कोई मै निकलता हूँ दरियाये गम से, झकोले अभी इसमें खाने बहुत हैं ।

झक्कड़ चलना–जोर की आँधी चलना ।

झख मारना–१. विवश होना । उ० झख मार कर मुझे रुपया देना ही पड़ा । २. समय व्यर्थ गँवाना । उ० दिन भर तुम्हारी प्रतीक्षा में झख मारता रहा ।

झखमरी करना–१. व्यर्थ का कार्य करना, २. व्यर्थ समय खराब करना ।

झगड़ा-झंझट–लड़ाई-झगड़ा । उ० यहाँ झगड़ा-झझट न करो ।

झगड़ा-टंटा–झगड़ा-झंझट । उ० झगड़ा,-टंटा यहाँ न करो ।

झगड़ा पाक होना–१. झगड़े का निर्णय होना। उ० बिना झगड़ा पाक हुए मैं कहीं नहीं जाऊँगा। २. झगड़ा समाप्त होना।

झगड़ा समेटना–झगड़े को खत्म करना। उ० किसी तरह झगड़े को समेटो, नहीं तो कुशल नहीं है।

झझक निकलना–सकोच या शर्म दूर होना। उ० शर्माते क्यों हो, आने-जाने से ही झझक निकलती है।

झझक निकालना–भय या हिचक मिटाना। उ० दो-चार बड़े आदमियों से मिला कर इसकी झझक निकाल देना ही उचित है।

झटक कर १. झटका देकर। उ० इस तरह झटक कर न खींचा करो, कहीं पखा निकल जाय तो। २. जबर्दस्ती से। उ० सारे रुपये उसने मेरे हाथ से झटक कर ले लिये। ३. चुरा कर। उ० मालूम होता है कि यह साइकिल कहीं से झटक कर लाई गई है। ४. क्रोध और रुखाई से।

झटकना–धोखे से या चालबाजी से लेना। उ० बम्बई में श्याम के सब पैसे किसी ने झटक लिये।

झटका उठाना–विपत्ति सहन करना उ०। इस साल शनि के खराब होने से हमने बहुत झटके उठाये।

झटका खाना–१. दे० 'झटका उठाना'। २. डोटा या डपटा जाना। उ० आज सवेरे ही एक झटका खाना पड़ा। ३. मास खाना। उ० तुम झटका खाते हो या नहीं ?

झटका झेलना–१. थोड़े दिन के लिए कष्ट उठाना। उ० जहाँ यह झटका झेला कि फिर साल भर निश्चिन्त हो जाओगे। २. आक्रांत होना तथा सहना। उ० इधर रोगों के मुझे अनेक झटके झेलने पड़े।

झटके का माल–चोरी से मिला हुआ। उ० तुम्हारे पास झटके का माल खूब जाता है।

झटपट–तुरन्त, जल्दी ही। उ० काम पर झटपट आ जाओ।

झट से–तुरन्त, फ़ौरन। उ० जाकर झट से उनका मकान देख आओ।

झड़प होना–कहा-सुनी हो जाना।

झड़ बाँधना–१. बातों का पुल बाँधना। उ० झूठे झड़ बाँधना कुछ ही लोगों को आता है। वह ऐसा झड़ बाँधता है कि सुनने वाले स्तब्ध रह जाते हैं। २. घुमा-फिरा कर इस प्रकार बातें करना कि सुनने वाले प्रभावित होकर बोलने वाले के अनुकूल हो जायँ। उ० उस दिन तो तुमने ऐसा झड़ बाँधा कि उन्होंने दे ही दिया।

झड़बेरी का काँटा–बड़ा झगड़ालू व्यक्ति। उ० उस झड़बेरी के काँटे से मैं नहीं बोल सकता।

झड़ी बाँधना–किसी चीज की अनेक पुनरावृत्ति करना। उ० रामचरितमानस में तो कहीं-कहीं तुलसी ने रूपकों की झड़ी बाँध दी है।

झड़ी लगना–लगातार वर्षा होना। उ० तीन दिन से झड़ी लगी हुई है, बन्द होने का नाम नहीं लेती।

झड़ी लगाना–दे० 'झड़ी बाँधना'।

झपकी खाना–नींद में ऊँघ-ऊँघ कर गिरना। उ० क्यों झपकी खा रहे हो, जाओ सोओ।

झप खाना–पतंग का पीठ के बल गिरना। उ० आज हमारी पतंग झप खा गई।

झपट लेना–दे० 'झपट्टा मारना'।

झपट्टा मारना–झटके से ले लेना। उ० कौवे ने बच्चे की रोटी झपट्टा मार कर ले ली।

झपेट में आना–१. धक्का लगना। उ० रिक्शे के झपेट में आने से वह गिर पड़ा। २. किसी रोग आदि से प्रभावित होना। उ० विशूचिका के झपेट में मेरे घर के लोग भी आ गए थे। ३. लथाड़ में आना।

झपेटे में आना–दे० 'झपेट में आना'।

झमेले में फँसना–१. झझट में पड़ना। उ० औरतों के झमेले में फँसना बड़ा बुरा होता है। २. काम में फँसना। उ० आजकल झमेले में फँसा हूँ, फिर कभी आ जाऊँगा।

झराझर रुपये बरसना–खूब आय या लाभ होना। उ० आजकल चीनी के व्यापार में झराझर रुपये बरस रहे हैं।

झाँई आना–सिर में चक्कर आना।

झाँई-झप्पा–धोखा-धड़ी। उ० झाँई-झप्पासे काम न चलेगा।

झाँई बताना–१. छुप कर जाना। उ० जब से उसने रुपया लिया, हमेशा झाँई बता कर निकल जाता है। २. चालबाजी चलना। धोखा देना। उ० सीधी बात करो, हमें झाँई न बताओ।

झाँई-माई होना—दृष्टि से लुप्त होना। उ० कहो इतने दिन तक कहाँ झाँई माँई-हुए थे? आखिर इतनी जल्दी वह कहाँ झाँई-माई हो गया?

झाँकने भी न आना—कोई खबर न लेना।

झाँट उखाड़ना—१. व्यर्थ मे समय गँवाना। २ कुछ कर सकना। (यह ग्राम्य और अश्लील प्रयोग है।)

झाँट गिनना—दे० 'झाँट उखाडना'।

झाँट बराबर—तुच्छ।

झाँव-झाँव होना—झगड़ा या कहा-सुनी होना।

झाँवर होना—काला पड़ जाना। उ० बीमारी से बेचारे का मुँह झाँवर पड गया है।

झाँवली देना—आँखो से सकेत करना। उ० सभा में झाँवली दे देना। हम समझ जाएँगे।

झाँवली में आना—धूर्तता की बातो मे फँसना। धोखे मे आना। उ० तुम्हारी झाँवली मे आने पर १०० क्या, वह १००० देगा।

झाँसा देना—१ बहकाना। मुझे झाँसा न दो, मेरे बाल धूप मे नही पके है। २ धोका देना। उ० उस दिन उसने ऐसा झाँसा दिया कि तुम जैसा पढा-लिखा भी फँस गया। ३ बात-चीत करके टरका देना। उ० जब भी माँगने जाता हूँ, वह झाँसा दे देता है।

झाँसा-पट्टी पढ़ाना—दे० 'झाँसा देना'।

झाँसा पढ़ाना—दे० 'झाँसा देना'।

झाँसा बताना—दे० 'झाँसा देना'।

झाँसा-बुत्ता देना—दे० 'झाँसा देना'।

झाँसे में आना—दे० 'झाँवली मे आना'।

झाग फेंकना—बेहोशी आदि मे मुँह से गाज फेकना।

झाड़ का काँटा—लड़ने या उलझने वाला आदमी। उ० उससे न लगो, वह झाड का काँटा है।

झाड़-झटक कर—किसी तरह, माँग कर या चोरी-चमारी कर। उ० झाड़-झटक कर वह हर साल दो-चार सौ लाता ही है।

झाड़ देना—१ घुड़की देना। उ० चलो तुम्हारे झाड़ देने मे मैं नही डरता। २. कूँचे से साफ़ करना। उ० आज कमरे को झाड देना। ३. बातो द्वारा बहकाने या फँसाने की कोशिश करना। उ० आज तो मैंने ऐसा झाड दिया कि वे तुरन्त राजी हो गए।

झाड़ना-झटकना—१. अपना बाकी किसी के पास से ले लेना। उ० झाड-झटक कर आज किसी तरह अपना ले पाया। २. डाँटना-फटकारना। उ० बहुत झाडना-झटकना नही, नही तो बिगड जायगा।

झाड़-पोंछ कर देखना—अच्छी तरह परख करना। उ० झाड़-पोंछ कर देख लो, नही तो पीछे से हम नही लौटाएँगे।

झाड़-फटकार कर चल देना—सर्वस्व छोड कर चले जाना।

झाड़-फ़ानूस लगाना—बहुत सजावट करना। उ० क्या इस गिरे घर मे झाड़-फ़ानूस लगा रहे हो?

झाड़-फूंक करना—मन्त्र से प्रेत आदि की बाधा दूर करना। उ० दवा करो, झाड-फूंक करने मे वह अच्छा नही हो सकता।

झाड़ बाँधना—१ बहुत बरसना। उ० पिछले वर्षो की तरह इस साल वर्षा ने झाड नही बाँधा। २ बात का पुल बाँधना, बातचीत कर बहकाना या धोखा देना। उ० झाड बाँध कर उसने अपना काम कर लिया। ३ व्यर्थ मे रोब दिखाना।

झाड़ लेना—जो मिले उसे छीन लेना। उ० उसके पास तो केवल दो ही रुपये थे, मैंने वही झाड लिये।

झाड़ होकर लिपटना—बुरी तरह फँसना या लपेटना। उ० वह तो झाड होकर लिपट जाता है, उससे कौन बोले?

झाड़ा-झटका होना—पाखाना आदि होना। उ० जल्दी झाडा-झटका होकर तैयार हो जाओ-नही तो देर होगी।

झाड़ा फिरना—पाखाना होना। उ० मै झाड़ा फिरने जा रहा हूँ।

झाड़ा लेना—नगाझोरी करना। उ० फैक्टरी से निकलते ही सबका झाड़ा लिया जाता है।

झाड़ू फिरना—१ अच्छी तरह बरबाद से जाना। सफ़ाई हो जाना। उ० इस मुकदमे मे हमारे घर तो अच्छी तरह झाड़ू फिर गया। २. बेइज्जत होना। उ० मेरे ऊपर तो झाड़ू फिर गया।

झाड़ू फेरना—१. नष्ट-भ्रष्ट करना। उ० सन् ४२ मे पुलिस ने मेरे गाँव पर झाड़ू फेर दिया। २. बेइज्जत करना। उ० क्यों बेचारे पर झाड़ू फेरते हो?

झाड़ू मारना–१. तिरस्कार करना, घृणा करना। २. दूर हटाना। उ० झाड़ू मारो ऐसे आदमी पर।

झाड़ू लेकर पीछे पड़ना–अत्यधिक परीशान करना।

झाड़ू से बात करना–कर्कशा होना, लड़ना-झगड़ना। उ० वह तो हमेशा झाड़ू से ही बात करती है।

झापड़ कसना–थप्पड़ से मारना। हमने आज उसको अच्छा झापड़ कसा।

झापड़ देना–दे० 'झापड़ कसना'।

झापड़ लगाना–दे० 'झापड़ कसना'।

झार बरना–अग्नि की लपट उठना। उ० हवा के झोंकों से आग में झार बरता है।

झार सहना–१. कड़ाई सहना। झझक सहना। उ० सहही न जाने ना हरदिया का झार हो। २. क्रोध सहना।

झिझक मिटना–दे० 'झझक निकलना'।

झिड़की देना–डाँटना-डपटना। उ० तुम तो लड़की को हमेशा झिड़की देते हो, यह उचित नहीं है।

झिलँगा उठना–होली आदि के तमाशे का जलूस उठना।

झींसी पड़ना–बूँदाबाँदी होना। थोड़ा-थोड़ा पानी बरसना। उ० झींसी पड़ रही है, कपड़े उठा लो।

झोर-झोर होना–दे० 'पारा-पारा होना'।

झुंड का झुंड–अधिकता से। उ० मेले में झुंड के झुंड बैल आये है।

झुंड में रहना–गिरोह या मंडली में रहना। उ० ठग झुंड में रहते है।

झुक जाना–मर जाना। उ० उनका लड़का आज झुक गया।

झुक-झुक पड़ना–१. नशे में चूर होकर झूमना। उ० वह शराब के नशे में झुक-झुक पड़ता है। २. नींद के कारण झूमना।

झुरमुट मारना–पोशाक पहन कर अपने को छिपाना। उ० आज के नाटक में तो तुमने अच्छा झुरमुट मारा था।

झूठ के पुल बाँधना या बाँध देना–बहुत झूठ बोलना। उ० उसने तो आज झूठ का पुल बाँध दिया।

झूठ-सच कहना–१. शिकायत करना। उ० तुमने मेरे विषय में तो कुछ झूठ-सच नहीं कहा है? २. बेकार की बातें करना।

झूठा ठहरना–असत्य सिद्ध होना। उ० उसकी बात झूठी ठहरी।

झूठा निकलना–दे० 'झूठा ठहरना'।

झूठा पड़ना–झूठा सिद्ध होना। उ० यदि उसने न स्वीकार किया तो तुम अवश्य ही झूठे पड़ोगे।

झूठी गंगा में तैरना–झूठ में पड़ना।

झूठों का बादशाह–बहुत झूठा। उ० तुझ झूठों के बादशाह का विश्वास तो अनजान ही करेगा।

झूठों न पूछना–भूल कर भी न पूछना, बिल्कुल न पूछना।

झूठों मुँह न छुवाना–नाम को भी न पूछना। उ० रूठा जो रकीब उसे मनाने आए। और आए भी यूँ कि कोई जाने आए। और हम जो रुके तो हमसे बिगड़े, झूठों भी कभी मुँह न छुवाने आए।

झूम-झूम कर–१. मस्त होकर। उ० हाथी झूम-झूम कर चल रहा है। २. हिल-हिल कर, कंपित होकर।

झूला मार जाना–लकवा मार जाना, फ़ालिज गिर जाना। उ० हँस के हम दामे मुहब्बत में न छूटे लाइलाज, जुल्फ के झूले ने मारा दिल शिकन में रह गया।

झेंप जाना–लजा जाना। उ० वह तुम्हें देखते ही झेंप जाता है।

झोंक डालना–दे० 'झोंक देना'।

झोंक देना–१. अधिक डालना। उ० इतना नमक क्यों झोंक दिया है? २. बुरी जगह फेंकना। उ० लड़की का विवाह क्या किया, उसे झोंक दिया।

झोंक मारना–डंडी मार कर कम तौलना। उ० झोंक मारने से थोड़े कोई धनी होता है।

झोंक में–आवेश में।

झोंका खाना–१. झटका खाना या आवेग सहना। उ० क्यों नींद के झोंके खाते हो, जाओ सोओ। २. बहुत बड़ी आफत या रोग का झटका सहना।

झोंके आना–१. नींद आना । उ० मुझे अब झोंके आ रहे हैं। २. नशा के कारण झपकी आना।

झोंके मारना–खुजलाहट होना। चूल होना।

झोंटा घसीटना–सिर के बाल खीचना।

झोंटा-झोंटी होना–लड़ाई-झगड़ा होना । उ० उन दोनों में रोज़ ही झोंटा-झोंटी होती है। [इसका प्रयोग स्त्रियों की लड़ाई के लिये होता है।]

झोंटा देना–झूला मे अधिक वेग से चलने के लिए झटका देना। उ० झोंटा दो तो और आनन्द आये।

झोंटा पकड़ कर घसीटना–बाल पकड कर निरादर से निकालना। उ० अधिक बोलोगी तो झोंटा पकड कर घसीटूंगा। [इसका प्रयोग स्त्रियो के लिए किया जाता है।]

झोंटा पकड़ कर निकालना–दे० 'झोंटा पकड कर घसीटना'।

झोंटा मारना–दे० 'झोंटा देना'।

झोंपड़े में आग लगना–भूख लगना । उ० झोपडे मे आग लगी है। [इसका प्रयोग फकीर लोगो की भाषा में होता रहा है :]

झोल की बात–अस्पष्ट या गडबड बात।

झोल डालना–सिकुडन डालना। उ० कपडा बचाने के लिऐ दर्जी झोल डालते हैं।

झोल देना–भुलवाना, पट्टी पढ़ाना। उ० मुझे झोल न दो, मैं बच्चा नही हूँ।

झोल निकालना–बच्चे पैदा करना । उ० आजकल के भारतवासी भी खूब झोल निकाल रहे है।

झोल बैठाना–मुर्गी को सेने के लिए अंडा देना। उ० अभी कल ही तो झोल बैठाया।

झोल मारना–१. बहकाना। उ० मैं जानता हूँ, मुझे न झोल मारो। २. दे० 'झोक मारना'।

झोली उठाना–दे० 'झोली डालना'।

झोली छोड़ना–१. बुढापा आना। उ० अब तो आप झोली छोड रहे है। २. मांस बढना। उ० आजकल तो झोली छोडने लगे हो ?

झोली डालना या डाल लेना–भीख माँगने के लिये झोली तक निकालना। उ० कुछ सहारा न देखकर बेचारे ने झोली डाल ली।

झोली पड़ना–अँधेरा होना, किरन डूबना। उ० झोली पडने के बाद उधर कभी न जाना।

झोली भरना या भर देना–१ भिक्षा देना। उ० साधु की झोली भर दो। २. भर पेट खाने को देना। उ० भूखा है, उसकी झोली भर दो।

झौड़ होना–कहा-सुनी होना।

झौवा भर–बहुत ज्यादा। उ० झौवा भर माग क्या होगा ?

ट

टँगड़ी (टँगरी) पर उड़ाना–कुश्ती में लग मार कर गिराना। उ० यह छोटा पहलवान टँगडी पर खूब मारता है।

टंच होना–१. भर पेट खा लेना। उ० मैं तो अब टच हो गया, मुझे कुछ नही चाहिए। २ निश्चित होना। ३. भरा-पूरा होना। ४. तैयार होना।

टंट-घंट करना–पूजा-पाठ का आडंबर करना। उ० क्या टट-घट करते हो। ईश्वर इससे नही रीझते।

टंट-घंट फैलाना–दे० 'टंट-घंट करना'।

टंटा खड़ा करना–झगड़ा खड़ा करना। लडाई-झगडा करना। उ० वह जहाँ भी जाता है, टंटा खड़ा कर देता है।

टंटा मचाना–दे० 'टटा खड़ा करना'।

टकटक देखना–दे० 'टकटकी बाँध कर देखना'।

टकटकी बंधना-दृष्टि स्थिर होना। एकटक देखना। उ० उसकी तो इसे देखने के लिए टकटकी बँध गई।

टकटकी बांध कर देखना–बिना पलक गिराये देखना।

टकटकी लगना–दे० 'टकटकी बँधना'।

टकटकी बांधना–स्थिर दृष्टि से देखना।

टक बँधना–दे० 'टकटकी बँधना'।

टकराते फिरना–इधर-उधर बेकार या मारा-मारा घूमना। उ० क्यों टकराते फिरते हो, कुछ काम नही है क्या ?

टक लगाना–१. आशा देखते रहना। उ० तुम मेरी तरफ क्या टक लगाये हो, मुझसे कुछ भी नही मिलेगा। २. एकटक से देखना।

टकसाल का खोटा–१. बुरा नीच, जन्म से ही बुरा। उ० वह टकसाल का खोटा है, उसे कोई क्या सिखायेगा। २. न चलने वाला सिक्का।

टकसाल चढ़ना–१ पक्का शरारती होना। उ० मेरा छोटा लड़का टकसाल चढ़ चुका है, अब वह ठीक नहीं हो सकता। २ बेहया होना। उ० इतना टकसाल न चढ़ो, नहीं तो मुँह दिखाना भी कठिन होगा। ३ विद्वान् समझा जाना। उ० वह तो सभी की नजरों में टकसाल चढ़ा है।

टकसाल-बाहर–१ खराब सिक्का। उ० टकसाल-बाहर सिक्का अपने पास रखना जुर्म है। २. वह शब्द या वाक्य जिसे बोलना शिष्ट न माना जाय। उ० टकसाल बाहर शब्द बोलना अशिष्टता है।

टकसाली जबान–दे० 'टकसाली भाषा'।

टकसाली बात करना–सतुलित बात करना। उ० वह सचमुच भारी विद्वान् है, जो भी विषय सामने रखो, टकसाली बात करता है।

टकसाली बोली–दे० 'टकसाली भाषा'।

टकसाली भाषा–सर्वसम्मत भाषा, विद्वानों द्वारा आदर्श मानी गई भाषा। उ० टकसाली भाषा में कम लोग लिख पाते हैं।

टका पास न होना–बहुत गरीब होना। पास में एक पैसा भी न होना। उ० मित्र! टका पास नहीं है, अगर कुछ दे देते तो काम चलता।

टका भर–थोड़ा-सा, जरा सा। उ० वह ऐसा कजूस है कि कुछ टका भर भी देने में हिचकता है।

टका-सा जवाब देना–१ तुरन्त साफ इन्कार कर देना। उ० उससे कोई भी चीज माँगो टका-सा जवाब दे देता है। २ स्पष्ट अनभिज्ञता प्रकट करना। उ० कोई भी बात पूछो, वह टका-सा जवाब देता है।

टका-सा मुँह लेकर रह जाना–छोटा-सा मुँह लेकर रह जाना। देखना रह जाना। उ० साँगा को बाबर से बड़ी आशा थी परन्तु जब वह राज्य करने लगा तो साँगा टका सा मुँह लेकर रह गए।

टका-सी जबान हिलाना–१ तुरन्त कह देना। उ० टका-सी जबान हिलाने में क्या लगता है, जब करना पड़ेगा तब मालूम होगा। २ जरा-सा कह देना। उ० टका-सी जबान हिलाने में तुम्हें क्यों आपत्ति है?

टका-सी जान–अकेला दम।

टकिहाई होना–टके का या तुच्छ होना।

टके का होना–बहुत मामूली होना।

टके को न पूछना–प्रतिष्ठाहीन होना।

टके गज की चाल–कम व्यय में गुजर करना। उ० हम गरीब आदमी आप लोगों की बराबरी क्या करेंगे, हम तो टके गज की चाल चलते हैं।

टके गिनना–रोजी का हिसाब करना। उ० क्या टके गिनते हो, बहुत होगा चार आने।

टके-टके को मुँह ताकना–अत्यधिक गरीब होना।

टके पर लौटना–असलियत पर वापस आना। उ० चार दिन में ही टके पर लौट आये।

टके में तीन-तीन मिलना–अधिकता होना। उ० आजकल मैट्रिक पास टके में तीन-तीन मिलते हैं।

टके-सी जान–अकेला। उ० उनका क्या है, टके-सी जान है, जहाँ भी रहेंगे, खुश रहेंगे।

टके सेर बिकना–बहुत सस्ता बिकना। उ० आजकल गोभी टके सेर बिक रही है।

टक्कर का–समान, तरह। बराबरी का। उ० आजकल उसकी टक्कर का कोई भी पहलवान इधर नहीं है।

टक्कर खाना–१ मारा-मारा फिरना। उ० वह महीनों से नौकरी के लिये टक्कर खा रहा है, पर कहीं ठिकाना नहीं लगता है। २. कोशिश करना। उ० अनेकों टक्कर खाया, पर उसने सुनी-अनसुनी कर दी। ३. किसी चीज का धक्का लग गया। उ० दीवार से टक्कर खाकर मोटर टूट गई।

टक्कर झेलना–१ कष्ट सहना। उ० टक्कर झेलने के बाद ही सुख मिलता है। २. नुकसान उठाना। उ० इस साल वर्ष भर टक्कर झेलना पड़ा।

टक्कर मारना–१. परिश्रम करना। उपाय लगाना। उ० कितना भी टक्कर मारो, यह काम तुमसे नहीं होगा। २ सोचना-विचारना। उ० बहुत टक्कर मारा, पर समस्या हल न हुई। ३. चोट पहुँचाने के लिए कपाल लड़ाना। उ० वह बड़े जोर का टक्कर मारता है।

टक्कर लगाना–सामना करना। मुक़ाबिले में आना। उ० विद्वत्ता में उसका टक्कर कोई नहीं लगा सकता।

टक्कर लड़ाना–दो आदमियों का आपस में सिर से धक्का मारना।

टक्कर लेना–१. दे० 'टक्कर लगाना'। २. बराबर होना। उ० यह क़िताब उस क़िताब से टक्कर लेती है। ३. आघात सहना। उ० टक्कर न लो, चले जाओ। ४. झगडा करना। ५ जैसे को तैसा उत्तर देना।

टट्टर देना–झोंपड़ी आदि का किवाड़ देना। उ० टट्टर दे दो, नही तो झोपड़ी मे कुत्ता चला जायगा।

टट्टर लगाना–दे० 'टट्टर देना'।

टट्टी कमाना–पाखाना साफ़ करना, टट्टी की सफाई करना। उ० उस शहर मे तो टट्टी कमाने वाले भी नही मिलते।

टट्टी का शीशा–पतला शीशा। उ० यह तो टट्टी का शीशा है, यहाँ काम न करेगा।

टट्टी की आड़ में शिकार खेलना–१ आड़ से किसी के खिलाफ़ चालबाजी चलना। उ० मै जानता हूँ कि टट्टी की आड़ में शिकार खेलने वाले बहुतेरे है। कोई मेरे सामने आये तो बताऊं। २. चुपके से कोई बुरा काम करना। उ० क्या टट्टी की आड मे शिकार खेलते हो, जानते हो इसका नतीजा क्या होगा?

टट्टी की ओट में शिकार खेलना–दे० 'टट्टी की आड़ मे शिकार खेलना'।

टट्टी में छेद करना–बेहया बनना। लोक-लाज छोड़ देना। उ० क्यों टट्टी मे छेद कर रहे हो, इससे तुम्हारी ही बदनामी होगी।

टट्टी लगाना–१. परदा करना। आड़ करना। उ० पाखाने की टट्टी लगा दो। २. मजमा लगाना। उ० दूकान के सामने टट्टी न लगाओ।

टट्टी समझना–तुच्छ समझना। उ० मै आपके रुपयों को टट्टी समझता हूँ।

टट्टी होना–दे० 'मैदान होना'।

टट्टू पार होना–मतलब निकल जाना। उ० टट्टू पार हो जाने पर कोई बात भी नही करता है।

टन हो जाना–तुरन्त मर जाना। उ० ज़मीन पर गिरते ही वह टन हो गया।

टपक पड़ना–१. अचानक आ जाना। उ० आप कहाँ से यहाँ टपक पड़े, मुझे तो तनिक भी आशा नही थी कि आप भी यहाँ आयेंगे। २ गिर जाना। उ० वह पेड़ पर से टपक पडा।

टपका-टपकी लगना–वर्षा होना। उ० कल सुबह ही से टपका-टपकी लगी है।

टपका पड़ना–निकला पड़ना, स्पष्ट होना। उ० टपकी पडती है उससे गदराहट, है ये आलम तेरी जवानी का।

टपटप–चट से, जल्दी। उ० टपटप उठा लो, नहीं तो भीग जाएगा।

टप से–झट से, शीघ्र। उ० लडके ने टप से चिराग पकड लिया।

टप्पर उलटना–दे० 'टाट उलटना'।

टप्पा उलटना–दीवाला निकलना। उ० उस बेचारे का तो टप्पा उलट गया, अब भला कहाँ से लोगों का रुपया देगा?

टप्पा खाना–किसी फेंकी हुई वस्तु का जमीन से लग कर आगे उछल जाना।

टप्पा देना–१ लम्बे-लम्बे डग भरना। २. अतर डालना। ३ लम्बे-लम्बे टाँको से सीना।

टप्पे डालना–१ दूर-दूर और खराब सिलाई करना। उ० क्यो टप्पे डाल कर कमीज खराब कर रहे हो? २ लगर डालना। उ० टप्पे डाल चुका हूँ, कल सिल दूँगा।

टप्पे भरना–दे० 'टप्पे डालना'।

टप्पे मारना–दे० 'टप्पे डालना'।

टप्पे लगाना–दे० 'टप्पे डालना'।

टरक जाना–दे० 'टल जाना'।

टरक देना–दे० 'टरक जाना'।

टर-टर करना–१ बेकार बकवाद करना। उ० क्या टर-टर कर रहे हो, मुझे सोने दो, नीद लग रही है। २ धृष्टता से बात करते जाना। उ० क्या टर-टर करते हो, शर्म नही आती।

टर-टर फिस होना–१ कुछ दिन काम करके फिर बैठ जाना। २. खराब होना। उ० किया-कराया सब टर-टर फिस हो गया। ३. सब प्रयत्न निष्फल होना।

टर-टर लगाना–व्यर्थ बकवाद करना। उ० दिन-रात टर-टर लगाए रहते हो, कोई दूसरा काम नही है क्या?

टरपों-टरपों करना–दे० 'टर-टर लगाना'।

टर-फिस करना—१. बदमाशी करना। उ० अगर ज्यादा टर-फिस करोगे तो जूते से बात करूँगा। २. दे० 'डींग हाँकना'।

टर्र निकल जाना—घमंड चूर-चूर हो जाना।

टल जाना—१. खिसक जाना। उ० सिपाही को देखते ही चोर कहीं टल गया। २. चले जाना। उ० टल जाओ, नहीं तो खैरियत नहीं है।

टस से मस न होना—१. कहने का कुछ भी असर न पड़ना। उ० उसे पढ़ने के लिए लोगों ने बहुत समझाया, पर वह टस से मस न हुआ। २. ज़रा भी न हटना। उ० वह पत्थर चार आदमियों से भी टस से मस न हुआ। ३. गलाने का कुछ प्रभाव न होना। उ० सोना सुहागे में भी टस से मस न हुआ।

टसुए बहाना—दिखावे के लिये रोना। उ० क्यों टसुए बहा रही हो, तुमको तो खुशी मनानी चाहिये?

टहल जाना—१. हट जाना। उ० अब यहाँ से टहल जाने में ही खैरियत है। २. चुपचाप चल देना। उ० टहल जाओ, नहीं तो तुम लोग भी पकड़ जाओगे।

टहल-टई—१. सेवा-सुश्रूषा। २. काम-धाम।

टहल-टकोर—दे० 'टहल-टई'।

टहल-टकोर करना—१. देने में आनाकानी करना। उ० टहल-टकोर क्यों कर रहे हो, आखिर तो देना ही पड़ेगा। २. सेवा करना।

टहल बजाना—सेवा करना। आज्ञा मानना। उ० नया नौकर टहल बजाने में बड़ा तेज है।

टहला देना—बहाने से टरका देना।

टही में रहना—अपना मतलब सिद्ध करने की ताक में रहना। उ० वह हर समय टही में रहता है, दूसरों से उसे क्या प्रयोजन है?

टही लगाना—जोड़-तोड़ लगाना।

टहोका खाना—झटका खाना।

टहोका देना—धक्का देना, झटकना। उ० टहोका देकर चोर भाग निकला।

टाँक रखना—१. याद रखने के लिए नोट कर लेना। उ० मैंने उनके भाषण की बातें टाँक रखी हैं। २. मन-मुटाव रखना। उ० इधर कुछ दिनों से तो वह टाँक रखने लगा है। ३. बही में लिख लेना। उ० सारा जमा खर्च टाँक रखना।

टाँक लेना—दे० 'टाँक रखना'।

टाँका चलाना—सीने के लिए कपड़े आदि में आर-पार सुई डालना।

टाँका भरना—१ सीना। सिलाई करना। २. दूर-दूर सिलाई करना। उ० जल्दी टाँका भर दो, दूर जाना है।

टाँका मारना—दे० 'टाँका भरना'।

टाँकी खाना—जेलखाना में रह आना। उ० वह कई बार टाँकी खा आया है।

टाँकी निकलना—गहने आदि की धातु का खराब निकलना। उ० इसमें तो बहुत टाँकी निकलेगी।

टाँकी बजना—१. पत्थर पर खुदाई का काम होना। २. इमारत का चुना जाना। ३. टाँकी बज रही है तो खर्च होगा ही।

टाँकी लगाना—१ छेद या सूराख करना। २ तराश कर देखना।

टाँके उधड़ना—दे० 'टाँके खुलना'।

टाँके उधेड़ना—सिलाई खोलना, टाँका खोलना। उ० मुझे इस दर्द में लज्जत है ऐ जोशे जुनूँ अच्छा, मेरे जख्मे जिगर के हर घड़ी टाँके उधेड़े जा।

टाँके खाना—जख्म सिलवाना। उ० वह टाँके खाने को तैयार नहीं है।

टाँके खुलना—१. गुप्त बात जाहिर होना। उ० उनके भी टाँके खुल गये, अब वे क्या मेरे सामने बात करेंगे? २ मिली हुई चीज के तार टूटना। उ० उनके हाथ के टाँके खुल गए।

टाँके टूटना—कपड़े या जख्म की सिलाई का टूट जाना।

टाँके ढीले करना—मार-मार कर बेदम करना। उ० राजी से मान जाओ तो अच्छा है, वरना एक-एक के टाँके ढीले कर दूँगा।

टाँके देना—दे० 'टाँके लगाना'।

टाँके मारना—ऊपरी या जल्दी-जल्दी सिलाई करना। उ० टाँके न मारो, ठीक से सिलो।

टाँके लगाना—जख्म या कपड़ों में सिलाई करना।

टाँग अड़ाना—१. बेकार दखल देना। अड़चन डालना। उ० तुम क्यों मेरे हर काम में टाँग अड़ाते हो? अगर यह आदत न छोड़ोगे तो झगड़ा हो जायगा। २. अज्ञात क्षेत्र में कूद पड़ना।

टाँग उठाना–संभोग करना। किसी स्त्री के साथ भोग करना। उ० उसकी टाँग उठाते तुम्हें शर्म भी नही आई ?

टाँग खींचना–बदनाम करना; मूर्ख बनाना। उन्नति न करने देना।

टाँग-तले से निकलना–हार मानना। उ० अगर आप इस हिसाब को लगा दे तो मै आपकी टाँग-तले से निकल जाऊँ।

टाँग-तले से निकालना–हराना। लज्जित करना। उ० क्यो उसे टाँग-तले से निकालते हो, वह भी तो आखिर अपना है।

टाँग तोड़ना–१. पैर तोड देना। उ० उसने मार कर टाँग तोड दी। २. थकावट देना। उ० आज तो चलते-चलते तुमने टाँग तोड दी। ३. बेकार कर देना। उ० हमारी साइकिल ले जाकर तो तुमने मेरी टाँग ही तोड़ दी। ४ गलत बोल कर निरादर करना। उ० अब भी तो शुद्ध बोलो, क्यो हिन्दी की टाँग तोडते हो।

टाँग देना–१ लटका देना। उ० कपडे को खूँटी पर टाँग दो। २ फाँसी देना। उ० कल वह टाँग दिया गया।

टाँग पसार कर सोना–१ बिना फ़िक्र के रहना। उ० आजकल वह खूब टाँग पसार कर सोता है। २ निश्चिंत होकर सोना। उ० टाँग पसार कर सोए हो, कोई चोरी कर ले जाय तो !

टाँग बराबर–बहुत छोटा। उ० टाँग बराबर तो है, और गाली देता है।

टाँग लेना–१. उठा लेना। उ० उसे टाँग लो। २. कुत्ते का काटना।

टाँग से टाँग बाँधकर बिठाना–पास से हटने न देना। उ० वह तो अपनी बीवी को टाँग मे टाँग बाँधकर बिठाए रहता है।

टाँग से टाँग बाँधकर बैठना–सर्वदा साथ रहना। उ० तुम उसकी टाँग से टाँग बाँध कर बैठे रहते हो, आखिर बात क्या है ?

टाँग से टाँग बाँधकर बैठाना–पास से न हटने देना।

टाँगें झुलाना–समय खराब करना। उ० क्या बैठे-बैठे टाँगें झुलाया करते हो। कुछ काम-धन्धा करो।

टाँगें तोड़ना–१ लाचार कर देना। उ० अब तुमने उसकी टाँगें तोड़ दीं। २. दुर्दशा करना। उ० तुमने तो उसकी टाँगें तोड़ दी।

टाँगें रह जाना–१. बहुत कमजोर और दुर्बल हो जाना। २. थक जाना। ३. गठिया से पैरो का बेकार हो जाना।

टाँट के बाल उड़ना–१. खूब मार पड़ना उ० आज झगड़े में बेचारे के टाँट के बाल उड़ गये। २ सिर के बाल गिरना। उ० बीमारी मे उसके टाँट के बाल उड़ गए। ३ कुछ भी न रह जाना। उ० दो ही मुक़दमे मे दोनों के टाँट के बाल उड़ गए।

टाँट के बाल उड़ाना–खूब मारना। उ० इस छोटे से अपराध के लिए पिताजी ने उसके टाँट के बाल उड़ा दिये। टाँट का बाल उडा दूँगा, नही तो जरा आदमी की तरह रहो।

टाँट खाली रहना–कुछ न समझना। उ० मैं तो समझाते हुए थक गया, पर तुम्हारी टाँट लगता है खाली ही रहेगी।

टाँट खुजलाना–मार खाने की चाह होना। उ० आज तुमने कई अपराध किये, क्या टाँट खुजला रही है ?

टाँट गंजी कर देना–दे० 'टाँट के बाल उडाना'।

टाँट गंजी होना–दे० 'टाँट के बाल उड़ना'।

टाँड़ा लदना–१. बेचने के लिए माल लदना। उ० आज कानपुर से टाँडा लद रहा है। २. मरणासन्न होना। उ० उसका तो अब टाँड़ा लद रहा है।

टाँड़ा लादना–सारे सामान के साथ चलना। उ० परीक्षा होते ही मैं टाँडा लाद दूँगा।

टाँड़े खाना–१ खोखला होना, कीडे लगने से खोखला होना। उ० टाँडे खाए बल्ले क्या होगे ? २. बीमारी से खोखला होना।

टायँ-टायँ फिस होना या हो जाना–आरंभ मे तो बडी शान से होना, परन्तु परिणाम बुरा होना, अंत मे कुछ न होना या फेल कर जाना। उ० इकलौता पुत्र था, बडे शौक से पढ़ाते थे, परन्तु मर जाने से सब टायँ-टायँ फिस हो गया। आजकल रोज ही एक-न-एक पत्रिकायें निकलती है; पर चार-छ महीने मे टायँ-टायँ फिस हो जाती हैं।

टाँय-टाँय मचाना–शोर करना, फ़िजूल बोलना।

टाट उलटना या उलट जाना–बडा घाटा होना या दिवाला निकलना। उ० सोने के भाव में मंदी के कारण अनेक सर्राफों के टाट उलट गये।

टाट करना–मस्तूल खडा करना।

टाट पर रेशम की सिलाई–असगत मेल।

टाट में पाट की बखिया करना–खराब चीज़ में अच्छी सजावट करना। उ० उस रद्दी कपड़े का कोट तुम कपनी मे सिलवा रहे हो। इस टाट में पाट की बखिया करने से क्या फायदा?

टाट में मूंज की बखिया करना–दे० 'टाट मे पाट की बखिया करना'।

टापते रह जाना–मुंह देखते रह जाना।

टापा-टोई करना–तलाश करना। उ० घर मे तब मे क्या टापा-टोई कर रहे हो?

टापा देना–लबे-लबे क़दम से चलना। उ० कौन-सी जल्दी है कि टापा देकर चल रहे हो?

टाल करना या कर देना–राशि लगाना। उ० हमने दूकान के लिए लकडी का टाल कर दिया है।

टाल जाना–अस्वीकार कर देना। उ० जब भी कुछ माँगता हूँ, वह टाल जाता है।

टाल-टूल करना–दे० 'टाल-मटोल करना'।

टाल देना–स्थगित करना। उ० हमने घर जाने की तिथि टाल दी है।

टाल-बटाल करना–दे० 'टाल-मटोल करना'।

टाल-मटोल करना–हीला-हवाला करना। न देना। उ० टाल-मटोल न करो, आज जरूर दे दो।

टाल मारना–१. पहियो के किनारो को छील कर सुदर बनाना। उ० इन पहियों में टाल मार देने से मूल्य अधिक मिलेगा। २. टकराना। उ० टाल न मारो।

टाला-बाला देना–दे० 'टाला-बाला बताना'।

टाला-बाला बताना–बहकाना। धोखा देना। उ० टाला-बाला बता कर अपना काम तो तुमने निकाल लिया, अब मेरा काम कैसे होगा?

टिकट कटाना–१ टिकट खरीदना। २ प्रस्थान करना ३ मर जाना।

टिकट लगाना–महसूल लगाना। कर नियत करना।

टिकटिकी पर खड़ा करना–लड़ाई मे न हटने वाले मुर्गे को चोट खाकर मरने के बाद तीन लकड़ियों पर खडा करना।

टिकटिकी से बांधना–बाँध कर कोड़े लगाना।

टिकड़ी जमाना–जुआ खेलने के लिए इक होना। उ० तुम्हारे घर रोज़ टिकड़ी जम है, किसी दिन छापा न पड़ जाये।

टिकस लगाना–दे० 'टिकट लगाना'।

टिक्की जमना–१. काम सिद्ध होना। उ० हम विश्वास है कि वहाँ जाने पर हमारी टिक जम जाएगी। २. दे० 'टिप्पस अड़ना'।

टिक्की बैठना–दे० 'टिक्की जमना'।

टिक्की भिड़ना–दे० 'टिक्की जमना'।

टिक्की लगाना–दे० 'टिक्की जमना।'

टिगिर-बिगिर करना–दे० 'टाल-मटोल करना उ० लाल-लाल पैसा तो टिगिर-बिगिर कैसा

टिटकारी देना–उपहास करना।

टिटकारी पर लगना–पशुओ का संकेत पा या बोली पहचान कर पास चले जाना। गड़रिए की सब भेडे टिटकारी पर लग है।

टिड्डी-दल–बडी भीड़। उ० तैमूर की सेना टिड्डी-दल मे दिल्ली थर्रा गई।

टिड्डी के रोके आँधी न रुकना–दुर्बल बलवान से टक्कर लेकर जीत न सकना।

टिप-टिप करना–साधारण वर्षा होना। उ० टिप-टिप करना अच्छा नही लगता।

टिप्पन मिलाना या मिला देना–विवाह के लि गणना गिनना। उ० अब तो टिप्पन भी मि लिया गया, शादी करने मे देर न करो।

टिप्पस अड़ना–स्वार्थ निकालने का साधन होन अपना काम निकलने का चांस बैठना। पिछले मुकदमे के लिए तो हमारा टिप्पस अ चुका है।

टिप्पस जमना–दे० 'टिप्पस अड़ना'।

टिप्पस भिड़ना–दे० 'टिप्पस अड़ना'।

टिप्पस लगना–दे० 'टिप्पस अड़ना'।

टिमटिमाता दिया–नष्ट होने के निकट होना

टिर-फिर करना–बदमाशी करना। उ० टि फिर करोगे तो ठीक न होगा।

टिर-फिस करना–दे० 'टिर-फिर करना'।

टिल्ला नवेसी करना–१. वक्त बरबाद करना बेकार घूमना। २. खुशामद का काम करना ३. बहाना करना।

टीकन देना–१. टेढ़े पौधे को सीधा करने के लिए लकड़ी का सहारा देना। उ० अभी पेड़ कमजोर है, टीकन देने से सीधा हो सकता है। २. ग़रीब, दीन या निर्बल की सहायता करना।

टीका चढ़ाना–उत्तराधिकार पाना।

टीका-टिप्पणी करना–आलोचना करना। उ० टीका-टिप्पणी करना तो सरल है; परन्तु करके दिखाना बहुत कठिन है।

टीका देना–१. तिलक लगाना। उ० भारतीय परंपरा के अनुसार शुभ कार्य पर टीका देते है। २. दे० 'टीका लगाना'।

टीका भेजना–तिलक चढ़ाने के लिए भेजना। सगाई भेजना।

टीका लगाना–छापना, सुई देना। (चेचक तथा प्लेग आदि में टीका लगता है।) उ० चेचक के फैलते ही सरकारी डाक्टर टीका लगाने लगता है।

टीका लेना–१. छपवाना, सुई लेना। उ० मैंने चेचक का टीका ले लिया है। २. विवाह में दक्षिणा लेना। उ० उनकी शादी में पुरोहित ने १०० रु० का टीका लिया।

टीके का–विशेषता रखने वाला। अनोखा। उ० क्या वही एक टीके का है, जो सब कुछ रख लेगा ?

टीप का बन्द लगाना–किसी बात की पुष्टि करना।

टीप-टाप करना–इधर-उधर सुधार कर देना। थोड़ा-बहुत सुधार करना। उ० टीप-टाप करने से हमारा समाज नही उठ सकता। इसमे तो आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

टीप देना–दबा देना। उ० उसका गला टीप दो।

टीम-टाम करना–दे० 'टीम-टाम रखना'।

टीम-टाम रखना–दिखावटी शान-शौकत रखना। उ० जितने भी नये धनी हुए है, सभी टीम-टाम रखना पसंद करते है।

टीस उठना–पीड़ा होना। उ० उसके वियोग की टीस रह-रह कर उठती है।

टीस मारना–मीठा-मीठा दर्द होना। उ० ज्यादा काम करने से शरीर टीस मार रही है।

टुंच भिड़ाना–१. कम रुपये से रोजगार आरंभ करना। २. कोई पेट से रुपया लेकर आता नहीं है, आखिर बिड़ला और डालमिया टुंच भिड़ाने से ही तो इतने बड़े हुए हैं। ३. थोड़े रुपये से जुआ खेलना। उ० हमने टुंच तो भिड़ाया, पर क्या कहे, अपनी बदकिस्मती कि हाथ का रुपया भी निकल गया।

टुंच लगाना–दे० 'टुंच भिड़ाना'।

टुंच लड़ाना–दे० 'टुंच भिड़ाना'।

टुँटिया कसना–दे० 'टुँटिया खींचना'।

टुँटिया बाँधना–दे० 'टुँटियाँ कसना'।

टुड़िया खींचना–मुश्क बाँधना। उ० टुँड़िया खींचकर बेचारे को पुलिस ले गई।

टुक-टुक ताकना–दे० 'टुकुर-टुकुर ताकना'।

टुकड़खोर होना–दूसरों द्वारा दिए गए अन्न पर पलने वाला होना।

टुकड़ा छिनना–रोजी छिनना।

टुकड़ा तोड़ कर जवाब देना–१. किसी चीज़ के लिए चट इन्कार करना। उ० उसमे ज़रा भी शील नही है, किसी भी चीज़ के लिए टुकड़ा तोड़कर जवाब देने मे ज़रा भी सकोच नही करता। २. स्पष्ट उत्तर देना।

टुकड़ा तोड़ कर हाथ में देना–दे० 'टुकड़ा-सा जवाब देना'।

टुकड़ा तोड़ना–दूसरे के सहारे जीविका चलाना। उ० उसके पास क्या है, पर घर टुकड़ा तोड़ कर तो जीता है।

टुकड़ा देना–दीन या भिक्षुक को भिक्षा या रोटी देना। उ० यह कई दिन का भूखा मालूम होता है, इसे टुकड़ा दे दो।

टुकड़ा माँगना–भिक्षा माँगना। उ० कुछ लोगों को टुकड़ा माँगने मे भी लाज नही लगती।

टुकड़ा सा जवाब देना–१ निःसंकोच तथा स्पष्ट उत्तर देना। २. साफ़ इन्कार कर देना। उ० क्या छोटी-सी बात के लिए टुकड़े सा जवाब दे रहे हो ?

टुकड़ा-सा तोड़ कर हाथ में देना–स्पष्ट जवाब देना, दोटूक उत्तर देना। उ० कोई भी बात पूछो, टुकड़े-सा तोड के हाथ मे देता है। ऐसा व्यक्ति तो देखा नही।

टुकड़े उड़ना–पुरज़े-पुरज़े या धज्जी-धज्जी होना।

टुकड़े उड़ाना–१. धज्जी करना। २. बहुत दुर्दशा करना।

टुकड़े के लिए तरसना–खाने-खाने का मुहताज होना।

टुकड़े-टुकड़े करना–नष्ट-भ्रष्ट करना। पुरजे-पुरजे करना।

टुकड़े तोड़ना–मुफ्त की रोटियाँ खाना। क्या यहाँ टुकडे ताड रहे हो ?

टुकड़ों पर पड़ना–दूसरे की कमाई पर निर्वाह करना। उ० वह असहाय बालक अपने ननिहाल के टुकडो पर पडा हुआ है।

टुक-सा–थोडा-सा, जरा-सा। उ० आपकी टुक-सी दया मेरे लिए बहुत होगी।

टुकुर-टुकुर ताकना–१ अपलक देखना। उ० अपना काम करो, हमारी ओर क्या टुकुर-टुकुर ताक रहे हो ? २ दीनता से देखना। उ० बेचारा अनाथ-सा टुकुर-टुकुर ताक रहा था। मुझे दया आ गई और मैंने उसे १ रु० दे दिया।

टुटपुंजिया–गरीब, कम पूंजी का। उ० वह टुटपुंजिया क्या खाकर रोजगार करेगा ?

टुटरूँ-टूँ– निर्जन, अकेला। उ० मुझे टुटरूँ-टूँ रहना पसद नही आता है।

टुट्टुट कर बरसना–दे० 'टूट-टूट कर बरसना'।

टुम-टाम–सज-धज, सजावट। उ० बारात मे लोग बडी टुम-टाम से जाते है।

टुसर-टुसर रोना–फूट-फूट कर रोना।

टूक-टूक करना–नष्ट कर देना, तोड डालना।

टूक-टूक होना–टुकड़े-टुकडे होना। उ० तुम्हारी इन्ही बातो से मेरा दिल टूक-टूक हो जाता है।

टूट-टूट कर बरसना–बडे जोरो से वर्षा होना। उ० इस वर्ष चेरापूंजी मे टूट-टूट कर बरसा हुई।

टूट पड़ना–वेग से धावा बोलना। उ० कल के काड मे हिंदू जी खोल कर टूट पडे।

टूट में पड़ना–नुकसान मे प ना।

टूटा-फूटा–मामूली, साधारण। उ० भारतवर्ष मे टूटी-फूटी हिंदी तो सभी बोल सकते है।

टूटी बाँह गले पड़ना–किसी असमर्थ आदमी का व्यय अपने सिर पर पडना। उ० इस अनाथ बच्चे का उठा लाये, यह टूटी बाँह भी मेरे ही गले पडी।

टूटे-फूटे स्वर में–अस्पष्ट या अटकते हुए शब्दो मे।

टूम छल्ला–साधारण गहना। उ० टूम छल्ला तो सभी औरतें रखती है। बड़ा बनवाओ तब न।

टूम देना या दे देना–कबूतर को छत्ता पर से उडा देना। उ० प्रात होते ही लोग कबूतरो को टूम देते है।

टेंट गर्म होना–१ पास मे पैसा होना। उ० टेंट गर्म है तो चैन की नीद आती है, नही तो मेरी तरह आप भी रहते। २. रुपया मिलना। उ० टेंट गर्म हो जाय तो मै भी चलूँ।

टेंट ढीली कराना–पैसा खर्च कराना। उ० आज फँसे हो तो टेंट ढीली करनी ही पड़ेगी और कोई चारा नही है।

टेंट में कुछ होना–पास मे कुछ पैसा होना। उ० हम आप जैसे गये बीते नही है, सदा टेंट मे कुछ रहता है।

टेंटुवा दबाना–गला दबाना। उ० रात मे किसी ने टेंटुवा दबा कर उन्हे मार डाला।

टें-टें करना–बेकार बोलना। उ० क्या सुबह से ही टें-टें कर रहे हो ? मैं ऐसी बाते नही सुन सकता।

टें-टें फिस्स होना–१. सब परिश्रम बेकार जाना। उ० सारा किया-कराया टें-टें फिस्स हो गया। २ असफल होना।

टें बोल जाना–तुरन्त मर जाना। उ० एक लात मे तो टें बोल दोगे और कहने से मानते नही।

टेक गहना–१ जिद्द पकडना। उ० अब तो समझदार हो गए हो, इतनी टेक क्यों गहते हो ? २ प्रतिज्ञा करना। उ० टेक गहते हो तो निभाना भी।

टेक निभाना–अपनी प्रतिज्ञा या जिद्द पूरी करना। उ० भीष्म ने कृष्ण को अस्त्र गहा कर अपनी टेक निभायी।

टेक पकड़ना–दे० 'टेक गहना'।

टेक रखना या रख लेना–जिद्द या बात रखना। उ० बेचारा बड़ा मुरौवती आदमी है, उसने अपना नुकसान करके भी तुम्हारी टेक रख ली।

टेढ़की लेना–शरारत करना। उ० क्यो टेढ़की लेते हो ? दूसरे भी तुम्हारे साथ यही करें तो कैसा लगेगा ?

टेढ़ा पड़ना– १. अकड़ना। उ० बात-बात मे टेढ़ा पड़ना कोई चालाकी नही है। २. कठोर बनना। उ० टेढ़े के साथ टेढ़ा पडना ही पडता है। ३. शरारत करना।

टेढ़ा-मेढ़ा करना–१. किसी तरह काम निकाल लेना। उ० जब हम कुछ नही जानते है तो अपना काम टेढ़ा-मेढ़ा कर लेने मे कौन-सा पाप है ? खराब-खस्ता करना। उ० मारा कि टेढ़ा-मेढ़ा कर डाला।

टेढ़ा होना–१. दुष्ट स्वभाव वाला होना। २. रुष्ट होना।

टेढ़ी अँगुली से घी निकालना–१. जब जैसी जरूरत पडे, वैसा व्यवहार करना। उ० सीधी अगुली से घी नही निकलता है तो टेढ़ी अँगुली मे निकालो। २ चालबाजी से काम निकालना। उ० टेढ़ी अँगुली से घी निकालना तुम्हे शोभा नही देता।

टेढ़ी आँखें करना–दे० 'आँखें टेढ़ी करना'।

टेढ़ी आँखों से देखना–द्वेष रखना। ईर्ष्या से देखना। उ० रूस अमेरिका को टेढ़ी आँखों से देखता है।

टेढ़ी खीर–कठिन काम, लोहे का चना। उ० पर्चों के कठिन होने से इस साल परीक्षा पास करना टेढ़ी खीर है।

टेढ़ी चाल चलना–गलत काम करना, कोई ऐसा काम करना जिसका काट करना कठिन हो।

टेढ़ी चितवन–तिरछी नजर। उ० टेढ़ी चितवन प्रेम या बैर की निशानी है।

टेढ़ी भृगुटी करना–बेरुखा होना, नाराज़ होना।

टेसू बनना या होना–साज-शृंगार करना।

टेढ़ी-सीधी सुनाना–भली-बुरी कहना, डाँटना-फटकारना। उ० गरीबो को तो सभी टेढ़ी-सीधी सुनाते हैं, कोई अमीरों को सुनाये तो जानूँ।

टेढ़ी सुनाना–दे० 'टेढ़ी-सीधी सुनाना'।

टेढ़े-टेढ़े चलना–गर्व करना। उ० जिसके बल पर टेढ़े-टेढ़े चलते हो, वह धोखा दे देगा।

टेनी मारना–डंडी मारना। तराजू से जोखने में कम या बेश तौलना। उ० छोटे-मोटे दूकानदार बहुत टेनी मारते है।

टेर करना–व्यतीत करना। उ० किसी तरह यह जीवन टेर कर रहा हूँ, नही तो पूरे परिवार के मरने के बाद इसमें भला क्या आकर्षण है ?

टेर लगाना–१ प्रार्थना करना। २ रट लगाना।

टोक में आना–नजर लगाने वाले की दृष्टि में आना। उ० कुछ लोगो का विश्वास है कि लडके टोक मे आने से बीमार पड जाते हैं।

टोकरे पर हाथ रहना–भरम बना रहना, इज़्ज़त बनी रहना, पर्दा न खुलना। उ० जब तक टोकरे पर हाथ रहेगा, कोई सामने नही आ सकता। उसके बाद देखा जायगा।

टोका-टाकी करना–बिना मतलब पूछताछ करना। उ० तुम्हारी टोका-टाकी करने की आदत बहुत बुरी है।

टोटका करने आना–आकर तुरन्त जाना। उ० क्या टोटका करने आई थी कि अभी जा रही है ?

टोटका होना–टोटके की तरह चट-पट हो जाना। जल्दी हो जाना। उ० अच्छा आज आप अभी आ गए, काम टोटका हो गया था क्या ?

टोटा उठाना–नुक़सान उठाना।

टोटा पड़ना–नुकसान होना। उ० इस साल गुड वालो को टोटा पडने की आशा है।

टोटा भरना–हानि पूरी करना। उ० गुड का टोटा चावल नही भर सकता।

टोटा सहना–दे० 'टोटा उठाना'।

टोना करना–मंत्र-तन्त्र से किसी के बुरे के लिए कुछ प्रयोग करना।

टोपा देना–१ तागा भरना, सीना। २ जल्दी-जल्दी दूर-दूर सीना।

टोपा भरना–दे० 'टोपा देना'।

टोपी उछलना–१ अपमानित होना। उ० अपकृत्य करने से सभी की टोपी उछलती है। २ प्रसन्नता प्रकट होना।

टोपी उछालना–१ अपमान करना। उ० मेरी टोपी को उछालने का कौन साहस कर सकता है। २ बहुत प्रसन्नता प्रकट करना। उ० खेलाड़ी जीतने के बाद टोपियाँ उछाल रहे है।

टोपी देना–१ टोपी पहनाना। उ० उसके सर पर एक टोपी तो दे दो। २ टोपी पहनना।

टोपी पैर पर रखना–असमर्थता या अधीनता स्वीकार करना। उ० इतने दिन के मुक़दमे के बाद उन्होंने हमारे पैर पर टोपी

रखी है। अगर पहले ही यह किये होते तो क्यों परीशान होते ?

टोपी बदलना–१ अधिकारी या शासक बदलना। उ० बिना टोपी बदले सुख नहीं मिल सकता। २ मित्र बनाना। उ० मैंने आज तुम्हारे दोस्त से टोपी बदली है।

टोह मिलना–पता चलना। उ० हमारी टोह सरकार को मिल गई। उस चोर की टोह पुलिस को मिल गई है।

टोह में रहना–खोज मे रहना। उ० आजकल मैं किसी नौकरी की टोह मे हूँ।

टोह रखना–खबर लेना। रक्षा करना। उ० हमारी टोह भगवान ही रखता है।

टोह लगाना–पता लगाना। उ० तुम तो कही टोह लगाते नही हो तो वह कैसे मिले ?

टोह लेना–खबर लेना। पता लगाना। उ० तब तक उसकी टोह ले लो।

ट्रंप होना– रोब-दाब होना, अधिकार होना। उ० तुम्हारा तो आजकल ट्रंप है।

ट्रेन छूटना–१ गाड़ी का चल देना। उ० ट्रेन छूट गई। २. बड़ी जल्दी होना। उ० ट्रेन छूट रही है क्या, कि इतनी तेजी से खाना खा रहे हो।

ट्रेन पकड़ना–दे० 'गाडी पकड़ना'। (यह अंग्रेज़ी मुहावरा To catch the train का अनुवाद है।)

ठ

ठं-ठं-गोपाल होना–दे० 'ठन-ठन-गोपाल होना'।

ठंठ गिनना–तुच्छ समझना।

ठंड–ठड के मुहावरो के लिए 'ठढ' देखिये।

ठंडक–ठडक के मुहावरो मिए 'ठढक' देखिये।

ठढक पड़ना–सरदी पडना। उ० कई दिन से ठढक पड रही है।

ठंढक लगना–दे० 'ठढ लगना'।

ठंढ पड़ना–जाडा या सरदी पडना। उ० अब ठंढ पड़ने लगी, गरम कपडे निकाल लो।

ठंढ लगना–१. सरदी या जाडा लगना। उ० ठढ लगती हो तो कोट पहन लो। २ जाड़े का असर होना। उ० बचाना, ठढ न लगे, नहीं तो बुखार आ जायगा।

ठढा करना–१. आग बुझाना। उ० आज की आग बड़ी मुश्किल से ठढी की गई। २ प्रवाहित करना। उ० गाधी का फूल त्रिवेणी मे ठढा किया गया। ३ क्रोध मिटाना। उ० समझा-बुझा कर ठढा करो। ४. धैर्य देना। उ० उनकी स्त्री ही उन्हे ठढा करेगी। ५. पराजित करना। उ० सरकार ने विद्रोहियो को ठढा कर दिया। ६. उत्साह मिटाना। उ० एक ही बार की हार ने उसे ठढा कर दिया।

ठंढा पड़ जाना–१. मर जाना। उ० साँप एक ही लाठी मे ठढा पड़ गया। २ पस्तहिम्मत होना। उ० घाटा हो जाने से वह ठढा पड गया। ३. क्रोध शान्त होना। ४ मदा होना। उ० कई दिनो से गुड़ की बाजार ठढी पड गई है।

ठंढा रखना–१. खुश रखना, आराम से रखना। २. शान्त रखना। उ० अपने भाई को ठंढा रखो, नही तो लडाई हो जायगी।

ठंढा रहना–१. खुश रहना, सतुष्ट रहना। २. उदास या बेरौनक रहना। उ० कैसे वो फ़रहाद जो गुजरे तो हुआ दौर मेरा, न रहा मारकए इश्क़ का पाला ठंढा।

ठंढा होना–दे० 'ठढा पड जाना'।

ठंढी आग में जलना–विरहाग्नि से व्याकुल होना।

ठंढी आना–जाड़ा आना। उ० अब धीरे-धीरे ठढी आ रही है।

ठंढी करना–चेचक की आखिरी पूजा करना। उ० हमारे गाँव मे ठढी कर दी गई।

ठंढी गरमी–दिखावटी प्रेम। चलो हम ठंढी गरमी खूब समझते है।

ठंढी ढलना–चेचक का मुर्झाना। उ० अभी ठढी नही ढल रही है।

ठढी निकलना–चेचक निकलना। उ० हमारे घर ठढी निकल रही है।

ठंढी मार–१. मीठी चोट। ऐसी चोट जो भीतर ही भीतर हो और दिखाई न दे। उ० पुलिस वाले ठंढी मार मारते हैं। २. मीठी बातों का व्यंग्य। उ० वह तो बड़ी ठंढी मार मारता है।

ठंढी मिट्टी–रति-कामना से विहीन आदमी। उ० नपुसक तो ठंढी मिट्टी ही होते हैं।

ठंढी सांस—आह-भरी साँस, ऊँची साँस। उ० उसकी ठंढी साँस देखी नही जाती।

ठंढी सांस खींचना—दुःख की साँस लेना या आह भरना। उ० उसके वियोग मे कब तक ठंढी साँस खीचते रहोगे ?

ठंढी सांस भरना—दे० 'ठंढी साँस खीचना'।

ठंढी सांस लेना—दे० 'ठंढी साँस खीचना'।

ठंढे-ठंढे—१. प्रसन्नता से। उ० तुम सब ठढे-ठढे चले जाओ। २. धूप से पहले। बहुत सवेरे। रात मे। उ० हम लोग ठंढे-ठंढे चले आए।

ठंढे दिमाग से—शान्तिपूर्वक।

ठक रहना—सन्न हो जाना। उ० मै तो उसके साहस को सुनते ही ठक रह गया।

ठक हो जाना—दे० 'ठक रहना'।

ठकुर-सुहाती कहना—चापलूसी की बाते करना। उ० ससार मे ठकुर-सुहाती कहने मे ही अपना भला है।

ठगमूरी खाना—ठगा-सा या पागल-सा रहना। होश-हवास मे न रहना। उ० काहू तोहि ठगोरी लाई। बूझति सखी सुनति नाहि नेकहु तुही किधौ ठगमूरी खाई।

ठग लगना—ठगो का पीछे पड़ना। उ० तुम्हारे पीछे कई दिनो से ठग लगे हैं, जरा रुपये होशियारी से रखना।

ठगलाडू खाना—दे० 'ठगमूरी खाना'।

ठगविद्या खेलना—छल-कपट करना। उ० अब तो तुम भी ठगविद्या खेलने लगे हो।

ठगा-सा रह जाना—चकित रह जाना, भौचक्का रह जाना। उ० ताजमहल की रौनक देखकर मै ठगा-सा रह गया।

ठगा-सा रहना—दे० 'ठगा-सा रह जाना'।

ठगौरी डालना—मत्र-मुग्ध कर देना, जादू करना।

ठट कर बातें करना—जमकर बाते करना। उ० आज दिन भर खूब ठट कर बातें की गईं।

ठट के ठट—बहुत से, झुंड के झुंड। उ० ठट के ठट आदमी कहाँ जा रहे हैं ?

ठट लगना—भीड़ होना। ढेर होना। उ० मेले में आदमियों के ठट लगे थे।

ठट्ट लगना—जमा होना।

ठट्ठा उड़ाना—हँसी-मज़ाक करना। हँसी उड़ाना। उ० हमेशा ठट्ठा न उड़ाओ, जरा गभीरता से सुना करो।

ठट्ठा करना—हँसी या चुहल करना। उ० ठट्ठा न करो, बात बड़ी गंभीर है।

ठट्ठा मार कर हँसना—दे० 'ठठा कर हँसना'।

ठट्ठा मारना—दे० 'ठट्ठा उड़ाना'।

ठट्ठे में उड़ाना—कुछ महत्व न देना। हँसी में उड़ाना। उ० हमारी बातों को तो आप लोग ठट्ठे में उड़ा देते है।

ठठरी होना—दुर्बल होना। उ० तुम तो सूखकर ठठरी हो गये।

ठठा कर हँसना—जोर से हँसना। उ० ऐसी कौन-सी बात थी कि ठठा कर हँस पड़े ?

ठठेरे की बिल्ली—जरा भी आवाज़ पहचानने का अभ्यस्त। उ० कोई ठठेरे की बिल्ली नही हूँ कि तुम आए और जग जाऊँ।

ठठेरे-ठठेरे बदलाई होना—एक तरह के दो व्यक्तियों का एक-दूसरे को ठगना। दो समान धूर्त एक-दूसरे पर अपनी धूर्तता नही चला सकते। उ० आप भी चोर और मै भी चोर, फिर मेरी चोरी करने के फेर मे न पड़ें, ठठेरे-ठठेरे बदलाई नही होती।

ठनका कर लेना—अच्छी तरह देख कर रुपया लेना। उ० ठनका कर लेना, कही खराब न दे दे।

ठन जाना—बदाबदी होना। उ० हमारी-तुम्हारी ठन गई है, देखे कौन भागता है ?

ठन-ठन-गोपाल—१. निर्धन। उ० तुम तो सचमुच ठन-ठन-गोपाल हो। २. मूर्ख। उ० ठन-ठन-गोपाल न बनो, कुछ विवेक से भी काम लो।

ठन-ठन-गोपाल होना—बिना रुपये-पैसे का होना, खाली हाथ होना। उ० आजकल तो मैं ठन-ठन-गोपाल ही हूँ।

ठर्रा आदमी—खरा और साफ़ आदमी। उ० वह बड़ा ठर्रा आदमी है।

ठर्रा लगाना—देशी शराब पीना। उ० बहुत बदबू आ रही है, लगता है आज ठर्रा लगा आये हो।

ठर्रा होना—खरा होना। उ० वह बड़ा ठर्रा है।

ठस आदमी—कृपण या कंजूस आदमी। उ० ठस आदमियों से क्या माँगना।

ठस होना—कंजूस होना। उ० वह ठस है, अपने तो खर्च ही नही करता तो भला तुम्हे कैसे दे देगा ?

ठसक दिखाना—अभिमानपूर्ण हाव-भाव दिखाना। उ० यहाँ ठसक न दिखाओ।

ठसका मारना—धक्का मारना।

ठसका होना—घमड होना, अभिमान होना।

ठसाठस भरना—१ बहुत भीड़ होना। उ० नेहरू जी को देखने के लिए पडाल ठसाठस भरा था। २ खूब भरना।

ठस्स आदमी—१ बोदे दिमाग वाला। उ० इस ठस्स आदमी को समझाना बेकार है। २ कजूस।

ठह कर—अच्छी तरह जमकर।

ठह-ठह कर बोलना—गभीरता या बनाव से बोलना। उ० बडे आदमियो की तरह ठह-ठह कर बोलना तुम कब से सीख गये ?

ठहरना—निश्चय होना या करना। उ० आज तुम्हारे यहाँ दावत की ठहरी।

ठाट खड़ा करना—ढाचा तैयार करना। उ० बेकार के ठाट खडे करना तुम्हे खूब आता है। अभी तो ठाट खडा कर रहे हो, पूरे होने मे काफी दिन लगेगे।

ठाट खड़ा होना—१ स्वरूप तैयार होना। उ० अभी तो मकान का केवल एक ठाट खडा हुआ है। २ खूब रौनक होना।

ठाट पड़ा रह जाना—सासारिक शान-शौकत और सुख यही खतम हो जाना। उसका साथ मे दूसरे लोक न जाना। उ० सब ठाट पडा रह जाएगा, जब लाद चलेगा बनजारा।

ठाट बदलना—१. वेश बदलना। उ० तुमने तो ठाट बदल लिये हैं। २ और का और भाव दिखाना।

ठाट बाँधना—१ आक्रमण करने के लिए तैयार होना। उ० वह कई दिन से ठाट बाँध रहा है, समय आने पर गहरा धावा करेगा। २. बनना। ३. रोब दिखाना। उ० मेरे ऊपर ठाट न बाँधिए।

ठाट-बाट से रहना—शान-शौकत से रहना। उ० चन्द्रगुप्त मौर्य बडे ठाट-बाट से रहता था।

ठाट बिगड़ जाना—१. सब बना-बनाया खराब हो जाना। उ० पिताजी के न आने से शादी का सारा ठाट बिगड़ जाएगा। २. अवन करना।

ठाट माँजना—१ रंग बाँधना, बडप्पन जतान उ० ठाट माँजकर चले गए, मैं रहता बताता। २ और का और भाव दिखाना ३ रूप तथा वेश मे नवीनता दिखाना। उ आजकल खूब ठाट माँज रहे हो।

ठाट मारना—मौज करना। उ० बाप की कम पर ठाट मार रहे हो।

ठाट से कटना—सुख से जीवन बीतना। उ शायद भारत मे ५ फ़ीसदी लोगो की ही ठ से कटती है।

ठाढ़ा देना—ठहराना, स्थिर रखना।

ठार पड़ना—पाला या बहुत अधिक सर्दी पड़ना उ० आजकल ठार पड रहा है, फसल को हा पहुँचेगी।

ठाला बताना—बिना कुछ लिये-दिये दूर हटाना उ० अरे, उसे ठाला बता दो। सबकी सुने तो इतने ही भर का हो जाओगे।

ठाला होना—कमी होना। तगी होना। उ० आ कल खाने का बडा ठाला है।

ठाली होना—बेकार रहना। उ० आजक मशीनो के प्रचार से बहुत से लोग ठाली है

ठिकाना करना या कर देना—१ ठहराना। उ आज तो किसी के यहाँ ठिकाना कर दिय परन्तु कल के लिए फिर देखना है। २ शा करना। उ० अभी दो लडकियो का ठिका करना है। ३ नौकरी लगाना। उ० यदि तु चाहो तो मेरा भी ठिकाना कर दोगे।

ठिकाना ढूंढ़ना—कोई जीविका का साध खोजना। उ० मै तीन माह से अपना ठिका ढूँढ रहा हूँ।

ठिकाना लगना—१ रहने के लिये स्थान मिलना उ० अभी हमारा ठिकाना नही लगा है। नौकरी मिलना। उ० शिक्षा के युग ठिकाना लगना भी कठिन है। ३. खब रहना। उ० तुम लोग तो ऐसे हो कि ठिका भी नही लगता।

ठिकाना लगाना—नौकरी देना। उ० यदि जिल धीश चाहेगे तो दो-चार का ठिकाना लग सकते है।

ठिकाने आना—१ वास्तविक बात पर आना उ० समय कम है, ठिकाने आकर बात करो

२ यथार्थतः समझना । उ० अब ठिकाने आये । ३. अपने चाहे स्थान पर पहुँचना । उ० आज मैं ठिकाने आ जाऊँगा ।

ठिकाने की बात–समझदारी की बात । उ० ठिकाने की बात करो, बहको मत ।

ठिकाने चुकाना–किसी बूढ़े आदि के मरने पर नौकर-चाकर को रुपये बाँटना ।

ठिकाने न रहना–अस्थिर रहना । उ० आजकल मेरी बुद्धि ठिकाने नही है ।

ठिकाने पहुँचाना–दे० 'ठिकाने लगाना' ।

ठिकाने लगना–अपने वांछित स्थान पर पहुँचना । उ० कई दिन के बाद काफ़िला ठिकाने लगा ।

ठिकाने लगाना या लगा देना–१. काम तमाम करना । उ० आज दंगे मे कितने ही ठिकाने लगा दिये गए । काम ठिकाने लगा दो । २. लुप्त करना । उ० उसने मेरी कलम ऐसे ठिकाने लगाई कि मिल न सकी । ३ जीविका का प्रबन्ध करना । उ० बिना ईश्वर के कौन ठिकाने लगा सकता है ? ४ शादी कर देना । उ० लडकी सयानी हुई, कही ठिकाने लगा दो । ५. स्थान पर पहुँचा देना । उ० उसने रास्ता नही देखा है कि जाओ ठिकाने लगा दो ।

ठीक आना–१ फिट उतरना । उ० यह कुरता ठीक आया है । २ दे० 'ठीक उतरना' ।

ठीक उतरना–१ वज़न मे पूरा होना । उ० जो कुछ अनाज गोदाम से आया है, सब ठीक उतरा है । २. मनचाहा होना । उ० नकशा तो प्राय ठीक उतरा है । ३ सही होना । उ० तुम्हारे अनुमान तो बिल्कुल ठीक उतरे ।

ठीक करना–१ कोई मशीन ठीक करना । २. सज़ा देकर ठीक करना । उ० अगर ज्यादा परीशान करोगे तो एक ही दिन में ठीक कर दूँगा । ३. हैरान करके बुरी दशा को पहुँचा देना । उ० एक दिन मे ही उसे ठीक कर दिया ।

ठीक-ठाक होना–१. निश्चित होना । उ० शादी ठीक-ठाक हो गई । २ दुरुस्त या सही होना ।

ठीक बनाना–दे० 'ठीक करना' ।

ठीकरा फोड़ना–कलक लगाना । दोप लगाना ।

ठीकरा समझना–१. तृणवत् जानना । बेकार समझना । उ० वह इतना ईमानदार है कि दूसरे की हज़ारो की सम्पत्ति को भी ठीकरा समझता है । २. कम क़ीमत का या तुच्छ जानना ।

ठीकरा होना–१ दे० 'रुपया ठीकरा होना' । २. कम क़ीमत का होना । ३ तुच्छ होना ।

ठीकरे चुनना–मूल्यहीन काम करना । व्यर्थ में समय गँवाना । उ० इस ठीकरे चुनने से तो कोई दुकान खोलना ही अच्छा रहेगा ।

ठीकरे पकवाना–माल-असबाब तक बिकवा देना । कुछ न छोडना यहाँ तक कि खाने को न मिले । उ० आप लोगों ने ही मिल कर बेचारे के ठीकरे पकवा दिये । अब तो वह गली-गली फिर रहा है ।

ठीका लेना–१ जिम्मा लेना । उ० मैने आपके काम का ठीका नही लिया है । २ एकमुश्त रुपये पर किसी काम के करवाने का ज़िम्मा लेना । उ० ठीका लेकर मकान बनवा दो ।

ठीकेदार होना–उत्तरदायी होना, हिमायती होना ।

ठीहा होना–अड्डा होना । निवास-स्थान होना । उ० आपका कही ठीहा भी है या बिल्कुल खानाबदोश ही है ।

ठुक जाना–हानि उठाना, खर्च हो जाना ।

ठूँठ-खसूची–जिसमे विकाम की भावना का अभाव हो ।

ठेंगा दिखाना–१ अँगूठा दिखाना । २. चिढाना । ३. इन्कार कर देना । उ० मैं माँगने तो गया था, पर उसने ठेंगा दिखा दिया ।

ठेंगा बजना–१ मार-पीट होना । उ० हमारे मुहल्ले के लोग ऐसे नीच है कि रोज़ाना ठेंगा बजता है । २. प्रयत्न निष्फल होना । उ० नौकरी के लिए सारे किये-कराये पर ठेंगा बज गया ।

ठेंगे के नीचे होना–वश में रहना ।

ठेंगे पर नचाना–कुछ भी न समझना ।

ठेंगे से–कुछ फ़िक्र नही । परवाह नही । उ० तो वे गये, मेरे ठेंगे से, मुझे क्या ।

ठेंठी देना–१. किसी चीज़ का मुँह काग या ठेंठी से बद करना । २. न बोलने देना ।

ठेकना–रोटी बनाना । उ० अकेले ठेकना बड़ा अच्छा लगता है और खूब खाया भी जाता है ।

ठेका देना–तबला या ढोल पर ताल देना । उ० और कुछ तो नहीं पर ठेका देना अच्छा जानता है ।

ठेका बजाना–दे० 'ठेका देना' ।

ठेका भरना–१. घोड़े का उछल-कूद करना । उ० घोड़ा ठेका भर रहा है । २. बिरहा आदि में ठेका गाना । ३ दे० 'ठेका देना' ।

ठेका-भेंट–ठेकेदार द्वारा दिया गया नजराना । उ० मेरे नीचे बहुत से ठेकेदार काम करते है, पर मैं किसी से भी ठेका-भेंट नहीं लेता ।

ठेस देना–आघात या धक्का देना । उ० मेरे हृदय को तुमने बड़ी ठेस दी ।

ठेस लगना–मानसिक या शारीरिक धक्का लगना, सदमा पहुँचना । उ० उस बात से बड़ी ठेस लगी ।

ठेहुना लगना–बहुत कमज़ोर होना । उ० उस कुत्ते को ठेहुना लगना है ।

ठोक-ठोंक कर लड़ना–जबरन लड़ना । ताल ठोक कर लड़ना । उ० दिन-दिन देत उरहनो आवैं, ठुकि-ठुकि करत लरैया ।

ठोंकना-बजाना–देखना-सुनना, जाँचना । उ० कोई भी चीज हो, ठोंक-बजा कर लेनी चाहिये ।

ठोक-पीट कर–ठठाकर, जबर्दस्ती, येन-केन-प्रकारेण ।

ठोक-पीट कर वैद्य बनाना–किसी तरह प्रयत्न करके किसी लायक बनाना ।

ठोकर उठाना–कष्ट सहना । हानि उठाना । उ० आपके लिये मुझे कितने ठोकर उठाने पड़े है, मैं ही जानता हूँ ।

ठोकर खाता फिरना–इधर-उधर मारा-मारा फिरना । उ० क्या दिन भर ठोकरें खाते फिरते हो, क्यों नहीं कुछ काम करते ?

ठोकर खाना–१. नुकसान सहना । उ० उसने कई बार ठोकर खायी, पर फिर भी ख्याल नहीं करता है । २. चलते में कंकड़-पत्थर से चोट आना । उ० आज मै रास्ते में ठोकर खा गया । ३ जीविका के लिए मारे-मारे फिरना । उ० उसने बहुत ठोकर खायी, पर कहीं शरण न मिली । ३ धोखे मे आना । उ० मैं तो अनेक बार ठोकर खा चुका हूँ ।

ठोकर जड़ना–दे० 'ठोकर देना' ।

ठोकर देना–१. पैर से किसी को मारना । उ० सिपाही ने चोर को ऐसी ठोकर दी कि उसके मुँह से खून आने लगा । २. किसी को हानि मे डालना । ३. दुतकारना, डाँटना-फटकारना । ४. बेइज़्ज़त करना ।

ठोकर लगना–१ हानि होना । उ० मुझे इस काम से ऐसी ठोकर लगी कि हमेशा के लिये होश हो गया है । २ पैर का किसी चीज़ से ज़ोर मे लड़ना । उ० ठोकर लगने से गिर पड़ा । ३ ठेस लगना ।

ठोकरें खाना–दे० 'ठोकर खाना' ।

ठोकरों पर पड़ा रहना–बेइज़्ज़त होकर भी दिन काटना । उ० मै तो ठोकरो पर पड़ा रहता हूँ, क्या करूँ अगर काम छोड़ दूँ तो जाऊँ कहाँ ?

ठोड़ी पकड़ना–१ प्यार करना । उ० माँ ने ठोडी पकड़ कर आशीर्वाद दिया २. खुशामद करके मनाना । उ० उसने ठोड़ी पकड़ कर कहा, परन्तु तुमने एक न सुनी । ३. मधुर शब्दों मे गुस्सा दूर करना । उ० डाँटो नहीं, ठोडी पकड़ कर कहो ।

ठोड़ी पर हाथ धर कर बैठना–कुछ सोच-विचार मे बैठना । उ० क्यों ठोडी पर हाथ धर कर बैठे हो, क्या कोई खास बात है ?

ठोडी में हाथ देना–दे० 'ठोडी पकडना' ।

ठोढ़ी-तारा–सुन्दरी की ठुड्डी पर का तिल या गोदना । उ० उसका ठोढ़ी-तारा बड़ा सुन्दर है ।

ठोसा दिखाना–१ आशा देकर समय पर निराश कर देना । उ० पहले तो कुछ कहा नहीं, समय पर ठोसा दिखा दिया । २ चिढ़ाना । उ० उसे क्यों ठोसा दिखाते हो ?

ठोसे से–ढेंगे या बला से । उ० ठोसे से आप नहीं आएँगे ।

ठौर-कुठौर–मौके-बेमौके, बुरे समय पर । उ० इसे भी घर में रख दो, ठौर-कुठौर काम ही देगा ।

ठौर-ठौर तोड़ देना–बहुत ज्यादा मार मारना । मार कर हड्डी तोड देना । उ० चोरों ने उनकी ठौर-ठौर तोड़ दी ।

ठौर न आना–क़रीब न आना । दूर रहना । उ० जो भूत से नहीं डरेगा, उसके ठौर वह नहीं आयेगा ।

ठौर रखना–मार डालना । उ० डाकुओं ने बहुत

से आदमियों को ठौर रखा और कितनो को घायल कर दिया।

ठौर रहना—१. मारा जाना। काम आना। उ० लड़ाई मे बहुत से वीर ठौर रहे। २. जहाँ हो, वहीं रह जाना। उ० कुछ तो ठौर रहे, परन्तु ज्यादा भाग गए।

ड

डंक जलना—बुरा होना। उ० उसका डक जले, उसने मेरे लड़के को अनायास ही मारा है।

डंक मारना—१ बिच्छू का काटना। २ कटु वचन कहना। उ० डक न मारो, वह क्या कहेगा?

डंका देना—दे० 'डका पीटना'।

डंका पीटना या पीट देना—१. डुग्गी पीट कर कहना। उ० उस कुश्ती का डका पीट दिया गया है। २ दे० 'डका बजाना'।

डंका बजना—१ राज्य होना। शासन होना। उ० अब भारत मे भारतवासियो का डका बज रहा है। २. रोब या दब-दबा होना।

डंका बजाना या बजा देना—१ मशहूर करना। उ० उसने अपनी कारीगरी का डका सारे देश में बजा दिया है २ मगल मनाना। उ० दशहरे मे हर जगह डका बजाया जाता है। ३ सल्तनत होना। उ० हुमायूं के समय में भिश्ती का भी एक दिन डंका बजा।

डंके की चोट पर—डका बजा कर, सबको सुना कर। उ० मैं डके की चोट पर कह रहा हूँ कि तुम-जैसे चार को एक साथ पछाड़ सकता हूँ।

डंड़वारा खींचना—दे० 'डडा खीचना'।

डंड डालना—जुर्माना करना। उ० पचायत ने उस पर ४० रु० डड डाला है।

डंड पड़ना—१. व्यर्थ व्यय होना। उ० आज का खर्च तो डड ही पड़ा। २. जुर्माना होना। उ० तुम पर भी कुछ डंड पडेगा।

डंड पेलना—१. कसरत करना। उ० वह डड पेल रहा है। २. ८ड की कसरत करना।

डंड भरना—हर्जाना देना। उ० अगर वहाँ जाओगे तो तुम्ही को सब डंड भरना पड़ेगा।

डंडा खींचना—दीवार बनाना। उ० पहले बाहर का एक डंडा खीच लो, तब भीतर हाथ लगाओ।

डंडा डालना—परीशान करना। उ० डडा न डालो, कभी मेरी भी बारी आयेगी।

डंडा दिखाना—मारने की धमकी देना।

डंडा बजाते फिरना—इसी तरह बेकार घूमना। उ० उसका लड़का दिन भर डडा बजाते फिरता है, उसे किसी काम में लगा देते तो ठीक होता।

डंडी मारना—कम तौलना। उ० बनिया लोग खूब डडी मारते है।

डंडे के ज़ोर से—मार का डर दिखा कर, ज़बर्दस्ती।

डकार जाना—१. रक़म ले लेना। उ० उस ग़रीब का रुपया जो डकार जायगा, उसे नरक मे भी जगह न मिलेगी। २ खा जाना। उ० गामा अपनी जवानी मे एक बकरी का मास डकार जाते थे।

डकार न लेना—१ धन लेकर न देना। उ० वह मेरा सैकड़ो रुपया लेकर अब डकार तक नही लेता। २. कोई काम करके न बताना। उ० वह बड़ा घुइस है, सब करता रहता है, परंतु डकार तक नहीं लेता।

डगडगा कर पानी पीना—एक बार में बहुत-सा पानी पी लेना। उ० हाथी बहुत प्यासा था, डगडगा कर पानी पी गया।

डग देना—दे० 'डग भरना'।

डग भरना—क़दम बढ़ाना। उ० चौड़े और लम्बे डग भरो, अभी बहुत दूर जाना है।

डग मारना—तेज़ चलना। उ० उसके साथ पैदल चलने में हम पार नही पा सकते है। डग मारने मे वह एक ही है।

डगर बताना—१. युक्ति बताना। उ० क्या डगर बताते हो, मुझे सब मालूम है। २. राह बताना। उ० उसके डगर बताने पर न जाओ, नहीं तो भूल जाओगे। ३. शिक्षा देना। उ० चलो-चलो, मुझे डगर न बताओ।

डट कर खाना—खूब, भर पेट खाना। उ० अगर मैं डट कर खाऊँ तो पक्का सेर भर खा सकता हूँ।

डट जाना—१. जम जाना, जम कर किसी के मुक़ाबिले में खड़ा होना। उ० दिल डट गया है, इस सफ़े मिज़गाँ के सामने।

डटा रहना—ठहरे रहना। अड़े रहना। उ० दुश्मन के सिपाही कई दिन तक डटे रहे।

डपोरशंख होना—दे० 'डरपोंसख होना'।

डपोरसंख होना—डींग मारने वाला होना, केवल बात बनाने वाला होना। उ० तुम तो डपोरसख हो, तुम्हारा क्या विश्वास?

डब पकड़ कर कराना—ज़बर्दस्ती काम कराना। उ० मैं यह काम डब पकड़ कर सभी से करा सकता हूँ।

डब में आना—क़ाबू में आना। उ० जब डब में आयेगा तो सब काम ठीक हो जायगा।

डर खाना—भय मानना।

डल का डल—बहुत-सा। उ० यहाँ डल का डल बेकार कागज रखा हुआ है, उसी को ले लो।

डाँगर घसीटना—१. अपवित्र काम करना। उ० ब्राह्मणों का काम डाँगर घसीटना नहीं है। २. जानवरों का शव घसीट कर ले जाना। उ० कुत्ता एक डाँगर घसीट रहा था।

डाँट-डपट करना—१ हिदायत करना। उ० डाँट-डपट करने से लड़के ठीक रहते हैं। २. डाँटना।

डाँट पिलाना—डाँटना।

डाँट बताना—फटकारना, डाँटना। उ० लड़कों को हर वक्त डाँट बताना ठीक नहीं।

डाँट में रखना—अख़्तियार में रखना। चंगुल में रखना। उ० माता-पिता को चाहिये कि अपने बच्चों को डाँट में रखें।

डाँड़ चलाना—नाव खेना। उ० मुझे डाँड़ चलाना नहीं आता, नहीं तो तुम्हें नदी के पार उतार देता।

डाँड़ भरना—क्षतिपूर्ति करना।

डाँड़ लेना—जुर्माना लेना। अर्थदंड लेना। उ० पचायत ने उससे ५० रु० डाँड़ लिये।

डाँड़ी मारना—दे० 'डंडी मारना'।

डाक आना—ख़त आना। डाकिया द्वारा आने वाली चीजों का आना।

डाकगाड़ी बनना या होना—जल्दी-जल्दी बोलना या कोई काम करना, या होना।

डाक बैठाना—यात्रियों की सुरक्षा आदि के लिए स्थान-स्थान पर चौकी लगाना। उ० शेरशाह के समय में डाक बैठाने की प्रथा प्रचलित हुई।

डाक लगना—१. लगातार बहुत कै होना। २. बराबर ख़बर या हरकारों या चिट्ठी आदि का आना-जाना।

डाक लगना—दे० 'डाक बैठाना'।

डाक होना—बहुत तेज चलने वाला होना। उ० बड़ा जल्दी आये, तुम तो डाक हो।

डाका डालना—चोरी करना। लूटना। उ० मेरे घर में चोरों ने डाका डाल कर सब सामान लूट लिया।

डाका पड़ना—डाकुओं द्वारा लूटा जाना। उ० आजकल जगह-जगह डाका पड़ रहा है।

डाढ़ गरम होना—१. घूस मिलना। उ० पुलिस वालों के डाढ़ आजकल ख़ूब गरम हो रहे हैं। २ ताज़ा खाना मिलना। उ० कई दिनों से काम के पीछे डाढ़ गरम नहीं हुए।

डाढ़ न लगना—१ बिना चबाये निगल जाना। २. हाथ न लगाना। ३ न जुठारना।

डाढ़ मार कर रोना—बहुत रोना, फूट-फूट कर रोना। उ० दामने कोह में जो मैं, डाढ मार रोया। एक अब्रवाँ में उठ कर बे-अख़्तियार रोया।

डाढ़ा फूंकना—बहुत गर्मी होना। उमस होना। उ० आज तो ऐसा डाढ़ा फूंक दिया है कि चैन ही नहीं मिलता।

डाढ़ा होना—दे० 'डाढ़ा फंकना'।

डाढ़े मार-मार कर रोना—ख़ूब जोर से छाती पीट कर रोना। उ० लड़के की मृत्यु की ख़बर सुनते ही वह डाढ़े मार-मार कर रोने लगा।

डाल का टूटा—एकदम ताज़ा। उ० यह डाल का टूटा आम है, ज़रा इसको तो चखिये।

डाल झुकना—अनुकूल होना।

डाल-डाल पात-पात—१. इधर-उधर, २. प्रत्येक स्थान पर।

डाल रखना—रख छोड़ना। उ० इसे अभी डाल रखो।

डाली देना—किसी बड़े अफ़सर को मेवे, फल और रुपये इत्यादि भेंट करना। उ० आज ठाकुर साहब कलक्टर साहब को डाली देंगे।

डाली लगाना–'डाली देना' ।

डावाँडोल करना–१. परीशान करना । उ० मुझे डावाँडोल न करो । २. अनिश्चित करना । हिला देना । उ० उसकी परिस्थिति डावाँडोल मत करो ।

डावाँडोल फिरना–असमंजस मे इधर-उधर घूमना । उ० मै तो डावाँडोल फिरता हूँ, कुछ समझ मे नहीं आता कि क्या करूँ ?

डावाँडोल होना–अव्यवस्थित होना, हिल जाना, अनिश्चित हो जाना । उ० उसकी परिस्थिति ऐसी डावाँडोल हो गई है कि कुछ कहते नही बनता ।

डिग्री जारी करना–फैसले को तामील कराना ।

डिग्री होना–विजय होना । उ० उसकी डिग्री हो गई ।

डिसमिस करना–बर्खास्त करना या खारिज करना । उ० साहब ने उसकी अपील डिसमिस कर दी ।

डींग का तार न टूटना–अत्यधिक डींग मारना ।

डींग मारना–बढ-बढ कर बाते करना । उ० क्या डींग मार रहे है, आपका पूरा हाल मै जानता हूँ ।

डींग हाँकना–दे० 'डींग मारना' ।

डीठ चुराना–दृष्टि छिपाना । सामने न देखना । उ० उससे डीठ क्यो चुराते हो ?

डीठ छिपाना–दे० 'डीठ चुराना' ।

डीठ बाँधना–ऐसा जादू कर देना कि सामने की चीज़ न सूझे । उ० जादूगर ने सब की डीठ बाँध दी ।

डीठ मारना–१. नजर लगाना । उ० किसी ने डीठ मार दी है, इसी से लडके की तबीयत खराब है । २. एक झटके से देख लेना । उ० डीठ मार लो, देर तक क्या देखोगे ? ३. आँख मारना ।

डीठ रखना–१. देख-भाल रखना । उ० जब तक मैं न आऊँ, मेरे बाल-बच्चो पर डीठ रखना । २. कड़ी दृष्टि रखना । ३. आँखो पर चढाये रखना । उ० होशियार रहना । वे तुम पर भी डीठ रखते हैं ।

डीलडौल का होना–हृष्ट-पुष्ट शरीर का होना । उ० अब तो मेरा भाई खूब डीलडौल का हो गया है । पहले बड़ा कमज़ोर था ।

डुगडुगी पीटना–१. मुनादी करना । उ० आज कांग्रेस की सभा होगी, कोई डुगडुगी पीट रहा था । २. अधिकार की घोषणा करना ।

डुबकी खाना–१. लापता हो जाना । उ० तुम अक्सर डुबकी खाया करते हो, आखिर कहाँ जाते हो ? २. पानी मे डुबकी खाना । उ० डुबकी खाने में बड़ा मजा मिलता है । ३. हानि उठाना । ४ इस बार तो तुम भी डुबकी खा गये ।

डुबकी मारना–१ लुप्त हो जाना ।

डुबकी लगाना–१ पानी मे गोता लगाना ।

डूंगर की ओट मे छिपना–छोटी चीज की आड़ मे बडी चीज़ छिपना ।

डुबा या डुबो देना–कही का भी न रखना, बहुत अहित करना।

डूब जाना–१ मारा जाना । उ० इस लेन-देन के व्यापार मे मेरे भी हजारो रुपये डूब गये । २ गायब हो जाना । उ० रहता है-रहता है, कही डूब जाता है । ३ प्रतिष्ठा डूबना । उ० बना-बनाया नाम डूब गया । ४ कुछ कर न सकना । उ० उसके सामने जाते ही वह भी डूब गया नही तो बड़ा बहकता था ।

डूबता-उतराता रहना–१ सोच-विचार में निमग्न रहना । उ० हम महीनो मे तुम्हारे ही विषय मे डूबते-उतराते रहते है । २० दे० 'जी डूबना' ।

डूबती नैया पार लगाना–आफत या कष्ट से बचाना । उ० डूबती नैया पार लगाना सच्चे मित्रो का ही काम है । भगवान ही मेरी डूबती नैया पार लगा सकते है ।

डूबते को तिनके का सहारा होना–कष्ट मे पडे हुए को थोडी भी मदद होना । असहाय को कुछ भी सहारा होना । उ० दुर्भिक्ष-पीडित बंगाल को यदि कुछ भी अन्न मिल गया होता, तो डूबते को तिनके का सहारा हो जाता ।

डूबते को थाह मिलना–विपत्ति मे सहारा होना । उ० हमारी इज्जत चली गई होती, पर आप आ गये और डूबते को थाह मिल गया ।

डूब मरने की बात–अत्यधिक लज्जा की बात ।

डूबा आसामी–दिवालिया । उ० वह तो डूबा आसामी है । उसे भला कुछ कैसे दिया जा सकता है ?

डूबा नाम उछालना–गिरी इज्जत फिर से उठाना। उ० मेरे परिवार मे यही एक आदमी है जो डूबा नाम उछाल सकता है।

डेढ़ ईंट की मस्जिद जुदा बनाना–आपस में फूट रखना। उ० डेढ़ ईंट की मस्जिद जुदा बनाने से काम न होगा। आपस मे मेल रखो।

डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग पकाना–अपनी राय अलग रखना। उ० अरे भाई पंचायत मे डेढ चावल की खिचड़ी अलग पकाने से काम नही चलेगा। आखिर यही हालत रही तो फ़ैसला कैसे होगा।

डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना–अपनी अकेली राय सबसे अलग रखना। उ० यदि उन्नति करना चाहते हो तो डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना छोड दो।

डेढ़ चुल्लू लोहू पीना–जान ले लेना। उ० जब तक मैं अपने दुश्मन का डेढ़ चुल्लू लहू न पी लूंगा, चैन न लूंगा।

डेढ़ पसली का पहलवान–(व्यग्य) दुबला-पतला होने पर भी खूब झगडने वाला।

डेढ़ बीता का कलेजा करना–बडी हिम्मत करना। उ० यह कार्म करना हो तो डेढ़ बीते का कलेजा करो।

डेरा उठाना–अस्थायी निवास को छोडकर चले जाना।

डेरा कूच करना–मृत्यु हो जाना।

डेरा-डंडा उखाड़ना–सामान-सहित कही दूसरी जगह जाना। उ० उसने मेरे सैकड़ो रुपये लेकर अपना डेरा-डडा उखाड लिया।

डेरा डालना–पडाव डालना। ठहरना। उ० अब बहुत तेज धूप हो गई है, यही डेरा डाल लिया जाय।

डेरा पड़ना–टिकाव पड़ना। टिक जाना। उ० मेरे गाँव मे नटो के बहुत से डेरे पड़े है।

डेरे ठीक करना–मकान ठीक करना। उ० उन लोगो ने अपने-अपने डेरे ठीक कर लिये हैं।

डोंगा डुबाना–बर्बादी करना।

डोब देना–डुबो देना। उ० मेरी साडी किसी हल्के रग मे डोब दो।

डोर पर लगाना–रास्ते पर लाना।

डोर मज़बूत होना–जीवन के दिन शेष रहना। उ० अभी तो उनकी डोर मजबूत है। जान पड़ता है, कम से कम २० वर्ष तो रि रहेंगे ही।

डोर लगना–मुहब्बत होना। उ० उसकी छोटी जाति की स्त्री से डोर लग गई है।

डोर होना–मोहित होना, मुग्ध होना। तुम तो उसी पर डोर हो।

डोरा डालना–अपने प्रेम मे फँसाना। उ० आ बहुतो पर डोरा डाला, पर कही सफल न हु

डोरा फेंकना–प्रेम मे फँसाना।

डोरी ढीली करना–देखरेख कम करना। इस अवस्था मे बच्चो पर डोरी ढीली क ठीक नही है, नही तो सब खराब हो जायें

डोल-डाल होना–पाखाना होना। उ० जा डोल-डाल हो लो।

डोला आना–१ स्त्री या रानी की शिवि आना। २ एक विशिष्ट तरह के विवाह लिए जो छोटी जातियो मे होता है। पत्नी का पति के घर लाया जाना। उ० उनका डोला आएगा।

डोला देना–१ लडकी की शादी उसके ससुर मे करना। उ० डोला देकर जल ग्रहण करूँग २ किसी सरदार या राजा को उपह स्वरूप अपनी बेटी ब्याहना। उ० अकब कालीन राजपूत राजे मुगलो को डोला थे।

डोला निकालना–लडकी को विदा करना। डोला निकाल दो, बहुत देर हो रही है।

डोली में पैर डालना–दे० 'दौरी में डालना'।

डोली से उतरते ही–विवाह के तुरन्त बाद।

डौंडी देना–दे० 'डका देना।

डौंडी पीटना–१. सबसे कहते फिरना। २ अपनी बात अपने तक रखो, डौंडी पीटने क्या लाभ ? २. घोषित करना। उ० बाज़ मे वह किसी सरकारी नोटिस के लिये डौं पीट रहा है।

डौंडी बजना– १ दोहाई फिरना। उ० लो के घर डौंडी बाजी, ओछो निपट अजाने २ घोषणा होना।

डौल डालना–ढाँचा बनाना। उ० केवल डौ डालने से ही काम न बनेगा। उसे शुरू करो।

डौल-डाल होना—१. आशा की झलक होना। उ० तुम्हारे परिश्रम से तो पास होने का डौल-डाल होता दीखता है। २ पाखाना होना। उ० डौल-डाल होने जा रहे हो क्या ?

डौल पर लाना—१. अपना काम निकालने लायक़ बनाना। उ० यदि उसे डौल पर लाने में तुम सफल हुए तो तुम्हारा काम अवश्य बन जायगा। २. काट-छाँट कर डौल-डौल का बनाना। उ० इस कुर्ते को डौल पर लाओ।

डौल बाँधना—दे० 'डौल लगाना'।

डौल लगाना—उपाय करना। टिप्पस भिड़ाना। उ० बहुत डौल लगाया, पर कहीं से रुपया न मिला।

डौल से लगाना—तरीके से लगाना। उ० दुकान पर हर एक चीज़ डौल से लगानी चाहिए, ताकि ग्राहक आकर्षित हो।

डौला होना—युक्ति बैठना।

ड्योढ़ी का खुलना—दरबार में आने-जाने की आज्ञा मिलना। उ० अब तो सबके लिए ड्योढ़ी खुली रहती है। किसी को कुछ रोक-टोक नहीं है।

ड्योढ़ी पार न करना—कुएँ का मेंढक होना। उ० यों ही बड़बड़ाते रहते हो, कभी ड्योढ़ी तो पार की नहीं है, और बनते हो सैलानी।

ड्योढ़ी बन्द होना—राजा या रईस के यहाँ जाने की मनाही होना। उ० नयी महारानी के आने के कारण महाराज की ड्योढ़ी बन्द है।

ड्योढ़ी लगना—दरवाज़े पर चौकीदार का बैठना। उ० बड़े-बड़े राजाओं के यहाँ ड्योढ़ी लगती है। बिना आज्ञा के कोई नहीं जा सकता।

ड्राइंग खींचना—चित्र बनाना। उ० ड्राइंग खींचने में उसका हाथ साफ है।

ड्रेसिंग करना—मरहम-पट्टी करना। उ० नर्स ड्रेसिंग कर रही है।

ढ

ढंग करना—'दे० ढंग निकालना'।

ढंग का होना—१. किते का होना, ठीक होना। उ० मकान तो ढंग का है, परन्तु किराया अधिक है। २ व्यावहारिक होना। उ० मैक आर्थर युद्ध के मामलों में बड़े ढंग का आदमी था, परन्तु निकाल दिया गया। ३ सुन्दर होना। उ० घोड़े की चाल तो अच्छी है, परन्तु यह ढंग का नहीं है।

ढंग निकालना—कोई रास्ता या युक्ति मालूम करना। काम करने की युक्ति सोचना। उ० ढंग निकालो तो इसे भी कर डाला जाय।

ढंग पर चढ़ना—अपने स्वार्थ के अनुकूल होना। उ० इस वक्त वह ढंग पर चढ़ा है, जो कुछ करना हो करा लो।

ढंग पर लाना—अपने काम के योग्य बनाना। उ० बड़े परिश्रम से यह बंजर भूमि ढंग पर लाई गई है, अब इसमे कुछ पैदा होगा।

ढंग बरतना—दिखावटी बर्ताव करना। उ० समय पड़ने पर ढंग बरतना सभी को आता है।

ढंग से बरतना—१. मितव्ययिता से काम चलाना। उ० केवल १२५ रु० तो पाता है, यदि ढंग से न बरते तो कैसे काम चले ? २. अच्छी तरह से व्यवहार करना। उ० वह सभी से बड़े ढंग से बरतता है।

ढंढोरा पीटना—दे० 'डंका पीटना'।

ढंढोरा फेरना—दे० 'डंका पीटना'।

ढई देना—भोजन के लिए किसी के यहाँ जा अड़ना। उ० बेकार ढई न दो; यह राशनिंग का जमाना है।

ढकर-ढकर पानी पीना—दे० 'डगडगा कर पानी पीना'।

ढकेल देना—दे० 'धकेल देना'।

ढकोसला होना—ऊपरी बनावट होना। उ० तुम भी किस चक्कर मे पड़े हो, यह सब स्त्रियों के ढकोसले हैं।

ढक्का बजाकर—खुले आम, घोषणा करके।

ढचर फैलाना—१. आडंबर करना। २ कोई काम शुरू करना। ३. धोखा फैलाना।

ढचर बाँधना—बहुत आडंबर फैला रखना। उ० ज्यादा ढचर बाँधना भी ठीक नहीं।

ढढ्ढू का पाड़ा होना—उम्र मे काफ़ी बड़ा होना। बड़ा होना। उ० ढढ्ढू का पाड़ा हो गया, पर अक़ल नहीं आई।

ढपोरशंख होना—दे० 'डपोरसख होना'।

ढपोरसंख होना—दे० 'डपोरसख होना'।

ढब आना–किसी काम के करने का तरीका मालूम होना। उ० अब इस काम का ढब आ गया।

ढब का होना–दे० 'ढग का होना'।

ढब की बात–मौके की बात। उचित बात। संतुलित बात। उ० ढब की बात करो तो सभी मानेगे, इधर-उधर की करने से क्या लाभ ?

ढब डालना–अच्छी या बुरी आदत डालना। उ० यह तुमने अपने लडके मे कैसा ढब डाला है कि किसी से कुछ बोलता ही नही।

ढबढब करना–१. ढोल बजाना। २ तबला आदि को गलत बजाना।

ढब पर चढ़ना–काबू मे आना। वश मे आना। उ० इश्क के ढब पर न कोई बजुज़ इन्सान चढ़ा। इसके काबू पै चढा तो यही नादान चढ़ा।

ढब पर चढ़ाना–इस अनुकूल बनाना कि अपना काम निकल सके। उ० उसे किसी तरह ढब पर चढाओ, नही तो हानि होगी।

ढब पर लगाना–दे० 'डोर पर लगाना'।

ढब पर लाना–दे० 'डोर पर लगाना'।

ढय पड़ना–१ अचानक आकर ठहर जाना। उ० तुम यहाँ ढय पड़े! मुझे तो यह पता भी नही था कि तुम आने वाले हो! २ गिर पडना। उ० सँभलो, नही तो ढय पडोगे।

ढर्रा डालना–आदत डालना। उ० उसने चलने का ढर्रा डाल रखा है।

ढर्रे पर आना–बिगड़े काम का सुधरना।

ढर्रे पर झुकना–किसी पद्धति पर विशेष आग्रह करना या का ही अनुसरण करना।

ढलका लगना–आँख से बहुत पानी गिरना।

ढलती उम्र–प्रौढावस्था।

ढलती-फिरती छाया–ऐसी चीज जो छाया की तरह स्थायी हो। उ० जवानी ढलती-फिरती छाया है, इस पर गर्व न करो।

ढला होना–दे० 'साँचे मे ढला होना'।

ढह पड़ना–दे० 'ढय 'पड़ना'।

ढाँढा चलना–ज़ोरो से दस्त होना।

ढाँसना–खाँसना, कुत्ते की तरह खाँसना। उ० क्या ढाँस रहे हो, किसी डाक्टर को दिखाओ।

ढाई ईंट की मस्जिद अलग बनाना–जो सब कहें, उसके विरुद्ध कहना। उ० ढाई ईंट की अपनी मस्जिद अलग न बनाओ, सबके साथ चलो।

ढाई घड़ी की आना–तुरन्त मृत्यु आना। उ० तुझे ढाई घडी की आवे। [यह एक गाली है।]

ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना–अपनी राय अलग रखना। उ० जब तुम्हें अपने ढाई चावल की खिचडी अलग ही पकानी है तो मुझे क्यो बुलाया ?

ढाई चुल्लू लहू पीना–दु:सह सज़ा देना। बुरी तरह बदला लेना। मार डालना। उ० तेरा ढाई चुल्लू लहू पीऊँगा, तब मुझे कल पडेगा।

ढाई दिन की बादशाहत होना–थोड़े समय का अधिकार मिलना। उ० ढाई दिन की बादशाह है, जो मन चाहे कर लो।

ढाई माशे का आदमी–दुबला-पतला आदमी।

ढाक के तीन पात होना–थोडा परिवार होना। उ० ढाक के तीन पात हैं, उसका खर्चा ही क्या है ? २ हमेशा से गरीब रहना। उ० वह कब धनी हुआ, सदा के तो ढाक के तीन ही पात है। ३ हमेशा एक-सा रहना।

ढाटा बाँधना–दाढ़ी मे कपडा बाँधना।

ढाटी चढ़ाना–दे० 'ढाटी देना'।

ढाटी देना–मुँह बद करना, बोलने से रोकना, उ० चोरो ने ढाटी देकर उसे मार डाला।

ढाटी लगाना–दे० 'ढाटी देना'।

ढाड़ मारना–खूब ज़ोर-जोर से रोना। उ० वह इस समाचार को सुनते ही ढाड़ मार कर रोने लगी।

ढाढ़स देना–हिम्मत देना, समझाना-बुझाना, तसल्ली देना। उ० किसी तरह उसे ढाढ़स देकर शात करो।

ढाढ़स बँधना–हिम्मत बँधना।

ढाढ़स बँधना–दे० 'ढाढ़स देना'।

ढा देना–१ गिरा देना। उ० उसने इस दीवाल को इतनी मेहनत से बनाई थी, पर इंजीनियर ने उसे ढा देने की आज्ञा दे दी। २. समाप्त कर देना। उ० आपने मेरी सारी आशाएँ ढा दी।

ढाल बाँधना–ढाल हाथ में लेना।

ढाल होना–रक्षक होना।

ढिंढोरा पीटना—ढोल बजा कर सर्वसाधारण को किसी बात की सूचना देना। उ० जो मैं ऐसा जानती प्रीत किये दुःख होय। नगर ढिंढोरा पीटती प्रीति करो जनि कोय।

ढिंढोरा बजाना—दे० 'ढिंढोरा पीटना'।

ढिंढोरा पिट जाना—चारों ओर प्रचार होना।

ढील करना—सुस्ती करना।

ढील डालना—नियन्त्रण मे कमी करना।

ढील देना—आज़ाद छोड़ देना। नियन्त्रण न रखना। उ० अगर लड़के को ढील दोगे, तो वह खराब हो जायगा।

ढील पड़ना—बाल मे जूं पडना। उ० ढील पड़ गए है, सर खुजला रहा है।

ढीला काम करना—सुस्ती से कार्य करना।

ढीला पड़ जाना—१. सुस्त हो जाना। कमज़ोर हो जाना। उ० क्यों ढीले पड गये हो, क्या बीमार हो ? २. नरम होना। उ० ज़रा भी ढीले पड़े कि वह सिर पर चढ जाएगा। ३. शिथिल पडना। उ० उसका उत्साह ढीला पड़ गया है।

ढीली आँख—मद-भरी चितवन, अधखुली आँख। उ० देह लग्यो ढिग गेहपति, तऊ नेह निरबाहि। ढीली अँखियन ही इतै गई कनखियन चाहि।

ढीली छोड़ना—दे० 'ढील देना'।

ढुक्का लगना—किसी बात को सुनने या देखने के लिए कही छिपना। उ० वह ढुक्का लगा होगा, ज़रा धीरे-धीरे बात करो।

ढुंका देना—छिपकर देखना। उ० वह ढुंका देकर देख रहा है।

ढूंढ़ना-ढांढ़ना—खोजना या तलाश करना। उ० ढूंढ़ढांढ़ कर कही से १० रु० लाओ।

ढूंढ़े न पाना—बिलकुल पता न लगाना। उ० जो पूछना हो पूछ लो, नही तो इन्हे कल से ढूंढे न पाओगे।

ढेंढ़ा फूलना—गर्भ रहना। उ० अभी उसका बच्चासाल भर का भी नहीं हुआ और उसका ढेंढ़ा फिर फूल गया।

ढेंढ़र फूटना—आँख का फ़ूट जाना। उ० उसका तो ढेंढ़र फूट गया। २. कली निकलना। ३ कली का फूल होना।

ढेर करना—मार कर गिरा देना। उ० लड़ाई में उसने मार कर ढेर कर दिये।

ढेर रहना—१. बहुत थक जाना। थक कर चूर हो जाना। उ० हिरण भागते-भागते ढेर रह गया। २. गिर कर मर जाना। उ० आदमी ढेर रह गया।

ढेर हो जाना—१ गिर कर मर जाना। उ० युद्ध मे अनेक बहादुर ढेर हो गये। २. ध्वस्त होना, गिर पड़ना। उ० मकान ढेर हो गया।

ढोल के अन्दर या में पोल—झूठी स्थिति, खोखला व्यक्ति, खोखली बात।

ढोल-ढमक्का—बाजा-गाजा, धूम-धाम। उ० बहुत ढोल-ढमक्के से आ रहे है।

ढोलना हाथों पर होना—हर वक्त क़ुरान-शरीफ़ की क़सम खाना। उ० दीदे फूटेंगे ऐसी बातो पर। हर घडी ढोलना है हाथों पर।

ढोल पीटना—दे० 'डंका पीटना'।

ढोल बजाना—दे० 'डंका पीटना'। उ० रहिमन व्याह बियाधि है, सकहु तो लेहु बचाय। पायन बेडी पड़त है ढोल बजाय-बजाय।

ढोल गाता रहना—इधर-उधर मस्त होकर गाते फिरना। उ० वह ढोला गाता रहता है, उसे घर के काम से क्या मतलब ?

ढोलाबंदी करना—किसी चीज़ के हद का निशान बनाना।

त

तक छाना—आतंक छा जाना। उ० उधर तो चोरों का तक छाया हुआ है।

तंग आना—घबरा जाना। आजिज़ आना। उ० हम तो तुमसे तंग आ गये हैं, तुम कही चले भी जाते तो ठीक होता।

तंग करना—१. कष्ट देना। सताना। उ० ग़रीबों को तंग करके क्यों उनकी आहें लेते हो ?

तंगदस्त होना—दे० 'तंग-हाथ होना'।

तंग-दिल होना—कजूस या छोटे दिल का होना।

तंग रहना—१. गरीब रहना। उ० जब से वह पैदा हुआ, सर्वदा तंग ही रहता है। २. कष्ट में रहना। उ० बेचारा सदा तो तंग ही रहता है, सुख का तो नाम भी न जान सका।

तंग-हाथ होना–हाथ में पैसे न रहना या न होना। उ० इधर दो वर्ष से मेरा हाथ तंग हो गया है। मैं बहुत तंग-हाथ हूँ, आपको कहाँ से दूं।

तंगहाल होना–१. दे० 'तंग-हाथ होना'। २. बीमार होना। उ० वह तो बड़ा तंगहाल है। ३. आफ़त मे पड़ना। उ० कहो मत, इस समय तो मैं तंगहाल हूँ।

तंग होना–१. दे० 'तंग आना'। २. छोटा होना, न अटना। उ० यह कुर्ता तंग होता है।

तंगी उठाना–धन के अभाव के कारण कष्ट उठाना।

तंत निकालना–१. असलियत मालूम करना। उ० उनका तंत निकालना चाहते हो तो रमेश से पूछ लो। २ आशय समझना। उ० मैंने तो उसी समय तंत निकाल लिया कि वह एक पैसा भी न देगा।

तंत-मंत–दे० 'मंत-तंत'। उ० के जिव तंत-मंत सो हेरा।

तंदूर झोंकना–नीच से नीच या तुच्छ काम करना। उ० मैं तंदूर झोकूंगा, पर आपकी नौकरी न करूँगा।

तम्बू बनाना–अधिकार करना। उ० अँग्रेजो ने धीरे-धीरे सारे भारत पर तम्बू तान दिया।

तअल्लुक़ रखना–१. मैथुन-संबंधी सम्बन्ध रखना। उ० वह बहुत-सी लड़कियों से तअल्लुक रखता है। २ संपर्क रखना।

तक़दीर का खेल होना–१. भाग्य का लिखा सच होना, भाग्य मे जो हो, उसका घटित होना। उ० तकदीर का खेल है, मै किसको दोष दूं?

तक़दीर का पलटा खाना–भाग्य फिरना।

तक़दीर का मुँह फेर लेना–बुरा समय आना। उ० तक़दीर ने मुंह फेर लिया है, क्योंकि तुम इतने अच्छे होकर भी फेल हो रहे हो। तक़दीर ने मुंह फेर लिया है, नही तो उनकी हस्ती नही थी कि डाँट देते।

तक़दीर खोटी होना–बुरे दिनों का आना, अभागा होना।

तक़दीर चमकना–दे० 'तकदीर जागना'।

तक़दीर जागना–भले दिन आना, भाग्य अच्छा होना। उ० मेरी भी तकदीर जागने वाली है।

तक़दीर ठोंकना–क़िस्मत को कोसना। उ० अब अपनी तक़दीर ठोंको, जो होने वाला था हुआ।

तक़दीर फूट जाना–दे० 'तक़दीर बिगड़ना'।

तक़दीर बिगड़ना–बदक़िस्मत होना।

तक़दीर लड़ना–काम ठीक होना। क़िस्मत से विजय पाना। उ० जाइये अगर तक़दीर लड़ गई तो इस बार कुछ लाभ हो जायगा।

तक़दीर लौट जाना–भाग्य ख़राब हो जाना।

तक़दीर सीधी होना–दे० 'क़िस्मत जागना'।

तक़दीर सो जाना–दे० 'क़िस्मत बिगड़ना'।

तक़लीफ उठाना–दु.ख सहना। उ० अगर इस समय तकलीफ़ उठा कर पढ़ लोगे तो बाद मे आराम करोगे।

तकले से बल निकालना–सारी शेखी निकाल देना, दुरुस्त कर देना। उ० तुम जरा ठीक से रहो, नही तो तुम्हारे तकले से बल निकालने मुझे देर न लगेगी।

तकल्लुफ करना–व्यर्थ का बहुत अधिक शिष्टाचार दिखाना। उ० तकल्लुफ़ न कीजिए, मैं कोई मेहमान नहीं हूँ।

तकल्लुफ़ का–बहुत अच्छा, बढ़िया।

तकिया करना–भरोसा करना। उ० आप पर वह तकिया नही करता।

तकिया-क़लाम होना–बात-बात में किसी शब्द के कहने की आदत होना। शकुन तकिया होना। उ० 'राम जाने' तो उसका तकिया-कलाम है।

तख़्त उलटना–दे० 'तख़्ता उलटना'।

तख़्त का तख़्ता होना–१. राज्य का बर्बाद होना। २. बादशाहत का समाप्त होना।

तख़्त की रात–सुहागरात। उ० कल तुम्हारी तख़्त की रात है। [इसका प्रयोग मुसलमानो मे होता है।]

तख़्त छोड़ना–बादशाहत छोड़ना। उ० वे तख़्त छोड़ कर साधू बने है।

तख़्त पर बैठना–राजा होना।

तख़्ता उलटना–१. बना-बनाया काम खराब होना। उ० तुमने तो तख़्ता ही उलट दिया। २. राज्य के शासन को बदलना। उ० समाजवादी कांग्रेस से अलग होकर तख़्ता उलटने के फेर में है।

तख्ता हो जाना–अकड़ जाना, एकदम सीधा और कड़ा हो जाना। उ० रात भर पानी में रहने के कारण साधू तख्ता हो गया है।

तल्फ़ीफ़ में लाना–किफ़ायत करना। काट-छाँट करना। उ० सबको अपने व्यर्थ के व्यय तल्फ़ीफ़ में लाने चाहिये।

तग़मा बिठाना–सिक्का बिठाना, रोब जमाना। उ० यहाँ आप अपना तगमा नहीं बिठा सकते।

तजवीज़ करना–फ़ैसला करना। उ० देखें कलक्टर साहब क्या तजबीज़ करते है ?

तजुरबा करना–अनुभव प्राप्त करना। उ० दुनियाँ के हर एक काम का तजुरबा करना चाहिये।

तटस्थ होना–किसी भी तरफ न होना। उ० झगडा हुआ तो मैं भी तटस्थ नही हो सकता।

तड़क कर जवाब देना–दे० 'तड़ख कर बोलना'।

तड़ख कर बोलना–बेमुरौव्वती से जवाब देना, बिगड़ कर जवाब देना। उ० वह तो ऐसा तडख कर बोलता है कि दिल खट्टा हो जाता है।

तड़ाक-पड़ाक–चटपट, तुरंत। उ० तडाक-पडाक यह काम कर डालो।

तड़ातड़ी करना–जल्दी करना। उ० तडातड़ी न करो नहीं तो काम खराब हो जायगा।

तड़ाभड़ी पड़ना–जल्दी पड़ना, घबराहट होना। उ० क्या तडाभड़ी है कि इस तरह घबराए हो ?

तड़ी जड़ना–दे० 'तडी लगाना'।

तड़ी देना–पट्टी पढाना, धोखा देना। उ० तड़ी देकर उस दिन आप निकल आये।

तड़ी लगाना–दे० 'तडी देना'।

तड़ी बताना–चाँटे मारना।

तड़ी होना–रुआब होना, दबदबा। उ० इस शहर मे अपनी तडी है।

तत्ता तवा–झगड़ालू, लड़ाका। उ० तुम तो तत्ते तवे मालूम होते हो।

तत्तो-थंभो करना–झगड़ा शान्त करना।

तदारुक करना–सज़ा देना। उ० उस बेहया पर तदारुक करने का भी क्या असर हो सकता है ?

तन का तप मिटाना–दे० 'तन की तपन मिटाना'।

तन की तपन बुझाना–दे० 'तन की तपन मिटाना'।

तन की तपन मिटाना–१. अपनी इच्छा पूरी करना। उ० आज तन की तपन मिटा लो, फिर शिकायत न रहे। २. दिल के गुबार निकालना। उ० भरपेट गाली देकर तन की तपन मिटा लो। ३. भूख मिटाना ४. बीमारी दूर करना।

तन की दशा भूल जाना–देह का ज्ञान न रहना, आत्म-विस्मृत होना।

तन को लगना–१. शरीर को ताक़तवर करना। शरीर को लाभ पहुँचाना। उ० बाज़ार की चट-पटी चीज़े तन को नही लगती हैं। २. जी में बैठना। उ० जब बात तन को लग जाय तो तब शुरू करो।

तन गलाना–कष्ट सहना।

तन छूटना–मृत्यु होना।

तन जाना–मिजाज़ दिखाना।

तन तोड़ना–लड़ाई लड़ना।

तन दिखाना–सभोग कराना। [अशिष्ट भाषा में प्रयुक्त।]

तन देना–ध्यान देना। उ० इधर भी तन दो।

तन-मन मारना–कामनाओ को वश मे करना। उ० महात्मा लोग तन-मन मार कर जीवन बिताते है।

तन-मन से करना–बहुत मेहनत से करना। उ० अगर काम को तन-मन से करोगे तो अवश्य ही सफलता मिलेगी।

तन में आग लग जाना–अत्यधिक रोष होना।

तन-मन सौंपना–आत्म-समर्पण करना।

तन में फूले न समाना–बहुत प्रसन्न होना। उ० जब वह सुनेगी कि मेरा पुत्र प्रथम श्रेणी मे पास हुआ है तो तन मे फूले न समायेगी।

तपन बुझाना–१. दे० 'तन का ताप मिटाना'। २. गर्मी शांत करना। उ० साये मे आकर तपन बुझा लो।

तपस्या करना–बहुत मेहनत करना। उ० इसका तो भाग्य ही खराब है, दो साल से तपस्या कर रहा है, पर पास ही नही होता।

तपाक बदलना–क्रोधित होना। उ० आप तपाक क्यो बदलते हैं ? मैंने तो कुछ कहा भी नही।

तपौनी का गुड़–तपौनी की पूजा का प्रसाद, जो ठग लोग अपनी मडली मे लाने के पहले किसी आदमी को खिलाते हैं।

तपौनी का गुड़ खाना–ठग होना। उ० तुमने भी तपौनी का गुड खाया है क्या ?

तफ़सीर करना–विस्तार के साथ वर्णन करना।

तफ़सील करना–साफ़-साफ़ देना या लिखना। म० इस यात्रा मे जो भी व्यय आपने किया है, सबकी तफ़सील करके मुझे दीजिये। उसे फ़ाइल मे रखना है।

तबदील हय्यत करना–वेश बदलना, दूसरा रूप धारण करना। उ० जासूस तबदील हय्यत करके घूम रहे हैं।

तबर्रा करना–बुरा-भला कहना।

तबर्रा भेजना–लानत भेजना, नफरत करना। उ० तबर्रा भेजता हूँ मैं ऐसे रुपयों पर।

तबला उतरना–तबले की बद्धी का ढीला हो जाना।

तबला उतारना–तबले की बद्धी का ढीला करना। उ० तबला उतार दो, अब नही बजेगा।

तबला खनकाना–१ नाच-रग होना। उ० आजकल उनके यहाँ रोजाना तबला खनका करता है, कोई खुशी की बात हो गई। क्या ? २ तबला बजना। उ० सुनो कहीं तबला खनक रहा है।

तबला चढ़ाना–बजाने के लिए तबले की बद्धी को कसना। उ० तबला चढाओ, जरा कुछ हो।

तबला चढ़ाना–दे० 'तबला खनकाना'।

तबाकी कुत्ता–खाने पीने का साथी, मतलबी यार। उ० तुम तो तबाकी कुत्ते हो।

तबियत–दे० तबीयत।

तबीयत आना–१ प्रेम होना। उ० इस जीवन का क्या ठीक है, बहुतो पर तबीयत आई और बहुतो पर गई। २ लेने की इच्छा होना। उ० इस साइकिल पर तबीयत आ गई है।

तबीयत उलझना–१ जी घबराना। उ० अब तो यहाँ तबीयत उलझ रही है। २ दिल फँसना, मुहब्बत हो जाना। उ० दोनों की तबीयत उलझ गई है।

तबीयत का साफ़–दुर्भावना-विहीन व्यक्ति।

तबीयत जाना–दे० 'तबीयत फिरना'।

तबीयत ख़राब होना–१. बीमार होना। उ० बहुत दिनो से मेरी तबीयत खराब है। २. जी मिचलाना। उ० जाने क्यों आज तबियत खराब है। ३ दिल चल जाना। उ० उसे देख कर तबियत खराब हो गई।

तबीयत पर ज़ोर डालना–१. खूब ख्याल करना। उ० तबीयत पर ज़ोर डालो तो शायद समझ सको। २. जिधर तबीयत न जाती हो, उधर उसे जाने को मजबूर करना।

तबीयत पर बोझ डालना–दे० 'तबीयत पर जोर डालना'।

तबीयत फड़क उठना–१. जोश आना। उ० हल्दीघाटी पुस्तक को पढने से तबीयत फड़क उठती है। २. प्रसन्न होना।

तबीयत फड़क जाना–दे० 'तबीयत फड़क उठना'।

तबीयत फिरना–१. जी फिरना, जी हटना। उ० जिससे तबीयत फिर जाती है, फिर बोलने को जी नहीं चाहता। २. घृणा होना।

तबीयत बहाल होना–१. खुशदिल होना। उ० जब से वह यहाँ आया, उसकी तबीयत बहाल है। २ स्वस्थ होना।

तबीयत बिगड़ना–दे० 'तबीयत खराब होना'।

तबीयत भरना–१ सतोष होना। तसल्ली होना। उ० मैं तो समझता हूँ कि अब आपकी तबीयत नौकरी से भर गई होगी। २. संतोष करना, तसल्ली करना। उ० जाकर उसकी तबीयत भर दो। ३. मन भरना, जी ऊबना। उ० अब तो व्यापार से तबीयत भर गई है।

तबीयत लगना–१ प्रेम होना। उ० उनसे तबीयत लग गई है। २. ध्यान लगा रहना। उ० इधर कई दिनों से उनकी चिट्ठियाँ नही आई जिससे तबीयत लगी हुई है।

तबीयत लगाना–१ चित्त का किसी काम में प्रवृत्त करना। दिल लगाना। उ० हर एक काम को तबीयत लगा कर करना चाहिये। २ प्रेम करना। उ० उस पर तबीयत न लगाओ।

तबीयत लड़ाना–दे० 'तबीयत पर ज़ोर डालना'।

तबीयत हरी होना–खुश होना।

तबीयत होना–इच्छा होना। जी चाहना। उ० अब किसी व्यापार में लगने की तबीयत होती है।

तबेले की बला बन्दर के सिर जाना—किसी की बला किसी दूसरे के ऊपर जाना ।

तमक उठना—क्रोधित हो जाना ।

तमकनत करना—इतराना । उ० इतनी तमकनत न करो, नहीं तो ख़ुदा को भी बुरा लगेगा ।

तम हरने वाला—अज्ञान नष्ट करने वाला।

तमाचा जड़ना—दे० 'तमाचा लगाना' ।

तमाचा लगाना—थप्पड मारना । उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो अभी दो तमाचे लगाऊँगा ।

तमाचे से मुँह लाल करना—थप्पड़ से मार कर गाल लाल कर देना ।

तमा देना—घूस देना। उ० तमा दिये बिना आजकल कोई काम नही होता ।

तमाम करना—खतम करना। उ० झगड़ा किसी तरह तमाम करो ।

तमाम होना—१ मर जाना । उ० एक दुश्मन तो तमाम हुआ, अब एक और बाकी है । २ समाप्त होना, पूरा होना । उ० किसी तरह काम तमाम हुआ ।

तमाशे की बात होना—विचित्र बात होना । उ० कौन तमाशे की बात है, जो सब लोग देखने आते हैं ।

तय पाना—ठहराना । निश्चित होना । उ० गुप्त सभा मे क्या तय पाया ।

तरग़ीब देना—लालच देना । उ० तरग़ीब देकर मैंने काम करा लिया ।

तरतीब देना या दे देना—सजाना, क्रमानुसार रखना । उ० दूकान मे हर चीज को तरतीब दो, नहीं तो ज़रूरत पर नही मिलेगी ।

तरद्दुद उठाना—परीशानी उठाना । उ० बहुत तरद्दुद उठाने की आवश्यकता नहीं, मुझे भूख नही है ।

तरद्दुद में पड़ना—चिंता मे पड़ना । परीशानी में पड़ना । उ० उसके बे-टाइम आ जाने से मैं तरद्दुद मे पड गया हूँ ।

तरफ़दारी करना—किन्हीं दो विरोधियों मे एक की ओर रहना । उ० जज को किसी की तरफ़-दारी करना उचित नही है ।

तर माल उड़ाना—स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन करना ।

तरस खाना—रहम करना, दया करना । उ० इस ग़रीब पर तरस खाना सभी का कर्त्तव्य है ।

तरसा-तरसा कर देना—ललचा-ललचा कर देना । उ० तरसा-तरसा कर देने से न देना ही अच्छा है ।

तरसा-तरसा कर मारना—१. कष्ट दे-देकर मारना । उ० उसे तो तरसा-तरसा कर मारने में तनिक भी पाप नही है । २. ललचा कर न देना । उ० तुमने तो बच्चो को थोड़ी-सी मिठाई के लिए तरसा-तरसा कर मार डाला ।

तरह उड़ाना—ढंग की नकल करना ।

तरह देना—१ ख्याल न करना । जाने देना । उ० इन तेरह ते तरह दिये बनि आवे साँई । २. टाल-मटोल करना । उ० क्यों तरह देते हो, बड़ी ज़रूरत है, दे दो । ३. पूर्ति के लिए समस्या देना । उ० तरह दे रहा हूँ, पूरा करके लाना ।

तराका खाकर गिरना—गश खाकर या बेहोश होकर गिरना । उ० वह तराका खाकर गिर पडा ।

तराका खाना—१ बेहोश होना । २ कमी होना । तोड होना ।

तराज़ू हो जाना—१ दो सैनिक बलों का इस प्रकार बराबर होना कि कोई किसी को परास्त न कर सके । उ० कोरिया का युद्ध तो तराज़ू हो गया है । २. तार का बदन में घुस कर आधा-आधा दोनो ओर निकला रहना ।

तरारा भरना—१ तेज या सरपट दौड़ना । उ० हिरन तरारा भरता हुआ निकल गया । २ जल्दी-जल्दी कोई काम करना ।

तरारा मारना—बढ़-बढ कर बाते करना । डींग हाँकना । उ० क्या तरारा मार रहे हो, तुम्हारे घर का सब हाल मै जानता हूँ ।

तराविश करना—१. टपकना, ज़ाहिर होना । उ० तुम्हारी बातें ही तराविश करती हैं कि तुम चोर हो । २ चूना टपकना । उ० छत तरा-विश कर रही है ।

तरास लगना—प्यास लगना । उ० गर्मी के दिनो में खूब तरास लगती है ।

तरीक़ा बरतना—नियम पालन करना । उ० ऐसा तरीक़ा बरतना चाहिये जो जीवन भर निबह सके ।

तरी होना—१. प्रसन्नता होना २ धन का होना।

तरे बैठना—पति बनाना। उ० तुम भी किसी के तरे बैठ जाओ।

तरेर कर देखना—क्रुद्ध दृष्टि से देखना।

तलछूँ-मलछूँ करना—चुलबुलापन दिखाना।

तलधार-मौसलधार बरसना—खूब ज़ोर की बारिश होना। उ० आज तो तलधार-मौसलधार बरसने की आशंका है।

तलपट करना—उजाडना, बरबाद करना।

तलब करना—१ पेश करना। बुला भेजना। उ० उस तारीख़ पर सब चोरों को तलब करना। २ माँगना या मँगाना। उ० उसने तो मुक़दमे का पूरा विवरण तलब किया है।

तलमलाता फिरना—बेचैन घूमना। व्याकुल होकर फिरना। उ० सारा धन चोरो ने ले लिया, बेचारा तलमलाता फिरता है।

तलवा खुजलाना—१ सफर की आदत पडना। २ यात्रा का शकुन बनना। उ० तलवा खुजला रहा है, कुछ अच्छा ही होगा।

तलवा चाटना—खुशामद करना।

तलवा छलनी होना—चलते-चलते पैर मे घाव हो जाना।

तलवा धो-धो कर पीना—आदर-सत्कार करना।

तलवा न टिकना—कहीं एक जगह जम कर न रहना। उ० उसका तलवा तो टिकता ही नहीं है, वह क्या नौकरी करेगा?

तलवा न भरना—दे० 'तलवा न टिकना'।

तलवा नहीं मारना—दे० 'तलवा न टिकना'।

तलवार करना—तलवार चलाना। उ० तलवार करो, फिर देखा जाएगा।

तलवार का खेत—युद्ध का मैदान। उ० तलवार के खेत मे जो मरेगा, स्वर्ग जायगा।

तलवार का घाट—वह स्थान, जहाँ से तलवार में टेढापन आरंभ होता है।

तलवार का छाला—तलवार के फल मे उभरा हुआ दाग।

तलवार का धनी—तलवार चलाने में निपुण।

तलवार का पानी पीना—युद्ध करना।

तलवार का बल—१ अस्त्र-शस्त्र का ज़ोर। उ० तलवार का बल ही युद्ध मे सहायता करता है। २ कटार की वक्रता। उ० इस तलवार का बल दूर करो।

तलवार का हाथ—१ तलवार चलाने का तरीक़ा। उ० उसे तलवार के हाथ खूब मालूम है। २ तलवार का आघात। उ० उसने तो तलवार का हाथ खूब किया।

तलवार की आँच—दे० 'तलवार की आग'।

तलवार की आग—तलवार के वार का सामना। उ० तलवार की आग विरले ही सहते है।

तलवार की छाँह में—१. तलवार से सुसज्जित योधाओं की संरक्षता मे। उ० बड़े-बड़े राजा तलवारो की छाँह मे ही निकलते है। २. समर-भूमि मे। उ० दोनों दल तलवार की छाँह में निपट लेगे।

तलवार की धार पर चलना—बहुत कठिन काम करना। उ० बहादुर सदा तलवार की धार पर ही चलते है।

तलवार के घाट उतारना—तलवार से मारना। उ० डाकुओ ने उसे तलवार के घाट उतार दिया।

तलवार तोलना—पूरा वार करने के लिए तलवार को अच्छी तरह सँभालना। उ० तलवार तोल कर ऐसा मारो कि दो टुकड़े हो जायँ। है किसके आज ज़ालिम फिर कत्ल का इरादा। हरदम जो तोलना है तलवार ताबा गरदन।

तलवार पर हाथ रखना—१. तलवार की क़सम खाना। उ० सैनिको! तलवार पर हाथ रक्खो कि पीछे न हटोगे। २ मारने के लिए तलवार निकालना। उ० तलवार पर हाथ न रखो, नही तो ठढा कर दूँगा।

तलवार पर पानी चढ़ाना—युद्ध के लिए तैयार होना।

तलवार पर मखमल का गिलाफ चढ़ा होना—बाहर से भला तथा भीतर से बुरा होना।

तलवार बरसना—तलवार से मार-काट होना। उ० चित्तौड़ की भूमि पर अनेक बार तलवारें बरस चुकी है।

तलवार बाँधना—तलवार को कमर मे लटकाना।

तलवार में बल पड़ना—१ तलवार की धार में खराबी होना। २. हारने की निशानी दिखाई पड़ना।

तलवार म्यान में करना—जान न लेने की इच्छा करना। न मारना। उ० राजपूत स्त्रियों को देख कर तलवार म्यान मे कर लेते हैं।

तलवार म्यान से बाहर रहना या होना—लड़ने को तैयार रहना या होना।

तलवार सिर पर लटकना—आसन्नविपत्ति होना या विपत्ति में होना। उ० तुम्हीं बताओ, मैं चैन से कैसे सोऊँ, जबकि सिर पर तलवार लटक रही है।

तलवार सूंतना—तलवार म्यान से बाहर करना। उ० राजपूतों ने तलवार सूंत कर क़सम खायी कि जीवन पर्यन्त देश की रक्षा करेंगे।

तलवार सौंतना—दे० 'तलवार सूंतना'।

तलवे की धूल होना—दे० 'पैर की धूल होना'।

तलवे चाटना—चापलूसी करना। उ० कब तलक बलवे रहेंगे देश में। कब तलक हम चाटते तलवे रहें।

तलवे छलनी होना—बहुत दौड़-धूप करना। उ० इस मुक़दमे में उसके तलवे छलनी हो गये, पर दुश्मनों का बाल तक बाँका न हुआ।

तलवे-तले आँखों मलना—१ दे० 'तलवे-तले मेटना'। २. दे० 'तलवे चाटना'। ३. अत्यत प्रेमभाव दिखाना। उ० वह दिखावटी ही तलवे-तले आँख मलता है। ४. दीनता प्रकट करना। उ० बेचारा तलवे-तले आँखें मलता है, कुछ दे दो।

तलवे-तले हाथ धरना—दे० 'तलवे चाटना।

तलवे धो-धो कर पीना—१ श्रद्धा-भक्ति दिखाना, बडी सेवा करना। २. खुशामद करना। उ० मै किसी के तलवे धो-धो कर पीने वाला आदमी नहीं हूँ।

तलवे सहलाना—१. दे० 'तलवे-तले हाथ धरना'। २. बड़ी सेवा-सुश्रूषा करना। उ० वह आजीवन अपने पिता के तलवे सहलाता रहा।

तलवों की आग माथे तक पहुँचाना—अत्यधिक क्रोध तथा ईर्ष्या होना।

तलवों-तले चाँदनी-सा बिछा रहना—पूरी तरह वश में रहना।

तलबों-तले मेटना—रौद डालना, कुचल कर नष्ट-भ्रष्ट कर देना। उ० सब दुश्मनों को तलबों-तले मेट कर साँस लूंगा।

तलवों में से तेल निकलना—१. बहुत कंजूस होना। उ० धनी तो है, परन्तु तलवों में से तेल ही निकलता है। २. पैरों को कष्ट होना। उ० वह इतना कंजूस है कि तलवों से तेल निकल जाता है, परन्तु सवारी के लिए पैसा नहीं खर्च करता।

तलवों में से तेल निकालना—१. कंजूसी करना। उ० जहाँ इज़्ज़त का प्रश्न है, तुम्हें तलवों मे से तेल नही निकालना चाहिये। २. दूर तक पैदल ही चलाना। उ० तुमने तो आज तलवों में से तेल निकाल दिया।

तलवों से आँखें मलना—१ बहुत प्रेम-भाव दिखाना। उ० तुमने रोज तलवो से आँख मल ही कर क्या किया, जब समय पर काम न आए! २. अत्यन्त दीनता दिखाना। उ० वह तो रोज ही तलवों से आँखें मलता है, क्या करूँ। ३. दे० 'तलवो-तले मेटना'।

तलवों से आग लगना—अत्यन्त क्रोध चढ़ना। उ० उसकी ऊटपटाँग बाते सुनकर तो मेरे तलवो से आग लग गई।

तलवों से मलना—दे० 'तलवे-तले मेटना'।

तलवों से लगना—१. बुरी या जलाने वाली लगना। उ० तुम्हारी बातें तो तलवों से लगती है। २ कुढाना, बुरा लगना। उ० हमारी कमाई तुम्हारे तलवों से क्यो लगती है?

तलवों से लगना सिर में जाकर बुझाना—क्रोध से सारा शरीर काँपना, बहुत क्रोध आना। सिर से पैर तक क्रोध चढना। उ० अपमान-जनक बातें सुन कर तो सभी को तलवों से लगती है और सिर मे जाकर बुझाती है।

तलाशी देना—घर-बार खोजने देना। तलाशी लेने की आज्ञा देना। उ० वह बड़ा स्पष्ट आदमी है, तुरन्त तलाशी देने को तैयार हो गया।

तलाशी देना—हर एक चीज को अच्छी तरह देखना। उ० आप उस वस्तु के लिए उसकी तलाशी तो ले सकते हैं, मगर चीज़ नही मिली तो?

तले-ऊपर के—तरुपरिया, एक के बाद दूसरा। उ० ज्यादातर यह देखा जाता है कि तले-ऊपर के लड़कों में नहीं पटती।

तले-ऊपर जी होना—१. जी मतलाना। उ० बाज़ार की पूड़ी खा लेने से जी तले-ऊपर हो रहा है। २. दिल घबड़ा जाना। उ० गर्मी में तम्बू के नीचे बैठे-बैठे जी तले-ऊपर होने लगा।

तले-ऊपर होना—१. संभोग मे प्रवृत्त होना। २. उथल-पुथल होना। उ० उस चोरी को मामूली न समझो। उसी के कारण आज चार दिन से सारा शहर तले-ऊपर हो गया है।

तले की दुनियां ऊपर होना—१. बहुत अन्तर हो जाना। उ० विज्ञान के कारण आज तले की दुनिया ऊपर हो गई है। २ चाहे जो हो जाना। उ० तले की दुनिया ऊपर हो जाय, पर मैं अब अवश्य बदला लूंगा।

तले की सांस तले और ऊपर की ऊपर रह जाना—१ भौंचक्का रह जाना। उ० उसका विचित्र रूप देखकर मेरी तले की सांस तले और ऊपर की सांस ऊपर रह गई। २ भय से जड़वत् हो जाना। उ० अँधेरे में भूत का ख्याल करके मेरी सांस तले की तले और ऊपर की ऊपर रह गई।

तवा-सा मुंह होना—काला मुंह होना।

तवा सिर से बांधना—आघात या आक्रमण सहने के लिए पहले ही से सुरक्षित रहना। उ० आप ही अच्छे है कि अभी तवा सिर से बांध लिया।

तवे का हंसना—तवे के कालिख का ज्यादा जल कर लाल हो जाना। [यह घर में कलह का कुलक्षण माना जाता है।] उ० आज तो तवा हँस रहा है। हे भगवान! क्या होगा?

तवे की बूंद होना—१ कुछ प्रभाव न पड़ना। उ० आपकी बातें तो उसके लिए तवे की बूंद हैं, फिर आप क्यों कहते है? २ इतना कम होना, जिसमे संतोष न हो। उ० खिलाना हो तो खूब खिलाओ, इतना-सा तो तवे की बूंद है। ३. क्षणिक होना। उ० आज के नौजवानों का जोश तवे की बूंद होता है।

तशरीफ़ रखना—१ विराजमान होना। बैठना। उ० आइए, तशरीफ रखिये। २ रहना। उ० आप तो वहीं तशरीफ़ रखते है।

तशरीफ लाना—विराजना, आना। उ० कभी-कभी मेरे यहाँ भी तशरीफ़ लाया करें।

तशरीफ ले जाना—चले जाना। उ० अच्छा महाराज, अब यहाँ से आप तशरीफ़ ले जाइये, मेरे पास ज्यादा समय नहीं है।

तश्त अज़बाम होना—भेद खुल जाना, भंडाफोड़ होना। उ० तश्त अज़बाम हो गया, अब तुम नहीं बच सकते।

तसफ़िया करना—निर्णय करना। उ० गाँव के चार आदमी मिलकर जो तसफिया कर देंगे, उसे मैं मान ही लूंगा।

तसबीह फेरना—माला फेरना। माला जपना। उ० अंतःकरण को साफ करो, केवल तसबीह फेरने से स्वर्ग न मिलेगा।

तसमा खींचना—किसी विशेष विधि से गला घोटना। उ० कारण के बारे मे कोई कुछ भी नहीं जानता, क्योंकि रात को उसका तसमा खींचा गया है।

तसमा बाँधना (किसी का)—खुशामद या आदर करना।

तसमा लगा न रखना—निधड़क गरदन काट कर साफ़ कर देना। उ० यदि आपकी यही हरकत रही तो वह तसमा लगा न रखेगा।

तसलीम करना—मानना, अंगीकार करना। उ० मुहम्मद तुग़लक इतना ज़िद्दी था कि वह गलती करके भी अपनी गलती तसलीम नहीं करता था।

तसल्ली दिलाना—धीरज बँधाना, संतोष देना। उ० बेचारे पर विपत्ति पड़ी है, ज़रा तसल्ली तो दिला आओ। एक तुम ही तो पड़ोसी हो।

तसवीर बन जाना—मूर्ति-सा रह जाना, अचल रह जाना। उ० ताजमहल के सौंदर्य को देखकर प्रायः लोग तसवीर बन जाते हैं।

तसवीर हो जाना—दे० 'तसवीर बन जाना'।

तस्दीक़ करना—१. साबित करना, गवाही देना। २ प्रामाणिक कहना।

तस्दीया उठाना—कष्ट सहना। सर-दर्द लेना। उ० तुम्हारे लिए उसने इतना तस्दीया उठाया और तुम उससे मिलने तक नहीं गए।

तस्दीया देना—कष्ट देना।

तह करके रखना—१. अनावश्यक होना, आवश्यकता न होने पर रखना। उ० तुम तो तह करके रखो और मैं पहनने को तरसूं। २. कपड़ा आदि अच्छी तरह हिफ़ाजत से रख देना। उ० इसे तह करके रख दो।

तह करना—ठीक से मोड़ना। तह लगाना। उ० कोट को तह करके रख दो।

तह का सच्चा—हृदय का सच्चा। उ० कलिकाल मे तह के सच्चे हैं कहाँ?

तहक़ीक करना—जाँच करना। उ० तहक़ीक करने के लिए कोई साहब आ रहे हैं।

तहक़ीक़ात आना—किसी मामले की जाँच के लिए सरकारी कर्मचारियों का आना। उ० कल के डाके की तहक़ीक़ात आती ही होगी।

तह की बात–१. वास्तविक बात। उ० तुम्ही तो एक ऐसे अपने हो, जिससे कि तह की बात भी बता देता हूँ। २ दिल की बात। ३. रहस्यपूर्ण बात।

तह को पहुँचना–१. वास्तविक बात का पता लगाना। तथ्य तक पहुँचना। उ० इस मामले में तह को पहुँचना बड़ा मुश्किल है। २ हृदय का पता पाना। उ० वह इतना कपटी है कि उसकी तह को पहुँचना सबके मान का नहीं।

तह जमाना–१. कस कर भोजन करना। उ० ऐसा तह जमा रहे हो कि जैसे चार दिन के उपासे हो। २. तह करना। किस चीज की तह इतनी सावधानी से जमा रहे हो ?

तह तक पहुँचना–दे० 'तह को पहुँचना'।

तह तोड़ना–१. झगड़े का निर्णय करना। उ० सरपंच ने दोनो के झगडों की तह तोड दी। २. कुएँ का सब पानी निकाल लेना, जिससे मिट्टी दिखाई देने लगे। उ० आज कुएँ मे तह तोड़ी गई है। ३ कुएँ का तावा तोड़ना।

तह देना–१. एक हल्की परत चढाना। उ० इस पर मिट्टी की तह दे दो। २ तेल आदि डालना। उ० गुलाब की तह दे दो तो महँगा बिकेगा। ३. हलका रंग चढ़ाना। ४ कपड़े को इस्तरी से ठीक करना।

तहबंद सरकाना–१. बेइज्जत करना। २ नस-नस ढीली करना। उ० इस काम से आप-का तहबंद न सरकाया तो कहिएगा।

तह बैठाना–दे० 'तह जमाना'।

तह मिलाना–किसी चीज के जोड़ों (नर-मादा) को मिलाना। उ० मुर्गी की तह मिला दो।

तह लगाना–सरिया कर रखना। ठीक से मोड़ना। उ० इन कपड़ो की तह लगा दो, क्योंकि अब आवश्यकता नही है।

तहलील करना–पचाना। उ० इसे तुम तहलील नहीं कर सकते।

तहलील होना–पचना, हज़म होना।

तहस-नहस करना–बर्बाद करना। उ० सारी मिठाई तहस-नहस कर दी।

तहसील करना–हासिल करना। वसूल करना।

तहोंबाला होना–बर्बाद होना।

तांतड़ी-सा होना–शरीर से दुर्बल होना। उ० ज्वर के कारण वह तांतड़ी-सा हो गया है।

तांत-सा होना–दे० 'तांतड़ी-सा होना'।

तांता बँधना–निरंतर आते रहना, एक के बाद दूसरे का आना। उ० युद्धकाल मे वायु-यानों का तांता बँधा रहता था।

तांता बांधना–१. कतार बाँध कर खड़ा होना। २. बहुत भीड़ लगाना। एक के बाद दूसरे का आता रहना। उ० भाई यहाँ तांता न बांधो. नही तो मैं किसी का भी काम न करूँगा।

तांता लगना–दे० 'तांता बँधना'।

तांतिया जवान–दुर्बल शरीर वाला। उ० हो तो तांतिया जवान और बातें दारासिह की तरह करते हो।

तांवरि आना–बुखार आना, बीमार पड़ जाना। उ० हेंगा देखि के तांवरि आवे, भूसा देख आनन्द।

ताक-झांक करना–सुअवसर की खोज करना, इधर-उधर देखना। उ० आजकल आप किस काम के लिए बड़ी ताक-झांक कर रहे है ?

ताक़त करना–१. बल लगाना। उ० ताक़त करने से शायद उठा सको। २. बली होना, बलवान बनना।

ताक पर रखना–१. प्रयोग मे न लाना। उ० तुम्हारी आदत बड़ी बुरी है कि दूसरे की चीज़ ले जा कर भी ताक पर रख देते हो। अगर तुमने ताक पर रख दी किताब तो कल इम्तहान में क्या दोगे जवाब ? २. टालना, हटाना। उ० इस बात को तो ताक पर रखो, जो सामने है उसे देखो।

ताक पर रहना–कोई उपयोग न होना। उ० बहुत से लड़कों की पुस्तकें साल भर ताक पर ही रह जाती है और वे फ़ेल हो जाते है।

ताक बाँधना–टकटकी बाँधना। उ० ताक बाँध कर देखते रहो, वह कुछ लेने न पाये।

ताक में रहना–अवसर की तलाश में रहना। उ० वह तुम्हें मारने की ताक में सदैव रहता है। ज़रा बच के रहना।

ताक रखना–ध्यान रखना, उचित समय की ताक में रहना। उ० अँग्रेजों में सबसे बड़ी बात यह थी कि वे प्रत्येक मौक़े पर ताक रखते थे। ताक रखो, वह इसी समय इस रास्ते से गुज़रता है।

ताक लगाना—अवसर देखना। उचित मौके की प्रतीक्षा करना। उ० बगला ताक लगाए बैठा है, मछली को देखते ही कूद पड़ेगा।

ताकीद कर देना—किसी काम के सम्बन्ध मे चेतावनी देना। उ० उन्हें ताकीद कर दो, कल जरूर आना है।

तागा डालना—१ सिलाई करना। उ० दर्जी गद्दे मे तागा डाल रहा है। २ सुई मे डोरा डालना। उ० जरा तागा डाल दो, मुझे दिखाई नही दे रहा है।

ताजबख्शी करना—बादशाहत देना।

ताजा करना—१. फिर से याद करना। उ० इन चीजों को ताजा कर लो, शायद वे पूछ बैठें। २ पानी बदलना।

ताजा होना—१. पुन जड़ से प्रारंभ होना। उ० पचायत के कारण मुकदमा फिर ताजा हो गया। २ फिर स्मरण हो जाना। उ० उसकी स्मृति ताजा हो गई।

ताजिया ठंडा होना—१ ताजिये का दफन होना। उ० इस साल का ताजिया न जाने कब ठडा होगा? २. सारी आशाओ का समाप्त होना। उ० अशोक के मरते ही मौर्य-वश का ताजिया ठडा हो गया।

ताजियाना होना—कोड़े लगना।

ताजीम करना—दे० 'ताजीम देना'।

ताजीम देना—१. इज्जत देना। २. किसी के आने पर खड़ा हो जाना।

ताड़ का तिल करना—बड़ी बात को छोटी मानना या समझना।

ताड़ जाना—अनुमान से ही जान लेना। उ० मै तो तुम्हारा चेहरा देख कर ही ताड़ गया कि तुमने अवश्य कोई गलती की है।

तातील मनाना—दे० 'छुट्टी मनाना'।

तान उड़ाना—१ मौज से दिन काटना। उ० पिता की कमाई रखी है, खूब तान उड़ाओ। २. राग अलापना। उ० पेट भर जाने पर सभी को तान उड़ाना आता है।

तान कर—जोर से। बलपूर्वक। उ० जरा तान कर खीचो।

तान कर तमाचा देना—जोर से थप्पड़ देना या मारना। उ० तुमने तो उसको ऐसा तान कर तमाचा दिया है कि अब तक उसका मुंह फूला हुआ है।

तान कर सोना—निश्चित रहना। उ० बहिन की शादी की एक चिंता थी, अब तो तान कर सोना है।

तान की जान होना—लुब्बे-लुबाब या सारांश होना। उ० व्यर्थ बकवाद से क्या फल, तान की जान यह है कि वह बिल्कुल ही मूर्ख है।

तान तोड़ना—गाना समाप्त करना। गाने को विघ्न के कारण बीच मे तोड देना। उ० आपके बोल देने से तान टूट गई।

तान भरना—गाने मे लय या सुर खीचना। उ० थोड़ी-थोड़ी तान भी भरने लगा है।

तान मारना—दे० 'ताना मारना'।

तान कसना या लेना—दे० 'तान भरना'।

ताना देना—व्यग्य करना, ताना मारना, कटूक्ति कहना। उ० वह ऐसा नीच है कि चीज भी ले गया और ताना भी देता है। मुझे क्या ताना देते हो, अपनी हालत देखो।

ताना-बाना करना—व्यर्थ की परिक्रमा करना। बहुत दौडना-धूपना। उ० तुम्हारा ताना-बाना करना व्यर्थ है, क्योकि बिना हमारे गए कुछ भी नही हो सकता।

ताना मारना—व्यंग्य करना। कटूक्ति कहना। उ० तुम तो आजकल ताना मार रहे हो।

ताप आना—क्रोध आना।

ताप बढ़ाना—क्रोध या विरह-भाव को बढ़ाना।

ताबड़-तोड़—एक पर एक लगातार। उ० तुम्हारा तो ताबड़-तोड़ आना-जाना लगा ही रहता है, कभी भी उसे ले जा सकते हो।

ताब न रहना—बर्दाश्त न होना। घबरा जाना। हिम्मत न रहना। उ० इसे सहने की ताब अब मुझमे न रही।

ताबे करना—वश मे करना, क़ाबू मे लाना। उ० उसे ताबे करने के कई रास्ते हैं, पर तुम मानते तो हो नही।

तार-कुतार होना—१. काम विगड़ना। २ मृत्यु के समीप होना।

तार जमना—दे० 'तार बैठना'।

तार टूटना—१. विघ्न पड़ना, कोई गड़बड़ होना। उ० तार टूटने से फिर उस काम को आरभ करने की हिम्मत नहीं हो रही है। २ धारा-प्रवाह टूटना। उ० तार टूट गया है सँभल कर घी डालना, नहीं तो फैल जायगा।

तार-तार करना या कर देना—एक-एक तागा अलग करना। तोड़-फोड़ देना। उ० बंदरों ने मेरी धोती तार-तार कर दी।

तार-तार रोना—अत्यधिक रोना।

तार-तार होना—टुकड़े-टुकडे या अत्यधिक पूरा होना।

तार दबकाना—गोटे के लिए तार को चिपटा करना।

तार देखना—चीनी, गुड़ आदि की चाशनी देखना। उ० गुड का तार देखो, शायद तैयार हो।

तार देना—तार द्वारा जल्दी खबर देना। उ० पिता जी ने आने का तार दिया है।

तार निकालना—सुराग या पता निकालना। पता लगाना। उ० कुछ दिन तो वह छिपा रह सका, पर अत मे पुलिस ने तार निकाल ही लिया।

तार बँधना—सिलसिला लगना। उ० आज कई दिनो से अतिथियों का तार बँधा है।

तार बाँधना—जारी रखना।

तार बैठना या बैठ जाना—काम बनने के योग्य अवसर या समय आना। उ० आप लोगो के आ जाने से हमारी पढ़ाई का तार खूब बैठ गया है।

तार लगना—दे० 'ताँता बँधना'।

तार लगाना—दे० 'तार बाँधना'।

ताराज करना—बरबाद करना। उ० उनका घर ताराज न करो।

ताराज होना—बरबाद होना। उ० उमका घर ताराज हो गया।

तारा टूटना—१ अपशकुन होना। २ तारो का टूट जाना। उ० बान छूटा है कही या कि है तारा टूटा।

तारा डूबना—तारा का अस्त होना। शुक्रास्त होना। उ० कोई शुभ कार्य न करो, क्योंकि तारा डूब गया है।

तारा-सी आँखें हो जाना—आँखें साफ हो जाना।

तारा हो जाना—दूरी के कारण बहुत धुँधला और छोटा दीखना। उ० गुब्बारे तो ऊँचाई के कारण तारे हो गए हैं।

तारीख़ टलना—निश्चित दिन का हट कर आगे नियत होना। उ० हमारे इम्तहान की तारीख टल गई है।

तारीख़ डालना या डाल देना—१. तिथि आदि अंकित करना। दिन निश्चित करना। उ० आपने अभी अपने आने की तारीख़ नहीं डाली है। २. मुकदमा किसी दूसरी तारीख़ के लिए स्थगित करना। उ० मैं जानता हूँ, आज फिर वे तो तारीख़ डाल देंगे।

तारीख़ पड़ना या पड़ जाना—तिथि निश्चय होना। उ० अभी तक उत्सव की कोई तारीख़ नही पड़ी है। मुकदमे की तारीख़ पड़ गई है।

तारीफ़ करते मुख सूखना—बेहद प्रशंसा करना। उ० उनकी तारीफ़ करते-करते तुम्हारा मुख सूख गया, पर कुछ भी असर न हुआ।

तारीफ़ के पुल बांधना—दे० 'तारीफ करते मुख सूखना'।

तारे खिलना—नक्षत्रो का टिमटिमाना। उ० चद्रमा के साथ तारे कैसे खिल रहे हैं?

तारे गिनते रात बिताना—बेचैनी से रात काटना।

तारे गिनना—१. व्यग्रता या उदासी से रात व्यतीत करना। उ० नायिका ने नायक के वियोग मे तारे गिनकर रात बितायी। २. बेकार का काम या असम्भव काम करना। उ० क्या तारे गिन रहे हो?

तारे छिटकना—दे० 'तारे खिलना'।

तारे तोड़ लाना—१. बड़ी मुश्किल से कोई कार्य करना। २ बहुत बड़ा काम करना। उ० बस कीजिए, तारे नहीं तोड लाए है कि इतनी डीग हाँक रहे है। ३. असम्भव काम करना।

तारे दिखाई दे जाना—कमजोरी से धुँधला दिखाई देना, अँधेरा दिखाई देना। उ० अब तो कभी-कभी उसे तारे दिखाई दे जाते है। कल एक ही मील चलने मे तारे दिखाई देने लगे।

तारे दिखाना—१. मुसलमानों मे छः दिन के बच्चे को बाहर लाकर तारा दिखाया जाता है। उसके लिए भी यह मुहावरा प्रयुक्त होता है। २. अधकार छा जाना या हो जाना। उ० एक ही थप्पड मे आँखों के आगे तारे दिखाई देने लगेंगे।

तारे-सी आँखें हो जाना—निर्मल और चमकती आँखें होना। उ० आँख खराब हो गई थी, परन्तु उनकी दवा से तारे-सी हो गई है।

तारों की छाँह—बहुत तड़के। उ० गर्मियों में तारों की छाँह में चलना ही अच्छा है।

ताल उठाना—गाना प्रारंभ करना। उ० हार कर तुमने अन्त में ताल उठाया ही। यही पहले कर दिए होते तो क्या बिगड़ जाता ?

ताल कटना—प्रतिकूल स्थिति होना।

ताल ठोंकना—लड़ने के लिए ललकार देना। ललकारना। उ० गामा ने ताल ठोंक कर विश्व को चुनौती दे दी थी।

ताल पर नाचना—इशारों पर चलना।

ताल-बेताल—१. अनियमित ताल से। उ० क्या ताल-बेताल गा रहे हो ? २. अनवसर से। उ० तुम्हारा काम तो ताल-बेताल होता है। ३ जैसा भी हो। उ० ताल-बेताल उस काम को कर डालना है।

ताल-बेताल होना—गाने-बजाने में नियम-भंगता मे गडबडी होना। उ० नीद के कारण ताल-बेताल हो रहा है, बन्द करो।

ताल मिलाकर चलना—एकसाथ आगे बढना।

ताल-मेल खाना—१ एक स्वभाव का होना। उ० जब तक ताल-मेल न खाए, तब तक मित्रता कैसी ? २ पटना। उ० उन दोनो मे ताल-मेल खाना सम्भव नही है।

ताल-मेल बैठना—दे० 'ताल-मेल खाना'।

ताला जकड़ना—ताला बन्द करना। उ० किरायेदार ने एक माह से मकान मे ताला जकड रखा है।

ताला जोड़ना—दे० 'ताला जकडना'।

ताला तोड़ना—ताला तोड कर चोरी करना। उ० शहरो मे रोज ही ताले तोडे जाते है।

ताला भिड़ना—१. ताला बंद होना। उ० तुम्हारे कमरे मे तो ताला भिड गया है। २ नष्ट-भ्रष्ट होना। उ० गरीबों की आह से अमीरों का ताला भिड़ जाना कोई असम्भव नही है।

ताला भेड़ना—ताला बद करना। उ० तुम ताला भेड़ कर बाज़ार चल देते हो और मैं बैठा रास्ता देखा करता हूँ, यह कहाँ की शराफ़त है ?

ताली एक हाथ से न बजना—एक व्यक्ति के कारण ही झगड़ा न होना।

ताली न बजना—निरादर होना। भाषण या कविता आदि का न पसंद किया जाना। उ० करपात्री जी के भाषण के अत में भी ताली नहीं बजी।

ताली पीटना—दे० 'थपड़ी पीटना'।

ताली बजाना—दे० 'थपड़ी पीटना'।

ताली पिट जाना—१. उपहास होना। २. प्रशंसा होना।

तालू उठाना—तुरन्त जन्मे हुए बच्चे के तालू को दबा कर ठीक करना।

तालू उठाने के दिन—शैशवावस्था।

तालू में दाँत जमना—बुरे दिन आना। उ० अब तुम्हारे तालू में दाँत जम रहे हैं।

तालू से जीभ न लगना—बोलते ही रहना। उ० वह इतना बडा वाचाल है कि उसके तालू से जीभ तो लगती ही नही।

तालू से जीभ लगना—चुप रहना।

ताव आना—१. जोश आना। उ० इस समय तो मेरा ताव आया है और तुम कहते हो कि कल चलेंगे। २ क्रोध आना। उ० तुमको तो छोटी बात पर भी ताव आ जाता है। ३. मैथुन की इच्छा होना।

ताव खाना—दे० 'ताव खा जाना'।

ताव खा जाना—१ अधिक आँच से जल जाना। उ० सारा दूध ताव खा गया है। २. क्रोधित होना। उ० कुछ सोच-विचार नही करता है, तुरन्त ताव खा जाता है। ३ गरम करना। उ० अनेक ताव खा जाने पर तो चीज़ बनी है। ४. गरम वस्तु का ठडा होना। उ० लोहा ताव खा गया है।

ताव चढ़ना—१ सुअवसर के कारण कार्य करने की आकाक्षा होना। करने का जोश होना। उ० रोज तो सोते रहते है और आज ताव चढ़ा है तो रात भर पढने रहेंगे। २. कामदेव का प्रकोप होना, ३. मैथुन करने की इच्छा होना।

ताव दिखाना—१ अहकार-मिश्रित क्रोध करना। उ० छोटों पर सभी ताव दिखाते है। २ रोब दिखाना।

ताव देना—१. क्रोध-मिश्रित अभिमान दिखाना। उ० किसके बल पर आप ताव दे रहे है, यहाँ से जाइए, नहीं तो दाँत तोड़ दूंगा। २. आग पर गरम करना। उ० चासनी को थोड़ा और ताव दे दो।

ताव पर—इच्छा के समय। जरूरत के वक्त। उ० कोई तुम्हारे ताव पर कैसे कुछ देगा, जब तुम दूसरे के ताव पर नहीं देते ?

ताव-पेंच खाना—गुस्सा करना।

ताव में आना–१. गर्वपूर्ण क्रोध मे चूर होना। उ० ताव में आकर तो तुम सब काम बिगाड़ देते हो। २. जोशयुक्त रोब में आना। उ० ताव में आकर आपने उसे लौटा दिया, अब कौन मोटर चलायेगा।

ताव लगाना–१. लू लगना। उ० उसे ताव लगा है, डाक्टर को दिखाओ। २ आँच लगना, खूब गर्म होना।

तावा खिलाना–दे० 'तावा देना'।

तावा देना–क़बूतरों का चक्कर देना।

तासीर करना–असर करना।

तिकड़म भिड़ाना–चालाकी से युक्ति करना।

तिक्का-बोटी करना–टुकडे-टुकड़े करना, धज्जी-धज्जी करना। उ० नेवले ने साँप की तिक्का-बोटी कर डाली।

तिक्का-बोटी हो जाना–१ बिल्कुल तक़सीम हो जाना। २. हाथों हाथ उड़ जाना।

तिगनी का नाच नाचना–हैरान करना।

तिजोरी में होना–वश मे होना।

तिड़ी भूल जाना–होश-हवाश भूल जाना।

तितली-सा बनना–बहुत सजना-सँवरना। उ० तुम्हारी बीबी तो तितली-सी बनी सदा घूमती रहती है।

तिनक जाना–झुंझला जाना। उ० क्या बात-बात पर तिनक जाते हो? ऐसा करना है तो अपना रास्ता नापो।

तिनका उतारे का एहसान मानना–थोड़े एहसान का बहुत बड़ा एहसान मानना।

तिनका खड़कना–थोड़ी-सी भी आवाज होना।

तिनका चुनना १. नशे में चूर होना। उ० ताड़ी के कारण तो वह तिनका चुन रहा है। २ बहुत छोटा काम करना। ३ घोसला बनाने का उपक्रम करना।

तिनका तोड़ना–१. अपशकुन करना। उ० क्यों तिनका तोड़ रहे हो, यह शुभ नही है। २. संबंध-विच्छेद करना। उ० तुमने उससे तिनका तोड़ लिया है। ३. बच्चे को नज़र से बचाने के लिये तिनका तोड़ कर उपचार करना। उ० छोटा बच्चा है, तिनका तोड़ लो, ताकि नजर न लगे।

तिनका दाँतों में पकड़ना–बहुत नम्रता से विनय करना, गिड़गिड़ाना। उ० इतना सीधा है कि सदा दाँतों में तिनका पकड़ कर ही बोलता है।

तिनका दाँतों में लेना–दे० 'तिनका दाँतों में पकड़ना'।

तिनका न रहना–१. कुछ भी न बचना। उ० जमींदार ने सब कुछ ले लिया, एक तिनका भी न रहा। २. बहुत सफ़ाई होना। उ० मकान में बड़ा कूड़ा था, पर आज एक तिनका नहीं है।

तिनका भी न तोड़ना–हरामखोरी करना। उ० सारा दिन तुम तिनका भी नहीं तोड़ते, कब तक बैठ कर खाओगे।

तिनका भी न तोड़ सकना–अति निर्बल हो जाना। उ० अधिक दिन बीमार रहने के कारण वह तिनका भी नही तोड़ सकता।

तिनका सर से उतरना–किसी पर थोड़ा-सा एहसान करना।

तिनके का सहारा–कुछ भी या जरा भी सहारा। उ० डूबते को तिनके का सहारा भी बहुत है।

तिनके की ओट पहाड़ छिपाना–थोड़ी बात में बड़ी बात का छिपाना। उ० साफ-साफ़ कहो, तिनके की ओट पहाड़ नही छिप सकता।

तिनके का मार भी न सहना–तनिक-सी मार भी न सहना, कोमल होना।

तिनके को पहाड़ कर दिखाना–बहुत बढा-चढा कर कहना। उ० क्या तुम भी तिनके को पहाड़ कर दिखाते हो? वहाँ सौ आदमी भी नहीं थे और तुम हज़ारों कह रहे हो?

तिनके को पहाड़ करना–छोटी बात बड़ी बनना। उ० आम जनता में तो तिनके का पहाड़ करना कोई असंभव नही है। हमारी पौराणिक कथाएँ इसी प्रकार तो बनी हैं।

तिनके चुनना–१. बेकार काम करना। उ० तिनके चुनने से थोड़े काम चलेगा, कहीं कुछ ठीक से काम करो। २ पागल होना। उ० वह तो तिनके चुनता है।

तिनके चुनवाना–१. पागल बना देना। २. मोह लेना, मोहित करना।

तिरछी आँखों से देखना–१ क्रोध से देखना। २. अनिष्ट करना। ३ कटाक्ष करना।

तिरछी चितवन–१. बगल की नजर। उ० तिरछी चितवन से क्यों देखते हो, क्या सीधे देखने मे कुछ डर है? २ प्रेम या कटाक्ष भरी आकर्षक दृष्टि। उ० उसकी तिरछी चितवन किसको नहीं मोहती?

तिरछी नजर–दे० 'तिरछी चितवन'।

तिरछी बात १. अप्रिय बात। उ० उसकी यह आदत है कि सबसे तिरछी बात कहता है। २. ऐसी बात जो जल्दी समझ मे न आये। तिरछी बात करोगे तो मैं उत्तर कैसे दूंगा।

उ० **तिरछे वचन**–दे० 'तिरछी बात'।

तिरभिर होना–खफ़ा या नाराज होना। उ० क्यों तिरभिर हो रहे हो?

तिरिया-चरित्तर–१ स्त्रियो का रहस्य। उ० तिरिया-चरित्तर भगवान भी नही जान सकते। २ स्त्रियों का ढोंग या विचित्र चरित्र। नखरापूर्ण ढोंग। उ० यहाँ तिरिया-चरित्र न फैलाओ।

तिलक चढ़ना या चढ़ाना–१. विवाह की एक रस्म होना या करना।

तिल का ताड़ करना–दे० 'तिनके का पहाड़ दिखाना'।

तिल का ताल बढ़ा लेना–छोटे को बहुत बड़ा कर लेना। उ० तुम भली चाह को समझ लो तिल, ताल होगा उसे बढा लेना। ताल-तिल को न जो बढा पाया, काम आया न तो तिलक देना।

तिल की ओझल पहाड़ होना–दे० 'तिनके की ओट पहाड़ छिपना'।

तिल की ओट पहाड़ होना–दे० 'तिनके की ओट पहाड़ छिपना'।

तिल-चावले बाल–आधे काले, आधे सफ़ेद बाल। उ० उसके तो तिल-चावले बाल हो गए है, वह शादी क्या करेगा?

तिल-तंडुलवत् होना–ठीक से न मिलना। मिलने पर भी तिल और चावल की तरह काला और सफेद अलग-अलग रहना। उ० यह मेल तो तिल-तडुलवत् है।

तिल-तिल–१. क्षण-क्षण। उ० आज उसे बड़ा तेज बुखार है और तिल-तिल पर पानी माँग रहा है। २ थोड़ा-थोड़ा। उ० तिल-तिल से पहाड़ और बूंद-बूंद से समुद्र बनता है।

तिल-तिल का हिसाब–पाई-पाई का हिसाब। उ० आप तिल-तिल का हिसाब ठीक रखे, मै दो-चार दिन मे ही सब देखूंगा।

तिल धरने की भी जगह न होना–थोड़ी भी जगह न होना। उ० उसे इतनी ज्यादा चेचक निकली हुई है कि उसके शरीर पर तिल धरने की भी जगह नही है।

तिल बँधना–शीशे से होकर आए हुए सूर्य के प्रकाश का एक बिंदु पर लगना। उ० तिल बँधे तो आग लग जाए।

तिल भर–१. थोड़ा-सा। उ० बिना युद्ध के तिल भर भी भूमि मै आपको नही दे सकता। २. थोड़ी देर। उ० तिल भर रुको।

तिलमिला उठना–छटपटा उठना।

तिलस्म तोड़ना–गुप्त रहस्य का पता लगाना। उ० तिलस्म तोडने के लिए असाधारण दिमाग चाहिए।

तिलांजलि देना–बिल्कुल छोड देना। उ० इस आदत को तिलाजलि दे दो।

तिलों में तेल न होना–ऐसा होना कि कुछ प्राप्त न किया जा सके। उ० क्या आप उनसे दान माँगने जा रहे है? अरे भाई! उन तिलों मे तेल नही है।

तिलों में तेल निकालना–बहुत किफ़ायतशारी करना।

तिस पर भी–ऐसी हालत में भी। इतने पर भी। उ० उसकी तबियत इतनी खराब थी, तिस पर भी खेलने चला गया।

तिहत्तर के बीजों को पहुँचना–सत्यानाश को पहुँचना, नष्ट होना।

तिहाई मारी जाना–फ़सल न होना। उ० इस वर्ष वर्षा न होने से देश भर की तिहाई मारी गई।

तीखा होना–१ क्रोधित होना। उ० आप उस पर क्यो तीखे हो रहे है? २. तीत या तेज़ होना। उ० मिर्चा बड़ा तीखा है।

तीखे देखना–कटाक्ष करना।

तीतर कर देना–भगा देना। उ० उनके पास जाना बेकार हैं, वह बिना बात सुने ही तीतर कर देगे।

तीतर-बटेर-सा लड़ना–बुरी तरह से लड़ना। उ० यह बच्चे तो सदा तीतर-बटेर-से लड़ते ही रहते है।

तीन कौड़ी का–अत्यन्त तुच्छ।

तीन खाना तेरह की भूख बनी रहना–पाने पर भी असन्तुष्ट बना रहना।

तीन-तेरह करना—अलग-अलग करना। नष्ट-भ्रष्ट या बारह-बाट करना। उ० ईश्वर के लिए इस राज्य को तीन-तेरह न करो।

तीन-तेरह में न रहना—१. किसी झगड़ा-फ़साद में न रहना। उ० वह तीन-तेरह में रहने वाला आदमी नहीं है। २. इधर-उधर के कामो में न रहना। उ० वह तीन-तेरह मे नही रहता।

तीन-तेरह में न होना—१ किसी श्रेणी मे न होना। उ० वह तीन-तेरह मे नही है तो उसे यहाँ बुलाने की कौन आवश्यकता थी ? २. दे० 'तीन-तेरह में न रहना'।

तीन-तेरह होना—तितर-बितर होना। नष्ट-भ्रष्ट होना। उ० उसके मरते ही उसका राज्य तीन-तेरह हो गया।

तीन-पाँच करना—१. इधर-उधर की करना। उ० तीन-पाँच क्या कर रहे हो ? २ टाल-मटोल करना। उ० तीन-पाँच करना चाहते हो या देना चाहते हो, साफ-साफ बतलाओ।

तीन बुलाये तेरह आना—कम लोगो को निमन्त्रित करने पर ज्यादा लोगो का आना।

तीन लोकों से न्यारी मथुरा बसाना—सबसे अलग होना।

तीनों लोक दिखाई देना—१ कुछ न दिखाई देना। उ० ऐसा मारूँगा कि तीनो लोक दिखाई देने लगेगा। उ० उससे बात करने मे तीनो लोक दिखाई देने लगता है।

तीया-पाँचा करना—निपटारा करना। उ० इस झगड़े का आप ही तीया-पाँचा कर सकते है, दूसरे से नही हो सकता।

तीर चलाना—१. उपाय निकालना। उ० इस काम में खूब तीर चलाया था, पर आपकी गलती से सब बेकार हो गया। २. निशाना लगाना। ३ फेकना। उ० अर्ज़ी की एक तीर तुम भी चला दो।

तीर निशाने पर बैठना—बात का सही और वांछित असर होना।

तीर-सा लगना—१ अच्छा न लगना। चुभना। उ० वह सबसे तीर-सी लगने वाली बात कहता है। २. कष्ट देना। उ० तुम्हारा व्यवहार उसे तीर-सा लगा होगा।

तीर हाथ से निकल जाना—स्थिति का वश से बाहर हो जाना।

तीर्थ करना—तीर्थ की धर्म के लिए यात्रा करना। उ० मेरे पिता जी तीर्थ करने गये हैं।

तीसमारखाँ बनना—बहुत बहादुर बनना, अपनी बहादुरी की डींग हाँकना। उ० आप अगर तीसमारखाँ बनते हैं तो उसे पकड़िये।

तीसमारखाँ होना—दे० 'तीसमारखाँ बनना'।

तुक जोड़ना—१. टूटी-फूटी कविता बनाना। उ० वह केवल तुक जोड़ना जानता है। २. उपाय लगाना। उ० तुक जुड़ जाय तो मजा आ जाय। ३. कविता की पक्तियों के अंतिम शब्दों को एक-दूसरे के वज़न पर रखना। उ० आज की कविता मे तुक जोड़ना आवश्यक नहीं है।

तुक मिलाना—दे० 'तुक जोड़ना'।

तुनतुना बँधना—रोब होना। उ० आजकल उसका गाँव मे खूब तुनतुना बँधा हुआ है।

तुन-फुन करना—जली-भुनी बाते करना। उ० तुन-फुन करना हो तो अपना रास्ता नापो।

तुम-ताम करना—१. गाली देना। उ० तुम हर समय तुम-ताम किया करते हो, ज़रा अपनी जबान सँभाल कर रहो, नही तो मार खा जाओगे। २. अशिष्टता से बात करना।

तुम डाल डाल हम पात-पात—होशियार, अत्यधिक चतुर तथा सावधान।

तुरई का फूल होना—चटपट खतम हो जाने वाली चीज होना। उ० यह तो तुरई का फूल है, उसे खतम होने कितनी देर लगेगी ?

तुरकी तमाम होना या हो जाना—घमड जाता रहना, शेखी निकलना। उ० एक ही थप्पड मे तुरकी तमाम हो जाएगी।

तुरत-फुरत—जल्दी, चटपट। उ० काम को तुरत-फुरत कर डालो।

तुर्क होना—विधर्मी होना। उ० तुम तो तुर्क हो, तुम्हारा छुआ मैं नही खा सकता।

तुर्की-बतुर्की जवाब देना—एक-एक बात का जवाब देना, मुँहतोड उत्तर देना। उ० वह तो तुर्की-बतुर्की जवाब देता है, उसके आगे ये क्या बोलेंगे ?

तुर्रा कूटना—१ कोड़े मारना। २ मार कर घोड़े को आगे बढ़ाना।

तुर्रा चढ़ाना—भाँग पीना।

तुर्रा जमाना—दे० 'तुर्रा चढाना'।

तुर्रा-तरार—सुन्दर बालो की लट। उ० उसका तुर्रा-तरार देखने ही लायक है।

तुर्रा यह कि–इस पर भी, इतना और। उ० तुर्रा यह कि खाने के बाद उनको दक्षिणा भी चाहिए।

तुर्रा लेना–दे० 'तुर्रा चढाना'।

तुर्श कहना–कड़ुई बात कहना। उ० तुर्श कहना तो जैसे तुम्हारी छठी में लिखा गया था।

तुर्शरु होना–तीखे मिजाज वाला। उ० तुम तो बड़े तुर्शरु हो।

तुर्शा जाना–खट्टा हो जाना। उ० यह दूध तो तुर्शा गया है।

तुली होना–दृढ़ होना, उद्यत होना।

तुलुल्ली बाँधना–धार छूटना, टोटी जारी होना।

तुले हुए–१. संतुलित, उचित। उ० तुले हुए शब्दों का प्रयोग करना। २. तत्पर, तैयार। उ० वे तुम्हें मारने पर तुले हुए है।

तूँ-ताँ करना–गाली-गलौज करना। उ० तूँ-ताँ न करो, नहीं तो ठीक न होगा।

तूँबी हाथ में लेना–फ़कीर होना। उ० बना भेस जोगन का ले हाथ तूँबी चली डालसी लौ व बदी खुदा की।

तू-तड़ाक करना–१. झगड़ा-फ़साद करना। उ० एक छोटी-सी बात पर वे दोनो तू-तड़ाक करने लगे और अन्त मे लाठी भी चल गई। २. बुरी तरह बहस करना, वाद-विवाद करना।

तू-तड़ाक से बोलना–बहुत असभ्यता से बात करना। उ० आप ऐसे पढे-लिखे व्यक्ति को तू-तड़ाक से नही बोलना चाहिए। वह बेचारा क्या कहता होगा ?

तूती बोलना–१. प्रभाव जमाना। रोब होना। उ० मेरे जिले मे उसकी तूती बोल रही है। २. बहुत धीमी आवाज होना। उ० नक्कारखाने मे तूती बोलना कौन सुन सकता है ?

तू-तुकार करना–दे० 'तू-तड़ाक करना'।

तू-तू मै-मै करना–दे० 'तू-तड़ाक करना'।

तू-तू मैं-मैं होना–लड़ाई-झगड़ा होना। वाद-विवाद होना। उ० उसका ऐसा स्वभाव है कि रोजाना ही दो-चार आदमियो से तू-तू मैं-मैं हो जाया करती है।

तूफ़ान आना–१. जोरों की आँधी आना। उ० उस दिन जब तूफ़ान आया तो मेरा मकान हिलने लगा था। २. आफ़त आना। उ० एक गया, फिर दूसरा तूफ़ान आया।

तूफ़ान उठाना–झगड़ा-झंझट करना; शोर-शराबा करना, विरोध करना।

तूफ़ान जोड़ना–झूठा कलंक लगाना। झूठ-मूठ दोषारोपण करना। उ० तूफ़ान न जोड़ो, मुझे सभी लोग यहाँ जानते हैं।

तूफ़ान बनाना–दे० 'तूफ़ान जोड़ना'।

तूफ़ान बाँधना–दे० 'तूफ़ान जोड़ना'।

तूफ़ान मचाना–१. शोरगुल मचाना। उ० रात में इस समय तूफ़ान मचाना ठीक नहीं है, सब लोग अपने-अपने घर जायँ। २. झगड़ा खड़ा करना।

तूफ़ान लगाना–दे० 'तूफ़ान जोड़ना'।

तूफ़ान बरपा करना–झगड़ा खड़ा करना। उ० वह कोई तूफ़ान बरपा करने के लिए ही यहाँ आया होगा।

तूफ़ानी होना–तेज होना।

तूल-तवाल करना–व्यर्थ मे किसी चीज को बहुत तूल देना। उ० तूल-तवाल क्यो करते हो, किसी तरह काम को खतम करो।

तूल देना–बढ़ाना। उ० मामले को तूल न दो, नही तो बुरा होगा।

तृण को वज्र और वज्र को तृण बनाना–असमर्थ को समर्थ तथा समर्थ को असमर्थ बनाना।

तृण गहना–दे० 'दाँतो मे तिनका लेना'।

तृण गहाना–१. वश मे करना। उ० आप ऐसो को मैं तृण गहा कर छोड़ता हूँ। २. विनीत या नम्र बनाना। ३. नीचा दिखाना। हराना।

तृण तोड़ना–१. नजर बचाने के लिए तिनका तोड़ कर टोटका करना। उ० निरखत छवि जननि तृण तोरी। २. नाता तोडना। उ० मै आपसे तृण तोड रहा हूँ, अब आप मेरे यहाँ न आइयेगा।

तृण पकड़ना–दे० 'तृण गहना'।

तृण पकड़ाना–दे० 'तृण गहाना'।

तृण-बराबर–दे० 'तृणवत्'।

तृणवत्–तुच्छ, तृण की तरह। उ० मै तुम्हारा धन तृणवत् समझता हूँ।

तृण-समान गिनना–तुच्छ समझना।

तृषा बुझना–तृप्ति होना।

तृष्णा मरना–इच्छाओं का अंत होना।

तेज निगाह से देखना–क्रोधित दृष्टि से देखना।

तेरा-मेरा करना–१. मोह-माया में फँसना। उ० तेरा-मेरा करने वाले भला क्या संन्यास लेंगे ? २. किसी वस्तु के लिए झगड़ा करना। उ० छोटी-छोटी चीज के लिए तेरा-मेरा करना तुम्हे शोभा नहीं देता।

तेल जल चुकना–खत्म होना । समाप्ति नजदीक आना । उ० आपका भी तेल अब जल चुका ।

तेल निकालना–१. बहुत मेहनत कराना । दुर्दशा कर डालना । उ० दिन भर घाम में काम करवाते-करवाते तेल निकाल लेता है, अब मैं इसके यहाँ न रहूँगा । २. सार निकाल लेना । उ० तेल निकाल कर सिट्ठी छोड़ दी ।

तेल लगाना–दे० 'मक्खन लगाना' ।

तेली का बैल होना–हर समय काम मे लगे रहना । उ० आजकल तेली के बैल होने पर भी भरपेट भोजन नही मिलता ।

तेली होना–गंदा रहने वाला होना ।

तेवर चढ़ना–१. क्रोधित होना । उ० उनके तेवर चढ़े हैं, आज कुछ न माँगो । २ दे० 'तोता-चश्म होना' ।

तेवर चढ़ाना–क्रोधित होना ।

तेवर पर बल चढ़ना–दे० 'तेवर चढ़ना' ।

तेवर बदलना–दे० 'तेवर चढ़ना' ।

तेवर बिगड़ना–१ दे० 'तेवर चढ़ना' । २. चेहरे का बदरंग हो जाना । ३ मृत्यु के चिह्न चेहरे पर दिखाई देना ।

तेवर बुरे दीखना–१. प्रेम मे अन्तर पड़ना । उ० उनके तेवर बुरे दीख रहे हैं । अब मैं यहाँ नही रहूँगा । २ क्रोधित दिखाई पड़ना ।

तेवर बुरे नजर आना–दे० 'तेवर बुरे दीखना' ।

तेवर मैले होना–१ आँख से उदासी प्रकट होना । उ० आज क्या बात हो गई है कि आपके तेवर मैले हैं ? २ क्रोधित होना ।

तैश दिलाना–क्रोध चढ़ाना । उ० तैश न दिलाओ, नही तो कुछ कर बैठूंगा ।

तैश में आना–गुस्सा करना । क्रोध में आना । उ० मैंने तैश मे आकर आपको कुछ कह दिया, माफ़ करेंगे ।

तोंद निकल आना–पेट फूल आना, बहुत मोटा हो जाना । उ० ग़रीबों की कमाई खाकर अमीरो की तोंद निकल आती है ।

तोंद पचना–१. शेख़ी निकलना । २. मोटाई दूर होना । उ० एक ही मुक़दमे मे तोंद पच जाएगी ।

तोड़-जोड़ करना–मोल-भाव करना ।

तोड़े उलटना–बहुत धन या रुपया देना । उ० आपने यहाँ तोड़े नही उलटे हैं कि आपको मुफ्त दिलाऊँ ।

तोताचश्म होना–बेमुरव्वत होना । उ० वह तो तोताचश्म है ।

तोताचश्मी करना–बेमुरव्वती करना । उ० आज आप तोताचश्मी कर रहे हैं, और अपनी बार रोने लगते हैं ।

तोता पालना–१. रोग जान कर बढ़ने देना । २. किसी दुश्मन की परवरिश करना । ३. किसी बुरी आदत को न रोकना ।

तोते उड़ जाना–सिटपिटा जाना, घबरा जाना ।

तोते की तरह आँखें फेरना–१. बहुत निर्दयी होना । उ० उनकी यह आदत है कि काम पड़ने पर तोते की तरह आँखें फेर लेते हैं और इस तरह बहुत मीठी-मीठी बातें करते हैं । २. बिना शील का होना ।

तोते की तरह आँखें बदलना–दे० 'तोते की तरह आँखें फेरना' ।

तोते की तरह पढ़ना–बिना समझे-बूझे याद करना । उ० तोते की तरह पढ़ना बेकार है, समझ-बूझ कर याद करो ।

तोते की तरह पढ़ाना–बहुत परिश्रम से पढ़ाना या सिखाना । उ० दो महीने से तोते की तरह पढ़ा रहा हूँ, पर तुम्हारी समझ में खाक नही आता ।

तोप कीलना–तोप का मुँह बंद करना ।

तोप के मुँह पर रख कर उड़ाना–बुरी तरह मारना । मरने की सज़ा देना । उ० तोप के मुँह पर रख कर मुझे उड़ा देना, मैं तुम्हारी नहीं सुनता ।

तोप के मुँह में मेख ठोंकना–तोप का मुँह बंद करके उसे बेकार कर देना । उ० बहुत-सी पुरानी तोपों के मुँह में मेख ठोंक दी गई है ।

तोबड़ा चढ़ाना–बोलने से रोकना, मुँह बंद करना ।

तोबा करना–१. न करने की क़सम खाना । उ० आज से बुरे कामों के लिए तोबा करता हूँ । २. घृणा करना । ३. दूर करना । उ० तोबा करो ऐसे खाने को ।

तोबा-तिल्ला करना–रोते-चिल्लाते या दीनता दिखाते हुए तोबा करना । उ० क्या तोबा-तिल्ला करते हो, तुम्हे मैं नहीं जानता क्या ?

तोबा-तिल्ला मचाना–दे० 'तोबा-तिल्ला करना' ।

तोबा तोड़ना–प्रतिज्ञा भंग करके फिर वही काम करना । उ० सुरक्षा परिषद् ने काश्मीर के मामले मे तोबा तोड़ दी ।

तोबा बोलवाना–परीशान करके 'नाहीं' करवाना । उ० आज उनसे तोबा न बुलवाया तो मुझे पठान का जना न मानना ।

तोबा से कहना–घमंड छोड़ कर कहना । उ० मैं तोबा से कहता हूँ कि मैंने उनको हर तरह से हराया है ।

तोर-मोर करना–अपना-पराया करना ।

तोरई छौंकना—बात को और रंग देना।

तोहमत का घर—वह कार्य या स्थान, जिसमें वृथा कलंक लगने की संभावना हो। उ० तोहमत के घर में घुसकर साफ़ रहने की आशा रखना मूर्खता में भी बढ़कर है।

तौर-बेतौर होना—१ हालत चिन्ताजनक होना। उ० मरने में कुछ ही देर जान पड़ती है, क्योंकि प्रातःकाल में ही वह तौर-बेतौर हो गया है। २ रंग-ढंग अच्छा न रहना। उ० संगत के प्रभाव में उसका तौर-बेतौर हो गया है।

तौल-तौल के पड़ना—जूतों की खूब मार पड़ना। उ० आज तो ऐसे तौल-तौल के पड़ेंगे कि छठी का दूध याद आ जायगा।

तौल में ओछा ठहरना—जाँच करने पर निम्न कोटि का ठहरना।

त्यौरी चढ़ना—दे० 'तेवर चढ़ना'।

त्यौरी चढ़ाना—दे० 'तेवर चढ़ाना'।

त्यौरी बदलना—दे० 'त्यौरी चढ़ाना'।

त्यौरी में बल डालना—दे० 'त्यौरी चढ़ाना'।

त्यौरी में बल पड़ना—क्रोध का आभास होना। उ० मजाक में ही उसकी त्यौरी में बल पड़ गया।

त्योहार मनाना—खुशी मनाना। उ० आज तो सभी लोग त्योहार मना रहे हैं।

त्रपा-रंडा—१ छिनाल स्त्री। २. वेश्या।

त्राण करना—रक्षा करना। उ० गरीबों का त्राण कोई नहीं करता है।

त्राहि-त्राहि करना—दया या रक्षा के लिए प्रार्थना करना। उ० आज सारा समाज त्राहि-त्राहि कर रहा है।

त्राहि-त्राहि मचाना—हाहाकार होना। उ० अकाल के कारण सम्पूर्ण देश में त्राहि-त्राहि मची है।

त्राहि-त्राहि होना—दे० 'त्राहि-त्राहि मचना'।

त्रिशंकु रहना—कहीं का न होना, बीच में लटका होना। उ० माता जी के साथ इसलिए नहीं गया कि बहन के साथ जाऊँगा। आज यहाँ आया तो पता चला कि बहन जा चुकी है। मैं अच्छा त्रिशंकु रहा। अब क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आता।

त्रिशूल होना—दुःख होना। उ० जो तोको काँटा बोए, ताको बोउ तू फूल। तोको फूल को फूल है, वाको है तिरशूल।

त्रेता के बीजो में मिलना—नाश होना। उ० ईश्वर करे कि विश्व के शोषक त्रेता के बीज में मिल जायँ। (यह शाप है।)

त्रैलोक्य छानना—बहुत खोजना। उ० त्रैलोक्य छानो, पर उसे पा नहीं सकते।

थ

थइली भर लेना—१ मोटा-झोटा कुछ भी खाकर पेट भर लेना। उ० खाता क्या हूँ, थैली भर लेता हूँ। २ अपने पास अच्छी तरह रख लेना। उ० आप थैली भर लीजिए, और किसी को मिले या नहीं।

थक कर चूर होना—बहुत थक जाना। उ० आज के काम में तो मैं थक कर चूर हो गया हूँ।

थका मारना—पदा मारना, दिक कर देना। परीशान कर देना। उ० तुमने तो उन्हें थका मारा।

थड़म-थड़म होना—जलील या बेइज्जत होना। उ० मैं वहाँ थड़म-थड़म होने नहीं जा सकता।

थड़म-थड़म करना—लानत-मलामत करना, थू-थू करना, बुरा-भला कहना।

थपड़ी पीटना—१. मज़ाक उड़ाना। उ० उनके खड़ा होते ही इतनी थपड़ी पीटी गई कि बिना बोले ही बैठ गए। २ निरादर करना। ३. न चाहने का प्रदर्शन करना। उ० आधी ही कविता मैंने सुनाई थी कि लोग थपड़ी बजाने लगे और मैं चला आया। ४ अच्छे होने या चाहने का प्रदर्शन करना। उ० उस दिन उसके भाषण में खूब थपड़ी पीटी जा रही थी।

थपड़ी बजाना—दे० 'थपड़ी पीटना'।

थपेड़े खाना—विपत्ति में पड़ना।

थप्पड़ कसना या कस देना—तमाचा मारना। उ० छोटी-सी बात के लिए तुमने क्यों थप्पड़ कस दिया?

थप्पड़ जड़ना या जड़ देना—दे० 'थप्पड़ कसना'।

थप्पड़ लगाना—दे० 'थप्पड़ कसना'।

थय्यक-थय्या करना—दे० 'थेई-थेई करना'।

थय्यक-थय्या होना—दे० 'थेई-थेई होना'।

थर-थर करना—१ काँपना। उ० वह जाड़े के मारे थर-थर कर रहा था। २ डरना या डर कर काँपना।

थरथरी छूटना या छूट जाना—डर से काँपना। उ० मालिक के आगे नौकर की थरथरी छूटने लगी।

थल-थल करना—मोटा होने के कारण मांसपेशियों का फूलना। उ० इतना मोटा हो गया है कि थल-थल करता है।

थल-थल पिल-पिल होना—मुटापे के कारण ढीला-ढाला शरीर होना।

थल-बेड़ा लगना—ठिकाना लगना। उ० ए० जी० आफिस में बहुतों का थल-बेड़ा लगता है।

थल-बेड़ा लगाना—आश्रय देना। उ० तुमने अभी तक किसी का थल-बेड़ा नहीं लगाया।

थल बैठना—१ आराम या शांति से बैठना। उ० इस समय मैं थल बैठा हूँ, क्योंकि कोई काम नहीं है। २. बेकार बैठना।

थल से बैठना—दे० 'थल बैठना'।

थाँग लगाना—पता लगाना। उ० थाँग लगाने के बाद यही मालूम हुआ कि वह नहीं आयेगा।

थान का टर्रा होना—१ अपने घर पर बल दिखाना। उ० थान का टर्रा तो एक कुत्ता भी होता है।

थान का सच्चा—सीधा जानवर, जो घूम-घाम कर अपने घर आ जाय। उ० तुम्हारी गाय तो थान की सच्ची है।

थान में आना या आ जाना—धूल में लोट कर घोड़े की थकावट मिटाना। उ० घोड़ा थान में आ गया हो तो नाँद पर लगा दो।

थाना चढ़ आना—पुलिस का अधिक संख्या में कहीं आ जाना। उ० उस डाके के कारण वहाँ थाना चढ़ आया है।

थाना बिठाना या बैठाना—सिपाहियों की चौकी बैठाना या पुलिस का पहरा बैठाना या रखना। उ० जब से उपद्रव होने लगा है, तब से हमारे गाँव में भी थाना बिठा दिया गया है।

थाने चढ़ना—थाने में दर्ख्वास्त या रपट देना। उ० कल वाला मुकदमा अभी थाने नहीं चढ़ा है।

थाने-पवाने लगना—अपने उपयुक्त स्थान पर जाना। उ० अब आप अपने थाने-पवाने लगें, यहाँ आपकी आवश्यकता नहीं है।

थाप-थोप देना—दे० 'थोप-थाप देना'।

थाप मारना—छापा मारना, अनजाने में हमला करना। उ० सिकन्दर की सेना ने पोरस पर थाप मार कर जीत लिया।

थाली का बैंगन—१. अविश्वासी या असंतुलित मस्तिष्क का आदमी। उ० तुम्हारे जैसे ही लोग थाली के बैंगन होते हैं। मैं ऐसे मित्रों से दूर ही रहना चाहता हूँ। २. ऐसा आदमी जिसका कोई सिद्धान्त न हो।

थाली फिरना—बहुत भीड़ होना। उ० यहाँ के मेलों में हर साल थाली फिरती है।

थाली बजना—थाली पीट कर मंत्र से विष का खींचा जाना। उ० वहाँ थाली बज रही है, चलो देख आयें।

थाली बजाना—१ साँप का विष मंत्र पढ़ कर थाली के सहारे खींचना। उ० थाली बजाने वाले कामरूप में विशेष मिलते हैं। २ बच्चे की पैदाइश के छठे दिन थाली बजाया जाना। उ० अभी थाली नहीं बजाई गई है।

थाली-लोटा तक बिकना—कंगाल हो जाना, दीवाला हो जाना। उ० कल जो लखपति था, आज उसका थाली-लोटा तक बिक रहा है।

थाह न होना—अन्दाज़ न होना।

थाह पाना—१ स्थिति का सही-सही अंदाज़ लगाना। २ सहारा पाना।

थाह मिलना—१ किसी के धन का पता चलना। उ० आज उनकी भी थाह मिल गयी। २ किसी चीज की गहराई मालूम होना। उ० उस व्यक्ति की थाह मिलना आसान नहीं है। नदी की थाह मिली। ३ ज्ञान का पता चलना।

थाह लगना—दे० 'थाह मिलना'।

थाह लेना—१ किसी का भेद लेना। उ० तुम क्या थाह ले रहे हो, अभी तुमसे अधिक धन है। २ गहराई जानना। उ० इस नदी का थाह लेना कौन कठिन है?

थिगली लगाना—दुर्गम में भी पहुँचने का उपाय करना। उ० फ्रांस वाले चंद्रमा में पहुँचने की थिगली लगा रहे हैं।

थुड़ी-थुड़ी करना—छि:-छि करना, न पसन्द करना, निन्दा करना। उ० पूरा गाँव उसके काम की थुड़ी-थुड़ी कर रहा है।

थुड़ी-थुड़ी होना—बेइज़्ज़त होना।

थुथुना फुलाना—१. नाराज़ होना। उ० मैंने तुम्हें क्या कह दिया, जो थुथुना फुलाये हो।

थुप जाना— लग जाना, किसी बात का अपने ज़िम्मे पड़ जाना। उ० देवे गाली गर कोई, बाज़ार में मुड़ कर न देख, तुझ ही पर थुप जायगी, देखा अगर मुँह मोड़कर।

थूक उछालना—१. व्यर्थ की बकवाद करना। उ० अब तो हार ही गए, व्यर्थ थूक उछालने से क्या लाभ ? २. बदनामी करना।

थूक कर चाटना—१. प्रतिज्ञा करके पूरी न करना। उ० थूक कर चाटते हो, शर्म नहीं लगती ? २ एक बार देकर फिर ले लेना। उ० तुम्हारी चीज़ कौन लेगा ? तुम तो थूक कर चाटते हो। ३. बात का पक्का न होना।

थूक देना—१. न पसद करना। उ० उसने रोटी मुँह मे लेकर थूक दी। २. घृणा करना।

थूकना—नफरत करना। उ० उस पर क्यों थूकते हो ?

थूकना भी नहीं—पसद न करना। उ० ऐसी सड़ी मिठाइयों पर हम थूकते भी नही।

थूकने भी न आना—१. बिलकुल तिरस्कृत करके छोड़ देना। २. मामूली काम भी सलीक़े से करने का शऊर न होना।

थूक बिलोना—दे० 'थूक उछालना'।

थूक लगा कर छोड़ना—बहुत परीशान करना। ज़लील करके छोड़ना। उ० थूक लगा कर न छोड़ा तो कहना।

थूक लगा कर रखना—मक्खीचूसी से बटोरना। उ० वह तो थूक लगा कर चीज़ रखता है, जितनी पुरानी चाहो, माँग लो। थूक लगा कर रखने वाले ही धनी हो सकते है।

थूक लगाना—नीचा दिखाना। उ० वह हर समय अपने दुश्मनो को थूक लगाने के फेर में रहता है।

थूक से सत्तू सानना—बहुत किफ़ायत से काम निकालना। कजूसी करना। उ० थूक से सत्तू सानना तुम्हे शोभा नही देता।

थूक से चूहिया जिलाना—अपर्याप्त या अनुपयुक्त साधन से कुछ करना।

थूका करना—थू-थू करते रहना, घृणा करते रहना। उ० साहबीयत में रहेंगे मस्त हम, थूकते हैं लोग तो थूका करें।

थूथन फुलाना—दे० 'थुथुना फुलाना'।

थू-थू करना—पसंद न करना। छिः-छिः करना। उ० आपके इस नीच काम पर सब लोग थू-थू करेंगे।

थू-थू होना—१. शिकायत होना। २. बेइज़्ज़ती होना। उ० इस नीच काम की वजह से चारो ओर थू-थू हो रही है।

थेई-थेई करना—नाचना। उ० देखो छोटा बच्चा थेई-थेई कर रहा है।

थेई-थेई होना—नाच होना। उ० वहाँ जब भी थेई-थेई होती है, वह पहुँच जाता है।

थैली कटना—जेब कटकर रुपये चोरी जाना। उ० मेले मे मेरी ४०० रुपये की थैली कट गई।

थैली करना—बहुत मार मारना। उ० अगर ज़्यादा शरारत करोगे तो थैली कर दूँगा।

थैली काटना—१. जेब कतर कर या चोरी से किसी का रुपया मार लेना। उ० मेरी तो किसी ने थैली काट ली। २ बहुत अधिक हानि पहुँचाना। उ० मेरी तो तुमने थैली काट ली।

थैली खोलना—१. रुपया बाँटना। २ अधिक खर्च करना। उ० इस तरह से थैली न खोलो, नही तो बुढापे मे पछताओगे।

थैली मारना—दे० 'थैली काटना'।

थोक करना—जमा करना। उ० बरसात के लिए सूखी लकड़ी थोक कर लो।

थोड़ा-थोड़ा होना—लज्जित होना, सकुचित होना। उ० क्यों थोड़ा-थोड़ा होती हो, वह तुम्हारी ग़लती नही है। साफ़ (ललाट) सीमी वो तेरी देख के गोरी-गोरी, शम्मा ख़िजलत से हुई जाती है थोड़ी-थोड़ी।

थोड़ा-बहुत—कुछ। उ० थोड़ा-बहुत काम तुम भी कर दो।

थोड़े ही—नही। उ० हम थोड़े ही जाएँगे।

थोथे तीरों से उड़ाना—कुंद छुरी से काटना, सख़्त तकलीफ़ देना। उ० इसे तो थोथे तीरो से उड़ाने मे भी गुनाह नही है।

थोथी बात होना—१. बेकार की बात होना। उ० आज फिर थोथी बात होगी तो कल मैं न आऊँगा। २. झूठ बात होना। ३. निस्सार बात होना।

थोप-थाप देना—मोटी-मोटी रोटी बना देना।

उ० थोप-थाप दो, बहुत महीन की क्या ज़रूरत है ?

थोबड़ा सुजाना—मुंह फुलाना नाराज़ होना।

उ० क्या थोबड़ा सुजाए बैठे हो ?

थोब रखना—जहाज़ को धार पर चढ़ाना।

द

दंग रह जाना या रहना—हैरत मे पडना। हैरान हो जाना, आश्चर्य-चकित रह जाना। उ० मै उसकी बात सुन कर दग रह गया।

दंगल में उतरना—१. घर के जजाल में आना। उ० जब दगल मे उतरोगे तो मालूम होगा कि संसार किसे कहते है। २. कुश्ती लड़ने के लिए अखाड़े मे आना। उ० दो नामी पहलवान दंगल मे उतरे है। ३ किसी लड़ाई या प्रतियोगिता मे किसी की बराबरी मे खड़ा होना।

दंग होना—दे० 'दग रहना'।

दंगा-फसाद करना—झगड़ा-तक़रार करना। उ० क्यो दगा-फसाद करते हो ?

दंड ग्रहण करना या कर लेना—१ सन्यास लेना। वैराग्य लेना। उ० जब उन्होने दड ग्रहण कर लिया तो घर से क्या मतलब। २. सजा देने के लिए तैयार होना।

दंड डालना—१. जुर्माना लगाना। उ० यदि जेल न होगा तो दड तो ज़रूर डाला जाएगा। २ कर लगाना। उ० आजकल पहले से अधिक दड डाल दिया गया है।

दंड पड़ना—हानि होना। उ० इस काम मे हमे काफ़ी दड पड़ा है।

दंड पेलना—१. दंड की कसरत करना। उ० वह बहुत दंड पेलता है। २ पहलवानी करना। उ० तुम तो दड पेलते हो, भला मैं क्या खाकर तुमसे लड़ूँगा।

दंड प्रणाम करना—साष्टाग प्रणाम करना।

दंड भरना—१. हानि पूरी करना। उ० आज तक तो दंड भरना पड़ा है और अब लाभ करने का समय आ गया तो तुमने काम ही बन्द कर दिया। २. अर्थदंड पूरा करना। उ० इस महीने तक दड भरना है।

दंड भुगतना—१. सज़ा सहना। उ० खूब चोरी कर लो, जब दंड भुगतना पड़ेगा तो मालूम होगा। २. जुर्माना देना।

दंड भोगना—दे० 'दंड भुगतना'।

दंड मारना—दे० 'दंड पेलना'।

दंड लगाना—१ दे० 'दंड पेलना'। २. जुर्माना लगाना।

दंड सहना—१ घाटा उठाना। उ० लाभ उन्होंने उठाया और दंड हमे सहना पड़ा। २. दंड भुगतना।

दंत-कटाकट—झगड़ा।

दंश रखना—बैर या द्वेष रखना। उ० वह तुमसे दश रखता है।

दई का खोया—अभागा।

दई का घाला होना—अभागा होना। उ० बेचारा दई का घाला है, उसे न सताओ।

दई का मारा होना—दे० 'दई का घाला होना'।

दई-मारा होना—दे० 'दई का घाला होना'।

दक़ीक़ा बाक़ी न रखना—सब तरक़ीब कर डालना। उ० मुझे नीचा दिखाने के लिए उन्होंने कोई दकीका बाक़ी तो न रखा, पर मेरा कुछ न कर सके।

दक्खिन जाना—मर जाना। दक्षिण दिशा के स्वामी यम है। इसी आधार पर यह मुहावरा बना है। उ० वह तो बराबर दक्खिन जाने की ही गाली दिया करती है। [यह गाली स्त्रियो द्वारा ही प्रयुक्त होती है।]

दक्षिण होना—अनुकूल होना।

दख़ल करना—शासन जमाना। अधिकार करना। उ० उस खेत पर दखल करना हो तो जरा दल-बल के साथ आना।

दख़ल देना—हस्तक्षेप करना, कूद पड़ना। उ० मेरी बात मे तुम दखल न दो, नही तो ठीक न होगा।

दख़ल पाना—अख्तियार पाना। उ० उस मकान पर तो मैं दख़ल पा गया।

दख़ल होना—अख्तियार होना। उ० मेरा तो उस खेत पर कभी दखल हो गया।

दगा करना या देना—धोखा देना, छल करना। उ० वह दगा करेगा, तुम उससे जरा होशियार रहना।

दत्तक लेना—गोद लेना। उ० वंश चलाने के

लिये दत्तक ले लिया तो कौन बेजा बात की ?

दधिसुत-सुत—विद्वान्, पंडित । उ० जिनके हरि वाहन नहीं दधिसुत-सुत जेहि नाहिं ।

दफ़ा करना—१ बेइज्जती के साथ दूर हटाना । उ० अगर ज़्यादा बकबक करोगे तो दफ़ा कर दूँगा । २ समाप्त या खतम करना ।

दफ़ा-दफ़ान करना—दे० 'दफ़ा करना' ।

दफ़ा-दफ़ान होना—रफ़ा-दफा होना, शांत होना । उ० झगड़ा किसी तरह दफा-दफान हो गया ।

दफ़ा-रफ़ा करना—खतम करना । उ० झगड़े को दफ़ा-रफा करो ।

दफ़ा लगाना—कानून या नियम लगाना । उ० उस पर डकैती की दफा लग गई है, अब उसका जीवन चौपट हुआ ।

दफ्तर खोलना—१ विस्तृत हाल सुनाना । उ० आप यहाँ दफ्तर न खोलें, मेरे पास इतना समय नहीं है । २ बहुत कागज-पत्तर इकट्ठा करना, या सामने रखना । उ० तुमने तो पूरा दफ्तर खोल रखा है ।

दफ्तर देखना—हिसाब देखना ।

दबंग होना—रोब-दाब वाला या दबाने वाला होना ।

दबकी मारना—१ गुप्त हो जाना । गायब होना । उ० जब से उस पर चोरी का अपराध लगा है, वह दबकी मार गया है । २ चुप हो जाना, डर कर शांत हो जाना । उ० यों तो बहुत बमक रहे थे, पर उसे देखते ही दबकी मार गए ।

दब जाना—बहुत एहसान मानना ।

दब-दबा के रहना—१ चुपचाप रहना । शांत रहना । उ० दब-दबा के रहो, कोई कुछ सुना देगा तो क्या लाभ ? २ डर कर शांत रहना ।

दबा क्रोध—भीतर दबा हुआ क्रोध ।

दबा बैठना—दे० 'दबा लेना' ।

दबा लेना—१ हड़प लेना । उ० उस नीच ने बहुत से गरीबों का धन दबा लिया । २ कब्जे में कर देना । ३ हराना । उ० तुम उसे दबा लोगे ?

दबाव डालना—किसी काम आदि के लिए किसी पर ज़ोर डालना । उ० दबाव डालो तो शायद काम कर दे ।

दबी आँख से देखना—चोरी-चोरी कनखी से देखना ।

दबी आवाज़ कहना—१ धीमी आवाज होना । अस्पष्ट कहना । उ० जो कुछ कहना हो, ज़ोर से कहो, क्यों दबी आवाज़ कहते हो ? २ भय से कहना । उ० तुम्हारे ऊपर कोई ज़ुल्म नहीं करेगा, तुम दबी आवाज़ से न कहो ।

दबी ज़बान से कहना—१ स्पष्ट न कहना । उ० अपराधी सदा अपने अपराधों को दबी ज़बान से कहता है । २ भयभीत होकर कहना । उ० दबी ज़बान से न कहो, मैं कोई काटाउँ नहीं हूँ ।

दबी ज़बान से बोलना—दे० 'ज़बान दबा कर कहना ।'

दबी बिल्ली का चूहे से कान कटाना—प्रतिकूल परिस्थिति में दुर्बल व्यक्ति का भी हावी हो जाना ।

दबे पाँव—चुपचाप, धीरे से । उ० दबे पाँव जाना ताकि कोई जान भी न सके ।

दबे पाँव निकल जाना—धीरे से चले जाना । उ० दबे पाँव निकल गये, नहीं तो आज बतला देता ।

दबे पैर—दे० 'दबे पाँव' ।

दम अटकना—१. साँस रुकना । मृत्यु के समय साँस रुकना । उ० आज उसकी हालत बड़ी खराब है, दम भी अटक रहा है, शायद अब न बचेगा । २ दमा के कारण साँस का रुकना । ३. आघात या परिश्रम के कारण साँस ठीक से न आना ।

दम आना—साँस फूलने लगना । उ० थोड़ा भी चलता हूँ तो दम आ जाता है, कोई दवा दे दो ।

दम उखड़ना—दे० 'दम टूटना' ।

दम उलझना–चित्त मे व्याकुलता होना। जी घबराना। उ० परिवार की झझटो से दम उलझा हुआ है।

दम उलटना–१. जी घबराना। उ० भाई का पत्र नही आया, दम उलट रहा है। २ किसी कारण से साँस रुकना। उ० कमरे मे हवा और रोशनी नहीं है तो दम उलटना स्वाभाविक है।

दम के दम–थोड़ी भी देर। उ० वह यहाँ आई थी, पर दम के दम भी न रुक सकी।

दम के दम में–बहुत जल्दी। उ० दम के दम में उसने भोजन बना लिया।

दम खिंचना–१ दे० 'दम उखड़ना'। २ दे० 'दम अटकना'।

दम खींचना––१ कुछ न बोलना। उ० वक्त पर तो तुम दम खीच जाते हो। २ गाँजे या चरस का दम लगाना। उ० साधू बाबा अभी तो दम खीच रहे है। ३ हिम्मत बाँधना। ४ साँस ऊपर चढाना। उ० दम खीच कर उठाओ।

दम खुश्क होना–१ एकदम चुप रह जाना। उ० बाप को देखते ही उसके दम खुश्क हो गये। २ डर जाना। ३ घबरा जाना।

दम घुटना–१. साँस रुकना। उ० भाई तुमने तो ऐसे कमरे मे बन्द कर दिया कि मेरा दम घुटने लगा। २ तबीयत घबराना। उ० वह दृश्य देख कर मेरा दम घुटने लगा।

दम घोट कर मारना–गला दबा कर मारना। उ० बेचारे को चोरो ने दम घोट कर मार डाला।

दम घोटना–१ बहुत दु:ख देना। उ० गरीबो का दम घोट कर आपको क्या लाभ होगा? २. साँस न लेने देना। उ० उसका दम न घोटो।

दम चढ़ना–१. साँस जल्दी-जल्दी चलना। उ० काम करते-करते मेरा दम चढ़ गया, अब मैं आराम करना चाहता हूँ। २. किसी के बहकावे मे आना। उ० दम न चढ़ो, नही तो धोखा खाओगे।

दम चुराना–जी चुराना। उ० तुम काम से बहुत दम चुराते हो।

दम छोड़ना या छोड़ देना––मर जाना। उ० उसके इकलौते बेटे ने आज दम छोड दिया।

दम जाना–मर जाना। उ० आज उसका दम जाता रहा।

दम झाँसा देना–धोखा देना। बहकाना।

दम टूटना––मरना, मरने के क़रीब होना। उ० काम छेडा छूटता छोड़े नही टूटता है दम रहे तो टूटता। २ साँस फूलना। जल्दी-जल्दी साँस आना। उ० आज उसका दम टूट रहा है।

दमड़ी का तीन होना–१ बहुत सस्ता होना। उ० आजकल आप दमडी के तीन हो गये है। २ व्यर्थ होना, बिना काम का या बेकार होना मारा-मारा फिरना। उ० वह तो अब दमडी का तीन हो गया है।

दमड़ी की हँड़िया खोकर कुत्ते की जात पहचानना–थोडा खोकर ही व्यक्ति की नीयत तथा स्तर जान लेना।

दमड़े करना–बेच कर दाम निकालना। उ० अब तो घाटा लग ही गया, कम से कम दमडे तो कर लो।

दम तोड़ना–१ आखिरी साँस लेना। उ० वह तो अब दम तोड रहा है। २ मर जाना। उ० उस कुत्ते ने आज दम तोड दिया।

दमदार होना–मज़बूत और दृढ होना। उ० वह दमदार है।

दम-दिलासा देना–१ झूठी आशा देना। उ० दम-दिलासा देकर उसे मै यहाँ ले आया, पर तुम्हारे न रहने से आना बेकार हो गया। २. पट्टी पढाना, बहकाना।

दम-दिलासे में आना–दे० 'धौस-पट्टी मे आना।'

दम देना–बहकाना, शह देना। उ० उसने दम देकर बेचारे को फँसा दिया।

दम न मारना–थोड़ा भी आराम न करना। उ० तुम तो दम भी नही मारते। इतना परिश्रम शरीर को सुखा डालता है।

दम निकलना–१. मर जाना। उ० कल शाम को उसका दम निकल गया। २. घबराहट या परेशानी होना। उ० मारे गर्मी के दम निकल रहा है।

दम-पट्टी पढ़ाना–दे० 'दम-पट्टी पिलाना'।

दम-पट्टी पिलाना–दे० 'दम-झाँसा देना'।

दम पर आना या आ जाना–१ प्राण पर आ बनना, मर जाने का खतरा होना। उ० दम पर आ बनी तो मुझे भी पिस्तौल उठानी पड़ी। २ बहुत परीशानी होना।

दम-पर-दम–बराबर। रोज़-ब-रोज़। उ० दम-पर-दम वह बदमाश होता जा रहा है।

दम फड़क उठना–१ मन खुश हो जाना। उ० जब मैं उसे देखता हूँ तो मेरा दम फड़क उठता है। २ उत्तेजना होना।

दम फड़क जाना–दे० 'दम फड़क उठना'।

दम फ़ना होना–होश उड़ जाना। उ० पागल हाथी को देखते ही उस दिन मेरा दम फना हो गया।

दम फूंकना–मुंह से हवा भरना। उ० गुब्बारे मे दम फूंक दो।

दम फूंकना–साँस फूलना। उ० आज उसका दम फूल रहा है, वह कहीं आ-जा नही सकता।

दम बंद करना–बोलने न देना। उ० दम बद न करो, उसे भी कहने दो।

दम बंद होना–डर या शर्म से एकदम चुप रह जाना। उ० मुझे देखते ही उनका दम बद हो जाता है।

दम-ब-दम–थोड़ी-थोडी देर पर। उ० उसे दम-ब-दम बेहोशी आ रही है।

दम बाँधना या बाँध लेना–१ चुप हो जाना। उ० आप हमारी बातो पर तो दम बाँध लेते हैं। २. साँस रोकना। उ० वह खूब दम बाँधता है, इसी कारण डूब कर बहुत दूर निकल जाता है। ३. हिम्मत करना। उ० दम बाँधो तो काम शुरू करें।

दम भरना–१ थका देना। उ० तुमने तो लडा कर दम भर दिया। २. थकना। उ० आज तो चलते-चलते दम भर गया। ३. दोस्ती या प्रेम का अटल विश्वास रखना। उ० उसकी दोस्ती का क्या दम भरते हो, वह तुम्हारे किसी काम नहीं आ सकता।

दम मारना–१. सुस्ताना, थोड़ी देर आराम करना। उ० क्यों मरते हो, जरा दम मार लो। २. गाँजा पीना। उ० यह दम मारने की आदत कब से सीखी ?

दम मारने की फ़ुर्सत न होना–थोड़ा भी समय न होना। उ० यहाँ तो दम मारने की फ़ुर्सत नही है, और आपको घूमने की पड़ी है।

दम में आना–बढ़ावे या शह में आना। उ० अगर इस बार फिर दम मे आये तो सारा खेल चौपट हो जायगा।

दम में दम आना–मन स्थिर होना। जान में जान आना। शांति होना। उ० उस दिन जंगल में शेर देखकर मैं तो बहुत डरा, पर जब बहेलिये ने बतलाया कि वह मर चुका है तो दम में दम आया।

दम में दम रहना–जीवित रहना, जिंदा रहना। उ० अगर दम मे दम रहा तो एक-एक से बदला लूँगा।

दम में लाना–दे० 'दम देना'।

दम रोकना–साँस न लेना। उ० आप दम रोक कर पानी में कितनी देर तक रह सकते है ?

दम लगना–धूम्रपान होना, गाँजा आदि का पिया जाना। उ० अगर आप मेरे साथ चलें तो आज दम लगे।

दम लगाना–चरस या गाँजा आदि पीना। उ० आजकल के साधू लोग दम लगाना भी धर्म समझते हैं।

दम लेकर बैठना–१. सन्तोष करके चुप हो

जाना। उ० आदमी अधिक हों तो कुछ न बोलना। ऐसे में दम लेकर बैठना ही उचित होता है।

दम ले रहना–१. चुप हो जाना। टाल जाना। २. दे० 'दम लेकर बैठना'।

दम साधना या साध लेना–१. साँस रोकने का अभ्यास करना। उ० दम साधने से मनुष्य दीर्घायु होता है। २. कुछ न बोलना, चुपचाप रहना। उ० तुम्हारी बातों को सुन कर तो वे दम साध लेते हैं।

दम सूखना–दे० 'दम खुश्क होना'।

दमन-चक्र चलना– अत्याचार होना।

दम ही दम में रखना–व्यर्थ की आशा में रखना। उ० दम ही दम में न रखो, वे किसी के भी नहीं।

दमामा पीटना–प्रचार करना।

दरकच लगना–दबाव या धक्के के कारण कुचल जाना। उ० उँगली में दरकच लग गई, खून बह रहा है।

दर-किनार रहना–दूर रहना, कोई प्रश्न न रहना। उ० उसके यहाँ जाना तो दर-किनार रहा, मैं उससे बोल भी नहीं सकता।

दर-किनार होना–दूर होना। उ० यहाँ से दर-किनार हो।

दरख़ास्त गुज़रना–प्रार्थना-पत्र पेश किया जाना। उ० हमारे मुक़दमे की दरख़ास्त गुज़र चुकी है।

दरख़ास्त देना–१. किसी के विरोध मे प्रार्थना-पत्र देना। उ० कल वाले कांड मे उसने तुम्हारे ऊपर दरख़ास्त दे दी है। २. अर्ज़ी देना। उ० दरख़ास्त दे दो।

दरख़ास्त पड़ना–दे० 'दरख़ास्त गुज़रना'।

दर-गुज़र करना–टाल देना, क्षमा करना, परवाह न करना। उ० तुम्हारी बातों को तो सभी दरगुज़र करते हैं।

दरज़बंदी करना–दीवाल के दरार आदि को चूने से बंद करना।

दर-दर की धूल फाँकना–दुर्दशाग्रस्त होना, हर तरफ़ से धिक्कारा जाना।

दर-दर तिनके चुनना–दीन-हीन दशा को प्राप्त होना।

दर-दर फिरना–१. गली-गली मारे-मारे फिरना। बेक़द्री होना, पूछ न होना। उ० आजकल तो सैकड़ों ग्रेजुएट नौकरी की खोज मे दर-दर फिर रहे हैं। २ बहुत मिलना। उ० क्लर्क तो आजकल दर-दर फिरते है।

दर-दर मारे-मारे फिरना–दे० 'दर-दर फिरना'।

दरपेश होना–हाजिर होना, पेश होना। उ० अभी तो मामला दरपेश होने में देर है।

दरबार खुलना या खुला होना–राजसभा में छोटे-बड़े सबको जाने की आज्ञा मिलना। उ० अशोक का दरबार सबके लिए खुला था।

दरबार बंद होना–राजसभा मे जाने पर प्रतिबंध होना। उ० बलबन का दरबार आम जनता के लिए बद था।

दरबार बँधना–घूस की रक़म का निश्चित हो जाना। उ० इस बेईमानी की कोई सीमा है कि बहुत से आफ़िसों मे दरबार बंधा है।

दरबार बर्खास्त होना–राजसभा का उठना या किसी दिन का कार्य समाप्त होना। उ० तीन बजे के पहले आना, नहीं तो दरबार बर्खास्त होने के बाद कुछ नहीं हो सकता।

दरबार बाँधना–घूस तय करना। उ० वहाँ तो दरबार बाँध दिया गया है। महीने मे उतनी रक़म पहुँचानी ही पड़ती है।

दरबार में खड़े होना–सेवा में हाज़िर होना।

दरबार लगना–१. राजसभा मे मंत्रियो और दरबारियों का बैठना। उ० चंद्रगुप्त का दरबार दिन मे एक बार अवश्य लगता था। २. बड़े-बड़े लोगो का इकट्ठा होना। उ० आज तो वहाँ दरबार लगा है।

दरबार होना–राजा की सभा बैठना। उ० १९११ में दिल्ली मे दरबार हुआ था।

दरवाज़ा खटखटाना–कुछ माँगने के लिए किसी के यहाँ जाना।

दरवाज़ा दिखाना–घर से निकालना। उ० बहुत ठीक किया आपने, ऐसे मेहमानों को तो दरवाज़ा ही दिखाना चाहिये।

दरवाज़े की मिट्टी खोद डालना–हरदम घर पर तकाज़े के लिए आना। उ० तुमने तो उसके दरवाज़े की मिट्टी खोद डाली, अगर वह इतने पर भी न दे तो उससे बड़ा बेहया कौन होगा ?

दरवाजा बन्द होना—(आने-जाने का) सम्बन्ध न होना।

दरवाजे का मुँह न देखना—दरवाजे तक न जाना।

दरवाजे पर नाक रगड़ना—खुशामद करना।

दरवाजे पर खड़ा रहना—हर समय मौजूद रहना।

दरवाजे पर पड़ा रहना—आश्रित होना।

दरवाजे पर आँख गड़ाये होना—किसी की प्रतीक्षा करना।

दरवाजे पर हाथी झूमना—दे० 'बहुत धनी होना'। उ० उसके दरवाजे पर तो हाथी झूमते है।

दरहम-बरहम करना—१. तितर-बितर करना। उ० भीड दरहम-बरहम कर दो। २. नाराज करना।

दराँती पड़ना—फ़सल का कटना। उ० यदि इसी तरह मौसम रहा तो दो-चार दिन मे दराँती पड जायगी।

दरिया को कूजे में बंद करना—१. गागर मे सागर भरना, थोडे मे बहुत रखना। २. असभव को सभव करना।

दरेग़ करना—१. देने मे नाहीं करना। उ० कुछ तो ऐसे बेईमान होते है कि रुपया लेकर भी दरेग़ करते है, दूसरे की जरूरत को समझते ही नही। २. देर करना। उ० जाओ मगर दरेग़ न करना।

दरेरा देना—जबर्दस्ती करना, दरकचना, रगडना। उ० वह दरेरा देता हुआ निकल गया।

दरेसी करना—जमीन को हमवार या बराबर करना।

दर्ज करना—रजिस्टर या पंजी मे लिखना या चढाना। उ० आपका नाम दर्ज कर लिया गया है।

दर्जा उतारना—१. एक कक्षा नीचे करना। उ० वह इतना कमजोर था कि एक दर्जा उतार दिया गया है। २. नीचे के पद पर कर देना। उ० काम खराब करने के कारण उसका दर्जा उतार दिया गया है।

दर्जा बढ़ना या बढ आना—कक्षोन्नति करना या श्रेणी का ऊँचा होना। उ० काम अच्छा करने के कारण कल उसका दर्जा चढ गया।

दर्जा चढ़ाना—पद ऊँचा करना। उ० उस डाकू को पकड़ने के कारण थानेदार का दर्जा एस० पी० ने चढा दिया है।

दर्जी की सुई होना—१. हरफनमौला होना। २. प्रतिक्षण कार्यरत रहना। उ० तुम तो दर्जी की सुई हो, कभी भी तुम्हे खाली नही देखता।

दर्द आना—१. अफ़सोस होना। उ० रुपया खर्च करते दर्द आता है। २. तरस आना।

दर्द उठना—शूल या तकलीफ़ का आरंभ होना। उ० उनकी कमर में दर्द उठ रहा है।

दर्द करना—पीड़ा देना, दुखाना। उ० तुम्हारा फोड़ा तो दर्द करता होगा।

दर्द की दवा होना—किसी काम के लायक होना। उ० आखिर तुम किस दर्द की दवा हो, जो मै किसी दूसरे को इस काम के लिए बुलाऊँ?

दर्द खाना—१. कष्ट सहन करना। उ० आखिर दर्द खाकर तो कमाया है तो खर्च करने मे क्यों न तकलीफ़ हो? २. तरस खाना, रहम करना। उ० सभी तो गरीब बनते है, किस-किस पर दर्द खाऊँ?

दर्द लगना—पीडा आरभ होना। दुखना, दर्द मालूम होना। उ० दर्द लगे तो दवा ले आना।

दर्द-सर मोल लेना—जान-बूझ कर कोई आफत सर पर लेना।

दर्प-मर्दन करना—घमड दूर करना।

दर्शन देना—दिखाई देना। उ० आप तो कभी दर्शन ही नही देते है।

दर्शन पाना—देखना। उ० भीड़ के कारण रथ-यात्रा के समय बहुत कम लोग जगन्नाथ जी का दर्शन पाते है।

दर्शन मिलना—देखने में आना। उ० बडे भाग्य से आपका दर्शन मिला।

दर्शन होना—दे० 'दर्शन मिलना'। उ० आजकल शुद्ध दूध या घी का तो दर्शन भी होना दुश-वार है।

दलदल में गर्दन तक डूबा होना—मुश्किल मे पडा होना।

दलदल में फँसना—१. कठिन विपत्ति मे फँसना। आफ़त मे पड़ना। उ० मै तो आजकल ऐसे दलदल मे फँसा हूँ कि निकलना ही कठिन है। २. किसी निश्चित निर्णय पर नहीं पहुँचना। उ० तुम्हारे झगडे का मामला तो अभी दलदल मे ही फँसा है।

दल-बादल खड़ा होना–विशाल तंबू या रावटी पड़ना। उ० कलक्टर साहब के आने से यहाँ दल-बादल खड़ा हो गया है। कल उनकी बारात आयगी। इसी से यहाँ दल-बादल खड़ा है।

दल-बादल से चढ़ आना–विशाल सेना लेकर चढ़ाई करना। बहुत आदमियों के साथ चढ़ आना। उ० तैमूर भारत पर दल-बादल से चढ आया।

दलाली खाना–दलाली के पैसे लेना।

दलील करना–बहस करना, तर्क करना। उ० मुझसे दलील न करो। तुम-जैसों को तो दिन-रात चराता हूँ।

दलील चलना–तर्क लगना, दलील का सफल होना। उ० यहाँ तुम्हारी दलील नहीं चलेगी।

दलेल बोलना–दडस्वरूप परेड करने की आज्ञा देना। उ० अफ़सर ने सिपाही को सलाम न करने के लिए दलेल बोल दी।

दवा को न मिलना–थोडा भी न मिलना। उ० यहाँ सच्चा मधु तो दवा को भी नहीं मिलता है।

दवा को न होना–थोडा भी न रहना। उ० इस समय हमारे पास चीनी दवा को भी नहीं है।

दवा-दारू करना–दवा आदि करना। उ० दवा-दारू करो, शायद अच्छा हो जाय।

दवा देना–औषधि खिलाना। उ० मरीज को दवा दे दो।

दवा होना–उपाय होना।

दस-नंबरी–चोर।

दस-पाँच लोग–कुछ थोडे से लोग।

दसो दिशाओं में–चारो ओर।

दस्तंदाजी करना–दखल देना, हस्तक्षेप करना। उ० क्यों दस्तदाजी करते हो, आखिर तुमसे क्या मतलब?

दस्तक देना–१ दरवाज़ा खटखटाना। उ० देखो कौन दस्तक दे रहा है? २ हस्ताक्षर करना। उ० एक पाठशाला के लिए यहाँ सभी ने दस्तक दे दी है। (यह प्रयाग का ग्राम्य प्रयोग है।)

दस्तक बाँधना–बेकार का व्यय गले लगाना। उ० तुम्हीं सह जाओ, उस गरीब के क्यों दस्तक बाँध रहे हो?

दस्तक लगाना–दे० 'दस्तक बाँधना'।

दस्तख़त लेना या ले लेना–हस्ताक्षर करवाना। उ० सम्मन वाले सिपाही ने मेरी दस्तखत ले ली।

दस्त-बदस्त आना–हाथों-हाथ आना।

दस्त-बरदार होना–अलग होना, अधिकार छोड़ कर बाज़ आना। उ० आजकल तो अपनी चीज़ से दस्त-बरदार होना अलग रहा, लोग दूसरे की भी ले लेना चाहते हैं।

दस्त लगना–पाखना होने की इच्छा होना। उ० दस्त लगी हो तो थोड़ी देर रुक जाऊँ।

दहकता गोला उठाना–बेगुनाही का इम्तहान देना। [यह कभी प्रथा थी।]

दहना कमर पेंच–डोली या पालकी के कहारों का दाहिनी ओर घूमना। [यह उनकी अपनी विशिष्ट बोली का मुहावरा है।]

दहलीज का कुत्ता–पिछलग्गू। उ० जब वह बार-बार झिडकी देता है तो क्यों दहलीज के कुत्ते बने हो? आखिर अपना व्यक्तित्व भी है या नहीं?

दहलीज की मिट्टी ले डालना–दे० 'दरवाजे की मिट्टी खोद डालना'।

दहलीज झाँकना–दरवाजे पर आना। उ० जब से दोनो मे झगडा हो गया, वह उसकी दहलीज भी नहीं झाँकता।

दहशत देना–डरा देना। उ० छोटे बच्चे को अभी दहशत न दो, नहीं तो दब्बू हो जायेगा।

दहाड़ मार कर रोना–बड़े जोर-ज़ोर से चिल्ला कर रोना। उ० आज रात को कोई दहाड मार कर रो रहा था।

दहाड़ मारना–दे० 'दहाड मार कर रोना'।

दहिने होना–शुभ या अनुकूल होना। उ० इस वर्ष शुक्र हमारे दहिने है। भगवान दहिने है तो कोई कुछ नहीं कर सकता।

दही का तोड–दही का पानी, जो दही को कपडे में रखकर निचोडने से निकलता है। उ० दही का तोड़ पी लो, गर्मी में ठडा करेगा।

दही के धोखे कपास खाना–बेवकूफ़ी करना, जानकर अंधा बनना या अनजाने बहुत बड़ी मूर्खता करना। उ० कस सुख पावै अस मति जासु, दही के धोखे खाय कपासु।

दही-दही करना–अपनी वस्तु बेचने के लिए गली-गली कहते फिरना। उ० क्या दही-दही करते हो, जिसे लेना होगा, वह स्वयं लेगा।

दही-दही हाँकना–अपना माल बेचने के लिए आतुर होना।

दही में का मूसर होना–१. बीच में कूद पड़ना। २. मजा किरकिरा करने वाला होना। उ० यहाँ दही मे का मूसर न बनो, अपना रास्ता पकड़ो।

दाँत उखाड़ना–दुःसह दंड देना। उ० बहुत हुआ अब आगे बढ़ोगे तो दाँत उखाड़ लूँगा।

दाँत का चौका–सामने के चार दाँत। उ० वह तो आज बुरी तरह गिर पड़ा। बेचारे का दाँत का चौका टूट गया है।

दाँत का चौका निकल आना–आगे का चार दाँत टूट जाना। उ० मारूँगा कि दाँत का चौका निकल आएगा।

दाँत-काटी रोटी खाना–बहुत मैत्री होना। उ० वे दोनो तो दाँत-काटी रोटी खाते हैं।

दाँत-काटी रोटी होना–सच्ची मित्रता होना। उ० तुम दोनों मे तो दाँत-काटी रोटी होती है।

दाँत काढ़ना–दे० 'दाँत निकालना'।

दाँत किटकिटाना–क्रोध से दाँत पीसना। उ० व्यर्थ का दाँत किटकिटाते हो, तुम तो हमारा कुछ भी नही कर सकते।

दाँत किचकिचाना–१. दे० 'दाँत किटकिटाना'। २. क्रोधपूर्वक जोर लगाना। उ० उसने दाँत किचकिचा कर उठाने की कोशिश की, पर नाल नही उठ सकी।

दाँत किरकिराना–१ बालू या अँकटी आदि पड़ जाने से दाँत मे किर-किर होना। उ० आज खाते समय मेरा दाँत किरकिरा गया। २. ऊपर-नीचे के दाँतो को घिसना। उ० क्यो हर समय दाँत किरकिराते हो, पेट मे कीड़े तो नही हैं?

दाँत किरकिरे होना–आजिज आ जाना। हैरान हो जाना। उ० तुम्हारे तर्कों से तो उसके दाँत किरकिरे हो गए।

दाँत कुरेदने को तिनका न रहना–सर्वस्व गवाँ देना। पास में कुछ न रहना। उ० इतना बड़ा जुआड़ी है कि अब तो उसके पास दाँत कुरेदने को तिनका भी नहीं है।

दाँत खट्टे करना–हरा देना। उ० अंग्रेजों ने जापानियों के दाँत खट्टे कर दिये।

दाँत खट्टे होना–परास्त होना। उ० पानीपत की तीसरी लड़ाई में मराठों के दाँत खट्टे हो गये।

दाँत गड़ना–दे० 'दाँत लगना'।

दाँत चबाना–गुस्से में दाँत पीसना। उ० गरीब पर क्यों दाँत चबाते हो, जब होगा, बेचारा खुद दे देगा।

दाँत जमना–दाँत निकलना। उ० बच्चे को दाँत जम रहा है, इसी से पेट गड़बड़ है।

दाँत झाड़ देना–दे० 'दाँत उखाड़ना'।

दाँत टूटना–वृद्ध होना। उ० दाँत टूटे, अब क्या शौक करूँगा। उ० दाँत टूटे खुरघिसे पीठ बोझ ना लेइ। ऐसे बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देइ।

दाँत-तले उँगली दबाना–१. आश्चर्य मे पड़ जाना। उ० फ्रांस वालों का चंद्रमा में चढने का साहस देख कर संसार दाँत-तले उँगली दबा रहा है। २. दुःख प्रकट करना। उ० हमारी दशा देख कर सभी को दाँत-तले उँगली दबाना पड़ा।

दाँत तालू में जमना–दुर्दिन आना। उ० ऐसा ज्ञात होता है कि भारतीयो के दाँत तालू मे जमने लगे हैं।

दाँत तोड़ना–दे० 'दाँत उखाड़ना'।

दाँत दिखाना–१. भयभीत करना। उ० भेड़िये ने मेमने को दाँत दिखा कर अपना काम बना लिया। २. मजबूरी जाहिर करना। उ० उसी की आशा थी, परंतु वह भी दाँत दिखा गया। ३. गिड़गिड़ा कर प्रार्थना करना। उ० उसका दाँत दिखाना देख कर दया आ गई।

दाँत देखना–पशुओं का दाँत देख कर आयु का पता लगाना। उ० बैल का दाँत देख लो, तब खरीदो।

दाँत न लगाना–बिना दाँत से छुआए यो ही निगल जाना। उ० दवा को दाँत न लगाओ, नही तो काम न करेगी।

दाँत निकलना–दे० 'दाँत जमना'।

दाँत निकालना–१. बेहूदे ढग से दाँत निकाल कर हँसना। उ० क्या बेहूदे की तरह दाँत निकालते हो। २ प्रार्थना करना, गिड़गिड़ाना।

उ० बेचारा दांत निकाल रहा था, उसका काम कर देना।

दांत निकोसना–दे० 'दांत निकालना'।

दांत निपोरना–दे० 'दांत निकालना'।

दांत पर न रखा जाना–१. दांत में दर्द के कारण तनिक भी न खाया जाना। उ० कल से दांत पर पानी भी नहीं रखा जाता है। २. बहुत खट्टा होना। उ० ऐसा दही है कि दांत पर भी नहीं रखा जाता है।

दांत पर मैल न होना–अति निर्धन होना। पास में कुछ न होना। उ० भारत मे तो अधिकाश लोगों के दांत पर मैल भी नही है।

दांत पीसना–दे० 'दांत किटकिटाना'।

दांत पैने करना–घात में रहना। दांव लगाने की तैयारी करना। उ० वह तो दांत पैने करने में लगा है और तुम टांग फैलाये सो रहे हो।

दांत बँधवाना–हिलते दांत तार से कसवाना। उ० इतनी तकलीफ़ है तो क्यो नही दांत बँधवा लेते।

दांत बजना–जाड़ा लगना। उ० आज तो सभी के दांत बज रहे है।

दांत बजाना–१. झगड़ा करना। उ० तुम तो बहुत दांत बजाते हो, तबीयत नही भरती तो क्या मुँह भी नही दुखता ? २ दांत किटकिटाना। उ० क्यो दांत बजाते हो ? जाडा लग रहा है क्या ?

दांत बनवाना–बिगडा दांत नया बनवाना। उ० मैंने अपने कई दांतो को बनवाया है।

दांत बाये रहना–मूर्खतावश सदा हँसते रहना। उ० तुम कब आदमी बनोगे, जब देखो तब दांत बाये रखते हो।

दांत बैठ जाना–चोट या लकवे आदि मे पेशियो की स्तब्धता से नीचे-ऊपर के जबड़ों का सट जाना। उ० चार वर्ष हुए, उसका दांत बैठ गया। मारूँगा तो दांत बैठ जाएँगे।

दांत भींचना–१. दांत पीसना। दांत मसमसाना। २. दांतों को एक-दूसरे के ऊपर जकड़ लेना।

दांत मसमसाना–अत्यन्त क्रोध से दांत पर दांत रख कर रगड़ना। उ० इतनी-सी बात पर वह दांत मसमसा कर मारने दौड़ा।

दांत मीसना–दे० 'दांत मसमसाना'।

दांत रखना–१. डाह या वैर रखना। उ० आज-कल तो वह तुम्हारे पर दांत रखता है। २. ग्रहण करने की इच्छा करना। उ० इसके लिए तुम्हारा दांत रखना बेकार है, क्योंकि इसे तो किसी और ने ले लिया है। ३. हाथ लगाना। उ० अगर उस पर दांत रखा तो ठीक न होगा।

दांत रहना–लेने की इच्छा होना। उ० कोरिया पर रूस का दांत सालों से रहा है।

दांत लगना–१. बेहोश होना। उ० पिता की मृत्यु का समाचार सुनते ही उसके दांत लग गए। २. हाथ मे आना। उ० देखना उस पर किसी का दांत न लगे।

दांत लगाना–१. प्राप्ति के लिए कोशिश करना। उ० कई लोगों ने इस सुन्दरी पर दांत लगाया, परतु सब ताकते रह गए। २ दांत गड़ाना। उ० कुत्ते ने जोरों से दांत लगा दिया। ३ जुठारना, उपयोग या उपभोग करना। उ० इस पर तुम दांत न लगाना, नही तो ठीक न होगा।

दांत सलसलाना–१. दांतो का हिलना। २ दांतो का दर्द करना।

दांत से दांत बजाना–१ जाड़े से दांतों का आपस में संघर्षण कराना या कटकटाना। उ० उस दिन सर्दी के मारे कंबल ओढ़ने पर भी छोटे बच्चे दांत से दांत बजा रहे थे। २. बुरी तरह हराना। उ० अब सामने आए तो ऐसा दांत से दांत बजाऊँगा कि होश हो जायगा।

दांत होना–दे० 'दांत रखना'।

दांता किल-किल होना–बेकार की बकवास होना। उ० वहाँ भूल कर भी न जाना, वहाँ तो सदा ही दांता किल-किल होती रहती है।

दांता पड़ना–अस्त्र की धार मे दाग़ या गड्ढे पड़ना। उ० इस तलवार मे कैसे दांता पड़ गया ?

दांता बैठ जाना या बैठना–दांतो के लग जाने से बेहोश हो जाना। उ० गर्मी से दांता बैठ गया।

दांता लगना–दे० 'दांता बैठना'।

दांतों उँगली काटना–दे० 'दांत-तले उँगली दबाना'।

दांतों चढ़ना–किसी के प्रति कुछ कुदृष्टि होना। उ० अमेरिका रूस के दांतों चढ़ा है।

दाँतों चढ़ाना–१. पीछे पड़ा रहना। उ० समय पाकर सब कर देगा, क्यों उसको दाँतों चढ़ाए हो? २. नजर लगाना। उ० वह तो बच्चों को दाँतो चढ़ा देता है। ३. किसी पर आक्षेप करते रहना।

दाँतों जमीन पकड़ना–बहुत ही कष्ट से जीवन बीतना।

दाँतों पर रखना–स्वाद लेना। उ० अनजानी चीज को कभी दाँतों पर न रखो।

दाँतों पर होना–बच्चे के दाँत निकलने का वक्त आना।

दाँतों पसीना आना–१ किसी मुश्किल काम के करने मे परीशान हो जाना। २. थक जाना।

दाँतों में उँगली दबाना–दे० 'दाँतो-तले उँगली दबाना'।

दाँतों में जीभ होना–चारो ओर विरोधियो या दुश्मनो से घिरा रहना। उ० तुम क्यों वहाँ मकान ले रहे हो? मैं ही दाँतो मे जीभ हूँ, आज दूसरा मकान मिले तो अभी बदल लूँ।

दाँतों में तिनका लेना–दीनता से दण्ड आदि के क्षमा के लिए गिडगिडाना। हा-हा खाना। उ० बेचारा दाँतो मे तिनका लेकर कहता है, उस गरीब को क्षमा कर दो।

दाँतों में पसीना आना–अथक् परिश्रम करना, बहुत थक जाना। उ० आज तो मेहनत मे दाँतो मे पसीना आ गया।

दाँतों से उठाना–१ अति कृपणता मे इकट्ठा करना। उ० तुम्हारे जैसे ससार मे दो ही चार होगे, जो कौडी को भी दाँतों से उठाते होगे। २ बहुत इज्जत मे चुनना।

दाँतों से कौड़ियां पकड़ना–अत्यधिक कजूस होना।

दाँतों से हाथ काटना–पश्चात्ताप करना। उ० जो होना था, वह हो गया। अब दाँतो से हाथ काटना व्यर्थ है।

दाँयीं आँख फरकना–मर्दो के लिए शुभ तथा औरतो के लिए अशुभ होना। उ० आज दायी आँख फरक रही है, कुछ मिलेगा क्या?

दाई से पेट छिपाना–उसी आदमी से भेद छिपाना जो कि उसे अवश्य जाने। उ० अरे कल की सारी बाते बता दो, आखिर दाई से पेट छिपा कर क्या पाओगे?

दाएँ-बाएं देकर निकल जाना–भुलावा देक निकल भागना। उ० रोज दाएँ-बाएँ देक निकल जाते हो, अब कल पता चलेगा।

दाखिल करना–१ जमा करना, पेश करना उ० अभी तक मैंने मालगुजारी दाखिल नह की है। २ ले लेना, भरती कर लेना। उ० इस लड़के को भी अपने स्कूल में दाखिर कर लो।

दाखिल होना–१. जमा होना। उ० कल रुपय दाखिल हो गया। २ भरती होना। उ० वह स्कूल में दाखिल हो गया।

दाग उठाना–सदमा सहना, दु:ख उठाना। उ० मजा तो तुम लो और दाग मैं उठाऊँ।

दाग करना–१ खूब गरम करना, कडकड़ाना बघारना। २ जलाना।

दाग दिखाना–रंज या सदमा देना, दु:ख पहुंचाना।

दाग देना–१ कलंकित करना। उ० जयचंद का जन्म शायद भारतीय इतिहास को दाग देने के लिए ही हुआ था। २ मरने के बाद अंतिम सस्कार करना। उ० उसके पिता मर गये हैं, वह दाग देने के लिए घर जाना चाहता है।

दाग धोना–कलंक मिटाना।

दागबेल गेरना–आरंभ करना। उ० कल मकान में दागबेल गेरने का अच्छा दिन है

दाग लगना–१ जलना। २. खाना जल जाना उ० भात मे दाग लग गया। ३. कलंक लगना। उ० इतना बचाने पर भी दाग लग ही गया।

दाग लगाना–१ कलंकित करना। ऐब लगाना। बदनाम करना। उ० तुमने अपने कुल मे दाग लगाकर छोडा। २ जलाना।

दाग होकर निकलना–जल कर या फूट कर निकलना। उ० हमारा खाया-पीया दाग होकर निकलेगा।

दागा जाना–१ जलाया जाना। २ जानवरो या आदमियों के किसी अंग-विशेष का गर्म लोहे या पत्थर आदि से सेका या दागा जाना। उ० ऊँट दागे जाते थे तो मकोड़े ने भी टाँग फैलाई कि मुझे भी दागो।

दाढ़ गरम करना–घूस देना। उ० पहले दाढ़ गरम करो, तब काम होगा।

दाढ़ न लगाना–दाँत से न कुचलना। उ० दाढ़ न लगाओ, इसी तरह खा जाओ।

दाढ़ मार कर रोना–दे० 'दहाड़ मार कर रोना'।

दाढ़ा फूंकना–बहुत गर्मी पड़ना, गर्मी का अधिक होना। उ० आज तो दाढा फँके है।

दाढ़ी का एक-एक बाल करना–बहुत बुरी हालत करना। बहुत कष्ट देना। उ० तुमने उस गरीब बेचारे के दाढ़ी का एक-एक बाल करके छोड़ा।

दाढ़ी को कलंक लगाना–किसी प्रतिष्ठित वृद्ध को कलंकित करना।

दाढ़ी छोड़ना–१ डाढ़ी का बाल न बनवाना। उ० हमारा विचार है, अब मैं भी दाढ़ी छोड़ दूं। २ किसी काम सिद्धि के लिए या किसी के विरुद्ध होकर उसके कुछ बुरे के लिए दाढी न बनवाना।

दाढ़ी पकना–वृद्ध होना।

दाढ़ी पेट में होना–१. कम उम्र मे अधिक समझदार होना। उ० इस लडके के पेट में दाढ़ी है। २ अपना भेद किसी को न देने वाला होना। उ० उसके पेट मे दाढ़ी है, वह नही बता सकता।

दाढ़ी पेशाब से मुंडवाना–बेइज्जत करना। उ० भरी सभा मे आपने उसकी दाढ़ी पेशाब से मुँडवा कर क्या पाया?

दाढ़ी बनाना–१ छका देना। २ धोखा देना। ३. धोखा देकर धन या रुपया ले लेना। उ० उसने तो तुम्हारी दाढ़ी अच्छी बनाई।

दाढ़ी रखना–दे० 'दाढी छोड़ना'। उ० किस पर दाढी रखे हो?

दाद को पहुंचना–इसाफ होना। उ० वह बैठा रहा कि आखिर कभी तो मामला दाद को पहुँचेगा।

दाद चाहना–१ जुल्मों के बदले के लिए प्रार्थना करना। न्याय चाहना। उ० हम दाद चाहते है, पर किसके दरवाजे जायँ? सरकार तो बहरी है। २ प्रशसा चाहना। वाहवाही चाहना। उ० झूठे दाद चाहते हो या कुछ काम भी किया है?

दाद देना–१ इंसाफ़ करना। उ० राजा ने उचित दाद दी। २ प्रशसा करना, वाह-वाह करना। उ० वास्त व मे इसने दाद देने योग्य शेर लिखे हैं।

दाद-फ़रियाद करना–१. गुल मचाना, शोर करना, बावेला करना। २. किसी के जुल्म पर चिल्लाना या शोरगुल करना।

दाना-दुनका–अन्न के दो-चार दाने। थोडा अन्न। उ० दाने-दुनके खाकर जी रहा हूँ।

दाना-पानी उठना या उठ जाना–१ कोई ठिकाना न रहना। उ० अंग्रेजों का दाना-पानी उठ गया तभी तो चले गए। २. किसी स्थल-विशेष पर खाने-पीने का संयोग या भाग्य न रह जाना। उ० मालूम होता है कि यहाँ से हमारा दाना-पानी उठ गया है, अत: अब कहीं दूसरी जगह जाना होगा।

दाना-पानी के हाथ–तकदीर के अधीन। उ० जीना-मरना दाना-पानी के हाथ है।

दाना-पानी छोड़ना–खाना-पीना छोड़ कर उपवास करना। उ० गाँधी जी ने कई बार दाना-पानी छोड दिया था।

दाना बदलना–१. पक्षियो का आपस में दाना का लेन-देन करना। उ० देखो, कौआ दाना बदल रहा है। २. किसी अतिथि के आने का आगम मिलना। (लोगो का विश्वास है कि कौआ दाना बदलता है तो कोई अतिथि आता है)। उ० कौए दाना बदल रहे है, कोई आएगा क्या?

दाना भरना–चिड़ियों का अपने बच्चों को चारा देना। उ० गौरैया दाना भर रही है।

दाने-दाने को तरसना–गरीबी से खाने के लिए दाना भी न मिलना। उ० बेचारा दाने-दाने को तरस रहा है, कुछ दे दो।

दाने-दाने को मुहताज–बिल्कुल गरीब, जिसके पास खाने को एक दाना भी न हो। उ० यहाँ तो सभी दाने-दाने को मुहताज हैं, खैंगत कौन करे?

दाने-दूनी को तरसना–दे० 'दाने-दाने को तरसना'।

दाने बिखेरना–फुसलाने के लिए युक्तियाँ करना।

दाब-तले होना–अधिकार में होना। उ० मैं तुम्हारे दाब-तले नही हूँ कि तुम डाँटो और मै कुछ न बोलूं।

दाब दिखाना—डराना या अधिकार जताना। रोब दिखाना। उ० अब क्या दाब दिखाते हो, तुम्हारी जमींदारी मे नही बसा हूँ।

दाब बैठना—१. मार बैठना, न देना। उ० वह तुम्हारी सारी चीजें दाब बैठेगा। २ जबर्दस्ती करना। उ० अब जमाना बदल गया, दाब बैठना आसान नही है।

दाब मानना—१. भय मानना, वश मे रहना। उ० बड़ो का दाब माना करो। २ रोब मानना। उ० उसका दाब तो सभी मानते है।

दाब मे रखना—अधिकार या वश मे रखना। उ० औरतो को दाब मे रखा करो, नही तो बिगड़ जाती है। तुलसी बाबा का कहा भूल गया है क्या ?

दाब मे रहना—अधिकार मे रहना। उ० अब तो अपना पुत्र भी दाब मे नही रहता है।

दाब में लाना—कब्जे मे करना। अधिकार या वश मे लाना। उ० दाब मे लाने के लिए कचहरी या उडे की भी शरण लेनी पडे तो मै तैयार हूँ।

दाब में होना—दूसरे के वश मे होना। उ० यहाँ के किसान तो जमींदारो के दाब मे है।

दाम उठना—मूल्य मिलना। बिक्री होना। उ० हमारे माल का दाम उठ गया है।

दाम करना—१. बेचने या खरीदने के लिए मूल्य निर्धारित करना। उ० अभी तो दाम कर रहा हूँ, शायद तय हो जाय। २ सौदा तय करना। उ० जल्दी दाम कर लो, वरना बिक जाएगी।

दाम खड़ा करना—१ किसी मूल्य पर बेच देना। उ० तुमने अच्छा किया कि दाम खडा कर दिया, नही तो चीज खराब हो जाती। २ अच्छे दाम पर बेचने के योग्य करना। उ० खिला-पिला कर बैल का दाम खडा कर दो, मेला नजदीक आ रहा है।

दाम चढ़ना—मूल्य मे बढोत्तरी होना।

दाम चुकाना—मूल्य देना। उ० दाम चुका दो, नही तो विश्वास उठ जाएगा।

दाम-दाम भर देना—ऋण आदि का पैसा-पैसा जोड़ कर दे देना। उ० वह बडा ईमानदार है, जीता रहा तो दाम-दाम भर देगा।

दामनगीर होना—१. पीछे पडना। सर आ जाना। उ० दुःख तो हम भारतवासियो का दामनगीर हो गया है। २ दे० 'दामन पकडना'।

दामन छुड़ाना—पीछा छुड़ाना। उ० किसी तरह उससे मेरा दामन छुडाओ।

दामन झटक लेना—१. दामन छुड़ा लेना, शरण न देना। २. इन्कार करना।

दामन झाड़ कर उठाना—१. नाखुश होकर उठ जाना। उ० आपकी बाते सुनते ही वे दामन झाड कर उठ गये। २ सच्चा और स्वतन्त्र बन कर बड़ा होना। ३. मुक्त होकर खडा होना या निकलना।

दामन झाड कर निकलना—दे० 'दामन झाड कर उठाना'। उ० फिर बहार आई निकलिए घर से दामन झाड कर, गए सहराए जुनू चलिए गरेबाँ झाड कर।

दामन-तले छिपाना—१ अपनी शरण मे लेना। २ ऐब छिपाना। ३ बेटी का ब्याह कर देना। ४ परवरिश करना, पालन करना।

दामन-तले ढकना—दे० 'दामन तले छिपाना'।

दामन-तले ढाँकना—दे० 'दामन तले छिपाना'।

दामन न छोड़ना—साथ न छोडना।

दामन पकड़ना—१ किसी की शरण लेना। उ० जाकर उसका दामन पकडो, वह तुम्हारी मदद करेगा। २ रोकना। ३ माँगना।

दामन फैलाना—१. विनती करना। धर्म का पल्ला बिछाना। उ० दामन फैलाने से काम न चलेगा। २ माँगना। उ० यहाँ न दामन फैलाओ, मै तो कुछ देने से रहा।

दामन मे दाग लगना—कलंकित होना।

दामन से लगना—भरोसे पर होना, आसरे पर होना। उ० उनके दामन से न लगो, नही तो धोखा खाओगे।

दाम भरना—कोई चीज नुकसान हो जाने पर उसका दाम देना। उ० तसवीर तो आपने तोड दी है, अब उसका दाम भरना पड़ेगा।

दाम भर पाना—मूल्य मिलना, लागत मिलना। उ० लाभ क्या हुआ, अरे किसी तरह दाम भर पा गया।

दाम में लाना—फंदे मे फँसाना। उ० उसे किसी प्रकार दाम मे लाओ तो काम बने।

दायर करना—मुकदमा चलाना। उ० उसने मेरे भाई पर फौजदारी दायर की है।

दायर होना–पेश होना। चालू होना। उ० जब मुक़दमा दायर हो तो हमें सूचित करना।

दायाँ बोलना–तीतर का दाहिनी ओर बोलना, जो कि अशकुन माना गया है। उ० इसका बोलना खाली नही जाता।

दायाँ हाथ–बहुत बड़ा और सच्चा सहायक। उ० वह तो मेरा दायाँ हाथ है।

दायें-बायें कर देना–छिपा देना, गायब कर देना। उ० जब वे आये तो इसे दायें-बायें कर देना।

दायें-बायें होकर निकल जाना–धोखा देकर या बच कर निकल जाना। उ० वे मिले तो थे, पर दायें-बायें होकर निकल गये।

दायें होना–१. खुश होना। मुआफ़िक होना। उ० इस समय मेरा सब काम बन रहा है। मालूम होता है, भगवान मेरे दायें हैं। २ प्रतिकूल होना। उ० उसके तो शनि ही दाएँ है, बेचारी क्या करे ?

दार पर चढ़ाना–सूली पर चढ़ाना। उ० मंसूर अनलहक कहने के कारण दार पर चढ़ाया गया।

दाल गलना–१ मतलब निकलना। उ० जब दाल गल जाय तो कोशिश का असर समझूं। २ लहना। उ० तुम्हारी दाल यहाँ नही गल सकती।

दाल चप्पू होना-एक मे लिपट जाना। उ० दाल-चप्पू होकर दोनो देर तक लड़ते रहे।

दाल जूतियों में बँटना–झगड़ा-तकरार होना, लड़ाई होना। उ० उनका घर क्या चलेगा, वहाँ तो दाल जूतियो मे बँटती है।

दाल छूटना–झुर्री अलग होना। भूसी उड़ना। उ० फोड़ों की दाल छूट गई है, अब ठीक हो गए।

दाल-दलिया–१ आखिरी निर्णय। उ० मुक़दमे का कुछ दाल-दलिया कर डालो, नही तो फिर बात बढ जायगी। २ मोटा-झोटा खाना। उ० बेचारे दाल-दरिया खाकर अपना गुजर करते हैं।

दाल न गलना–उपाय न लगना। उ० जब वहाँ उसकी एक भी दाल न गली तो वह निराश होकर लौट आया।

दाल बँधना–१. आतशी शीशे का एक बिंदु पर अक्स पडना। २ घाव पर नई झिल्ली का चढ़ना। ३ खुरंड बँधना। उ० दाल बँधने दो, अभी चलो-फिरो नही।

दाल-भात का कौर समझना–बहुत सरल जानना। उ० मैं तो इसे दाल-भात का कौर ही समझता हूँ, आज ही कर डालूंगा।

दाल-भात की तरह कबूलना–बहुत सहजता से कबूलना।

दाल-भात में मूसलचंद बनना–किसी मौज या आराम में खलल डालना। उ० इस वक़्त हम मियाँ-बीबी पिक्चर जा रहे हैं, तुम साथ लग कर दाल-भात मे मूसलचंद न बनो।

दाल में काला होना–दे० 'दाल में कुछ काला होना'।

दाल में कुछ काला-काला होना–दे० 'दाल मे कुछ काला होना'। उ० बिखरे है मुंह पर बाल ये सब और टूटा कान का बाला है, हमने तो मालूम किया कुछ दाल मे काला-काला है।

दाल में कुछ काला होना–१ शुबहा होना। कोई बात होना। शक होना। उ० दाल मे कुछ काला है, इसी से वे यहाँ नही आये हैं। २ किसी प्रकार का खटका होना।

दाल में मक्खी पड़ना–हृदय मे आशंका होना, असगुन होना।

दाल-रोटी चलना–साधारण जीवन निर्वाह होना। उ० इस महँगी मे किसी तरह दाल-रोटी चल रही है।

दाल-रोटी से खुश होना–साधारण खाने-पीने मे खुशहाल होना। उ० बेचारा दाल-रोटी मे खुश रहता है, ऐसे व्यक्ति ही आज के जनक है।

दाँव करना–मौका देखना। उ० कोई दाँव करके मैं उसके यहाँ जाऊँगा।

दाँव खेलना–चाल चलना। धोखेबाजी करना। उ० वह तो सदा ही दाँव खेलता रहता है, मै कहाँ तक बचाऊँ ?

दाँव चलना–दे० 'दाँव खेलना'। २. ताश मे पत्ते चलना। ३ किसी भी खेल मे अपनी बारी पर खेलना। उ० अपना दाँव चलाओ न, क्यों बैठे हो ?

दाँव चूकना–मौका निकलना। उ० जब दाँव चूक गया तो पछताना बेकार है।

दाँव ताकना–अवसर की तलाश मे रहना। उ० दाँव ताकते रहो, कभी तो मिलेगा। यों रुपया खराब करना ठीक नही है।

दाँव देना–१. मुकर जाना, धोखा देना। उ० तुमने कई बार ऐन मौके पर दाँव दिया है। २. लड़कों को खेलों में हार जाने पर नियत सज़ा देना।

दाँव पर चढ़ जाना या चढ़ना–वश में होना। उ० अगर वह दाँव पर चढ़ गया तो सब काम बन जायगा।

दाँव पर चढ़ाना–दे० 'दाँव पर लाना'।

दाँव पर रखना–बाज़ी पर रखना। उ० वह पचासों रुपये एक बार दाँव पर रखता है।

दाँव पर लाना–अपने अनुकूल बनाना, घात में लाना। उ० दाँव पर लाकर उसने सारे रुपये ले लिए।

दाँव-पेंच का आदमी–चालाक।

दाँव बन आना–लाभ की स्थिति होना।

दाँव में आना–घात में आना, अपने अनुकूल होना। उ० वह मेरे दाँव में आ गया है, अब चाहे जो करवा लूँ।

दाँव लगना–अवसर मिलना। उ० आप निश्चित रहें, जब दाँव लगेगा, मैं स्वयं ही भाग चलूँगा।

दाँव लगाना–१. बाजी पर लगाना। दाँव पर रखना। २. घात देखना। उ० दाँव लगा कर खबर लो।

दाँव लेना–१. प्रतिकार करना। उ० वह दिन-रात तुमसे दाँव लेने के फेर में रहता है। २. बच्चों का खेल में हारने वाले से उचित दंड लेना।

दाँव सारना–युक्ति का कारगर होना।

दावा ख़ारिज होना–मुक़दमा खारिज होना। उ० उसका दावा खारिज हो गया।

दावा जमाना–दे० 'दावा ठोंकना।

दावा ठोंकना या ठोंक देना–मुक़दमा दायर करना। उ० दावा ठोंकना चाहते हो तो ठोंक दो, मगर हाथ-पैर बचाए रहना।

दास के दास होना–अनुयायी या पिछलग्गू या दासवत् होना।

दासता की बेड़ी पहनना–अधीनता स्वीकार करना।

दाहिना-बायाँ जानना–अच्छा-बुरा समझना।

दाहिना हाथ–दे० 'दायाँ हाथ'।

दाहिना हाथ होना–बहुत सहायक होना। उ० वह मेरा दाहिना हाथ है। बेचारा हर एक काम में हाथ बँटाता है।

दाहिनी आँख फरकना–एक विशेष स्पंदन आँख में होना, जो पुरुष के लिए शुभ व स्त्री के लिए अशुभ होता है।

दाहिने-बायें छींक होना–शकुन या अपशकुन होना। उ० हौसले वाले हिचकते ही नहीं, राह चाहे ठीक या बेठीक हो। सगुन या काम असगुन से पड़े, दाहिने हो या बायें छींक हो।

दाहिने-बायें दोनों ओर चलना–स्थिर-बुद्धि न होना, किसी के पक्ष में भी करना, विपक्ष में भी।

दाहिने होना–दे० 'दायें होना'।

दिक़ करना–परेशान करना। उ० ये लड़के उस बुढ़िया को बहुत दिक़ करते हैं।

दिगर-गूँ होना–रंग बदलना, उलट-पलट होना।

दिन आना–१. आखिरी समय आना। मृत्यु समीप आना। उ० उसके दिन आ गये हैं, अब वह ज्यादा दिन न चलेगा। २. अवधि पूरी होना। उ० चुनाव के दिन भी लगभग आ ही गए हैं।

दिन उँगलियों पर गिनना–बड़ी व्यग्रता से प्रतीक्षा करना। उ० दिन फिरेंगे या फिरेंगे ही नहीं, अब दिन हैं उँगलियों पर गिन रहे।

दिन काटना–किसी तरह जीवन के दिन बिताना। उ० वह बड़े कष्ट में है, किसी तरह दिन काट रहा है।

दिन को तारे दिखाई देना–१. कष्ट से अक्ल मारी जाना। उ० इन ग़रीब बेचारों को दिन को भी तारे दिखाई देते हैं। २. ग्रहण आदि के कारण बहुत अँधेरा होना।

दिन को दिन, रात को रात न समझना–ज़रा भी आराम न करना, दिन-रात मेहनत करना। उ० उसने दिन को दिन, रात को रात न समझ न कर इतना धन कमाया और आज कफ़न को भी पैसे नहीं है।

दिन गिरे हुए होना–बुरे दिन होना। उ० आप मुझसे कुछ आशा मत कीजिये, मेरे तो खुद दिन बहुत गिरे हुए हैं।

दिन गँवाना–समय बेकार खोना। उ० आज चार साल से दिन गँवा रहे हो, अगर कुछ काम करते तो कितने रुपये होते।

दिन चढ़ना–१. सूर्य निकलने के काफ़ी बाद का समय होना। दिन अधिक आना। उ० इतना दिन चढ़ गया, और अभी तक आप सोये हैं। २. गर्भ के दिन बीतना। उ० बहू के तो काफ़ी

दिन चढ़ गए हैं। ३. मासिकधर्म के होने मे देर होना।

दिन छिपना–दे० 'दिन डूबना'।

दिन जाना–समय बीतना। उ० वह दिन गये, जब इस गाँव में उसकी तूती बोल रही थी।

दिन डूबना–रात होना। सूर्यास्त होना। उ० दिन डूब गया और अभी तक लड़का पढ़ कर नहीं आया।

दिन ढरकना–सूर्य डूबने के क़रीब होना। उ० दिन ढरक रहा है, चलो जल्दी चले, अभी बहुत दूर जाना है।

दिन ढलना–शाम होना। उ० अब दिन ढल रहा है, चलो घर चले।

दिन ढले–संध्या को। उ० दिन ढले आऊँगा।

दिन-दहाड़े–१ दिन के समय। उ० दिन-दहाड़े मेरे घर में चोरी हो गई। २. सबके सामने।

दिन-दिन–रोज़-बरोज़, प्रतिदिन। उ० दिन-दिन वह योग्य होता जा रहा है।

दिन-दिहाड़े–दे० 'दिन-दहाडे'।

दिन-दूना रात-चौगुना बढ़ना–दे० 'दिन-दूना रात-चौगुना होना।'

दिन-दूना रात-चौगुना होना–बहुत तेजी मे तरक्की करना। उ० वह तो दिन-दूना रात-चौगुना बढ रहा है, अगर इस तरह बढ़ेगा तो दो-चार साल भर मे ही लखपति हो जायगा।

दिन धरना–दिन ठीक करना। दिन निश्चित करना। उ० इस बार दिन धर लो, फिर उसे ले जाना।

दिन धराना–दिन निश्चित करवाना। उ० पंडित से दिन धरा लो तो ले जाना।

दिन-धौले–दे० 'दिन-दहाड़े'।

दिन निकलना–१. समय बीतना। उ० वे दिन निकल गये, जब मेरी हर जगह इज़्ज़त होती थी। अब तो मेरे जैसे हजारों हो गये हैं। २. सूर्य का निकलना। उ० दिन निकल गया, काम पर जाओ।

दिन पड़ना–१. दुःख आना। उ० दिन पड़ने पर मदद करे, वही सच्चा मित्र है। २ दिन निश्चित होना। उ० शादी के लिए कौन दिन पड़ा है?

दिन पतला पड़ना–१. अभाग्य होना। २ निर्धन होना। उ० अब बेचारे के दिन पतले पड़ गए, नहीं तो कभी दरवाज़े पर हाथी बँधा था।

दिन-पर-दिन–दे० 'दिन-दिन'। उ० वह दिन-पर-दिन दुर्बल होता जा रहा है।

दिन पूरा होना–गर्भ का समय समाप्त होना। उ० उसका दिन पूरा हो गया है, अब दो-चार दिन में ही बच्चा होगा।

दिन पूरे करना–किसी तरह जीना। दुःख सहकर जीना। मौत की प्रतीक्षा मे बैठना। उ० बेटा, अब जीवन में क्या रहा! किसी तरह दिन पूरे कर रहा हूँ।

दिन फिरना–अच्छा समय आना। उ० जब दिन फिरेंगे तो मेरा सब काम ठीक हो जायगा। अभी हँस लो।

दिन बहुरना–दे० 'दिन फिरना'।

दिन बिगड़ना–बुरा समय आना। उ० भाई, मेरा दिन बिगड़ गया है, अगर इस समय कुछ मदद कर देते तो बड़ा उपकार होता।

दिन भरना–किसी तरह जीवन बिताना। उ० दिन भर रहा हूँ, नही तो अब जीवन में क्या है।

दिन भारी रहना–दे० 'दिन भारी होना'।

दिन भारी होना–१ बुरे दिन आना। उ० हमारे तो दिन भारी हो गए हैं। २. दिन बड़ा होना। उ० दुःख के दिन भारी होते है।

दिन भुगताना–समय व्यतीत करना। उ० किसी तरह दिन भुगता रहा हूँ।

दिन मुंदना–सध्या होना। उ० अब तो दिन मुँद गया, देर हो जायगी। कल सुबह जाना।

दिन में दिया जलाना–दीवाला होना। उ० बड़ी कोठी के सेठ ने कल दिन मे दिया जलाया। दुनिया को यह बतलाने के लिए कि मेरा दीवाला निकल गया है, ऐसा किया जाता रहा है।

दिन-रात–सर्वदा। हमेशा। उ० दिन-रात का झगड़ा ठीक नही है।

दिन-रात बीतना न जानना–आनन्द में जीवन कटना।

दिन रो-रो कर काटना–कष्ट से दिन बिताना। उ० रो-रो कर दिन काटने से तो अच्छा मर जाना है।

दिनहुँ-दिन–दिन-पर-दिन। उ० देह दिनहुँ-दिन दूबरि होई।

दिन होना–सूर्योदय होना । उ० दिन हो गया है और अभी तक सोये हो !

दिनों का फेर होना–दशा बदलना । भाग्य का फेर होना । उ० दिनों का फेर है, जो आज आप रोटी के लिए तरस रहे है ।

दिनों को धक्के देना–१ बहुत दुःख से समय बिताना । उ० क्या करूँ भाई, गरीबी के कारण दिनों को धक्के दे रहा हूँ । २ बुरे या भले दिन की परवाह न करना । उ० 'निराला' जैसा दिनो को धक्के देने वाला कवि ही सचमुच कवि है ।

दिनों से उतरना–जवानी ढलना । उ० जब दिन था तो कुछ किया ही । अब दिनो से उतरने पर क्या करूँ ।

दिमाग आसमान पर चढ़ना–बहुत घमंड होना । उ० थोड़ा धन हो जाने से उनका दिमाग आसमान पर चढ गया है ।

दिमाग आसमान पर होना–दे० 'दिमाग आसमान पर चढना' ।

दिमाग ऊँचा होना–१. दे० 'दिमाग चढना' । २ मस्तिष्क का अच्छा होना । उ० उसका दिमाग ऊँचा है ।

दिमाग का अर्क निचोड़ना–१ बुद्धि से बहुत अधिक काम लेना । उ० दिमाग का अर्क न निचोडो, नही तो पागल हो जाओगे । २. बुद्धि चकरा देना । उ० तुमने तो मेरा दिमाग का अर्क निचोड लिया ।

दिमाग का गूदा चट हो जाना–खोपडी खाली हो जाना, तग आ जाना ।

दिमाग की आँधी–मानसिक उथल-पुथल, दुविधा ।

दिमाग को कौड़ियों के मोल खरीदना–परिश्रम से किए गये किसी दिमागी काम की कम मजदूरी देना । उ० चलो-चलो चाहते हो दिमाग को कौडियो के मोल खरीद लूं तो यह हम जैसे लेखक से नही हो सकता ।

दिमाग खपाना–बहुत ज्यादा सोच-विचार करना ।

दिमाग खाना–१ बहुत ज्यादा बोल कर किसी को परीशान करना । उ० भाई अगर ज्यादा दिमाग खाओगे तो मैं यहाँ से चला जाऊँगा । २ मस्तिष्क खाली करना ।

दिमाग खाली करना–१ अधिक माथा-पच्ची करना । उ० तुम्हे तो छोटी-सी बात समझाने के लिए भी दिमाग खाली करना पडता है । २. बहुत बोलना । ३. सर खाना ।

दिमाग चक्कर खाना–दिमाग का घबरा जाना ।

दिमाग चढ़ना–बहुत अभिमान होना । उ० आजकल तो दिमाग चढ़ा हुआ है ।

दिमाग चाटना–दे० 'दिमाग खाना' । उ० दिमाग न चाटो, मुझे भी इम्तहान देने जाना है ।

दिमाग झड़ना–अभिमान दूर होना । उ० किसी दिन तुम्हारा भी दिमाग झडेगा ।

दिमाग ठंडा होना–गुस्सा शात हो जाना ।

दिमाग न पाया जाना–दे० 'दिमाग आसमान पर चढना ।'

दिमाग न मिलना–दे० 'दिमाग आसमान पर चढना ।'

दिमाग परीशान करना–१ दे० 'दिमाग खाना ।' २ माथा-पच्ची करना । उ० तुम्हारे लिए दिमाग भी परीशान किया और तुम समझ भी न पाए ।

दिमाग फिर जाना–प्रमाद होना ।

दिमाग में कूड़ा होना–दे० 'दिमाग मे भूसा होना' ।

दिमाग मे खलल होना–पागल होना ।

दिमाग में भूसा होना–मूर्ख होना । उ० उसके दिमाग में सचमुच भूसा न भरा होता तो वह चार साल लगातार फेल न होता ।

दिमाग में रहना–घमंड मे रहना । उ० आप तो सर्वदा दिमाग में रहते है ।

दिमाग लड़ाना–सोचना, विचार करना । उ० कोई भी समस्या हो, दिमाग लड़ाने से सुलझ ही सकती है ।

दिया-बाती करना–शाम को दीपक जलाना । उ० शाम हो गई है, दिया-बाती कर लूं तो घूमने चलूं ।

दिया लेकर ढूंढ़ना–खूब खोजना । उ० उसके ऐसा योग्य वर आपको दिया लेकर ढूंढ़ने से भी नही मिलेगा ।

दियासलाई लगाना–१. जलाना । उ० दुश्मनो ने मेरे खलिहान मे कल दियासलाई लगा दी । २. दूर करना । उ० ऐसी बातों में दियासलाई लगाओ ।

दिल अटकना–प्रेम होना, दिल लगना। उ० तुम्हारा दिल उस पर अटका हुआ है।

दिल अटकाना–प्रेम करना, दिल लगाना। उ० वहाँ दिल न अटकाओ, नही तो छठी के दूध याद आ जाएँगे।

दिल आना–१ अनुराग होना, आसक्ति होना। उ० जब उस पर तुम्हारा दिल आ ही गया है तो विवाह कर लो। २ पाने की इच्छा करना। उ० मेरा दिल इस घडी पर आ गया है।

दिल उकता जाना या उकताना–१. मन न लगना। उ० तुम्हारी बातो मे तो दिल उकता गया है। २ जी घबराना। उ० बेकार बैठने से दिल उकता गया है।

दिल उड़ा-उड़ा फिरना–हृदय का अस्थिर होना।

दिल उचटना–मन फिर जाना। उ० अब तो शहर के जीवन मे दिल उचट गया है।

दिल उचाट होना–दे० 'जी उचटना'।

दिल उछड़ पडना–अत्यधिक प्रसन्नता होना।

दिल उठाना–१ चित्त को विरक्त करना, दिल न लगाना। उ० नीच कामो से दिल उठा लो, इसी मे भला है। २ चाह न रखना। उ० मैने तो ऐसी चीजो से दिल उठा लिया है।

दिल उमड़ना–१ दया या दुःख से आँसू आ जाना। उ० जब उसकी माँ भीख माँगती दिखाई देती है तो मेरा दिल उमड आता है। २ प्रेम का ज़ोर मारना। दिल मे प्रेम की लहर उठना।

दिल उलटना–१. जी घबराना, चित्त व्याकुल होना। उ० साल भर का काम बाकी है, सोच-कर ही दिल उलटता है। २ घृणा होना। उ० उसकी गदगी देख कर तो दिल उलट जाता है। ३. मन न लगना। उ० अब काम से दिल उलट रहा है।

दिल ओठों तक आना–अत्यधिक घबराहट होना या बहुत परीशान होना।

दिल कचोटना–किसी बात के लिए टीस उठना।

दिल कड़वा करना–१ दिल खट्टा करना। उ० उसकी ओर से बेकार मे जी कड़वा न करो। २ जी दुखाना। उ० उसका दिल कड़वा न करो।

दिल कड़ा करना–१ दिल को सख्त करना, पत्थर करना। किसी के दुःख आदि पर दुःखी न होना। उ० उसने तो अपना दिल ऐसा कडा कर लिया है कि कभी करुणा आती ही नही। २ हिम्मत बाँधना, सतोष करना। उ० दिल कडा करो, जब दुःख पडा है तो सहना ही होगा।

दिल कच्चा करना–मन में कमजोरी लाना।

दिल कबाब होना–१. ईर्ष्या होना। उ० पराये की विभूति देखकर तुम्हारा दिल क्यों कबाब होता है? २ कुढ़ना।

दिल का घाव–मार्मिक पीडा।

दिल का कँवल खिलना–मन खुश होना। उ० जब मै उसे देखता हूँ तो मेरे दिल का कँवल खिल जाता है।

दिल का खरा–ईमानदार, सही बात करने वाला। उ० तुम चाहे कुछ भी कहो, पर वह है दिल का खरा।

दिल का गवाही देना–१ शुद्ध-अशुद्ध का ध्यान होना, उचित-अनुचित का विचार होना। २ दिल का स्वीकार करना। उ० दिल गवाही नही देता कि मै उसे रुपया दूँ।

दिल का बादशाह–१. मनमौजी, खर्चीला। उ० वह दिल का बादशाह है। खुशी के काम मे पानी की तरह रुपये बहाता है। २ दयावान्। उ० अरे वह तो दिल का बादशाह है, भला तुम गरीब को कुछ न देगा!

दिल का बुखार निकालना–जी के गुबार निकालना। उ० जब वह कुछ कहे तो तुम भी कह कर अपने दिल का बुखार निकाल लिया करो, बाद मे दुःखी क्यो होते हो?

दिल का साफ़ होना–मन मे छल-कपट न होना।

दिल की आग खुलना–मन का रंज निकलना। उ० यदि दिल की आग खुल जाय तो तबीयत हलकी हो जाय।

दिल की कली खिलना–दे० 'दिल का कँवल खिलना'।

दिल की गाँठ खोलना–मनमुटाव दूर करना। उ० उन्होंने आकर हम लोगों के दिल की गाँठ खोल दी, नही तो कभी न कभी अवश्य झगड़ा हो जाता।

दिल की दिल में रहना–इच्छा पूरी न होना। सोची हुई बात पूरी न होना। उ० आपने आने का कष्ट भी किया, परन्तु आपका उचित स्वागत न हो सका, दिल की दिल मे ही रह गई।

दिल की फांस—१. मन का दुःख। २. रास्ते का कंटक। उ० वह मर जाय तो दिल की फांस दूर हो जाय।

दिल की लगी बुझाना—१ मन के दुःख का दूर करना। अतःकरण का शोक मिटाना। २. दिल की इच्छा पूरी करना। उ० वह आ गई है, मिल कर अपने दिल की लगी बुझा लो।

दिल की हवस निकलना—इच्छा पूरी होना, मन का रोष दूर होना।

दिल कुढ़ना—१. मन दुःखी होना। उ० जब मैं अपने गत जीवन को सोचता हूँ तो दिल कुढने लगता है। २ जलन होना। उ० किसी की बुद्धि देख कर उसका दिल कुढ़ने लगता है।

दिल कुढ़ाना—मन दुःखी करना। उ० उस पर विपत्ति पड़ी है, उसे चिढ़ा कर उसका दिल न कुढ़ाओ।

दिल कुम्हिलाना—मन उदास हो जाना। उ० आज तो तुम्हारा दिल कुम्हिलाया जान पडता है, क्या बात है?

दिल के दरवाज़े खुलना—हृदय की बात प्रकट होना। उ० बातों के चक्कर मे ऐसा डाला कि उसके दिल के दरवाज़े खुलते देर न लगी।

दिल के फफोले फूटना—मन के उद्‌गार निकलना। उ० वह मर जाय तो तुम्हारे दिल के फफोले फूट जायें।

दिल का मज़बूत होना—दृढ होना।

दिल को मसोसना—हृदय का दुःख या उद्‌गार न प्रकट कर हृदय मे ही रख लेना। उ० इतनी कटु बात सुनकर भी वह दिल को मसोस कर रह गया। पिता जी के होने से मै दिल को मसोस कर रह गया, नहीं तो उनकी बात का ऐसा उत्तर देता कि वे आजीवन याद रखते।

दिल को लगाना—१. हृदय मे जम जाना, असर पडना। उ० एक उसी ने दिल को लगने वाली बात कही। २ बुरा लगना। उ० तुम्हारी बातें तो दिल को लगती है।

दिल खटक जाना या खटकना—१. सदेह मे पड़ना। २ निश्चय से टल जाना। उ० तुम्हारी बातों को सुनकर तो मेरा दिल खटक गया। ३. बैर होना। उ० दोनों के दिल खटक गए हैं।

दिल खट्टा करना—बुरा भाव या घृणा करना। दिल तोड़ देना। उ० मैकआर्थर नीति ने अमेरिका कांग्रेस का दिल ख कर दिया।

दिल खट्टा होना—१. घृणा होना। उ० उ चापलूसी की बातो से मेरा जी खट्टा हो है। २. दिल का विमुख हो जाना असंतोष होना।

दिल खिलना—हृदय प्रफुल्लित होना। परीक्षा मे उत्तीर्ण हुआ सुन कर उसका खिल गया। तुम्हें देखकर मेरा दिल जाता है।

दिल खुलना—१. निःसंकोच होना। हिल जाना। उ० अब तो उन लोगों से उसका खुल गया है। २. सब बातें स्पष्ट कहना। आज उसका दिल खुला है।

दिल खोल कर कहना—१ निःसकोच ह कहना। उ० सारा वृत्तांत दिल खोल कहो, मै सुनूंगा। २. साफ़ कहना।

दिल गवाही देना—ठीक जाँचना।

दिल चलना—१. इच्छा होना। उ० इस को लेने के लिये मेरा दिल चल रहा है। मोहित होना। ३ रसिक होना।

दिल चीर कर देखना—भीतर की देखना। यदि तुम्हे विश्वास न हो तो मेरा दिल कर देखो कि मै तुम्हे कितना चाहता हूँ।

दिल चुटकियां लेना—दे० 'दिल चुटकी लेन

दिल चुटकी लेना—१ हँसी उड़ाना। उ० हर बात की दिल चुटकी लेते हो? २ व बोलना। उ० आज तो दिल चुटकी ले मगर मेरा भी कभी समय आएगा।

दिल चुराना—१. मोहित करना। उ० ल ने मेरा दिल चुरा लिया है। २. काम व से भागना। उ० अरे अभी तो नौजवान इतना दिल न चुराओ।

दिल चूर-चूर होना—मन को बहुत आ पहुँचना।

दिल छिलना—मन को कष्ट होना।

दिल छीन लेना—मोहित कर लेना। उ० उस तिरछी चितवन ने मेरा दिल छीन लिया

दिल छोटा करना—दे० 'जी छोटा करना'।

दिल-जमई करना—सब्र देना, सतोष करा उ० बेचारे पर विपत्ति पड़ी है, जाकर f जमई करना तुम्हारा कर्त्तव्य है।

दिल जमना—१. ध्यान लगना । उ० यदि अब भी तुम्हारा दिल पढ़ने पर नहीं जमता है तो अवश्य फ़ेल हो जाओगे । २. संतोष होना, मन भरना । उ० उसका दिल उससे जम गया हो तो शादी कर लेना ही ठीक है । ३ इच्छानुसार होना । उ० यदि तुम्हारा दिल जम गया है तो ले जाओ, मै दूसरो ले लूंगा ।

दिल जमाना—मन से करना । चित्त व्यवस्थित करके किसी काम में लगना । उ० अब तो गिने दिन रह गए हैं, ज़रा दिल जमा कर पढो, वर्ना पछताओगे ।

दिल जलना—१. कुढना । उ० तुम्हें देख कर उसका दिल जलता है । २. डाह होना । उ० उसके अपकार्यों से सभी का दिल जलता है ।

दिल जलाना—१. डाह या ईर्ष्या करना । उ० उन्हे देखकर क्यों दिल जलाते हो ? २ दुःखी करना । उ० अब गरीबो का दिल अधिक न जलाओ । ३. चिढ़ाना, कुढ़ाना । उ० आखिर यह सब करके अपने घर वालों का दिल ही न जलाते हो ।

दिल-जान से लगना—जी-जान से लगना, अच्छी तरह लगना । उ० मै इस काम में दिल-जान से लगना चाहता हूँ ।

दिल जुड़ना—प्रेम होना ।

दिलजोई करना—तसल्ली देना ।

दिल टटोलना—मन की बात जानने की कोशिश करना ।

दिल टूट जाना—दे० 'दिल टूटना' ।

दिल टूटना—१. उत्साहहीन होना । उ० बडे ऊँचे अरमान थे, पर यह सुन कर मेरा दिल टूट गया । २. जी फीका हो जाना । दिल खट्टा हो जाना । उ० हटो तुमसे तो मेरा दिल टूट गया है ।

दिल ठंडा होना—उत्साहहीन होना ।

दिल ठिकाने लगाना—हृदय को सान्त्वना देकर शांत करना । उ० उसका दिल ठिकाने लगा दो, बेचारा परीशान है ।

दिल ठिकाने होना—१. चित्त स्थिर होना । उ० कुछ घबड़ाहट थी, परन्तु आपके आ जाने से दिल ठिकाने हो गया । २. होश हो जाना । उ० ऐसी मार लगाऊँगा कि दिल ठिकाने हो जायगा ।

दिल ठुकना—१. हिम्मत होना । उ० दिल ठुकता हो तो काम कर डालो । २. विश्वास होना । उ० तुम्हारी बातो पर दिल ही नही ठुकता है ।

दिल ठोंकना—हृदय मे दृढता लाना । उ० दिल ठोक कर चले चलो ।

दिल डूबना या डूब जाना—१. बेहोश होना । उ० मारे गरम के उसका दिल डूबने लगा । २ उद्विग्न होना, घबड़ाना । उ० जाने क्यो आज दिल डूब रहा है । ३. पस्तहिम्मत होना । उ० यह सुन कर तो मेरा दिल डूब गया ।

दिल ढूंढ़ना—दिल के अन्तर्द्वन्द्वो का पता लगाना । उ० तुम्हारा दिल तो भगवान भी नही ढूंढ़ सकते, हम किस खेत की मूली है ?

दिल तड़पना—दिल में महान् कष्ट होना । बहुत व्याकुल होना । उ० उसका दिल प्रथम प्रेम के वियोग मे तड़प रहा है ।

दिल तोड़ना—१ साहस या उत्साह कम करना । उ० दिल तोड़ना अच्छा नही है, सदा उत्साह दिया करो । २ दिल के हौसलो को समाप्त करना, ज़िन्दगी से निराश होना । उ० जिसे जाना था चला गया, अब दिल तोड़ कर क्यो अपनी ज़िन्दगी बेकार करते हो ।

दिल थामना—१. शांति धारण करना, सब्र कर लेना । उ० अपने इकलौते पुत्र की मृत्यु पर भी वह दिल थाम कर रह गया । २ दिल को रोकना । उ० दिल थामते क्यो नही ?

दिल दलकना—१. कष्ट होना । २ डर जाना ।

दिल दहलना—मारे डर के जी कांपना । उ० थानेदार के आने पर चोर का दिल दहल गया ।

दिल-दिमाग का आदमी—बहुत साहसी और समझदार आदमी । उ० वह दिल-दिमाग का आदमी है ।

दिल दुखना—१. जी दुखना, दुःख या कष्ट होना । २. बुरा लगना ।

दिल दुखाना—दिल को कष्ट पहुँचाना, कष्ट देना । उ० ग़रीबों का दिल न दुखाओ ।

दिल दूना होना—साहस बढना ।

दिल देखना—दे० 'दिल ढूंढना' ।

दिल देना—हृदय से प्रेम करना । उ० दिल देना हो तो प्रेम की गली में पदार्पण करो । तुमने उसे दिल तो दिया नहीं था, यह तो सब बात ही बात थी ।

दिल दौड़ाना–इच्छा करना, मन चलाना । उ० सामर्थ्य के बाहर दिल न दौडाओ, वरना कष्ट होगा ।

दिल धक-धक करना–दे० 'जी धक-धक करना' ।

दिल धड़कना–दे० 'जी धडकना' ।

दिल धुकड़-पुकड़ करना–डरना, घबराहट होना । उ० अंग्रेजी राज्य मे गाँव के लोगो का दिल लाल टोपी देखते ही धुकड़-पुकड करने लगता था ।

दिल धुकुर-पुकुर करना–दे० 'दिल धुकड़-पुकड़ करना' ।

दिल निकाल कर रख देना–हार्दिकता से युक्त बाते करना ।

दिल पक जाना–दे० 'जी पक जाना' ।

दिल पकड़ कर बैठ जाना–दे० 'दिल पकड लेना' ।

दिल पकड़ लेना–दे० 'जी पकड लेना' ।

दिल पकड़ा जाना–दे० सदेह होना । उ० पत्र देखते ही मेरा दिल पकडा गया ।

दिल पकड़े फिरना–माया तथा प्रेम मे बेचैन घूमना । उ० क्या बुढौती मे दिल पकडे फिरते हो ? तुम्हे तो अब राम-भजन करना चाहिए ।

दिल पत्थर करना या होना–मन कठोर करना या होना ।

दिल पर चोट करना–दुःखी करना ।

दिल पर पत्थर रखना–दुःख सहने के लिए मन को दृढ करना ।

दिल पर बन आना–विपत्ति या कोई कठिन समस्या आना । उ० यह पुस्तक तो दिल पर ऐसी बन आई है कि समाप्त ही नही होती ।

दिल पर नक्श होना–हृदय मे अंकित होना । उ० उस पुस्तक के अक्षर-अक्षर हमारे दिल पर नक्श हो गए है ।

दिल पर घूंसा लगना–बुरा लगना, बहुत बुरा समाचार मिलना । उ० इस समाचार को सुन कर किसके दिल पर घूंसा नही लगेगा ।

दिल पर मैल आना–द्वेष होना, प्रेम न रहना । उ० तुम्हारे व्यवहारो से ही तो उसके दिल पर मैल आ गई ।

दिल पर साँप लोटना–१ शोकित या दुःखित होना । उ० मेरे लडकों को फलते-फूलते देख कर उसके दिल पर साँप लोट जाता है । २. जलना, कुढन होना । उ० मुझे देख कर तुम्हारे कलेजे पर क्यो साँप लोट जाता है ?

दिल पर हाथ रखना–१ सान्त्वना देना । उ० ऐसे समय मे दिल पर हाथ रखना ही उचित था । २ ठंडे दिल से सच-सच बताना । उ० दिल पर हाथ रख कर कहो, तुम इसे जानते थे या नही ?

दिल पर हाथ रखे फिरना–दे० 'दिल पकड़े फिरना' ।

दिल पसीजना या पसीज जाना–करुणा से पूर्ण हो जाना, दयार्द्र हो जाना । उ० मै इतना रोया, गिलगिलाया, तब भी उसका दिल न पसीजा ।

दिल पाना–१ हृदय की बात जानना । उ० वह तो ऐसा कुटिल है कि कोई भी उसका दिल नही पा सकता । २ प्रेम पाना । उ० उसका दिल पाना आसान नही है ।

दिल पिघलना–दे० 'दिल पसीजना' ।

दिल पीछे पड़ना–चित्त बँटना । किसी ओर लग जाने से दुःख भूल जाना ।

दिल फिर जाना–दे० 'दिल फिरना' ।

दिल फिरना–मन हट जाना, घृणा होना । उ० जब उससे दिल फिर गया तो बोलते क्यो हो ?

दिल फीका होना–दे० 'दिल खट्टा होना' ।

दिल-फेंक–सहज ही अनुरक्त हो जाने वाला ।

दिल फेरना–१. विरुद्ध कर देना । उ० तुम्हारी शिकायत करके उसने मेरा दिल फेर दिया था । २ दिल हटा लेना । उ० जब वह नही चाहती तो तुम भी अपना दिल फेर लो ।

दिल बढ़ना–उत्साहित होना । दूना साहस होना । उ० पुरस्कृत होने से बच्चो का दिल बढता है ।

दिल बढ़ाना–१ उत्तेजित करना । उ० इनाम देकर लडकों का दिल बढ़ाना चाहिए । २. हौसला बढाना । उ० और कुछ नहीं तो बात ही से दिल बढाया करो ।

दिल बहलना–दे० 'जी बहलना' ।

दिल बहलाना–१. मनोरंजन करना । उ० चलो आज खेल कर दिल बहलाया जाय । २. दे० 'जी बँटना' ।

दिल बाँसों उछलना–घबराहट होना ।

दिल बाग़-बाग़ होना–बहुत प्रसन्न होना । उ० आपके बाग़ को देख कर दिल बाग-बाग हो हो गया ।

दिल विकल होना–दिल में विकलता छाना । उ० जाने क्यों आज दिल विकल हो रहा है, कुछ बुरा होने वाला है ।

दिल बुझना–पस्तहिम्मत होना । उ० बार-बार फ़ेल होते-होते उसका दिल बुझ गया है, अब वह परीक्षा नहीं दे सकता ।

दिल बुझाना–हतोत्साह करना । उ० कहाँ तो तुम्हें उत्साहित करना चाहिए, तुम उलटे उसका दिल और बुझा रहे हो ।

दिल बुरा होना–ख्याल खराब होना । उ० हमारा दिल तुम्हारी ओर से बुरा हो गया है ।

दिल बैठा जाना–१ चित्त ठिकाने न रहना । उ० आज सुबह से ही मेरा दिल बैठा जाता है । २. उदास होना । उ० उसकी मृत्यु का समाचार सुन कर मेरा दिल बैठा जा रहा है । ३. उत्साह का समाप्त होना ।

दिल बोझ से दबना–हृदय शंकित या दुःखी होना ।

दिल बोलना–हृदय का विश्वासपूर्वक कहना ।

दिल भटकना–चित्त मे स्थिरता न होना । उ० जबसे उसकी नौकरी छूटी, उसका दिल भटकता रहता है ।

दिल भर आना–करुणापूरित होना । करुणा या दुःख से आँसू आ जाना । उ० उसकी दशा देख कर दिल भर आया ।

दिल भर जाना–१. संतोष होना । उ० दिल भर गया, अब न खाएँगे । २ दे० 'दिल जमई करना' । ३ दे० 'मन मानना' ।

दिल भर जाना या भरना–१ संतुष्ट होना । उ० अब तो दिल भर गया होगा ? २. इच्छा न रहना । उ० ऐसी किताबों के पढ़ने से दिल भर गया । ३. इच्छा पूरी होने पर प्रसन्न होना । उ० शायद वह फ़ेल हो गया तो तुम्हारा दिल भर जाय । ४. मन मान जाना । उ० उसका छुआ खाते हो, कैसे दिल भरता है । ५. दे० 'दिल-जमई करना' ।

दिल भारी करना–चित्त दुःखी या उदास करना । उ० पत्र में कौन-सी ऐसी बात थी कि दिल भारी कर रहे हो ?

दिल मसोस कर रह जाना–दे० 'दिल मसोसना' ।

दिल मसोसना–शोक, क्रोध को दबा रखना । उ० वहाँ सभी लोग अपने पूज्य थे, इसीलिए तो दिल मसोस कर रह गया ।

दिल मारना–दे० 'जी को मारना' ।

दिल मिलना–दे० 'मन मिलना' ।

दिल में आग लगना–बेचैनी होना । उ० जब से वह गया, मेरे दिल मे आग लगी हुई है ।

दिल में आग लगाना–हृदय को जलाना या उद्विग्न करना । उ० नायक ने नायिका के दिल मे आग लगा दी । उसके व्यंग्य ने मेरे दिल मे आग लगा दी ।

दिल में आना–दे० 'मन मे आना' ।

दिल में कट कर रह जाना–मन मे कुढ़ने या लज्जित होने के लिए बाध्य होना ।

दिल में क़रार होना–दिल मे शांति होना । उ० इस समाचार को सुन कर तो मेरे दिल मे बिल्कुल क़रार नही है ।

दिल में काँटा-सा खटकना–अच्छा न लगना, देख कर जलना । उ० तुम दोनों की मित्रता उसके दिल मे काँटे-सी खटकती है ।

दिल मे खटका होना–१. संदेह होना । २ वैर होना ।

दिल में खुभना–दे० 'दिल मे चुभना' ।

दिल में गड़ना–दे० 'दिल मे चुभना' ।

दिल में गाँठ पड़ना–दिल मे फ़रक या मन-मुटाव होना । उ० जाने क्यों दोनो के दिल में गाँठ पड़ गई है ।

दिल में गिरह पड़ना–मनमुटाव होना । उ० आपने दो-चार बाते उस दिन ऐसी कह दी कि उसके दिल मे गिरह पड़ गई ।

दिल में घर करना–१. सदा स्मरण रहना । दिल में जम जाना । उ० हमारे दिल में तो उसकी बात ने घर कर लिया है । २. जी मे विश्वास जम जाना । उ० उसके दिल में तुमने घर कर लिया है ।

दिल में चुभना–चित्त में जमना, हृदय में घर करना । मन पर स्थायी रूप से बस जाना । उ० माधव मूरति दिल मे चुभी ।

दिल में चोर बैठना–दे० 'मन मे चोर बैठना' ।

दिल में जगह करना–हृदय में स्थान पाना । उ० तुम्हारे उत्तम स्वभाव ने मेरे दिल में जगह कर लिया है ।

दिल में दर्द होना–मानसिक वेदना होनी।

दिल में दिल डालना–अपने की तरह दूसरो को बनाना।

दिल में दिल पड़ना–दूसरे पर अपना प्रभाव होना। उ० ऐसा काम करो कि बिना कुछ कहे दिल मे दिल पड जाय।

दिल में फफोले पड़ना–बहुत दुःख होना, दिल का बुरी तरह जल जाना। उ० कल की घटना से जन-साधारण के दिल मे फफोले पड़ गए है।

दिल में फ़रक आना–व्यवहार या प्रेम मे अन्तर पड़ना। मैत्री टूटना। उ० कम से कम मुझे तो बतलाओ कि तुम दोनो के दिलो में क्यो फ़रक आया है ?

दिल में बल पड़ना–दे० 'दिल में फरक आना'।

दिल में रखना–१ द्वेष रखना, बुरा मानना। उ० दिल मे रखते हो तो रख लो, मगर मैंने इस आशय से नही कहा था। २ छिपाना। उ० जो दिल मे रखने लायक हो, उसे मत कहो। ३ ख्याल बनाए रखना। उ० मुझे भी दिल मे रखिएगा। ४ प्यार करना।

दिल मैला करना–मन मे कुटिलता लाना, अप्रसन्न होना। उ० इतनी बात के लिए क्यों दिल मैला करते हो ?

दिल रखना या रख देना या रख लेना–बात रखना। मन रखना। इच्छा पूरी करना। उ० उसने पाँच रुपये देकर मेरा दिल रख दिया।

दिल रुकना–१ हिचकना। उ० मेरा तो वहाँ जाने से दिल रुकता है। २. घबडाना। उ० जाने क्यो आज सुबह से ही दिल रुक रहा है।

दिल लगना–प्रेम होना। उ० दिल लगा छड़ी से तो परी किस काम की ?

दिल लगाना–प्रेम करना। उ० बदशक्ल होने पर भी लैला ने मजनू से दिल लगाया।

दिल ललचाना–१. जी तरसाना, लालच देना। उ० दिल न ललचाओ, देना हो तो दे दो, नही तो मैं अपना रास्ता नापूं। २ चाहना, लालच करना। उ० इस चीज़ पर दिल न ललचाओ।

दिल लेना–१ प्रीति मे पड़ जाना। उ० दिल लेकर छोडना कठिन है। २. हृदय का भेद पा जाना। उ० किसी तरह से उसका दिल ले लो तो काम बन जाय। ३. दिल जीत लेना। उ० उसका दिल ले लो तो तुम्हें मर्द समझूं।

दिल लोटना–जी छटपटाना, न रहा जाना। बुरी तरह चाहना। उ० उस चीज़ के लिए दिल लोट रहा है।

दिल सम्हालना–दिल क़ाबू में करना, आवेश या जोश रोकना। उ० मैने बहुत दिल सम्हाला, नहीं तो हाथ छूट गया होता।

दिल साफ़ करना–मन का दुर्भाव दूर करना।

दिल से उठना–१. अपने आप भाव उठना। मन मे इच्छा होना। उ० आज दिल से उठता है कि चला जाऊँ। २. हृदय में स्थान न होना। उ० मुझे विश्वास है कि अब वह तुम्हारे दिल से उठ गई होगी।

दिल से उतरना–प्रेम या चाह न रहना। उ० कुछ दिनो तक लोगों के दिल से भारतीय चीज़े उतर गई थी। प्रेमिका के दिल से प्रेमी का उतरना उसकी मौत से भी बढकर है।

दिल से उतारना–प्रेम न रखना। भूल जाना। उ० अब तो दिल से उतारने में ही कुशल है।

दिल से गिरना–१ प्रतिष्ठा न रहना। उ० कांग्रेस लोगो के दिल से गिर गई है। २. दिल से उतरना, प्रेम न रहना। उ० तुम उस लड़की के दिल से उतर गए हो।

दिल से दूर करना–ख्याल न करना। भुला देना। उ० जो आँख से दूर है, वह दिल से दूर हो ही जाता है।

दिल से धुआँ उठना–आह निकलना। उ० उस बेचारे के दिल से जो धुआँ उठ रहा है, बेकार नही जायगा।

दिल हट जाना–मन हट जाना, घृणा होना। उ० दिल हट जाने पर फिर वह बात नही रह जाती।

दिल हाथ में रखना–१. वश में रखना। उ० उसका दिल तो उसकी स्त्री अपने हाथ मे रखती है, वह इस विषय में कुछ नही कर सकता। २. अपने क़ाबू में रखना। उ० अपना मन अपने हाथ में रखो।

दिल हाथ में लिए घूमना–आशिक-मिजाज होना। उ० इन जैसा, दिल हाथ मे लिए घूमने वाला भी दुनिया मे कोई और होगा ?

दिल हाथ में लेना–दे० 'दिल हाथ मे रखना'।

दिल हिलना–१. डर से जी काँपना। उ० जंगल के दृश्य देखकर दिल हिल गया। २.

करुणा से हृदय बेचैन होना। उ० तुम्हारे रोने से मेरा दिल हिल गया। ३. निश्चय से दिल का हट जाना। उ० अब मैं यह काम नहीं करूँगा, मेरा दिल हिल गया।

दिल ही दिल में–अपने आप, धीरे से। उ० तुमने तो दिल ही दिल में समझ लिया, मुझे कुछ भी न बताया।

दिलेरी करना–बहादुरी करना। उ० काश्मीर मे हमारे सिपाहियो ने खूब दिलेरी की।

दिलोजान से–१. दे० 'जी-जान से'। २. दिल से, दत्तचित्त होकर। उ० अब समय आ गया है, दिलोजान से लग जाओ। ३ चित्त एकाग्र करके। उ० वह दिलोजान से पढने मे लगा है।

दिल्लगी उड़ाना–हँसी-मजाक करना। उ० हर बात की दिल्लगी उडाना ठीक नही है, जरा गभीरता से सुनो।

दिल्ली दूर होना–१. कार्य-समाप्ति मे देर होना। उ० अभी तो दिल्ली दूर है, घबडाने से क्या लाभ ? २. किसी वस्तु का शक्ति से बाहर होना। उ० तुम इस वर्ष पास होने की सोच रहे हो, पर जहाँ तक मैं समझता हूँ, दिल्ली दूर है।

दिवाला निकलना–घाटा होना, दिवाला होना। उ० अभी हाल में कलकत्ता बैंक का दिवाला निकल गया।

दिवाला निकालना या निकाल देना–घाटा करा देना। उ० यहाँ के कुछ लोगों ने मिल कर सेठजी का दिवाला निकाल दिया।

दिवाला मारना–दे० 'दिवाला निकालना'।

दिशाएँ दहल जाना–चारो ओर आतक छा जाना।

दिशा जाना–पाखाना होने के लिए घर के बाहर किसी दिशा में जाना। उ० दिशा जा रहे हो तो छाता ले लो, बड़े ज़ोर का पानी आ रहा है।

दिशा होना–दे० 'मैदान होना'।

दिसावर उतरना–विदेशों में चीज़ों का सस्ता होना। उ० गुड़ का दिसावर उतर गया है, इसलिए इस वक्त बेचना ठीक नही।

दिसावर चढ़ना–विदेशी बाज़ारों में चीज़ का भाव चढ जाना। उ० दिसावर चढे तो मैं भी कुछ भेजूँ।

दीठ उठाना–१. ऊपर देखना। उ० ज़रा दीठ उठाइए, तब यहाँ का नज़ारा देख सकते हैं। २. दयालु होना। उ० जरा हमारी ओर भी ठीठ उठाया कीजिए।

दीठ उतारना–बच्चे की नज़र झाड़ना। उ० हमारे यहाँ दीठ उतारने की प्रथा प्रचलित है, पर मुझे उसमे विश्वास नही।

दीठ करना–देखना। उ० इस प्रकार दीठ करना तुमने कहाँ सीखा ?

दीठ खा जाना–नजर लग जाना। उ० सुन्दर बच्चे बडी जल्दी दीठ खा जाते है।

दीठ गड़ाना–१ टकटकी लगा कर देखना। उ० इस तरह दीठ न गडाओ। २ नजर पर चढा लेना। उ० उस पर तुमने अपनी दीठ गड़ा ली है।

दीठ चुराना–सामने न पड़ना, लजाना। उ० हममें क्यो दीठ चुराते हो, सामने आओ।

दीठ चूकना–न देख सकना। उ० आपकी दीठ तो चूक गई। अब उसका यह रूप देख पाना असभव है।

दीठ जमाना–दे० 'दीठ गडाना'।

दीठ जलना–दे० 'राई-नोन उतारना'।

दीठ जाना–अधा होना। उ० बेचारी की दीठ गई, अब तो पतोहे और भी नही पूछेगी।

दीठ जुड़ना–आँख मिलना। उ० दीठ जुडते ही सब क्रोध शात हो गया।

दीठ जोड़ना–सामने आना। उ० दीठ जोड़ने पर प्रेम का भाव मालूम होता है।

दीठ पर चढ़ना–१ पसंद आना, अच्छा लगना। उ० आपका मकान उसकी दीठ पर चढा है। २. जलन होना। उ० क्यो वह आपकी दीठ पर चढा है ?

दीठ फिरना–मुहब्बत न रहना। उ० आपकी क्यो उसकी ओर से दीठ फिर गई ?

दीठ फिसलना–आँख का चौंधिया जाना। आँख का न ठहरना। उ० ताजमहल को देख कर सभी की दीठ फिसल जाती है।

दीठ फेंकना–आँख उठा कर दूर देखना। उ० दीठ फेंकने से नदी का कछार दिखाई दे सकता है।

दीठ फेरना–१. कृपा-दृष्टि हटा लेना। उ० इतनी-सी ग़लती पर दीठ फेर ली। २. दूसरी

ओर देखना । उ० अब उन्होंने दीठ फेर ली, तुम जा सकते हो ।

दीठ बचाना–१. छिपना, सामने न आना । उ० तुम तो हमेशा दीठ बचाए फिरते हो । २ दे० 'दीठ चुराना' ।

दीठ बाँधना–मंत्र या जादू से नजर बाँधना । उ० कल तो मदारी ने सभी की दीठ बाँध दी थी ।

दीठ बिछाना–१. उत्सुकता से राह देखना । उ० आपके लिए हम लोग दिन भर दीठ बिछाए बैठे रहे । २. स्नेहपूर्ण स्वागत करना । उ० वह बेचारा दीठ बिछाता है, वहाँ न जाऊँगा तो जाऊँगा कहाँ ?

दीठ भर देखना–संतोष भर देखना, अच्छी तरह देखना । उ० आज तो हम लोगों ने प्रदर्शनी दीठ भर देखी ।

दीठ मारना–दे० 'आँख मारना' ।

दीठ मारी जाना–देखने में असमर्थ होना । उ० अब तो उसकी दीठ मारी जा चुकी है ।

दीठ मिलना–सामना होना । उ० युगों के बाद तो तुम दोनों की दीठ मिली है ।

दीठ मिलाना–आँख मिलाना । आँखें चार करना । उ० यहाँ कौन तुम्हारा प्रेमी है, जिससे तुम दीठ मिला रहे हो ?

दीठ में आना या आ जाना–१ दिखाई पड़ना । उ० बहुत खोजा, पर उस भीड़ में वह कहीं दीठ में नहीं आया । २ नजर पर चढ़ना । उ० सँभले रहना, उसकी दीठ में तुम भी आ गए हो ।

दीठ में पड़ना–दे० 'दीठ में आना' ।

दीठ में समाना–दृष्टि में गड़ जाना । नजर पर चढ़ जाना । उ० वह चित्र मेरी दीठ में समा गया है ।

दीठ लगना–नजर लग जाना । देखने का टोना लग जाना । उ० तुम्हारे लड़के को किसी की दीठ लग गई है । इसी से कहती हूँ कि ललाट पर काला टीका लगा दिया करो ।

दीठ लगाना–१. देखना । उ० उधर कहाँ दीठ लगा रहे हो ? २ नजर या दृष्टि लगाना, किसी अच्छी चीज को टोने की दृष्टि से देखना । उ० कुछ स्त्रियाँ दीठ लगाने में बड़ी तेज होती है । मुझे दीठ लगाने का विश्वास नहीं है ।

दीठ लड़ना–देखा-देखी होना । उ० जभी तुम दोनों बैठते हो, दीठ लड़ने लगती है ।

दीठ लड़ाना–देखा-देखी करना । प्रेम से एक दूसरे को देखना । उ० कल वे दोनों खूब दीठ लड़ा रहे थे ।

दीठ से उतर जाना–नजर से गिर जाना । आदर का पात्र न रहना । उ० आप तो घर वालों की दीठ से उतर गए हैं ।

दीठ से गिरना–दे० 'दीठ से उतर जाना' ।

दीठ होना–१. पाने की इच्छा होना । उ० उस पर तुम्हारी दीठ है । २. देखने की शक्ति होना, दिखाई देना । उ० उसके अभी दीठ है ।

दीदा-दलेल होना–निर्लज्ज होना । उ० वह दीदा-दलेल है ।

दीदा धो कर पीना–बिलकुल बेहया होना । उ० आजकल की लड़कियाँ तो दीदा धो कर पी गई हैं ।

दीदा धोना–निर्लज्ज होना । उ० क्या बिल्कुल दीदा धो कर ही आए हो कि ऐसी बातें करने में भी नहीं हिचकते ?

दीदा-पटम होना–अंधा हो जाना । उ० उस बेचारे का तो दीदा पटम हो गया, अब भला कमाएगा कैसे ?

दीदा फाड़ कर देखना–एकटक देखना, ध्यान से देखना । उ० तुम तो उसकी ओर दीदा फाड़ कर देख रहे थे ।

दीदा फोड़ना–आँख फोड़ना, अंधा करना । उ० चोरों ने चोरी तो की ही, बेचारे का दीदा भी फोड़ दिया ।

दीदा लगना–दिल लगना । उ० घर छोड़ कर कहीं भी उसका दीदा नहीं लगता ।

दीदे कहीं और होना–दिल किसी दूसरी जगह होना । उ० क्या दीदे तुम्हारे कहीं और होते हैं जो सब सवाल गलत कर देते हो ।

दीदे का पानी ढल जाना–निर्लज्ज हो जाना, दुष्कर्म करने में लाज न रखना । आँख में जरा भी लाज न रहना । उ० अब तो जैसे तुम्हारे दीदे का पानी ढल गया है, जो ही होता है, वही करते हो ।

दीदे निकालना–१. आँखें लाल करना । उ० तुम्हारे दीदे निकालने से मैं नहीं डर सकता । २ बिना आँख का करना । उ० प्राचीन भारत में दीदे निकाल लेना तो साधारण दंड था ।

दीदे फेंकना-इश्क लड़ाना ।

दीदे मटकाना-हाव-भाव से आँखें मारना । उ० इस तरह दीदे मटकाते तुम्हे शर्म नहीं आती ?

दीन की हाय मोटी होना-गरीब को सताने का बुरा फल मिलना ।

दीन-दुनिया की खबर न होना-संसार का कुछ भी पता न होना । बिलकुल मतहीन या अज्ञानी होना । उ० तुम्हे तो दीन-दुनिया की भी खबर नही है, तुम विदेश कैसे जाओगे ?

दीन-दुनिया बिगड़ना-लोक और परलोक दोनो ही बिगड़ जाना । उ० जिसकी दीन-दुनिया दोनो बिगड गई, उसकी जिंदगी बेकार है ।

दीन-दुनिया भूल जाना-सुध-बुध भूल जाना, जरा भी ध्यान न रहना । लोक-परलोक दोनो भूल जाना । उ० प्रेम ऐसी चीज है कि लोग इसके पीछे दीन-दुनिया भूल जाते है ।

दीपक बुझना-निर्वंश होना ।

दीमक-खाया-अन्दर से खोखला । उ० उसमे जरा भी ताकत नही है, उसका तो दीमक-खाया शरीर है ।

दीमक चाट जाना या चाटना-दीमक के कीडो द्वारा खाया जाना । उ० आलमारी की सब किताबें दीमक चाट गये ।

दीया जलाना-दिवाला निकालना । उ० इन धूर्तो ने खा-खा कर उस बेचारे का तो दीया जला दिया ।

दीया जलाने के समय-सध्या समय । उ० दीया जलाने के समय धर्मशास्त्र मे कुछ भी करने का विधान नही है ।

दीया ठंडा करना-दीपक बुझाना । उ० दीया ठंडा कर दो, अब कोई जरूरत नहीं है ।

दीया ठंडा होना-१ घर मे रौनक न रहना । उ० बूढे के मरते ही इस घर का दीया ठडा हो गया । २ चिराग गुल हो जाना । उ० अभी दीया ठडा हो गया क्या ?

दीया दिखाना-दीया या चिराग ले जाकर उजेला करना । उ० ज़रा इस कमरे मे दीया दिखा दो ।

दीया बढ़ाना-दे० 'दीया ठडा करना' ।

दीया-बत्ती करना-चिराग जलाना । उ० उस मदिर पर २५ रु० महीना खर्च होता है, पर दिया-बत्ती करने वाला कोई कभी दिखाई भी नही पड़ता ।

दीया-बत्ती का समय-सन्ध्या का समय । उ० दिया-बत्ती का समय है, उठो, पढो मत । धर्म के अनुसार इस समय कुछ भी न करना चाहिए ।

दीया लेकर ढूंढ़ना-दे० 'चिराग लेकर ढूंढना' ।

दीये का हंसना-१ चिराग से गुल झडना । उ० दीया हँसा, अब प्रकाश अच्छा होगा । २. दीये का हँसना शकुन माना जाता है । लोगो का विश्वास है कि यह विवाह या सतान होने का सूचक है । उ० दीया हँस रहा है, मालूम होता है कि बहू को बच्चा होगा ।

दीये की बत्ती टालने को न कहना-छोटा भी काम न करने को कहना ।

दीये से फूल झाड़ना-गुल झाडना । उ० दीये से फूल झाड दो, तो कुछ अधिक रोशनी हो जाय ।

दीवाना होना-किसी के लिए व्यग्र होना । किसी के पीछे पागल होना । उ० मजनू लैला के पीछे दीवाना था ।

दीवार उठाना-दीवार बनाना । उ० कुछ मजदूर मेरी दीवार उठा रहे है ।

दीवार को कान होना-गुप्त बात भी सुन लिये जाने की सभावना होना ।

दीवार टूट जाना-विरोध समाप्त हो जाना ।

दीवार में चुनना-जीते-जी आदमी को दीवाल मे चुन देना । उ० औरगजेब ने दो सिक्ख लडकों को दीवार मे चुनवा दिया ।

दीवार लांघना-किसी स्त्री से अनुचित सबध करना ।

दीवारें चाटना-दिन काटना । उ० वह बुढिया किसी तरह दीवारे चाट रही है ।

दीवाला निकलना-दे० दिवाला निकलना' ।

दीवाला निकालना-दे० 'दिवाला निकालना' ।

दुन्दुभी बजाना-हर्ष प्रकट करना ।

दुआ मांगना-प्रार्थना करना । उ० भगवान से दुआ माँगो, शायद वह कुछ सुन ले ।

दुआ लगना-प्रार्थना का फल मिलना । उ० भाई, इस बुढ़िया की दुआ खूब लगी । उसका लड़का भला-चंगा हो गया ।

दुइचारी—दो-चार, कुछ थोड़े से। उ० सुनहु जे अब अवगुन दुइचारी।

दुकान उठाना—दुकान बन्द करना। उ० दस बज गया, अब दुकान उठा दो।

दुकान करना—दुकान का काम करना। उ० गल्ले की दुकान करो, इसमें लाभ होगा।

दुकान खोलना—दे० 'दुकान करना'।

दुकान चलना—खूब सौदा बिकना। उ० उसकी दुकान खूब चल रही है।

दुकान बढ़ाना—दे० 'दुकान उठाना'।

दुकान लगाना—ठीक से दुकान खोलना। उ० दुकान खोल कर सामान तरीके से सजाओ। सुबह सात बजे जाकर दुकान लगा देना।

दुःख उठाना—कष्ट सहना। उ० अगर वहाँ जाओगे तो बड़ा दुःख उठाना पड़ेगा।

दुःख का घूंट पीना—दुःख को चुपचाप सह लेना।

दुःख का पहाड़ टूटना—घोर दुःख आ पड़ना।

दुखड़ा पड़ना—विधवा होना। उ० दुखड़ा पड़ने से उसके दिल के सारे अरमान जाते रहे।

दुखड़ा पीटना—बड़े कष्ट से जीवन व्यतीत करना। उ० क्या कहूँ, मुझे जिन्दगी भर दुखड़ा ही पीटना पड़ा है।

दुखड़ा रोना—अपने दुःख की कहानी कहना। उ० हर वक्त दुखड़ा रोना मूर्खो का काम है।

दुखती कहना—चुभती या पुरअसर बात कहना। उ० तुम तो हर बात में ही दिल को दुखाते मेरे, क्या हुआ मैंने भी गर दुखती कही थोड़ी-सी।

दुःख-दर्द में शरीक होना—दुःख में साथ देना। बुरे समय काम आना। उ० वही मित्र है, जो दुःख-दर्द में शरीक हो।

दुःख देना—तकलीफ़ पहुँचाना। उ० ग़रीबों को दुःख देना पाप है।

दुःख पड़ना—विपत्ति आना। उ० दुःख पड़ने पर सच्चा मित्र ही सहायता करता है।

दुःख पहुँचना—कष्ट होना। उ० जब ये बातें सुन कर उसको दुःख पहुँचता है तो आप उससे कहते ही क्यों हैं?

दुःख पहुँचाना—दे० 'दुःख देना'।

दुःख पाना—कष्ट सहना। उ० वह जबसे पैदा हुआ है, दुःख पा रहा है।

दुःख बटाना—कष्ट के समय साथ देना। उ० सच्चा मित्र ही दुःख बटा सकता है।

दुःख भरना—दुःख के दिन बिताना। उ० जब तक मेरे भाग्य में दुःख भरना है तो सुख आ ही कैसे सकता है?

दुःख भुगतना—दे० 'दुःख भोगना'।

दुःख भोगना—दे० 'दुःख उठाना'।

दुःख लगना—रंज होना। उ० मैंने कौन-सी ऐसी बात कह दी, जो आपको इतना दुःख लगा है?

दुगदुगी में दम होना—जान गले में आना। उ० काम करते दुगदुगी में दम हो गया, फिर भी बात सुननी पड़ती है।

दुड़ंगे लगाना—कूदना। उ० एक बेटी भी है तो चारों ओर दुड़ंगे लगाती है।

दुतकार बताना—डाँटना-फटकारना। उ० रोज़ दुतकार बताना ठीक नहीं है।

दुनियाँ उजड़ना—सर्वस्व नष्ट हो जाना।

दुःख के बादल सर पर मँड़राना—दुःख की संभावना होना।

दुःख की खान होना—दुःख का मूल होना।

दुनियाँ की हवा लगना—१. सांसारिक बातों का ज्ञान होना। २. सांसारिकता में पड़ना। उ० जिस लड़के को दुनियाँ की हवा लग गई, वह क्या पढ़ेगा? [इस मुहावरे का प्रयोग प्रायः बुरे अर्थ में होता है, पर कभी-कभी अच्छे अर्थ में भी। जैसे जब दुनियाँ की हवा लगेगी तो वह स्वयं होशियार हो जायगा।]

दुनियाँ के ऊपर होना—असाधारण होना।

दुनियाँ के परदे पर—संसार भर में। उ० दुनियाँ के परदे पर ऐसा ईमानदार आदमी मिलना कठिन है।

दुनियाँ के परदे से उठ जाना—दे० 'दुनियाँ से उठ जाना'।

दुनियाँदारी की बात—१ बनावटी बात, छल भरी बात। २. व्यावहारिक बात। उ० दुनियाँदारी की बात में वह बहुत होशियार है।

दुनियाँ देखना—अनुभव प्राप्त करना। उ० जाओ बेटा, पहले दुनियाँ देखो, फिर मुझे चराना।

दुनियाँ भर का—बहुत अधिक । उ० वह दुनियाँ भर का होशियार बनता है, पर जानता कुछ भी नहीं ।

दुनियाँ से उठ जाना—मर जाना । उ० वह बुढ़िया आज दुनियाँ से उठ गई ।

दुनियाँ से चल बसना—दे० 'दुनियाँ के परदे से उठ जाना' ।

दुपट्टा तान कर सोना—१ अच्छी तरह दिन बिताना । उ० आजकल उसका क्या पूछना है, दुपट्टा तान कर सोता है । २ निश्चित होकर सोना । उ० बिटिया की परसों शादी है और तुम दुपट्टा तान कर सो रहे हो !

दुपट्टा बदलना—सखी बनना । उ० भाई, वह लड़की तो गजब की मिलनसार है ! तीन ही दिन तो मेरे मुहल्ले में रही, पर जाने कैसे बीसों से दुपट्टा बदल लिया ।

दुम के पीछे फिरना—हर समय साथ रहना । उ० क्यों आप उसकी दुम के पीछे फिरते हैं, वह सात जन्म में भी आपका काम नहीं कर सकता ।

दुम दबा कर चल देना—चुपके से भाग जाना । उ० यही तो तुम मित्र हो कि जहाँ आफ़त आई, दुम दबा कर चल दिए ।

दुम दबा कर भागना—डर कर भाग जाना । उ० वह मुझे देखते ही दुम दबा कर भाग गया ।

दुम दबा जाना—१ डर कर किसी काम को छोड़ देना । उ० दुम दबा जाना हो तो मेरे साथ इस काम में हाथ न लगाओ । २. डर कर भाग जाना । उ० दुम दबा गए न ! इसी हिम्मत पर उसे मारने गए थे !

दुम में घुसना—समाप्त होना, लुप्त होना । उ० ज्यों ही पुलिस आएगी, तुम्हारी सारी ऐंठ दुम में घुस जाएगी ।

दुम में घुसा रहना—हर समय खुशामद में लगा रहना । खुशामदी होना । उ० पता नहीं नौकर देगा कि नहीं, परन्तु तुम उसके दुम में घुसे रहते हो ।

दुम में रस्सी बाँधना—परीशान करना । उ० तुम सीधे से जा रहे हो या दुम में रस्सी बाँधूं ।

दुम हिला कर बैठना—साफ करके बैठना । उ० सुअर भी दुम हिला कर बैठता है, लेकिन तुम नहीं ।

दुम हिलाना—प्रसन्न होना, प्रसन्नता प्रकट करना । उ० देखो रोटी देख कर कुत्ता दुम हिला रहा है ।

दुर-दुर—अपमान, तिरस्कार । उ० इस दुर-दुर से तो मैं तंग आ गया ।

दुर-दुर करना—अपमानसहित दूर भगाना । उ० क्यों दुर-दुर करते हो ? वह तुम्हारे घर रोज थोड़े ही आएगा ।

दुर-दुर फिट-फिट करना—दुतकारना, निकालना, झाड़ना, घृणा करना ।

दुरदुराना या दुरदुरा देना—दे० 'दुर-दुर करना' । उ० कुत्ते को दुरदुरा दो ।

दुरागौन देना—गौने (द्विरागमन) में लड़की को उसके घर भेजना । उ० क्या आपने श्यामा का दुरागौन दे दिया ?

दुरुस्त करना—१. ठीक करना । उ० तुम्हारी बदमाशी तो एक दिन में दुरुस्त कर दूँगा । २. सम्हाल देना, शुद्ध कर देना । उ० तुम तसवीर बनाओ मैं दुरुस्त कर दूँगा ।

दुर्भाग्य के कोड़े खाना—बहुत बुरी अवस्था में दिन बिताना ।

दुर्योधन होना—बहुत अत्याचारी होना ।

दुलकी दौड़ना—धीरे-धीरे मध्यम गति से दौड़ना ।

दुलत्ती छाँटना—दोनों पैरों से मारना । उ० यह घोड़ा दुलत्ती छाँटता है ।

दुलत्ती झाड़ना—दोनों पैर चलाना । उ० कुछ घोड़े दुलत्ती झाड़ते हैं ।

दुलत्ती फेंकना—दे० 'दुलत्ती छाँटना' ।

दुवार करना—किसी के मरने पर उसके दरवाजे पर मातमपुरसी करने जाना । उ० उनका एकलौता बेटा मर गया है, मुझे दुवार करने जाना है ।

दुविधा में डालना—असमंजस में डालना । उ० दुविधा में मत डालो । देना हो तो दे दो, नहीं तो साफ इन्कार करो ।

दुविधा में पड़ना—सदेह में होना । शुबहे में पड़ना । उ० मैं उस दिन दुविधा में पड़ गया, नहीं तो वह पकड़ जाता ।

दुशाले में लपेट कर मारना—मधुर वाक्यों में व्यंग्य या कटाक्ष करना । शब्दों की मीठी मार मारना । उ० उसे तुम सीधा समझते

हो, पर असल में है वह परले नम्बर का घाघ। दुशाले में लपेट कर मारना उसे खूब आता है।

दुश्मनी मोल लेना–जान-बूझ कर बैर ठानना।

दूह लेना–सब कुछ ले लेना, कुछ न छोड़ना। उ० लुटेरों ने तो तुम्हें बिल्कुल ही दूह लिया। ग़रीबों को दूह लेना ही आज के धनिकों का काम है।

दुहाई-तिहाई करना–कई बार उपालभ देना या कहना। उ० एक बार हो गया, बार बार दुहाई-तिहाई करने से क्या लाभ ?

दुहाई देना–१. अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना करना। उ० आपके दरवाज़े पर वह गरीब दुहाई दे रहा है। २ दुहने की मजदूरी देना। उ० हमने उसकी दुहाई दे दी।

दुहाई फिरना–१. घोषणा होना। उ० विश्व मे भारत की स्वतन्त्रता की दुहाई फिर गई। २ तेज या प्रताप ग़ालिब होना। उ० कभी भारत में नेहरू की दुहाई फिर रही थी।

दूज का चाँद होना–दर्शन दुर्लभ होना। बहुत कम दिखाई देना। उ० आप तो दूज के चाँद हो गये, आज तीन महीने बाद तो दिखलाई पड़े है !

दूध उगलना–बच्चे का दूध न पचना। उ० हमारा छोटा बच्चा कई दिनों से दूध उगल रहा है।

दूध उतरना–थन या स्तनों मे दूध आना। उ० अभी तक मेरी गाय को दूध नही उतरा, यद्यपि बच्चा दिए तीन दिन हो गए।

दूध-काँजी की तरह–वह मेल जिसका परिणाम अहितकर हो।

दूध का दूध पानी का पानी करना–उचित इंसाफ करना। उ० अब तो सबकी नस-नस मे धर्तता भरी है, कौन दूध का दूध पानी का पानी कर सकता है ? दूध का दूध और पानी का पानी करने वाले काज़ी आज कहाँ है ?

दूध का धोया–१. बिना कलक का। उ० आप दूध के धोए नही है, मुझसे न बनिए। २ साफ़, खरा, अच्छा। उ० दूध के धोए ५० रु० दिए, फिर भी उस बेईमान ने ठग लिये।

दूध का बच्चा–बहुत छोटा लड़का, तीन साल से कम का बच्चा। उ० दूध के बच्चे हो क्या कि रास्ता बतलाऊँ ?

दूध का-सा उबाल–तुरन्त शान्त हो जाने वाला गुस्सा। उ० घबराते क्यों हो, वह तो दूध का उबाल था। वह बूढ़ा किसी पर सर्वदा के लिए तो गुस्सा ही नही होता।

दूध की कुल्लियाँ करना–अत्यधिक सुख-वैभव मे रहना।

दूध की बू मुँह से आना–लडकपन की बू होना, भोलाभाला होना, अनुभवहीन होना। उ० दूध की बू जिसके मुँह से आती है, वह इतना बड़ा काम कैसे करेगा ?

दूध की मक्खी–फेंकने लायक़, बेकार चीज़। उ० वह तो आजकल दूध की मक्खी हो गया है।

दूध देने वाली गाय की लात खाना–जिससे लाभ हो, उसकी झिडकियाँ सहना।

दूधों नहाना पूतों फलना–धन और परिवार से पूर्ण रहना। उ० दूधो नहाओ पूतो फलो। [एक यह आशीर्वाद है]।

दूर की सूझना–बहुत बारीक बात सोचना। बहुत गहरी बात सोचना। उ० उसे बहुत दूर की सूझती है।

दूध के जले का मट्ठा फूक-फूंक कर पीना–बड़े नुकसान के बाद मामूली काम मे भी सावधानी बरतना।

दूध के दाँत–बचपन के दाँत। उ० अभी उसके दूध के दाँत नही टूटे है।

दूध के दाँत न टूटना–लड़का ही होना। अनुभवहीन होना। उ० अभी तो उसके दूध के दाँत भी न टूटे, वह क्या व्यापार करेगा।

दूध चुराना–गाय-भैंस का कम दूध देना। उ० तनिक भी देर हो जाती है, तो उसकी भैंस दूध चुरा लेती है।

दूध छुड़ाना–बच्चे को माँ का दूध न पीने देना। उ० जब माँ का स्वास्थ्य ठीक नही है तो दूध छुड़ा दो, नही तो बच्चे का भी स्वास्थ्य चौपट हो जायगा।

दूध डालना–दूध पीकर कै करना। उ० यह बच्चा बहुत दूध डालता है।

दूध तोड़ना–गाय-भैंस का दूध देना बन्द करना। उ० अब वह गाय दूध तोड़ देगी, क्योंकि उसे बच्चा दिये बहुत दिन हो गये।

दूध पड़ना–अनाज में रस पड़ना । जौ-गेहूँ आदि की बालियों का कुछ मोटा होना । उ० दूध पड गया है, अब अन्न तैयार होते देर नही लगेगी ।

दूध पिलाना–१ माता का बच्चों को स्तन से दूध पिलाना । उ० बहुत-सी औरतें बच्चों को हर समय दूध पिलाया करती हैं, यह आदत ठीक नहीं । २. पालन-पोषण करना, रक्षा करना । उ० साँप के बच्चे को दूध पिलाने की बेवकूफी कौन कर सकता है ?

दूध-पीता बच्चा–गोद का बच्चा, छोटा बच्चा । बहुत नादान । उ० आप दूध-पीते बच्चे तो है नही, जो आपके साथ-साथ हर जगह चलूँ ।

दूध-मूत करना–बच्चों का पालन-पोषण करना । उ० कितने ही बच्चों का दूध-मूत किया, पर इस लड़के जैसा किसी ने परेशान नही किया ।

दूध-सा–बहुत सफ़ेद । उ० यह दूध-सा कपडा भी आपको पसन्द नही आया ।

दून की लेना–दे० 'दून की हाँकना' ।

दून की सूझना–सामर्थ्य से बाहर की सोचना । उ० आपको तो हर समय दून की सूझती है, इससे क्या लाभ ?

दून की हाँकना–बढ-बढ कर बातें करना । उ० मेरे सामने दून की न हाँको, तुम्हारी औकात मै खूब समझता हूँ ।

दू-बदू कहना–किसी के सामने कहना । उ० अगर वह सचमुच बुरा काम करता है तो उससे दू-बदू कहने मे मुझे कोई हिचक नही ।

दू-बदू होना–सामने होना । उ० जो कुछ बात करना हो दू-बदू होकर कहिये । छिपे-छिपे कहना मर्दो का काम नही है ।

दूर करना–पृथक् करना । उ० ऐसे नीच आदमी को जल्द से जल्द अपने घर से दूर करो ।

दूर की कहना–१ आगे की बात बताना । उ० वह पंडित दूर की कहता है और सभी बातें सही होती हैं । २ दे० 'दूर की हाँकना' ।

दूर की कौड़ी लाना–बहुत दूर की सोचना ।

दूर की बात–१ बहुत कठिन । उ० आप ऐसे आदमी के लिए यह दूर की बात है । २ भविष्य की बात । उ० यह तो दूर की बात है, आज ही मे कौन चिन्तित हो ?

दूर की सुनाना–१. बड़ों को अपशब्द कहना । उ० मोहन ने तुम्हें गाली दी है, अत: जो चाहो करो । दूर की क्यों सुना रहे हो ? २. बहुत दूर की बात करना । उ० इस दूर की सुनाने से क्या फ़ायदा, कुछ ऐसी बात करो जिससे इस समस्या का हल हो ।

दूर की हाँकना–बडी ऊँची-ऊँची बातें करना । उ० वह तो बस दूर की हाँकना जानता है और करने की कहो तो चुप्पी साध लेता है ।

दूर के ढोल सुहावने होना–दूर की वस्तु निर्दोष या बहुत अच्छी लगना ।

दूर तक पहुँचना–किसी बात में दूर तक सोचना । उ० भाई, उस आदमी की मैं तारीफ़ करूँगा, चाहे जैसी भी समस्या हो, वह बहुत दूर तक पहुँचता है ।

दूर ही से सलाम करना–घृणा करना । पास न आने देना । उ० तुम्हारे जैसे लंपटो को तो मैं दूर ही से सलाम करता हूँ ।

दूसरा द्वार देखना–दूसरे का सहारा खोजना ।

दूसरे की जान को जान न समझना–निर्दयता का व्यवहार करना । उ० तुममें तो मानवता छूकर भी नही है । दूसरे की जान को जान ही नहीं समझते ।

दूसरे की पत्तल से कौर छीनना–दूसरे का हिस्सा हड़प जाना ।

दूसरों के घर में आग लगा कर हाथ सेंकना–दूसरो का नुकसान कर अपना लाभ करना ।

दूसरों के सिर ठीकरा फोड़ना–दूसरों को दोषी ठहराना ।

दूह लेना–दे० 'दुह लेना' ।

दृष्टि का उड़कर खाना–नज़र लगना । उ० सुन्दर बच्चो को अक्सर लोगों की दृष्टि उड़कर खाती है ।

दृष्टिकोण–विचार, विचार-सरणि, मत । [यह अंग्रेजी मुहावरे Angle of Vision का अनुवाद है] । उ० इस विषय मे आपका दृष्टिकोण क्या है ?

दृष्टिबिंदु–विचार । [यह अंग्रेज़ी के Point of view का अनुवाद है] । उ० इस विषय मे आपका दृष्टिबिंदु मुझे पसंद नही ।

देख कर मक्खी निगलना–जानकारी मे या जान-बूझ कर बुरा काम करना ।

देखते रह जाना–आश्चर्यान्वित हो जाना, देख कर हैरान हो जाना । उ० उसकी तसवीर देखकर हम लोग तो देखते रह गए ।

देखते ही देखते—तुरन्त, उसी वक्त। उ० जादूगर देखते ही देखते आँखों में ओझल हो गया।

देखते हुए—जानने में, आँखों के सामने। उ० तुम्हारे देखते हुए ऐसा अत्याचार हो! तुम्हें शर्म आनी चाहिए।

देखना-सुनना—अच्छी तरह जाँच-पड़ताल करना। उ० किसी भी मामले में पुलिस बिना देखे-सुने कुछ नहीं कर सकती।

देखने में—साधारणतः, बाहरी रूप या ढंग में, ऊपर से। उ० देखने में तो वह सन्यासी है, पर भीतर से कुछ और है।

देख लेना—१. बाद में अवलोकन कर लेना या विचार लेना। उ० फ़ाइल यहीं छोड़ दो, वे रात में देख लेंगे। इसको देखा जायगा, पहले यह काम खतम करो। २. बदला लेना। उ० आज तो आप बच निकले, पर बाद में मैं देख लूंगा।

देखा जाना—बाद में सोच-विचार किया जाना। उ० वहाँ जाने के लिए देखा जाएगा, पहले यह काम तो करो।

देगची का एक चावल टटोल कर सब जान लेना—एक नमूने से पूरे का अन्दाज लगा लेना।

दे मारना—पछाड़ देना। उ० हिकमत ऐसी चीज है कि उतने बड़े पट्ठे को उसने देखते ही देखते दे मारा।

देर पर देर होना—बहुत देर होना। उ० देर पर देर हुई जा रही है, और एक तुम हो कि हिलने का नाम ही नहीं लेती।

देर लगाना—देर करना। उ० कॉलेज का समय हो गया है, अब अधिक देर न लगाओ।

देवता कूंच कर जाना—बहुत डर जाना। उ० जंगल में मतवाले हाथी को देख कर उनके देवता कूंच कर गये।

देवलोक को सिधारना—गोलोक जाना, मर जाना। उ० एक दिन सभी को देवलोक को सिधारना है।

देश-निकाला देना—अपने राज्य से निर्वासित करना।

देशावर आना—विदेशी आयात का बढ़ना। उ० रूई का देशावर नहीं आया है, इसी से कपड़ा महँगा है।

देह की ख़बर न होना—बेसुध होना।

देह चुराना—सिमटी-सी रहना।

देह छूट जाना—मर जाना। उ० भूमि-शय्या देने के बाद ही उसका देह छूट गया।

देह छूटना—दे० 'देह छूट जाना'।

देह धरना—जन्म ग्रहण करना, पैदा होना। उ० कौन ध्यान देता है कि कितने रोज देह धरते हैं और कितने मरते हैं।

दैयन कै—किसी तरह, बड़ी कठिनाई से। उ० दैयन कै यह काम हो गया, मैं तो निराश हो चुका था।

दैव लगना—दुर्दिन आना। दैवी प्रकोप होना। उ० हमारे तो वर्षों से दैव लगा है, कोई भी काम ठीक से होता ही नहीं।

दो अंगुल ऊँचा होना—कुछ बढ़ कर होना।

दो आंसू गिराना—दे० 'दो आँसू बहाना'।

दो आँसू डालना—दे० 'दो आँसू बहाना'।

दो आँसू बहाना—दुःख प्रकट करना। थोड़ा रो लेना। उ० अरे अपना पड़ोसी था, दो आँसू बहाना तो सभी का फर्ज है।

दो उँगली का धंधा—जेब काटने का काम। उ० आजकल पढ़े-लिखे भी दो उँगली का धंधा करने लगे हैं।

दो-एक—कुछ, थोड़ी-सी। उ० आप दो-एक पुस्तकें अवश्य भेज दीजिएगा।

दो कौड़ी का—१. तुच्छ, नीच। जिसकी कीमत नहीं के बराबर हो। २. बेकार, खराब। उ० अरे वह तो दो कौड़ी की मशीन है।

दो कौड़ी का आदमी—नालायक, नीच, बुरा, निर्धन। उ० उसका क्या विश्वास, वह तो दो कौड़ी का आदमी है।

दो कौड़ी का भी नहीं—दे० 'दो कौड़ी का'।

दो कौड़ी की इज्जत होना—कोई प्रतिष्ठा न होना, बेइज्जत होना। उ० यही तो जमाना है। बात झूठी थी, पर बेचारे की इज्ज़त दो कौड़ी की हो गई।

दो कौड़ी की बात हो जाना—बात बिगड़ जाना। उ० तुम्हारे न बोलने से बात दो कौड़ी की हो गई होती; पर तुमने अच्छा बचाया।

दो-चार—कुछ, थोड़े से। उ० इस समय यदि मुझे दो-चार रुपये भी मिल जाते तो काम चल जाता।

दो-चार होना–भेंट होना, मिलना।

दो-टप्पी बात–दो-तरफी बात।

दोटूक–स्पष्ट, साफ़। उ० भाई दोटूक बात कहो। इस बुझौवल में काम न चलेगा।

दोटूक कहना–निष्कपट कहना, सच कहना, स्पष्ट कहना। उ० चाहे जिसके भी खिलाफ कहना हो, वह दोटूक कहता है।

दोटूक जवाब देना–बुरा-भला का ध्यान न देकर स्पष्ट उत्तर देना। उ० उसका दोटूक जवाब सुनकर मैं तो दंग रह गया।

दोटूक बात–साफ-साफ और संक्षेप में कही हुई बात। उ० मुझे इधर-उधर की कहना नहीं आता, मैं तो दोटूक बात कहता हूँ।

दो दाँत वाला–भोला, बहुत नादान।

दो दिन का–१ थोड़े समय का। उ० दुनिया का आनन्द दो दिन का है। २ बच्चा, अनुभवहीन। उ० अभी तो वह दो दिन का है, उसका विवाह कौन करेगा ?

दो दिन का मेहमान–१. जल्दी मर जाने वाला। २ जल्दी ही कहीं जाने वाला। उ० उसे आराम से रखना, बेचारी दो दिन की मेहमान है।

दो दिन का सपना–थोड़े दिनों का वैभव या सुख।

दो-दो चोंचें होना–आपस में कहा-सुनी होना। उ० उनमें तो रोज ही दो-दो चोंचें होती है।

दो-दो दाने को फिरना–भीख माँगता फिरना। उ० घर रहता तो आराम से रहता, यहाँ दो-दो दाने को फिर रहा है।

दो-दो हाथ करना–लड़ना। उ० लगता है इससे किसी दिन दो-दो हाथ करने ही पड़ेंगे।

दोना चढ़ाना–प्रसाद चढाना। उ० दोना चढा कर लाओ तो खाया जाय। पास हो गया तो दोना चढाऊँगा।

दोना चाटना–दे० 'पत्ता चाटना'।

दो नावों पर चढ़ना–१. दो विरोधी काम एक साथ करना। २ दोनों ओर होना। ३ बुरी तरह फँसना। उ० मैं तो आजकल ऐसी दो नावों पर चढ़ा हूँ कि कुछ कहते नहीं बनता।

दो नावों पर पैर रखना–दे० 'दो नावों पर चढ़ना'।

दोनों प्राणी–दम्पति, स्त्री और पुरुष। उ० हम दोनों प्राणी काफ़ी सुखी हैं।

दो-धारी तलवार–हर स्थिति में बुरा करने वाली।

दोमुँहा साँप–दोनों ओर से अहित करने वाला।

दोनों हाथ लड्डू–हर तरफ से लाभ होना।

दो सिर होना–१. दो तरह के दिमाग़ से बातें करना। उ० तुम्हारे तो दो सिर हैं। तुमसे कौन बात करे ? २. मरने-कटने या कटाने के लिए फ़ालतू सिर होना। उ० तुम्हारे दो सिर हो तो तुम भी जाओ।

दौड़-धूप करना–दे० 'दौड़-धूप मचाना'।

दौड़-धूप मचाना–बहुत उद्योग या परिश्रम करना। किसी काम के लिए बहुत दौड़-धूप करना। उ० दौड़-धूप मचाने से काम हो सकता है।

दौड़-धूप लगाना–दे० 'दौड़-धूप मचाना'।

दौड़ मारना–दे० 'दौड़ लगाना'।

दौड़ लगाना–१ बहुत दौड़-धूप या कोशिश करना। उ० दौड़ लगाओ, शायद काम बन जाय। २ बहुत दूर तक जाना।

दौड़ा करना–दे० 'दौरा करना'।

दौड़ा मारना–चलाकर बहुत परीशान करना। उ० यहाँ काम करना बेकार है, यह साहब तो दिन भर दौड़ा मारता है।

दौर चलना–शराब का खूब पिया जाना। उ० वहाँ दौर चलता है, तुम भी जाया करो।

दौरा आना–किसी बीमारी का फिर आना। उ० उसे मिरगी का दौरा आता है।

दौरा करना–निरीक्षण के लिए घूमना। उ० मिनिस्टर साहब दौरा कर रहे हैं।

दौरा लगाना–दे० 'दौरा करना'।

दौरी में पैर डालना–धीरे-धीरे चलना। उ० क्या दौरी में पैर डाल रहे हो, ज़रा तेज़ चलो।

द्राविड़-प्राणायाम करना–१. सीधी बात को घुमा-फिरा कर कहना। २. व्यर्थ में बहुत परिश्रम करना।

द्राविड़-प्राणायाम खींचना–दे० 'द्राविड़-प्राणायाम करना'।

द्रौपदी का चीर–कभी न समाप्त होने वाली वस्तु।

द्वार खुलना—उपाय निकालना। उ० कोई द्वार खुले तो तुम्हारा ठिकाना लगा दूँ।

द्वारचार होना—बरात का बेटी वाले के दरवाजे पर विवाह के पहले जाना। द्वारपूजा होना।

द्वार लगना—१. दरवाजा बंद होना। २. दरवाजे के पीछे छिप कर सुनना या देखना। उ० कोई द्वार लगा है, ज़रा धीरे बोलो। ३ रास्ता बंद होना।

द्वार लगाना—दरवाजा बंद करना।

द्विशिर होना—दे० 'दो सिर होना'।

ध

धँधले आना—छल-छंद का अभ्यास होना। उ० आपको धँधले खूब आते है।

धँधले में आना—किसी की धोखाधड़ी मे आना या फँसना। उ० मैं आपके धँधले मे नही आ सकता।

धक-धक करना—१. दिल का धड़कना। २. बेचैन होना। ३ डरना।

धक-धक जी करना—डर से हृदय की गति बढ जाना, डर के मारे बेचैन होना। उ० मेरा जी धक-धक कर रहा है, पता नही मास्टर साहब परीक्षा मे क्या पूछेंगे ?

धक-से हो जाना—आश्चर्यचकित और मग्न हो जाना। उ० यह बात सुन कर मै धक-से रह गया।

धकापेल करना—१. बहुत तेजी से करना। उ० जो भी काम दे दो, वह धकापेल करता है। २. बिना सोचे-समझे करना।

धकेल देना—१. धक्का देना, गिरा देना। २ ढकेलना।

धक्कम-धक्का करना—१. भीड मे बहुत धक्का देना। २. बहुत भीड़ का इकट्ठा करना या होना। ३. मार-पीट करना। उ० यहाँ धक्कम-धक्का न करो।

धक्का खाते फिरना—इधर-उधर मारा-मारा घूमना। उ० तुम्हारे घर दूसरे मौज उड़ाते है और तुम धक्का खाते फिर रहे हो।

धक्का खाना—१. हानि उठाना। उ० इस व्यापार मे जितना धक्का खाना होगा, वह तो अब खाना ही पड़ेगा, उससे जान नही बच सकती। २. ठोकर खाना। उ० मेरी ज़िन्दगी धक्के खाते बीती।

धक्का देकर निकालना—बेइज्ज़ती से बाहर करना। उ० अगर सभा में अधिक अंड-बंड बकोगे तो धक्के देकर निकाले जाओगे।

धक्का देना—दे० 'धकेल देना'।

धक्का पहुँचाना—१. नुक़सान पहुँचाना। उ० इससे तुम्हारे रोजगार को धक्का पहुँचेगा। २. सदमा पहुँचना। उ० इस समाचार से दिल को धक्का पहुँचेगा।

धक्का पहुँचाना—१ हानि पहुँचाना। २. सदमा पहुँचाना।

धक्का लगना—१ नुकसान होना। उ० इस बार उसे सोने मे ऐसा धक्का लगा कि सारी कमायी खतम हो गयी। २ आघात, चोट या ठेस लगना। उ० गाड़ी का इतने जोर से धक्का लगा कि मैं गिर गया।

धज्जा उड़ जाना—दे० 'धज्जा हो जाना'।

धज्जा हो जाना—१ दुबला-पतला हो जाना। उ० आपको कौन-सी बीमारी है कि आप धज्जे हो गये। २. टुकड़े-टुकड़े हो जाना। उ० वह कपड़ा तो धज्जा हो गया। ३. बर्बाद या नष्ट-भ्रष्ट हो जाना।

धज्जियाँ उड़ना—१. दुर्दशा होना। उ० वह बेचारा जब से यहाँ आया, उसकी धज्जियाँ उड़ रही है। २. बेइज्ज़ती होना।

धज्जियाँ उड़ाना—१. निंदा करना। बेइज्जत करना। उ० सबके सामने किसी की धज्जियाँ उड़ाना ठीक नही। २. टुकड़े करना। उ० इस कोट की तो तुमने धज्जियाँ उड़ा दीं। उ० नष्ट-भ्रष्ट करना, बर्बाद करना। उ० धज्जियाँ न उड़ा तो कहना।

धज्जियाँ लगना या लग जाना—फटे-पुराने कपड़े पहनने की नौबत आना। उ० इस ज़माने मे बड़ो की धज्जियाँ लग गईं।

धज्जियाँ लेना—१. दुर्दशा करना। उ० उसकी धज्जियाँ मत लो। २. ऐब निकालना।

धज्जी हो जाना—१. टुकड़े-टुकड़े हो जाना। २. कमज़ोर हो जाना।

धड़क खुलना—हिचक दूर होना।

धड़धड़ाता हुआ–१. जल्दी से। उ० मै कहती कैसे, यह धड़धड़ाता हुआ आया और निकल गया। २. बेधड़क। उ० वह सभी काम धड़धड़ाता हुआ कर लेता है। ३ धड़-धड़ शब्द करता हुआ। उ० गाड़ी धड़धड़ाती हुई आई और चली गई।

धड़ में उतारना–दे० 'धड़ में डालना'।

धड़ में डालना–पेट मे डालना। उ० ज़रा-सी दवा धड़ में डाली और तुरन्त उसका पेट ठीक हो गया।

धड़ रह जाना–१. शरीर का सुन्न हो जाना। २ बहुत दुर्बल हो जाना। ३ हाथ-पैर का बिल्कुल सूख जाना।

धड़ल्ले के साथ–१. निःसकोच। उ० जो कुछ कहना हो, धड़ल्ले के साथ कहिये। किसी का डर नही है। २. जल्दी। उ० धडल्ले के साथ निकल जाओ, पुलिस आती ही होगी।

धड़ल्ले से–दे० 'धडल्ले के साथ'।

धड़ से सिर अलग होना–सिर कटना। उ० उसने इतने जोर से तलवार मारी कि तुरन्त उसका धड़ से सिर अलग हो गया।

धड़ा उठाना–तोलना। उ० भाई जब उमने धड़ा उठाया है तो सोलह आने देगा, न कम न बेश।

धड़ा करना–तराजू के पलडे एक-सा करना। उ० धड़ा करके तौलो, नही तो सामान कम हो जायगा।

धड़ाके से–जल्दी से, बेधड़क। उ० धड़ाके से इस काम को कर डालो तो दूसरा काम दूँ।

धड़ा बाँधना–दे० 'धड़ा करना'।

धड़ी जमाना–मिस्सी लगाना। उ० खुदा जाने अभी है खून पर किस-किस के दाँत उसका, धड़ी होंठो पर अपने बिन जमाए वह नहीं रहती।

धड़ी-धड़ी करके लुटाना–सर्वस्व लुटा देना। उ० उस नालायक़ लड़के ने बाप की कमाई धड़ी-धड़ी करके लुटा दी।

धड़ी-धड़ी करके लूटना या लूट लेना–खूब लूटना। उ० डाकुओं ने उसे धड़ी-धड़ी करके लूट लिया।

धड़ी भरना–वज़न करना, तौलना।

धत बनना–दे० 'धत होना'।

धत होना–चल देना। उ० वह मेरी किताब लेकर धत हो गया।

धता करना–हटाना। उ० उसे यहाँ से धता कर दो, नही तो वे सब बिना ठोंके नहीं छोड़ेगे।

धता बताना–१. टाल-मटोल करना। उ० जब धता बताना है तो साफ़ इन्कार कर दो, परीशान करने से क्या लाभ? २. धोखा देना। उ० उसने तो ऐसा धता बताया कि मैं देखते रह गया।

धतूरा खाये फिरना–मस्त होकर घूमना, दीवाना बना घूमना। उ० सिद्ध महात्मा भगवान के दर्शन के लिये धतूरे खाये फिरते है।

धन उड़ाना–१. खूब खर्च करना। उ० वह धन उड़ाना ही जानता है, कमाना नही। २. धन चुरा लेना या दबा लेना।

धनकुट्टी करना–खूब मारना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो ऐसी धनकुट्टी कर दूंगा कि दो-चार जन्म याद रखोगे।

धन पानी करना–दिल खोल कर खर्च करना। उ० बड़े लड़के की शादी में तो आपने धन पानी कर दिया।

धन बरसना–द्रव्य की अधिकता होना।

धनिये की खोपड़ी में पानी पिलाना–१. बहुत परीशान करना। उ० धनिए की खोपड़ी में पानी न पिलाओ, कभी मेरा भी वक़्त आयेगा। २. प्यास से मारना।

धनी-धोरी–मालिक, अधिकारी। उ० इस मकान का अब कोई धनी-धोरी नहीं है, जो चाहे इसमे रह सकता है।

धनी-मानी–धनवान, इज़्ज़तदार। उ० वह गाँव का धनी-मानी आदमी है, उसकी इज़्ज़त करनी चाहिये।

धनुष चढ़ाना–धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाना।

धन्नासेठ–दे० 'धन्नासेठ का नाती'।

धन्नासेठ का नाती–अधिक धनी न होने पर भी अपने को बहुत धनी समझने वाले को व्यंग्य मे कहा जाता है। उ० आपका क्या पूछना, आप तो धन्नासेठ के नाती हैं।

धन्नासेठ होना–१. बहुत धनी होना। २. अपने को बहुत धनी समझने वाला होना। उ० आप तो धन्नासेठ हैं, भला आपके आगे कौन टिक सकता है?

धन्नासेठी बघारना—अपने आप को बहुत बड़ा समझना।

धप्पा मारना—धोखे से धन उड़ाना। उ० धप्पा मार कर लाया हुआ धन इसी तरह बरबाद हो जाता है।

धप्पा लगना—१. हानि होना। उ० इस काम में तुम्हें काफ़ी धप्पा लगा है। २. बेइज्जत होना। बदनामी होना। उ० इस काम से तुम्हारे ऊपर भी धप्पा लगेगा।

धब्बा लगना—बेइज्ज़ती होना, बदनामी आना। उ० इतनी सफ़ाई पर भी धब्बा लग ही गया।

धमकी देना—डर दिखाना। यों ही डराना। उ० पुलिस और बदरों का धमकी देना प्रसिद्ध है।

धमकी में आना—किसी की धमकियों से डर जाना। उ० अगर तुम उसकी धमकी में आए तो बहुत परेशान करेगा।

धमा-चौकड़ी मचाना—शोर-गुल मचाना, ऊधम मचाना। उ० क्या धमा-चौकड़ी मचाए हो, चुप रहो, नहीं तो मार खा जाओगे।

धमार गा ऊधम मचाना—गा, खेल या हँस-बोल कर बहुत ऊधम मचाना। उ० कर धमा चौकड़ी भली रुचि से, क्यों मचा दे धमार गा ऊधम।

धरती आकाश एक करना—अत्यधिक मेहनत करना।

धरती का फूल—१. संसार का रत्न, अवतारी या बहुत योग्य पुरुष। उ० गांधी जी धरती के फूल थे। २. नया अमीर। उ० धरती के फूल हैं, नहीं तो इतना नहीं इतराते। ३. कुकुरमुत्ता। ४. मेढक।

धरती छोड़ना—मर जाना।

धरती पर पाँव न पड़ना—१. खुशी से फूला न समाना। उ० अब तो उसके पिता के धरती पर पाँव ही नहीं पड़ेंगे। २. गर्व से भर जाना।

धरती पर पाँव न रखना—१. अभिमान से भरा रहना। गर्व से चूर रहना। उ० वह तो जब से एम० ए० हो गया, धरती पर पाँव ही नहीं रखता। २. बहुत प्रसन्न होना।

धरती पर रहने वाले का आकाश चाटने का प्रयत्न करना—असंभव काम की चेष्टा करना।

धरती बाहना—बहुत मेहनत करना। उ० जब कुछ मिलेगा ही नहीं, तो क्या धरती बाह रहे हो?

धरती में पाँव न रखना—दे० 'धरती पर न रखना'।

धरती हिला देना—कठिन कार्य कर दिखाना। उ० अंतरिक्ष में मानव भेज कर रूस ने धरती को हिला दिया।

धर दबाना—ज़बरन चढ़ बैठना, पकड़ लेना या चंगुल में कर लेना। उ० उस शेर ने गाय को धर दबाया।

धर दबोचना—दे० 'धर दबाना'।

धर धमकना—जल्द आ जाना, खट से आ जाना। उ० वह भी धर धमका।

धरन खिसकना—दे० 'धरन सरकना'।

धरन टलना—दे० 'धरन सरकना'।

धरन डिगना—दे० 'धरन सरकना'।

धरन सरकना—गर्भाशय की नस का हट जाना। उ० धरन सरकी कि गड़बड़ हुआ, ज़रा होशियार रहना। उसकी धरन सरक गई है अब बच्चा होने की आशा नहीं।

धरना देना—जम कर बैठना। कुछ माँगने के लिए जमना। उ० क्या धरना दिये हो, यहाँ कुछ न मिलेगा, दूसरा दरवाजा देखो।

धर-पकड़ कर—जैसे-तैसे। उ० धर-पकड़ कर वह स्कूल जाता तो है, पर उसका पढ़ना न पढ़ना बराबर है।

धरहरिया करना—बीच-बचाव करना। मनाना। उ० धरहरिया करने में ही मुझे चोट लग गई।

धरा-ढका—समय पर काम आने के लिए बचा कर रखी हुई वस्तु।

धरा रह जाना—बेकार रह जाना। समय पर काम न आना। उ० चलते वक़्त सारी चीज़ें धरी रह जायेंगी।

धर्म उठाना—धर्म से कहना। उ० अगर तुम धर्म उठा लो कि यह क़लम तुम्हारा है तो मैं दे दूँगा।

धर्म कमाना—धर्म का काम करना। उ० तुम्हारे पिताजी आजकल खूब धर्म कमा रहे हैं।

धर्म करना—१. दे० 'धर्म कमाना'। २. धर्म के काम करना।

धर्म का टीका होना—सब धर्मों में श्रेष्ठ होना।

धर्म खाना–धर्म की क़सम खाना। उ० धर्म खाकर कहता हूँ, मैं इस विषय में कुछ भी नहीं जानता।

धर्म बिगड़ना या बिगड़ जाना-धर्म के खिलाफ़ काम होना। उ० बेचारे का धन भी गया और धर्म भी बिगड़ गया।

धर्म में आना–आत्मा को जँचना। उ० जो धर्म में आये, उसी को करना चाहिये।

धर्म रखना-धर्म निभाना। उ० अभी तक तो धर्म रख रहा हूँ, आगे भगवान जाने।

धर्मराज करना–न्याय से राज्य करना। उ० वही राजा अधिक दिन तक राज्य कर सकता है जो धर्मराज करता हो।

धर्म-लगती कहना–धर्म का ख़याल करके सत्य कहना। उ० हम तो धर्म-लगती बात कहेंगे, चाहे कोई खुश हो या नाराज।

धर्म से कहना–धर्म की क़सम खाकर कहना। उ० धर्म से कहो, तुमने चोरी की थी या नही ?

धाक जमना–असर होना। उ० पिताजी की आजकल गाँव मे खूब धाक जमी हुई है।

धाक जमाना–दे० 'धाक बाँधना'।

धाक बँधना या बँध जाना–रोब जमना। उ० आजकल उसकी वहाँ खूब धाक बँधी है।

धाक बाँधना–दबदबा जमाना। उ० वह जहाँ जाता है, तुरन्त अपनी धाक बाँध लेता है।

धाका-बैठना–सदमा गुज़रना।

धागा देना–धोखा देना, फ़रेब देना।

धागा भरना–कपड़े को तागा से रफू करना। उ० मेरी धोती फट गई है, छेद मे धागा भर दो।

धागे-धागे करना–१. चिथड़े-चिथड़े करना। उ० बन्दर ने मेरी धोती धागे-धागे कर दी। २. बर्बाद कर देना। उ० मैं आपकी इज़्जत धागे-धागे कर दूंगा।

धाड़ पड़ना–१. शीघ्रता होना। उ० क्या धाड़ पड़ी है, जो खाना पानी से घोंट रहे हो ? २. डाका-पड़ना।

धाड़ मार कर रोना–बहुत जोर से चिल्ला कर रोना।

धानपान होना–बहुत कोमल होना। उ० वह ऐसा धानपान है कि धूप में एक क़दम भी नही चल सकता।

धाय पूजना–दूर रहने का इरादा करना, सर्वदा के लिए प्रणाम करना। उ० धाय पूजता हूँ ऐसे खेल से। बाप रे बाप ! बच गया, नही तो आँख ही चली गई होती।

धार गिरना–किसी हथियार की धार तेज़ न रहना। उ० मेरी तलवार की धार गिर गई है।

धार चढ़ाना– १. शान धराना। उ० चाकू पर धार चढ़ा दो। २. उकसाना, किसी काम करने को बढावा देना। उ० धार न चढ़ाइए, मै मूर्ख नही जो आग मे कूद पड़ूँ।

धार टूटना–किसी द्रव का धारा-प्रवाह गिरना बंद होना। उ० धार टूट गई, बचा कर गिराना, नहीं तो घी फैल जायगा।

धार देना–१ लाभ पहुँचाना। उ० आप क्या धार देते है, जो मैं आपको अपना समझूँ। २. देवी की पूजा के समय या किसी स्त्री के कही मे आने पर लौग, कपूर आदि पानी मे पीस कर जमीन पर गिराना। उ० दुलहन की डोली आ गई, धार दे दो।

धार पर मारना–तुच्छ समझना। उ० पाप के धन को मैं धार पर मारता हूँ।

धार बाँधना–किसी द्रव पदार्थ को धार बना कर गिराना। उ० धार बाँध लो, नही तो सारा घी फैल जायगा।

धार मारना–पेशाब करना, जोर से पेशाब करना।

धार रखना–छुरी को पत्थर चटाना, तेज़ करना। उ० धार रखे बिना यह छुरी क्या काम करेगी ?

धावा बोलना–१. आक्रमण की आज्ञा देना। २. आक्रमण कर देना। उ० डाकुओं ने कल रात मेरे मकान पर धावा बोल दिया।

धावा मारना–जल्दी-जल्दी दूरी तय करना। उ० बड़ी दूर का धावा मार कर आ रहा हूँ, मुझे आराम करने दो।

धाह मारना–चिल्लाना। उ० पति के मरने पर वह धाह मार कर रो रही थी।

धींगा-धींगी करना–१. ज़बर्दस्ती करना। उ० क्यो धींगा-धींगी कर रहे हो ? वह नही देना चाहता तो जाने दो। २. उपद्रव करना।

धींगा-मुश्ती करना–झगड़ा करना। उ० छोटी-सी चीज के लिए धींगा-मुश्ती करना ठीक नहीं है।

धीमा पड़ना–१. सुस्त होना। २. मंद होना, बढ़ती पर न होना। उ० उसका भी रोज़गार धीमा पड़ गया है।

धीरज बँधाना–धैर्य देना। उ० इस दुःख के समय उस बेचारे को कोई धीरज बंधाने वाला भी नहीं है।

धीरज बाँधना–सब्र करना। उ० अब दिन-रात रोने से क्या लाभ होगा, हृदय में धीरज बाँधो।

धुंधकारी होना–बहुत अत्याचारी और दुष्ट होना। उ० कंस बड़ा धुंधकारी था।

धुंधले का वक्त–शाम के समय। उ० धुंधले का वक्त है ज़रा जंगल में बच कर जाना।

धुआँ काढ़ना–दे० 'धुआँ निकालना'।

धुआँ देना–धुआँ निकालना। उ० मिट्टी का तेल ख़ूब धुआँ देता है।

धुआँ-धक्कड़ करना–धूम्रपान करना। उ० धुआँ-धक्कड़ करके चलूंगा।

धुआँ निकालना–बढ़-बढ़ कर बातें करना। उ० क्या मेरे सामने धुआँ निकाल रहे हो, मैं तुम्हें ख़ूब जानता हूँ।

धुआँ होना–काला पड़ना। गमगीन होना। उ० मुकदमे के फैसले के डर से उसका मुँह धुआँ हो गया है।

धुएँ उड़ाना–१ शिकायत करना। २. व्यर्थ की बदनामी या अफ़वाह फैलाना। उ० धुएं उड़ाकर तुम क्या करोगे? चंद्रमा को ढक नहीं सकते।

धुआँ का धौरहर–शीघ्र नष्ट होने वाली चीज, क्षणभंगुर। उ० संसार धुएँ का धौरहर है, इसका क्या विश्वास?

धुएं का धरोहर–जल्द नाश होने वाला। उ० संसार की सभी चीजें धुएँ की धरोहर हैं।

धुएं का हाथी होना–दिखावटी होना।

धुएं के बादल उड़ाना–१. गप्प हाँकना। उ० यार, धुएँ के इतने बादल न उड़ाया करो, नहीं तो आसमान गिर जायगा। २. धूम्रपान करना। उ० ज़रा धुएँ के बादल कम उड़ाया करो, नहीं तो स्वास्थ्य बिगड़ जायगा।

धुएँ बखेरना–दे० 'धुएँ उड़ाना'।

धुएँ-सा मुंह होना–मुंह की रंगत बिगड़ना। उ० आज क्या बात है कि आपका मुंह धुएँ-सा हो गया है?

धुकधुकी धड़कना या धरकना–दिल धकधक करना। उ० मरे शेर को देख कर आपकी धुकधुकी धड़क रही है।

धुन का पक्का–जिस काम में लग जाय, उसे पूरा करने वाला। उ० धुन का पक्का आदमी कठिन काम भी कर सकता है।

धुन बाँधना–मन में बैठाना। उ० वह जिस काम की धुन बाँध लेता है, उसे पूरा ही कर डालता है।

धुन सवार होना–करने की लगन होना। उ० उसे जिस काम की धुन सवार होती है, उसे कर ही डालता है।

धुमगज्जर मचाना–शोरगुल मचाना। उ० यहाँ धुमगज्जर न मचाओ।

धुरकी टूटना–१. मर जाना। २. भाग्य का बुरा हो जाना।

धुर बनाना–मूर्ख बनाना। उ० मान गये उस्ताद आज, हमीं को धुर बना दिया।

धुर सिर से–एकदम शुरू से। उ० मैं इस काम को धुर सिर से करना चाहता हूँ, आप लोगों ने जो कुछ किया है, मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है।

धुर्रे उड़ा देना–दे० 'धुर्रे बखेरना'।

धुर्रे उड़ाना–दे० 'धुर्रे बखेरना'।

धुर्रे बखेरना–छिन्न-भिन्न करना। टुकड़े-टुकड़े करना, नष्ट-भ्रष्ट करना। उ० एक दिन में तो उसके धुर्रे बखेर दूंगा, वह है किस फेर में?

धुलिया-मिटिया करना–१. किसी झगड़े को ऊपर से दबा देना। २. बात दबाना।

धूनी जगना–साधुओं का आग जलाना। उ० जब धूनी जगे तो वहाँ चलकर बैठा जाय।

धूनी जगाना–१. साधु होना। उ० जब धूनी जगा ली तो कौन अपना और कौन पराया? २. पंचाग्नि लेना। आग के पास बैठ कर शरीर को कष्ट देना। उ० वह साधू तो घंटों धूनी जगाता है। ३. साधु-सन्यासियों के पास आग प्रज्वलित करना। साधुओं की धूनी या अग्निकुंड की आग जलाना।

धूनी देना–धुआँ देना । उ० खूब धूनी दो, खुद ही मच्छड़ चले जायेंगे ।

धूनी रमाना–दे० 'धूनी जगाना' ।

धूनी लगाना–दे० 'धूनी जगाना' ।

धूप खाना–धूप में बैठना । उ० थोड़ा धूप खा लो तो सर्दी ठीक हो जाय ।

धूप खिलाना–धूप में रखना । उ० इसे ज़रा खूब धूप खिलाओ, नही तो ख़राब हो जायगी ।

धूप चढ़ना–दिन चढ़ना । उ० इतनी धूप चढ़ गयी और अभी तक आप सोये है !

धूप दिखाना–धूप में रखना । उ० क़िताबों को धूप दिखा दो, नहीं तो कीड़े लग जायँगे ।

धूप देना–१. दे० 'धूप दिखाना' । २. देवता आदि की पूजा में धूप-दीप करना । उ० धूप देने के लिए सामग्री लेते आना ।

धूप निकलना–दिन निकलना । उ० धूप निकलने के बाद मै यहाँ आऊँगा ।

धूप में चंडा सफ़ेद करना–दे० 'धूप मे बाल सफेद करना' ।

धूप में बाल पकाना–दे० 'धूप मे बाल सफ़ेद करना' ।

धूप में बाल सफ़ेद करना–वृद्ध होने पर भी कुछ अनुभव न होना । उ० मालूम होता है कि तुमने बाल धूप में सफ़ेद किए है, तुम्हें तो दुनिया का रत्ती भर भी ज्ञान नहीं है ।

धूप में बाल सफ़ेद न करना–अनुभवी होना । उ० बाल धूप में सफेद नहीं किए हैं, दुनिया देखी है ।

धूमकेतु दिखाई देना–संसार के लिए अपशकुन होना । उ० इस वर्ष धूमकेतु दिखाई दिये हैं, संसार का कोई बहुत बड़ा अहित होगा ।

धूम डालना–शोरगुल करना, ऊधम करना । उ० धूम न डालो, उसकी हालत बड़ी खराब है ।

धूम-धड़क्का–खूब भीड़-भाड़, धमधाम । उ० धूम-धड़क्के की आवश्यकता नही, चुपचाप काम कर डालो ।

धूम-धड़क्का मचाना–शोरगुल मचाना । उ० मैं पढ़ रहा हूँ, यहाँ धूम-धड़क्का न मचाओ ।

धूम मच जाना–बहुत ख्याति प्राप्त करना ।

धूर लगाना–डंड-बैठक करना तथा कुश्ती लड़ना । उ० दो दिन से धूर लगाने लगा तो अपने को गामा ही समझता है ।

धूरा करना–हाथ-पैर ठंडा हो जाने पर राख से मलना । उ० जल्दी धूरा करो, उसकी हालत चिन्त्य है ।

धूरा देना–१. बहकाना । उ० ठग ने लड़के को धूरा देकर सब धन ले लिया । २. दे० 'धूरा करना' ।

धूल उड़ना–बदनामी होना । उ० सारे गाँव में उनकी ख़ूब धूल उड़ रही है । २. उजाड़ होना । उ० अब उस गाँव में धूल उड़ रही है ।

धूल उड़ाते फिरना–मारे-मारे फिरना । उ० भाग्य इसी को कहते है । उस बुड्ढे के चार बेटे हैं और वह धूल उड़ाता फिरता है ।

धूल करना–नष्ट कर देना ।

धूल की ढेरी–असुंदर वस्तुएं । उ० धूल की ढेरी में अनजान । छिपे है मेरे मधुमय गान ।

धूल की रस्सी बटना–१. असंभव काम करने की कोशिश करना । उ० धूल की रस्सी बटना मूर्खता है । २ बिना बात की बात गढ़ लेना । उ० उसने कहा है तो धूल की रस्सी ही बटी होगी, उसकी बातो का क्या विश्वास ?

धूल चटाना–१ पटक देना । उ० इसको तो मै एक मिनट में धूल चटा दूंगा । २. मारना ।

धूल चाटना–बड़ी नम्रता दिखाना, गिडगिड़ाना । उ० उसके यहाँ धूल चाट कर क्यो अपनी इज्ज़त खोते हो ? वह कुछ करने का नहीं ।

धूल छानना–मारा-मारा फिरना, ख़ाक छानना । उ० क्यों इधर-उधर धूल छान रहे हो ?

धूल झड़ना–१. मार पड़ना । पिटना । साधारण पिटना । उ० आज तो तुम्हारी धूल झड़ गई ।

धूल झाड़ना–१. दे० 'पैर की धूल झाड़ना' । २. विनोद मे धूल झाड़ने के बहाने मारना । उ० यह आप धूल झाड़ रहे हैं, या उस दिन का बदला ले रहे हैं ?

धूल डालना–१. भूल जाना । उ० पहले की बातों पर धूल डाल कर अब मेल कर लो ।

धूल-धक्कड़ उड़ना–बहुत गर्द-गुबार उड़ना। उ० धूल-धक्कड़ उड रही है, मैं बाहर नही निकलूँगा।

धूल फाँकना–१. खाने को न पाना। उ० आज चार दिन से मैं यहाँ धूल फाँक रहा हूँ। २. कष्ट भोगना। उ० मेरे भाग्य मे धूल फाँकना ही लिखा है। ३ मारा-मारा फिरना। ४ झूठ बोलना।

धूल बरसना–रौनक न रहना। उ० इसी का नाम मसार है। कल तक जिस जगह नूर टपकता था, आज धूल बरसती है।

धूल में मिलना–बरबाद होना। उ० भरी सभा मे अपमानित होने से उसकी सारी इज्जत धूल मे मिल गई।

धूल में मिलाना–नष्ट करना, बरबाद करना। उ० तुमने तो उसका सारा रोजगार धूल मे मिला दिया।

धूल में लट्ठ मारना–व्यर्थ का काम करना।

धूल में सानना–बुरे काम में (किसी को) घसीटना।

धूल ले डालना–कही पर बार-बार जाना, बराबर पहुँचा रहना। उ० तुमने वहाँ की धूल ले डाली, पर उसके दर्शन नही हुए।

धूल शान्त करना–बदनामी को दबाना। उ० अब किसी प्रकार धूल को शात करो।

धूल समझना–बहुत तुच्छ समझना। उ० दूसरो की सोने की चीज़ को भी मै धूल समझता हूँ।

धूल सिर पर डालना–१ पछताना। उ० काम खराब हो जाने पर सिर पर धूल डालना बेकार है। २ सर पर बदनामी लेना या दूसरे को बदनाम करना। उ० व्यर्थ मे धूल उसके सिर पर न डालो। अपने ही सिर पर धूल डालते हो!

धोई कराना–छोटे बच्चो का दूसरो से पाखाने के बाद सौचाना! उ० ओ नन्हे! धोई करके चौके में घुसना, नहीं तो मार पड़ेगी।

धोकर पी जाना–समाप्त कर देना।

धोखा उठाना–ठगा जाना, असावधानी से नुक़सान होना। उ० जिसे कुछ रुपया-पैसा देना हो, उसे अच्छी तरह समझ लिया करो, नही तो धोखा उठाना पड़ेगा।

धोखा खड़ा करना–जाल फैलाना। उ० वह तो ऐसा धोखा खड़ा करना है कि बड़े-बड़े फँस जाते हैं।

धोखा खाना–छला जाना। उ० यही र रहा तो धोखा खाओगे।

धो डालना–समाप्त कर देना।

धोखा देना–१. छलना। उ० सज्जनों को देना ठीक नहीं। भ्रम में डालना एक-ब-एक कही चला जाना या मर या नष्ट हो जाना। उ० इस बुढ़ी इकलौते बेटे ने भी धोखा दिया।

धोखा पड़ना–कुछ का कुछ होना, औ और होना। उ० पडिनन कहा परा नहिं कौन अगस्त समुद्रहि सोखा।

धोखा रचना–दे० 'धोखा खड़ा करना'।

धोखा लगना–शुबहा होना। उ० मुझे पहचान मे कुछ धोखा लग रहा है।

धोखा लगाना–कसर करना, कमी करना उसने कोशिश करने मे कोई धोखा नही ल फिर भी काम न हुआ।

धोखे का पुतला–बहुत बड़ा धोखेबाज।

धोखे की टट्टी–१ देखने मे तो अच्छ वास्तव मे बुरा। उ० उसकी बाते ध टट्टी है, उनमे न आओ। २. बाहर से पर भीतर से खराब हो जाने वाली उ० उसने मकान क्या बनवाया है, स की टट्टी है। ३ शिकारियो के शिकार की टट्टी। उ० हिरन बेचारे धोखे की फँस ही जाते है। ४ बाहर से आकर्ष भीतर से ख़तरनाक।

धोती ढीली करना–१ भय दिखाना, डरा उ० ऐसी धोती ढीली करूँगा कि कुछ याद रखोगे। २ बुरी दशा करना। मारते-मारते धोती ढीली कर दूँगा।

धोती ढीली होना–भय लगना। उ० उस को देखते ही मेरी धोती ढीली हो गई

धोती बाँधना–तैयार होना। उ० धोत लो, अब लड़ाई पर चलना ही है।

धोब पड़ना–धोया जाना। उ० मेरे क कई धोब पड़े, पर वह अच्छी तरह श हुआ।

धो-बहा देना–सब खतम कर देना तीर्थों मे जाकर उसने सब पाप धो-बहा

धोबी का कुत्ता होना–कही का न घुमक्कड़ होना। उ० तुम तो धोबी

हो गए हो। यहाँ से वहाँ और वहाँ से यहाँ, बस यही तुम्हारा काम है।

धोबी का छैला होना या बनना–दूसरो की वस्तु पर घमंड करने वाला या दूसरो से चीजें माँग कर अपना रूप सँवारने वाला बनना। उ० धोबी का छैला बनने की मेरी आदत नही, यह तो आपको ही शोभा देगा।

धोया-धाया–१. साफ़, पवित्र। उ० यह बर्तन धोया-धाया है, तुम पानी पी सकते हो। २ अच्छा भलेमानुस। उ० आदमी है तो वह धोया-धाया, पर जरा लालची है। ३ शुद्ध आचरण। ४ ईमानदारी से कमाया हुआ। उ० यह रुपया धोया-धाया है।

धौंकनी लगना–साँस फूलना। उ० सीढ़ी पर चढ़ने से उसकी धौंकनी लग जाती है।

धौंक लगना–दे० 'धौंका लगना'।

धौंका लगना–लू लगना। उ० आजकल बहुत आदमियो को धौंका लग रहा है।

धौं-धौं करना–खाँसना। उ० आप रात भर यहाँ धौं-धौं किया करते है, मुझे सोने मे भी बाधा पड़ती है।

धौंस की चलना–रोब से काम निकालना। उ० धौंस की यहाँ नही चलेगी, हाँ कुछ पैसे निकालो तो काम कर दूँ।

धौंस ग़ालिब करना–रोब कायम करना। उ० पढ़े-लिखे लोगो पर धौंस ग़ालिब करना जरा कठिन है।

धौंस जमाना–रोब जमाना। उ० मै तुम्हारा नौकर नही हूँ, जो धौंस जमाते हो।

धौंस देना–१. चढ़ाई का डंका बजाना। उ० दुश्मन धौंस देकर किले पर चढ आये। २ रोब गालिब करना। उ० मुझे धौंस न दो।

धौंस-पट्टी में आना–बहकावे मे आना। धोखे में आना। उ० मै आपकी धौंस-पट्टी मे नही आ सकता।

धौंस बजाना–दे० 'धौंस देना'।

धौंस बाँधना–१. रोब गालिब करना। उ० मुझ पर तुम्हारा धौंस बाँधना बेकार है, तुम अभी कल के बच्चे हो और मैंने पूरी ज़िंदगी देखी है। २. ख़र्च मढना। उ० फ़ायदा तो तुम्हारा हुआ और धौंस मुझ पर बाँधते हो।

धौंसा बजना–१. चारों ओर चर्चा होना। २ ख्याति होना।

धौल कसना–दे० 'धौल जमाना'।

धौल खाना–१. थप्पड सहना। उ० मैं क्यों धौल खाऊँ, आपकी ग़लती है, आप जानें। २ हानि उठाना। उ० बिना समझे-बूझे काम शुरू किया तो धौल खाने को तैयार रहना।

धौल जमाना–थप्पड़ मारना। उ० एक ही धौल जमाने मे वह जमीन पर गिर पड़ा।

धौल-धक्कड़ मचाना–मार-पीट होना। उ० वहाँ धौल-धक्कड़ मचा है, और यहाँ तुम बैठे हो।

धौल-धप्पा होना–हँसी-हँसी मे मारपीट होना।

धौल-धूर्त होना–पक्का चालबाज होना। उ० आप तो धौल-धूर्त है। आपसे कोई पार नही पा सकता।

धौला पड़ना–जर्द पड़ जाना। उ० चार ही दिन की बीमारी मे वह धौला पड गया है।

ध्यान आना–याद आना। उ० जब आपका ध्यान आता है तो बडा कष्ट होता है।

ध्यान छूटना–पूजा या ध्यान से अलग होना। उ० महात्मा का ध्यान छूटे तो उनसे कुछ बातें करूँ।

ध्यान जमना–चित्त एकाग्र होना। उ० बहुत दिनों से पूजा-पाठ कर रहा हूँ, पर मेरा अभी तक ध्यान नही जमता।

ध्यान जाना या ध्यान का चला जाना–१. नजर पड़ना। उ० न चाहने पर भी मेरा ध्यान उधर चला ही गया। २. ख़्याल जाना। उ० मेरा भी ध्यान गया तो था, पर फिर भूल गया।

ध्यान दिलाना–याद दिलाना। उ० मुझे कल सुबह ध्यान दिलाना तो मै वहाँ चला जाऊँगा।

ध्यान देना–मन लगाना। उ० ध्यान देने से कठिन से कठिन काम भी हो सकता है।

ध्यान धरना–१ ईश्वर की ओर मन लगाना। ईश्वर का ध्यान धरना। २ विचार करना, सोचना। ३. ज़रा इस बात का ध्यान धरना।

ध्यान पर चढ़ना–याद आना। उ० आप जब से गये, कभी ध्यान पर भी न चढ़े।

ध्यान बँटना–चित्त इधर-उधर हो जाना। उ० पूजा करते समय मेरे पास बैठ कर बात न किया करो, नहीं तो मेरा ध्यान बँट जाता है।

ध्यान बँधना या बँध जाना–१ हर समय याद रहना। उ० तुम्हारा ध्यान हमेशा बँधा रहता

है । २. चित्त का एकाग्र होना । उ० अभ्यास करते-करते उनका ध्यान बँध गया है ।

ध्यान में आना–दे० 'ध्यान पर चढ़ना' ।

ध्यान में डूबना–सब कुछ भूल कर मन एक ओर लगाना । उ० जब पूजा करने बैठता है तो ध्यान मे डूब जाता है ।

ध्यान में मग्न होना–दे० 'ध्यान मे डूबना' ।

ध्यान में लगना–किसी का ध्यान कर उसी में लीन होना । उ० आजकल किसी दूसरे ध्यान मे लगे हो, नही तो क्या इस रास्ते आते भी नही ?

ध्यान रखना–याद रखना । उ० मै अब जा रहा हूँ, पर मेरी बातो का ध्यान रखना ।

ध्यान रहना–याद रहना । उ० अगर ध्यान रहा तो तुम्हारी चीज अवश्य लाऊँगा ।

ध्यान लगाना–मन से याद रखना । उ० रात-दिन आप उधर ही ध्यान लगाये रहते हैं ।

ध्यान से उतरना–ख्याल न रहना । उ० अगर ध्यान से उतर गया तब तो कोई बात ही नहीं, नहीं तो अवश्य लेता आऊँगा ।

ध्रुव कहना–निश्चय रूप से कहना । उ० मै ध्रुव कहता हूँ कि उन दोनों मे लड़ाई होकर रहेगी ।

ध्रुव सत्य–शाश्वत सत्य, निश्चित सत्य ।

ध्रुव होना–अटल होना । निश्चित होना । उ० वह तो अपनी जगह पर ध्रुव है, तुम कुछ भी नही कर सकते ।

ध्वजा फहराना–बोलबाला या ख्याति होना ।

ध्वनि उठाना–शब्द आना, शब्द फैलाना । उ० वहाँ वेदध्वनि उठ रही है ।

न

नंग-धड़ंग–बिल्कुल नगा । उ० नग-धड़ग होकर पागल की तरह कहाँ जाते हो ?

नंग-मुनंगा–दे० 'नग-धड़ंग' ।

नंगा कर देना–बेइज्जत कर देना । उ० उन लोगों ने भरी सभा मे उस बेचारे को नंगा कर दिया ।

नंगा करना–दे० 'नगा कर देना' ।

नंगा-झोली देना–अपने कपडे आदि की तलाशी करवाना । उ नगा-झोली दो, तुम पर मेरा शुबहा है ।

नंगा-झोली लेना–किसी के कपडे आदि उतरवा कर या अच्छी तरह से टटोल कर यह देखना कि उसके पास क्या-क्या है । उ० नगा-झोली ले लो, मेरे पास कुछ भी नही है ।

नग-मादरजाद–दे० 'नग-धड़ग' ।

नगा-लुच्चा–बदमाश, पाजी । उ० नगो-लुच्चो का साथ न करो ।

नंगी तलवार का बीच में होना–अत्यधिक बैर होना ।

नंगे आना नंगे जाना–खाली हाथ पैदा होना और खाली हाथ मरना ।

नंगों के देश में धोबी का काम न होना–अनुपयोगी होना ।

नंगो-चंगो करना–बहुत तग करना । उ० भाई नगो-चंगो न करो, नही तो मै फिर कभी न आऊँगा ।

नंबर एक का–सबसे अधिक ।

नंबर दागना–स्त्री-प्रसंग करना ।

नंबर लगाना–दे० 'नबर दागना' ।

नकनकी बजवा देना–हैरान कर डालना ।

नकल करना–१. अनुकरण करना । २. तमाशा करना । ३. बहाना करना । ४. हूबहू उतार लेना । ५. नाटक करना ।

नकवानी आना–नाक मे दम आना, परीशान हो जाना । उ० तिन रंकन को नाक सँवारत ह्वै आयो नकवानी ।

नकसीर फूटना–बिनास फूटना, नाक से खून बहना ।

नकसीर भी न फूटना–कुछ भी नुक़सान न होना । उ० गाँव मे इतनी लूट-पाट हुई, पर तुम्हारी तो नकसीर भी न फूटी ।

नक़ाब उलटना–१. घूंघट हटाना । उ० मर्दों के सामने कुछ औरतें नकाब उलटने में शर्माती है । २. परदा हटाना या हटना । उ० नकाब उलटने के बाद असलियत का पता चलेगा ।

नकेल हाथ में होना–वश मे होना । उ० जब उनकी नकेल हाथ में है तो वे जा कहाँ सकते है ?

नक्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़ होना–१. कोई महत्त्व न होना । २. अधिक शोर में न सुना जाना । उ० मेरी आवाज़ तो वहाँ नक्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़ थी ।

नक्कारा बजा कर–डंके की चोट पर, डंका बजा कर । उ० वे लोग चोर नहीं हैं, वे तो नक्कारा बजा कर डाँका डालते हैं ।

नक्कारा बजाते फिरना–सबसे कहते फिरना । उ० वह मूर्ख उस गंदी बात का नक्कारा बजाता फिर रहा है ।

नक्कारा होना या हो जाना–बहुत फूलना । उ० वह ख़ुशी के मारे नक्कारा हो गया ।

नक्कू बनना–अपने को बडा समझना । उ० नक्कू बनना मूर्खों का काम है, होशियार लोग कभी ऐसा नही करते ।

नक़्श बिगड़ना–१. रग उखड़ना । उ० यहाँ आते ही उनका नक़्श बिगड़ गया । २. रूप-रग ख़राब होना । उ० अभी तो गर्व कर लो, पर बुढौती में नक़्श बिगड़ने पर कोई पूछेगा भी नही ।

नक़्श बैठना–रंग जमना । उ० जब मेरा यहाँ कुछ नक़्श बैठे तो काम सिद्ध हो ।

नक़्श बैठाना–रग जमाना । उ० पहले तुम अपना नक़्श बैठा लो तो मै काम शुरू करूँ ।

नक़्श होना–मन में जम जाना । उ० उसकी नसीहत हमेशा के लिए मेरे दिल में नक्श हो गई ।

नक़्शा खिच जाना–ठीक-ठीक रंग-रूप ध्यान मे आना । उ० जब मुझे उनकी याद आती है तो उनका नक़्शा खिच जाता है ।

नक़्शा जमना या जमा होना–प्रभाव होना । उ० देहात के सभी बड़े-बड़े लोगो के यहाँ उसका नक्शा जमा हुआ है ।

नक़्शा जमाना–रग डालना , प्रभाव जमाना । उ० आजकल उसने अपना नक़्शा खूब जमाया है ।

नक़्शा तेज़ होना–प्रभाव होना । उ० शहर के सभी बड़े लोगों के यहाँ उसका नक्शा तेज़ है ।

नख़रा-तिल्ला करना–नाज़-नख़रा करना, चोचले करना । उ० तुम्हारा नख़रा-तिल्ला करना मुझे अच्छा नहीं लगता ।

नख़रा बघारना–नाज़-नख़रा करना । उ० यहाँ नख़रा न बघारो, इद्र की परी नहीं हो ।

नख-शिख–पूरा,भरपूर । उ० मैंने तो आज नख-शिख खाया है ।

नख-शिख से–सिर से पैर तक । उ० वह स्त्री नख-शिख से गहनों से लदी हुई है ।

नख से सिख तक–पूर्णरूपेण । उ० बिहारी ने नायिका का वर्णन नख से सिख तक किया है ।

नख़ास की घोड़ी–रंडी, वेश्या । (घृणार्थक अर्थ मे) उ० तुमने नख़ास की घोड़ी के पीछे धन और धर्म दोनो गँवा दिये ।

नख़ास पर चढ़ाना–दे० 'नख़ास पर भेजना' ।

नख़ास पर भेजना–बाज़ार में बेचने को भेजना । उ० वह रोज़ाना अपने बाग़ से कुछ फल नख़ास पर भेजता है ।

नख़ासवाली–दे० 'नख़ास की घोडी' ।

नखा-सिख–दे० 'नख-सिख' ।

न गँठना–न पटना, मैत्री न होना । उ० उन दोनों मे नही गँठती ।

नग बैठाना–नग जड़ना । उ० उसके गहनों में तो केवल नग बैठाए गए है ।

नग में बाल पड़ना या पड़ जाना–नग का फूट जाना । उ० इस अँगूठी के नग मे तो बाल पड़ गया है, देख कर नहीं लाए क्या ?

न गाँठना–परवा न करनाह । उ० वह तो अपने सामने किसी को गाँठता ही नही है ।

नगाड़ा बजना–खुले आम घोषणा होना ।

न गिनना–कुछ न समझना ।

नगीना-सा–छोटा और सुन्दर । उ० उसका नगीना-सा लड़का चल बसा ।

नगीना होना–१ बहुत सुन्दर होना । २. भूषण होना, सरताज़ होना । उ० वह मेरे कुल का नगीना है ।

न घर का होना न घाट का होना–दोनों ओर से नुक़सान मे रहना ।

नचा मारना–परीशान करना । उ० आपने तो ख़ूब परेशान किया, अब मैं भी नचा मारूँगा ।

नज़र आना–दिखाई देना । उ० विपत्ति में कोई नज़र आए तब तो समझूँ ।

नजर उतारना–बच्चों का नज़र हटाना। बुरी नज़र के कारण बीमार बच्चे को ठीक करना। उ० इस मुहल्ले में कोई नज़र उतारने वाला भी मिलता है।

नजर करना–१. भेंट या उपहार देना। उ० हमारे असामी तो रोज नजर करते रहते हैं। २. देखभाल करना। उ० मैं जा रहा हूँ, जरा इस ओर भी नजर करना।

नजर खा जाना–दे० 'नजर खाना'।

नजर खाना–बुरी नजर लग जाना। उ० हमारा बच्चा तो नजर खा गया है।

नजर चुराना–आँखों से दूर रहना। उ० उस दिन वह ऐसा लज्जित हुआ कि आज तक नजर चुराता रहता है।

नजर जलाना–बुरी नजर का असर मिटाना। उ० अपना लड़का उस बुढ़िया को दिखलाओ। वह नज़र जलाने में बड़ी होशियार है।

नजर झाड़ना–दे० 'नज़र जलाना'।

नजर दौड़ाना–१ चारों ओर तलाश करना। उ० बहुत नजर दौड़ाया, पर उसके योग्य वर न मिला। २ इधर-उधर देखना। उ० नज़र दौड़ाइए, इसी भीड़ में वह भी है।

नजर टकराना–परस्पर आँखें मिलना।

नजर-निगाह रखना–दे० 'नजर रखना'।

नज़र पड़ना–दृष्टि में आना। उ० रास्ते में मेरी नजर एक साँप पर पड़ गई।

नजर पर चढ़ना–१ पसंद आना। उ० उसका मकान नज़र पर चढा है, रुपया होते ही खरीद लूँगा। २ आँखों में खटकना। उ० मेरा ही बेटा सबकी नजर पर चढ़ता है, जाने मैंने किसका क्या बिगाड़ा है?

नजर फिसलना–दृष्टि चौंधियाना। उ० इन सोने की मूर्तियों को देख कर नजर फिसल जाती है।

नजर फेंकना–१ साधारणतः एक बार देख लेना। उ० वकील ने पूरे कागज़ पर नजर फेंकी, लेकिन कुछ कहा नहीं। २ दूर तक देखना। उ० जरा नज़र फेंको, शायद आते हों।

नजरबंद करना–हवालात या जेल में रखना। उ० जवाहरलाल कई बार नजरबंद किये जा चुके हैं।

नज़रबंद रखना–हिरासत में रखना। कहीं जाने न देना। उ० कम्युनिस्टों के बहुत से नेता नज़रबंद रखे गए हैं।

नजर बाँधना–चमत्कार या जादू से नज़र बाँध देना। उ० जादूगर नज़र बाँध कर क्या-क्या नहीं दिखाते?

नजर भर कर देखना–अच्छी तरह देखना।

नजर मारना–१. तिरछी चितवन से देखना। उ० भरे मंडप में वह तुम्हीं को नजर मार रही थी। २. इशारा करना। उ० नज़र मार दो, वह समझ जायगा।

नज़र मिलाना–सामने आना। उ० उसके बाप तो नज़र मिला ही नहीं सकते, उसे कौन कहे?

नज़र में आना–दिखाई पड़ना। उ० यदि कोई हथियार नजर में आ गया होता तो वहीं काम तमाम कर देता।

नज़र में तौलना–गुण-दोष देखना। उ० नज़र में तौल कर तो खरीदो।

नज़र मैली होना–कुदृष्टि देखना।

नज़र रखना–१ दया-दृष्टि रखना। उ० यदि धनी वर्ग गरीबों पर नजर रखा करे तो इतनी गरीबी न रहे। २. रखवाली करना। देखते रहना। उ० मेरे भी लड़के पर नजर रखना।

नज़र लगना–बुरी दृष्टि से प्रभावित होना। उ० बच्चों को तो नज़र लगते देर नहीं होती।

नज़र लगाना या लगा देना–बुरी दृष्टि से देखना। उ० बच्चे पर किसी ने नजर लगा दी है।

नज़र से गिरना–दे० 'नजरों से गिरना'।

नज़र से गिराना–बेइज्ज़ती करना। उ० सम्पूर्ण ग्रामवासियों ने अकारण ही उसे नज़र से गिरा दिया है।

नज़र से नज़र दो-चार होना–आँख से आँख मिलाना, देखादेखी होना। उ० नज़र से नज़र दो-चार होने पर तो मुहब्बत हो ही जाती है।

नज़र होना–१. बुरी दृष्टि लगना। उ० उसे तो कल ही से नज़र हो गई है। २. नज़राना या भेंट दिया जाना। ३. कृपा-दृष्टि होना। उ० मेरे ऊपर भी नज़र हो जाय।

नज़र हो जाना–दे० 'नज़र होना'।

नज़र से निकलना–सामने आकर निकल जाना। दिखाई देकर निकल जाना। उ० वह तो कभी-कभी नज़र से निकल गया।

नज़रों में खटकना–अप्रिय लगना।

नज़रों से गिरना–प्रतिष्ठा या आदर का भाव न रहना। उ० आजकल कांग्रेस लोगो की नज़रों से गिर गई है। क्यो बेकार मे नज़रों से गिर रहे हो ?

नटखटी करना–शेख़ी करना, शरारत करना।

न तीन में न तेरह में होना–कही का या किसी श्रेणी का न होना। उ० वह तो न तीन मे है, न तेरह मे, उसे कौन पूछता है ?

नत्थी करना–कई काग़ज़ों को एक में नाथना।

नथना फूलना–क्रोधयुक्त होना। उ० बनते तो हैं गांधी और फूलते देर नही लगती !

नथना फुलाना–क्रोधित होना, नाराज़ होना। क्रोध के चिह्न दिखलाना। उ० बात-बात में नथना फुलाना हो तो अपने घर जाओ।

नथनों में तीर देना–बहुत परीशान करना। [पुराने ज़माने मे यह एक सज़ा थी। उसी आधार पर यह मुहावरा चला है।]

नथने चढ़ाना–नाराज होना।

नथनों मे दम करना–आजिज कर देना। उ० इस छोकडे ने ता नथनों मे दम कर दिया है।

नथनों मे दम होना–परीशान होना।

नथुनी उतारना–किसी वेश्या का कौमार्य नष्ट करना। [केवल बाज़ारू भाषा मे प्रयुक्त होता है।]

न दिन चैन न रात नींद होना–हर समय चिन्ता बनी रहना।

नदिया-नाव-संयोग–संयोग से। उ० नदिया-नाव संयोग हम लोग मिल गए हैं, फिर पता नही कब मिलेगे।

नदी बहना–काफी अधिक मात्रा मे होना।

नन्हा-सा–छोटा-सा। उ० नन्हा-सा तो है, परन्तु पुरानो की तरह बात करता है।

नन्हा-सा मुँह निकल आना–खिसिया जाना।

नपी तुली बात कहना–आवश्यकता के अनुरूप कहना। एक शब्द कम न एक शब्द अधिक कहना।

नफ़ा उड़ाना–लाभ प्राप्त करना।

३४

नब्ज़ चलना–जिन्दगी रहना। उ० जब तक नब्ज़ चले तभी तक तो संसार से मतलब है।

नब्ज़ छूटना–मर जाना। उ० देखते-देखते ही उसकी नब्ज़ छूट गई।

नब्ज़ टटोलना–थाह लेना, मन की बात जानना।

नब्ज़ न रहना–दे० 'नब्ज़ छूटना'।

नमक अदा करना–नमक की शरियत पूरी करना। नमकहलाल होना। उ० आजकल कौन किसका नमक अदा करता है ?

नमक कटे पर छिड़कना–दे० 'जले पर नमक छिड़कना'।

नमक का सहारा–कुछ भी सहारा। उ० नमक का सहारा भी आपकी ओर से हो जाता तो मैं यही बस जाता।

नमक का हराम होना–१. न खाना। उ० जब से बीमार हुआ, मेरे लिए नमक हराम हो गया। २ अकृतज्ञ होना। उ० वह तो नमक का हराम है, उसके साथ कोई भी व्यवहार रखना ठीक नही।

नमक का हलाल होना–कृतज्ञ होना। उ० वह नमक का हलाल है। जो भी सहायता माँगे, अवश्य दी जा सकती है।

नमक खाना–किसी का दिया खाना। उ० नमक खाकर उसकी शरियत पूरी करो, नही तो कोढी हो जाओगे।

नमक-तेल का ठिकाना न होना–बहुत ग़रीबी होना।

नमक फट-फट कर निकलना–नमकहरामी का फल मिलना। उ० जितना पैसा लेते हो, उतना काम करो, नही तो फूट-फूट कर निकलेगा।

नमक-मिर्च मिलाना–बात बढ़ा-चढा कर कहना। उ० नमक-मिर्च मिला कर क्यों कहते हो, मुझे सब कुछ ज्ञात है।

नमक-मिर्च लगाना–दे० 'नमक-मिर्च मिलाना'।

नमकहराम–नमकहलाल का उलटा। दे० 'नमकहलाल'। उ० बड़ा नमकहराम आदमी है, उसे तो एक सूखी रोटी भी देने की इच्छा नही होती।

नमकहलाल–वह जो नमक की शरियत दे या जिसका खाय उसका एहसान माने और बदला चुकाये। उ० है बेचारा बडा नमकहलाल, इसी से तो मैं इसे हटाना नही चाहता।

नमकीन होना–१. बहुत सुन्दर होना। उ० वह लडका बडा नमकीन है। [यह बाज़ारू प्रयोग है।] २. अच्छा होना।

नमदा बाँधना या बाँध देना–कारागार की सज़ा दिलवाना। उ० तुम्हारे जैसे बदमाशो को नमदा न बाँध दिया तो कहना।

नमस्कार करना– छोड देना।

नमाज़ कज़ा होना– नमाज के लिए बेवक्त होना। उ० नमाज़ कजा हो रही है, जल्दी करो।

नमाज़ पढ़ना–खुदा की एबादत करना। उ० कुरान मे पाँच वक्त नमाज़ पढने को कहा गया है।

नयन अघाना–देखकर तृप्त होना।

नयन की कोर जोहना–कृपाकाक्षी होना।

नयन से पनारी बहना–आँसुओ का प्रवाह न रुकना।

नया गुल खिलना–दे० 'अनोखा गुल खिलना'।

नया-नवेला–नवयुवक, नवजवान। उ० वह नया-नवेला है, उसे गुस्सा जल्दी आ जाना स्वाभाविक है।

नया-पुराना करना–पुराने को बेचकर या हटा कर नया लाते रहना। अदला-बदली करना। उ० पशु ज़्यादा है तो नया-पुरान करते रहने से ठीक रहता है।

नया रंग लाना–दे० 'नया राग लाना'।

नया राग लाना–१. नया सवाल खडा करना। उ० उसके जैसा झगडालू मैने नही देखा। जब देखो, एक न एक नया राग लाता रहता है। २. नयी धूम मचाना। ३ नयी रौनक लाना।

नया शिकार फँसना–नया आसामी फदे मे आना।

नये सिरे से जन्म लेना–दे० 'नये सिरे से जन्म पाना'।

नये सिरे से जन्म पाना–मरते-मरते बचना। उ० मेरा लड़का पेड़ से गिरा था, और मरणासन्न था, पर डाक्टर की कुशलता से उसने नये सिरे से जन्म पाया है।

नरक का पैसा–१. बहुत बुरे काम की कमाई। उ० नरक का पैसा फल नही सकता। २. ऐसा पैसा जो बड़े परिश्रम से किये गये गंदे काम के लिए दिया जाता हो। उ० मेहतर का पैसा नरक का पैसा है, उसे देने में भला कौन बेईमानी करेगा ?

नरक भोगना–दुर्दशा भोगना। उ० वह नरक भोग रहा है।

नरक में भी जगह न मिलना–नीच से नीच स्थान मे भी जगह न मिलना। उ० इन ग़रीबों को सताओगे तो नरक मे भी जगह न मिलेगी।

नरक होना–नरक भोगने की सज़ा मिलना। उ० आप ऐसे नीचो को अवश्य ही नरक होगा।

नरद कच्ची करना–हरा देना।

नरम-गरम उठाना–दुःख-सुख सब कुछ सहना। उ० इस थोड़े से ही जीवन में नरम-गरम सब कुछ उठाना पड़ा है।

नल चलना–जादू से चोरों का पता लगना। उ० अगर नल चल गया तो आज ही सब चोर पकडे जायेंगे।

नवाब का नाती होना–घंमडी होना।

नशा उतरना–घमड दूर होना। उ० तुम बहुत बढ-बढ कर बाते कर रहे हो, पर दो ही तमाचे मे सब नशा उतर जायगा।

नशा उतारना–घमड दूर करना। उ० अगर ज़्यादा बनोगे तो आज ही सब नशा उतार दूंगा।

नशा किरकिरा हो जाना–नशे का मजा बिगड़ना। उ० वे सब शराब छान रहे थे, मगर थानेदार के आ जाने से सबका नशा किरकिरा हो गया।

नशा चढ़ना–नशा होना। उ० भाँग का नशा मुझे खूब चढता है।

नशा छाना–मस्त होना। उ० उसे देखता हूँ तो नशा छा जाता है।

नशा जमना–नशा होना। उ० एक घूंट शराब से क्या नशा जमे ?

नशा झाड़ना–दे० 'नशा उतारना'।

नशा टूटना—नशा उतरना। उ० भंग थी या ज़हर। आज अभी तक उसका नशा नहीं टूटा।

नशा-पानी करना—मादक द्रव्यों का प्रयोग करना। उ० नशा-पानी कर लूं तो चलूं।

नशा मिट्टी होना—बड़प्पन आदि का अहंकार दूर या समाप्त होना।

नशा हिरन हो जाना—एकाएक नशा खत्म हो जाना। उ० वह नशे में मस्त था और खूब गाली बक रहा था, पर मार पड़ते ही सारा नशा हिरन हो गया।

नशीली आँखें—मस्ती से भरी आँखें। उ० तुम्हारी नशीली आँखें किसे नहीं खींच लेती हैं ?

नशे में चूर होना—१. खूब नशा होना। उ० नशे में चूर आदमी अपने आपको भूल जाता है। २ धुन सवार होना, किसी काम में बहुत लीन होना। उ० किस नशे में चूर है कि पुकारने पर भी नहीं सुनते ?

नश्तर देना—दे० 'नश्तर लगाना'।

नश्तर लगना—फोडे आदि का चीरा जाना। आपरेशन होना। उ० नश्तर लगने से मैं बहुत डरता हूँ।

नश्तर लगाना—फोड़ा आदि चीरना। उ० नश्तर लगाने से यह फोडा जल्दी ठीक हो जायगा।

नस चढ़ना—नस के इधर-उधर हो जाने से सूजन होना। उ० उसके हाथ की नस चढी हुई है, डाक्टर को दिखा दो।

नस ठीक कर देना—अच्छा सबक सिखाना।

नस ढीली पड़ना—१ थक जाना। २ नपुंसक होना।

नस-नस का पता होना—खूब अच्छी तरह जानना।

नस-नस ढीली करना—मार-मार कर बेदम करना। उ० अधिक गुंडागर्दी करोगे तो सबकी नस-नस ढीली कर दूंगा।

नस-नस फड़क उठना—१. स्फूर्ति आ जाना, जोश आना। उ० वीर रस की कविता से किसकी नस-नस नहीं फड़क उठती है ? २ प्रसन्न होना।

नस-नस में—सब बदन में। उ० आज नस-नस में दर्द है।

नस-नस में बिजली दौड़ जाना—शरीर का उत्तेजित हो जाना।

नस पर नस चढ़ना—दे० 'नस चढ़ना'।

नस भड़कना—पागल होना। उ० नस भड़क गई है, नहीं तो रास्ते की गुदड़ी क्यों बटोरता ?

नसीब आज़माना—कोई काम करके यह देखना कि सफलता मिलती है या नहीं। उ० केवल नसीब आज़माने के लिए यह काम मैं कर रहा हूँ, वर्ना इससे मेरा क्या होगा ?

नसीब खुलना—दे० 'नसीब जागना'।

नसीब चमकना—१. यश फैलना। २. भाग्य का उज्ज्वल होना। उ० नसीब चमक गया, नहीं तो कल तक भर पेट अन्न भी नहीं मिलता था।

नसीब जागना—भाग्य खुलना। उ० अगर नसीब जाग गया तो फिर रुपया कमाते देर न लगेगी।

नसीब फूटना—दुर्भाग्य आना। उ० मुन्ने के बाप क्या मरे, मेरे तो नसीब ही फूट गये।

नसीब लड़ जाना—संयोग या सुअवसर आ जाना। उ० पर्चे अच्छे तो नहीं हुए हैं, पर नसीब लड़ गई तो पास ही हो जाऊँगा।

नसीब का खेल—भाग्य में बदा।

नसीब होना—प्राप्त होना। उ० हम ग़रीबों को ऐसा कपड़ा कहाँ नसीब हो ?

नसीहत करना—१. शिक्षा देना। उ० लड़कों को पग-पग पर नसीहत करना चाहिये। २. डाँटना। उ० इस छोटी-सी ग़लती के लिए उसने अपने लड़के की बड़ी नसीहत की।

नसीहत मिलना—शिक्षा मिलना। उ० वहाँ तो रोज़ ही नसीहत मिलती है, इतने पर भी भला भूल जाऊँगा ?

नसें ढीली पड़ना—थकावट आना। उ० आज दिन भर काम-करते-करते मेरी नसें ढीली पड़ गई हैं।

नसें ढीली होना—दे० 'नसें ढीली पड़ना'।

नहं-उँगली का दुखना न सहा जाना—तनिक भी तकलीफ़ न सही जाना।

नहँ गिर जाना—काम करने योग्य न होना, अपाहिज या कोढ़ी होना। उ० हार हिम्मत न छोड़ देंगे हम, नहँ नहीं गिर गया हमारा है।

नहँ में कील ठोंकना—बहुत कष्ट देना।

नहर बहा देना—बहुतायत कर देना।

नहाते समय बाल भी न खसना—तनिक भी अनिष्ट न होना।

नहार तोड़ना–जल-पान कर लेना । उ० नहार तोड़ कर तो कही जाया करो, नही तो खराबी हो जायगी ।

नहार-मुंह–बिना कुछ खाये-पिये । उ० कल सुबह नहार मुँह आकर दवा ले जाना । यही इसका नियम है ।

नहार रहना–न खाना । उ० जब घर मे कुछ नही है तो नहार रहना ही पडेगा ।

नहारू के लिए गाय मारना–छोटी आवश्यता के लिए बडा नुकसान करना ।

नहीं तो–वर्ना । उ० बोलो, नही तो रोना पडेगा ।

नहीं सही–परवा नही । उ० ज्यादा न पढ़ो तो नही सही, पर कुछ तो पढ़ ही लो ।

नाक ऊँची होना–मान रहना, प्रतिष्ठा बढना । उ० अगर मेरी बात सब लोग मान जायँ तो नाक ऊँची हो जाय ।

नाक कटना–मर्यादा न रहना । उ० अगर इसमे कोई त्रुटि रही, तो मेरी नाक कट जायगी ।

नाककटाई–बेइज्जती । उ० उसकी नाककटाई करा कर बात करते हो ।

नाक कटाना–इज्जत न रहने देना । उ० एक नालायक सारे परिवार की नाक कटा सकता है ।

नाक काट कर चूतड़ों तले रख लेना–बेइज्जती की परवाह न करना । उ० अब मैने नाक काट कर चूतड़ो तले रख ही ली है, गाली दो या मार लो । मगर अपने लिए भी याद रखना ।

नाक काटना–मर्यादा न रहने देना । बेइज्जत करना । उ० तुमने तो उसकी नाक काट ली, भला बेचारी समाज को क्या मुँह दिखाएगी ?

नाक-कान काटना–कठिन दण्ड देना । उ० ऐसे नीच काम करने वालो का तो नाक-कान काट लेना चाहिये ।

नाक का बाल–१. घनिष्ठ मित्र या मन्त्री, जिसकी सलाह से सभी काम हो । उ० आपका सोचना बेकार है । आप उसकी नाक के बाल कभी भी नही हो सकते । २. बहुत प्यारा ।

नाक का बाल होना–बहुत प्यारा होना । उ० मोहन तो उसकी नाक का बाल हो गया है, भला उसे वह कैसे मार सकता है ?

नाक की सीध में–एकदम सामने । उ० नाक की सीध में चले जाओ, सबसे पहला घर उन्ही का है ।

नाक के नीचे–प्रत्यक्ष, उपस्थिति में ।

नाक के बल नचाना–खूब हैरान करना ।

नाक घिसना–बहुत आरजू करना । उ० यदि काम करवाना ही चाहते हो तो सुबह-शाम नाक घिसो ।

नाक-घिसनी–गिड़गिड़ाना और विनती । उ० नाक-घिसनी से काम न चलेगा, कुछ पैसे भी लाओ ।

नाक चढ़ना–१. कोध आना । उ० उसका ऐसा स्वभाव है कि मामूली बातों पर भी नाक चढ़ जाती है । २ घृणा होना ।

नाक चढ़ाना–घृणा करना । उ० अच्छी से अच्छी चीज देख कर भी वह नाक चढ़ा लेता है, पता नही अपने को क्या समझता है ?

नाक-चोटी काट कर हाथ देना–कठिन सजा देना ।

नाक-चोटी काटना–कड़ी सजा देना । उ० इस छोटे से अपराध के लिए नाक-चोटी काटना उचित नही ।

नाक-चोटी में गिरफ़्तार–अपनी मर्यादा का हर समय ध्यान होना । उ० बड़े आदमी बेचारे तो सदा नाक-चोटी मे ही गिरफ्तार रहते है ।

नाक छिनकना–दे० 'नाक सिनकना' ।

नाक ढाई हाथ की होना–महानिर्लज्ज होना । उ० अजी इनकी नाक तो ढाई हाथ की है, कोई कितनी काटेगा ?

नाक तक खाना–बहुत अधिक भोजन करना । उ० वह नाक तक खा कर उठा और कै होने लगी ।

नाक तक भरना–खूब ठूंस-ठूंस कर भोजन करना । उ० भोजन नाक तक भरना बडा हानिकारक होता है ।

नाक तोड़ देना–ज़ोर की लगाना, बहुत मारना । उ० इसके मुँह न लगना, नही तो किसी दिन मजाक में ही नाक तोड़ देगा ।

नाक न दी जाना–बडी बदबू आना । उ० कोई जानवर मरा है, इसी से यहाँ नाक नही दी जा रही है ।

नाक पकड़ कर घुमाना–इच्छानुसार काम करवाना ।

नाक पर उंगली रख कर बात करना–नखरे से बात करना, औरतों की तरह बातचीत करना ।

उ० नाक पर उँगली रख कर बात करना जनखों को शोभा दे सकता है, तुम्हें नहीं।

नाक पर गुस्सा होना–दे० 'गुस्सा नाक पर होना'।

नाक पर दीया जलाना–तुरंत काम होने की इच्छा करना। उ० नाक पर दीया जलाने से काम नहीं होगा, इसमें कुछ समय लगेगा।

नाक पर दीया बालना–दे० 'नाक पर दीया जलाना'।

नाक पर दीया बाल कर आना–सफलता प्राप्त करके आना। उ० नाक पर दीया बाल के आये हो क्या कि स्वागत करूँ।

नाक पर पहिया फिरना-नाक का चपटी होना। उ० उसकी नाक पर पहिया फिरी है, उसे सुन्दर कौन कहेगा?

नाक पर मक्खी न बैठने देना–१. बहुत खरा होना। उ० उसके आगे कुछ कहते मैं बहुत डरता हूँ। वह ऐसा आदमी है कि नाक पर मक्खी भी नही बैठने देता। २. बहुत सफ़ाई रखना। ३. तनिक भी एहसान न लेना।

नाक पर रख देना–गुस्से के साथ सामने रख देना। उ० उसे विश्वास न होता हो तो उसकी नाक पर रख दो।

नाक पर पासुड़ी तोड़ना–बहुत परीशान करना। उ० कहो तो उजड़ कर कहीं और चला जाऊँ; पर नाक पर रोज़-रोज़ सुपाड़ी न तोडा करो।

नाक फटने लगना–१. बहुत बदबू आना। उ० उस गली मे तो नाक फटने लगती है। २. असह्य बदबू से नाक को कष्ट पहुंचना। उ० यहाँ तो बदबू के मारे नाक फटने लगती है।

नाक बहना–१. नाक से मल निकलना। २. जुकाम होना।

नाक बैठना–नाक चपटी होना। उ० नाक बैठी है, और तोते से उपमा देते हैं।

नाक बैठाना–दे० 'नाक तोड़ देना'।

नाक बोलना–सोते में नाक से आवाज़ होना। उ० जब मैं सो जाता हूँ तो मेरी नाक बोलने लगती है।

नाक-भौं चढ़ाना–घृणा करना। नफ़रत जाहिर करना। उ० मुझे देखकर वह नाक-भौ चढ़ाता है।

नाक-भौं सिकोड़ना–दे० 'नाक-भौ चढ़ाना'।

नाक मिट्टी में घिस-घिस कर मर जाना–बहुत प्रयत्न करने पर भी असफल रहना।

नाक में जान आना–परीशान होना। उ० खोजते-खोजते नाक मे जान आ गई, पर कही भी पता न चला।

नाक में जान करना–हैरान करना। उ० आपने तो मेरी नाक में जान कर दी है, अब मैं यहाँ न रहूँगा।

नाक में तीर करना–बहुत परीशान करना। उ० तुमने तो मेरी नाक मे तीर कर रखी है। अब मुझे भी कोई रास्ता पकड़ना होगा।

नाक में तीर डालना–दे० 'नाक मे तीर करना'।

नाक में तीर होना–बहुत परीशान हो जाना। उ० तुम्हारे मारे तो मेरी नाक मे तीर है।

नाक में नकेल डालना–पूरी तरह वश मे करना।

नाक में दम आना–परीशान होना। उ० नाक मे दम आ गया है, न तो वह बुढ़िया मरती है और न तो अच्छी ही होती है।

नाक में दम करना–बहुत परीशान करना। उ० इन नीचो ने मेरी नाक में दम कर रखा है। मै तो इस जगह को छोड़ देना चाहता हूँ।

नाक में दम होना–बहुत परीशान होना। उ० उसके मारे तो मेरी नाक मे दम है, न जीते बनता है न मरते।

नाक में नकेल न होना–कोई बधन न होना।

नाक में पानी डालना–बहुत तंग करना।

नाक में बू आना–१. कुछ ज्ञात होना। २. अपने ऐब को पहचानना। उ० आप अपने ऐब से वाकिफ़ नही होता कोई, जैसे बू अपने जेहन की आती है कम नाक मे।

नाक में बोलना–१. बहुत धीरे-धीरे बोलना। उ० क्या नाक मे बोलते हो, साफ़-साफ बोलो। २. नुनुवा कर बोलना। सभी अक्षरो मे अनुस्वार लगा कर बोलना। उ० वह तो नाक में बोलता है।

नाक में सुतली पिरोना–१. बहुत कष्ट देना। उ० यार, नाक मे सुतली न पिराओ, नहीं तो मैं अपना रास्ता नापूं। २. क़ाबू में रखना, अधिकार में रखना। उ० उसकी नाक मे सुतली न पिरोओगे तो वह तुम्हें चैन से बैठने न देगा।

नाक रखना–दे० 'नाक रख लेना'।

नाक रख लेना–इज्ज़त बचा लेना। उ० आपने मेरी नाक रख ली, नहीं तो मैं मुँह दिखाने लायक भी नही रहता।

नाक रगड़ कर रह जाना–चेष्टा करने पर भी असफल रह जाना।

नाक रगड़ना–दे० 'बहुत खुशामद या विनती करना'। उ० आप कितनी भी नाक रगड़ें, वह आपको नहीं रख सकता।

नाक लगा कर बैठना–बड़ा इज़्ज़तवाला बनना। उ० अच्छा, आप अब नाक लगा कर बैठने लगे है!

नाक सिकोड़ना–घृणा दिलाना। उ० सुनि अघ नरकहुँ नाक सकोरी।

नाक सिकोड़ना–दे० 'नाक-भौ सिकोड़ना'।

नाक सिनकना–जोर से हवा निकाल कर नाक का मल बाहर फेकना।

नाक से आगे न देख पाना–बहुत ही संकुचित दृष्टि होना।

नाक से बोलना–दे० 'नाक में बोलना'।

नाका छेकना–बद करना, आने-जाने का रास्ता रोक देना।

नाक़िस करना–ख़राव करना। उ० तुमने तो उसे पहले से भी ज्यादा नाक़िस कर दिया।

नाकों आना–तंग हो जाना, हैरान हो जाना। उ० सहि देख्यो तुम्ह सों कह्यौं, अब नाकहि आई, कौन दिनहुँ दिन छीजै?

नाकों चने चबवाना–बहुत परीशान करना। उ० मेरे लडके ने मुझे नाको चने चबवा दिए।

नाकों चने चबाना–परीशान होना, तग होना। उ० उस काम के करने मे आपको नाकों चने चबाने पड़ेगे।

नाकों चने बिनवाना–बहुत परीशान करना। उ० दस मुख बिबस तिलोक लोकपति बिकल बिनाए नाक चना है।

नाख़ून दुखना–तनिक भी कष्ट होना।

नाख़ून नीले होना–मरने के समीप होना। मृत्यु के लक्षण दिखलाई पड़ना। उ० उसके नाख़ून नीले हो गये है। अब तो घड़ी-दो-घडी का और मेहमान है।

नाख़ून पर लिखना–बतौर याददास्त किसी बात को नाख़ून पर टाँक लेना।

नाख़ून लेना–१. घोड़े का ठोकर खाना। उ० रास्ते में घोड़े ने नाख़ून लिया, मैं तो गिरते-गिरते बचा। २. नाख़ून काटना। उ० नाख़ून लेते वक़्त मेरी उँगली कट गई।

नाख़ून से गोश्त जुदा करना–अपने को अलग करना। नजदीक को अलग करना। उ० उनको लड़वाते हैं मुझसे अग़यार, गोश्त नाख़ून से जुदा करते है।

नाग को जगाना–खतरनाक स्थिति या व्यक्ति को छेड़ना।

नाग खेलना–खतरे का काम करना। उ० इस भयावनी रात मे उस जगल से होकर जाना नाग खेलना है।

नागवार गुज़रना–बुरा लगना। उ० यदि आपको नागवार गुज़रा हो तो माफ़ कीजिएगा।

नागा करना–गैरहाजिर होना। उ० कल क्यों नागा हुए? रोज़ाना आया करो, नहीं तो काम से हटा दूँगा।

नागा देना–दे० 'नागा करना'।

नाच उठना–प्रसन्न हो उठना।

नाच काछना–नाचने के लिए तैयार होना।

नाच दिखाना–१ तमाशा दिखाना। २. पाखड मचाना। उ० यहाँ नाच न दिखाओ, अपना रास्ता पकडो।

नाच नचाना–परीशान करना। उ० उस लडके ने मुझे ऐसी नाच नचाई कि मै तंग आ गया।

नाच-रंग–खेल-तमाशा। उ० वहाँ आजकल खूब नाच-रग हो रहा है।

नाज़ उठाना–नखरे सहना। उ० तुम उनके नाज़ उठाओ, वे तुम्हारे हैं, पर मुझे क्या पडी है?

नाज़ करना–घमड करना, इतराना। उ० शायद उस शोख के कूचे से हवा आती है, नाज़ करते हुए जो बादेसबा आती है।

नाज़ में रहना–१. घमंड मे चूर रहना। २. नखरे से भरा रहना।

नाज़ व न्यामत में पालना–बहुत प्यार, दुलार से और आराम से पालना।

नाज़ से चलना–मटक-मटक कर या खरामा-खरामा चलना। उ० दामन अपना तू उठा चलता था इस नाज़ के साल, घेरा दामन का मुझे घेरे के ले आता था।

नाज़ाँ होना–इतराना, फ़ख़्र करना । उ० इस क़दर नाज़ाँ न हो ऐ शेख़ अपने जोहद पर, बंदगी करने से तू शायद ख़ुदा हो जाये ।

नाज़िल होना–उतरना ।

नाड़ी खोलना–संभोग करना । रति करना ।

नाड़ी गिरी होना–हालात ढीले होना ।

नाड़ी चलना–नाड़ी में चाल होना, जीवित रहना । उ० अभी उसकी नाड़ी चल रही है, घबड़ाने की बात नही ।

नाड़ी छूटना–१ मर जाना । २. मरने के क़रीब होना ।

नाड़ी छूट जाना–नाड़ी न चलना, मर जाना । उ० महीनों बीमार रहने के बाद आज उसकी नाड़ी छूट गई ।

नाड़ी देखना–चिकित्सकों का हाथ की नस पकड़ कर रोग का ज्ञान करना । नब्ज़ देखना । उ० नाडी देखते ही वैद्यजी ने बतला दिया कि अब वह न बचेगा ।

नाड़ी धरना–दे० 'नाड़ी देखना' ।

नाड़ी न बोलना–जान न रहना, या जान निकलने के करीब होना । उ० उसकी अब नाडी नही बोल रही है, चारपाई से उतार दो ।

नाड़ी पकड़ना–दे० 'नाड़ी देखना' ।

नाड़ी पहचानना–परिस्थिति या मन.स्थिति को अच्छी तरह समझना ।

नाड़ी फड़कना–जोश आना ।

नातक़ह बंद करना–दम बंद करना, बोलने की मजाल न रहने देना । उ० नातक़ह बद किया तूने हर एक नातिक़ का, मुशरिके पक्का हुए सूरते उज्जा खामोश ।

नाता टूटना–सबध न रहना । उ० उन लोगो से मेरा नाता सर्वदा के लिए टूट गया ।

नाता न रहना–दे० 'नाता टूटना' ।

नाद पर लगाना–घोडा, बैल, गाय तथा भैंस आदि पशुओं को नाद के समीप खूँटे पर खाने के समय बाँधना ताकि वे खा सकें । उ० सबेरा हो गया, बैलों को नाद पर लगा दो ।

नादरी चढ़ाना–बुरी तरह हराना ।

नादिरशाह बनना–१. बहुत कठोर और क्रूर बनना । २. बड़ा शानी बनना ।

नादिरशाही हुक्म होना–जो मन मे आने, वह करना । उ० अत्याचारी बादशाहों का नादिरशाही हुक्म होता है ।

नानी का घर होना–आराम की जगह होना ।

नानी के नाम रोना–बहुत दुःखी होना । उ० क्या नानी के नाम रो रहे हो, दूसरा खरीद लेना ।

नानी मर जाना–दे० 'नानी याद आना' ।

नानी याद आना या आ जाना–होश ठिकाने हो जाना, प्राण सूख जाना । उ० पुलिस वालो को देखते ही उसकी नानी याद आ जाती है ।

नाप-तौल करना–ठीक-ठीक जाँच-परख करना ।

नाम उजागर करना–खूब प्रसिद्धि होना ।

नाम उछालना–१. बदनामी करना (व्यग्य) । उ० आपने नीच काम करके अपने परिवार का नाम खूब उछाला है । २ इज्ज़त बढ़ाना । उ० आपने ही अपने खानदान का नाम उछाला है ।

नाम उठ जाना–दे० 'नाम उठना' ।

नाम उठना–१. नाम न रहना । उ० जो बिना कुछ किये मर जाते है, उनका नाम दुनिया से उठ जाता है । २. मर जाना ।

नाम कमाना–इज्जत पाना । उ० उसने यह पुस्तक लिख कर खूब नाम कमाया ।

नाम कर जाना–यादगार छोड जाना । उ० वे यह मन्दिर बना कर नाम कर गये ।

नाम करना–१. काम को अच्छी तरह न करना । उ० वे नाम करने के लिए पढते है, सच पूछिए तो उन्हे कुछ भी नही आता है । २. प्रतिष्ठा पाना । उ० नाम करना चाहते हो तो विद्वान् बनो ।

नाम का–नाम वाला । उ० मेरे गाँव मे इस नाम के दो आदमी मरे हैं ।

नाम का डंका पिट जाना–यश फैलना ।

नाम के लिए–थोड़ा-सा । उ० नाम के लिए ही खा लो, उपवास न करो ।

नाम को–ज़रा-सा । उ० नाम को भोजन लाना, मुझे एकदम भूख नहीं है ।

नाम को नहीं–एक भी नही । उ० इस बग़ीचे मे तो नाम को भी आम नही है ।

नाम को थूकना–घृणा करना, धिक्कारना।

नाम को न रहना–तनिक भी न रहना।

नाम को बट्टा लगना या लगाना–बदनामी होना या करना।

नाम चढ़ना–नाम लिखा जाना। उ० तुम्हारे पिता के बाद इस ज़मीन पर तुम्हारा ही नाम चढ़ेगा।

नाम चढ़ाना–नाम लिखना। उ० मेरा भी नाम चढ़ा लो।

नाम चमकना–यश फैलना, प्रतिष्ठा बढना। उ० आजकल उसका नाम खूब चमका हुआ है।

नाम चलना–यादगार बनी रहना। उ० अगर पुत्र न होगा तो नाम चलना भी कठिन हो जायगा।

नामचार को–केवल नाम को। उ० वह नामचार को पढता है, कुछ जानता नही।

नामजद करना–चुनना। उ० उम्मीदवार तो कई योग्य है, देखे लोग किसे नामजद करते है।

नाम जपना–नाम बार-बार रटना। उ० वह रात-दिन भगवान का नाम जपता है।

नाम डालना–बही आदि में नाम से लिखना। उ० जो भी रुपया मैं ले जाऊँ, मेरे नाम डाल देना।

नाम डुबोना–अपने पर कलंक लगाना। इज्जत गँवाना। उ० नाम डुबोना सरल है, पर नाम कमाना कठिन है। क्यो अपना नाम डुबो रहे हो?

नाम डूबना–१. नाम मिट जाना। उ० उसके मरते ही उसके परिवार का नाम डूब गया। २ बेइज्ज़त होना। उ० तुमने ऐसा किया कि हमेशा के लिए तुम्हारा नाम डूब गया।

नाम तक न रहने देना–बिलकुल समाप्त कर देना।

नाम धरना–बदनाम करना। उ० अगर नीच काम करोगे तो सब लोग नाम धरेंगे।

नाम-धराई होना–बदनामी होना।

नाम न लेना–ज़िक्र तक न करना। उ० उससे मुझे इतनी घृणा हो गई है कि अब उसका नाम भी नही ले सकता।

नाम निकलना–१. किसी बात के लिए मशहूर होना। उ० टूटे अंग बैठाने मे उसका नाम निकला हुआ है। २. अपराधी का नाम प्रकट होना। उ० चोर का नाम निकल गया है, देखें कुछ माल मिलता है या नहीं।

नाम निकालना–दोषी का नाम प्रकट करना। ज्योतिष से या चिट्ठी डाल कर दोषी का नाम ज्ञात करना। उ० उस पंडित ने क़िताब चुराने वाले का नाम निकाला है।

नाम पड़ना–१. नीलाम या लाटरी आदि मे नाम पड़ना। उ० कल लाटरी का निर्णय है, देखें किसका नाम पड़ता है। २. नाम रखा जाना। उ० उसका नाम केशव पड़ा है। ३ नाम होना। उ० तुम्हारे कलकत्ते वाले मित्र का क्या नाम पड़ता है? ४. बही आदि मे नाम दर्ज किया जाना। ५. खर्च के खाते मे पडना।

नाम पर जान देना–इज्ज़त के लिए मर मिटना। उ० बडे लोग नाम पर जान दे देते है, और छोटे लोग दाम पर।

नाम पर धब्बा लगना–बदनामी होना। उ० अगर बड़े आदमियो के नाम पर धब्बा लग गया तो उनका लोगो के सामने मुँह दिखाना भी दुशवार हो जाता है।

नाम पर मरना–दे० 'नाम पर जान देना'।

नाम पर मिटना–दे० 'नाम पर जान देना'।

नाम बाक़ी रहना या होना–१. यादगार बनी रहना। यश शेष रहना। उ० अच्छे आदमी चले जाते है, पर उनका नाम बाकी रहता है। २. यथार्थता से शून्य होना। उ० आज के ब्राह्मण ब्राह्मण नहीं रहे, केवल नाम बाकी है।

नाम बिकना–नाम की मशहूरी से चीजो की क़दर होना। उ० उनकी पुस्तक मे क्या है, केवल नाम बिक रहा है।

नाम बिगाड़ना–१. नाम को बिगाड़ कर बोलना। उ० क्यों उसका नाम बिगाड़ते हो? २. बदनाम करना। उ० उनका नाम बिगाड़ कर आपको क्या लाभ होगा? ३. बदनामी कराना। उ० अपना नाम न बिगाड़ो, नही तो कोई पूछेगा भी नही।

नाम बेच डालना–मान के विरुद्ध काम करना। उ० वह ऐसा नीच हो गया है कि थोड़े से लाभ के लिए अपना नाम बेच डालता है।

नाम मात्र–नाम को, ज़रा-सा। उ० नाम मात्र की चीनी भी मिला देना तो चटनी अच्छी होगी।

नाम मिटना–१ यादगार न रहना । उ० वह इतना बड़ा आदमी था, पर आज उसका नाम मिट गया । २. नाम न रहना । उ० देखें संसार से ईश्वर का नाम कब मिटता है ?

नाम में धब्बा लगना–नाम मे कलंक लगना । उ० बुरे काम की वजह से उसके नाम मे धब्बा लग गया ।

नाम में धब्बा लगाना–बदनामी करना । उ० अपने नाम मे धब्बा न लगाओ ।

नाम रखना–१ अवगुण बताना । २. यश बनाये रखना । उ० आपकी पहली पुस्तक ने आपका नाम अभी तक रखा है । ३ नामकरण करना । उ० अभी तक लड़के का नाम नही रखा गया ।

नाम रोशन करना–खूब प्रसिद्धि होना ।

नाम लगना–अपराध मढ़ा जाना । उ० यह दोष तुम्हारे नाम लगने वाला है, तुम चुपचाप चल दो, नहीं तो फँसोगे ।

नाम लगाना–अपराध किसी के सिर पर मढना । उ० इसको मेरे नाम न लगाओ । भगवान की क़सम, उस दिन मैं नगर के बाहर था ।

नाम लेकर–१. याद करके । उ० बजरंगबली का नाम लेकर कार्य शुरू करो, अवश्य ही सफलता मिलेगी । २. नाम के प्रभाव से । उ० अपने बाप-दादों का नाम लेकर वह आज भी इज्ज़त पाता है ।

नाम लेना–१. नाम जपना । उ० भगवान का नाम लेते रहो, वह अवश्य तुम्हारी मदद करेगा । २. गुणगान करना । उ० अगर आपने मेरी इस बार मदद कर दी, तो मैं मरते दम तक आपका नाम लेता रहूँगा । ३ बात चलाना । उ० अभी वहाँ तुम्हें इतना कष्ट मिला है और तुम फिर वहाँ जाने का नाम लेते हो !

नाम-लेवा पानी-देवा न रहना–वंश में कोई न रहना ।

नाम से–१. ज़िक्र से । उ० जबसे मैंने सुना है कि वह इतना नीच है, मुझे उसके नाम से घृणा हो गई है । २. नाम के प्रभाव से । उ० अपने बाप-दादो के नाम से ही वह आज भी इज्ज़त पा रहा है । ३. नाम लेते हो । उ० लड़के उसके नाम से ही डर जाते हैं । ४. मालिक समझ कर, मालिक बना कर । उ० मै अपनी स्त्री के नाम से एकाउन्ट खोल रहा हूँ ।

नाम से काँपना–नाम से डर जाना । उ० बहुत से लोग तो उसके नाम से ही काँपते हैं ।

नाम से पुजना या पूजा जाना–नाम या प्रसिद्धि के कारण इज्ज़त पाना । उ० ब्राह्मण नाम से पूजे जा रहे हैं, नहीं तो आजकल उनमें है क्या ।

नाम से बिकना–नाम की मशहूरी से आदर पाना या नाम के कारण बिकना । उ० कांग्रेस नाम से बिक रही है, नही तो उसमें अब कुछ भी नहीं है ।

नाम ही नाम रह जाना–सिर्फ मशहूरी ही रह जाना । उ० मेरे गाँव के सेठ लोगों मे अब कुछ दम नही है, केवल नाम ही नाम रह गया है ।

नाम होना–१. नाम मशहूर होना । उ० इस काम की वजह से उनका खूब नाम हो गया है । २. दोष लगना । उ० इस डकैती मे उसका भी नाम है ।

नामी होना–मशहूर होना । उ० वे पहलवानी मे बहुत नामी हो गये है ।

नामों-निशाँ न होना–कुछ भी न होना ।

नामों-निशाँ मिटा देना–समूल नष्ट कर देना ।

नारदी विद्या–इधर-उधर लगाने की आदत ।

नारद–इधर की बात उधर लगाने वाला व्यक्ति ।

नार नवाना–लज्जा से नज़र नीची करना । उ० ज़बसे वे चोरी मे पकड़े गये, मुझे देखते ही नार नवा लेते है ।

नारसिंही टोना–बड़ा गहरा टोना, ऐसा टोना जो अवश्य प्रभाव करे । उ० उसका टोना तो नारसिंही टोना होता है ।

नारियल तोड़ना–यह देखना कि गर्भ में लड़का है या लड़की (मुसलमानों मे) शकुन निकालना । उ० नारियल तोड़ो, देखें क्या निकलता है ?

नाल एक ही जगह दबी होना–बहुत घनिष्ठता होना ।

नालिश करना–दावा करना । उ० आज मुझे बहुत से असामियों पर नालिश करनी है ।

नालिश दागना–दे० 'नालिश करना' ।

नाली का कीड़ा–नीच, कमीना । उ० नाली के कीड़े को नाली की गंदगी ही अच्छी लगती है, उसे मोहनभोग नही सुहाता ।

नाली में बहाना–धन का दुरुपयोग करना । उ० इस तरह धन नाली मे बहाओगे तो चार दिन में कगाल हो जाओगे ।

नाव डूबना–नष्ट होना, अहित होना ।

नाव पार लगा देना या लगाना–बेडा पार लगा देना, काम बना देना । किसी बीच मे अटके काम को पूरा कर देना । उ० भगवान ही मेरी नाव पार लगा सकते हैं ।

नाव मंझधार में पड़ना–विपत्ति की स्थिति होना ।

नाव में खाक उड़ाना–१ बेकार मे कलक लगाना । उ० नाव मे खाक न उड़ाओ, आखिर मैं भी तो तुम्हारा मित्र हूँ । २. बे-सिर-पैर की बात करना । उ० तुम्हारा यह नाव मे खाक उड़ाना मेरी समझ मे नही आता ।

नाव में धूल उड़ाना–दे० 'नाव मे खाक उड़ाना' ।

नाव सूखे में चलाना–असभव काम करने की कोशिश करना । उ० इस मूर्ख को पढाना नाव सूखे मे चलाना है ।

नासूर पड़ना–१ ऐसा जख्म होना जो कभी भरे नही । उ० छिडका है पदगो ने अजत्र जख्म पर नमक, नासूर पड गए है जिगर मे बजाय दाग । २ 'आतिश' न पूछ हाल तू मुझ दर्द-मद का, सीने में दाग दाग नासूर पड़ गया ।

नासूर भरना–हमेशा जारी रहने वाले जख्म का भर जाना । उ० खुदाया भर गए क्यूँ जो कुछ नासूर सीने मे, घुटा जाता है तगी से दिले रजूर सीने मे ।

नाहनूह करना–इन्कार करना । उ० अगर नाहनूह ही करना था तो क्यो नही पहले ही कह दिया ?

निगाझोरी देना–दे० 'नगाझोली लेना' ।

निगाझोरी लेना–दे० 'नगाझोली लेना ।

निकट आना–घनिष्ठता होना ।

निकल चलना–तरक्की होना । उ० इस काम को शुरू करो, अगर निकल चलेगा तो ठीक ही है, नहीं तो छोड़ देना ।

निकल जाना–१. न रह जाना । बिक जाना । उ० दूकान मे जितने खराब माल थे, सब मेले में निकल गये । २. चला जाना । उ० वह बहुत दूर निकल गया, अब आपकी बात न सुनेगा । ३. न पकड़ जाना, भाग जाना । उ० चोर सबके सामने से निकल गया । ४. घट जाना, अलग हो जाना । उ० बहुत चीजें निकल भी तो गई हैं, आखिर वज़न कम क्यों न हो ?

निकल पड़ना–१ चल देना । उ० जब निकल ही पडा हूँ तो चला जाऊँगा । २. बाहर आना । उ० निकल पडना तो पता चलेगा, अभी तो भीतर से न बोलते हो । ३. बहुत क्रोधित होना । उ० मै मना ही करता रहा और तुम निकल पड़े ।

निकाल डालना–१ अलग करना, छाँटना । उ० इनमें जो आम सड़े हो, उन्हे निकाल डालो । २ बेच देना । उ० कुछ माल निकाल डालो ।

निकाल देना–१ बाहर करना । उ० ऐसे नीच को अपने घर मे निकाल दो । २. कम करना । उ० १० मे से ५ निकाल दो ।

निकालना या निकाल लाना–किसी स्त्री को भगा लाना । उ० ऐसे शादी नही होती तो कही से किसी को निकाल ही लाओ ।

निकाल लेना या निकाल ले जाना–किसी औरत को भगा ले जाना । उ० मेरे गाँव के गुडे उसकी लडकी को निकाल ले गए ।

निकाह पढ़ाना–विवाह करना । उ० सलीमा बडी हो गई, अब कहीं निकाह पढ़ा दो । इस्लामी मज़हब ।

निगाह पर चढ़ना–१ अप्रिय लगना । २. प्रिय लगना ।

निगहबानी करना–दे० 'निगाहबानी करना' ।

निगाह अच्छी न होना–बदलचन होना ।

निगाह चार होना–सामना होना ।

निगाह उठाना–इच्छा करना ।

निगाह टेढ़ी होना–असंतुष्ट या रुष्ट होना ।

निगाहबानी रखना–दे० 'निगाहबानी करना' ।

निगाह में गिर जाना–पूर्व प्रतिष्ठित मर्यादा मे कमी आना ।

निगाहबानी करना–देखभाल करना । उ० जब तक मै न आऊँ, मेरे घर की निगाहबानी करना ।

निगोड़ा-नाथा होना—बिना वारिस के होना। उ० बेचारा निगोड़ा-नाथा हो गया, अब तो और खाने बिना मरेगा।

निचला बैठना—सभ्यता से बैठना। उ० निचला बैठना सीखो।

निछक्के में—एकान्त मे। उ० निछक्के मे जाकर पढ़ो तो कुछ याद भी हो।

निछावर करना—१. बलिदान करना, वारना। उ० मैं उसके लिए अपना प्राण तक निछावर करने को तैयार हूँ। २ ओइछ कर रुपया-पैसा ग़रीबो को देना। उ० बहुत दिन पर यह शुभ दिन आया है, कुछ निछावर करो।

निछावर होना—बलिदान होना, वारा जाना। उ० भारत की स्वतन्त्रता के लिए सैकड़ो वीर निछावर हुए। तुम भी निछावर होने के लिए तैयार रहो।

निज करके—अवश्य, ज़रूर। उ० निज करके मैं आऊँगा।

निज का—अपना। उ० इनमे निज की जो चीजे है, उन्हे अलग कर दो।

नित खोदना नित पानी पीना—रोज़ कमाना रोज खाना।

निद्रा देवी की शरण लेना—सो जाना।

निन्नानबे के फेर में आना—धन बढ़ाने की फ़िक्र मे रहना। उ० जो निन्नानबे के फेर मे आ गया, वह क्या अच्छी तरह रहेगा ?

निन्नानबे के फेर में पड़ना—रुपया बटोरने के चक्कर मे पड़ना। उ० निन्नानबे के फेर मे पड़ा आदमी खाना-पीना भी भूल जाता है।

निबट जाना—१. फ़ुरसत पाना। उ० इस काम से निबट गया। २. भोग लेना।

निबड़ जाना—खतम हो जाना, बाक़ी न रहना। उ० फ़ुरक़त की शब मे जीस्त ने अपनी वफ़ा न की, क़ब्ले सहर चिराग़ हमारा बिगड गया।

निबाह देना—१. किसी के साथ बसर कर देना, गुज़ार देना। उ० लैला का नाम ज़िंदा है अब तक जहान मे, तुम भी निबाह दो किसी अहले वफ़ा के साथ। २ किसी तरह ज़िंदगी बिताना। उ० भगवान ! मेरी भी निबाह दो।

निबुआ-नोन चटा देना या चाटना—कुछ भी न देना या पाना।

निमकौड़ी बीनना—आलोचना करना, नुक्ताचीनी करना। उ० मैंने जो किया है, ठीक किया है, आपको निमकौडी बीनने की कोई आवश्यकता नही है।

नियत बाँधना—दृढ़ निश्चय करना। उ० वह शादी न करने की नीयत बाँध चुका है।

नियत बिगड़ना—दे० 'बदनियत होना'।

नियत में फ़र्क़ आना—दे० 'नियत बिगडना'।

नियम का पालन करना—क़ायदे के अनुसार काम करना। उ० सबको अपने नियम का पालन करना चाहिये।

नियम का भंग करना—नियम के ख़िलाफ़ करना। उ० नियम का भंग करने वाला दण्ड का भागी होगा।

नियम भंग करना—दे० 'नियम का भग करना'।

निरने मुंह—दे० 'नहार-मुँह'।

निरन्ने मुंह—दे० 'नहार-मुँह'।

निशान उठाना—१. नेता बनना। उ० ४२ के विद्रोह का निशान गांधी जी ने ही उठाया था। २. बगावत करना। उ० स्वतंत्रता के लिए यहाँ कई बार निशान उठाये गए।

निशान करना—अपने वार का लक्ष्य करना। उ० पहले निशान करो तब बदूक चलाओ।

निशान खड़ा करना—दे० 'निशान उठाना'।

निशान देना—१. चिह्न बताना। उ० कोई निशान दे दो तो पकड़ने मे आसानी रहेगी। २. पता बताना। उ० उसने तो यही का निशान दिया था।

निशान बनाना—मारने के लिए लक्ष्य निश्चित करना। उ० मैने उसी बिंदु को निशान बनाया है।

निशाना बनना—दे० 'निशाना होना'।

निशाना बाँधना—निशाना मारने के लिए हथियार साधना। सीध ठीक करना। उ० देखो बहेलिया निशाना बाँध रहा है।

निशाना मारना—देख कर अपने निशान को मारना। उ० मैने निशाना तो मारा, परन्तु चूक गया।

निशाना लगाना—दे० 'निशाना मारना'।

निशाना साधना—दे० 'निशाना बाँधना'।

निशाना होना—मारा जाना। वार के लिए लक्ष्य होना। उ० वह ४२ में पुलिस की गोलियों का निशाना हो गया।

निष्कंटक करना—सब अड़चनो को दूर करना।

निसबत होना—मुक़ाबिला करना। उ० उन दोनों की निसबत क्या दे रहे हो, अरे कहाँ राजा भोज कहाँ भोजवा तेली।

निसा भर—मन भर। उ० आज तो तुमने निसा भर शराब पी।

निसार करना—न्यौछावर करना, वारना। उ० हज़ार हैफ कि समझे न तुम हमें और हम हमेशा करते रहे तलक निसार अपना।

निसार होना—न्यौछावर होना, कुर्बान होना। वारी जाना। उ० गिर्द फिरती है चार के 'मजरूह', यानी होती निसार आँखें है।

निहाल कर देना—दे० 'निहाल करना'।

निहाल करना—सतुष्ट कर देना। उ० आज के भोज मे तो उन्होने करनो को निहाल कर दिया।

निहाल होना—प्रसन्न होना। उ० आज तो आप बड़े निहाल है।

निहोरा मानना—कृतज्ञ होना। उ० इस दया के लिए मैं आपका निहोरा मानता हूँ।

नींद आ जाना—१ सो जाना। आँख लग जाना। उ० जो नीद आ गई तुमको तो हाँ समझ लूंगा, नही-नही ये तुम्हारी मुझे पसद नहीं।

नीद उचट जाना—दे० 'नीद उचटना'।

नींद उचटना—नीद जाती रहना, नीद खुलना। उ० उनकी याद के कारण मेरी नीद उचट गई। सोते-सोते जब पुकार उठता हूँ अपने यार को, मरक़दो के सोने वालो की उचट जाती है नीद।

नींद उड़ जाना—ज़रा भी नीद न आना। उ० सोऊँ मै किस तरह इन आँखो मे कब आती है नीद, दूर से सूरत को मेरी देख उड़ जाती है नीद।

नींद उड़ाना—नीद उचाट करना, पलक से पलक न लगने देना। उ० तुम्हारे हिज्र ने ऐसी मेरी उड़ाई नीद, हज़ारो करवटें बदली मगर न आई नीद।

नींद का दुखिया—अत्यन्त शयन करने वाला (व्यग्य)। उ० यह तो बेचारा नींद का दुखिया है, केवल १६ घटे सोता है।

नींद ख़राब करना या कर देना—सोने में विघ्न डालना। उ० तुमने आकर मेरी नीद ख़राब कर दी।

नींद खुलना—उठना, जागना। उ० आज तो मेरी नींद सुबह ही खुल गई थी।

नींद खोना—सोने मे देर करना। उ० १० बज चुके है, जाओ, नीद न खोओ।

नींद गँवाना—दे० 'नीद खोना'।

नींद जाना—नीद टूट जाना, जग जाना।

नींद न आना—१. आँख न लगना। उ० कल वस्ल मे भी नींद न आई तमाम शब, एक बात-बात पर थी लड़ाई तमाम शब। २. चैन न मिलना।

नींद पड़ना—उँघाई आना। उ० नींद पड़ी न आज बरसो से, न जाने वे तो गए नीद क्यो गई?

नींद भर सोना—ख़ूब सोना। पूरी नीद सोना। उ० महीनो बाद तो हम नींद भर सोये।

नींद-भूख भूल जाना—बहुत बेचैन होना।

नींद मारना—सोना। उ० आप यहाँ नींद मार रहे है और मैं मर रहा हूँ।

नींद लेना—दे० 'नीद मारना'।

नींद हराम करना—सोने न देना। उ० नींद न हराम करो, कही और जाकर बड़बड़ाओ। हराम नींद की एकरार वस्ल जना ने, इलाही कोई किसी का उम्मीदवार न हो।

नींद हराम होना—बिल्कुल न सोना। उ० परीक्षा की तैयारी मे भी नीद हराम हो गई है।

नींक लगना—अच्छा लगना। उ० यह मकान तो बडा नीक लगता है।

नीच-ऊँच समझना—अच्छी तरह जानना, अच्छे और बुरे दोनो पक्ष समझना। उ० नीच-ऊँच समझ कर काम मे हाथ लगाना, नही तो धोखा खाओगे।

नीच-ऊँच समझाना—१. गुण-दोष बताना। किसी समस्या के दोनो पक्ष समझाना। उ० मैने तो नीच-ऊँच समझा दिया, अब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने। २. गलती-सही समझाकर टाल देना। उ० नीच-ऊँच समझा कर विदा करो, क्या उसके पीछे पड़े हो?

नीचा-ऊंचा दिखाना—१ लज्जित करना। उ० क्यो हर घडी मुझे नीचा-ऊँचा दिखाते हो। मैं बेवकूफ़ ही सही, पर तुमसे मतलब? २. पराजित करना। उ० वह तुम्हें नीचा-ऊंचा

दिखाने के फेर में पड़ा है। ३. बेइज्जत करना।

नीचा-ऊँचा सुनाना—दे० 'ऊँचा-नीचा सुनाना'।

नीचा खाना—१. शर्मिंदा होना। उ० आज तो वह नीचा खा गया। २. हार जाना। उ० कमजोर थे, इसलिए नीचा खा गए। ३. तिरस्कृत होना। उ० नीचा खाकर जीने से तो मर जाना ही अच्छा है।

नीचा दिखाना—१. दे० 'नीचा-ऊँचा दिखाना'। २. ऐंठ दूर करना। उ० उसने तो खूब नीचा दिखाया।

नीचा देखना—दे० 'नीचा खाना'।

नीची दृष्टि से देखना—१ निरादर करना, बुरा समझना। उ० आज तो सभी कांग्रेस को नीची दृष्टि से देखते हैं। २ बुरी नियत से देखना।

नीचे गिरना—पतित होना।

नीचे होकर रहना—दबकर रहना।

नीठ-नीठ करके—किसी तरह से। उ० नीठ-नीठ करके वह पास हो गया है, यही बहुत है।

नीम लगाकर आम खाना चाहना—बुरा काम करके भला फल पाने की आशा करना।

नीयत डावाँडोल होना—ईमान में अंतर आना। उ० वह इतना ईमानदार था, पर थोडा-सा धन देख कर उसकी नीयत डावाँडोल हो गई।

नीयत डिगना या डिग जाना—१ ईमान डिगना। दिल में बेईमानी आना। उ० १० रुपये पर ही नीयत डिग गई? २ बुरा काम करने की इच्छा होना।

नीयत बदल जाना—१. विचार बदल जाना। उ० उसकी बात से ऐसा साबित होता है कि अब उसकी नीयत बदल गई है। २. बुरी नीयत होना। उ० तुम्हारी नीयत बदल गई, अब तुम्हारा विश्वास नही।

नीयत बद होना—१. बुरे विचार का होना। उ० जहाँ किसी की बहू-बेटी देखता है, तुरन्त उसकी नीयत बद हो जाती है। २. बेईमान होना। उ० थोड़े से लाभ के लिए बद नीयत होना ठीक नहीं है।

नीयत भरना—दे० 'मन भरना'।

नीयत लगी रहना—इच्छा या चाह रहना। उ० तुम्हारी छड़ी पर हमारी नीयत लगी है।

नीर-क्षीरवत् होना—पूर्णरूपेण मिलना। उ० नीर-क्षीरवत् होने की मैत्री ही स्थायी होती है।

नीर-क्षीर विवेक करना—सत्य-असत्य विचार करना।

नीर ढल जाना—बेहया हो जाना। उ० उसका तो नीर ढल गया है, उसे क्या?

नीर ढलना—आँसू ढलना। उ० तुम तो ऐसे हो कि नीर ढलते देर ही नहीं होती।

नील करना—दे० 'नील डालना'।

नील का खेत होना—दोष या कलंक की जगह होना। उ० वह स्थान नील का खेत है। जरा सँभल कर जाना।

नील का टीका लगाना—बदनाम करना। उ० क्यो बेकार में मुझे नील का टीका लगाते हो? उससे मेरा कोई संबंध नही था।

नील की सलाई फिरवा देना—नेत्रहीन कर देना। उ० मौर्य-युग में नील की सलाई फिरवा देना साधारण दंड था।

नील घोटना—व्यर्थ में किसी उलझन मे पड़ना। उ० मै क्यों नील घोटूं? मुझे कोई अपना काम नही है क्या?

नील डालना—बडी मार मारना, खूब मारना। उ० पुलिस ने मारे डंडो के उसके शरीर पर नील डाल दी और बेहोश हो गया।

नील बिगड़ना—१ अफ़वाह फैलाना। उ० उसके विषय में तो खूब नील बिगड़ा है। २. हानि होना। उ० व्यापार में तो खूब नील बिगड़ा। ३ आचरण खराब होना। उ० गुंडो के साथ में पड़कर तुम्हारा भी नील बिगड़ गया। ४ चेहरा बदरंग होना। उ० शेर को देखते ही उसका नील बिगड़ गया। ५. बुरा समय आना। उ० आजकल तो हमारा नील बिगडा है। ६. बुद्धि मे न धँसना। उ० उसका तो नील बिगड़ा है, कुछ भी कहो, समझता ही नहीं।

नीला पड़ना—१ नीले रंग का हो जाना। उ० नदी का पानी नीला पड़ गया है। २. भयभीत होना। ३. दुर्बल होना।

नीला-पीला होना या हो जाना—१. चेहरे का रंग बिगड़ जाना। उ० थोड़ी-सी बात पर वह नीला-पीला हो गया। २. क्रोधित हो जाना। उ० नीले-पीले क्यों होते हो, मैं इसका ज़िम्मा तो लिए नहीं था।

नीलाम पर चढ़ना–नीलाम होना। उ० जब वह गया तो उसकी सारी चीजें नीलाम पर चढ चुकी थीं।

नीलाम होना–नीलाम से बिकना, बोली पर बेचा जाना। उ० हूराने खुल्द बोलती है बढ के बोलियाँ, नीलाम हो रहा है तुम्हारे शहीद का।

नीली-पीली आँखें करना–बहुत गुस्से से देखना। उ० गैरो से लडाते ये नुकीली आँखे। क्यों करते हो हम पे नीली-पीली आखे।

नीले-पीले दीदे करना–नाराज होकर देखना।

नींव का पत्थर होना–१ मूल सहारा होना। उ० वही तो तुम्हारा नीव का पत्थर है, उसे कही न जाने देना। २ आरम्भ या शुरू का होना। उ० अभी नीव का पत्थर है, आगे देखो क्या होता है ?

नींव जमाना–१ शुरू करना। उ० चद्रगुप्त ने मौर्य राज्य की नीव जमाई। २. दृढ करना। उ० अकबर ने मुगल राज्य की नीव जमाई। ३ गर्भ स्थित करना। उ० तुमने तो नीव जमा दी।

नींव डालना–स्थापना करना।

नींव पड़ना- १. मकान की नीव पडना। उ० हमारे मकान की नीव पड़ गई है। २. सहारा होना। ३ शुरू होना। उ० झगडे की नीव तो उसी दिन पड गई।

नींव भरना–१ नीव के गड्ढे को भरना। उ० मकान बनाने का विचार बदल गया, अत नीव भर दी गई। २. नीव तक दीवार का उठ जाना।

नींव होना–मूल कारण होना। उ० इस झगडे की नींव तुम ही हो।

नुक़ताचीनी करना–ऐब निकालना, दोष ढूंढना। उ० कुछ काम भी करो, केवल नुक़ताचीनी ही न करो।

नुक़सान उठाना–घाटा या हानि उठाना। उ० हमे अरहर के व्यापार मे नुकसान उठाना पड़ा।

नुक़सान करना–१ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होना। उ० शराब सभी को नुकसान करती है। २. बरबाद करना। उ० व्यर्थ मे पैसे नुक़सान न करो।

नुक़सान पहुँचना–घाटा होना। उ० उसके साझे के कारण ही हमे नुकसान पहुँचा।

नुक़सान पहुँचाना–हानि करवाना। उ० भरसक किसी को नुक़सान न पहुँचाओ।

नुक़सान भरना–घाटा पूरा करना। उ० वह तो चला गया और मुझे सारा नुकसान भरना पडा।

नुकीला स्वर–तीखा, हृदय पर आघात करने वाला स्वर।

नुक़्तये नज़र–दे० 'दृष्टि-बिंदु'।

नुत्फ़ा ठहरना–गर्भ रहना। उ० उसके घर मे नुत्फा ठहरा है।

नुत्फ़ा हराम होना–क्षुद्र या महानीच होना। उ० उसका क्या, उसकी तो सारी पार्टी नुत्फा हराम है।

नुमाइशी काम–दिखावटी काम, सिर्फ दिखाने योग्य काम। उ० आपने आज तक गम्भीरता-पूर्वक भी कोई काम किया है, या नुमाइशी काम ही करते रहे हो ?

नुस्खा लिखना–दवाओ की सूची लिखना। उ० वैद्य ने मेरे काढे का नुस्खा लिख दिया है।

नुस्खा बाँधना-नुस्खे के अनुसार दवा देना या बाँधना। उ० जाओ वह तुरन्त नुस्खा बाँध देगा।

नूर का तडका–बहुत सवेरे। उ० तुम तैयार रहना, मै नूर के तडके पहुँचूंगा।

नूर बरसना–बहुत खूबसूरत होना। उ० नूर-जहाँ के चेहरे से नूर बरसता था।

नेउर होना–चुपके से आने-जाने वाला होना।

नेकी उतारना–नेकी का बदला देना।

नेकी कर कुएं में डालना–भलाई करके भूल जाना।

नेकी-बदी–बुराई-भलाई। उ० ससार मे नेकी-बदी रह जाती है।

नेग करना–अच्छी घड़ी मे प्रारंभ करना। उ० नेक करो। काम तो हो ही जायेगा।

नेग देना–इनाम या दक्षिणा देना। उ० उसने ब्राह्मणो को बहुत नेग दिया। पवनियों को नेग दे दो।

नेग लगना–१. शुभ कार्य मे दक्षिणा लगना। उ० शादी-विवाह मे खूब नेग लगता है। २. अच्छे काम मे आना। उ० उसकी कमाई नेग लगी।

नेम-उपवास करना–नियम-संयम से जीवन बिताना।

नेवता फिरना—घर-घर जाकर निमन्त्रित करना।

नेवा नास करना—सत्यानाश करना।

नेवा नास खोना—बर्बाद या सत्यानाश करना।

नेवा नास जाना—सत्यानाश हो जाना। उ० तेरा नेवा नास जाय।

नेवा नास होना—सत्यानाश होना ,जड़-बुनियाद से जाना।

नेजा हिलाना—भाला-बरछी फेरना। उ० तुम्हारे नेजा हिलाने से मैं नहीं डर सकता।

नेह जोड़ना—प्रेम करना।

नेह टूटना—स्नेह-सम्बन्ध न रहना।

नैन आकाश पर चढ़ना—बहुत गर्व करना।

नैन गँवाना—१. अन्धा होना। उ० अपने नैन गँवाय के दर-दर माँगे भीख। २ मुहताज होना।

नैन से झड़ी लगना—बहुत रोना।

नैनों का तारा—दे० 'आँखों का तारा'।

नोंक की लेना—डींग मारना। उ० चलो हटो, केवल नोक की लेते हो, समय पर कुछ नहीं करते।

नोंक-झोंक—ठाट-बाट, धूम-धाम। उ० बड़ी नोंक-झोंक से आ रहे है।

नोंक बनाना—सँवारना, बनाना-चोनाना। उ० नोक बनाने से बच्चा सुन्दर नहीं हो सकता।

नोकर-चाकर—१. नौकर, इत्यादि। उ० उनके नोकर-चाकर आ रहे है। २. छोटे या निम्न स्तर के आदमी। ३. तुच्छ, अपने से छोटा। उ० मुझे जो नोकर-चाकर समझता है, मै उसे भी वही समझता हूँ।

नोकर-चाकर—दे० 'नौकर-चाकर'।

नोक रह जाना—शान रह जाना। उ० किसी तरह इसकी नोक रह गई।

नोन-तेल-लकड़ी की चिंता—गृहस्थी के भरण-पोषण की चिंता।

नौ दिन में अढ़ाई कोस चलना—बहुत धीमी गति से काम करना।

नोन-राई उतारना—दे० 'राई-नोन उतारना'।

नौकरी देना—दासत्व करना। नौकरी करना। उ० वह तो २० रु० पर रात-दिन नौकरी देता है।

नौकरी बजाना—दे० 'नौकरी देना'।

नौकरी से लगना—नौकर होना। उ० वह तो नौकरी से लग गया।

नौ-दो-ग्यारह होना—झट चल देना। टसक जाना। उ० वह रुपया लेकर नौ-दो-ग्यारह हो गया।

नौ निध (निधि) बारह सिध (सिद्धि) होना—१ सुख मे होना। उ० उसके घर तो नौ निध बारह सिध है। २. कामना पूर्ण होना। उ० जब पास हो जाऊँ तो नौ निध बारह सिध हो जाय।

नौबत आ जाना—१. हालत बिगड़ जाना। २. दशा हो जाना। उ० कुछ ही दिनों मे बेकार की नौबत आ जाएगी।

नौबत की टंकोर—दे० 'नौबत बजाकर'।

नौबत को पहुंचना या पहुंच जाना—हालत होना। उ० इस समय सारा देश भूखों मरने की नौबत को पहुँच गया है।

नौबत झड़ना—१. उत्सव या प्रसन्नता मनाया जाना। उ० विवाह मे सभी के यहाँ नौबत झडती है। २ तेज या धाक होना। उ० उसकी तो यहाँ नौबत झडती है।

नौबत बजना—दे० 'नौबत झड़ना'।

नौबत बजा कर—खुले आम, ढिंढोरा पीट कर। उ० डाकुओं ने नौबत बजा कर डाका डाला।

नौबत होना—दुर्दशा होना। उ० आज तो बड़ी नौबत हुई, होश रहा तो फिर उनके यहाँ न जाऊँगा।

न्यौता करना—किसी के निमंत्रण पर सामान भेजना या सामान आदि लेकर जाना। उ० उनका भी न्यौता करना है।

न्योछावर करना—दे० 'निछावर करना'।

न्योड़ा कर धोना—खूब मल कर धोना। उ० न्योडा कर सर धो डालो।

प

पंक का पंकज होना–धूल का हीरा या गुदड़ी का लाल होना। बुरी जगह में अच्छी चीज का पैदा होना। उ० वह चमार का लड़का पंक का पंकज है।

पंक में गिरना–दे० 'पक में पड़ना'।

पंख में पड़ना–आफ़त में पडना। उ० मैं भी ऐसे पंक मे पडा कि कुछ कहते नही बनता।

पंख जमना–१. मौत नज़दीक आना। उ० इस चीटे को पंख जम रहे हैं। [कहा जाता है कि चीटे मरने को होते है तो उन्हे पख जम जाता है।] २. न रहने का लक्षण होना। उ० यह लडका फिर भगेगा। मै देख रहा हूँ, इसे पख जम रहे है। ३ बुरे रास्ते पर जाना। उ० अब तुम्हें भी पख जमने लगे।

पंख तौलना–बल आजमाना। उ० अभी से पख तौल रहे हो। बडे होकर तो कयामत करोगे।

पंख न मारना–न पहुँच पाना, पहुँच न सकना। उ० वहाँ तुम पख नही मार सकते। वह जगह बडी अगम्य है।

पंख पसारना–१ पर फैलाना। २ ओढने की चादर को इस प्रकार ओढना कि एक दामन लटकता रहे।

पंख लगना–दे० 'पख जमना'।

पंखा करना–पखे से हवा करना। उ० अभी मैं पिता जी को पखा कर रहा हूँ, फिर आना।

पंखा झलना–दे० 'पखा करना'।

पंखा डुलाना–दे० 'पखा करना'।

पंखे लग जाना–हौल दिल हो जाना, दिल का तेजी से धडकना।

पंगत उठना–भोज आदि मे भोजन करने वालो का खाकर उठना। उ० पगत उठ गई, जूठा हटा दो।

पंगत बैठना–बहुत से लोगो का एकसाथ बैठ कर भोजन करना। उ० पगत बैठ रही है, तुम भी आ जाओ।

पंगु हो जाना–कुछ करने लायक न रहना।

पंच की दुहाई–अत्याचार या कष्ट दूर करने के लिए जनता से निहोरा। उ० वह बुढ़िया पच की दुहाई दे रही है।

पंच की भीख–१. जनता की कृपा, सबकी दया। उ० इस कार्य के लिए मैं पंच की भीख चाहता हूँ। २. सार्वजनिक चंदा। उ० पंच की भीख का यह फड है, इसका दुरुपयोग न करो।

पंचगव्य पीना–किसी पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए पंचगव्य (गोबर, गोमूत्र, घी, दूध तथा दही) पीकर शुद्ध होना। उ० उसमे चमार के साथ खा लिया है, जब तक पचगव्य न पियेगा, घर मे न आने दूँगा।

पंचत्व को प्राप्त होना–मरना। उ० वह बुढिया आज सुबह पचत्व को प्राप्त हो गई।

पंच-परमेश्वर–पाँच आदमी मिल कर जो कहे, वह ईश्वर के कहने के समान है। उ० चाहे कुछ हो, पच परमेश्वर की बात तो सबको माननी पडेगी।

पंच बदना–दे० 'पंच मानना'।

पंच मानना–लडाई-झगडे के निर्णय के लिए एक या कई आदमी को न्यायकर्त्ता मानना। उ० जो निष्पक्ष हो, उसी को पच मानना चाहिये।

पंच-सुहाता करना–सबको भला लगने वाला काम करना।

पंचायत जोड़ना–पचो को जमा करना। उ० बिना पचायत जोड़े काम चलने का नहीं।

पंछी का पर भी न मार सकना–किसी की भी पहुँच न होना।

पंजर-पंजर ढीला होना–१. एकदम थक जाना। उ० कई दिनों से काम करते-करते मेरा पजर-पंजर ढीला हो गया है। २. बुढापे के कारण बहुत थक जाना। उ० उसका तो पजर-पजर ढीला हो गया है।

पजर होना–दुर्बल होना। उ० इतने ही दिन की बीमारी से वह पंजर हो गया है।

पंजा करना–दे० 'पंजा लड़ाना'।

पंजा फेरना–दे० 'पंजा मोडना'।

पंजा-छक्का करना–जुआ खेलना। उ० पंजा-छक्का करने से बहुतों के दीवाले होते देखे है, पर किसी को कुछ कमाते नहीं देखा।

पंजा फैलाना–लेने की कोशिश करना। उ० आप व्यर्थ मे पंजा फैला रहे है, वह चीज आपको नही मिल सकती।

' बढ़ाना–दे० 'पंजा फैलाना'।

। मारना–झपट्टा मारना। उ० चील पंजा ्र कर लड़के के हाथ की मिठाई ले गई।

। मोड़ना–पंजा लड़ाने में दूसरे का पंजा रोड़ना। उ० तुम मेरा पंजा नही मोड़ कते।

। लड़ाना–हाथ में हाथ डाल कर मरोड़ने । कोशिश करना। उ० क्या आप भी मुझ से कमजोर आदमी से पंजा लड़ा रहे है?

' ले आना–दे० 'पंजा मोड़ना'।

झाड़ कर पीछे पड़ना–दे० 'हाथ धोकर पीछे ड़ना'।

झाड़ कर लिपटना–सताने के लिए तैयार ना।

में आना–१. अधिकार में आना। उ० वह ापके पंजे में कभी नही आ सकता। २ कड़ मे आना।

में लाना–अधिकार मे करना। उ० यों उसे े मे लाना बड़ा कठिन है, पर कोई-न-कोई स्ता निकालना ही होगा।

से छूटना–चंगुल या वश मे से निकल ना। उ० उसके पंजे से छूटना मुश्किल है।

से निकलना–दे० 'पंजे से छूटना'।

' के बल चलना–१. अभिमान करना। उ० ों के बल चलने वाले कभी तरक्क़ी नही रते। २. बहुत तेज़ चलना।

त होना–१. विद्वान् होना। २ आडंबर ाने वाला या ढोंग रचने वाला होना। सफ़ाई से रहने वाला होना। ४. पुजारी ना। ५. बुराइयों (झूठ, हिंसा, व्यभिचार) दूर रहने वाला होना।

गहना–रास्ता लेना। उ० अपना पंथ गहो, ़ काम से तुम्हें क्या मतलब?

चलाना–नया धर्म या संप्रदाय चलाना।

दिखलाना या दिखाना–१. शिक्षा देना। ० पंथ दिखाना बड़ा सरल है, पर अनुसरण रना उतना ही कठिन। २. रास्ता दिखाना। ० मुझे पंथ दिखला दो।

देखना–इन्तज़ार करना। उ० आज चार नों से आपका पंथ देख रहा हूँ, पर कही खाई तक न पड़े।

निहारना–दे० 'पंथ देखना'।

पंथ पर लगाना–उचित काम में लगाना। उ० अपने लड़कों को पथ पर लगा दो, नहीं तो पछताओगे।

पंथ पर लाना–उचित रास्ते पर लाना। उ० लड़के को पंथ पर लाओ, नहीं तो खराब हो जायगा।

पंथ लगना–पीछा करना, पीछे पड़ना। उ० भाई मेरे पंथ न लगो।

पंथ सेना–रास्ता देखना। उ० कब से पंथ से रहा हूँ, मगर वही नहीं आया।

पकड़ छूटना–वश न रहना।

पकड़ जाना–क़ैद होना। पकड़ में आना। उ० वह भी पकड़ा गया।

पकड़-धकड़ होना–गिरफ़्तारी होना। उ० उस रात के डाके के सिलसिले में आज खूब पकड़-धकड हो रही है।

पकड़ पकड़ना–वाद-विवाद मे बात पकड़ना। उ० पकड़ न पकड़ो, क़ायदे से बात करो।

पकड़ में आना–चुंगल मे आना या फँसना। उ० इतने दिन बाद तो पकड़ मे आये हो, अब बोलो।

पकवाई देकर कच्चा खाना–रुपये खर्च करने पर भी काम खराब होना। उ० मूर्खों को पकवाई देकर भी कच्चा खाना पड़ता है।

पका आम होना–बिल्कुल वृद्ध होना। मरने के क़रीब होना। उ० वह तो पका आम है, उसका क्या विश्वास, जाने कब चू पड़े।

पका-पकाया मिलना–बना-बनाया मिलना, बिना मेहनत के मिलना। उ० भाई इस समय सभी चीज़ें पको-पकायी मिल जाती हैं, अतः बड़ा आराम है।

पकौड़ी-सी नाक–फूली हुई नाक। उ० उनकी पकौड़ी-सी नाक अच्छी नहीं लगती।

पक्का करना–१. ठीक करना, तैयार करना। उ० उसे गवाही करने को पक्का कर दो, क्योंकि कल ही तारीख है। २. निश्चित करना। उ० करना हो तो आज पक्का कर दो। ३. मज़बूत या बलवान बनाना। उ० अब इसको पक्का कर दिया, कभी टूट नहीं सकता। ४. सुर्खी, चूने आदि से गच पीटना। उ० इस छत को पक्का कर दो। फ़र्श पक्का नहीं है।

पक्का कागज—टिकट वाला कागज। उ० पक्का कागज पर लिखवा लो, नहीं तो उस बेईमान का क्या ठिकाना!

पक्का काम होना—१. असली सोने का या चाँदी का काम होना। उ० यह पक्के काम की साड़ी है। २. ऐसा काम होना, जिसके खराब होने या बिगड़ने का संदेह न हो। उ० कागज़ पर लिखवा लेने से पक्का काम हो गया, अब वे कभी नहीं इन्कार कर सकते।

पक्का खाना—घी में बना भोजन। पूड़ी-कचौड़ी आदि। उ० अगर पक्का खाना हो तो मैं आपके यहाँ खा सकता हूँ।

पक्का घर—ईंट-चूने से बना मकान। उ० पक्का घर बहुत पैसे खाता है।

पक्का पान होना—बहुत वृद्ध होना। उ० वह तो पक्का पान हो गया है, उसका क्या ठिकाना।

पक्का पानी—१ खूब औटाया हुआ जल। उ० ज्वर मे पक्का पानी पीना चाहिये। २ स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद पानी। उ० वहाँ का पक्का पानी तुम्हे फायदा करेगा।

पक्का रंग—१. न छूटने वाला रंग। उ० किसी पक्के रंग मे रजाई का पल्ला रंग दो। २ काला रंग। उ० वह पक्के रंग का लड़का बड़ा शरारती है।

पक्की कर लेना—१. ठीक कर लेना। उ० बात पक्की कर लेना, यह नहीं कि वक्त पर मुकर जायें। २ वादा कर लेना। उ० मैने तो पक्की कर ली, अब हट नहीं सकता।

पक्की बात होना—१ किसी बात का निश्चय हो जाना। उ० अब पक्की बात हो गई है। २ टस से मस न होना।

पक्की रसोई—घी में पका हुआ भोजन।

पक्ष करना—तरफ़दारी करना। उ० न्यायाधीश को किसी का पक्ष करना उचित नहीं।

पक्ष खींचना—दे० 'तरफ़दारी करना'।

पक्ष गिरना—शास्त्रार्थ मे हार होना।

पक्ष ग्रहण करना—तरफदारी करना। उ० वह हमेशा अपनी ही जाति का पक्ष ग्रहण करता है।

पक्ष निर्बल पड़ना—१. मतिपुष्टि न होना। उ० शास्त्रार्थ मे उनका पक्ष निर्बल पड़ रहा है। २. किसी पक्ष का किसी बात मे कमज़ोर होना।

पक्ष में होना—किसी ओर होना। उ० मैं आपके पक्ष में हूँ।

पक्ष लेना—१. किसी की तरफ़दारी करना। २ मददगार होना। उ० आप मेरा पक्ष लीजिएगा?

पख निकालना—नुक्स निकालना। उ० तुम उसके हर काम में पख निकालते हो, यह ठीक नहीं है।

पख फैलाना—१. दे० 'पख निकालना'। २ झगड़ा फैलाना।

पख मचाना—१. शोर मचाना। २ बेहूदी बाते कहना।

पख लगाना—विघ्न डालना। उ० इसमे क्यों पख लगाते हो?

पखेरू का पंख न मारना—किसी का भी आना-जाना न होना।

पगडंडी लेना—तंग रास्ते पर चलना। उ० पहाड़ो मे पगडंडी लेकर ही जाना पड़ता है।

पगड़ी अटकना—मुकाबिला होना। उ० उन दोनों की पगड़ी अटकी हुई है, देखें नौकरी किसको मिलती है।

पगड़ी उछलना—१. दुर्दशा होना। उ० उन सभी की यहाँ पगड़ी उछली। २ बेइज़्ज़त होना।

पगड़ी उछालना—१. हँसी उड़ाना। उ० इतने आदमियो के बीच किसी की पगड़ी उछालना ठीक नहीं है। २. दुर्दशा करना। उ० सिपाहियो ने बदमाशों की खूब पगड़ी उछाली।

पगड़ी उतरना—इज़्ज़त बिगड़ना। उ० यहाँ आने से बेचारे की पगड़ी उतर गई।

पगड़ी उतारना—१. इज़्ज़त खराब करना। उ० किसी शरीफ़ आदमी की पगड़ी उतारना ठीक नहीं है। २. कुछ न छोड़ना, लूट लेना। उ० ठगो ने पथिक की पगड़ी उतार ली।

पगड़ी की शरम रखना—इज़्ज़त का ख्याल करना। उ० अपने बाप-दादो की पगड़ी की शरम तो रखो।

पगड़ी नीची होना—बेइज़्ज़ती होना।

पगड़ी फेर कर रखना—बात बदल जाना। उ० आपने तो पगड़ी फेर कर रख दी, क्या यही तय हुआ था?

पगड़ी पर हाथ डालना—इज़्ज़त को नुक़सान पहुँचाना।

पगड़ी बँधना—१. बाप-दादो का अधिकार मिलना । उ० अब उसके लड़के को पगड़ी बँधेगी । २. इज्जत मिलना । उ० भारत को आगे बढ़ाने की पगड़ी गांधी जी को बँधी है ।

पगड़ी बगल में ले लेना—प्रतिष्ठा बचा लेना । उ० तुमने मेरी पगडी बग़ल में ले ली, नही तो मैं कहीं का न होता ।

पगड़ी बदलना—दोस्ती करना । उ० भले आदमियों से पगड़ी बदलो । इश्के बुता में देखा यह लुत्फ़ सब पे तुर्राह । बदली गई है पगडी शेख और बरहमन में ।

पगडी बाँधना—१ बड़ी पदवी देना । उ० किसी योग्य आदमी को पगडी बाँधना चाहिये । २. उत्तराधिकार देना । उ० दशरथ ने राम को पगडी बाँधने की सोची थी । ३ इज्जत पाना, गौरव पाना । उ० अपने बाबा के बाद तुम्ही ने पगड़ी बाँधी है ।

पगड़ी में ख़ाक डालना—१. बेइज्जती करना । उ० कम से कम यहाँ उसकी पगडी मे खाक न डालो । २ धिक्कारना । उ० उसकी पगडी में क्यो खाक डालने हो, आखिर गलती तुमसे भी तो होती है ।

पगड़ी मे फूल रख जाना—बदनामी करा जाना । बेइज्जत करवाना । उ० वह उसकी पगडी मे फूल रख गया है ।

पगड़ी रखना—१. इज्जत बचाना । उ० समय पर आपने रुपये देकर मेरी पगड़ी रख ली । २. नम्रता दिखाना । उ० उसने सैकडो बार उसके सामने पगड़ी रखी, पर उसे तनिक भी दया न आई ।

पग धरना—जाना, पहुँचना ।

पग धोना—१. पैर धोना । उ० पानि परात को हाथ छुयो नहिं नैनन के जल सो पग धोए । २. सेवा करना । उ० वह तुम्हारा पग धोने को तैयार है, उसका काम कर दो ।

पग पसार देना—मर जाना । उ० आज उसने पग पसार दिये ।

पच्छ करना—तरफ़दारी करना । पक्ष लेना । उ० चलो हम समझे, इतनी पक्ष न करो, जानते हैं कि दिल में पिसते हो ।

पचड़ा गाना—१. देवी की या ब्रह्म की प्रार्थना करना । २ अपनी या किसी दूसरे की दुःख-भरी या झंझट-भरी बातें सुनाना । उ० क्या पचड़ा गाते हो ?

पचड़ा फैलाना—प्रपंच या पँवाड़ा फैलाना । उ० यहाँ अपना पचड़ा न फैलाओ ।

पचड़ा ले बैठना—ऐसी चर्चा छेड़ना, जिसमें विशेष रुचि न हो ।

पचड़ा सुनाना—दे० 'पचड़ा गाना' ।

पच मरना—परिश्रम या प्रयत्न करते-करते परीशान हो जाना । उ० मैं पच मरा, पर उन्होंने एक न सुनी ।

पचा डालना—दे० 'पचा बैठना' ।

पचा बैठना—खा जाना, हड़प बैठना । उ० सभी का माल तुम पचा बैठते हो, पर कभी सेर को सवा सेर अवश्य मिलेगा ।

पच्चर अड़ाना—किसी के काम में अड़ंगा या बाधा डालना । उ० मेरे काम में पच्चर अड़ाया तो कुशल नही ।

पच्चर करना—दे० 'पच्चर ठोंकना' ।

पच्चर ठोंकना—१. परीशान करना । उ० तुम सहायता क्या करोगे, पच्चर ही ठोकते रहते हो । २ दे० 'पच्चर अड़ाना' ।

पच्चर मारना—होते काम को किसी युक्ति से रोक देना । उ० अब पच्चर न मारो, नही तो मैं कही का न रहूँगा ।

पच्चर लगाना—दे० 'पच्चर अड़ाना' ।

पच्ची हो जाना—पूर्णत. मिल जाना । उ० दवा को पानी में पच्ची हो जाने दो ।

पछड़ जाना—दे० 'पिछड़ जाना' ।

पछाड़ खा-खाकर रोना—गिर-गिर कर बहुत अधिक विलाप करना ।

पछाड़ खाना—१. बेहोश होकर गिर जाना । २. बार-बार गिरना । उ० वह बेचारी पछाड़ खाकर रो रही है ।

पछाड़ देना—हरा देना या गिरा देना ।

पछाड़ी-अगाड़ी बाँधना—पूर्णतः चारों ओर से कस देना कि कहीं हिला-डुला या निकाला न जा सके । उ० ऐसी पछाडी-अगाड़ी बाँधूंगा कि घूमना निकल जायगा ।

पछाड़ी-अगाड़ी लगाना—दे० 'पछाड़ी-अगाड़ी बाँधना' ।

पछोड़ डालना–अन्नादि को साफ़ कर डालना। उ० जल्दी पछोड़ डालो, नहीं तो चक्की बंद हो जायगी।

पजावे का पजावा खंखाड़ हो जाना–दे० 'पजावे का पजावा झाँवा हो जाना'।

पजावे का पजावा झाँवा हो जाना–१. सब काम बिगड़ जाना। २. सारी चीज़ें बरबाद हो जाना। ३. घर भर, जाति भर, जमात भर या राष्ट्र भर के आदमियों का बिगड़ जाना।

पजावे का पजावा बिगड़ जाना–दे० 'पजावे का पजावा झाँवा हो जाना'।

पट उघड़ना–दे० 'पट खुलना'।

पटक देना–१ ज़मीन पर गिरा देना। २. हरा देना। ३ बहुत लज्जित कर देना। ४. प्रतिष्ठा खराब कर अपमानित कर देना। ५. सुपुर्द कर देना।

पटकनिया खाना–दे० 'पटका जाना'।

पटका जाना–१. किसी के द्वारा कुश्ती मे हराया जाना। उ० अभी आज तक गामा किसी से पटका नही गया। २. हराया जाना। ३ ज़मीन पर गिराया जाना। ४ अपमानित किया जाना।

पटका बाँधना–१. कमर कसना, पूरी तरह किसी काम के लिए तैयार होना। २. लड़ने के लिए तैयार होना।

पटखना देना–ज़मीन पर ज़ोर से दे मारना।

पटखनियाँ खाना–ज़मीन पर गिर-गिर पडना, लोटनिया खाना।

पट खुलना–१. दरवाजा खुलना। २. मंदिर का दरवाज़ा खुलना। ३ रहस्यमयी बातो का सामने आना। उ० अब पट खुलता है तो देखो क्या-क्या रंग आता है।

पटतर देना–उपमा देना, तशबीह देना। उ० तुम्हारी पटतर किससे दें, तुम तो अपूर्व हो।

पट देना–दे० 'पट भिड़ाना'।

पट-पट बोलना–१. पट-पट ज़बान चलाना, तेज़ बोलना। २. लड़कों का बिना हिचक बोलना।

पट पड़ना–१. कम हो जाना, ठीक न चलना। उ० रोजगार पट पड़ गया। २. कुश्ती मे नीचे गिरना। ३. पेट के बल सो जाना या पड़ जाना।

पट भिड़ाना–१. दरवाज़ा बंद करना। २. मंदिर का दरवाज़ा बंद करना।

पट भेड़ना–दरवाज़ा बंद करना।

पटम होना–१. अंधा होना। २. चौपट होना।

पट मारना–दे० 'पट भिड़ाना'।

पटरा कर देना–तबाह या बर्बाद कर देना। उ० कहत ने पटरा कर दिया।

पटरा करना–१. पूर्ण नष्ट-भ्रष्ट कर देना। उ० मकान पटरा कर दिया। २. बहुत से आदमियो को मार गिराना। ३. फल आदि पेड से बहुत सख्या में गिराना। उ० पेड पर चढकर आमो को पटरा कर दिया।

पटरा फेरना–लूट लेना, सफ़ाया कर देना।

पटरा हो जाना–बहुत नुकसान होना।

पटरा होना–१. नष्ट होना। २. मर जाना। ३ बहुत सख्या मे ज़मीन पर पटरे की तरह बिछ जाना।

पटरी जमाना–१. घोड़े पर ठीक तरह टाँगो को कस कर आसन जमाना। २. काम बना लेना। ३. काम बनाने के लिए घात लगाना या रास्ता निकालना।

पटरी पढ़ाना–१. मूर्ख बनाना। २. धोखा देना। उ० पटरी न पढ़ाओ, इसे किसी तरह पूरा करो।

पटरी पर आना–असलियत पर आना। सही रास्ते पर आना। उ० तुम कितना भी इधर-उधर भागो, पर अन्त मे पटरी पर आना ही पड़ेगा।

पटरी पर लाना–रास्ते पर लाना। उ० उसको पटरी पर लाना आसान नही है। फिर भी एक बार कोशिश करके देख लो।

पटरी बैठना–१. एक प्रकृति का होना। उ० हमारी उनकी पटरी खूब बैठती है। २. मित्रता होना। ३. काम निकालने का रास्ता हो जाना।

पटरी बैठाना–दे० 'पटरी जमाना'।

पट लगाना–दे० 'पट भिड़ाना'।

पट लेना–पट नामक दाँव कुश्ती में लगाने की युक्ति करना। उ० पट लेकर मैंने ऐसा मारा कि वे चारों खाने चित्त हो गए।

ाका जमाना-थप्पड़ मारना। उ० चार पटाका माओ, अपने आप ही ठीक हो जायगा।

ाका देना–दे० 'पटाका जमाना'।

ाका लगाना–दे० 'पटाका जमाना'।

ाख़ से बोलना–कड़ाके की आवाज से या जी से बोलना।

ाख़ा–शोख और अल्हड़ (युवती)। उ० टाखा न बनो, कुल के शील का भी ध्यान खो।

पटी का पर्दा–कसीदा किया हुआ पर्दा।

पटी की गोट–रंग-बिरंगी तथा कसीदा कढ़ी ई गोट।

-फेर करना–विवाह की एक रस्म करना ासमे वर-वधू के आसन अदल-बदल दिए ाते हैं।

बाँधना–पटरानी बनाना, पट्टमहिषी ाना। उ० चौदह सहस तिया मे तोको पटा ाऊँ आज।

ा काढ़ना–माँग काढना। बालो को दोनो र झाड़ कर बीच मे माँग निकालना।

ा पारना–दे० 'पटिया काढना'।

ा लेना–अपने अनुकूल बना लेना।

ा सँवारना–दे० 'पटिया काढना'।

ल डालना–१ समाप्त कर देना। उ० आज म पटील डालो। २ किसी तरह जल्दी (डालना।

ल देना–दे० 'पटील डालना'।

ा करना–दे० 'पट्टा लिखना'।

चुकाना–विवाह आदि में वर-पक्ष का कन्या- ा के पवनियों को नेग चुकाना।

तोड़ना–१. कुत्ते आदि पालतू पशुओं का ने मालिक के यहाँ से भाग कर कही और ा जाना। २. भग जाने का इरादा करना।

तोड़ाना–दे० 'पट्टा तोड़ना'।

लिखना–लिखित रूप में किसी चीज का धकार दूसरे को देना। उ० वह जमीन मैने हें पट्टा लिख दी।

लिखवाना–किसी ज़मीन आदि का अधिकार ने नाम लिखवाना। उ० मैंने वह ज़मीन से पट्टा लिखवा ली।

पट्टा सिर से बाँधना–१. गौरव देना। २. आरोप लगाना।

पट्टी का गाँव–ऐसा गाँव जिसके बहुत से ज़मींदार हों और इस कारण कुप्रबंध हो। उ० पट्टी के गाँव में कौन रहेगा?

पट्टी जमाना–१. व्यवस्था कर लेना। २. अपना रोब जमा लेना। ३ बालो को सँवार कर कोई चिपकने वाली चीज़ लगा कर बैठाना।

पट्टीदार होना–१. हिस्सेदार होना। २. नजदीक का होना।

पट्टीदारी अटकना–पट्टी के कारण या हिस्से के कारण कोई झगड़ा खड़ा होना। उ० मेरी पट्टीदारी नही अटकी है कि उनसे झगड़ा करूँ।

पट्टीदारी करना–१. किसी के बराबर अपना अधिकार जताना। २. बराबरी करना। उ० यहाँ पट्टीदारी करने आए हो या निमंत्रण खाने।

पट्टीदारी चलना–हिस्से आदि के संबंध से लाग-डाँट चलना। उ० उन दोनों में खूब पट्टीदारी चलती है।

पट्टीदारी होना–हिस्से का सबंध होना। उ० उनसे मेरी पट्टीदारी है।

पट्टी पढ़ना–१ छलछद्र सीखना। उ० यह पट्टी तुमने कहाँ पढ़ी। २. कुछ सीखना या पढ़ना।

पट्टी पढ़ाना–१. गुरु को शिष्य का पढाना। २. चारा देना, धोखा देना, बहकाना। उ० आप मुझे पट्टी नहीं पढा सकते।

पट्टी पुजना–विद्यारभ होना।

पट्टी बताना–दे० 'पट्टी पढ़ाना'।

पट्टी बाँधना–१. मरहम-पट्टी करना। उ० उसे चोट लगी है, जरा पट्टी बाँध दो। २. जल-चिकित्सा में कपड़े की भीगी पट्टी बाँधना।

पट्टी में आना–किसी के धोखे या बहकावे में आना। उ० पट्टी में आकर मैंने यह बेवक़ूफ़ी कर दी।

पट्टी सँवारना–दे० 'पटिया सँवारना'।

पट्ठा चढ़ना–किसी नस का चढ़ या तन जाना।

पट्ठा जवान–खूब तगड़ा और युवक। उ० हाँ तो वह खूब पट्ठा जवान है।

पट्ठा-पछाड़–१. तगड़ी औरत । उ० वह तो पट्ठा-पछाड़ है, उसे औरत कौन कहेगा ? २. बहुत मज़बूत ।

पट्ठों में घुसना–बिलकुल अपना बनना । गहरा मित्र बनना । उ० वह तुम्हारे पट्ठो मे घुस कर धोखा देगा ।

पड़ जाना–१. बीमार पड़ जाना । उ० अधिक मेहनत के कारण वे भी पड़ गए । २. दे० 'पड़ता खाना' । ३. मिलना, प्राप्त होना । उ० एक रुपया रोज़ यहाँ पड़ जाता है । ४. खर्च होना ।

पड़त फैलाना–अन्दाज़ा लगाना, अनुमान करना ।

पड़ता खाना–लागत और अभीष्ट लाभ मिल जाना । उ० पड़ता खाता हो तो बेच दो ।

पड़ता निकलना–सब खर्च-वर्च देख कर औसत दाम निश्चित करना । उ० पड़ता निकालूँ तो दाम बताऊँ ।

पड़ता पड़ना–दे० 'पड़ता खाना' ।

पड़ता फैलाना–दे० 'पड़ता निकालना' ।

पड़ता बैठाना–दे० 'पड़ता निकालना' ।

पड़ता रहना–औसत रहना ।

पड़ताल करना–१. छानबीन करना । २. पटवारी का खेतों मे देख कर काग़ज़ में लिखना कि किसने कौन खेत बोया है । उ० मुशी जी पड़ताल करने आये है ।

पड़ताल पड़ना–बराबर जूते पड़ना, खूब पिटना ।

पड़ता सहना–दे० 'पड़ता खाना' ।

पड़ती उठना–१. परती या ऊसर भूमि का जोता जाना । २. जोतने के लिए लगान निश्चित करके पड़ती ज़मीन किसी को देना ।

पड़ती छोड़ना–खेत को न जोतना । उ० उन्होने खेत पड़ती छोड़ दिया ।

पड़ती पड़ना–न जोता जाना । उ० वह खेत तीन वर्ष से पड़ती पड़ा है ।

पड़ना–१. विपत्ति, दुःख या मुसीबत आना । उ० पड़ी है उन पर तो सहेगा कौन ? २. बीमार पड़ना । उ० वे भी पड़े । ३. खर्च पड़ना । उ० बड़ा पड़ता है । ४ परिश्रम पड़ना । ५ आमदनी होना । ६. काम या प्रयोजन आना । उ० पड़ने पर सभी आते हैं, यों कोई नहीं पूछता ।

पड़ मरना–मरते दम तक साथ न छोड़ना । इस तरह रहना कि मर कर ही अलग होना ।

पड़ाके का परदा–दे० 'पटा-पटी का पर्दा' ।

पड़ाके की गोट–दे० 'पटा-पटी की गोट' ।

पड़ा रहना–दे० 'पड़े रहना' ।

पड़ाव डालना–१. रुकना, डेरा डालना । उ० आज कहाँ पड़ाव डालोगे ? २. फ़ौज या सरकारी अफ़सरों का डेरा डालना ।

पड़ाव पड़ना–१. रुकना, ठहरना । २. बड़े अफ़सर या सेना आदि का रुकना ।

पड़ाव मारना–१ बड़े साहस का काम करना । उ० पड़ाव नही मारा है कि इनाम दूँ । २ पड़ाव के यात्रियों को लूटना । उ० उनका पड़ाव मारने के लिए डाकू जा रहे है ।

पड़ा होना–बने रहना, रहना । उ० आज चार रोज़ से यही पड़े हो, कहीं और जाओ ।

पड़िया के ताऊ–बुद्धू ।

पड़े रहना–१. बराबर लेटे रहना । उ० डाक्टर ने पड़े रहने की आज्ञा दी है । २ शांत रहना । उ० उन्हे बकने दो, तुम पड़े रहो ।

पड़ोस करना–पड़ोसी होना, रहना । पड़ोस मे ठहरना । उ० ऐसी जगह पड़ोस मत करो ।

पढ़ कर सिर पर डालना–जादू करना ।

पढ़ना-लिखना–शिक्षा पाना । उ० आज के जमाने मे पढना-लिखना आवश्यक है ।

पढ़-पत्थर होना–बिलकुल अनपढ होना ।

पढ़ाना-लिखाना–१ शिक्षा देना । उ० लड़को को पढ़ाने-लिखाने का प्रबन्ध करो । २ समझाना-बुझाना । उ० पढा-लिखा कर उसे भेजना, नही तो भंडाफोड़ हो जायगा ।

पढ़ा-लिखा–१. शिक्षित । २. समझाया-बुझाया ।

पतंग काटना–१. किसी की पतंग अपनी पतंग से काट देना । २. नौकरी से अलग कर देना । उ० उनकी पतंग तो आपने काट दी, अब वे क्या करें ? ३. संबंध-विच्छेद करा देना ।

पतंग बढ़ाना–डोरा अधिक छोड़ कर पतंग को और दूर या ऊपर करना । उ० पतंग बढ़ा कर उसको काटो ।

पतंग लड़ाना–दो पतंगो को लड़ाना । उ० वह पतंग लड़ा रहा है ।

पतंगा होना–दे० 'पतिंगा होना' ।

पतंगे लगना–आग लगना । बहुत ज़ोर का गुस्सा आना ।

पत उतारना—अपमानित करना, इज़्ज़त ले लेना। उ० उनकी तुमने खूब पत उतारी।

पत खोना—इज़्ज़त गँवाना। उ० अपनी पत न खोओ।

पत गँवाना—दे० 'पत खोना'।

पत जाना—इज़्ज़त जाना। साख बिगड़ना।

पतझड़ आना—अवनति-काल आना। उ० अब उनका भी पतझड़ आ गया।

पतझर आना—दे० 'पतझड़ आना'।

पतपानी—इज़्ज़त। उ० उसने अपना पतपानी बेच दिया।

पतपानी खोना—दे० 'पत खोना'।

पतपानी गँवाना—दे० 'पत गँवाना'।

पतपानी रखना—इज़्ज़त-आबरू रखना। उ० अब तो किसी तरह मेरा पतपानी रखो।

पतपानी लेना—दे० 'पत उतारना'।

पत रखना—दे० 'पतपानी रखना'।

पतरे खोलना—भेद खोलना। क़लई खोलना। उ० अभी पतरे खोलता हूँ, तब पता चलेगा।

पतला कान—जल्दी ही किसी बात पर विश्वास कर लेने वाला।

पतला पड़ना—१. दुर्दशाग्रस्त होना। २. दुबला होना।

पतला हाल—दुर्दशा, बुरी दशा। उ० उनका पतला हाल है।

पता लेना—दे० 'पत उतारना'।

पताका उड़ना—१. अधिकार होना। उ० देखें कश्मीर पर किसकी पताका उड़ती है? २. सबसे बड़ा होना। उ० व्याकरण मे पाणिनि की पताका उड़ रही है। ३. प्रसिद्धि होना। ४. यश फैलना।

पताका उड़ाना—१. अधिकार करना। २. विजयी होना।

पताका गिरना—१. हार जाना। २. नाम डूब जाना।

पताका फहराना—१. दे० 'पताका उड़ना'। २. दे० 'पताका उड़ाना'।

पता-ठिकाना—किसी व्यक्ति या वस्तु का स्थान और साधारण परिचय। उ० अपना पता-ठिकाना तो बताओ।

पता-निशान—वे बातें जिनसे किसी के संबंध में कुछ जान सकें। उ० उनका पता-निशान तो बताओ।

पतिंगा होना—१. बहुत बड़ा प्रेमी होना। २. प्रेम में प्राण दे देने वाला होना। ३. बलिदान हो जाना।

पति करना—किसी को पति बना लेना। उ० उसने फिर पति कर लिया है।

पते का—जानकार, गुप्त बातों का ज्ञान रखने वाला, अच्छा। उ० वह बड़े पते का आदमी है।

पते की—१. बहुत अच्छी या बड़ी। उ० पते की बात तो तुमने अब कही है। २. भेद प्रकट करने वाली। उ० कुछ पते की कहो तो काम चले।

पते की सुनाना—१. चुभती हुई कहना। २. पते की बात या भेद की बात कहना।

पते ले डालना—सताना, नाक में दम करना।

पते लेना—दे० 'पते ले डालना'।

पत्तल परसना—पत्तल सामने रख कर उसमें खाना परसना। उ० पत्तल परसो, लोग कभी से बैठे हैं।

पत्तल परोसना—पत्तल पर भोजन परसना।

पत्तल लगाना—दे० 'पत्तल परोसना'।

पत्ता कट जाना—कोई सरोकार न रहने देना, संबंध छूट जाना।

पत्ता खड़कना—आहट मिलना। उ० पत्ता खड़का, बंदर भड़का।

पत्ता चाटना—१. बाजार की चीज़ खाना। २. जूठन खाना। उ० पत्ता चाटने वालों की भी इज़्ज़त है!

पत्ता तोड़ कर भागना—सिर पर पैर रख कर भागना, बहुत तेज भागना। उ० वह मुझे देखते ही पत्ता तोड़ कर भागा। [इसका संबंध एक खेल से है, जिसमें पत्ता तोड़ कर तुरन्त भागा जाता है।]

पत्ता न तोड़ने देना—कुछ भी न करने देना।

पत्ता भी न हिलना—१. ज़रा भी हवा न बहना। उ० आज तो पत्ता भी नहीं हिल रहा है। २. ज़रा भी आहट न मिलना। उ० पत्ता भी न हिले, नहीं तो साँप भग जायगा।

पत्ता लगना—पत्ते से सटे होने के कारण फल में दाग़ पड़ जाना। उ० यह आम सड़ा नहीं है, सिर्फ़ पत्ता लगा है।

पत्ता हो जाना–भग जाना, बहुत जल्दी ग़ायब हो जाना। उ० बन्दूक़ की आवाज़ सुनते ही हिरन पत्ता हो गया।

पत्ते को देखना जड़ न देखना–ऊपरी टीमटाम पर ध्यान देना, बात के मूल तक न पहुँचना।

पत्ते खेलना–ताश खेलना।

पत्ते पर अपना मांस बिकवाना–तुच्छ वस्तु के लिए महत्त्वपूर्ण वस्तु देना या अपनी इज़्ज़त बिकवाना।

पत्ते पर बैठ कर पेड़ काटना–खुद अपना नुक़सान करना।

पत्तेबाज़ी करना–जुआ खेलना। उ० सुना है, तुम भी पत्तेबाज़ी करने लगे हो।

पत्थर का कलेजा–अत्यत कठोर हृदय। ऐसा हृदय जिसमें करुणा, दया आदि न हो। उ० उनका पत्थर का कलेजा है। लड़का मर गया, पर आँखों में आँसू तक नहीं आए।

पत्थर का छापा–लीथो की छपाई।

पत्थर का दिल–दे० 'पत्थर का कलेजा'।

पत्थर का हृदय–दे० 'पत्थर का कलेजा'।

पत्थर की छाती–१. दे० 'पत्थर का कलेजा'। २. ऐसी छाती जो कभी हिम्मत न हारे।

पत्थर की लक़ीर–सदा बनी रहने वाली, पक्की, स्थायी। उ० ज़बानी बात का क्या विश्वास? लिखवा लो तो पत्थर की लक़ीर हो जाय।

पत्थर को जोंक लगाना–असंभव बात करना। उ० उस मूर्ख को कुछ समझाना पत्थर को जोक लगाना है।

पत्थर को मोम बनाना–कठोर व्यक्ति को भी नरम बना देना।

पत्थर गिरना–दे० 'पत्थर पड़ना'।

पत्थर चटाना–पत्थर पर रगड़ कर तेज़ करना। उ० चाकू को ज़रा पत्थर चटा दो।

पत्थर छाती पर धरना–जबर्दस्ती दिल को रोकना। सब्र करना।

पत्थर डालना–दे० 'खाक डालना'।

पत्थर ढोना–१. अत्यन्त परिश्रम का काम करना। उ० संगदिल बस कि तेरे इश्क मे ढोए पत्थर, चश्म से चश्मए कुह सार कि रोए पत्थर। २ बेकार वक़्त बरबाद करना।

पत्थर-तले से हाथ निकलना–किसी आफ़त से मुक्त होना।

पत्थर-तले हाथ आना–बुरी तरह फँस जाना। उ० उसका पत्थर-तले हाथ आ गया है, बेचारे की कुछ मदद कर दो।

पत्थर-तले हाथ दबना–दे० 'पत्थर-तले हाथ आना'।

पत्थर निचोड़ना–१. असंभव बात करना। २. जिससे किसी को कुछ न मिलता हो, उससे कुछ निकाल लेना। उ० पत्थर निचोड़ना तो मैं जानता हूँ, उस कंजूस सेठ से भी १०० रु० मार लाया।

पत्थर पड़ना–१. ओले पड़ना। उ० पत्थर पड़ने से फ़सल खराब हो गई। २. चौपट हो जाना।

पत्थर पर दूब जमना–अनहोनी बात या काम होना। उ० उस बाँझ का गर्भवती होना पत्थर पर दूब जमना है।

पत्थर पसीजना–१ अनहोनी बात होना। २ अत्यन्त कठोर आदमी में दया आना। उ० आज उसकी दशा देख कर पत्थर भी पसीज गए।

पत्थर पानी हो जाना–निर्दयी के दिल में दया का संचार होना। उ० हमारी आह तेरा दिल न नरमावे तो या किस्मत, वरना देख आइना को पत्थर हो गया पानी।

पत्थर पिघलना–दे० 'पत्थर पसीजना'।

पत्थर बनना–निर्दयी और कड़े हृदय का बनना।

पत्थर बरसना–ओले पड़ना। उ० वो मुक़द्दर है जो माँगू मेह बरसने की दुआ, बरसे पत्थर अब्र से बालाए सर बरसात मे।

पत्थर मारना–१. कष्ट देना। २. पागल हो जाना।

पत्थर लुढ़काना–किसी की तबाही या मौत चाहना।

पत्थर-सा फेंक मारना–१. दुरुस्ती या अक्खड़पन से जवाब देना। २. शील न करना।

पत्थर से सिर फोड़ना–१. असंभव बात करने के लिए सिर खपाना। उ० क्यों पत्थर से सिर फोड़ रहे हो, टूटी छड़ी फिर उसी तरह की कैसे हो सकती है। २. मूर्ख को पढ़ाना।

पत्थर से हाथ निकलना–मुसीबत या संकट से छूटना। उ० किसी तरह पत्थर से हाथ निकले तो तुम्हारा जन्म भर आभारी रहूँ।

पत्थर होना–१. कड़ा होना। २. कठोर हृदय का होना। उ० वह तो पत्थर है, किसी के दुःख-सुख में भी नहीं सुनता।

पथ पर चलना–किसी मत को मानना।

पथराव करना–पत्थर से मारना।

पथ्य से रहना–खाने-पीने मे सयम से रहना। उ० पथ्य से रहो, नही तो बीमारी उभड़ जायगी।

पदचिह्नों पर चलना–किसी के दिखाए मार्ग पर चलना।

पनाह ढूँढ़ना–शरण के लिए सुरक्षित स्थान ढूँढ़ना।

पनाह देना–१. दुश्मनो से बचाना। २. सहारा देना। शरण में लेना। उ० तुम्हीं उसे पनाह दे सकते हो।

पद-रज सिर पर चढ़ाना–बहुत आदर करना।

पनाह पाना–शरण पाना।

पनाह माँगना–१. किसी बुरी वस्तु से दूर रहने की कामना करना। उ० उससे तो मैं पनाह माँगता हूँ। २. शरण माँगना।

पनाह लेना–सुरक्षित स्थान मे शरण लेना। उ० मैं कहाँ पनाह लूँ? एक ही तो जगह थी, वहाँ तुम जा बैठे।

पनीर चटाना–काम निकालने के लिए खुशामद करना। उ० उसके पनीर चटाने मे कभी मत आना।

पनीर जमाना–कोई ऐसी बात करना जिससे भविष्य में बहुत लाभ हो। उ० पनीर जमा कर तो वह पत्र देगा।

पनीरी जमाना–१. पौधा लगाना। २. अपने ढब पर लाना। ३ बुनियाद डालना।

पन्ने उलटना–सरसरी निगाह से देखना।

पन्ने रँगना–व्यर्थ मे लिखना।

पपड़ी आना–तहे जमना, परत बनना।

पपड़ी जमना–दे० 'पपड़ी आना'।

पपड़ी पड़ना–दे० 'पपड़ी आना'।

पयान करना–चल देना, जाना। उ० आज उन्होंने भी घर के लिए पयान कर ही दिया।

पयाल गाहना–दे० 'पयाल झाड़ना'।

पयाल झाड़ना–ऐसा श्रम करना जिसका कोई फल न हो। उ० फिरि-फिरि कहा, पयालहि झाड़े।

परम्परा ढोना–परम्परा का निर्वाह करना।

पर और बाल निकलना–१. सीधा न रह जाना। ससार को समझने-बूझने लगना। २. ऊधम मचाना। उ० अब तुम्हे भी पर और बाल निकलने लगे।

पर कट जाना– १. प्रधान शक्ति या शक्ति के आधार का समाप्त हो जाना। उ० उसके मरने से मेरे पर कट गए। २. व्यर्थ हो जाना।

पर कतर देना–दे० 'पर काट देना'।

पर काट देना–१. अपंग कर देना। उ० भगवान् ने मेरा पर ही काट दिया, नहीं तो आज दिखा देता। २. शक्तिहीन कर देना। ३. बेकार कर देना।

पर कैंच करना–पर काटना, बेबस करना। उ० किसी तरह उसका पर कैंच करो, नही तो वह कहा नही मान सकता।

पर कैंच देना–दे० 'पर काट देना'।

परछाईं से डरना–बहुत डरना। उ० वह तो मेरी परछाईं से डरता है।

परछाईं से भागना–दे० 'परछाईं से डरना'।

परछाईं न पड़ना–ज़रा भी असर न होना।

परछा करना–फ़ैसला करना, मामला तय करना, झगड़ा खतम करना। उ० हँस के बोला यार मै मारे खुशी के मर गया, किस्सा तूलानी था दो बातों में परछा कर दिया।

परछा होना–१. झगड़ा तय होना। फ़ैसला होना। २. भीड़ कम होना।

पर जमना–सीधे-सादे व्यक्ति का शरारती होना। उ० अब तुम्हें भी पर जमने लगे।

पर जलना–१. हिम्मत न पड़ना। साहस न होना। २. पहुँच न होना। उ० वहाँ जाने में बड़ो के भी पर जलते है।

पर झाड़ कर–१. बिना रू-रियायत के। २. साफ़, बिना किसी का ध्यान दिये। उ० वह पर झाड़ कर भाग निकला।

पर टूटना–१. दे० 'पर कट जाना'। २. दे० 'पर जलना'।

परत की परत उखाड़ना–दे० 'बाल की खाल निकालना'।

परती–परती के मुहावरो के लिए पड़ती देखिए।

परती लेना–चद्दर या कंबल से हवा करके ओसाना।

परदा उठाना–गुप्त चीज़ या बात को खोलना।

परदा खोलना–दे० 'परदा उठाना'।

परदाज़ करना–१ उजला करना, चमकाना। २ चाँदी-सोने के ज़ेवर पर नक्श करना।

परदा डालना–छिपाना। धूल डालना। उ० उस किस्से पर किसी तरह परदा डालो, नही तो बदनामी होगी।

परदा न होना–दुराव या सकोच न होना।

परदाफ़ाश करना–छिपी बात खोल देना।

परदाफ़ाश होना–छिपे रहस्य का प्रकट होना। उ० उनका भी परदाफाश होने ही वाला है।

परदा रखना–सबके सामने न होना। उ० बहू परदा रखती है।

परदे की ओट से शिकार करना–छिप कर किसी के विरुद्ध कार्य करना, छिप कर वार करना।

परदे-परदे–छिपे-छिपे। उ० परदे-परदे उसने अपने रुपये निकाल लिए।

परदे में छेद होना–१ परदे मे व्यभिचार होना। २ गुप्त रहस्य का कुछ-कुछ प्रकट होना, बात का बिल्कुल छिपी न रह पाना।

परदेश में छाना–विदेश या किसी अन्य स्थान पर रहना। बाहर रहना। उ० उसका पति परदेश मे छाया है और वह बेचारी यहाँ परीशान है।

पर न मारना–क़दम न मारना, पहुँचने की मजाल न होना। उ० वहाँ तो तुम्हारे जैसे पर नही मार सकते।

परनाले का पत्थर चौबारे में लगना–छोटे व्यक्ति को सम्मान का स्थान मिलना।

परले दर्जे का–बिल्कुल, बहुत बडा। उ० तुम तो परले दर्जे के शरारती हो।

पर लेना–पर कुतरना, पर काटना।

परले पार होना–खतम होना। समाप्ति पर आना। उ० किसी तरह मेरी समस्या तो परले पार हुई।

परले सिरे का–दे० 'परले दर्जे का'।

परलोकगामी होना–मर जाना। उ० क्या व्यर्थ के फेर मे पड़े हो, जब एक दिन परलोकगामी होना ही है तो इतना झमेला क्यो?

परलोक बिगड़ना–ऐसे कार्य करना, जिससे सद्‌गति न हो।

परलोक सिधारना–दे० 'परलोकगामी होना'।

परवरिश करना–भरण-पोषण या लालन-पालन करना। उ० मेरी परवरिश मेरी मौसी ने ही की है।

परवाह न करना–ध्यान न देना, तुच्छ समझना। उ० ऐसे आदमियो की परवाह मै नही करता।

परवान चढ़ना–१. सम्पूर्ण उम्र तक पहुँचना। २. विवाहित होना।

परवान बाल निकालना–१. झगड़ा-फसाद करना। २. चेत में आना।

परवाना होना–१ आशिक होना। न्यौछावर होना। उ० वह तो एक लडकी के पीछे परवाना हो गया है। २ किसी के पीछे जल मरने को तैयार होना। उ० भगतसिह राष्ट्र के पीछे परवाना हो गए।

परवाह करना–१. शव को धारा मे फेंकना। उ० अभी लोग परवाह करने जा रहे हैं। २. ख़याल करना। उ० उसकी परवाह करो, नही तो पछताओगे।

पराये हाथों होना–दूसरे के वश मे होना।

पराकाष्ठा को पहुँचना–चरम उत्कर्ष या अवनति को पहुँचना। उ० उसकी विद्वता पराकाष्ठा को पहुँच गई है।

पराक्रम चलना–शक्ति का काम करना, काम होना। उ० अवस्था के गिरने पर पराक्रम कहाँ चलता है।

परा बाँधना–कतार करना, बराबर-बराबर खड़ा करना।

पराया मुँह ताकना–दूसरे के आसरे या सहारे होना, अपने पैर पर न खड़ा होना। उ० जो रहे ताकते पराया मुँह, तो दु खों से न किसलिए जकडे।

पराया समझना–१ अंतर रखना। उ० मैं तो किसी को भी पराया नही समझता हूँ। २. अच्छा-बुरा जानना। ३. दूर का समझना, अपना नज़दीकी न समझना।

पराये घर की होना–लड़की की शादी होना। उ० राधा अब पराये घर की हो गई है।

पराये बिरते पर शिकरा पालना–अन्य के भरोसे काम करना। उ० जवानी में क्या पराये

बिरते पर शिकरा पालते हो, बुढ़ापा में तो यह करना ही है।

पराये माल पर दीदे लाल होना—अन्य के धन या बल पर ऐंठना। उ० पराये माल पर उनके दीदे लाल हैं ? शर्म आनी चाहिए।

परायी पीड़ा पाना—दूसरों के दुःख-दर्द को समझना।

परिंदों का भी पर न मारना—बिल्कुल शांति रहना। उ० वहाँ तो परिंदे भी पर नहीं मारते।

परिंदों के पर कतर देना—दुर्बल या अशक्त कर देना।

परेखा करना—नतीजा निकालना, समझना, ख्याल करना, विचार करना। उ० एक नगरी के राजा आठ, न्यारा-न्यारा सबका ठाठ, बूझ-बाझ कर किया परेखा, एक बही में सबका लेखा (गंजी)।

परेट जमाना—क़तार बाँधना।

परे बिठाना—१. दूर बिठाना। २ किसी को मात करना, हरा देना। उ० उसने तो ऐसा अच्छा खाना पकाया कि बावरची को परे बिठा दिया।

परे बैठना—दूर या अलग रहना। उ० क्यों परे बैठते हैं, निकट आइए।

परे बैठाना—अलग रखना। उ० अब अछूतों को परे बैठाने का जमाना लग गया।

परे रहना—दे० 'परे बैठना'।

परोसा थाल होना—सरल काम होना।

पर्दे बिठाना—बाहर फिरने वाली स्त्री या लडकी को पर्दे मे रखना।

पर्दे में गिरदह लगाना—परदे में रहने के बावजूद आचरण का भ्रष्ट होना।

पर्दे में सुराख़ करना—१ पर्दे में रह कर बुरा काम करना। २. टट्टी की ओट शिकार खेलना।

पर्वत को राई गिनना—१. मुश्किल काम को आसान समझना। २ बडे को छोटा समझना। उ० समझदार आदमी भला पर्वत को राई कैसे गिन सकता है ?

पलंग को लात मार कर खड़ा होना—१. लड़का पैदा होने के बाद कुछ दिन आराम से रहना। २. किसी बड़ी बीमारी से अच्छा होना। उ० बेचारा अभी तो पलंग को लात मार कर खड़ा हुआ था, पर फिर पड़ गया।

पलंग तोड़ना—बेकार चारपाई पर पड़े रहना। उ० क्या पलंग तोडते हो, क्यों नहीं कुछ करते ?

पलंग लगाना—चारपाई पर सेज लगाना। बिछौना बिछाना। उ० पलंग लगा दो, आते ही होंगे।

पलक की ओट—नजर से दूर।

पलक झपकते—तुरंत, क्षण मात्र मे। उ० पलक झपकते ही वह गायब हो गया।

पलक झपकना—१. दहशत या भय हो जाना। उ० भूत के भय से पेड़ को देख कर ही पलक झपक गई। २. नीद आना। उ० पलक झपक रही है, सोने दो। ३. ध्यान बँटना। उ० पलक झपकी और वह भगा, जरा उस पर कडी नजर रखना।

पलक न पसीजना—आँसू न आना। दया न आना। उ० तू चश्मे-गिर या उससे ऐ दूद आह मत रख, क्या दखल है कहे जो उसकी पलक पसीजे।

पलक पसीजना—करुणा से पलकों का गीला होना। उ० कैसे कठोर हृदय हो कि यह देख कर तुम्हारी पलक भी नहीं पसीजती ?

पलक-पाँवड़े बिछाना—आदर से स्वागत करना। उ० आइए ऐ मिलाप के पुतले। हम पलक-पाँवड़े बिछा देंगे।

पलक बिछाना—सप्रेम स्वागत करना। किसी की उत्सुकता से प्रतीक्षा करना। उ० आपके लिए हर जगह पलकें बिछाई जाती है।

पलक भँजना—थोड़ा भी लापरवाह होना। उ० पलक भँजी और सारा माल गायब।

पलक भाँजना—आँखों से इशारा करना। उ० पलक न भाँजो, मै सब कुछ समझ रहा हूँ।

पलकों से पाँव झाड़ना—बहुत आदर करना।

पलक मारना—१ सो जाना। उ० मुझे थोड़ी देर पलक मार लेने दो। २. नजरों से संकेत करना। उ० पलक मार कर ही काम निकाल लिया।

पलक लगना—झपकी आना, नींद आना। उ० आज चार दिन के बाद पलक लगी है, जरा सोने दो।

पलक लगाना—नेत्रों को बन्द करना। सो जाना। उ० यहाँ पलक न लगाओ, वहीं सोया जायगा।

पलक से पलक लगाना—दे० 'पलक लगाना'।

पल की पल में–झट, थोड़ी देर मे। उ० पल की पल में सब हो जायगा, बस आप देखते रहिए।

पलकें बिछी हुई होना–स्वागत के लिए हृदय और आँख से तैयार होना। उ० ऊबता हूँ उबारने वाले, आइए हैं बिछी हुई पलकें।

पलकें भारी होना–नींद आना।

पलकों का दगा देना–नींद का न आना।

पलकों से ज़मीन झाड़ना–१. दे० 'पलकों से नमक उठाना'। २ दे० 'पलकें बिछी हुई होना'।

पलकों से तिनका चुनना–दे० 'पलको मे नमक उठाना'।

पलकों से नमक उठाना–१ प्रेम-भाव से सेवा करना। उ० माता पुत्र के लिए पलकों से नमक उठाती है। २. कृपणता करना। उ० मारो ऐसे आदमी को, पलको से नमक उठाता है।

पलकों से नमक चुनना–हाथों का काम पलको से करना। कष्ट सहना। [हिन्दुस्तान के निवासी नमक की बहुत क़दर करते हैं। इस कारण जब किसी के हाथो से नमक गिर पडता है तो कहते है कि क़यामत के दिन यह नमक पलकों से उठाना पड़ेगा।]

पलट आना–लौटना। उ० जल्दी ही पलट आऊँगा।

पलट जाना–१. बदल जाना। इन्कार कर जाना। उ० तुम्हारे ज़ीभ के नीचे भी एक जीभ है, तुरंत पलट जाते हो। २. उलट जाना।

पलटा खाना–दे० 'पलट जाना'।

पलटा लेना–उलटना। उ० समय पलटा लेगा।

पलड़ा भारी होना–(तुलना मे) स्थिति अच्छी होना।

पलथी मारना–स्थिर होकर पैरों को मोड़ कर बैठना। उ० पलथी मार कर बैठो, बहुत देर होगी।

पल मारते–पलक झपते। तुरंत। उ० यह काम तो पल मारते हो जायगा।

पल मारना–पलक गिरने जितना समय होना। थोड़ी देर होना। उ० वह पल मारते ही लुप्त हो गया।

पलस्तर उड़ाना–दे० 'पलेथन निकालना'।

पलस्तर ढीला करना या कर देना–परीशान कर देना, आजिज़ कर देना। उ० एक ही मुक़दमे में सारा पलस्तर ढीला कर दूँगा।

पलस्तर बखेरना–दे० 'पलस्तर ढीला करना'।

पलस्तर बिगाड़ना या बिगाड़ देना–दे० 'पलस्तर ढीला करना'।

पलीता चाटना–तोप या बदूक़ का न चलना।

पलेथन निकलना–बहुत मार पड़ना। खूब पीटा जाना।

पलेथन निकालना–बहुत मार कर बुरी गत बनाना। उ० पुलिस ने चोर का पलेथन निकाल दिया।

पलेथन पकाना–बुरा हाल करना। उ० ऐसा पलेथन पकाऊँगा कि याद करोगे।

पलेथन लगाना–घाटा लगाना। उ० आज तो तुमने उसे अच्छा पलेथन लगाया, वह भी याद रखेगा।

पल्ला आना–१. निकट चले आना। २. वश या अधिकार मे आना। उ० तुम्हारे पल्ले आता तो उसकी और गति बनती।

पल्ला छुड़ाना–पिंड छुड़ाना। उ० किसी तरह पल्ला छुड़ा कर भाग चलो।

पल्ला छूटना–मुक्ति पाना, छुटकारा पाना। उ० किसी तरह पल्ला छूटा, नही तो नाकों दम था।

पल्ला झाड़ कर अलग होना–एकदम अलग हो जाना।

पल्ला झुकना–१. भारी होना। २. पक्ष मजबूत पड़ना। उ० आजकल मेरा पल्ला झुका हुआ है।

पल्ला पकड़ना–१. भरोसा करना। उ० मेरा पल्ला मत पकड़ो। २. रोक लेना, कपड़ा पकड़ कर रोक लेना। उ० तुम तो पल्ला पकड़ लेती हो।

पल्ला पसारना–१. आँचल पसार कर विनती करना। उ० बस भगवान् के आगे पल्ला पसारो। २. माँगना। उ० क्यों दर-दर पल्ला पसारे फिरते हो?

पल्ला पार होना–काम बन जाना।

पल्ला भारी होना–तर्क दृढ़ होना। उ० उनका पल्ला बहुत भारी है, वे जीत जाएँगे।

पल्ला लेना–रोक लेना। उ० पल्ला न लो, ज़रूरी काम है।

पल्ले आना–दे० 'पल्ला आना'।

पल्ले पड़ना–१. जिम्मे पड़ना। उ० सारा घाटा हमारे ही पल्ले पड़ा। २. हिस्से मे आना। उ० वहाँ की ज़मीन तो तुम्हारे पल्ले पडी होगी ? ३. याद करना या रखना। उ० हमारी बात तो तुम्हारे पल्ले पड़ती नहीं। ४. शादी होना। उ० वही लड़की तुम्हारे पल्ले पड़ी।

पल्ले पर आना–हठ पकड़ना, ज़िद् पर आना। उ० क्या लड़कों की तरह पल्ले पर आते हो ?

पल्ले पर रहना–१ किसी के पक्ष मे रहना। उ० वह तो सदा असहायो के पल्ले पर रहता है। २. किसी के भरोसे रहना। उ० वह भी हमारे ही पल्ले पर रहता है।

पल्ले पर होना–दे० 'पल्ले पर रहना'।

पल्ले पार होना–ज़बर्दस्ती पार हो जाना।

पल्ले बाँधना–१. पास लेना। २ सहारे करना।

पल्ले से बँधना–जिम्मे आना। उ० ऐसी जिम्मेदारी मेरे पल्ले से बँधी कि क्या कहूँ ?

पवन का भुस होना–कोई महत्त्व न होना। उ० उसकी बातें तो पवन का भुस होती है।

पवन बिठाना–जादू करना। किसी के दिल को जादू से बेक़रार करना। मोहित करना।

पशम उखाड़ना–कुछ कर सकना। उ० तुम मेरा पशम भी नही उखाड़ सकते हो।

पशम न उखाड़ना–कुछ न कर सकना।

पशम न समझना–तुच्छ समझना। कुछ न समझना। उ० तुम्हारे जैसे आदमियो को मैं पशम भी नही समझता।

पशम पर मारना–दे० 'परवाह न करना'।

पशम समझना–तुच्छ समझना। उ० वह तो तुझे पशम समझता है।

पशु होना–१. मूर्ख होना। २. निर्दय होना।

पशेमाँ होना–शर्मिंदा होना। लज्जित होना।

पश्मकुन्दा न होना–कुछ न हो सकना, ख़ाक न होना।

पश्म न उखड़ना–कुछ न हो सकना। उ० उनसे तो पश्म भी न उखड़ेगी।

पश्म पर मारना–परवाह न करना। ग़रज़ न रखना। ख़ातिर मे न लाना।

पसंगा भी न होना–कोई मूल्य न होना। किसी लायक़ न होना। उ० वह तो वैसे आदमियों में पसंगा भी नहीं है।

पशोपेश करना–हिचकना, आगा-पीछा करना।

पसंद आना–अच्छा लगना। उ० तुम्हारी चाल-चलन हमें पसंद आती है।

पसंद करना–उ० वह तो उसी को पसंद करता है।

पसलियाँ ढीली करना–भीतरी मार मारना। उ० ऊपर से तो मालूम नही होता है, लेकिन उसने पसलियाँ ढीली कर दी हैं।

पसलियाँ तोड़ना–दे० 'पसलियाँ ढीली करना'।

पसली फड़क उठना–दे० 'पसली फड़कना'।

पसली फड़कना–१ किसी बात के होने का लक्षण होना। २. तबीयत घबडाना। ३. होशियार हो जाना। ४. जोश आना।

पस व पेश सोचना–आगा-पीछा सोचना। ऊँच-नीच सोचना, बुरा-भला सोचना।

पसीना बहाना–अधिक परिश्रम करना।

पसीना हरा होना–पसीना सूखना या ख़ुश्क होना।

पसीने की कमाई–मेहनत से पैदा किया गया रुपया। उ० इन गरीबों की पसीने की कमाई न लो।

पसीने की जगह ख़ून बहाना–किसी बात की बहुत परवाह करना। किसी के लिए प्राण देने को तैयार रहना। उ० तुम निडर होकर चलो, मै तो तुम्हारे पसीने की जगह अपना ख़ून बहाने को तैयार हूँ।

पसीने-पसीने होना या हो जाना–एकदम शर्मिंदा होना। उ० वह तो तुम्हे देख कर पसीने पसीने हो गया।

पसीनों में डूबना–ख़ूब पसीना आना।

पसेरी में पाँच सेर की भूल करना–बहुत बड़ी भूल करना।

पस्त करना–हरा देना, गिरा देना। उ० उसे एकदम पस्त न करो।

पहरा देना–चौकसी करना। उ० वह रात को पहरा देता है।

पहरा पड़ना–रखवाली होना। उ० मालगोदाम पर पहरा पड़ता है।

पहरा बदलना–पहरेदारो की बदली होना। उ० थोड़ी देर में पहरा बदलेगा।

पहरा बैठाना–दे० 'पहरा पड़ना'।

पहरा बैठाना–रखवाली के लिए चौकीदार निश्चित करना।

पहरावनी देना–कपड़ों की भेंट देना।

पहरे में डालना–१ किसी आदमी को पहरे के लिए नियत करना। उ० आज मुझे पहरे में न डालिए। २. कैद में रखना।

पहरे में बैठाना–दे० 'पहरे में डालना'।

पहरे में रखना–१. जेल मे पहरेदारों द्वारा रक्षित रखना। २ दे० 'पहरे मे डालना'।

पहरे में होना–रखवाली मे होना। उ० वह तो पुलिस के पहरे मे है।

पहल करना–किसी काम को शुरू करना।

पहल निकालना–छाँट कर कोण को ठीक करना। उ० अभी इसमें पहल निकालना बाकी है।

पहली बिस्मिल्लाह ग़लत–काम की शुरुआत ही अशुद्ध। उ० पहली बिस्मिल्लाह गलत हो तो पूरा कैसे पडे ?

पहली सीढ़ी–किसी काम का पहला क़दम।

पहलू गरम करना– बगल मे बैठना या बैठाना।

पहलू तोही करना–किनारा करना, दूरी पर जाना।

पहलू दबाना–फौज या दुर्ग पर किसी ओर से हमला करना।

पहलू निकलना–कोई प्वाइन्ट ढूंढना। उ० कोई पहल निकालो तो जीत हो जाय।

पहलू पर होना–अपने वसूल पर होना।

पहलू बचाना–दे० 'आँख बचाना'। दे० 'जी चुराना'।

पहलू बदलना–१. करवट बदलना। २ रंग बदलना। उ० इतनी जल्दी-जल्दी पहलू न बदलो।

पहलू बसाना–१. पडोस मे जाकर रहना। उ० तुमने तो मेरा पहलू बसा दिया। २. गोद मे बैठाना।

पहलू में बैठना–गोद मे बैठना।

पहलू में बैठाना–गोद या बगल मे बैठाना।

पहलू में रहना–समीप रहना। उ० वह तो मेरे पहलू मे ही रहता है।

पहाड उठाना–बड़ा काम सर पर लेना। उ० जब शक्ति नही है तो क्यो पहाड़ उठाते हो ?

पहाड़ कटना–१. आफ़त दूर होना।

पहाड़ काटना–१. मुश्किल काम करना। २. नामुमकिन काम करना।

पहाड़ के पत्थर ढोना–दे० 'पहाड काटना'।

पहाड़ खड़ा होना–बड़ी रुकावट होना।

पहाड़ गुज़रना–दे० 'नागवार गुज़रना'।

पहाड़-जैसा दिन–लम्बा दिन जो किसी प्रकार न बीते।

पहाड़ टालना–आफ़त से जान बचाना। उ० पहले पहाड़ टाल लूं तो बात करूँ।

पहाड़ टूटना–दे० 'आसमान टूट पड़ना'।

पहाड़ टूट पड़ना–दे० 'पहाड़ टूटना'।

पहाड़ से टक्कर लेना-१. भारी दुश्मन का मुक़ाबिला करना। २ मूर्खता करना। उ० पहाड़ से टक्कर लेने में कौन-सी होशियारी है।

पहाड़ हो जाना–मुश्किल से कटना, भारी हो जाना। उ० दुःख की रातें पहाड़ हो जाती है।

पहुँचने वाला–जाने के योग्य। उ० जो पहुँचने वाला हो, उसे भेजो।

पहुँचा पकड़ना–ज़बर्दस्ती करना। उ० पहुँचा न पकडो, नहीं तो बुरा होगा।

पहुँचा हुआ–१. जानकार, सिद्ध, पारंगत। २ घुटा हुआ।

पहुनाई करना–मेहमाँनिवाज़ी करना।

पहेली बुझाना–घुमा-फिरा कर कहना। उ० पहेली न बुझाओ, सीधी बात कहो।

पाँच की सात लगाना–थोड़े को बहुत बढ़ा-चढा कर कहना।

पाँच-सात भूल जाना–चालाकी भूल जाना।

पाँचों उँगली घी में होना–सुख से दिन कटना। चक होना। आनन्द ही आनन्द होना। उ० आजकल तो आपकी पाँचो उँगली घी मे है।

पाँचों उँगली बराबर न होना–सब कुछ एक-सा न होना। सबका बराबर न होना।

पाँचों सवारों में नाम लिखाना–बड़े आदमियों की श्रेणी मे आना। उ० पाँचों सवारों में नाम लिखाने के लिए उसने भी रुपये दे दिए हैं।

पाँधों से बाहर होना–कही का न रहना।

पाँव अड़ाना–अड़ंगा डालना, बाधा डालना। उ० तुम तो व्यर्थ में पाँव अड़ाते फिरते हो।

पाँव उखड़ जाना–१. स्थिर न हो सकना। २. अपने पद या स्थान से डावाँडोल हो जाना या हट जाना। उ० एक बार पाँव उखड़ा तो फिर जमना मुश्किल है। ३. हार जाना।

पाँव उठ जाना–दे० 'पाँव उखड़ जाना'।

पाँव उठा कर चलना–जल्दी-जल्दी क़दम रखना। उ० ज़रा पाँव उठा कर चलो, नहीं तो देर हो जायगी।

पाँव उठाकर जाना–दे० 'पाँव उठा कर चलना'।

पाँव उठाना–दे० 'पाँव उठा कर चलना'।

पाँव उतर जाना–पाँव का किसी गाँठ पर सरक जाना।

पाँव ऊँच-नीच पड़ना–१. गलती होना। २. पर स्त्रीगमन या पर पुरुष-गमन सम्बन्धी गलती होना। उ० बेचारी का पाँव ऊँच-नीच पड़ गया तो समाज कलंकित करता है, पर इसके लिए समाज के अतिरिक्त कौन दोषी है ?

पाँव कट जाना–आना-जाना न होना। उ० बदमाशों का घर से पाँव कट जाय तो अच्छा है।

पाँव क़ब्र में लटकना–मरने के करीब होना। उ० पाँव क़ब्र में लटकाये हो और बेईमानी करते हो।

पाँव काँपना–१ किसी काम को सोच कर डरना, हिम्मत न पड़ना। उ० इस काम का तो नाम सुनते पाँव काँपता है। २ डरना। ३ कमज़ोरी होना। उ० उसका तो पाँव काँपता है, वह काम क्या करेगा ?

पाँव की जूती सिर को लगाना–१. बहुत इज़्ज़त करना। २. छोटो का बड़े के मुँह लगना।

पाँव की ठकुराई का सिर पर चढ़ना–दे० 'पाँव की जूती सिर को लगना'।

पाँव की मेंहदी घिस जाना–पैर गदा हो जाना, [बहुत सुकुमार बनने वाले के प्रति व्यंग्य]। उ० ज़रा चले न चलो, कोई पाँव की मेंहदी तो न घिस जायगी।

पाँव-ख़ाक होना–१. अपने को निहायत नाचीज़ समझना। २. किसी के अधीन होना। उ० मैं आपका पाँव-ख़ाक नहीं हूँ।

पाँव खींचना–१. बंद करना। उ० चहल-क़दमी से पाँव खींचो। २. करने से इन्कार करना। उ० वहाँ चलने से पाँव न खींचो।

पाँव गाड़ना–१. जम जाना। उ० यहाँ पाँव न गाड़ो, अपना रास्ता लो। २. अपनी बात पर अटल रहना।

पाँव-चप्पी करना–ख़ुशामद करना। चापलूसी करना। उ० मुझे पाँव-चप्पी करना नहीं आता।

पाँव चलना–बच्चे का सर्वप्रथम चलना।

पाँव चापना–सेवा करना, ख़ुशामद करना। उ० जो गला चाँप-चाँप देते है, पाँव हम चाँप हैं रहे उनका।

पाँव चूमना–दे० 'पाँव-चप्पी करना'।

पाँव छूटना–मासिक होना।

पाँव जोड़ना–दे० 'पग जोड़ना'।

पाँव झन्नाना–डर या अन्य कारणों से पाँव सुन्न हो जाना।

पाँव टिकना–कहीं जम कर रहना। उ० तुम्हारे तो पाँव कहीं टिकते नहीं।

पाँव टिकाना–किसी जगह ठहरना।

पाँव टूटना–१. बहुत थक जाना। उ० आज तो आते-जाते पाँव टूट गए। २. किसी बड़े सहायक का समाप्त हो जाना। उ० वह मरा क्या, मेरे पाँव टूट गए।

पाँव डगमगाना–१. मजबूती से पैर न जमना। उ० पाँव डगमगा रहा है, गिर जाओगे। २. जड़ का हिल जाना। उ० पाँव डगमगाया तो फिर जमना बहुत मुश्किल है।

पाँव डिगना–१. अटल न होना। उ० देखना बात से पाँव न डिगे, नहीं तो बदनामी होगी। २. चरित्र का भ्रष्ट होना।

पाँवड़े बिछाना–बहुत आदर-सत्कार करना।

पाँव-तले की चींटी–तुच्छ। उ० तुम तो उसके पाँव-तले की चींटी हो।

पाँव-तले की चींटी होना–बुरी तरह कुचला-मसला या बरबाद हो जाना। उ० जातियाँ बेतरह दबी कुचली, चींटियाँ पाँव के तले की हैं।

पाँव-तले की ज़मीन (धरती) सरक जाना–१. बहुत कष्ट, शोक या करुणा से ज़मीन में धँसने का भाव दिल में आना। उ० फेल होने का समाचार सुनते ही उसके पाँव-तले की धरती सरक गई। २. बहुत डर जाना।

पाँव-तले की मिट्टी निकल जाना–दे० 'पाँव-तले की ज़मीन सरक जाना'।

पाँव-तले मलना–पामाल करना। नष्ट-भ्रष्ट करना।

पाँव तोड़ कर बैठना–१. स्थायी रहना। उ० विश्व मे अशांति पाँव तोड कर बैठी है। २ पस्तहिम्मत होकर बैठना।

पाँव तोड़ना–बहुत दौडना-धूपना। उ० पाँव तोड कर हार गया, पर पता न चला।

पाँव थरथराना–हिम्मत हार जाना। उ० उसका तो अभी से पाँव थरथराने लगा, वह लड़ेगा क्या ?

पाँव धरती पर न रखना–१ दे० 'फूला न समाना'। २. ऐंठना, घमड करना।

पाँव धरना–१. आना। २. प्रणाम करना। ३. आरभ करना।

पाँव धोकर पीना–१ पूज्य बनाना। उ० गुरुजी का पाँव धोकर पी लो। २ बहुत खुशामद या आदर करना।

पाँव न धुलवाना–अपनी सेवा के योग्य भी न समझना। बिल्कुल नाचीज समझना।

पाँव निकलना–व्यभिचारी होना, आचरण-हीन होना। उ० पाँव निकला तो खानदान का नाम डूब जाएगा।

पाँव निकालना–१. भ्रष्टाचार करना। २ धूर्त होना। ३. सीमा का उल्लघन करना।

पाँव पकड़ना–१. पैर छूकर प्रार्थना करना, सहारे के लिए प्रार्थना। उ० पाँव हम तो रहे पकडते ही, पर कहाँ बाँह आपने पकडी ? २ खुशामद करना।

पाँव परखना–दे० 'पग धोना'।

पाँव पड़ना–१. पैर पर सर रखना। उ० वह बड़ी नम्रता से तुम्हारे पाँव पडता है। २ नम्रता तथा दीनता से विनय करना। उ० यदि पाँव पड़ने लगे तो क्षमा कर देना। ३ खुशामद करना।

पाँव पर गिरना–दे० 'पाँव पड़ना'।

पाँव पर पाँव रख कर बैठना–१. निश्चित होकर बेकार बैठना। उ० नौजवान आदमी को भला पाँव रख कर बैठना चाहिए, अरे कुछ करो भी। २. लापरवाह होना। उ० सारी ज़िम्मेदारी तुम्हारे सर है, पाँव पर पाँव रख कर न बैठो।

पाँव पर पाँव रखना–हूबहू नक़ल करना रवि बाबू के पाँव पर पाँव रखते है और को बनते है मौलिक कवि। यही तो अ साहित्यिक हैं !

पाँव पर सिर झुकाना–दे० 'पाँव पड़ना'।

पाँव पर सिर रखना–दे० 'पाँव पड़ना'।

पाँव पसारना–१. खर्च करना। उ० तेरे पसारिए जेती लाँबी सौर। २. निश्चित ह उ० अब क्या करना है, पाँव पसार कर स ३ मर जाना। उ० एक दिन सबको पसारना है। ४ जगह घेरना। उ० कह पाँव पसारना चाहते हो ? आखिर कु भी है।

पाँव-पाँव चलना–पैर से या पैदल जाना बहुत निकट है, पाँव-पाँव चला जाऊँगा

पाँव पीटना–१ अथक कोशिश करना। उसने बहुत पाँव पीटे, पर कुछ बस न च २ छटपटाना। उ० वह पीड़ा के मारे भर पाँव पीटते रहा।

पव पीट-पीट कर मरना–बडा कष्ट सह मरना। उ० कितने ही रोज़ पाँव पीट कर मर जाते है, पर कोई पूछता तक न यही तो हमारा समाज है !

पाँव पूजना–१. पूज्य मानना। २. अपनी ल की शादी करना। अपनी लडकी देना जब उनका पाँव पूजा है तो भला उनकी कैसे लूँ ?

पाँव फँसना–'पक मे पड़ना'।

पाँव फिसलना–१. गलती होना। उ० तुम्हा पाँव फिसलते ही रहते है। २ आचरण-स गलती होना। उ० उसके भी पाँव फिस गए।

पाँव फूंक-फूंक कर रखना–सोच-समझ कर बढ़ना। उ० तुम्हारी बातों मे वह आएगा। बड़ा पुराना है, और पाँव फूंक कर रखता है।

पाँव फूंक-फूंक रखना–१. बहुत धीरे-धीरे, देख कर आगे बढ़ना। २ बहुत डर कर बच कर आगे बढना। उ० फूंक से आप न जायेंगे, पाँव क्यों फूंक-फूंक है रखते।

पाँव फूलना–१. भयभीत होना। उ० शेर नाम ही सुन कर उसके पाँव फूलने लगे थक जाना। उ० आज चलते-चलते पाँव गए। ३. गर्भवती होना।

पाँव फेरने जाना–१. बच्चा होने के बाद मायके (नैहर) जाना। उ० बहू पाँव फेरने गई है। २ बरबाद करने जाना। उ० गया तो था पाँव फेरने, पर देख कर दया आ गई।

पाँव फैला कर सोना–निश्चित होकर सोना। उ० अब तो सब कामो से छुट्टी मिल गई, कुछ आराम से पाँव फैला कर सोना है। यहाँ पाँव फैला कर न सोओ। बड़ी खतरनाक जगह है।

पाँव फैलाना–और पाने के लिए हठ करना। उ० देखो जितनी शक्ति थी, दे दिया, अब पाँव फैलाना व्यर्थ है।

पाँव बढाना–१ जल्दी-जल्दी चलना। उ० पाँव बढाओ सात बजे पहुँचना है। २ आगे बढना। उ० डरो नही, पाँव बढाओ, मैं साथ मे हूँ। ३ अपनी शक्ति बढाना। उ० राजाओ को पाँव बढाते ही जाना चाहिए। ४ उन्नति करना।

पाँव बाहर निकालना–१ स्त्री या लडकी का व्यभिचारिणी होना। उ० वह तो पाँव बाहर निकालने लगी। २ अलग हो जाना। उ० मैंने उस काम से पाँव बाहर निकाल लिए। ३. अपना हिस्सा आदि वापस ले लेना। ४ आज्ञा न मानना। ५. इतराना और अपने को अपने सामर्थ्य से अधिक समझना। उ० पाँव बाहर निकालने मात्र से तुम्हे कोई नही बडा कह सकता।

पाँव विचलना या विचल जाना–१. धर्म तथा सत्य से हटना। उ० देखना कुछ भी हो, पर पाँव न विचले। २. फिसल जाना। उ० काई पर पाँव विचल जाएगा। ३. निश्चय से टलना। उ० थोडा-सा लाभ देख कर उसके पाँव विचल गए।

पाँव बीच में होना–१ उत्तरदायी होना। उ० तुम्हारा पाँव बीच मे है और तुम्हे मामले की खबर भी नही ? २ दुविधा में पड़ना। उ० आजकल तो पाँव ऐसा बीच मे है कि कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करूँ ?

पाँव बीच से निकाल लेना–सबध तोड लेना। उ० थोडी-सी बात पर उन्होने उस सस्था के बीच से पाँव निकाल लिए।

पाँव भर जाना-१ थकावट से पैर भारी मालूम होना। उ० अब तो भाई पाँव भर गए, जरा आराम कर लेने दो। २ तेज या भर कदम चलना। उ० पाँव भर जाओगे तो समय पर पहुँच जाओगे।

पाँव भारी होना–१. बुरी अवाई होना। उ० पता नही इस साल किसका पाँव भारी है कि सब काम बिगड़ता ही रहता है। २ गर्भवती होना। उ० बहू का पाँव भारी हो गया है।

पाँव भी न धलवाना–बहुत निरादर करना। तुच्छ समझना। उ० मै तो आपसे पाँव भी नही धलवा सकता।

पाँव-मुरीद–आज्ञा पालने वाला। उ० तुम्ही तो उनके पाँव-मुरीद हो।

पाँव में कँपकँपी होना–दे० 'पाँव काँपना'।

पाँव में घनचक्कर होना–दे० 'पाँव मे सनीचर होना'।

पाँव मे पर लगना–बहुत तेज चलना। उ० भाई तुम्हारे पाँव मे तो पर लगा है, मै नही अँट सकता।

पाँव में बेड़ी पड़ना–१ जोर से न चला जाना। उ० चलो न, क्या पाँव मे बेड़ी पडी है ? २. बधन या चक्कर मे पड़ना। उ० हमारे पाँवो मे बेड़ी पडी है। तुम्हे क्या पता ? ३. विवाह होना। उ० पाँव मे बेडी पडत है ढोल बजाय बजाय। ४ कैद होना।

पाँव में मेंहदी लगना–चलने मे आलस्य करना। उ० पाँव मे मेहदी लगी है, क्योंकि नही चल रहे हो।

पाँव में सनीचर होना–बहुत चलने या इधर-उधर घूमने वाला होना। हर वक्त चलते रहना। उ० तुम्हारे पाँव में तो सनीचर है, कभी घर पर तो तुम्हे देखता ही नही।

पाँव में सिर देना–दे० 'पाँव पर सिर रखना'।

पाँव रखने का ठिकाना न होना–रहने की बिल्कुल शरण न होना। उ० बेचारे शरणार्थियो को पाँव रखने तक का ठिकाना नही है।

पाँव रगड़ना–दे० 'पाँव पीटना'।

पाँव रह जाना–बिना शक्ति के होना। दुर्बल हो जाना। उ० बीमारी से केवल पाँव रह गया है।

पाँव रोपना–१ पाँव जमाना, अड़ना। २ रुकना। उ० वहाँ पाँव रोपा तो मै भी चलूँ।

पाँव लगना–१ पैर छूकर नमस्कार या प्रणाम करना। उ० छोटो को बडो का पाँव लगना चाहिये। २. बहुत प्रार्थना करना। उ० तुम्हारे पाँव लगता हूँ, छोड दो।

पाँव लगा होना–बार-बार आने-जाने वाला होना । उ० वह तो पाँव लगा हो गया है, जब देखो पहुँचा रहता है ।

पाँव लड़खड़ाना–दे० 'पाँव मे कँपकपी होना' ।

पाँव लेना–दे० 'पाँव लगना' ।

पाँव समेटना–१ दे० 'पाँव सिकोड़ना' । २ सबध-विच्छेद करना । उ० बहुत से लोगो ने अब काग्रेस से पाँव समेट लिये । ३. मर जाना । बेचारे ने आज सदा के लिए पाँव समेट लिये हैं । ४ अधिकारो मे कमी करना ।

पाँव साबित रखना–हिम्मत न हारना, न हटना ।

पाँव सिकोड़ना–पैर बटोरना । उ० पाँव सिकोड लो ताकि मै बैठ सकूँ ।

पाँव से पाँव बाँध कर रखना–१ सावधानी से पास रखना । उ० अब उसे पाँव से पाँव बाँध कर रखा करो, नही तो बिगड जाएगा । २ अलग न होने देना ।

पाँव से पाँव बाँधना–हिरासत मे रखना, निगहबानी करना ।

पाँव से पाँव भिडाना–करीब या नजदीक होना ।

पाँव सो जाना–पैर सुन्न हो जाना, पैर मे झुनझुनी होना । उ० बैठे-बैठे पाँव सो गए ।

पाँव-हाथ निकालना–शक्ति के बाहर पैठ कर चलना । उ० न जाने किसके बल पर वह पाव-हाथ निकालने लगा है ।

पाँसा उलटना–१ परिस्थिति का एक-ब-एक परिवर्तित हो जाना । २ काम हो रहा हो तो अंत मे अप्रत्याशित फल सामने आना या फल का बदल जाना । उ० ऐसा पाँसा उलट गया कि अत मे उनकी जीत हो गई ।

पाई करना–टाइप का केस खराब करना । उ० केस पाई न करो । [यह प्रेस मे बोला जाता है ।]

पाएँचा भारी करना–किसी जगह जम कर बैठ जाना । बाहर न निकलना ।

पाक करना–१ शुद्ध करना । २. समाप्त करना । उ० झगडा पाक करो और चलो ।

पाक होना–मिटाना, समाप्त होना । उ० किसी तरह झगडा पाक हुआ ।

पाकठ हो जाना–पक्का होना, अनुभवी होना । उ० इस मुहल्ले मे जो भी आता है, कुछ ही दिनों मे पाकठ हो जाता है ।

पाकेट गरम करना–१. घूस लेना । उ० आजकल तो पाकेट गरम करने का ही जमाना है । २. रुपया मिलना या लेना ।

पाखंड फैलाना–१. आडबर करना । २. धोखा फैलाना । ३ जाल बिछाना ।

पाखाना फिरना–दस्त करना । उ० वह पाखाना फिरने गया है ।

पाग जोड़ना–झूले मे आमने सामने बैठ कर एक खास तरह से झूले की रस्सी मे पाँव उलझाना ।

पागल होना–किसी धुन मे मस्त होना ।

पाजामे से बाहर होना–१. क्रोधित होना । उ० क्यो पाजामे से बाहर हो रहे है, जरा धीरज तो धरिए । २. जोश मे आना ।

पाट देना–भर देना, ढेर लगा देना । उ० उसने तो लूट के माल से अपना घर पाट दिया ।

पाटा फेरना–बरबाद कर देना । उ० तुमने सारे काम-धाम पर पाटा फेर दिया ।

पाठ पढ़ाना–बहकाना । धोखा देना । उ० मुझे क्या पाठ पढा रहे हो, मै तो स्वय पढाता हूँ ।

पाणिग्रहण करना या होना–विवाह करना या होना ।

पाताल की खबर लाना–बहुत दूर से समाचार ले आना । उ० मै तो पाताल की खबर ला सकता हूँ, यहाँ की तो बात ही क्या ।

पातो आ लगना–अवनति होना । बुरी हालत को पहुँचना । उ० यही आदत रही तो वह थोडे दिनो मे पातो आ लगेगा ।

पाद-पीठ बनना–रौंदा जाना ।

पाद बंद होना–डर जाना, भयभीत होना । उ० इतने मे ही पाद बद हो गए ।

पान की तरह फेरा जाना–बहुत सेवा होना ।

पान चीरना–बेकार के काम मे वक्त बरबाद करना । उ० दिन भर पान चीरते रहे, यदि काम करना होता तो वहाँ न जाते ।

पानदान का खर्च–पान या शौक का ऊपरी व्यय । उ० दस रुपये तो उसके पानदान का खर्च है ।

पान देना–प्रतिज्ञा कराना । हाँ करवाना । उ० उसने पान दे दिया, अब तो करना ही पड़ेगा ।

पान-पत्ते तक सीमित होना–सामान्य मित्रता का नाता होना ।

पान-पनही खिलाना–आदर और निरादर करना । उ० मुँह देख कर पान-पनही खिलाना चाहिए ।

पान-फूल पर रहना–बहुत सुकुमार होना ।

पान-फूल-सा–दे० 'फूल-सा' ।

पान बनाना–तरह-तरह से मसाले डाल कर पान का बीड़ा लगाना ।

पान लगाना–दे० 'पान बनाना' ।

पान लेना–साहस करके मैदान में उतरना । किसी काम को पूरा करने के लिए बीड़ा उठाना । उ० मुझसे लड़ने के लिए कौन पान लेता है ?

पानी आना–१ वर्षा होने को होना । २. कुएँ मे पानी आना । ३. आँख में चोट लगने मे पानी निकलना ।

पानी उठाना–पानी सुखाना ।

पानी उतर जाना–१. लाज न रहना । उ० जिस स्त्री का पानी उतर गया, वह भी क्या स्त्री है ? २ पालिश छूटना । उ० बर्तनो का पानी उतर गया । ३. हाथी आदि को नये पानी से पेट आदि फूलने की बीमारी होना । उ० इस हाथी को पानी उतर आया है, ठीक से दवा करो ।

पानी उतरना–दे० 'पानी उतर जाना' ।

पानी उतारना–अपमानित करना । उ० तुमने मेरा पानी उतार लिया ।

पानी करना–१ शात कर देना । उ० उसके स्वभाव ने सारा क्रोध पानी कर दिया । २. करुणा से भर देना । उ० वह जब गाता है तो हृदय को पानी कर देता है । ३. आसान कर देना । ४. बर्बाद करना ।

पानी की तरह साफ़ होना–एकदम स्पष्ट होना ।

पानी की चपरी होना–तत्त्वहीन होना ।

पानी का बतासा–दे० 'पानी का बुलबुला' ।

पानी का बुलबुला–अस्थायी, क्षणिक । उ० जीवन पानी का बुलबुला है, जो करना हो जल्दी कर लो ।

पानी का हगा मुंह पर आना–अपने किये का फल पाना ।

पानी की तरह बहाना–अधाधुध खर्च करना । उ० वह तो रुपया पानी की तरह बहाता है ।

पानी की धौंकनी लगना–बहुत प्यास लगना । उ० हैजे में पानी की धौंकनी लगती है ।

पानी की लहरें गिनना–व्यर्थ तथा असंभव काम करना । उ० इस पानी की लहरों को गिनने में कौन बुद्धिमानी है ?

पानी के घड़े पड़ना–दे० 'सौ-सौ घड़े पानी पड़ना' ।

पानी के मोल–बहुत सस्ता । उ० अलाउद्दीन के समय मे अन्न पानी के मोल था ।

पानी के रेले में बहाना–नष्ट कर देना । उ० क्यो अपना जीवन पानी के रेले में बहाते हो ?

पानी को भी न पूछना–ज़रा भी आदर-सत्कार न करना ।

पानी खुलना–वर्षा बंद होना । उ० पानी खुले तो चलूं ।

पानी खोना–इज्ज़त खोना ।

पानी चढ़ना–सौन्दर्य बढ़ना ।

पानी चढ़ाना–१. ऊँचाई पर पानी ले जाना । २ सिचाई करना । ३ खूब पानी पीना । उ० पानी चढा लो, फिर रास्ते मे न मिलेगा । ४. बहकाना ।

पानी छाँटना–चेचक के ढलने पर पानी के छीटे देना ।

पानी टूटना–कुएँ मे पानी की कमी होना । उ० आज तो पूर चलने से कुएँ का पानी टूट गया ।

पानी ढलना–१. सुन्दरता या चमक-दमक न रहना । उ० जब पानी ढल गया तो कौन पूछे ? २ तनिक भी लाज न रहना । उ० जिस लडकी का पानी ढल गया, उससे कौन शादी करेगा ?

पानी तोड़ना–१. मल्लाहों का नाव से पानी काटना । २ पानी की कमी कर देना । उ० बाढ के पानी को रास्ता निकाल कर कम कर देना ।

पानी दिखाना–जानवरों के सामने पीने के लिए पानी रखना ।

पानी देना–१. पितरो को तर्पण करना । उ० पितृ-पक्ष मे पानी दिया जाता है । २. पालिश करना । ३. धार तेज़ करना ।

पानी देने वाला–वंशज ।

पानी न पचना–१ बहुत बेचैनी होना । २. कोई भी बात अपने तक न रख पाना ।

पानी न माँगना–तुरन्त मर जाना ।

पानी पड़ना–दे० 'पानी के घड़े पड़ना' ।

पानी पर नींव डालना–अस्थायी या अदृढ़ काम करना । उ० मुझे पानी पर नींव डालना नहीं आता, जो भी काम करता हूँ, पोख्ता करता हूँ ।

पानी पर नींव होना–अदृढ़ या अस्थायी होना ।

पानी पाँड़े होना–पानी पिलाने वाला होना । [इसका प्रयोग स्टेशनों पर प्राय होता है ।] उ० पानी पाँडे यहीं हैं, पानी माँगो ।

पानी-पानी करना–बहुत शर्मिन्दा कर देना । उ० तुमने तो पानी-पानी कर दिया ।

पानी-पानी होना–लज्जित होना । उ० वह तो भरी सभा मे पानी-पानी हो गया ।

पानी पिलाना–नीचा दिखाना । उ० तुम तो बात ही बात मे पानी पिला देते हो ।

पानी पी कर जात पूछना–कोई काम करके पछताना, बेवक्त अफ़सोस करना । उ० पानी पीकर जात क्यों पूछते हो ? जो होना था, हो चुका ।

पानी पीटना–१ बहुत परिश्रम का काम करना । उ० क्या पानी पीट रहे थे कि थक गए हो ? २ बेकार का काम करना । उ० क्या पानी पीट रहे हो ?

पानी पी-पी कर कोसना–रह-रह कर कोसना, प्रतिक्षण गाली देते रहना । खूब कोसना । उ० उसी दिन से वह तुम्हें पानी पी-पी कर कोस रहा है ।

पानी पी-पी कर दुआ देना–हरदम दुआ देना दिल से दुआ देना । उ० हमसे मस्तों की कहाँ होती 'मुखय्यर' गुजरों, पानी पी-पी के दुआ देते हैं मयखाने को ।

पानी फिर जाना–दे० 'पानी फिरना' ।

पानी फिरना–खराब हो जाना, बरबाद हो जाना । उ० उसकी इज्जत पर पानी फिर गया ।

पानी फेरना–बरबाद कर देना । उ० उसने बने-बनाए काम पर पानी फेर दिया ।

पानी बचाना–प्रतिष्ठा रखना, लाज बचाना । उ० आपने मेरा पानी बचा लिया, नहीं तो मैं कहीं का भी नहीं रहता ।

पानी बदलना–स्वास्थ्य-सुधार के लिए जगह परिवर्तित करना ।

पानी बुझाना–कोई गर्म चीज पानी में डाल कर बुझाना ।

पानी भरना–तुलना मे हीन होना ।

पानी मथना–बेकार प्रयत्न करना ।

पानी मरना–१ पानी का सूखना । उ० अभी उस मैदान मे बरसात का पानी मरा नहीं है । २ निर्लज्ज होना । जरा भी लाज न रह जाना । ३. इज्जत चली जाना ।

पानी मे आग लगना–१ अनहोनी का होनी होना । असभव का सभव होना । २. अकारण झगड़ा होना । उ० आज तो बात ही बात मे आग लग गई । ३ शात व्यक्ति का गुस्सा करना ।

पानी मे आग लगाना–१ असंभव को सभव करना । उ० गाधी जी ने अपने व्यक्तित्व से पानी मे आग लगा दी । २ अकारण झगडा करना ।

पानी में का नमक होना–पूरी तरह मिल जाना ।

पानी मे गिर जाना–नष्ट हो जाना ।

पानी मे फेकना–व्यर्थ मे गवाँ देना । उ० उसने सारा माल पानी मे फेक दिया । तुमने यह १०० रु० पानी मे फेक दिए ।

पानी में बस कर मगर से बैर करना–जहाँ रहना हो वहाँ के बलवान व्यक्ति से बैर करना ।

पानी मे बहाना–दे० 'पानी मे फेकना' ।

पानी रखना–प्रतिष्ठा बचाना । उ० आज तो भगवान ने पानी रख लिया ।

पानी लगना–१ कहीं की जलवायु का बुरा प्रभाव पड़ना । उ० कलकत्ते का पानी लग जाने से वह काला पड गया है । २. सग-साथ का प्रभाव पड़ना । उ० कितना भी बचो, पानी लग ही जाता है ।

पानी लेना–१ इज्जत बिगाड़ना । उ० क्यों बेचारे का पानी ले रहे हो ? २ आबदस्त लेना ।

पानी सिर से ऊँचा होना–१. झगड़ा काबू से बाहर हो जाना । उ० जब पानी सिर से ऊँचा हो गया तो फिर प्रयत्न करना व्यर्थ है । २ किसी परिस्थिति का अपने वश से बाहर होना ।

पानी से पतला–१ बहुत बेइज्जत । उ० वह तो पानी से पतला होकर रहता है । २ आसान । उ० मुश्किल काम भी हिम्मत करने से पानी से पतला हो जाता है ।

पानी से पहले पुल बाँधना—व्यर्थ मेहनत करना। आवश्यकता से पहले परिश्रम करना।

पानी होकर बह जाना—बरबाद हो जाना, नष्ट-भ्रष्ट हो जाना। उ० उसका यह पाप का रुपया पानी होकर बह जायगा।

पानी होना—१. शांत होना। उ० समझा देने मे वह पानी हो गया। २. गल जाना। उ० सारा बर्फ पानी हो गया।

पाप उदय होना—करनी का फल मिलना। उ० आपका पाप भी अवश्य उदय होगा।

पाप कटना—कष्ट मिटना। उ० किसी तरह पाप कटा।

पाप कमाना—बहुत पाप का काम करना। उ० क्यो पाप कमाते हो, कुछ पुण्य भी करो।

पाप की गठरी सिर पर रखना—बहुत पापी होना। उ० जो पाप की गठरी सिर पर रखता है, वही दुर्दशा भी भोगता है।

पाप गलना—पाप दूर होना।

पाप चढ़ना—१. किसी से पाप होना। उ० तुम्हारे पर पाप चढ़ रहा है। २. पाप का जमा होना। उ० अगर पाप चढ़ेगा तो एक दिन फूटेगा भी।

पापड़ पीटना—दे० 'पापड़ बेलना'।

पापड़ बेलना—१. बहुत दुःख झेलना, ठोकर खाना। उ० कहीं भी जाकर पापड़ बेल लूँगा, पर यह काम मैं नहीं करूँगा। २. कठिन काम करना। ३. बहुत परिश्रम करना।

पाप बटोरना—दे० 'पाप कमाना'।

पाप बिसाना—पाप करने का फल सर पर आना। उ० उस पर पाप बिसा रहा है, जरा उसकी दशा तो देखो।

पाप मोल लेना—समझ-बूझ कर बुरा काम करना। उ० सब लोग पुण्य करते हैं, तुम पाप ही मोल लेते हो।

पापोश पर मारना—ठुकराना।

पापोश के बराबर न समझना—तुच्छ या नीच समझना। कुछ भी न समझना। उ० मैं तो आपको पापोश के बराबर भी नहीं समझता।

पापोश न मारना—किसी को इतना तुच्छ समझना कि ठुकराना भी नहीं।

पाबंद करना—१. रोकना, बाँध देना। २. वक्त ठीक कर देना। उ० आने के लिए उसे पाबन्द कर दो।

पाबंद होना—१. नौकर या सेवक होना। उ० मैं आपका पाबन्द नहीं हूँ। २. जिम्मेदार होना। उ० इसके लिए कौन पाबन्द होगा।

पाबोस होना—१. पाँव छूना, चरण छूना। २. झुकना, हार मानना। उ० मैं पाबोस नहीं हो सकता।

पामाल करना—बरबाद या नाश करना। उ० खुदा के लिए पामाल न करो।

पाम्ही पड़ना—रेख आना। मस भीजना। उ० अभी तो पाम्ही पड़ रही है, उसे २५ वर्ष का कौन कहेगा?

पायजामे से बाहर होना—दे० 'पाजामे से बाहर होना'।

पाया मजबूत होना—स्थिति दृढ़ होना।

पाये का आदमी—१. निष्ठावान् व्यक्ति। २. प्रतिष्ठित व्यक्ति।

पार उतर जाना—१. सफल होना। उ० परीक्षा में पार उतर जाऊँ तो अपने को धन्य समझूँ। २. काम समाप्त होना। ३. मर जाना। ४. मुक्त होना। उ० किसी तरह भवसागर से पार उतर जाऊँ, बस यही इच्छा है।

पार उतरना—दे० 'पार उतर जाना'।

पार उतारना—१. ठिकाने लगाना। उ० तुमने उसे किसी तरह पार उतार दिया। २. मुक्ति देना, उद्धार करना। उ० भगवान ही पापी को पार उतारेंगे।

पार पड़ना—सहन होना, बर्दाश्त होना।

पार-पाटी करना—दे० 'बाँस-पाटी करना'।

पार पाना—१. अंत पाना। उ० उसका पार पाना कठिन है। २. विजय पाना। उ० जब पार पा जाओ तो मानूँ। वह किसी के सामने झुकने वाला आदमी नहीं है।

पार लगना—दे० 'पार उतरना'।

पार लगाना—दे० 'पार उतारना'।

पार लँघाना—दे० 'पार उतारना'। उ० इस नाव को जिस तरह बने, पार लँघाओ।

पार होना—१. स्वार्थ पूरा होना। काम निकलना। उ० पार होने पर कौन पूछता है? २. काम पूरा हो जाना। उ० क्या मकान पार हो गया? ३. सम्बन्ध तोड़ना। उ० उनसे तो मैं पार हो गया।

पारा उतरना—क्रोध शांत होना। उ० ऐसा तमाचा कसूँगा कि पारा उतर जायगा।

पारा उतारना–शान्त करना। गुस्सा मिटाना। उ० समझाने से न मानोगे तो तमाचे से तुम्हारा पारा उतारना पड़ेगा।

पारा चढ़ना–गुस्सा आना। उ० आपका तो पारा चढ़ा ही रहता है।

पारा तेज होना–दे० 'पारा चढना'।

पारा-पारा करना–टुकडे-टुकड़े करना। धज्जी-धज्जी उड़ाना। उ० इसे पारा-पारा न करो, कभी काम ही आएगा।

पारा पीना–बच्चा न होने के लिए पारा खाना। उ० उसने पारा पी लिया है, अब बच्चा न होगा।

पारा पिलाना–किसी चीज़ को बहुत भारी करना। उ० इस लाठी मे पारा पिलाया है क्या ?

पारा भरा होना–बहुत वज़नी होना। [पारा बहुत भारी होता है]। उ० इस लाठी मे पारा भरा है।

पारावार उमड़ना–अधिकता होना।

पालसन का डिब्बा–ख़ुशामद।

पाल डालना–गदरे फल को फूस या भूसे आदि में रख कर पकाना।

पालसन लगाना–ख़ुशामद करना।

पाला गिरना–दे० 'पाला पडना'।

पाला पड़ना–१ ठंडक पड़ना। उ० आजकल खूब पाला पड़ रहा है। २ वास्ता होना। उ० कभी हमसे पाला पड़े तो इसकी सारी ऐंठ निकाल दूं। ३. पस्त होना। उ० सारी उमंगों पर पाला पड़ गया है।

पाला मार जाना–सर्दी के कारण नष्ट हो जाना। उ० खेती को तो पाला मार गया।

पाले पड़ना–वास्ता मे आना। उ० परेहु कठिन रावण के पाले।

पाशनाक़ूबी के लिए जाना–पीछे लगना। उ० पुलिस उनके पाशनाकूबी के लिए गई है।

पाश-पाश करना–टुकडे-टुकड़ करना, तार-तार करना।

पासंग बराबर भी न होना–दे० 'पासग भी न होना'।

पासंग भी न होना–कुछ तुलना न होना। कुछ भी हैसियत न होना। उ० अमेरिकनों के आगे जापान पासंग भी नही था तो भला हारता क्यो नही ?

पासंग होना–तुच्छ होना। कोई मूल्य न होना। उ० उसकी बातों का क्या लिए हो, वह तो पासंग है। वह तो तुम्हारे आगे पासग है।

पास कर देना–१. पढा देना। उ० उसे भी पास कर दो। २. एक कक्षा आगे कर देना। ३. कार्य ठीक कर देना या मजूर कर लेना। उ० उसने तो पास कर दिया, अब तुम्हारी देर है।

पास आना–क़रीब आना।

पास करना–१ तरफ़दारी या लिहाज़ करना। २ कामयाब होना, उत्तीर्ण करना।

पास कर लेना–इम्तहान में सफल होना। उ० उसने पास कर लिया।

पास जाना या आना–संभोग के लिए किसी औरत के पास जाना या आना। उ० वह तो उसके पास जाता है।

पास न फटकना–नजदीक न जाना। उ० उसी दिन से वह तुम्हारे पास नही फटकता है।

पास-पास–१. परस्पर। उ० दोनों पास-पास बैठ कर बातें करते थे। २. क़रीब-क़रीब। उ० पास-पास न बैठो, नही तो नक़ल करोगे।

पास फटकना–१. नजदीक जाना। उ० उसके पास न फटकना। २ पास आना। उ० मेरे तो पास न फटकना।

पास-पड़ोस–आसपास। उ० पास-पड़ोस मे कोई कुआँ हो तो पानी लाओ।

पास-पास होना–टुकड़े-टुकड़े होना।

पास होना–उत्तीर्ण होना, परीक्षा मे सफल होना।

पासा उलटना–१. जुए आदि में दाँव हार जाना। उ० उसका तो पासा ही उलट गया। बेचारा हज़ारो रुपये हार गया। २. भाग्य बदलना। उ० इस साल तो मेरा पासा ही उलट गया। सारा काम बिगड़ गया। ३. कुअवसर आना। ४. सुअवसर आना।

पासा पड़ना–१. जुआ मे अनुकूल दाँव पड़ना। उ० इस बार मेरा पासा पड़ा है। २. सुअवसर आना। उ० पासा पड़ने पर सब ठीक हो जाएगा। ३. भाग्य अनुकूल होना। उ० इस रोज़गार में मेरा ही पासा पड़ा है।

पासा पलटना–दे० 'पासा उलटना'।

पासा फेंकना–तक़दीर की आज़माइश करना। उ० पासा फेंको, शायद लग जाय।

पासा सीधा पड़ना–भाग्य अनुकूल होना।

पिंजड़े का पक्षी होना–बंधन में होना।

पिंड अछूता होना–स्त्री का ऐसा कोरा होना, जिसके साथ किसी ने समागम न किया हो। उ० पिंड अछूता है तो उसी विधवा से क्यों नहीं विवाह कर लेते ?

पिंड कोरा होना–दे० 'पिंड अछूता होना'।

पिंड छुड़ाना–अनचाहे व्यक्ति या स्थिति से पीछा छुड़ाना।

पिंड छोड़ना–१ पीछा छोड़ना। उ० कुछ लेकर भी पिंड छोड़ देता तो अच्छा होता। २. जान छोड़ना। उ० मेरा पिंड छोड़ दो, मुझे जाना है। मेरा पिंड छोड़ो, मैंने तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ा है।

पिंड पड़ना–पीछे लगना। उ० मैंने साफ कह दिया कि मेरे पिंड न पड़ो।

पिंडा धोना–नहाना, स्नान करना, शरीर पर पानी डालना।

पिंडा फीका होना–हल्का बुखार होना। उ० कुछ अजब हाल मेरे जी का है, देखो पिंडा अभी से फीका है।

पिघल कर पानी हो जाना–दया से भर उठना।

पिचकारी छूटना–तरल पदार्थ का पतली धार से निकलना। उ० लाठी लगते ही सर से खून की पिचकारी छूटने लगी। उसे दस्त की पिचकारी छूट रही है।

पिचकारी छोड़ना–पानी या रंगीन पानी आदि को पिचकारी से फेंकना। उ० फागुन में रंग की पिचकारी छोड़ी जाती है।

पिचकारी देना–दस्त के लिए एनीमा देना। उ० उसे अस्पताल में पिचकारी दी गई।

पिचकारी निकलना–दे० 'पिचकारी छूटना'।

पिछड़ जाना–१. पीछे रह जाना। २. हार जाना।

पिछला दिन–गत दिवस। उ० पिछले दिन वे आए थे।

पिछला पहर–रात में १२ से ४ का समय। उ० आज तो मुझे पिछले पहर भी नींद न लगी।

पिछली रात–१. अर्द्ध-रात्रि के बाद। उ० पिछली रात को कोई रो रहा था। २. गत रात। उ० पिछली रात तो मैंने कुछ नहीं खाया।

पिछले पाँव फिरना–आकर तुरत लौट जाना। उ० उसने ऐसी डाँट चढ़ायी कि बेचारा पिछले पाँव फिर गया।

पिछाड़ी मारना–लात मारना। उ० घोड़ा पिछाड़ी मारता है।

पिटा हुआ–बार-बार किया हुआ या कहा हुआ, अनवीन।

पिटारी का खर्च–पानदान का खर्च। जेब खर्च। उ० अपनी विधवा विमाता को पिटारी का खर्च तो दे दिया करो !

पिट्टना पड़ना–विलाप करना। रोना-धोना होना। उ० वहाँ कैसा पिट्टना पड़ा है, कोई मर गया है क्या ?

पिट्टस पड़ना–दे० 'पिटना'।

पित्त उबलना–दे० 'नथना फूलना'।

पित्त खौलना–दे० 'नथना फूलना'।

पित्त गरम होना–जल्दी गुस्सा आना। उ० तुम्हारा पित्त तो बड़ी जल्दी गरम हो जाता है।

पित्त डालना–१. पीले रंग की कै करना। उ० क्या खाए थे कि पित्त डाल दी। २. पित्त की कै करना।

पित्तर-पानी पड़ना–१ बेहोश होना। उ० मारे गरमी के तो उसका पित्तर-पानी पड़ गया है। २ दिल को किसी के नुकसान से शांति मिलना।

पित्ता उबलना या खौलना–दे० 'पित्त उबलना'।

पित्ता निकालना–१ काम करवा कर जी मारना। उ० वह तो उतनी ही देर में पित्ता निकाल लेता है। २ डाटना-डपटना। उ० हमेशा पित्ता निकालना ठीक नहीं है।

पित्ता-पानी करना या होना–१ बहुत काम करना। उ० आज तो पित्ता-पानी कर दिया। २. हिम्मत पस्त कर देना।

पित्ता-पानी पड़ना–दूसरे के नुकसान से संतोष होना। उ० उसका खलिहान जल गया, तुम्हारे तो पित्ता-पानी पड़ गया होगा।

पित्ता मरना–तेजी और गुस्से का जाता रहना। उ० अब उनका पित्ता मर गया।

पित्तामार काम–सदा बैठे रहने वाला काम। उ० मुनीमी का काम बड़ा पित्तामार है।

पित्ता मारना–१ मुश्किल काम से घबड़ाना। उ० पित्ता मारने के बाद मेरे आफ़िस में टिक सकते हैं। २. क्रोध को भीतर ही रखना। ३. दिल मारना।

पित्ता ले डालना–परीशान करना। उ० तुमने तो मेरा पित्ता ले डाला।

पित्ती उछलना–पित्ती या जलपित्ती का मर्ज होना।

पिनक में आना–१. अफीमची का नशे मे आना, ऊँघना। उ० यह तो रह-रह कर पिनक मे आता है। २ क्रोध मे आना।

पिनाक होना–कठिन काम होना। उ० पिनाक तो नही है कि न कर सकूँगा, आखिर काम ही तो है।

पिये हुए होना–शराब पीकर मस्त होना। उ० यह तो पिये हुए हैं, देखो मुँह महक रहा है।

पिल पड़ना–मन से लग जाना। उ० पिल पडने से सभी काम आसान हो जाता है।

पिलाना या पिला देना–अच्छी तरह दिमाग मे बैठा देना। उ० उसे ऐसा पिलाया है कि कयामत तक न भूलेगा। बयान गवाहों को पिला दिया गया है।

पिस जाना–१. नष्ट-भ्रष्ट हो जाना। उ० सारे किसान युद्ध मे पिस गए। २ लज्जित होना। उ० आज तो खूब पिसे। अब होश रहा तो न बोलेगे।

पिसपा होना–हार जाना, भाग जाना, पीठ दिखाना।

पिसान होना या हो जाना–दब कर चूर्ण हो जाना। उ० गाडी के नीचे दब कर वह पिसान हो गया।

पीं बोलना–किसी चीज मे दब कर हाय करना। उ० एक ही बार दबाने ने उसने पीं बोल दिया।

पीछा करना–१. पीछियाना, भगाना, दौडाना। उ० उसने डाकुओं का देर तक पीछा किया। २. परीशान करना। उ० तुमने तो ऐसा पीछा किया कि उसे जवाब देना पड़ा।

पीछा छुड़ाना–१. छुटकारा पाना। उ० किसी तरह पीछा छुड़ाया। २ अलग होना। उ० जल्दी ही उनसे पीछा छुड़ा लूंगा।

पीछा छूटना–१. कष्टदायक चीज का समाप्त होना। उ० वर्षा हो जाय तो अकाल से पीछा छूटे। २. छुटकारा मिलना। उ० तुमसे पीछा छूटे तो कुछ करूँ।

पीछा छोड़ना–१. साथ छोडना। उ० उसका पीछा छोड दो तो तुम ठीक हो जाओगे। २ परीशान करना छोड देना। उ० उस बेचारे का पीछा छोड़ दो। अब वह हार मान गया।

पीछा दिखाना–१. हार कर भाग जाना। उ० थोडी देर के ही झगड़े मे पीछा दिखा दिया। २ धोखा देना। उ० समय पर पीछा दिखाना ठीक नही है। ३. इन्कार करना।

पीछा देना–१. पीछा करना। पीछे-पीछे लगा रहना। उ० उसका पीछा देना बेकार है, क्योकि उससे कुछ काम नही हो सकता। २. वचन देकर मदद न करना। उ० समय पर पीछा देना मुझे नही आता।

पीछा पकड़ना–१ हर वक्त किसी के साथ रहना। उ० बुद्धिमान का पीछा पकड़ो तो बुद्धिमान बन सकते हो। २. अपने बचाव या सहायता आदि के लिये शरण या सहारा पाना। उ० बचना चाहते हो तो कोई अच्छा पीछा पकड़ो।

पीछा भारी होना–पीछे या सहायक रूप मे किसी अच्छे या बड़े व्यक्ति का होना। उ० पीछा भारी है, नही तो कभी मार डाले गए होते।

पीछे चलना–१. नक़ल करना। अनुकरण करना। उ० बडे आदमियो के पीछे चलने से छोटे भी बड़े हो जाते हैं। २. गुरु मानना।

पीछे छूटना–१ रास्ते मे पीछे रह जाना। उ० हम तीन आदमी साथ चले थे, पर सब पीछे छूट गये। २. भेद लेने को जासूस लगना। उ० उनका पता लगाने को कई पीछे छूटे है। ३. भागे आदमी को पकडने को आदमी ठीक करना। ४. किसी विषय मे या पथ पर घट कर होना या पीछे छूट जाना।

पीछे छोड़ना–१. पकड़ने के लिए भेजना। उ० चार पुलिस उस चोर के पीछे छोडे गये हैं। २ भेदिया लगाना। ३. आगे बढ जाना, अपने पथ के लोगों को पार कर आगे बढ़ना। उ० बहुतों को पीछे छोड़ कर तो इस पद पर पहुँचा है।

पीछे डालना–१. पीछा करना। उ० शिकार के पीछे घोड़ा डाल दिया। २ रुपया बचाना। उ० कमाई में से बुढ़ापे के लिए कुछ पीछे डालो।

पीछे दौड़ाना–पीछे-पीछे भेजना। उ० जल्दी लड़के को पीछे दौड़ाओ, नही तो वे दूर निकल जाएंगे।

पीछे पड़ना–१. पीछे लगे रहना, मौके-बे-मौके कहते रहना। उ० तुम तो यार पीछे पडे हो, कहना मानते ही नही। २ ऐब देखना। उ० बहुत से लोग आज कांग्रेस के पीछे पडे है। ३. किसी काम को कराने के लिए तुल जाना। उ० हम लोग इसके पीछे पड गए है।

पीछे पड़ा रहना–१. बार-बार कहना। उ० बड़े आलसी है, पीछे पड़े रहो तो काम कर देंगे। २. परीशान करना। उ० इन गरीबो के पीछे पड़े रहने से क्या होगा ?

पीछे पैर देना–निश्चय से हटना।

पीछे फिरना–किसी कार्य को शुरू करके फिर विमुख होना। कोई वायदा करके हट जाना।

पीछे भेजना–१ भेदिया लगाना। २ किसी को पकड़ने के लिए आदमी भेजना।

पीछे लगना–१. अपने मतलब से किसी के साथ-साथ घूमना। पीछे लगा रहना। उ० पीछे लगे हो तो काम हो ही जायगा। २ पीछा करना। साथ रहना। उ० ऐसी यह आदत पीछे लगी कि अब छूटती ही नही। ३ अनुकरण करना।

पीछे लगाना या लगवाना–१. साथ रख कर सहारा देना। उ० उसने तो मशीन लाकर कई आदमियो को पीछे लगा लिया है। २ अकारण अपने पर आफ़त लाना। उ० तुमने तो यह आफ़त अपने पीछे लगा ली है। ३. मत्थे मढना। उ० उसने इस आदमी से कहला कर सारा काम मेरे पीछे लगा दिया। ४ साथ भेजना। उ० लड़के को भी पीछे लगा दो, चला जाएगा।

पी जाना–गो रखना, बरदास्त कर जाना। उ० इतनी बढ कर बातें हुई, परन्तु वह सब पी गया। मैं पी गया, नही तो लडाई हो जाती।

पीटना–पछताना। उ० जब काम बिगड़ गया तो पीटने से क्या लाभ ?

पीठ उधेड़ना–दे० 'पीठ की खाल उधेड़ना'।

पीठ का–तरउपरियां, बाद का पैदा। उ० मेरी पीठ का भाई मर गया।

पीठ का कच्चा–सवारी मे कष्टदायक घोडा। उ० तुम्हारा घोड़ा अभी पीठ का कच्चा है।

पीठ का सच्चा–पक्का घोडा। उ० ऐसा पीठ का सच्चा घोडा है कि कभी अड़ने का नाम नही लेता।

पीठ की खाल उधेड़ना या उधेड़ देना–पीठ पर खूब मार कर खाल उधेड देना। उ० उसने मारते-मारते पीठ की खाल उधेड दी। ठीक से काम करो, नही तो पीठ की खाल उधेड दूंगा।

पीठ की रीढ़ होना–आधार होना।

पीठ खाली होना–असहाय होना। उ० जाओ रपट लिखाओ। तुम्हारी पीठ खाली नही। डर किस बात का ?

पीठ चारपाई से लग जाना–चारपाई पर पड़ा रहना, उठ-बैठ न सकना। उ० फोडे से उसकी पीठ चारपाई से लग गई है।

पीठ टूट जाना–१ भारी बोझ के कारण पीठ मे दर्द होना। २ मूल आधार नष्ट हो जाना।

पीठ ठोंकना–१ उत्साह देना। उ० एक बार पीठ ठोक दी और वह कूद पडा। २ शाबाशी देना। उ० दौड़ मे प्रथम आया था तो मैंने भी पीठ ठोकी। ३. स्नेह दिखाना, पुचकारना। उ० बिल्ली की पीठ ठोक दो, वह मुँह चाटने लगेगी। ४ उऋण करना। उ० सेठ ने उसका हिसाब करके पीठ ठोक दी।

पीस डालना–१ दुःख ढाहना, कष्ट देना। उ० जमीदारो ने तो किसानो को पीस डाला। २. नाश कर देना। उ० पिछले युद्ध मे अंग्रेजो ने जापानियो को पीस डाला।

पीठ तोड़ना–पस्तहिम्मत करना। उ० उसकी पीठ न तोड़ो, आगे बढने दो।

पीठ दिखा कर जाना–१. अनुरागहीन होना। उ० वह स्त्री को पीठ दिखा कर दो वर्ष के लिए चला गया। २. हार कर भागना। उ० उस दिन पीठ दिखा कर गए, आज बढ-चढ कर बाते कर रहे हो !

पीठ दिखाना या दिखलाना–हार कर भाग जाना, भाग जाना। उ० शत्रु ने मैदाने-जंग में पीठ दिखाई।

पीठ देना–१ विदा होना। उ० आज मेहमानों ने किसी तरह पीठ दी। २. दे० 'पीठ दिखाना'। ३. समय पर काम न आना। उ० मौके पर मित्र पीठ नहीं देता है। ४. सोना। उ० ज़रा पीठ दे लो, थके हो। ५ मुंह फेरना। उ० मेरी ओर क्यों पीठ देती हो? ६ उपेक्षा दिखाना। उ० गंदगी देख कर ही मैंने पीठ दी। पीठ न दो। वह तुम्हारे घर मेहमान आया है।

पीठ नपाना–मार खाना।

पीठ पर–दे० 'पीठ पर का'।

पीठ पर का–दे० 'पीठ का'।

पीठ पर खड़ा होना–सहायक होना।

पीठ पर खाना–भागते हुए पीठ पर मार खाना। उ० तुमने तो वहाँ पीठ पर खायी, हम देख रहे थे।

पीठ पर बल होना–सशक्त सहायक होना।

पीठ पर सवार होना–हर समय साथ लगे रहना।

पीठ पर हाथ फेरना–दे० 'पीठ ठोकना'।

पीठ पर होना–१ मददगार होना। उ० उसकी पीठ पर कोई नहीं है, तभी तो भीख माँगता है। २. पीठ पर का या बाद का पैदा होना। उ० हमारे पीठ पर एक भाई है। ३. सदा बना रहना। उ० वह हर घड़ी पीठ पर रहता है, कभी फुरसत ही नहीं मिलती। ४. सदा तैयार रहना।

पीठ-पीछे–१. आड़ में, अलग। उ० वह तो पीठ-पीछे मेरी शिकायत ही करता होगा। २. पीछे-पीछे। उ० क्या पीठ-पीछे लगे हो?

पीठ फेरना–१ चले जाना। उ० तुम्हारे व्यवहारों से ही उसने पीठ फेर ली। २ मुंह मोड़ लेना। उ० उसने तो देखते ही पीठ फेर ली।

पीठ फोड़ डालना–दे० 'पीठ की खाल उधेड़ना'।

पीठ बचा कर साथ देना–उस सीमा तक ही साथ देना, जहाँ तक अपना नुक़सान न हो।

पीठ में छुरा भोंकना–विश्वासघात करना।

पीठ लगना–१ जानवरों की पीठ में घाव होना। उ० अभी बच्चा है, ज्यादा न चढ़ो, नहीं तो पीठ लग जाएगी। २. चारपाई पर पड़े रहना। उ० उसकी पीठ सालों से लगी है। ३. पछाड़ खाना। उ० किसी की भी पीठ लगी, तो किसकी जीत कही जाय?

पीतल की नथ पर गुमान करना–मामूली वस्तु पर गर्व करना।

पीठ लगाना–पछाड़ देना। उ० गामा ने विश्व में सभी की पीठ लगा दी।

पीपल के पत्ते की तरह कांपना–अत्यधिक भयभीत होना।

पीर न आना–१ किसी के दुःख में सहानुभूति न होना। उ० तुम तो इतने कठोर हो कि पीर ही नहीं आती है। २. स्त्रियों को प्रसव के समय कष्ट न होना।

पीला पड़ना–दे० 'पीला होना'।

पीला होना–१ शरीर में खून की कमी होना। उ० तुम तो पीले पड़ गए हो। २ भयभीत होना। उ० शेर को देखते ही वह पीला हो गया।

पीली फटना–सुबह होना, उषा निकलना। उ० कल पीली फटते ही तुम्हारे घर आऊँगा।

पील् पड़ना–१ फल आदि में कीड़े पड़ जाना। उ० अब तो बैंगन में पील् पड़ गए होंगे। २ सड़ना। उ० पाप करोगे तो बुढ़ौती में पील् पड़ेंगे।

पीस कर पी जाना–बिल्कुल बर्बाद कर देना, समूल नाश कर देना। उ० वह इतना बली नहीं है कि तुम्हें पीस कर पी जाय।

पीसना–१ परिश्रम करना। उ० वह कई वर्षों से ए० जी० आफिस में पीस रहा है। २ प्रयास करना, प्रयत्नशील होना। उ० कितना भी पीसो, काम होने-हवाने का नहीं।

पीसना पीसना–१ कठिन मेहनत करना। उ० गाँव में पीसना पीस कर ही तो उसका गुज़र होता है। २. काम में देर लगाना। उ० तुम हर एक काम में पीसना पीसने लगते हो।

पुकार देना–कहला देना, घोषित कर देना। उ० इस बात की पुकार दे दी गई, फिर भी वे नहीं आये तो मैं क्या करूँ?

पुकार पड़ी होना–अधिक माँग होना। प्रसिद्धि होना। उ० आजकल सिंगर मशीन की पुकार पड़ी है।

पुचारा देना–१. दे० 'पुचारा फेरना'। २. खुशामद करना।

पुचारा फेरना—१. नष्ट कर देना । उ० इस नालायक ने सारी इज्जत पर पुचारा फेर दिया । २ फुसलाना, बहकाना । उ० उस पर पुचारा फेर कर ही काम हो सकता है । ३ पुताई या सफेदी करना ।

पुचारे में आना या आ जाना—धोखे की बातो मे आ जाना । उ० तुम्हारे पुचारे मे आकर हमने अपने को ही नष्ट कर दिया ।

पुजापा फैलाना—१. बाह्य आडंबर बना रखना । उ० पता नही कुछ तत्त्व है या नही, पर उसने बड़ा पुजापा फैला रखा है । २ अनियमित रूप से वस्तु रखना । उ० बडे गन्दे हो जी, क्यों यह सब पुजापा फैला रखा है ।

पुटका पड़ना—आफ़त या मौत आना । उ० भगवान करे, तुम्हारे पर पुटका पडे । [यह गाली स्त्रियाँ या जनखो के मुँह से ही प्रधानतः सुनी जाती है ।]

पुट्ठे पर हाथ रखने देना—१ जानवर का चचल होना । उ० उसका घोड़ा तो पुट्ठे पर हाथ ही नही रखने देता । २. न छूने देना । उ० वह तो कभी पुट्ठे पर हाथ ही नही रखने देता ।

पुट्ठे पर हाथ रखना—१. उत्तेजना देना, चलने को उत्तेजित करना (बैल) । उ० पुट्ठे पर हाथ रखते ही बैल हवा हो जाता है । २. सहारा देना, पीछे से सहायता का भरोसा देना । उ० आपने उसके पुट्ठे पर हाथ रखा है, नही तो उसकी मजाल न थी कि यो कह दे ।

पुण्य करना और कुएँ में डाल देना—नेकी करके भूल जाना ।

पुतला बाँधना—निरादर या बेइज़्ज़त करना । उ० क्यो उसका पुतला बाँधते हो, याद नही है, तुम्हारे लिए उसने कितने कष्ट भोगे ?

पुतलियाँ नचाना—१. पुतलियो का तमाशा दिखाना । २ आँख से इशारे करना ।

पुतलियाँ फिरना—१ गर्व करना । उ० उसकी तो उब पुतलियाँ फिरने लगी । २. मर जाना । उ० हैज़े में सैकडों की पुतलियाँ फिर गई । ३. मरने के समीप होना । उ० उसकी पुतलियाँ फिर गई हैं ।

पुतलियों में घर करना—आँखो मे रहना, सदा याद रहना । उ० तुम्हारी पुतलियो में उसने घर कर लिया है ।

पुतली का तारा—दे० 'नैनों का तारा' ।

पुतली फिर जाना—दे० 'पुतलियाँ फिर जाना' ।

पुनि-पुनि—पुन -पुनः, बार-बार । उ० पुनि-पुनि कहत, न मानत तू क्यों ?

पुरखे तर जाना—पूर्वजो की सुगति होना । उ० गगा के आने से भगीरथ के पुरखे तर गये ।

पुरचक देना—ऐसी बातें करना, जिससे लडकों आदि को बुरा काम करने का और उत्साह मिले ।

पुरचक पाना—बुरे कामो के लिए इशारा या मदद पाना ।

पुरसा देना—१. मौत की खबर देना । नाई का घर-घर जाकर बताना २. मरे हुए के घर की औरतो के साथ और घर की औरतो का रोना ।

पुरसिश करना—पूछना, दरयाफ़्त करना, तहकीक़ करना ।

पुरान-चिरान होना—दे० 'पुराना-चिराना होना' ।

पुराना खुर्राट—१ तजुर्बेकार, अधिक आयु का और अनुभवी । उ० उसकी बाते तो पुराने खुर्राट की तरह होती थी । २. बहुत वृद्ध । उ० वह पुराना खुर्राट है, भला शादी क्या करेगा ?

पुराना घाघ—१. चतुर वृद्ध, अनुभव वाला । होशियार । उ० वह पुराना घाघ है । २. सभी बातो को जानने वाला । ३. भितरघाउस, जिसे कोई जान न सके । उ० है वह पुराना घाघ, जरा होशियार रहना ।

पुराना चंडूल—बहुत दिनों का मूर्ख, भारी मूर्ख । उ० वह तो पुराना चंडूल है । उसे यह क्या समझाने चले हो ?

पुराना-चिराना होना या हो जाना—१ दे० 'पुराना-धुराना होना' । २. पूर्ण परिचित होना । । घुल-मिल जाना । उ० परसो वे पहुँचे होगे और कल पुराने-चिराने हो गए होगे ।

पुराना-धुराना होना—बेकार या फटा-पुराना होना । उ० इसे कोई पुराना-धुराना कपड़ा हो तो दे दो ।

पुरानी खोपड़ी—दे० 'पुराना खुर्राट' ।

पुरानी राह पर चलना—पुराने ढंग से ही कार्य करना ।

पुरानी लकीर पीटना—प्राचीन परंपरा का अनुयायी होना । उ० हम सभी पुरानी लकीर पीट रहे हैं ।

पुरुषार्थ थकना–शक्ति क्षीण होना।

पुर्जा दुरुस्त करना–सारी स्थिति को ठीक करना।

पुर्जे उड़ना–१. टुकड़े-टुकड़े उड़ना, कीमा-कीमा होना। २ खूब मार पड़ना। उ० थी खबर गर्म कि 'गालिब' के उड़ेंगे पुर्जे, देखने हम भी गए थे यह तमाशा न हुआ।

पुर्जे निकालना–१ सीमा पार करना। उ० आधुनिक युग में तो सभी ने पुर्जे निकाल लिए हैं। २ पुराने कागज-पत्तर निकालना। उ० पुर्जे निकालने में देर होगी, इसी तरह समझ लो। ३ मशीन के टुकड़े अलग करना। उ० पुर्जे निकालने पर मशीन की खराबी दिखाई देगी।

पुर्जे-पुर्जे उड़ाना या उड़ा देना–१. एक-एक टुकड़ा अलग करना। उ० बहुत बनोगे तो इसके पुर्जे-पुर्जे उड़ा दूँगा। २. जीर्ण-शीर्ण कर देना। उ० ले जाते वक्त तो कहा था कि ज्यों की त्यों ला देंगे, और ले आए हो पुर्जे-पुर्जे उड़ा कर।

पुर्जे-पुर्जे करना–दे० 'पुर्जे-पुर्जे उड़ाना'।

पुर्जे-पुर्जे होना–१ प्रत्येक टुकड़ा अलग होना। उ० इसके तो पुर्जे-पुर्जे हो गए हैं, तुम स्वयं समझ लो। २ जीर्ण-शीर्ण होना। उ० यह कपड़ा तो अब पुर्जे-पुर्जे हो गया।

पुल टूटना–बहुत भीड़ होना। उ० मेले में आदमियों का पुल टूट पड़ा।

पुल बँधना–ढेर लग जाना, अधिक हो जाना। उ० वहाँ तो आदमियों का पुल बँधा है।

पुल बाँधना–१. बढ़ा-चढ़ा कर कहना। उ० तुम्हें तारीफ का पुल बाँधना खूब आता है। २ हद निश्चित करना। उ० एक पुल बाँध दो, नहीं तो रोज की झौं-झौं ठीक नहीं। ३ नदी पर पुल बनाना।

पुश्तक मारना–दुलत्ती मारना, घोड़े या गदहे या ऊँट का पिछला पैर उठा कर लात मारना।

पुश्त दिखाना–भाग जाना, हार जाना लड़ाई में भाग जाना, पीठ दिखाना।

पूँछ उखाड़ना–दे० 'पोंछ उखाड़ना'।

पूँछ पकड़ कर चलना–१ सहारा लेकर आगे बढ़ना, सहारा लेना। उ० मुझे किसी की पूँछ पकड़ कर चलना पसंद नहीं है। २ पीछे-पीछे चलना। उ० कुछ लोग बड़ों की पूँछ पकड़ कर चलने में ही अपनी प्रतिष्ठा समझते हैं।

पूँछ पकड़ना–आश्रय लेना।

पूँजी खोना–घर का धन बरबाद करना। उ० उसने व्यापार में सारी पूँजी खो दी।

पूँजी गँवाना–दे० 'पूँजी खोना'।

पूँजीदार बनना–अपने को धनी समझना। धनी होने का गर्व करना। उ० चार पैसे हो गए, अब वह भी पूँजीदार बनता है।

पूए पर चीनी पड़ना–१. अच्छाई में और अच्छाई होना। २ भाग्य का बहुत जोर पकड़ना।

पूछ होना–प्रतिष्ठा होना।

पूछगाछ होना–दे० 'पूछताछ होना'।

पूछताछ होना–१ आदर-सत्कार होना। उ० आपकी तो खूब पूछताछ हुई होगी। २ जाँच होना, इन्क्वायरी होना।

पूजा करना–१ भक्तिभाव से आदर करना। २ घूस देना। ३ मारना।

पूड़ी टूँगना–द्विरागमन के अवसर पर बहू का एक पूड़ी खाकर एक विशिष्ट रीति करना। उ० अब बहू पूड़ी टूँगने जा रही है।

पूत के पाँव पालने में नजर आना–बचपन से ही चरित्र का पता लगना।

पूरा उतरना–१ ठीक-ठीक होना या हो जाना। उ० घबराओ नहीं, सब पूरा उतरेगा। २ संख्या या वजन में पूरा होना। उ० जितना उसने भेजा था, वह पूरा उतरा। ३ सही होना। उ० उम्मीद है कि उसकी सारी बातें पूरी उतरेंगी।

पूरा डालना–१ खातमे पर पहुँचाना। २. निबाहना। गुजारना। ३ कमी को पूरा करना।

पूरा पड़ना या पड़ जाना–काम हो जाना। काम के लिए पर्याप्त होना। उ० वह सौ रुपये पाता है, तब भी पूरा नहीं पड़ता। इतने रुपये से पूरा पड़ जाने की आशा है।

पूरा होना–१ अच्छी तरह हो जाना, समाप्त हो जाना। उ० तुम्हें धन्यवाद, तुम्हारी बातें पूरी हो गईं। २ कम न होना।

पूरी उतरना–१ देखने-सुनने के बाद जैसी की तैसी होना। उ० उसकी बातें पूरी उतरीं। २ छोटी न होना। उ० मुझे तो शुबहा था कि दरियाँ छोटी होंगी, पर पूरी उतरीं। ३ कम न होना। उ० मैं सोचता था कि पुस्तकें कम होंगी, पर पूरी उतरीं।

पूरे दिनों से होना–गर्भ का पूरा होना, बच्चा होने का दिन समीप आना। उ० वह पूरे दिनों से है, जरा ध्यान रखना।

पूरे पड़ना–ठीक उतरना। कम न होना। उ० ४० रु० पूरे पड़ेंगे।

पूरे होना–१. समाप्त होना। उ० उसके जीवन के दिन पूरे हो गये। २. पूर्ण होना।

पूले-तले गुजरान करना–किसी तरह झोपड़ी में गुजर करना। गरीबी में दिन बिताना। उ० भारत के सभी किसान पूले-तले गुजरान करते हैं।

पृथ्वी का रसातल में जाना–घोर अनिष्ट होना।

पृथ्वी डोलना–काँपना, सबका आतंकित होना।

पेंग बढ़ना–हौसला बढ़ना।

पेंदे का हलका–१. क्षुद्र, नीच, ओछा। उ० विश्वास करो, कोई मैं पेंदे का हलका नहीं हूँ। २. छोटे चूतर वाला। उ० पेंदे की हल्की औरतें अच्छी नहीं लगती हैं। ३. वह बर्तन जिसके नीचे का भाग पतला या कमजोर हो। उ० यह लोटा पेंदे का हलका है।

पेंदे के बल बैठना–१. पराभव मानना, हारना। उ० सामने आते ही वह पेंदे के बल बैठ गया। २. स्थिर होकर बैठना। अच्छी तरह बैठना।

पेच उठाना–दुःखी होना, गम उठाना। उ० कोई आये या जाय, मैं क्यों पेच उठाऊँ।

पेच काटना–१. उलझन दूर करना। उ० किसी तरह यह पेच काटो तो प्राण बचे। २. पतंग लड़ा कर काटना। उ० अच्छा मौका है पेच काटने का।

पेच खाना–भीतर ही भीतर दुःखी होना। उ० घर वालों से मैं बहुत पेच खाए हूँ।

पेच खेलना–१. पतंग की डोरी दूसरे से उलझाना। उ० चलो पेच खेला जाय। २. लड़कों का खेल खेलना, जिसमें दो या तीन लड़के तागे में कंकड़ बाँध कर पतंग की तरह लड़ाते हैं।

पेच घुमाना–१. विचार में परिवर्तन कर देना। उ० मैं तो उसका पेच घुमा सकता हूँ। २. परिस्थिति को परिवर्तित करना। उ० कहो तो ऐसा पेच घुमा दूँ कि उसका जाना स्थगित हो जाय।

पेच डालना–१. फँसाना। उ० पेच डाल कर पतंग काट दो। २. रुकावट डालना। उ० ऐसा पेच डालो कि वह जाने न पाये।

पेच ढीला होना–अल्पबुद्धि होना, पागल होना। उ० तुम्हारा भी पेच ढीला हो गया लगता है।

पेच-ताव खाना–ताव दिखाना, क्रोधित होना। उ० तुम तो अपने नौकरों पर खूब पेच-ताव खाते हो।

पेच देना–चालबाजी चलना। उ० तुम तो पेच देने के आदी हो गए हो, मगर मेरे साथ तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।

पेच पड़ना–१. उलझन पड़ना। उ० ऐसा पेच पड़ गया है कि कुछ कहा ही नहीं जाता। २. दो पतंगों का उलझना। उ० आज तो बड़ा अच्छा पेच पड़ा था। ३. कारण पड़ना। उ० कुछ ऐसा पेच ही पड़ गया कि मैं न आ सका।

पेच में आना–१. धोखे में आना। उ० तुम तो मेरे पेच में आ गए हो, अब कहो क्या करें? २. वश, अधिकार या चंगुल में आना। उ० उसके पेच में आओगे तो फिर निकलना मुश्किल होगा।

पेच लड़ाना–१. पतंग लड़ाना। २. तागे में ईंटों के टुकड़े बाँध कर लड़ाना। उ० देखो लड़के पेच लड़ा रहे हैं।

पेच हाथ में होना–अपने अधिकार में होना। उ० उसका पेच तो मेरे हाथ में है, जिधर चाहे उधर घुमा दें।

पेट ऐंठना–पेट में दर्द या मरोड़ होना। उ० पेट ऐंठ रहा है।

पेट का कुत्ता–खाने के लिए जीने वाला। उ० पेट के कुत्ते मत बनो, कुछ करो भी।

पेट का गहरा–बहुत चलाक या गम्भीर।

पेट काटना–कम खाकर बचाना। उ० लड़के को पेट काट कर बेचारे ने पढ़ाया था, आज वह मर गया।

पेट का धंधा–१. भोजन बनाने का काम। उ० तुम तो स्वयं पेट का धंधा करते हो। २. पेट पालने के लिए किया गया काम। उ० संसार पेट के धन्धे में व्यस्त है।

पेट का पानी न पचना–बात गुप्त न रख सकना। बात न रख सकना। उ० मैं तुमसे कुछ नहीं बता सकता, क्योंकि तुम्हारे पेट का पानी ही नहीं पचता।

पेट का पानी न हिलना–१. बिना परिश्रम के हो जाना। उ० लड़कों की शादी हो गई और

पेट का पानी भी न हिले । २. रहस्य न खुलना । उ० वह तो ऐसा घुइस है कि उसके पेट का पानी तक नही हिलता है ।

पेट का हलका होना—बात न पचाने वाला होना । उ० मैं तुमसे न कहूँगा, तुम तो पेट के हलके हो ।

पेट की आँत भीतर सिमट जाना—क्रोध या आश्चर्य होना ।

पेट की आग—१ तेज भूख । उ० हमारे पेट की आग बिना खाए नहीं बुझेगी । २ वात्सल्य, प्रेम । उ० पुत्र माने या नही, पर माँ के पेट की आग कब मान सकती है ।

पेट की आग बुझाना—खाना खाना । उ० पेट की आग बुझा कर तो चलूँगा ।

पेट की खबर न लेना—भोजन का प्रबन्ध न करना । उ० उस बुढ़िया की पेट की खबर तक नही लेते और बनते हो उसके दामाद ।

पेट की चोट्टी—यह उस स्त्री के लिए कहा जाता है, जिसे बच्चा होने को हो, किन्तु पेट अधिक न फूला हो । उ० वह पेट की चोट्टी है, बिना डाक्टर को दिखाए गर्भ का पता नही चल सकता ।

पेट की थाह लेना—मन मे छिपी बात का अन्दाज लेना ।

पेट की बात—गुप्त बात, हृदय की बात । उ० तुमसे तो मै पेट की बात भी नहीं छिपाता हूँ, और तुम मुझे कुछ समझते ही नहीं ।

पेट की बात न पूछना—दे० 'पेट की खबर न लेना' ।

पेट की मार देना या मारना—खाने को न देना । उ० हाथियों को पेट की मार देकर वश मे किया जाता है ।

पेट के लाले पड़ना-खाने को भी न होना ।

पेट के लिए दौडना—जीविका के लिए परिश्रम करना । उ० ये कुली धूप मे पेट के लिए दौड रहे है ।

पेट को धोखा देना—खाने मे से बचाना । उ० पेट को धोखा देकर ही तो चार पैसे जमा किए है ।

पेट को लगना—भोजन की इच्छा होना । उ० सोने दो, पेट को लगेगी तो स्वय उठेगा ।

पेट खलाना—अपनी भूख दिखाना । उ० पेट न खलाओ, मै सब जानता हूँ ।

पेट खाली होना—१. भीतर खोखला होना । उ० आजकल मँहगी में बड़ों का भी पेट खाली है । २. भूखा होना ।

पेट गदराना-पेट पर बच्चा होने के चिह्न दिखलाई देना । उ० बहू का पेट गदरा रहा है ।

पेट गिरना—गर्भपात होना । उ० उसका पाँच माह का पेट गिर गया ।

पेट गिरना या गिरवाना—गर्भपात कराना । उ० उसने तीन माह का पेट गिरवा दिया ।

पेट गुड़गुड़ाना—अपच से पेट मे गड़बड़ी होना । पेट मे गुड-गुड शब्द होना । उ० चना खा लेने से पेट गुडगुड़ा रहा है ।

पेट चलना—१ पाखाना होना । उ० उसका सुबह से पेट चल रहा है । २ गर्भ का बच्चा चलना । उ० कल तक पेट चल रहा था, पर आज कुछ पता नही चल रहा है, कही बच्चा मर तो नही गया ।

पेट छंटना—तोंद कम होना । उ० कसरत करने से ही उसका पेट छँट गया ।

पेट छूटना—दस्त जारी होना ।

पेट जलना—१ भूख लगना । उ० सुबह से कुछ नही खाया, अब पेट जल रहा है । २. क्रोध आना । उ० ऐसे आदमियों को देख कर तो मेरा पेट जलता है । ३ खाने को न मिलना । उ० बेचारे का पेट जल रहा है ।

पेट जारी होना-दे० 'पेट चलना' ।

पेट जिलाना—सुख-दुःख से पेट पालना । उ० ससार मे पेट जिलाने नही आए हो, कुछ कार्य भी करो ।

पेट ठंडा करना—१ बच्चो मे सतोष करना । और अधिक बच्चा होने की इच्छा न रहना ।

पेट थामे फिरना—दे० 'पेट पकडे फिरना' ।

पेट दिखाना—१ पेट की बीमारी दिखाना । उ० अस्पताल मे पेट दिखाया, परन्तु डाक्टर ने कुछ कहा नहीं ? २ गर्भ पहचनवाना । उ० उसने दाई को पेट दिखाया । ३. भूख दिखाना । उ० उसे तो पेट दिखाने पर भी दया नही आई ।

पेट देना—गुप्त बात कह देना । उ० उसे पेट न दो, उसका कोई विश्वास नही ।

पेट न भरना–भूख न मिटना। पूरा न पड़ना। उ० इतने रुपये मे भी उसका पेट नही भरता।

पेट पकड़ कर भागना–१. पाखाने जाना। उ० खाकर वह तुरन्त पेट पकड़ कर भागता है। २. भयभीत होकर भागना। उ० राक्षस को देखते ही वह पेट पकड़ कर भागा।

पेट पकड़े फिरना–भूख से परीशान होकर फिरना। उ० दिन भर पेट पकड़े फिरता है, पर कही कुछ मिलता ही नही।

पेट पकला होना या में पकला होना–हँसते-हँसते पेट फटना। उ० आज तो सिनेमे मे पेट पकला हो गया।

पेट पतला होना–१. पैसे की कमी होना। उ० खर्च के मारे पेट पतला हो गया। २ विवशता होना। ३. कृपणता होना।

पेट पतुही होना–भूख या दुबलापन के कारण पेट का सट जाना। उ० बच्चे का पेट पतुही हो गया है, कुछ खिला दो। दो ही महीने बाहर रहने में पेट पतुही हो गया।

पेट पर छुरी चलाना–रोजी छीन लेना।

पेट पर पट्टी बाँधना–भूखा रहना। पेट मे कुछ न डालना। उ० जब जन्म ले लिया तो कमाना ही पड़ेगा, पेट पर पट्टी बाँधने मे तो काम नही चलेगा।

पेट पाटना–खूब खाना। उ० तुमने तो बैठ कर पेट पाट लिया, अब मै खाऊँ या भूखो मरूँ, तुमसे कुछ मतलब नही।

पेट पानी होना–१. पतला पाखाना होना। उ० उसका पेट तो पानी हो गया है। २ भय खाना। उ० चीते को देखते ही पेट पानी हो गया।

पेट पालना–१ दे० 'पेट जिलाना'। २ स्वार्थी होना। उ० परोपकार भी किया करो, अपना पेठ तो सभी पालते है।

पेट पीटना–१. व्याकुल होना। उ० उसके लिए पेट न पीटो, आ जाएगा। २ अपने को भूखा दिखाना। उ० भिखारी पेट पीट कर खाना माँग रहा है।

पेट-पीठ एक होना–भूख के मारे पेट का अदर धँस जाना। उ० इन भिखारियों का पेट-पीठ एक हो गया है।

पेट-पीठ से लगना–दे० 'पेट-पीठ एक होना'।

पेट-पोंछना–आखिरी बच्चा। उ० तुम तो अपनी माँ के पेटपोंछने पुत्र हो।

पेट फटना–१. पेट में दर्द होना। उ० हँसते-हँसते पेट फट गया। २ द्वेष या जलन होना। उ० उसे उन्नति करते देख कर तुम्हारा पेट क्यों फटता है? ३ धैर्यहीन होना। धैर्य न रहना। उ० यहाँ अकेले तो पेट फटा जाता है।

पेट बड़ा होना–लालची होना, माँग करना।

पेट फाड़ कर खाना–अधिक खाना।

पेट फूलना–१ स्पर्धा होना। २ बुरा लगना। उ० तेली का तेल जले, मसालची का पेट फूले। ३ जानने के लिए व्याकुल होना। उ० मुझे भी बता दो, मेरा पेट फूल रहा है।

पेट बँधना–नियम से खाना। उ० उसका पेट तो बँध गया है, केवल दो बार खाता है।

पेट बढ़ना–१ अधिक भोजन करना। उ० उसका पेट आजकल बढ़ गया है। २ लालची बढ़ना। दूसरे की चीज लेने की इच्छा होना। उ० तुम्हारा पेट बढ़ गया है, जो ही पाते हो, ले लेते हो।

पेट बाँधना–कम तथा नियम से भोजन करना। उ० अपना पेट बाँध लो तो कष्ट न होगा।

पेट भर जाना–१ घबड़ा जाना। उ० तुम्हारी बातों से पेट भर गया। २ पूँजी वाला हो जाना। उ० अब तो उसका पेट भर गया है। ३ और कमाने की इच्छा न होना। ४. संतोष हो जाना।

पेट भरना–१ तृप्त होना। उ० अब तो शायद पुत्र से पेट भर गया होगा। २ पूरा भोजन करना। उ० अभी पेट भरा या नही। ३. रद्दी-सद्दी खाकर पेट जुड़ाना।

पेट भाड़ होना–बहुत अधिक खाने वाला होना।

पेट मसोसना–भूखो मरना। उ० बेचारा पेट मसोस रहा है, उसे कुछ दे दो।

पेट मार कर मर जाना–आत्महत्या करना, अपना प्राण स्वय दे देना। उ० वह घर मे पेट मार कर मर गया।

पेट मारना–१ खुदकुशी करना। उ० उसने जहर खाकर पेट मार लिया। २. दे० 'पेट को धोखा देना'।

पेट-मुँह चलना–दस्त और उलटी होना।

पेट में आँत न मुँह में दाँत–अति वृद्ध। बहुत बूढ़ा। उ० ८० साल का हुआ, अब तो न पेट मे आँत न मुंह मे दाँत।

पेट में आग लगना–बहुत भूख लगना। उ० कुछ दे दो, पेट मे आग लगी हुई है।

पेट में खलबली पड़ना–व्याकुलता होना घबड़ाना। उ० बात जानने के लिए पेट मे खलबली पड गई।

पेट में घुसना–पेट का भेद लेना। रहस्य जानना। उ० वह पेट मे घुस कर सब जान लेता है।

पेट में चींटे की गिरह होना–बहुत कम भोजन करना। उ० बीमारी के बाद मेरे पेट मे चींटे की गिरह हो गई है।

पेट में चूहों का कलाबाजी करना या खाना-दे० 'पेट में चूहों का दौड़ना'।

पेट में चूहों का दौड़ना–बहुत भूख लगना। उ० अब तो भाई जल्दी खाना लाओ, पेट मे चूहे दौड रहे है।

पेट में चूहों का फुदकना–दे० 'पेट मे चूहों का दौडना'।

पेट मे छछूंदर छुछुवाना–किसी बात को जानने के लिए बहुत उत्सुकता होना।

पेट में छुरी भौंकना–आहत करना।

पेट में जाना–किसी चीज का हजम हो जाना।

पेट में पानी होना–दे० 'पेट मे खलबली पडना'।

पेट में डाढ़ी (दाढ़ी) होना–छोटे बच्चों का ज्ञानी होना। कम उम्र मे ही बहुत अनुभवी और बुद्धिमान होना। उ० लडका देखने मे तो छोटा है, पर उसके पेट मे दाढी है।

पेट मे डालना–१ बिना भूख के भी खा लेना। उ० हर समय पेट मे डालता रहता है। २ छिपा रखना। उ० सारा रहस्य उसने पेट मे डाल लिया।

पेट मे पाँव होना–छल कपटी होना, धोखेबाज होना। उ० उसके पेट मे पाँव है, जरूर दगा देगा।

पेट मे पानी न पचना–सब कुछ कह देना। पेट मे बात न पचना। उ० तुम्हारे पेट मे पानी क्यो पचे, तुम तो उन लोगो से अवश्य ही कह दोगे।

पेट में बल पड़ना या पड़ जाना–हँसते-हँसते पेट का दुखने लगना। उ० जोकर को देख कर ऐसी हँसी आई कि पेट मे बल पड गया।

पेट में बात की गंध न पचना–बात को अपने तक ही सीमित न रख पाना।

पेट में रखना–दे० 'पेट मे डालना'।

पेट में होना–१. इच्छा होना। उ० मेरे पेट मे एक मकान बनवाने की है। २ पास होना। जानकारी मे होना। उ० चोरी का सारा माल इन्ही के पेट मे है। ३ भीतर होना। ४ कब्जे मे होना।

पेट मोटा हो जाना–१ बहुत घूस खाना। उ० आज के मंत्रियों का पेट बहुत मोटा हो गया है। २ धनी हो जाना।

पेट रहना या रह जाना–गर्भ रहना। उ० उनकी अविवाहिता लडकी को पेट रह गया है।

पेट लगना या लग जाना–दे० 'पेट-पीठ एक होना'।

पेट से निकालना–खोई वस्तु पाना। भीतर से निकालना। उ० मै तो उसके पेट से निकाल लूंगा।

पेट से पाँव निकालना–१ ऐंठ कर चलना। उ० जरा साहब का चपरासी हो गया तो पेट से पाँव निकालने लगा है। २. दुष्कर्म करना। उ० पेट से पाँव निकालने मे बदनामी होगी।

पेट से होना–लडका होने को होना। उ० उनके घर मे पेट से है।

पेटा छोडना–पतंग का ढीला हो जाना। पतग का तागा अधिक छोडना। उ० अधिक पेटा न छोडो, नही तो कट जाएगी।

पेटा तोड़ना–१ पतग की डोरी तोड़ना। उ० आज मैंने कई पेटे तोडे। २ भीतरी हानि करना। उ० उसने तो इसका पेटा ही तोड दिया।

पेटी उतरना–पेटी छीन जाना, नौकरी से हटना। उ० एक जुर्म मे सिपाही की पेटी उतर गई।

पेटी पड़ना–१ तोद बढ़ना। उ० आजकल तुम्हे पेटी पड़ रही है। २. मोटा होना। उ० जाने कौन अन्न खाता है कि इतनी जल्दी पेटी पड़ गई।

पेड़ काट कर पत्ता सींचना–आधार नष्ट कर के वस्तु को बनाये रखने का व्यर्थ यत्न करना।

पेड़ लगाना–१. वृक्ष उगाना। उ० वन महोत्सव में अनेक पेड़ लगाए गए। २. काम प्रारंभ करना। उ० किसने पेड़ लगाया, किसने फल चखा।

पेर की किलनी होना–खोद-विनोद करना। उ० तुम तो प्रत्येक बात में पेर की किलनी हो जाते हो।

पेश आना–१. उपस्थित होना। उ० यह तो विचित्र बात पेश आई। २. व्यवहार करना। उ० बड़ों से साथ नम्रता से पेश आओ।

पेश करना–१ हाज़िर करना। उ० साहब के सामने अर्जियाँ पेश करो। २ उपहार देना। उ० बड़े दिन के अवसर पर कुछ तो पेश करना ही पड़ेगा।

पेश चलना या जाना–शक्ति रहना। उ० जब तक मेरा पेश चलेगा, वह पढ़ता रहेगा।

पेश पाना–जीत जाना। उ० तुमसे कौन पेश पा सकता है।

पेशवाई करना–१ स्वागत के लिए आगे बढ़ कर जाना। उ० लोग बारात की पेशवाई करने गए हैं। २ रक्षार्थ संग मे जाना। उ० हमारी पेशवाई गाँव में किसी ने नहीं की।

पेशानी पर बल पड़ना–चिन्ता या क्रोध या खिन्नता प्रकट होना।

पेशाब करना या कर देना–१ घृणा करना, न चाहना। उ० अब तो ऐसी चीज़ों पर पेशाब करता हूँ। २ हृदम जाना, डर जाना, डर कर पेशाब करना। उ० मार पडने के साथ ही वह पेशाब करने लगा। ऐसी मार लगाऊँगा कि पेशाब कर दोगे।

पेशाब का चिराग जलाना–बहुत तेज़ होना, रोब या दबदबा होना। उ० इस क्षेत्र मे तो उनकी पेशाब का चिराग जलता है।

पेशाब की धार पर मारना–महानीच समझना, क्षुद्र जानना। उ० तुम जैसे को तो मै पेशाब की धार पर मारता हूँ।

पेशाब की राह बहा देना–रंडीबाजी मे सारा धन खर्च कर देना। उ० उसने तो पूर्वजों की कमाई पेशाब की राह बहा दी।

पेशाब खता होना–दे० 'पेशाब निकल पड़ना'।

पेशाब निकल पड़ना–डर के मारे पेशाब हो जाना। उ० इतनी मार पड़ी कि पेशाब निकल पडी।

पेशाब बंद होना–१. बहुत डरना। उ० शेर को देखते ही उसका पेशाब बंद हो गया। २ हैज़े की बीमारी का बढना। उ० हैज़े में उसका पेशाब भी बंद है।

पेशाब से चिराग जलाना–दे० 'पेशाब का चिराग जलना'।

पेशाब से सिर मुड़वाना–बात पूरा न होने पर नीच से नीच दंड स्वीकार करना। उ० उसने स्पष्ट शब्दो मे कह दिया कि यदि बात पूरी न होगी तो पेशाब से सिर मुड़वा लूँगा।

पेशाब से सिर मूड़ना–चेला बनाना। उ० जोगी ने लड़के का सिर पेशाब से मूड़ दिया।

पेसोपेश करना–असमंजस करना, दुविधा में पड़ना। उ० पेसोपेश करने से काम न चलेगा, जल्दी कुछ तय करो।

पेसोपेश में पड़ना–दे० 'पेसोपेश करना'।

पैग बढ़ाना–जान-पहचान बढाना। उ० ऐसे आदमियो मे पैग बढाने से कोई लाभ नही।

पैंड़ा देखना–आश्रय या सहारा देखना।

पैंड़ा मारना–दे० 'पीछे पडना'।

पैंड़े पड़ना–दे० 'पैंडा मारना'।

पैग़ाम डालना–सबंध करने की बातचीत करना। रिश्तेदारी करने की खबर भेजना।

पैंतरा दिखाना–नयी-नयी युक्ति दिखाना।

पैर के तलवे चाटना–खुशामद करना।

पैंतरा बदलना–१. कुश्ती लडने के ढंग से इधर-उधर पैर रखना। उ० अभी तो पैंतरा बदलना सीख रहा है। २ चाल चलना। उ० मेरे साथ पैंतरा न बदलो, नही तो ठीक कर दूंगा।

पैंतरे बदल कर चलना–बनकर या ऐंठ कर चलना। उ० केवल साल भर से तो कसरत करता है; पर पैंतरे बदल कर चलने लगा है।

पैज पड़ जाना–ज़िद्द हो जाना। उ० उसे वहाँ जाने की पैज पड़ गई है।

पैदा करना–१. जन्म देना। उ० उसने चार पुत्र पैदा किये। २. कमाना। उ० लाखो पैदा किया, पर सब चला गया।

पैदा होना–आय होना। उ० आजकल खेती से बड़ी पैदा है।

पैबंद लगाना–१. बात सुधारना। उ० जब मै बाहर गया, पैबंद लगाना खूब सीख लिया है। २. फटे कपड़े में दूसरा कपड़ा जोड़ कर सीना। उ० धोती में पैबंद लगाओ। ३. बात बढ़ाना या बढ़ाकर कहना। उ० कृपा कर पैबन्द न लगाइए।

पैमाना भर जाना–आयु के दिन पूरे होना। उ० बेचारे का पैमाना भर गया है, अब तो दो-चार दिन का मेहमान है।

पैर आँख से लगाना–आदर करना।

पैर उखड़ना–न ठहर सकना, भागना। उ० दुश्मनों के आगे उसके पैर उखड गए।

पैर ऊँचे-नीचे पड़ना–अनुचित काम करना।

पैर का धोवन भी न होना–मुकाबिले में कुछ भी न होना। उ० आप तो उसके पैर के धोवन भी नहीं है।

पैर का धोवन होना–मुकाबिले में बहुत छोटा होना। उ० विद्वता में वह आपके पैर का धोवन है।

पैर की ठोकर खाना–उपेक्षित और अपमानित होना।

पैर की जंजीर होना–बन्धन होना।

पैर की जूती होना–तुच्छ होना।

पैर कीचड़ मे फंसना–बुरे कार्य मे फसना।

पैर की धूल झाड़ना–सेवा करना, खुशामद करना। उ० उसके पैर की धूल चौबीस घंटे झाड़ो, पर वह तुम्हारा काम करने का नहीं।

पैर की धूल भी न होना–दे० 'पैर का धोवन भी न होना'।

पैर की धूल होना–अपेक्षाकृत बहुत नीचा कम या तुच्छ होना। उ० वह तो तुम्हारे पैर की धूल है।

पैर छाँदना–जाने से रोकना। उ० पैर न छाँदो, वहाँ बड़ा जरूरी काम है।

पैर छुटना–मासिकधर्म के समय रजस्राव अधिक मात्रा में होना। उ० उसके पैर छूट रहे हैं।

पैर पटकना–बहुत प्रयास करना, बहुत दौड़ना। उ० कितना भी पैर पटको, वह रतन तुम्हें मिलने से रहा।

पैर पर सिर रखना–दे० 'पाँव पर सिर रखना'।

पैर में सनीचर होना–दिन-रात चलने वाला होना। उ० तुम्हारे पैर मे सनीचर है, जब सुनो, कहीं गए हैं।

पैर से जा लगना–पाँव में सर रखना। दीनता दिखाना। उ० वह उसे देखते ही पैरों से जा लगा, पर उसे जरा भी दया नहीं आई।

पैर सौर से बाहर निकालना–सामर्थ्य से बाहर जाना।

पैर हवा में पड़ना–बहुत खुश होना।

पैरा हुआ–चतुर, पारगत। उ० नेहरू विदेशी नीति में पैरे हुए है, धोखा नहीं खा सकते।

पैरों के नीचे से जमीन खिसक जाना–अप्रत्याशित घटना से हक्का-बक्का रह जाना।

पैरों तले गंगा बहाना–बहुत समृद्ध होना।

पैरों तले घास न जमने देना–विलम्ब न करना।

पैरो में पर लगना–दे० 'पाँव में पर लगना'।

पैरों मे बेड़ी डाल देना या डालना–१. कड़ा निरीक्षण करना। उ० उसने तो सारे परिवार वालो के पैरो मे बेडी डाल दी है। २. कहीं आने-जाने न देना।

पैरों में मेहदी लगाना–दे० 'पाँव मे मेहदी लगाना'।

पैसा उठना–खर्च होना। उ० मेरा तो इतना पैसा उठना है कि मै आश्चर्य मे पड जाता हूँ।

पैसा उठाना–खर्च करना। उ० प्रतिष्ठा के लिए तो वह पैसा उठाने मे जरा भी नही हिचकता।

पैसा कमाना–धन कमाना। उ० उसने घूस लेकर खूब पैसे कमाये।

पैसा खींचना–१. दूसरे से धन लेकर इकट्ठा करना। उ० तुम्हारी अनुपस्थिति में वह खूब पैसा खींचता है। २. पैसा लेना। उ० पैसा खीचने मे वह बड़ा होशियार है।

पैसा जोड़ कौडी पकड़ होना–धन एकत्र करने वाला, कजूस होना।

पैसा डूबना–नुकसान होना। उ० इस साल बड़ा पैसा डूब गया।

पैसा ढो ले जाना–१. एक देश की सपत्ति दूसरे देश मे ले जाना। उ० अंग्रेज भारत का बड़ा पैसा ढोकर ले गए। २. धन चुरा ले जाना।

पैसा धोकर उठाना–१. पूजा के लिए पैसा पवित्र करके अलग रखना। उ० मन्दिर के पुजारी ने पैसा धोकर उठाया। २. सच्चाई से पैसा पैदा करना। उ० पैसा धोकर उठाया करो, नहीं तो अंग न लगेगा।

पैसा-पैसा करना–धन के लिए चिंता करना। उ० कुछ करना तो चाहता नहीं है, केवल पैसा-पैसा करने से पैसा कहाँ से आ सकता है।

पैसा लगाना–व्यापार में धन खर्च करना। उ० इस साल फिर मैंने काफ़ी पैसे लगाये।

पैसा समेटना–खूब धन कमाना। उ० आजकल वह व्यापार में खूब पैसा समेट रहा है।

पैसे की गर्मी होना–धन के कारण घमंड होना।

पैसे के तीन धेले भुनाना–१. मितव्ययिता से काम चलाना। उ० आमदनी कम है और खर्च ज्यादा, बेचारा पैसे के तीन धेले भुनाकर काम चलता है। २. कजूसी करना।

पैसे पर रख कर बोटियाँ उड़ाना–बहुत कष्ट देना। उ० अंग्रेज़ों ने पैसे पर रख कर भारतीयों की बोटियाँ उड़ाई।

पैसे-पैसे को तरसना–निर्धन होना। उ० उससे क्या माँगते हो, वह तो स्वयं पैसे-पैसे को तरसता है।

पोंछ उखाड़ना–न कर पाना। उ० उसे पकड़ने चले हो? उसकी तो तुम पोंछ उखाड़ोगे।

पों बोलना–१. दीवाला होना। उ० कलकत्ता बैंक ने पों बोल दिया। २. हार मानना। उ० दो ही प्रश्न पूछने में तो उसने पों बोल दिया।

पोक्टर खुलना–समझ में आना, दिमाग में चीज बैठाना। उ० राम औतार का पोक्टर खुल गया है। अब वह पास हो जायगा।

पोटा तर होना–धन-दौलत की तरफ़ से बेफ़िक्र होना। खुशहाल होना। उ० उसका तो पोटा तर है, वह क्यों चिंतित हो?

पोटी दूह लेना–१. कमज़ोर या बेकार बना देना, खोखला बना देना। २. नष्ट कर देना। उ० जब भरम की दूह ली पोटी गई लाज चोटी की नहीं जब रख सके।

पोढ़ा आसामी–धनवान।

पोत पूरा करना–पूरा लगान देना। उ० कुछ भी हो, जमींदार का पोत तो पूरा करना ही है।

पोत पूरा होना–कमी पूरी होना। उ० अभी तो पिछले घाटे का ही पोत पूरा न हुआ।

पोता फेरना–नष्ट-भ्रष्ट करना। उ० तैमूर ने दिल्ली पर पोता फेर दिया।

पोथी पर बेठन–१. जो अधिक लिखा-पढ़ा न हो। उ० भारत के अधिकांश लोग तो पोथी के बेठन हैं। २. पुस्तक या विद्या पास रहने पर भी मूर्ख रहने वाला व्यक्ति। उ० वह तो पोथी का बेठन है।

पोदना-सा–छोटा-सा। उ० पोदना-सा तो है, पर बात बूढ़ों की तरह करता है।

पोप लीला होना–पाखंड होना, दिखावा होना।

पोल खोलना या खुल जाना–भडाफोड़ होना। उ० सारे रहस्य की पोल आज एक क्षण में खुल गई।

पोल खोलना–रहस्य बताना। भडा फोड़ना। उ० सारी पोल केवल तुमने खोल दी।

पोले तले गुज़रान करना–झोपड़े में रहना, मुसीबत में जीवन व्यतीत करना।

पोशाक बढ़ाना–कपड़े उतारना, लिबास उतारना।

पौन चलाना या मारना–जादू करना या मारना। उ० पौन चला कर उसने अनेक खेल दिखाये।

पौन बिठाना–किसी के गले भूत लगाना। दूसरे का भूत दूसरे पर लगाना।

पौने सोलह आना–करीब-करीब, अधिकांशतः। उ० पौने सोलह आने आशा है कि वह नहीं आएगा।

पौ फटना–सवेरा होना। उ० पौ फटते ही मैं आ जाऊँगा।

पौ बारह पड़ना–विजय का मौका आना, जीत का दाँव पड़ना।

पौ बारह होना–१. जीत होना, बन आना। उ० तुम्हारी तो पौ बारह है। २. जीत का दाँव पड़ना। उ० पौ बारह हो तो अपने को भाग्यशाली समझना।

प्याज के-से छिलके उतार कर रख देना–बुरी हालत बना देना। उ० अधिक बोले तो प्याज के-से छिलके उतार कर रख दूँगा।

प्यादे से फ़रज़ी होना–छोटे पद से उठकर बड़े पद पर प्रतिष्ठित होना।

प्याला देना–मद्य पिलाना। उ० साहब को प्याला दो।

प्याला पीना–१. मद्यपान करना। उ० वह तो रोज ही प्याला पीता है। २. विषपान करना। उ० वह प्याला पीकर मर गया। मीरा पर प्याला पीने का असर ही नहीं हुआ।

प्याला बहना–दे० 'पेट गिरना'।

प्याला भर जाना या भरना–१. हद हो जाना। सीमा पार कर जाना। उ० रावण के पाप का प्याला भर गया था। २ मृत्यु का दिन आना। उ० अब तो इस वृद्ध का प्याला भर गया।

प्यास बुझाना–१ पानी पीना। उ० मैंने ठंडे पानी से प्यास बुझाई। २ जलन ठंडी करना। उ० बिना भगवान के मेरी प्यास कोई नहीं बुझा सकता।

प्यास मरना–१ मरते वक्त पानी तक न मिलना। उ० उसके कौन था? बेचारा प्यासा मर गया। २. तरसते हुए मरना। उ० वह तुम्हारे दर्शन का प्यासा मरा।

प्यास मारना–पानी पीने की इच्छा को रोकना। उ० गर्मी का दिन है, प्यास न मारो।

प्यास लगना–पानी पीने की इच्छा होना। उ० मुझे प्यास लगी है।

प्यासा होना–तीव्र इच्छा वाली होना।

प्रकाश डालना–विवेचन करना, समझाना। [यह अंग्रेजी मुहावरा To throw Light का अनुवाद है।] उ० सबसे पहले प्रो० शांडिल्य इस विषय पर प्रकाश डालेंगे।

प्रण रखना–प्रतिज्ञा पूरी करना।

प्रतीति खाना–विश्वास करना।

प्रथम श्रेणी का–बहुत अच्छा। [यह अंग्रेज़ी First class का अनुवाद है।] उ० उसके कपड़े प्रथम श्रेणी के थे।

प्रपंच फैलाना–ढोंग बनाना। उ० उसने ऐसा प्रपंच फैलाया कि सभी ने विश्वास कर लिया।

प्रश्नों की झड़ी लगना–बहुत से प्रश्न खड़े होना।

प्रसाद पाना–१ भोजन करना। उ० अभी प्रसाद पाए या नहीं? २ परिणाम मिलना। उ० किए का अच्छा प्रसाद मिला। ३ भगवान के भोग लगाये खाद्य पदार्थ में से पाना। उ० कथा हो गई, अब प्रसाद पाओगे।

प्रस्थान धरना या धर देना–जाने के लिए शकुन रखना। उ० कल दिक्शूल है, अतः आज ही प्रस्थान धर दिया।

प्राण अरगाना–प्राण सूखना। उ० शेर को देखते ही उसका प्राण अरगा गया।

प्राण उड़ जाना–१ अत्यंत भयभीत हो जाना। उ० बाढ़ का दृश्य देखकर तो प्राण उड़ गए। २. देखकर हक्का-बक्का रह जाना। उ० उन्हें देखकर तो मेरे प्राण उड़ गए।

प्राण कंठगत होना–दे० 'प्राण कंठ में होना'।

प्राण कंठ में होना या आना–मरणासन्न होना। उ० मुँह में तुलसीदल डाल दो, उसके प्राण कंठ में है।

प्राण खाना–परेशान करना। उ० मेरा प्राण न खाओ, कुछ काम करने दो।

प्राण गले को आना–दे० 'प्राण मुँह को आना'।

प्राण छुटाना–जान छुड़ाना। उ० किसी तरह प्राण छुटा कर भागा।

प्राण छूटना–दे० 'शरीर छूटना'।

प्राण छोड़ना–मर जाना। उ० स्वतंत्रता संग्राम में अनेकों वीरों ने प्राण छोड़े।

प्राण जाना या निकलना–मर जाना। उ० देखते ही देखते प्राण निकल गया।

प्राण जुड़ाना–मन को सुख पहुँचाना।

प्राण डालना या डाल देना–१ जीवन दान देना। २ जीवित-सा बनाना। उ० चित्रकार ने तो इस चित्र में प्राण डाल दिया है।

प्राण त्यागना–दे० 'प्राण छोड़ना'।

प्राण देना–१ बहुत प्यार करना। उ० वह तो अपने बच्चों पर प्राण देता है। २ मर जाना। उ० बेइज्जती उठाने से प्राण दे देना अच्छा है। ३. कुर्बान होना। उ० मैं देश पर प्राण देने को तैयार हूँ।

प्राणपण से–जी-जान से। उ० आप धीरज धरिये, मैं प्राणपण से आपकी सहायता करूँगा।

प्राण पयाण होना–दे० 'प्राण छोड़ना'।

प्राण बचाना–१. दे० 'जान छुड़ाना'। २. रक्षा करना। उ० उसका प्राण बचाओ, नहीं तो मर जायगा।

प्राण मुँह को आना–१. दे० 'प्राण कंठ में होना'। २. अति कष्ट उठाना। उ० इन गरीबों के तो प्राण मुँह में आ गए है।

प्राण मुट्ठी में लिए रहना–दे० 'प्राण हथेली पर लेना'।

प्राण में प्राण आना–भय दूर होना। उ० निर्जन बन में कुछ साथियों को मैंने देखा तो प्राण में प्राण आया।

प्राण रखना–मृत्यु से बचना। उ० उसकी दवा ने मेरा प्राण रखा।

प्राण लेकर भागना–जान बचा कर भागना। उ० राजपूत लड़ाई से प्राण लेकर नहीं भागते।

प्राण लेना या ले लेना–१ मार डालना । उ० शिकारी ने चिड़िया का प्राण ले लिया । २. कष्ट देना । उ० मेरे प्राण मत लो ।

प्राण हथेली पर लेना–मृत्यु के लिए तैयार रहना । उ० प्रताप ने स्वतन्त्रता के लिए प्राण हथेली पर लिया था ।

प्राण हरना–मारना । उ० जब प्राणदान का अधिकार नहीं है तो प्राण हरने का अधिकार कैसे ?

प्राण हारना–१ पचत्व मे मिलना । उ० रानी सौरंध्री ने इज्जत के लिए प्राण तक हारा । २ साहसहीन होना । उ० आगे बढ़ो, प्राण हारने से काम नहीं चलेगा ।

प्राणों पर आ पड़ना या बनना–जान खतरे मे पड़ना । उ० उस दिन के युद्ध मे प्राणो पर आ बनी थी ।

प्राणों पर खेलना–मृत्यु की परवाह न करना । उ० वह तो सदा प्राणो पर खेलता है ।

प्राणों से हाथ धोना–मर जाना । उ० शेर से भिड़ कर उसने प्राणो से हाथ धोया ।

प्राप्त होना–मिलना । उ० आज तो कुछ भी प्राप्त न हुआ ।

प्रीति की बेल बोना–प्रेम करना ।

प्रूफ़ उठाना–कपोज़ करने के बाद सही-गलती देखने के लिए कागज पर छापना । उ० प्रूफ़ उठा कर लेखक के पास भेजो ।

प्रेम की डोर में बंधना–स्नेह के वशीभूत होना ।

प्रेम के प्यासे होना–स्नेह की तीव्र इच्छा होना ।

प्रेम सुख से फूले होना–स्नेह से परिपूर्ण होना ।

प्रेम से दग्ध होना–प्रेम से पीड़ित होना ।

प्रेम में पगना–प्रेम मे बँधना ।

फ

फंक करना–दे० 'फका करना' ।

फंक मारना–दे० 'फका मारना' ।

फंका करना–नष्ट करना । उ० उसने बाप-दादो की सब जायदाद फका कर डाला ।

फंका मारना–१ मुह मे फका डालना । उ० उसका इतना बडा मुँह है कि पाव-पाव भर दाने का एक एक फका मारता है । २ मुँह मे फकी डालना ।

फंकी देना–१. दवा देना । उ० वे फकी देते है । २ पेट आदि की बीमारियो मे चूर्ण देना । उ० पेट में बड़ा दर्द है, एक फकी दे दो ।

फंद कटना–१ बधन कटना । उ० किसी तरह फद कटा तो । २ पीछा छूटना । उ० भाई, कोई ऐसा उपाय करो कि इस दुष्ट से फद कटे ।

फंद काटना–१. दुःख दूर करना । २. पीछा छुड़ाना । ३. मुक्ति देना । उ० भगवान् ही फंद काटेंगे ।

फंदा देना–दे० 'फदा लगाना' ।

फंदा पड़ना–फँसाने के लिए जाल का फेका जाना । उ० तुम पर फंदा पड़ने वाला है, जरा होशियारी से रहो ।

फंदा लगना–१ धोखा चल जाना । उ० अगर इस बार फंदा लग गया तो अवश्य ही जीत जाऊँगा । २. जाल लगना । उ० फदा लग रहा है. देखो कुछ चिड़ियाँ मिलेंगी ही ।

फंदा लगाना–१. जाल लगाना । उ० ऐसा फदा लगाया है कि निकल कर जा नही सकते । २ गाँठ लगाना । उ० इस रस्सी मे एक फदा लगा दो ।

फंदे में पड़ना–१ धोखे मे पड़ना । उ० इनका आपके फदे मे पडना बड़ा कठिन है । २. वशीभूत होना । उ० अब आप मेरे फदे मे पडे । ३ आफ़त या सकट मे पड़ना । उ० मै गजब के फंदे मे पड़ा हूँ ।

फंदे में फँसना–दे० 'फदे मे पड़ना' ।

फँसना–१. प्रेम होना, स्त्री-पुरुष का अनैतिक सबध होना । उ० लडका उससे फँस गया है, इसी से रोजाना जाता है । २ धोखे मे आना ।

फक करना–छुडाना । उ० उसे इस मुकदमे से फक करना किसी के मान का नही है ।

फक़ पड़ जाना–दे० 'फक हो जाना' ।

फक़ रहना–बंधन से मुक्त रहना । उ० मेरे लिए फक़ रहना बडा मुश्किल है ।

फक़ हो जाना–घबरा जाना । चेहरे का रग उड जाना । उ० मुझे देखते ही वह फक़ हो जाता है ।

फ़क़ीर होना या हो जाना–१. गरीब होना । उ० शराबखोरी तथा जुआ मे वह फक़ीर हो

गया। २. साधू हो जाना। उ० अब उसे दुनिया से क्या मतलब ? वह तो फ़क़ीर हो गया है।

फक्कड़ लड़ना–गाली-गलौज करना।

फक्कड़ होना–१ मस्त होना। उ० घर के सभी मर गए, अब फक्कड़ होकर घूम रहा हूँ। २. अकेला होना। ३. बदज़बान होना। मस्ती में कुछ भी कह देने वाला होना। ४. बेहद हँसी होना।

फगुआ खेलना–१. होली मे रंग आदि एक-दूसरे पर डालना। उ० मै आज आपके यहाँ फगुआ खेलने आया हूँ। २. शादी मे एक रस्म करना, जिसमे वर-पक्ष के लोग वधू-पक्ष पर गुलाब जल या रंग से फाग खेलते है और कुछ रुपये पाते हैं।

फ़ज़ीलत की पगड़ी–बहुत विद्वान् होने का चिह्न। उ० उसकी फ़ज़ीलत की पगड़ी देख कर बडे-बडे डर जाते है।

फ़ज़ीलत की पगडी बाँधना–१. बड़प्पन या श्रेष्ठता का चिह्न अपने साथ रखना। उ० वह फज़ीलत की पगडी बाँधे फिरता है। २. बहुत बुजुर्ग होना।

फज़ीहत करना–दुर्दशा करना। उ० आपने तो उसकी बडी फ़ज़ीहत की।

फ़ज़ीहत होना–दुर्दशा होना। उ० उसकी बड़ी फ़ज़ीहत हो रही है।

फटकना-पछोरना–सूप से अनाज साफ़ करना। उ० फटक-पछोर कर चावल साफ़ कर दो।

फटकने न देना–पास न आने देना।

फटका करना–फुर्ती करना। उ० फटका कर भई, शाम को यह काम दे देना है।

फटका जोड़ना–तुकबदी करना। उ० फटका तो सभी जोड़ सकते है, पर कविता करने वाले इने-गिने ही होते है।

फटका न खाना–तुरन्त मर जाना।

फटकाना खाना–तुरन्त मर जाना। तड़पने का भी मौक़ा न मिलना।

फटकार खाना–डाँट खाना। डाँटा-डपटा जाना। उ० दिन-रात फटकार खाना तुम्हें कैसे अच्छा लगता है ?

फटकार बताना–भला-बुरा कहना। उ० तुम्हें रोज फटकार बताता है, फिर भी अपनी आदतों से बाज नही आते!

फटकार बरसना–१. गाली-गलौज होना। उ० दोनों भाइयों में खूब फटकार बरसी। २. खूब डाँटा जाना। उ० आज तो उन पर ऐसी फटकार बरसी कि छठी का दूध याद आ गया होगा।

फटके चलना–१. अरुचि दिखाना। २. दूर या अलग रहना। उ० दुष्ट आदमियों से फटके चलो।

फट पड़ना–१. एकाएक क्रोध आना। उ० वह मुझे देखते ही फट पड़ा। २. सहसा पहुँचना। उ० आप कहाँ से फट पड़े ?

फटफट होना–१. झगड़ा होना। उ० दोनो भाइयो मे आज खूब फटफट हुई। २. दुर्दशा होना। उ० अब तक तो अकेले थे, कोई बात नही थी, अब बीबी आ गई, ऐसी फटफट होगी कि याद करोगे।

फट से–झट, तुरन्त। उ० फट से यह काम कर डालो तो और काम दूँ।

फटा जाना–बहुत अधिक कष्ट होना। उ० मेरा फोड़ा दर्द से फटा जा रहा है।

फटा पड़ना–१ जल्दी मोटा होना। २. किसी बात का अधिकता से होना। बहुत अधिक होना। उ० हुस्न फटा पड़ रहा है।

फटा-फटा रहना–उदासीन रहना।

फटियल रहना–१. फटे-चिथड़े पहने रहना। उ० वह सर्वदा फटियल रहता है। २. अलग रहना। उ० वह हम लोगों से फटियल रहता है। ३. पागल की तरह गंदा, मस्त, फटेहाल और गरीबी की हालत मे रहना।

फटी हालत होना–बुरी दशा होना।

फटे बाँस-सा स्वर–मोटी और कटु आवाज।

फटे में पाँव देना–दूसरे के झगड़े में पड़ना। उ० अगर इनके फटे में पाँव दोगे तो तुम भी मार खा जाओगे।

फटेहाल होना–दरिद्र होना। बुरी दशा मे होना। उ० वह बेचारा आजकल फटेहाल हो गया है, नहीं तो कभी दरवाज़े पर हाथी झूमते थे।

फटेहाल रहना–दे० 'फटेहाल होना'।

फट्ठा उलटना–दे० 'फट्ठा लौटना'।

फट्ठा लौटना या लौट जाना–दीवाला निकालना। उ० उस बैंक का आज फट्ठा लौट गया।

फड़क उठना–१. प्रसन्न होना । उ० वह मुझे देख कर फड़क उठता है। २. जोश मे आना या उत्तेजित होना । उ० उसकी कविता सुन कर लोग फड़क उठे।

फड़क जाना–१. मोहित होना। २. पुरजोश होना, उत्तेजित होना । ३ बेचैन होना । ४. खुश होना।

फ़तूर उठाना–दे० 'फतूर खड़ा करना'।

फ़तूर खड़ा करना–खुराफात या उपद्रव खड़ा करना । उ० क्यो हमेशा फतूर खड़ा करते रहते हो ?

फफक कर रोना–फूट-फूट कर रोना ।

फफूंदी लगना–नमी के कारण सफेदी जम जाना । उ० गम से हुए है बाल हमारे सफ़ेद 'बहर', सर को फफूंदी लग गई आँखो की सील से ।

फफोले फूटना–दिल की जलन निकलना । उ० वह हार गया, अब तो शायद तुम्हारे फफोले फूट गए होंगे ।

फफोले फोड़ना–१. दिल की जलन प्रकट करना। उ० क्यो फफोले फोड़ते हो, कोई भी तुम्हारे लिए कुछ करेगा नही, उलटे लोग हँसेंगे । २. दिल को शात करना ।

फफस होना-देखने मे मोटा-ताजा पर बलहीन होना । उ० वह फफस है, उससे आप ज़रा भी न डरे।

फब जाना–१ सुन्दर लगना । उ० कोट आप-को खूब फबा। २. अवसर के उपयुक्त लगना । उ० उसका कहा ऐसा फब जाता है कि तबीयत खुश हो जाती है।

फबती उड़ाना–हँसी उडाना । उ० भरी सभा मे उसकी फबती उड़ाना ठीक नहीं ।

फबती कसना–दे० 'फबती कहना'।

फबती कहना–१. मज़ाक मे लगने वाली बात कहना । चुभने वाला व्यंग्य करना । उ० अगर उस दिन की तरह फिर फबती कहोगे तो उससे लड़ाई हो जायगी । २ मौके की बात कहना। उ० ऐसी फबती कहता है कि सुनने वाले दंग रह जाते है।

फरंट होना–१. दे० 'छूमतर होना'। २. बद-दिमाग होना । ३ खिलाफ़ होना ।

फ़रक़-फ़रक़ होना–दूर-दूर होना । उ० उसके बगीचे के पेड़ फ़रक़-फ़रक़ हैं।

फरना-फूलना–१. दूध-पूत से या धन-धान्य और संतान से पूर्ण होना। २. सफल मनोरथ होना । उ० भगवान करें तुम फरो-फूलो।

फरफंद दिखाना–नखरा या चोचला दिखाना। उ० स्त्रियाँ फरफद दिखाना खूब जानती हैं।

फरफंद रचना–माया फैलाना । छल-कपट फैलाना । उ० उसे फरफंद रचना खूब आता है।

फरागत करना–१. पूरा करना । उ० उस काम को फरागत करके यहाँ से जाना । २. पाखाना करना ।

फरागत जाना–पाखाने जाना ।

फरागत पाना–छुटकारा पाना । उ० इस कलक से फरागत पाना बड़ा कठिन है।

फरागत होना–१ निश्चित होना । उ० आपका पत्र मिल गया, अब मैं फरागत हो गया। २. पाखाना होना । उ० मैं फरागत होने जा रहा हूँ । ३ मुक्त होना ।

फ़रार होना––चल देना, पुलिस आदि से छिप कर भग जाना । उ० चोर सिपाही को देखते ही फरार हो गया।

फ़रेब करना–धोखा करना ।

फ़रेब देना–धोखा देना । उ० वह फरेब देकर मुझसे रुपये ऐंठना चाहता था।

फ़रोख्त करना–बेचना । उ० वह सडको पर तरकारी फ़रोख्त करता है।

फ़र्क करना–१ भेद करना, आपस मे। उ० मेरे परिवार मे लोग किसी बात का फ़र्क नही करते । २ श्रेणी बनाना, अलग-अलग करना । उ० फ़र्क करके सारा सामान रख दो । ३. अलग करना, हटाना । उ० फ़र्क करो ऐसे आदमी को।

फ़र्क पड़ना–१. अन्तर पड़ना । उ० इस रास्ते से जाने मे तुम्हें काफी फ़र्क पड़ेगा । २ मन-मोटाव या विरोध होना, अन्तर आना । उ० कल तक तो दोनो दाँतकाटी रोटी खाते थे, आज ज़रा-सी बात पर फ़र्क पडा तो एक-दूसरे के प्राण के भूखे हो रहे है।

फ़र्ज़ करना–१. कल्पना करना । उ० फ़र्ज करो कि वह न आया तो क्या होगा ? २. आज्ञा देना या तरीका बताना । ३. कर्तव्य का पालन करना।

फ़र्ज़ी होना–जाली होना । उ० यह रसीद फ़र्ज़ी होगी तो तुम जानना ।

फ़र्द में नाम चढ़ना–लिस्ट मे नाम लिखना। उ० बारातियों की फ़र्द मे उसका भी नाम चढ़ा दो।

फ़र्द में नाम लिखना–दे० 'फर्द मे नाम चढ़ाना'।

फ़र्माइश करना–कोई वस्तु माँगना। किसी वस्तु के बनवाने का आर्डर देना। उ० एक अच्छी पलग की फर्माइश कर दो, उसका गवना इसी महीने होगा।

फ़र्माइशी करना–जूतो से मार खाना।

फ़र्याद करना–१ निर्णय देना। उ० इस मुकदमे की फर्याद वे ही करेगे। २. शिकायत करना। उ० बिना फ़र्याद किए इसमे कुछ न होगा। ३. न्याय करना।

फर्राटा भरना–दे० 'फर्राटा मारना'।

फर्राटा मारना–तेज़ी से दौड़ना। उ० चोर पुलिस को देख कर फर्राटा मारते हुए निकल गया।

फ़र्श कर देना–मारपीट कर जमीन पर गिरा देना। उ० बदतमीज़ कही का। चुप रहो नही तो फर्श कर दूँगा, तू अभी मेरे गुस्से को जानता नही।

फ़र्शी सलाम–खूब झुक कर किया जाने वाला सलाम।

फल आना–फल निकलना। उ० इस पेड मे हर साल काफी फल आते है।

फल का पड़ना–फफोले पडना।

फल खाना–परिणाम भुगतना। उ० जैसा पेड़ लगाया है, वैसा फल खाओ, इसमे किसी का क्या बस ?

फल जाना–१ छोटे-छोटे दाने निकलना। उ० गर्मी मे देह दानो से फल जाती है। २ फल लगना। उ० आम पेड़ मे फल गए होगे।

फलना-फूलना–दे० 'फरना-फूलना'।

फल पाना–दे० 'फल मिलना'।

फल मिलना–किए का फल पाना, परिणाम भुगतना। उ० जो इन गरीबो को सतायेगा उसका फल उसे अवश्य मिलेगा। काँटे तो तुमने बोये, उसका फल किसे मिलेगा ?

फलाँग भरना–कूदना, उछलना। उ० वह फलाँग भरता हुआ निकल गया।

फलाँगमारना–दे० 'फलाँग भरना'।

फली के दो टूक करना–१. नाता तोड़ना। लगाव न रखना। उ० उससे फली के दो टूक ही करना अच्छा है। २. कुछ न करने के बराबर काम करना।

फसकड़ा मारना–१. पलथी मारना। उ० फसकड़ा मार कर बैठने आए हो या कुछ करने। २. बेहूदगी से बैठना।

फ़सद खुलवाना–दे० 'सिर खुलवाना'।

फ़सली बुख़ार–मौसम के कारण आने वाला बुखार।

फ़साद उठाना–दे० 'फ़साद खड़ा करना'।

फ़साद करना–झगडा-फ़साद करना।

फ़साद खड़ा करना–झगड़ा उठाना। उ० तुम्हारा काम तो बस फ़साद खड़ा करना है।

फ़साद दबना–झगडे का दब जाना। उ० फ़साद दबे तो कुछ किया जाय।

फ़साद मचाना–दे० 'फ़साद खड़ा करना'।

फ़स्द लेना–दे० 'फ़स्द खुलवाना'।

फ़स्द खुलवाना–१. शरीर से दूषित रक्त निकलवाना। २ पागलपन की चिकित्सा करवाना।

फ़हमाइस करना–१. आज्ञा देना। २. उपदेश देना।

फ़ाक़ा करना–उपवास करना, भोजन न करना। उ० आज तीन दिन से फ़ाक़ा कर रहा हूँ।

फ़ाक़ा मारना–किसी चीज़ को फाँकना। उ० इस दवा को फाँका मार कर पानी पी लेना।

फाँड़ा कसना–दे० 'फाँड़ा बाँधना'।

फ़ाँड़ा पकड़ना–आदमी को इस तरह पकड़ना कि भगने न पाये।

फाँड़ा बाँधना–कटिबद्ध होना। उ० फाड़ा बाँध कर चलो और उसे पूरा करके ही आया जायगा।

फाँद मारना–कबूतर को फ़दे के ज़रिए पकड़ना।

फाँद लगाना–दे० 'फाँद मारना'।

फाँस गड़ना–दे० 'फाँस चुभना'।

फाँस चुभना–किसी बात का दिल मे चुभना। उ० उस दिन उसके दिल मे ऐसी फाँस चुभी कि आज तक इधर नही आया।

फाँस निकलना—१. कंटक दूर होना । उ० बड़ी मुश्किल से फाँस निकला है, अब फिर मैं वहाँ न जाऊँगा । २. चुभने वाली बात का दूर होना ।

फाँस निकालना या निकाल देना—१. कंटक दूर करना । उ० अगर यह फाँस निकाल दो तो मैं जीवन भर एहसान न भूलूँ । २. चुभी बात को भूल जाना या दिल से निकाल देना ।

फाँस लगना—दे० 'फाँस चुभना' ।

फाँस लाना—फँसा लाना, पकड़ लाना, गिरफ़्तार कर लाना । धोखा से ले आना । उ० उसे किसी तरह फाँस लाओ ।

फाँसी खड़ी होना—जान का डर होना । उ० मेरे लिये तो वहाँ फाँसी खड़ी है, मैं वहाँ न जाऊँगा ।

फाँसी चढ़ना—फाँसी द्वारा मारा जाना ।

फाँसी चढ़ाना—१. गले में फंदा डाल कर या अन्य ढंग से प्राण लेना । २. प्राणदण्ड देना । ३. बहुत कष्ट देना । उ० फाँसी नहीं चढ़ायेंगे कि झूठ बोलूँ ।

फाँसी देना—दे० 'फाँसी चढ़ाना' ।

फ़ाक़ा पड़ना—उपवास होना । उ० आज कई दिन से फ़ाक़ा पड़ रहा है, जाने कब अन्न के दर्शन होंगे ?

फ़ाक़े मस्त होना—दरिद्रता में भी प्रसन्न रहना ।

फ़ाक़ों का मारा—बहुत भूखा । भूख से मरता हुआ । उ० दरवाजे पर एक फ़ाकों का मारा आदमी आया है, उसे कुछ खिला दो ।

फ़ाक़ों मरना—भूखों मरना । उ० इस अकाल में लाखों आदमी फ़ाक़ों मर गये ।

फाड़ खाना—१. चिड़चिड़ाना । २. टुकड़े करना । ३ बहुत क्रोधित होकर बोलना । ४. चीरफाड़ कर खाना । उ० शेर फाड़ खाने को दौड़ा ।

फाड़ खाने को दौड़ना—१ काटने को दौड़ना । २ झल्लाना, बहुत क्रोधित होना । उ० जब भी बात करो, वह फाड़ खाने को दौड़ता है ।

फाफाकुटनी—इधर की बात उधर करने वाली स्त्री । उ० यह फाफाकुटनी है, इससे होशियार रहना, नहीं तो झगड़ा लगा देगी ।

फ़ायदे का—लाभदायक । उ० यह पुस्तक आपके फ़ायदे की है, इसे अवश्य पढ़िये ।

फारखती लिखना—बेबाकी की रसीद लिखना । उ० रुपये पा गए, अब फारखती लिख दीजिये ।

फाल बाँधना—उछल कर लाँघना । उ० खरगोश फाल बाँधते हुए निकल गया ।

फाल भरना—क़दम रखना । उ० लम्बे-लम्बे फाल भरो, अभी बहुत दूर जाना है ।

फ़ालिज गिरना—लकवा मारना, अंग सुन्न पड़ जाना । उ० पूरे शरीर पर फालिज गिर गया है, अब उसका जीवन बेकार हो गया ।

फावड़ा चलाना—१ खेत में काम करना । उ० हम लोग दिन भर फावड़ा चलाते हैं, तिस पर भी पेट भर भोजन नहीं मिलता । २. बहुत परिश्रम करना । ३. फावड़े से ज़मीन खोदना ।

फावड़ा बजना—खुदाई होना । उ० वहाँ फावड़े बज रहे हैं ।

फावड़ा बजाना—१ खोदना । २. खोद कर गिराना ।

फाश करना—प्रकट करना, स्पष्ट करना । सब को जना देना । उ० मुझसे न बनो, नहीं तो सारा रहस्य फाश कर दूँगा ।

फिकरा कसना—कोई चुभती हुई बात कह देना ।

फ़िक्र करना—चिंता या ख्याल करना । उ० अपने स्वास्थ्य की भी फ़िक्र करो ।

फ़िक्र लगना—ख्याल बना रहना । चिन्ता बनी रहना । उ० मुझे रात-दिन आपकी फ़िक्र लगी रहती है ।

फिचकुर निकालना—बहुत परिश्रम लेना । इतना काम करना कि मुँह से झाग निकलने लगे । उ० अभी बच्चा है, काम करा कर फिचकुर न निकालो ।

फिटकार खाना—धिक्कारा जाना ।

फिटकार लगना—शाप पड़ना । उ० उसकी फिटकार लगते देर नहीं लगती ।

फिट्टा मुँह—फीका पड़ा हुआ चेहरा । उ० आज वह फिट्टा मुँह क्यों है ?

फ़ितूर खड़ा करना—दे० 'फ़तूर खड़ा करना' ।

फ़िरंट रहना—विमुख रहना ।

फिरकी का नक्कीकस—मलखंभ की एक क़सरत ।

फिर क्या है—तब क्या पूछना है ? सब ठीक है । उ० वह जा रही है और तुम जा ही रहे हो, फिर क्या है ?

फिरना–किसी ओर झुकना, बदलना। उ० उसका क्या है, जिधर चाहो फिर सकता है।

फिर पड़ना–किसी पर क्रोधित होना या बिगड कर बुरा-भला कहना। उ० आप मुझ पर क्यों फिर पड़े ?

फिर-फिर–बार-बार। कई दफा। उ० क्या फिर फिर एक ही चीज़ पूछते हो ?

फ़िराक में रहना–खोज मे रहना। उ० इस ग्राम के सब लोग उस चोर की फ़िराक मे रहते है, देखे कब तक पकड़ा जाता है।

फिसर-फिसर होना–चुपचाप सलाह होना।

फीका पिंडा होना–हलका ज्वर होना [औरत की बोली मे प्रयुक्त]।

फीका लगना–अच्छा न लगना। उ० इसके आगे सारा मजा फीका लगता है।

फीकी बात–नीरस बात।

फुटानी निकल जाना–मौज-मस्ती निकल जाना, पस्त हो जाना।

फुदकी मारना–छलाँग मारना।

फुरफुरी लेना–उड़ने को पख हिलाना। उ० चिडिया फुरफुरी ले रही है, उसे पकड़ लो, नही तो उड जायगी।

फ़ुरसत पाना–१. अवकाश पाना, छुट्टी पाना। उ० जब फ़ुरसत पाना तो ५ मिनट के लिए मेरे यहाँ भी चले आना। २ काम से छूटना। उ० आज वहाँ से फ़ुरसत पा गया।

फ़ुरसत में–खाली समय मे। उ० आपका काम मैं फुरसत मे कर दूंगा, आप घबराये नही।

फुरहरी लेना–थरथराना, काँपना। उ० उसके नाम पर फुरहरी क्यो लेते हो ? वह तुम्हारा कुछ कर नही सकता।

फुरेरी आना–रहम, खौफ़ या सरदी से रोगटे खडे होकर शरीर मे कपन आना।

फुलझड़ी–चंचल युवती। उ० कल किस फुलझड़ी को साथ लिये घूम रहे थे ?

फुलझड़ी छोड़ना–मजाक करना। उ० लो भई आते ही फुलझड़ी छोड़ दी, भई कुछ खा-पी तो लो।

फुल्लासरे में आना–१. धोखे मे आना। २. किसी के बूते पर गर्व करना।

फुसफुसी कहना–चुपके से कहना। उ० सब बातें उनसे फुसफुसी कह दिया करो।

फूंकना-तापना या फूंक-ताप डालना–बेकार खर्च कर देना। बर्बाद करना, गँवाना। उ० उसने अपने बाप-दादों की सारी जायदाद फूंक-ताप डाली।

फूंक निकल जाना–जान निकल जाना। उ० महीनों की बीमारी के बाद आज उसकी फूंक निकल गयी।

फूंक-फूंक कर पैर रखना–बहुत सावधानी से काम करना। उ० वह बहुत होशियार है, हमेशा फूंक-फूंक कर पैर रखता है।

फूंक मारना–मुंह से हवा देना। उ० आग जलाने के लिए फूंक मारा जाता है।

फूंक देना–खर्च कर डालना।

फूंक मार कर उड़ा देना–सरलता से नष्ट या समाप्त कर देना।

फूंक से पहाड़ उड़ाना–असम्भव कार्य करने का प्रयत्न करना।

फूट डालना–भेद डालना। उ० घर-घर फूट डालना ही नारद का काम था।

फूट-फटक रहना–अनबन रहना। उ० दोनो मे आजकल फूट-फटक रहती है।

फूट-फूट कर रोना–बहुत रोना। उ० वह बुढ़िया आज फूट-फूट कर रो रही थी। मालूम हो रहा है कि उसके यहाँ कोई मर गया है।

फूट बहना–रो पड़ना। उ० देखा आखिर कि न फोड़े की तरह फूट बहे, हम भरे बैठे थे क्यो आपने छेड़ा हमको।

फूट-सा खिलना–पक कर फटना। उ० अनार फट से खिले है।

फूटा भाग्य–प्रतिकूल भाग्य, अभाग्य।

फूटी आँख का तारा–बहुत प्यारा लड़का। उ० उस बुढ़िया का वह फूटी आँख का तारा था, पर वह भी आज चल बसा।

फूटी आँखों न देख सकना–जलना, कुढ़ना। उ० वह मेरे लड़के को फूटी आँखो नहीं देख सकती।

फूटी आँखों (नजरों) न भाना–बहुत बुरा लगना, तनिक भी न सुहाना। उ० अपनी चाल से वह फूटी आँखों भी नही भाता।

फूटी कौड़ी भी नहीं–एक पैसा भी नही।

फूटी ढोल की तरह गले पड़ना–अनचाहा बोझ बनना।

फूटी सहना आंजी न सहना–सर्वनाश सह लेना, पर कष्ट न सह पाना।

फूटे मुँह से न बोलना–दो बात भी न करना। कटे-कटे रहना। न चाहना। उ० क्या बात हो गई है कि वह तुझसे फूटे मुँह से भी नही बोलता।

फूल–शव जलाने के बाद बचा अवशेष। उ० उसका फूल प्रयाग लाया जा रहा है।

फूल आना–फूल लगना। उ० पेडो मे फूल आ रहे है।

फूल उठना–मुसलमानों में किसी की मौत के तीसरे दिन बाद 'सोम की फातहा' का अदा होना।

फूल उतारना–फूल तोड़ना। उ० पूजा के लिए फूल उतार कर ले आओ।

फूल कर कुप्पा होना–दे० 'फूल कर नक़्क़ारा होना'।

फूल कर तुम्मा होना–दे० 'फूल कर कुप्पा होना'।

फूल कर नक़्क़ारा होना–खुशी से फूल जाना। किसी खुशी से बहुत प्रसन्न होना। उ० फूल कर नक़्क़ारा न होओ, यह कोट तुम्हारे लिए नहीं है।

फूल की छड़ी से भी न छूना–बहुत लाड़-प्यार से रखना।

फूल चुनना–फूल तोड़कर इकट्ठा करना। उ० वह बाग में फूल चुन रहा है।

फूल झड़ना–१. मुँह से मधुर बातें निकलना। उ० उसके मुँह से फूल झड़ना देखकर तबीयत प्रसन्न हो जाती है। २. चिराग का गुल झड़ना या गिरना। ३. फूल झड गया, अब रोशनी ठीक होगी।

फूलना-फलना–धन-धान्य तथा संतति आदि से पूर्ण रहना। उ० बुढ़िया ने खुश होकर कहा, जाओ बच्चा तुम सर्वदा फूलते-फलते रहोगे।

फूल तोड़ना–दे० 'फूल चुनना'।

फूल-सा–बहुत सुकुमार। उ० राजकुमार का शरीर फूल-सा है।

फूल सूँघ कर रहना–बहुत कम खाना। उ० मुझे तो विश्वास नही होता था, पर वह तो सचमुच फूल सूँघ कर रहती है।

फूल होना–१. आनंद और सुख होना। २. दे० 'त्रिशूल होना'।

फूला फिरना–१ घमंड मे रहना। उ० तुम आजकल क्यो फूले फिरते हो? २. आनंद मे रहना।

फूली फिरना–१. किसी स्त्री का गर्व से भरा रहना। २. किसी स्त्री का बहुत प्रसन्न रहना। उ० फूली आँगन में फिरै आँगन आँगि समात।

फूले अंग न समाना–बहुत प्रसन्न होना। उ० परीक्षा मे पास हो जाने पर वह फूले अग नही समा रहा है।

फूलों का गहना–१. फूलों की माला। उ० उस स्त्री के गले मे फूलों का गहना है। २. सुकुमार और सुन्दर। उ० तुम्हारा बेटा तो फूलों का गहना है।

फूलों की सेज पर सोना–बडे आराम से रहना।

फेंट कसना–१ कमर कस कर तैयार होना। उ० फेंट कसो, अब देर करना ठीक नहीं। २ इरादा पक्का करना। ३ अच्छी तरह धोती पहनना।

फेंट धरना–जाने या जाने न देना, रोकना। उ० जब भी जाता हूँ, वह मेरा फेंट धर लेती है।

फेंट पकड़ना–दे० 'फेंट धरना'।

फेंट बाँधना–दे० 'फेंट कसना'।

फेंफड़ा जलाना–किसी की ख़ैरख्वाही करना।

फेंफड़ी पड़ना–ओंठ सूखना। उ० प्यास के मारे उसकी फेंफड़ी पड़ गई है।

फेंफड़ी बँध जाना–बात न निकलना। उ० वह ऐसा-वैसा नही है, उसके सामने चलोगे तो फेंफड़ी बँध जायगी।

फेंफड़ी बाँधना–दे० 'फेंफड़ी पड़ना'।

फेर की बात–घुमाव की बात। उ० तुम सर्वदा फेर की बात किया करते हो। यह मुझे अच्छा नही लगता।

फेर खाना–१. घुमाव का रास्ता तय करना। उ० मैं तो इसी रास्ते जाऊँगा, उधर उतना फेर खाने कौन जाय? २. परीशान होना। उ० आज बड़ा फेर खाना पड़ा।

फेर देना–१. मोड़ना, घुमाना। उ० उसका मुँह फेर दो। २. लौटा देना। उ० उनका सामान फेर दो।

फेरन-फारन–उतारा हुआ कपड़ा।

फेर पड़ना–१. सीधा न पड़ना। उ० अगर उधर से जाइयेगा तो बड़ा फेर पड़ेगा, सीधा रास्ता इधर से है। २. भूत-प्रेत का चक्कर होना। ३. हानि होना। उ० इस बार की बिक्री मे बड़ा फेर पड़ा। ४. फ़र्क पड़ना। कमी होना। उ० हिसाब मे फेर पड रहा है।

फेरफार की बात–१. चालाकी की बाते। उ० मैं आपकी फेरफार की बात समझ रहा हूं। २. टालने की बात। उ० यह फेरफार की बात मुझे पसंद नही, न देना हो तो साफ कहो।

फेर में आना–दे० 'फेर मे पड़ना'।

फेर में डालना–१. असमंजस मे डालना। २. कठिनाई मे डालना। उ० तुमने तो उसे बड़े फेर मे डाल दिया। ३. धोखे मे डालना।

फेर में पड़ना–१. घाटा सहना। उ० मै भी इस बार कुछ फेर मे पड़ गया हूं, पर अब होशियार हो गया। २. भूत-प्रेत के प्रभाव मे पड़ना। उ० वह कुछ फेर मे पड गया है, इसी से अच्छा नहीं हो रहा है। ३. धोखा खाना। ४. कठिनाई में आना। ५. आफत मे या चक्कर मे पड़ना। उ० बेतरह फेर मे पड़े हम है, फेरते हाथ क्यो नही सिर पर।

फेर लगाना–१. उपाय रचना। जाल मे फँसना। उ० मेरे सामने आपका फेर लगाना बेकार हो जायगा। २. कठिनाई मे डालना। उ० अब फेर न लगाओ, नही तो बडी हानि होगी।

फेरि-फेरि–बार-बार। उ० मैं मना कर रहा हूँ और आप फेरि-फेरि इसी बात को कह रहे है।

फेरी देना–परिक्रमा लगाना, घूमना। उ० क्यो आज सुबह से ही फेरी दे रहे हो?

फेरी पड़ना–भाँवर होना। परिक्रमा करना।

फेरे पड़ना–शादी होना।

फैर करना–मारना, चलाना। बंदूक़ से मारना। उ० बंदूक का फैर करो, चोर भाग जायेंगे।

फैल करना–दे० 'फैल मचाना'।

फैलकर बैठना–आराम से या खुलकर बैठना।

फैल मचाना–१. खेल करना। २. नख़रा मचाना। नकल करना। उ० सारा फैल मचाता है।

फोकट का होना–मुफ्त का होना। उ० यह फोकट का नही है कि उठाए जा रहे हो।

फोकट में–मुफ्त मे। उ० इसे मैं फोकट मे नही दे सकता।

फ़ोटो लेना–कैमरे से चित्र या फ़ोटो खीचना। उ० आप रुकिये, मै आपकी फ़ोटो ले लूं।

फोड़ना-तोड़ना–नष्ट-भ्रष्ट करना। उ० इन सामानो को फोड-तोड कर तुम क्या पाओगे?

फोड़ लेना–दूसरे पक्ष के व्यक्ति को अपने पक्ष मे कर लेना।

फ़ौजदारी करना–मारपीट करना। उ० वह तो फौजदारी करने पर आमादा है।

फ़ौजदारी होना–मारपीट होना। उ० वहाँ फौजदारी हो गई।

फ़ौत होना–मर जाना। उ० उनकी फ़ौत हो गई।

फ़ौती लिखाना–चौकीदार का अपनी किताब मे किसी की मृत्यु दर्ज कराना।

फ़ौलाद होना–बहुत कडा और मज़बूत होना। उ० वह तो फ़ौलाद है, उसे तुम क्या खाकर पछाडोगे?

फ़ौलादी पंजा–बहुत कड़ा पंजा। उ० उसका फौलादी पंजा तुमसे टेढा न होगा।

ब

बँगई करना–शरारत करना। उ० वह तो बड़ी बँगई करता है।

बंट होना–ऐसा होना जिसके आगे-पीछे कोई न हो। उ० वह बंट है, आखिर किसके लिए रुपया-पैसा बचाये?

बंटाधार करना या होना–काम बर्बाद करना या होना।

बंडल होना–मूर्ख होना।

बंद करना–१. रोकना। उ० रास्ता बन्द करना अवैधानिक है। २. जेल भेज देना; क़ैद करना। उ० आज सिपाहियों ने उसे बन्द कर दिया।

बंदगी बजा लाना–खिदमत करना। उ० मेरे पास कई नौकर बन्दगी बजा लाने को तैयार रहते है, मैं उनकी बन्दगी बजा लाने को तैयार हूं।

बंद-बंद जुदा करना या कर देना–१. हड्डी तोड़ देना। उ० सिपाही ने मारते-मारते चोर

का बंद-बन्द जुदा कर दिया। २. तोड़-फोड़ देना।

बंद-बंद टूटना—दे० 'हाथ-पाँव टूटना'।

बंद-बंद ढीला करना—खूब पीटना। पीट कर थका देना। उ० अगर ज्यादा तंग करोगे तो मारते-मारते बन्द-बन्द ढीला कर दूँगा।

बंद-बंद पकड़ना—अच्छी तरह जकड़ लेना। उ० बीमारी ने उसका बन्द-बन्द पकड़ लिया है।

बंदर क्या आदी का स्वाद न जानना—मूर्ख व्यक्ति का महत्त्वपूर्ण वस्तु के महत्व को न पहचानना।

बंदर की तरह आँख बदलना—बात-बात में गुस्सा होना। उ० बन्दर की तरह आँख बदलना ठीक नहीं है, अगर यही हालत रही तो दूसरे भी तुम्हारे साथ यही व्यवहार करेंगे।

बंदर की तरह नचाना—हैरान करना। उ० काम करना हो तो कर दो, बन्दर की तरह नचाने से क्या लाभ ?

बंदर की बला तबेले के सिर पड़ना—किसी की मुसीबत किसी और के ऊपर आना।

बन्दर के हाथ मणि होना—अयोग्य के पास अच्छी वस्तु होना। उ० इस निरक्षर के साथ बी० ए० पास लड़की की शादी बन्दर के हाथ मणि होने के समान है।

बन्दर को आइना दिखाना—अयोग्य या असमर्थ व्यक्ति से कुछ अच्छे काम या बात की आशा रखना।

बन्दरघुड़की देना—ऐसी धमकी देना जो केवल डराने के लिए ही हो। उ० बन्दरघुड़की देने से मैं डर नहीं सकता। पुलिस की बन्दरघुड़की देने से वह नहीं आ सकता।

बंदर-बाँट—दो के झगड़े में अपना लाभ।

बंदरभबकी देना—दे० 'बंदरघुड़की देना'।

बंद होना—१. रुकना। उ० जब मेंह बंद हो तो हम लोग बाजार चलें। २ कैद होना। उ० अब यदि कुछ करना तो बंद होने के लिए तैयार होकर करना।

बंदूक चलाना—बंदूक में गोली भर कर निशाने पर छोड़ना। उ० बंदूक चलाने के पहले निशाना ठीक कर लो।

बंदूक छतियाना—बंदूक चलाने को तैयार होना। उ० बंदूक छतिया कर खड़े हो जाओ, अब शेर जंगल में आ रहा है।

बंदूक छोड़ना—दे० 'बंदूक चलाना'।

बंदूक भरना—बंदूक चलाने के लिए गोली भरना। उ० वह बंदूक भर ही रहा था कि शेर ने उस पर आक्रमण कर दिया।

बंदूक मारना—दे० 'बंदूक चलाना'।

बंदूक लगाना—दे० 'बंदूक चलाना'।

बंधक धरना—दे० 'बंधक रखना'।

बंधक रखना—कोई चीज या रुपया लेने के लिए कोई चीज रेहन रखना। उ० गहने बंधक रखकर तो कुछ रुपये लाया था।

बंधक से बुरा—बहुत बुरा। उ० यह तो बंधक से भी बुरा हुआ।

बंधन ढीला करना—कड़ाई या सख्ती कम करना। उ० पिता जी ने अब बन्धन ढील कर दिए, इसी से ये बच्चे बिगड़ रहे हैं।

बंधन में पड़ना—१ गिरफ्तार होना। उ० उस बड़े चोर का पुलिस के बंधन में पड़ना कठिन है। २ मोहमाया में पड़ना। उ० बंधन में पड़ने पर ईश्वर की भक्ति कैसे हो सकती है ?

बंधी गत बजाना—सब जैसा कहते तथा करते हैं, वैसा ही करना।

बँधी रकम—निश्चित रकम।

बंध्या-पुत्र होना—असंभव होना। उ० तुमसे इस काम का होना बंध्या-पुत्र होना है।

बंश डुबोना—परिवार में कलंक लगाना। उ० नीच काम करके तुमने बंश डुबो दिया।

बंश डूब जाना या डूबना—१ बंश के सभी लोगों का मर जाना। २ बंश की बदनामी होना। उ० तुम्हारे इस काम से बंश डूब गया।

बक-झक करना—बकवाद करना। प्रलाप करना। उ० क्यों बक झक करते हो ?

बक-ध्यान लगाना—ढोंग करना, कपट करना।

बकना-झकना—बड़बड़ाना, बिगड़ कर व्यर्थ की बातें करना। उ० वह तो पागल की तरह बकता-झकता रहता है।

बकबक करना—दे० 'बकझक करना'।

बकरा होना—१ बहुत कामी होना। २ छोटी दाढ़ी वाला होना।

बकरी होना—१. दिन भर खाने वाला या मुँह चलाने वाला होना। २ बहुत पान खाने वाला होना। ३. कमजोर होना।

बकरे की माँ का खैर मनाना–जो नुकसान होने ही वाला है, उसे टालने का व्यर्थ प्रयास करना।

बकवाद करना–दे० 'बकवास करना'।

बकवास करना–१. बकबक करना। उ० बकवास मत करो, सीधे थाने चलो। २ तर्क-वितर्क करना। उ० क्या हर बात पर बकवास किया करते हो ?

बकार निकलना–दे० 'बकारी फूटना'।

बकार फूटना–दे० 'बकारी फूटना'।

बकारी फूटना–मुँह से बात निकलना। उ० बकारी तो फूटती ही नहीं और बहस करने आए हैं।

बकुची बाँधना–हाथ-पैर बटोर कर गठरी के आकार का बन जाना। उ० वह बकुची बाँध कर नदी मे कूद पडा। मारे सर्दी के वह बकुची बाँधे है।

बकुची मारना–दे० 'बकुची बाँधना'।

बखिया उधेड़ना–भडा फोडना भेद खोलना। उ० अगर ज्यादा बढ-बढ़ कर बात करोगे तो यही सब बखिया उधेड दूँगा।

बखेड़ा खड़ा करना–झंझट करना, झझट तैयार करना। उ० मेरा सत्यानाश करने के लिए ही उसने बखेडा खड़ा किया है।

बखेड़ा चुकाना–झझट मिटाना। उ० बखेडा चुकाने के लिए कुछ खर्च भी करना पडे तो मैं तैयार हूँ।

बखेड़ा फैलाना–झझट करना, झगडा करना। उ० क्या बखेड़ा फैला रहे हो ?

बखेड़ा मचाना–दे० 'बखेडा फैलाना'।

बखेड़ा होना–झझट होना।

बख्शीश देना–१ जागीर देना। २ इनाम देना। उ० चलते समय उनके नौकरो को बख्शीश अवश्य देना।

बख्श देना–छोड देना। उ० उसने सिपाही से कहा कि जो माँगो मै देता हूँ, पर मेरी जान बख्श दो।

बगछुट भागना–बहुत तेजी से भागना।

बगल गरम करना–१. प्रसग करना। २ रुपया लेना। ३. घूस लेना। उ० उन गरीबों से बगल गरम करते तुम्हे शर्म नही आती ?

बगल में ईमान छिपाना–दे० 'बगल मे ईमान दबाना'।

बगल में ईमान दबाना–बेईमानी करना। उ० क्या दस रुपयों के लिए बगल में ईमान दबा रहे हो ?

बगल में ईमान रखना–दे० 'बगल मे ईमान दबाना'।

बगल में दबाना–अधिकार करना, ले लेना। उ० वह मेरा सब सामान बगल में दबाकर चलता बना।

बगल में धरना–चुरा कर छिपा लेना। उ० उसे बगल मे न धरो, मैं सब देख रहा हूँ।

बगल में मारना–१ बगल मे लेना। उ० किताब बगल मे मारे और चलने को तैयार हो गए। २ धोखा देकर जबर्दस्ती किसी चीज पर अधिकार कर लेना।

बगल में मुँह डालना–शर्मिन्दा होना। उ० अब हार कर बगल मे क्यो मुँह डालते हो ?

बगल सूँघना–दे० 'होठ चबाना' तथा 'बगले झाँकना'।

बगल हो जाना–एक तरफ़ हट जाना। उ० अगर वह बगल न हुआ होता तो उसका भी सिर फूट जाता।

बगला-भगत होना–कपटी या धोखेबाज़ होना। उ० उसकी बात का विश्वास मैं नही कर सकता हूँ, वह तो बगला-भगत है।

बगली घूंसा–छिप कर किया हुआ वार। उ० बगली घूंसा तो सियारो को पसद है। हम शेर तो सामने वार करते है।

बगली डूबना–पूँजी बरबाद होना। उ० इस व्यापार मे तो उसकी बगली डूब गई।

बगली देना–नकब लगाना। उ० बगली देकर चोरो ने मेरा सब धन निकाल लिया।

बगली मारना–१. जेब कतरना। उ० मेले मे बगली मारने वाले बहुत से घूमते रहते है। २. बगल से ज़मीन आदि खोदना। उ० बगली मार कर इस दीवाल को गिरा दो।

बगलें झाँकना–१. इधर-उधर भागने की कोशिश करना। उ० वह मुझे देखते ही बगले झाँकने लगता है। २. जवाब न दे सकने के कारण लज्जित होना। उ० अब जवाब दीजिए, बगले झाँकने से काम न चलेगा। ३. सोच-विचार में पड़ना।

बगलें बजाना–१. खूब-खुशी मनाना। उ० अब क्या है ? बगलें बजाओ। तुम्हारी वाली तो हो ही गई। २. हँसी उड़ाना। उ० ऐसा मूर्ख है कि उसे देख कर सभी बगलें बजाते हैं।

बगले का हंस हो जाना–अयोग्य व्यक्ति का योग्य बन जाना।

बचन छोड़ना–दे० 'बचन तोडना'।

बचन डालना–माँगना। उ० जिससे कुछ मिल सके, उसी से बचन डालना चाहिये।

बचन तोड़ना–कह कर न करना। बात देकर बदल जाना। उ० बचन तोडने वाले का कोई विश्वास नही करता।

बचन देना–प्रतिज्ञा करना। उ० मैने उससे वचन दे दिया है, अत. अवश्य जाऊँगा।

बचन निभाना–दे० 'बचन पालना'।

बचन पालना–जो कुछ कहना, उसे करना। उ० बचन पालने के लिए प्राण की भी परवा नही की जाती।

बचन-बंध करना–१. बात मे अच्छी तरह जकड़ लेना। उ० पहले ही बचन-बध कर लो तो शायद काम कर दे, वर्ना कोई आशा नही है। २. बचन ले लेना। उ० बचन-बध कर चुके तो वह इन्कार नही कर सकता।

बचन-बद्ध करना–दे० 'बचन-बध करना'।

बचन बाँधना–दे० 'वचन लेना'।

बचन में बाँधना–प्रतिज्ञा कराना। उ० उसे बचन मे बाँध लो, फिर वह स्वयं ही कर देगा।

बचन हारना–दे० 'बचन देना'।

बचाव करना–हिफ़ाजत करना। रक्षा करना। उ० उसका बचाव करना तुम्हारे जिम्मे है।

बच्चा देना–प्रसव करना। उ० यह गाय बच्चा देने वाली है।

बच्चा होना–१. अनुभवहीन होना। २ बहुत खिलाड़ी होना। ३ गभीर न होना। उ० तुम अभी बच्चे हो।

बच्चे-बच्चे की जबान पर होना–हर किसी के द्वारा कहा जाना।

बच्चों का खेल–बहुत सरल काम। उ० यह बच्चों का खेल है, इसे करने मे क्या है ?

बछड़े का खूँटे के बल उछलना– कोई सहारा पाकर ही बड़ी-बड़ी बाते या धृष्टता करना।

बछिया का ताऊ–दे० 'बछिया का बाबा'।

बछिया का बाबा–मूर्ख, बेवकूफ़। उ० वह तो पूरा बछिया का बाबा है।

बजा कर–१. खुल्लमखुल्ला। उ० वह इतना दुष्ट है कि बजा कर सबको गाली देता है, पर किसी की हिम्मत नही पड़ती कि उससे कुछ बोले। २. ठोक-ठोंक कर, अच्छी तरह देख कर। उ० सौदा बना कर खरीदो।

बजाना-ठोंकना–दे० 'ठोकना-बजाना'।

बजा लाना–पालन करना। उ० मेरा नौकर बड़ा आज्ञाकारी है। उसे जो भी आज्ञा देता हूँ, तुरन्त बजा लाता है।

बज्र गिरना–घोर अनिष्ट करना।

बज्र पड़ना–आफत आना, नाश होना। उ० ऐसे आततायी पर तो बज्र पडना चाहिए।

बज्र बहरा–दे० 'बहरा पत्थर'।

बटाऊ होना–१ चल देना, चलता होना। २. अस्थायी होना।

बट्टक-विलासी–छोटी उम्र के लडको से अनुचित सम्बन्ध रखने वाला व्यक्ति।

बटेर का बह जाना–बटेर का दुबला हो जाना। [बटेरबाजों की भाषा मे प्रयुक्त होता है।]

बट्टा काटना–दस्तूरी या दलाली आदि निकाल लेना। उ० बेचते समय सोनार हर एक गहने मे बट्टा काट लेते है।

बट्टा लगना–१ कलक लगना। उ० झूठे-मूठे उसके नाम मे बट्टा लग गया। २ हानि होना। उ० व्यर्थ मे १ रु० का बट्टा लग गया।

बट्टा लगाना–१ कलक लगाना। उ० इतने बडे आदमी के नाम मे बट्टा लगाना मामूली बात नही है। २. हानि करवाना। उ० तुमने व्यर्थ मे २ रु० का बट्टा लगाया।

बट्टे-खाते डालना–दे० 'बट्टे-खाते लिखना'।

बट्टे-खाते लिखना–हानि के लेखे में डालना। उ० जो १० रु० कल खो गया, उसे बट्टे-खाते लिख दो।

बड़बड़ करना–बकवाद करना, प्रलाप करना। उ० बहुत बड़बड़ मत करो।

बड़बड़ लगाना–दे० 'बड़बड़ करना'।

बड़भागी होना–सौभाग्यवान् होना।

बड़ाई देना–सम्मान करना, आदर करना। उ० जो बड़ाई देने लायक होगा, उसे लोग देंगे ही, तुम्हें क्यों जलन होती है ?

बड़ाई मारना–दे० 'डींग हाँकना'।

बड़ा गाल होना–बढ़-बढ़ कर बोलना।

बड़ाई मारना–शेखी हाँकना।

बड़ा घर–१. धनी घराना। उ० मेरे गाँव में इनका सबसे बड़ा घर है। २ जेलखाना। उ० वह चोर अभी आज ही बड़े घर की हवा खाकर आया है।

बड़ी नाक होना–मान-अपमान का बहुत ध्यान होना।

ब ा नाम करना–नाम फैलाना। उ० उसने अपने परिवार का बड़ा नाम किया।

बड़ा (बड़े) पेट वाला–१ सहनशील। २ बहुत खाने वाला। ३ ऐसा आदमी जो बातें पचा सकता हो।

बड़ा बोल मारना–दे० 'शेखी मारना'।

बड़ी-बड़ी बातें करना–दे० 'डींग हाँकना'।

बड़ी बात न होना–कोई मुश्किल न होना। उ० उसके लिए यह काम कोई बड़ी बात नहीं है।

बड़ी बात होना–१ मुश्किल काम होना। उ० इस काम का करना आपके लिए बड़ी बात है। २ केवल बात ही बात होना। उ० उनकी बड़ी बात होती है।

बड़े घर की हवा खाना–जेल जाना।

बड़े बाप का बेटा होना–१ विचित्र होना। उ० आप तो बड़े बाप के बेटे है, मुकाबिला कौन कर सकता है ? २ बहुत धनीमानी होना। उ० वह तो बड़े बाप का बेटा है, उसके लिए सब कुछ संभव है।

बढ़ कर चलना–अभिमान करना। उ० बढ़ कर चलने वालों का मुँह नीचा हो जाता है।

बढ़-चढ़ कर–दे० 'चढ़-बढ़ कर'।

बढ़-चढ़ कर होना–बड़ा या बढ़ कर होना। उ० वे दोनों शरारत में एक दूसरे से बढ़-चढ़ कर है।

बढ़-बढ़ कर बोलना–दे० 'शेखी बघारना'।

बढ़ चलना–घमंड करना। उ० पेट भरते ही वे बढ़ चले।

बढ़ावे में आना–किसी के ललकारने या जोश देने से जोश में आना या किसी कठिन काम करने में प्रवृत्त होना। उ० तुम उनके बढ़ावे में मत आना, नहीं तो खतरे में पड़ जाओगे।

बत-चल होना–बहुत बकवासी होना।

बतासे-सा घुलना या घुल जाना–१. जल्द नष्ट होना। २. जल्दी दुर्बल होना। गम या बीमारी से कमजोर होना। उ० यदि ऐसे रहोगे तो बतासे-से घुल जाओगे।

बतासे-सा बैठ जाना–दे० 'बतासे-सा घुलना'।

बत्ती दिखाना–प्रकाश दिखाना। उ० उसे बत्ती दिखा दो, रास्ते में बड़ा अँधेरा है।

बत्तीस धार होकर निकलना–फूट-फूट कर बहना। अपने किये पापों का फूट-फूट कर निकलना।

बत्तीसी खिलना–हँसी आना। उ० बात-बात में उसकी बत्तीसी खिल जाती है।

बत्तीसी झड़ पड़ना–दाँत गिर पड़ना। उ० इसी उम्र में उसकी बत्तीसी झड़ पड़ी।

बत्तीसी दिखाना–१ हँसना। उ० बात-बात में बत्तीसी दिखाना कहाँ की सभ्यता है ? २. बेहूदी हँसी हँसना। ३ दाँत दिखाना।

बत्तीसी बजना–१ गहरा जाड़ा लगना, जाड़े में दाँत बजना। उ० यहाँ जनवरी में बत्तीसी बजने लगती है। २. कहा-सुनी होना। उ० बात ही बात में बत्तीसी बज गई।

बद कर–१. जान-बूझ कर। उ० जिस काम को मैं मना करता हूँ, उसे तुम बद कर करते हो। २ ललकार कर। उ० न जाने क्यों यह मुझसे बद कर झगड़ा करता है। ३. बाजी बद कर। उ० आओ बद कर खेल लो।

बद कर कहना–पूरे निश्चय के साथ कहना। उ० मैं बद कर कहता हूँ कि आपका काम हो जायेगा।

बदन चुराना–लज्जा से शरीर छिपाना। उ० वह मुझे देखते ही बदन चुराने लगी।

बदन टूटना–शरीर-दर्द होना। उ० आज सुबह से मेरा बदन टूट रहा है।

बदन फल जाना–फोड़े-फुंसी होना। उ० उसका बदन गर्मी से फल गया है।

बदन में आग लग जाना–बहुत क्रोध आना।

बदन में खाज पैदा होना–अपने आप या अपने हाथों खराब होना।

बदनियत होना या हो जाना—१. बेईमान होना। उ० उसे अब रुपया न देना, वह तो बदनियत हो गया है। २. बुरे विचार का होना। उ० उसके घर की जवान लड़कियाँ तुम्हारे घर नही आ सकती, तुम बदनियत हो गए हो।

बद में—बदले मे। उ० चावल के बद में मुझे गेहूँ दे जाना।

बदर निकालना—किसी के जिम्मे रक़म निकालना। उ० उसने हिसाब करके मेरे बदर १०० रु० निकाले है।

बदला देना—उपकार के बदले उपकार या अपकार के बदले अपकार करना। उ० आपने कष्ट मे मेरी सहायता की है, मै इसका बदला अवश्य दूँगा।

बदला लेना—किसी की बुराई करने पर उसके साथ बुराई करना। उ० तुमने उसे मारा है, इसका बदला वह अवश्य लेगा।

बदले—१ हर जगह पर, एवज मे। उ० इस छोटी चारपाई को हटा कर उसके बदले बड़ी रखो। २. हानि भरने के लिए। उ० कलम खो जायगा तो इसके बदले दूसरा कलम देना होगा।

बदा होना—भाग्य मे लिखा होना। उ० अब तो चलते है, जो बदा होगा सो होगा।

बदी चेतना—बुराई चाहना। उ० किसी की बदी चेतना महापाप है।

बद्द हो जाना—नक्कू हो जाना। ऐसा हो जाना कि रास्ते मे लोग उँगली उठाये।

बधावा बजना—लडका पैदा होने पर गाना-बजाना होना।

बधिया करना—१ बैल या कुत्ते आदि को नपुसक बनाना। २ भीरु, कायर या डरपोक बनाना। उ० डरा-डरा कर उस बेचारे को इन लोगो ने ऐसा बधिया किया कि आज शेर की कौन कहे, सियार के आगे भी नही खड़ा हो सकता।

बधिया बैठना—१ घाटा होना। २ दिवाला निकलना।

बन कर खेल बिगड़ना—बना-बनाया काम बिगड जाना। उ० आपकी वजह से बन कर खेल बिगड गया।

बन पड़ना—हो सकना। उ० अगर मुझसे बन पडा तो मैं आपका काम अवश्य कर दूंगा।

बन का कुआँ होना—बेकार होना। निरर्थक होना।

बन-बन की लकड़ी चुनना—१. मारे-मारे फिरना, २. बहुत दौड़धूप करना।

बनवास देना—जगल में रहने की आज्ञा देना। घर से बाहर निकालना। उ० दशरथ ने रामचन्द्र को बनवास दे दिया था।

बनवास लेना—१ बस्ती छोड़ कर जगल में रहना। उ० पिता की आज्ञा से रामचन्द्र ने बनवास लिया। २. संन्यास लेना। उ० चौथेपन मे लोग बनवास लेते हैं।

बना कर—अच्छी तरह, भलीभाँति। उ० बना कर लिखो।

बना-बनाया—पूरा, ठीक, पूर्ण होने के क़रीब। उ० मेरा बना-बनाया काम आपकी वजह से खराब हो गया।

बनाये रखना—जीवित रखना, जीता रहने देना। उ० भगवान आपको बनाये रखे।

बनारसी चाल चलना—बहुत होशियारी से धोखा देना।

बना रहना—१ जीता रहना। उ० भगवान करे आप सर्वदा बने रहे। २. मौजूद रहना, ठहरा रहना। उ० आप जब तक चाहे, यहाँ बने रहे। ३. अच्छी दशा को पहुँचना। ४. किसी कार्य मे योग्य होने की झूठी मुद्रा बनाना। ४ निभना, पटना।

बनाव-चोनाव करना—१. शृंगार करना। उ० वह तो रात-दिन बनाव-चोनाव मे ही रहती है। २ बनावट की बाते करना। ३. किसी के स्वागत की व्यर्थ मे बहुत कृत्रिम तैयारी करना।

बनिया होना—१ कजूस होना। २ रुपये-पैसे वाला होना। ३. बहुत गदा रहने वाला होना। ४ मोटा या तोद वाला होना।

बनिया-बक्काल होना—१ कायर, भीरु या डरपोक होना। २. कजूस होना।

बनिये का-सा चलना—कजूसी करना। उ० तुम तो हमेशा बनिये का-सा चलते हो। तुम्हारे लिए वह ज़मीन न ली जायगी।

बबर होना—बहुत वीर तथा खूँख्वार होना। उ० मेरे ही लिए बबर हैं, या उसके सामने भी खड़े हो सकते है ?

बबल पड़ना–दुःखी की आह पड़ना। उ० आप अगर ग़रीबों को सतायेंगे तो जरूर बबल पड़ेगा।

बबूल लगा कर आम चाहना–कर्म के विपरीत फल चाहना।

बमचख मचाना–झगड़ा करना, कहा-सुनी करना।

बम बोल जाना या बोलना–१ कुछ न रहना। खाली हो जाना। उ० अगर इसी तरह खर्च करोगे तो थोड़े ही दिन में सब खजाना बम बोल जायगा। २ मर जाना। उ० एक ही लाठी में वह बम बोल गया।

बम भोलानाथ होना–बड़ा ही सरलहृदय होना।

बयार करना–पंखा करना, पंखा हिलाना, जिसमें हवा लगे। भोजन करत कनक की थारी। द्रुपद सुता तहँ करति बयारी।

बर आना–बढ़ कर निकलना। उ० झूठ बोलने में आपसे तो कोई बर आ नहीं सकता।

बरकत उठना–वैभव आदि का खात्मा हो चलना। उ० अब तो उनके घर से बरकत उठ चली।

बरकत होना–उन्नति होना। उ० अगर आप गरीबों की मदद करोगे तो आपकी ख़ूब बरकत होगी।

बरजबान–बिलकुल याद। उ० यह कविता मुझे बरजबान है।

बर पाना–दे० 'बर आना'।

बरपा करना–१ खड़ा करना। उ० यहाँ कोई झगड़ा बरपा न करो। २ जाहिर करना।

बरफ़ी खाने के बाद गुड़ खाना–अच्छी वस्तु के बाद बुरी वस्तु मिलना।

बरस दिन का दिन–वर्ष में एक बार आने वाला त्योहार। उ० आज बरस दिन का दिन है, ख़ूब नाच-रंग होना चाहिये।

बरस पड़ना–बहुत कुछ बुरी-भली बातें कहने लगना। क्रोध से उबल पड़ना। उ० गलती तो उसकी है नहीं और आप उस पर बरस पड़े।

बरसों लग जाना–(किसी काम में) बहुत समय लगाना। उ० सरकारी कामों में तो बरसों लग ही जाते हैं।

बराबर का–समान, बराबरी करने वाला। उ० बराबर के लड़के से लड़ना ठीक होगा।

बर्फ़ होना–१. बहुत शीतल होना। उ० मरने के समय सबका शरीर बर्फ़ हो जाता है। २. ठंडा होना, मर जाना। उ० सर्दी से वह कुत्ता बर्फ़ हो गया।

बर्र के छत्ते छेड़ना–दे० 'हड्डे के छत्ते छेड़ना'।

बर्षा होना–ख़ूब आना, भरपूर मिलना। उ० इस रोजगार में तो रुपयों की वर्षा होती है।

बल पुरवना–पूरी शक्ति लगाना। उ० बल पुरवो तो चक्की उठ जाय।

बलि का बकरा–दूसरों के लिए मारा जाने वाला।

बला सिर पर लेना–जान-बूझ कर झंझट में पड़ना।

बवंडर उठाना–बवाल उठाना, झगड़ा उठाना। हो-हल्ला मचाना। उ० क्या छोटी-सी बात के लिए बवंडर उठा रहे हो।

बवंडर का तिनका होना–१ अस्थिर होना। २ बेसहारा होना।

बवंडर मचाना–दे० 'बवंडर उठाना'।

बवाल पालना–झगड़ा-झंझट मोल लेना।

बश का–जिस पर अधिकार हो। उ० अब वह सयाना हुआ, हमारे बश का नहीं है।

बश चलना–क़ाबू चलना शक्ति काम करना। उ० यदि मेरा बश चलता तो मैं उसे निकाल कर छोड़ता।

बश में होना–अधिकार में होना। उ० वे आप-के बश में हैं तो आप उनसे जो चाहे करा सकते हैं।

बश होना–अधिकार होना। उस लड़के पर हमारा कोई बश नहीं है।

बस का–इच्छा के अधीन। उ० वह मेरे बस का आदमी नहीं है।

बसेरा करना–बसना, ठहरना, निवास करना। उ० अँधेरा होने को आया, अब आज यहीं बसेरा किया जाय।

बसेरा देना–आश्रय देना।

बसेरा लेना–दे० 'बसेरा करना'।

बस्ता बाँधना–१. क़िताब-कापी आदि बटोर कर उठने की तैयारी करना। उ० लड़के बस्ता बाँध ही रहे थे कि मास्टर साहब आ गये और फिर पढ़ाने लगे। २. जाने की तैयारी

करना । उ० अब बस्ता बाँधिए, आपकी यहाँ जरूरत नही है । ३. सामान बटोरना । उ० भाई, अब अपना बस्ता बाँधो, मेरे लिए भी जगह होनी चाहिए ।

बहक कर बोलना–गर्व या जोश मे आकर बढ़-बढ कर बोलना । उ० अभी तो बहुत बहक कर बोल रहे हो, जब काम पड़ेगा तो भागते नज़र आओगे ।

बहता हुआ जोड़ा–बहुत अधिक अंडे देने वाला जोडा । उ० कबूतर का यह बहता हुआ जोड़ा है । [इस मुहावरे का प्रयोग विशेषत कबूतर के लिए होता है ।]

बहती गंगा में हाथ धोना–किसी ऐसी बात से फायदा उठाना, जिससे सब लाभ उठा रहे हो या जो सबके लिए खुला हो। अच्छा अवसर देखकर फायदा उठा लेना । उ० सभी कोशिश करके पास हो रहे है तो तुम क्यो फेल होते हो ? तुम भी बहती गगा मे हाथ धो लो ।

बहती नदी में पाँव पखारना–दे० 'बहती गगा मे हाथ धोना' ।

बहत्तर घाट का पानी पिये होना–बहुत धूर्त और अनुभवी होना ।

बहरा पत्थर–बहुत अधिक बहरा । उ० यह मेरा नौकर तो बहरा पत्थर है, इसे मै नही रख सकता ।

बहार पर आना–१ विकसित होना, फूलना । २. जवान होना । ३ हरा-भरा होना । ४ उन्नति के ऊर्ध्वबिंदु पर होना ।

बहार लूटना–१ रौनक मिटाना । उ० विदेशियो ने भारत की सारी बहार लूट ली । २. मौज करना । सैर-सपाटा करना ।

बहाल करना–दोबारा उसी जगह पर रखना । उ० चौकीदार को बहाल कर दो ।

बहाल रखना–कायम रखना, बदस्तूर रखना ।

बहाल होना–१. फिर से मुकर्रर होना । २ स्वस्थ होना । उ० आजकल वह बहाल है ।

बहुत से पापड़ बेलना–बहुत तरह के काम कर चुकना । उ० मैं बहुत से पापड बेल चुका हूँ, अब आपके बतलाने की आवश्यकता नही है ।

बाँग देना–१. आवाज देना, पुकारना । २ बोलना ।

बाँछें खिलना–बहुत प्रसन्न होना ।

बाँध टूटना–जबर्दस्ती रोके हुए भाव का फूट निकलना ।

बाँस की जड़ में घमोई होना–नुकसान पहुँचाने वाला होना ।

बाँस टूटना–बाँसो से पिटना । उ० उस पर खूब बाँस टूटे ।

बाँस पर चढ़ना–बदनाम होना ।

बाँस पर चढ़ाना–बदनाम करना ।

बाँस-पाटी करना–मर्दों का औरतो को अश्लील गालियाँ देना । उ० वह आते ही आते बाँस-पाटी करने लगा, ज़रा समझा देना, फिर ऐसा करेगा तो सर रँग दूँगा ।

बाँसा फिर जाना–मृत्यु के चिह्न दिखलाई पडना ।

बाँसो उछलना–बहुत खुश होना । खुश होकर कूदना ।

बाँह गहे की लाज होना–सहारा देने के वचन के कारण साथ निभाना ।

बाँह की छाँह लेना–शरण मे आना ।

बाँह टूटना–मुख्य सहायक का न रहना । उ० बडे लड़के के मरने से मेरी बाँह टूट गई, नही तो आपमे इतनी हिम्मत नही थी कि सर उठाते ।

बाँह त्यागना–सहारा छोडना, निराश्रय करना । उ० तौउ भई ही दीन अति पति त्यागी मो बाँह ।

बाँह देना– सहारा देना । उ० ज़रा बाँह दे दो तो मै पार हो जाऊँ ।

बाँह पकड़ना–१. विवाह करना । २. पनाह या शरण देना ।

बाँह बुलंद होना–१. ताकतवर होना । २ हिम्मत या जोश वाला होना ।

बाईं आँख फरकना–दे० 'बायीं आँख फरकना' ।

बाई का झोंक–१. आवेश । उ० बाई के झोक मे मैने आपको बहुत कुछ कह दिया, माफ कीजियेगा । २ वायु का प्रकोप । उ० बाई के झोक मे वह बक-बक कर रहा है ।

बाई चढ़ना–१. घमड आदि के कारण बेकार की बाते करना । उ० अधिक बाई न चढा, नही तो दो-चार थप्पड़ जड़ दूँगा । २. वायु का प्रकोप होना । ३ झक या सनक सवार होना ।

बाई पचना–१. शेखी मिटना। उ० एक ही मुकदमे में सारी बाई पच गई। २. वायु का प्रकोप शांत होना।

बाई पचाना–घमड तोडना। उ० इस साल तुम्हारी बाई न पचायी तो असल बाप का बेटा नही।

बाक़ी न उठा रखना–सब कुछ कह या कर डालना।

बाग उठाना–१ लगाम हाथ में लेना। २ घोडा दौड़ाना।

बागडोर हाथ में होना–१ प्रबध हाथ मे होना। २ वश मे होना।

बाग-बाग होना–बहुत खुश होना। उ० तुम्हे देख कर तबीयत बाग-बाग हो गई।

बाग मुडना–१. चेचक के दानों का मुरझाना। २ चलते घोड़े का रुख बदल जाना।

बाग मोड़ना–किसी ओर घुमाना। उ० सिकदर ने अपने लश्कर की बाग हिन्दुस्तान की तरफ़ मोडी।

बाछें आना–होंठो के कोनो का पक जाना।

बाछें खिल जाना–हँसी आ जाना।

बाछें ठूड्डी तक आना–१ बहुत ज्यादा हँसना। २ बहुत खुश होना।

बाछे पकना–दे० 'बाँछे आना'।

बाछें फटना–दे० 'बाँछे आना'।

बाज आना–१ खोना, रहित होना, छोड देना। उ० अब हम उस १०० रु० से बाज आये। २ आदत छोडना, अलग होना। उ० हमने तुमको लाख समझाया, पर तुम शरारत से बाज नही आते।

बाज करना-रोकना, मना करना।

बाज रखना–दे० 'बाज करना'।

बाज रहना–दूर रहना, अलग रहना। उ० मै ऐसी नौकरी से बाज रहना चाहता हूँ।

बाजार उतरना–भाव या दाम घटना। उ० कपड़ो का बाजार उतर रहा है।

बाज़ार करना–चीज़ खरीदने को बाज़ार जाना। चीजे खरीदना। उ० मै बाजार करने जा रहा हूँ, जो-जो चीज़े लानी हो, बतला दो।

बाज़ार के भाव पिटना–१. खूब मार खाना। २. इस तरह पिटना कि सबको खबर हो जाय।

बाज़ार खुलना–दूकानों का खुलना। उ० आज बाजार नही खुलेगा।

बाज़ार गर्म होना–१ महँगी होना। उ० आजकल गुड़ का बाजार गर्म है। २. खूब ग्राहक होना। ३. खूब काम चलना। ४. ज़ोरो पर होना। उ० बीमारी का बाज़ार गर्म है। ५ किसी बात की बहुत अधिकता होना।

बाज़ार चलते हाथ पटकना–बात-बात मे मारपीट कर बैठना।

बाज़ार तेज़ होना–१. बाज़ार मे खूब माँग होना। २ चीज़ों का महँगा होना। उ० कपडे का बाज़ार तेज है। ३ व्यवसाय या काम मे बढ़ती या उन्नति होना। उ० आजकल तुम्हारा बाजार खूब तेज है।

बाज़ार दिखाना–किसी चीज को बेचने के लिए बाज़ार मे ले जाना।

बाज़ार बंद होना–अंधा होना। उ० क्या तेरा बाजार बन्द है कि सामने की चीज नजर नही आती ?

बाज़ार मंदा होना–खरीद-फरोख्त या क्रय-विक्रय कम होना। उ० आजकल गुड का बाज़ार मदा है।

बाजार में आग लगना–चीजे बहुत महँगी होना।

बाजार में बैठना–वेश्यावृत्ति अपनाना।

बाज़ार लगना–बाजार मे दूकान लगना। उ० आपके गाँव का बाजार किस दिन लगता है ?

बाज़ार लगाना–चीज़ों को बेतरतीब फैलाना। उ० क्या बाजार लगा रखा है, जरा ठीक से रखो।

बाज़ारू आदमी–बदचलन आदमी।

बाज़ी मारना या मार लेना–१ दाँव जीतना। उ० कुश्ती मे उसने दस हजार की बाजी मार ली। २. जीत जाना। उ० तुमने तो बाजी मार ली।

बाज़ी लगाना–शर्त बदना। उ० बाज़ी लगा कर खेल लो, तुम जीत नही सकते।

बाज़ी ले जाना–किसी बात मे आगे बढ़ जाना। जीत जाना। उ० परीक्षा मे मेरा लड़का सब लडको से बाजी ले गया।

बाज़ी हारना–१. मात खाना (शतरंज)। २ शर्त हारना।

बाट करना–१ रास्ता बनाना। २. नया रास्ता खोलना।

बाट जोहना–प्रतीक्षा करना, रास्ता देखना। उ० बाट जोहते-जोहते रात हो गई, पर वह नही आया।

बाट जोहते आँखें पथरा जाना–बहुत प्रतीक्षा करते-करते थक जाना।

बाट दिखाना–प्रतीक्षा करवाना

बाट देखना–दे० 'बाट ओहना

बाट पड़ना–१ पीछे पडना, तंग करना। उ० तुम क्यों मेरे बाट पड़े हो, आखिर क्या चाहते हो ? २. डाका पडना। ३. हरण होना।

बाट पारना–डाका डालना। रास्ते मे लूट लेना। उ० बाट पारने वालों से होशियार होकर जाना।

बाट मारना–दे० 'बाट पारना'।

बाट लगना या लगा देना–१ रास्ता बताना। उ० आप बाट लगा दें, मै चला जाऊँगा। २ मूर्ख बनाना। उ० आप क्यो उस सीधे आदमी को बाट लगाते है ? ३ किसी काम के करने का ढग बताना।

बाटली चापना या चाप देना–रस्से को खींच कर पाल तानना। उ० बाटली चाप दो तो नाव तेज चलेगी, हवा इस वक्त अनुकूल है।

बाढ़ उडाना–एकसाथ तोपें या बन्दूकें दागना।

बाढ छोड़ना–दे० 'बाढ उडाना'।

बाढ़ झाड़ना–दे० 'बाढ़ उड़ाना'।

बाढ़ दगना–तोप का लगातार छूटना। उ० बादशाह के आते ही बाढ दगने लगी।

बाढ़ पर चढ़ाना–१. उकसाना। उ० उसे बाढ पर चढाओगे तो तुरन्त लड पडेगा। २ धार तेज़ करना।

बाढ़ मारना–दे० 'बाढ उड़ाना'।

बाढ़ रखना–धार रखना। शान पर रखना। तेज करना।

बात आँचल में बांधना–दे० 'बात गाँठ मे बाँधना'।

बात आई-गई होना–बात का भूल जाना।

बात आगे बढ़ाना–चर्चा और आगे बढाना।

बात आना–१. सगाई आना। २ इलज़ाम आना, कलंक आना। उ० बात उन पर आई।

बात उगल देना–गुप्त बात को कह देना।

बात उछालना–१. उपहास करना। २. आम-चर्चा होना।

बात उठाना–१ चर्चा छेडना। उ० यहाँ उनकी बात न उठाओ, नही तो झगड़ा हो जायगा। २ नागवार बातो को बर्दाश्त करना। ३. आज्ञा पालन न करना। ४. बात न मानना।

बात उड़ना–१. चारों ओर बात फैलना। उ० यह झूठी बात उडी है, इसमें कुछ भी सत्य नही। २ बात का तेजी से चारो ओर फैल जाना।

बात उलटना–अपने कहे को बदल कर कहना। उ० बात मत उलटो।

बात करते–दे० 'बात कहते'।

बात कहते–तुरन्त, झट। उ० वह ऐसा फ़ुर्तीला है कि बात कहते काम कर देता है।

बात का कच्चा–अपनी बात पर न रहने वाला। उ० वह तो बात का कच्चा है, उसकी बात का मुझे विश्वास नही।

बात काटना–१. बात मे दखल देना। उ० मेरी बात काटोगे तो ठीक न होगा। २ जो कहा गया हो, उसके खिलाफ़ कहना। बात का प्रतिकार करना। उ० जो कुछ भी मै तुमसे कहता हूँ, तुम उसे काट देते हो।

बात का तुर्रा होना–प्रमुख या खास बात मे कुछ और मिला देना। उ० साफ ही बात का तुर्रा हो गया है, नही तो भला कही यह हो सकता है।

बात का धनी–मुँह से जो कह दे, उसे पूरा करने वाला। उ० वह बात का धनी है, उसका मुझे पूरा विश्वास है।

बात कान पड़ना–बात का सुना जाना। उ० जहाँ यह बात उसके कान पडी, वह तुरन्त आएगा।

बात का पक्का–दे० 'बात का धनी'।

बात का पूरा–दे० 'बात का धनी'।

बात का बतंगड़ करना–१. छोटे से मामले को खूब बढा-चढा कर कहना। उ० बात का बतगड़ मत करो, सच्ची बात बतलाओ। २. छोटे झगड़े को बढा देना। उ० बात का बतगड़ करने से तुम्हारी ही हानि होगी।

बात का बतंगड़ बन जाना या होना–१ थोड़ी बात का बढ जाना। २. छोटे झगडे का बहुत बढ़ जाना।

बात का हेठा–दे० 'बात का कच्चा'।

बात किये फूल झड़ना–मृदुभाषी तथा कोमल होना। उ० उसकी बात किये तो फूल झड़ते है।

बात की झड़ी लगना–बहुत बाते होना।

बात की तह तक पहुँचना–पूरे भेद को जान लेना।

बात की बात में–फ़ौरन, तुरन्त। उ० आप घबड़ाये न, मैं बात की बात मे इस काम को कर दूंगा।

बात कुर्सीनशीन होना–१ किसी बात का माना जाना। २ बोलवाला होना। उ० आजकल उनकी बात कुर्सीनशीन हो रही है।

बात को आँचल में बाँधना–किसी का कहा अच्छी तरह याद रखना। उ० मेरी बात आँचल मे बाँध लो।

बात ख़ाली जाना–बात का न माना जाना। कहना व्यर्थ होना। उ० मैं जानता हूँ कि वहाँ मेरी बात खाली जायगी।

बात खुलना–भेद या रहस्य प्रकट होना। उ० वह बात भी आज खुल गई।

बात खोना–बेइज्जत या अपमानित होना, प्रतिष्ठा गँवाना। उ० तुमने अपनी बात खो दी।

बात खोल कर कहना–बात स्पष्ट करके या समझा कर कहना।

बात गढ़ना–१ झूठी बात कहना। उ० तुम्हे बात गढ़ना बहुत आता है। २. बात को बढा कर कहना।

बात गाँठ में बाँधना–बात को न भूलना। याद रखना। उ० इस बात को गाँठ में बाँध लो, नहीं तो पछताओगे।

बात गिरह में बाँधना–दे० 'बात गाँठ मे बाँधना'।

बात घूंट जाना–१ सुनी-अनसुनी करना। उ० तुम हर एक बात घूंट जाते हो, यह ठीक नहीं। २. जाने देना।

बात घोंट जाना–दे० 'बात घूंट जाना'।

बात चबा जाना–कुछ कहते-कहते रुक जाना। उ० आप क्यों बात चबा गये, जो कहना हो कह डालिए।

बात चलना–ज़िक्र छिड़ना। उ० तुम्हारी बात तो नहीं चली।

बात चलाना–ज़िक्र छेड़ना। उ० वहाँ मेरी बात मत चलाना।

बात टालना–१. सुनी-अनसुनी करना। २ ध्यान न देना।

बात ठहरना–१ सगाई ठीक होना। २ किसी बात का निश्चय होना। उ० ठहरी क्या बात किया मना ये किसने जो आज, कोई शख्स उसने न भेजा मेरे बुलवाने को।

बात डालना–कहा न मानना। उ० बात डालने वालो से मै कुछ नही कहना चाहूँगा।

बात तक पहुँचना–दे० 'बात पाना'।

बात दुहराना–१ पूछी हुई बात फिर कहना। २ किसी की कही हुई बात का उलट कर जवाब देना।

बात न करना–१ घमडी होना। उ० वह तो अब बात ही नही करता। २. तुच्छ समझना। उ० मै तुमसे बात नही करता। ३. बहुत डरना। ४ नाम न लेना।

बात न पूछना–निरादर करना। उ० कौन जायगा, वह तो बात तक नही पूछता है।

बात नीचे डालना–अपनी बात का खंडन होने देना। अपनी बात के ऊपर किसी और की बात होने देना। उ० वह ऐसी मुँहजोर है कि एक बात भी नीचे नही डालती।

बात पकड़ना–१ तर्क करना, वाद-विवाद करना। उ० जरा होशियारी से बात करना, वह बात खूब पकडता है। २. कथन मे दोष दिखाना। उ० आपको तो बस बात पकड़ना आता है।

बात पक्की करना–१ दृढ़ निश्चय करना। उ० बात पक्की कर लो तो मै भी आऊँ। २. बात को अच्छी तरह निश्चय कर लेना। उ० बात पक्की करो, नही तो मै फेर मे न पड़ूंगा।

बात पर आना–ज़िद पर आना। हठ पर उतरना। उ० बेकार मे बात पर न आओ।

बात पर जाना–१. बात का ख्याल करना। उ० आप भी लड़को की बात पर जाते है। २. बात का विश्वास करना। उ० उनकी बात पर न जाइए, नही तो धोखा खाएंगे।

बात न पूछना–कोई महत्त्व न देना, तुच्छ समझना।

बात तौल कर कहना–समझ-बूझ कर बात कहना, सोच-विचार कर बात मुँह से निकालना।

बात पर तुल जाना—करने पर तत्पर हो जाना। उ० उसकी आदत है कि जिस बात पर तुल जाता है, उसे करके ही छोड़ता है।

बात पर याद आना—किसी प्रसंग पर किसी अन्य प्रसग का याद आना।

बात पलटना—दे० 'बात बदलना।

बात पाना—१ असल मतलब समझ जाना। उ० वह बात पा गया है, इसी से यहाँ नही आया। २ भेद पाना। उ० मैं भी दो-एक दिन में बात पा जाऊँगा।

बात पी जाना—दे० 'बात घूंट जाना'।

बात पूछना—१ खबर लेना। उ० वह आपकी तो बात पूछता ही नही, दूसरो की क्या बात है? २ कदर करना।

बात पेट में डालना—बात को किसी से न कहना। उ० बात जो भेद डाल दे उसको, जो सकें डाल पेट मे डालें।

बात फूटना—१ मुँह से शब्द निकलना। २. भेद खुलना। उ० देखिए, अगर बात फूटी तो बडा बुरा हो।।

बात फेंकना—ताने मारना, बोली बालना। उ० उसने बात फेक कर हम लोगो मे झगडा लगा दिया।

बात फेरना—बात पलटना, बदल कर दूसरा प्रसंग चलाना, दूसरी बात करना।

बात फैलना—दे० 'बात उड़ना'।

बात फैलाना—१ बात बढाना। २. किसी भेद या बात को दूर-दूर तक प्रचलित करना। उ० देखिए बात फैलाइए नही।

बात बघारना—१ बातें बनाना, तत्त्वहीन बातें करना। २. डींग हाँकना।

बात बढ़ना या बढ़ जाना—झगड़ा होना, बात होते-होते झगडा हो जाना। उ० पहले तो लोग योंही आपस में कह-सुन रहे थे, पर धीरे-धीरे बात बहुत बढ गई।

बात बढ़ा कर कहना—छोटी बात को बड़ी बना कर कहना।

बात बढ़ाना—१. झगड़ा कराना। उ० आप बात बढा कर खुद चलते बने। २. झगड़ा करना। उ० बात न बढ़ाओ, नही तो पछताओगे।

बात बदलना—१. एक बात कह कर उसके विरुद्ध दूसरी बात कहना। उ० बात बदलने वाले का विश्वास कोई नही कर सकता है। २ प्रण करके हट जाना। उ० बात बदलते तुम्हे शर्म नही आती।

बात बनाना- १. दे० 'बात गढ़ना'। २. काम बनाना। ३ प्रतिष्ठा स्थापित करना।

बात बहना—दे० 'बात उड़ना'।

बात बाँधना—झूठी दलील देना। उ० बेकार मे बात न बाँधो।

बात-बात में—हर एक बात में। उ० तुम तो बात-बात मे अड़चन डालती हो।

बात बिगाड़ना—१. काम बिगाड़ना। उ० तुमने बोल कर सारी बात बिगाड़ दी। २. इज्जत में फरक लाना।

बात मन में बैठना—बात उपयुक्त लगना। किसी बात का मन मे घर कर लेना।

बात मानना—कहा मानना। उ० मेरी बात मान लो।

बात मारना—१. घुमा-फिरा कर असल बात न कहना। उ० बात न मारो, साफ़ बतलाओ। २. ताना मारना।

बात मुंह पर रखना—दे० 'बात मुंह पर लाना'।

बात मुँह पर लाना—चर्चा कर बैठना, कहना। उ० किसी के सामने यह बात मुँह पर न लाना।

बात में फ़ी निकालना—नुक्ताचीनी करना। उ० तुम भी क्या बात मे फ़ी निकालते हो, अरे चलने भी दो।

बात में बात निकालना—बाल की खाल निकालना। किसी के कथन में दोष निकालना। उ० बात मे बात निकालना आपको बहुत आता है।

बात रख लेना—कहा मान लेना। उ० उसने मेरी बात रख ली।

बात रह जाना—इज्जत रह जाना। उ० मेरी भी बात रह गई।

बात लगना—बात चभना किसी कड़ई बात का बुरा लगना। व्यग्य आदि की चोट लगना। उ० कल उन्हे मेरी बात लग गई, इसी से नही बोल रहे है।

बात लगाना—कान भरना, निन्दा करना। उ० उसने बात लगा कर हम दोनों मे झगडा करा दिया।

बात लाना–१. सगाई लाना। २. जिक्र करना। उ० यह बात इस समय न लाओ। ३. कलंक लगाना।

बात से टल जाना–कह कर इन्कार कर जाना। उ० बात से टल जाना बड़ो का काम नही हैं।

बात से बात निकलना–एक बात के सिलसिले में किसी दूसरी बात का आना।

बात हवा में उछलना–चारों ओर फैल जाना, चर्चा होना।

बात हारना–दे० 'वचन हारना'।

बात हेठी हो जाना या होना– साख बिगडना। क़दर घटना। उ० उनकी भी बात अब हेठी हो गई।

बात ही है–दे० 'बात है'।

बात है–ठीक नही है। असत्य है। उ० वह निराहार रहते हैं, यह तो बात हैं।

बातिल करना–झुठलाना।

बातें छाँटना–दे० 'डींग हाँकना'।

बातें तोड़ना-मरोड़ना–बातो को कुछ का कुछ रूप देना।

बातें बघारना–दे० 'डींग हाँकना'।

बातें बनाना–१ खुशामद करना, चापलूसी करना। उ० बाते बना कर उसने अपना काम निकाल लिया। २ डींग हाँकना। ३. झूठ बोलना, झूठी बाते कहना।

बातें मिलाना–हाँ मे हाँ करना। उ० बाते मिलाने से काम न चलेगा। कुछ काम भी करो।

बाते लगाना–चुगली करना। किसी का कान भरना। उ० तुम बातें क्यो लगाते हो?

बातें सुनना–कठोर वचन सुनना, फटकार सुनना। उ० बातें सुनने का मै आदी नहीं हूँ।

बातें सुनाना–डाँटना, भला-बुरा कहना। उ० इस तरह से बाते सुनाते रहेगे तो वह काम कैसे करेगा?

बातों आना–दे० 'बातो में आना'।

बातों का धनी–बातें बनाने वाला। केवल कहने वाला। उ० वह केवल बातो का धनी है, उससे कुछ हो नही सकता।

बातों की झड़ी बाँधना–लगातार बोलते जाना। उ० तुमने तो बातों की झड़ी बाँध दी।

बातों की झाड़ बाँधना–दे० 'बातों की झड़ी बाँधना'।

बातों के बगीचे लगाना–दे० 'हवाई क़िले बनाना'।

बातों में आना–१. बातो पर विश्वास करके अनुकूल चलना। २. बहकावे मे आना। उ० उसकी बातों मे आकर तुमने उन्हे भला-बुरा कह दिया।

बातों में उड़ना–१. हँसी में उड़ाना। २. धोखा देना।

बातों में धर लेना–क़ायल करना। तर्क से किसी बात को मनवा लेना। उ० उसे ज़रा बातो में धर लो तो जानें।

बातों में फुसलाना–१ बातें कह कर संतुष्ट करना। उ० वह केवल बातो मे फुसलाना जानता है, कर कुछ भी नहीं सकता। २ बात द्वारा बहकाना या धोखे में लाना।

बातों में बहलाना–दे० 'बातो मे फुसलाना'।

बातों में लगाना–बातो मे फँसाये रखना। उ० उसे बातो मे लगाये रखना, मै अभी आता हूँ।

बादल आना–आसमान पर घटा दिखाई देना। उ० देखे इस साल बादल कब आते है?

बादल गरजना–बादल की आवाज होना।

बादल चढ़ना–बादलों का ऊपर घेर लेना।

बादल छाना–घटा घिरना। उ० बादल छा रहे हैं।

बादल छूना–१. अत्यन्त प्रसन्न होना। उ० यह खबर सुन कर तो वह बादल छूने लगेगा। २. असभव काम करना।

बादल झूमना–बादलों का इकट्ठा होना। उ० आज बादल झूम रहे है, वर्षा अवश्य होगी।

बादल फटना–मेघों का तितर-बितर होना। आसमान साफ़ होना। वर्षा की आशा न रहना। उ० बादल फटे तो खेलने चला जाय।

बादल में चकत्ती लगाना–१. अनहोना काम करने का प्रयास करना। उ० क्यों बादल में चकत्ती लगा रहे हो, काम तुमसे नही होगा। २. दे० 'डींग हाँकना'।

बादल में थिगली लगाना–असभव काम करना। उ० इस वैज्ञानिक युग मे ससार बादल मे थिगली लगा रहा है। बादल में थिगली न लगाओ, भला कहीं मरा आदमी जी सकता है ? यदि ऐसा हो जाय तो ईश्वर और आदमी में फ़र्क ही क्या रहे ?

बादलों से बातें करना–दे० 'आकाश से बाते करना'।

बाधा डालना–रुकावट या व्यवधान डालना। उ० वह मेरे हर एक काम मे बाधा डालता है।

बाधा पड़ना–१ रुकावट खडी होना। उ० इस काम मे तो बडी बाधाएँ पड रही है, इसका पूरा होना कठिन दिखाई पड़ रहा है। २ हानि होना।

बाधा पहुँचना–दे० 'बाधा पडना'।

बानक बनाना–वेश धारण करना।

बान डालना–आदत डालना। उ० तबाकू पीने की बान न डालो।

बान पड़ना–आदत पड़ना। उ० शराब पीने की बान पड गई है।

बाना बदलना–वेष बदलना। उ० तुमने भी बाना बदल लिया।

बाप के जाए होना–असली होना। (एक कसम के रूप मे प्रयुक्त)।

बाप तक जाना–बाप तक को गाली देना। उ० बाप तक गये तो कुशल नही।

बाप तक पहुँचना–दे० 'बाप तक जाना'।

बाप-दादा का नाम डुबाना–पूर्वजो की प्रतिष्ठा नष्ट करना।

बाप बनाना–१ अपने पिता के बराबर समझना। इज्जत करना। २. खुशामद करना। उ० वक्त पर सभी गदहे को बाप बनाते हैं।

बाबा आदम के वक्त का–बहुत पुराना, बहुत पुराने विचारो का।

बाबा आदम निराला होना–सारा रवैया अलग होना।

बाम्हन होना–पोंगा होना। उ० तुम तो पूरे बाम्हन हो।

बायाँ देना–१. बचा जाना। उ० रास्ते मे कहीं वे दिखाई भी पडे तो बाएँ दे जाते है। २. जान-बूझ कर छोड़ना।

बायाँ पाँव पूजना–हार मानना। उ० मै तुम्हारा बायाँ पाँव पूजता हूँ, मुझे छोड दो।

बायें हाथ का खेल होना–बहुत आसान काम होना।

बाये होना–प्रतिकूल होना। उ० वह आजकल मेरे बाये है, मेरी रक्षा नही कर सकता।

बायीं आँख फरकना–मर्दो के लिए अशुभ तथा औरतो के लिए शुभ होना। उ० मेरी बायी आख फरक रही है। कुछ शुभ होगा क्या ?

बारनिश करना–चमकीला रग चढाना। उ० कुर्सी पर बारनिश कर दो तो अच्छी लगेगी।

बारह पत्थर बाहर करना–सीमा से बाहर करना। बिल्कुल बाहर करना। उ० मै तुम्हे बारह पत्थर बाहर करके छोडूँगा।

बारह पानी का–बारह बरस का सुअर।

बारह-बाट करना या कर देना–तितर-बितर करना। अलग-अलग करना। उ० बाप की सब जायदाद लड़को ने बारह-बाट कर दी।

बारह-बाट होना–१. तितर-बितर होना, बिखरना। २ सत्यानाश होना।

बारह-बानी होना–कलकरहित होना ? खरा और शुद्ध होना।

बार-बार–फिर-फिर, पुन-पुन.। उ० मैंने एक बार तुम्हे मना कर दिया तो फिर बार-बार आने की क्या जरूरत ?

बारीकियाँ निकालना–नुक्ताचीनी करना। उ० बारीकियाँ निकालना हो तो मै अपनी तसवीर नही दिखला सकता।

बारीकियों में उतरना–सूक्ष्म अध्ययन करना।

बारी-बारी से–एक के पीछे एक। एक-एक करके। उ० सब लोग एकसाथ मत आओ, बारी-बारी से आओ।

बाल आना–१ बालों का जमना। २. दे० 'बाल पड़ना'।

बाल उतरना–मूँड़न होना। उ० कल बच्चे के बाल सगम पर उतरेंगे।

बाल का कंबल बनाना–छोटी बात को बड़ी कर दिखाना। राई का पर्वत करना। बात का बतंगड़ करना।

बाल की खाल खींचना—दे० 'बाल की खाल निकालना'।

बाल की खाल निकालना—१. बारीकी निकालना। २. नुक्ताचीनी करना। ३. बात मे बात निकालना।

बाल की नोक बराबर—तनिक भी, थोडा भी।

बाल खड़े होना—डर से या सर्दी से बालो का खड़ा होना।

बाल न बांकना—दे० 'बाल भी बाँका न होना'।

बाल निकालना—१ दरार पड़ना। २. दे० 'बाल पडना'।

बाल पडना—फूट जाने के कारण बाल-जैसा निशान पड़ना, टूटने का चिह्न ज़ाहिर होना। [इसका प्रयोग मोती, शीशा, नग तथा तलवार आदि के लिए होता है।] उ० शीशे मे बाल पड़ गये है। बाल-पडा मोती मै क्या करूँगा ?

बाल बनाना—१ हजामत बनाना। २. बालो को सँवारना। ३ बालो को घुंघराला करना।

बाल-बराबर—१ बहुत महीन। २ तुच्छ। उ० तुम्हें वह बाल-बराबर समझता है।

बाल-बराबर न समझना—तुच्छ समझना। उ० वह अपने सामने मुझे बाल-बराबर भी नही समझता।

बाल बाँका न होना—आँच न आना। कुछ भी न होना। उ० उनका बाल बाँका न हुआ और तुम पिट गये।

बाल-बाँधा निशाना उड़ाना—बिल्कुल ठीक निशाना लगाना।

बाल-बाँधी कौड़ी उड़ाना—दे० 'बाल बाँधा निशाना उड़ाना'।

बाल-बाल ऋणी होना—बहुत कर्ज होना।

बाल-बाल गजमोती पिरोना—एड़ी से चोटी तक शृंगार करना।

बाल-बाल दुश्मन होना—सबका दुश्मन हो जाना। एक भी मित्र न रह जाना।

बाल-बाल बचना—साफ़ बचना, आफ़त मे पड़ते-पडते बचना। उ० मै तो बाल-बाल बचा, नही तो उस दिन ऐसा पैर फिसला था कि कुऐं मे चला ही गया होता।

बाल बेका न होना—दे० 'बाल बाँका न होना'।

बाल भी बाँका न होना—कुछ भी हानि न पहुँचना। उ० झगड़े मे तो वह भी गया था, पर उसका बाल भी बाँका न हुआ।

बाल सन होना—बुढापा आना, बाल सफ़ेद हो जाना।

बाल से बारीक़ होना—१. बहुत बारीक़ होना। २. अत्यन्त दुर्बल होना।

बाला देना—दे० 'बाला बताना'। उ० जब भी कुछ माँगने जाता हूँ, वह बाला दे जाता है।

बाला बताना—१ टालना, बहाना करना। २. धोखा देना।

बाला-बाला—१ बाहर-बाहर। उ० आप बाला-बाला चले गये, मेरे यहाँ आये भी नही। २. ऊपर ही ऊपर। ३ ऐसे कि कोई जान न पाये।

बालिश्त भर का—छोटा।

बालू की भीत—शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तु। उ० विनसत बार न लागही ओछे जन की प्रीत। अबर-डबर साँझ के ज्यों बालू की भीत।

बालू से तेल निकालना—असभव काम करना। उ० तुमसे कुछ लेना तो बालू से तेल निकालना है।

बावन तोले पाव रत्ती—बिल्कुल दुरुस्त। उ० आपकी सभी बाते बावन तोले पाव रत्ती हुआ करती है।

बावन-बीर—बडा चतुर और चालाक़। उ० आप ऐसे बावन-बीर से भला कौन पार पा सकता है ?

बावन हाथ होना—बहुत साधन-सम्पन्न होना।

बावले की बड़—पागल व्यक्ति की बेकार की बाते।

बासा करना—१ आराम करना। २. रात मे सोना।

बासी कढ़ी में उबाल आना—१. बुढ़ापे मे जवानी की उमग आना। उ० अच्छा आप भी नाच देखेगे ? इसी को बासी कढी में उबाल आना कहते हैं। २ किसी बात का समय एकदम बीत जाने पर उसके सम्बन्ध मे कोई वासना पैदा होना। ३. असमर्थता मे समर्थता के भाव आना।

बासी भात में भी ख़ुदा मियाँ का हिस्सा होना—तुच्छ वस्तु भी भगवान की कृपा से मिली, यह मानना।

बासी मुंह—बिना कुछ खाये-पिये। उ० बासी मुंह दवा खानी चाहिये।

बाहबाही पाना–दे० 'बाहबाही लूटना'।

बाहबाही लूटना–लोगों की प्रशंसा का पात्र बनना। उ० दूसरे का माल बाँट कर उसने खूब बाहबाही लूटी।

बाहबाही लेना–दे० 'बाहबाही लूटना'।

बाहर की हवा लगना–बाहर के वातावरण या स्थिति का कुप्रभाव या सुप्रभाव पड़ना।

बाहर जाना–पाखाना होने के लिए घर से बाहर जाना। उ० बाहर जा रही हूँ, जरा पानी दे दो। [इसका प्रयोग देहात की औरतों में ही केवल होता है।]

बाहुबल तौलना–शक्ति का अंदाज करना।

बिख की गाँठ–दे० 'बिष की गाँठ'।

बिख की पुड़िया–दे० 'बिष की गाँठ'।

बिगड़ा दिल–बात-बात में रुष्ट हो जाने वाला।

बिच्छू का डंक होना–बहुत जहरीला या दुःखदायी होना। उ० तुम तो बिच्छू के डंक हो।

बिच्छू की तरह डँसना–बहुत कड़ुई बात कहना। उ० तुम तो बिच्छू की तरह डँसते हो, तुम्हारे पास कौन बैठेगा?

बिच्छू होना–१ सबको काटने वाला या कष्ट देने वाला होना। २ मार कर हट जाने वाला होना।

बिजय करना–१ जीतना। २ भोजन करना। उ० चलिए बिजय कर लीजिये।

बिधना के अक्षर–कर्म-रेख, भाग्य। उ० बिधना के अक्षर कौन मिटा सकता है?

बिधाता की लिखनी–दे० 'बिधना के अक्षर'।

बिधाता के अक्षर–दे० 'बिधना के अक्षर'।

बिधि बैठना–१. मेल बैठना। उ० हमारी उनकी बिधि नहीं बैठेगी। २. सब बातों का ठीक होना। उ० फिर क्या है तुम्हारी बिधि बैठ गई।

बिपत्ति उठाना–कष्ट सहना। उ० यहाँ आकर मुझे बहुत बिपत्ति उठानी पड़ी है।

बिपत्ति काटना–दे० 'बिपत्ति उठाना'।

बिपत्ति झेलना–दे० 'बिपत्ति उठाना'।

बिपत्ति डालना–किसी को तकलीफ़ में डालना। किसी पर आफ़त ढाना। उ० क्यों उस अनाथ पर बिपत्ति डालते हो?

बिपत्ति भुगतना–दे० 'बिपत्ति उठाना'।

बिपत्ति भोगना–दे० 'बिपत्ति उठाना'।

बिपत्ति मोल लेना–बेकार अपने ऊपर झंझट लेना। उ० बिपत्ति मोल लेकर आपने बड़ी मूर्खता की।

बिपत्ति सिर पर लेना–दे० 'बिपत्ति मोल लेना'।

बिरादरी से खारिज होना–दे० 'बिरादरी से बाहर होना'।

बिरादरी से बाहर होना–जातिच्युत होना। वर्ग से बाहर होना। उ० जब से उसने यह नीच काम किया, उसको बिरादरी से बाहर हो जाना पड़ा।

बिलखीबनेवा होना–मारे-मारे फिरना, कहीं का न होना। उ० भगवान करें तुम बेलखीबनेवा हो।

बिल ढूँढ़ते फिरना–अपनी रक्षा का उपाय खोजते फिरना। उ० वह तुम्हारे डर से बिल ढूँढ़ते फिर रहा है।

बिलारी के भाग छींका टूटना–संयोग से बिना परिश्रम के कोई चीज हाथ लगना।

बिल्ली-कुत्ते जैसे लड़ना–बहुत बुरी तरह लड़ना। उ० तुम्हारे पड़ोस में लोग सदा बिल्ली-कुत्ते जैसे लड़ते रहते हैं।

बिल्ली के गले में घंटी बाँधना–कठिन कार्य करना, खतरे का काम करना।

बिष का बुताया हुआ–दे० 'जहर का बुझाया'।

बिष की गाँठ–खराबी पैदा करने वाला। बुराई की जड़। उ० यही तो बिष की गाँठ है, सब झगड़ा इन्हीं का खड़ा किया हुआ है।

बिष की पुड़िया–दे० 'बिष की गाँठ'।

बिस्मिल्ला ही ग़लत होना–शुरू से ही भूल होना, प्रारंभ में ही गड़बड़ होना।

बिस्तर गोल करना–बिदा होने के लिए या जाने लिए प्रस्तुत होना।

बीच खेत–खुले मैदान, सबके सामने। उ० बीच खेत वह उसे क़त्ल करके भाग गया।

बीच की दीवार होना–मनमुटाव का कारण होना।

बीच पड़ना–१. बदल जाना। परिवर्तन होना। उ० कोटि जतन कोऊ करे परे न प्रकृतिहिं बीच। नल बल जल ऊँचे चढ़ै अंत नीच को

नीच। २. मध्यस्थ बनना। उ० जब वह बीच पड़ा है तो अवश्य झगड़ा तय हो जायगा।

बीच बाजार में कपड़े उतरवाना–सबके सामने नंगा करना। बहुत बेइज्जत करना। उ० बीच बाजार में कपड़े उतरवा कर न छोड़ा तो मुझे असल न समझना।

बीच में कूदना–व्यर्थ टाँग अड़ाना। उ० बीच में न कूदो, नहीं ठीक न होगा।

बीच में पड़ना–दे० 'बीच में कूदना'।

बीच में रख कर कहना–१. कसम खाना। उ० मैं आपको बीच में रखकर कहती हूँ कि सर्वदा आपका कहना मानूँगी। २. मध्यस्थ, बिचवई या तिसरइत मान कर कहना। उ० उन्हें बीच में रख कर कहो तो मैं मान लूँ।

बीच रखना–१. भेद रखना। उ० कीन्ह प्रीति कछु बीच न राखा। लछिमन राम-चरित सब भाखा।

बीजारोपण करना–प्रारम्भ करना, प्रारंभिक नींव रखना, शुरुआत करना।

बीड़ा उठाना–१. कोई काम करने का संकल्प करना। उ० उसने इस काम को करने का बीड़ा उठाया है। २. मुस्तैद होना।

बीनी पाक करना–नाक साफ करना।

बीस पड़ना–१. मजबूत होना, बलिष्ठ होना। उ० गामा इमामबख्श से बीस पड़ते हैं। २. अधिक अच्छा होना। उ० यह पुस्तक बीस पड़ती है।

बीस बिस्वा–निश्चय, निस्सदेह। उ० बीस बिस्वे समझो, हम सबेरे ही पहुँच जायँगे।

बीस से उन्नीस होना–तुलना में कुछ घट कर होना।

बीस होना–बलशाली होना। बढ़ कर होना। उ० वह तुमसे बीस है।

बुक्का-फाड़ कर रोना–फूट-फूट कर जोर से रोना।

बुख़ार दिल से निकालना–दिल का गुबार या गुस्सा निकालना। उ० बुखार दिल से निकालो तो हम मिलें तुमसे।

बुझती आग में घी देना–शांत होते हुए क्रोध को किसी बात से पुन: भड़का देना।

बुढ़ापे की लकड़ी–वृद्धावस्था का सहारा।

बुत्त देना–१. धोखा देना। २. बहाना करना।

बुत्ता बताना–दे० 'बुत्ता देना'।

बुद्धि का कोण खाली होना–बेवकूफ़ होना।

बुद्धि घास चरने चला जाना–विवेकहीन होना, विचार करने में असमर्थ होना।

बुद्धि पर परदा पड़ना–बुद्धि मंद होना। उ० उसकी तो बुद्धि पर परदा पड़ा है, वह क्या खाकर बात सुलझायेगा?

बुरा फँसना–१. कष्ट में पड़ना। आफ़त में पड़ना। उ० इस बार ऐसा बुरा फँसा हूँ कि कुछ कहते नहीं बनता। २. बेकार में फँसना। उ० आप तो बुरे फँसे।

बुरा मानना–१. बुरा मान जाना, नाराज होना। उ० सच कहने में बुरा मानने की कौन बात? २. बैर रखना, खार खाना। उ० क्यों बुरा माने बैठे हो?

बुरे रास्ते पर चलना–गलत काम करना।

बुलबुल पालना–बीमारी पालना, झंझट पालना। उ० रोजाना सिनेमा देखने जाते हो, यह कहाँ की बुलबुल पाल ली तुमने?

बुलबुल फँसाना–दे० 'शिकार फँसाना'।

बूँदाबाँदी होना–बहुत थोड़ा-थोड़ा पानी बरसना। उ० बूँदाबाँदी हुई है, कोई खास पानी नहीं बरसा है।

बूँदे गिरना–थोड़ा-थोड़ा पानी बरसना। उ० आज सुबह ही से बूँदे गिर रही हैं।

बूँदें पड़ना–दे० 'बूँदे गिरना'।

बेंत की तरह काँपना–बहुत अधिक डरना, थर-थर काँपना। उ० उसका लड़का मुझे देखते ही बेंत की तरह काँपता है।

बेगार टालना–बिना मन के कोई काम कर देना। उ० बेगार टालने से न करना ही अच्छा है।

बेच खाना–खो देना, गँवा देना। उ० बाप-दादों की सब जायदाद उसने बेच खायी।

बेजबान होना–बहुत सीधा, अधिक न बोलने वाला। उ० वह बहुत बेजबान आदमी है।

बेजान होना–उत्साह या शक्ति से हीन होना।

बेटा-बेटी–औलाद, संतान। उ० उसके एक भी बेटा-बेटी नहीं है।

बेड़ा पार लगाना–दे० 'बेड़ा पार करना'।

बेड़ा पार करना–१. किसी को संकट से पार लगाना। मझधार से उबारना। उ० इस

समय तो भगवान ही बेड़ा पार करेगा । २. मुक्त करना, स्वर्ग देना । उ० अपना किया ही बेड़ा पार करता है ।

बेड़ा पार होना–१. कष्ट से छुटकारा मिलना । उ० बड़ी कोशिश करने के बाद उसका इस विपत्ति से बेड़ा पार हुआ है । २. मुक्ति होना । ३. काम खतम होना । उ० चलो, यह तो बेडा पार हुआ ।

बेतुकी हाँकना–बेसिर-पैर की बात कहना । उ० आप खूब बेतुकी हाँकते है, भला वह ऐसी बाते कह सकता है ।

बे-ते करना–किसी को तुच्छ समझते हुए उसके साथ अशिष्टतापूर्वक बाते करना । रेरी मारना । बदनमीजो से बात करना । उ० बडे हो तो अपने घर के । अगर बे-ते किया तो जबान खींच लूँगा ।

बे-नकेल के ऊँट होना–किसी के कहने मे न होना ।

बे-पर की उड़ाना–गप्प हाँकना ।

बेपेंदी का लोटा–१. वह सीधा-सादा आदमी जो दूसरो के कहने ही पर चले । उ० आप तो बेपेंदी के लोटे है, आखिर कुछ समझ भी है या नही ? २. जिसका कोई ठिकाना न हो । बिना सिद्धात का आदमी । ढलमुल-यकीन । उ० वह तो बेपेंदी का लोटा है, उसके समर्थन का क्या विश्वास ?

बेभाव की पड़ना–१ बहुत अधिक मार पडना । उ० उस पर तो ऐसी बेभाव की पडी कि अब तक बेहोश है । २ खूब फटकार पडना । उ० काम तो थोडा ही बिगडा पर बेभाव की पड़ ही गई ।

बेर देकर मोती लेना–बेवकूफ बनाना घटिया वस्तु देकर बढ़िया वस्तु लेना । उ० तुमसे भगवान बचाये, तुम तो बेर देकर मोती लेने वाले हो ।

बेल फैलना–१. किसी चीज की उन्नति या विकास करना । उ० अब तो बेल फैल गई आनँद फल होई । २ वश-वृद्धि होना । उ० उनकी बेल खूब फैल रही है ।

बेल बढ़ना–वंश-वृद्धि होना । उ० भगवान करे, आपकी बेल बढ़े ।

बेसतर करना–१. बेइज्जत करना । २. नगा करना । उ० क्यों बेचारे को बेसतर कर रहे हो ?

बेवक्त की शहनाई बजाना–बेवक्त का काम करना । कोई काम ऐसे समय करना जब उसे करना उचित न हो । उ० क्या बेवक्त की शहनाई बजा रहे हो ? पड़ोसी का लडका मरा है और तुम्हे रेडियो सुनने की सूझी है !

बे-सिर-पैर की बात कहना–अनहोनी या असंभव बात कहना, ऊलजलूल कहना । उ० फिर गए सिर जब हमारे सिर धरे, बात बे-सिर-पैर की कहने लगे ।

बेहयाई का जामा ओढ़ना–दे० 'बेहयाई का जामा पहनना' ।

बेहयाई का जामा पहनना–निर्लज्ज हो जाना । उ० उस औरत ने तो बेहयाई का जाना पहन लिया है । आज उन गुडो के साथ खुले आम घूम रही थी ।

बेहयाई का बुरका ओढ़ना–दे० 'बेहयाई का जामा पहनना ।'

बेहयाई का बुरका पहनना–दे० 'बेहयाई का जामा पहनना' ।

बेहयाई की चादर ओढ़ना–दे० 'बेहयाई का जामा पहनना' ।

बैठ कर खाना–बिना कुछ काम किये बैठे बैठे खाना ।

बैठने का ठिकाना करना–जीविका का सामान्य उपाय करना ।

बैठते-उठते–हरदम, सदा । उ० वह बैठते-उठते राम-नाम जपता है ।

बैठी रहना–१. बिना ब्याहे रह जाना । २. प्रतीक्षा मे रहना ।

बैठे-बिठाये–१ निरर्थक, अकारण । उ० बैठे-बिठाये यह झगडा मोल ले लिया । २. अचानक । उ० बैठे-बिठाये यह आफ़त कहाँ से आ पडी ? ३ बिना परिश्रम के, आसानी से । उ० बैठे-बिठाये १०० रु० मिल गये ।

बैठे रहो–१. अलग रहो । उ० तुम बैठे रहो, यह काम हो जायगा । २ शांत रहो । उ० बैठे रहो, नही तो काम बिगड़ जायगा । ३. आराम से रहो । उ० तुम बैठे रहो, मैं ही इसके लिए काफ़ी हूँ ।

बैर करना–१. दुश्मनी करना । उ० उनसे बैर करके क्यो आफ़त मोल लेते हो ? २ ईर्ष्या रखना ।

बैर काढ़ना–बदला लेना । उ० क्षत्रिय और साँप बारह वर्ष तक का बैर काढ़ते है ।

बैर ठानना–दे० 'बैर करना'।

बैर डालना–दुश्मनी पैदा करना। उ० उन दोनों मे किसी तरह बैर डालो तो अपना काम बन जाय।

बैर निकालना–दे० 'बैर काढ़ना'।

बैर पड़ना–दुश्मनी होना। उ० आजकल दोनों में बैर पड़ा है।

बैर बिसाहना–झगड़ा मोल लेना। जान-बूझकर झगड़ा लेना। उ० बैर बिसाहा है तो परिणाम के लिए भी तैयार रहना।

बैर मानना–१. दुश्मनी रखना। २. बुरा मानना। उ० इतनी-सी बात पर उनसे बैर मान गये।

बैर मोल लेना–दे० 'बैर बिसाहना'।

बैर लेना–१ दुश्मनी रखना। २ बदला लेना। उ० होशियार रहना, वह बैर लिए बिना शात नही बैठने का।

बैल के-से दीदे निकालना–बिना कुछ समझे यों ही ताकते रहना।

बैल से दूध निकालना–जहाँ पर कुछ प्राप्ति की आशा न हो वहाँ से भी कुछ निकालने की चेष्टा करना, असम्भव कार्य करना।

बैल होना–मूर्ख होना। उ० वह तो बैल है, उसे शादी ठीक करने के लिए क्यो भेजते हो?

बैस चढ़ना–जवानी आना।

बैसाख का गदहा होना–अत्यन्त मोटा होना। उ० यार, तुम तो दस ही दिन मे बैसाख के गदहे हो गए! [कहा जाता है कि बैसाख मे गदहे इसलिए मोटे हो जाते है कि गर्मी के कारण पृथ्वी पर घास की कमी देख कर वे सोचते है कि सब घास हम चर गए।]

बैसाखी छोड़ना–सहारा छोड़ना।

बोझ उतरना–१. किसी कठिन काम से छुट्टी पाना। उ० आज परीक्षा खतम हो गई, बड़ा भारी बोझ उतर गया। २. पाप कटना।

बोझ उठाना–कठिन काम की जिम्मेदारी लेना।

बोझ उतारना–१ चिन्ता दूर करना। उ० धीरे-धीरे महाजन का रुपया देकर अपना बोझ उतार दो। २ बेगार टालना। उ० यह आप काम कर रहे हैं या केवल बोझ उतार रहे हैं। ३ हलका या शात करना। ४ पाप काटना।

बोटी-बोटी काटना–१. शरीर के खंड-खंड करना। उ० दुश्मनों ने उसे बोटी-बोटी काट कर फेंक दिया। २. बहुत कष्ट से मारना। उ० बोटी-बोटी मत काटो। एक ही बार मार डालो।

बोटी-बोटी फड़कना–जोश आना। उ० उसकी कविता सुन कर बोटी-बोटी फड़कने लगी।

बोतल ढलना–खूब शराब पिया जाना। उ० वहाँ बोतल ढल रही है और आप इबादत का नाम ले रहे है।

बोया हुआ काटना–करनी का फल पाना।

बोरिया-बधना उठाना–जाने की तैयारी करना। उ० तुम्हारा काम हो गया हो तो बोरिया-बधना उठाओ।

बोरी बाँधना–चलने की तैयारी करना। उ० बोरी बाँध लो। अब यहाँ से चला जायगा।

बोल उठना–एकाएक कुछ कहने लगना। उ० वह बीच सभा मे कुछ बोल उठा।

बोल जाना–१ मर जाना। उ० एक ही लाठी मे वह बोल गया। २ खतम हो जाना। उ० मिठाई बोल गई और मँगा लो। ३. थक जाना। ४ दीवाला निकलना। उ० वह बैंक तो बोल गया।

बोलती मारी जाना–मुँह से शब्द न निकलना। उ० साहब के सामने जाते ही उसकी बोलती मारी जाती है, और यों ऐसी बात करता है, जैसे साहब का साहब हो।

बोलबाला रहना–१. सम्मान रहना। रोब-दाब रहना। उ० आजकल उसका यहाँ खूब बोलबाला है। २ धाक रहना। रोब रहना। ३ प्रसिद्धि रहना।

बोलबाला होना–रोब या दबदबा होना। उ० उसका यहाँ खूब बोलबाला है।

बोल मारना–ताना देना। व्यंग्य करना। उ० क्या बोल मारते हो, मेरा भी कभी समय पलटेगा।

बोली कसना–दे० 'बोल मारना'।

बोली छोड़ना–दे० 'बोल मारना'।

बोली बोलना–दे० 'बोल मारना'।

बोली में मिठास घोलना–अत्यन्त मधुर बातें बोलना।

बोह देना–नहलाना। उ० हाथी को बोह दे दो।

बोहनी होना–सवेरे पहले-पहल बिक्री होना। उ० बोहनी हो जाय तो उधार ले जाना

ा–गोता लगाना। उ० हाथी बोह ले ।

जाना–हैरान हो जाना, परीशान हो । उ० तुम जरा-जरा-सी बात पर क्यों जाते हो, जरा धीरज से काम करो ।

करना–बहुत देना । खूब फेकना या । उ० वह गालियों की बौछार कर । रुपयों की बौछार न करो ।

ाड़ना–चारो ओर से (सबकी) फटकार ।

चाँद पकड़ना–छोटे व्यक्ति का बडा रना ।

ना–दे० 'बौखला जाना' ।

देना–दे० 'व्यवस्था देना' ।

चलाना–सूद पर रुपया देना । उ० न ब्योहार चलाने का काम बहुत कम ा है ।

ब्यौंत खाना–ठीक हिसाब-किताब बैठना । उ० ब्यौत खाये तो मेरा भी प्रबन्ध कर देना ।

ब्यौत बाँधना–किसी तरह प्रबन्ध करना । उ० मेरे लिए भी दस रुपये का ब्यौत बाँध दो ।

ब्रह्मांड चटकना–खोपड़ी फटकना । उ० सिर के दर्द से मेरा ब्रह्माड चटक रहा है ।

ब्रह्मा का अपने हाथों से सँवारना–अत्यन्त कुरूप या सुन्दर होना ।

ब्रह्मा की शाम होना–प्रलय निकट होना ।

ब्रह्मा के अक्षर–दे० 'बिधना के अक्षर' ।

ब्रह्मा बनना–किसी काम को करने वाला या बनाने वाला बनना । उ० जिस काम के ब्रह्मा बनना चाहते हो, उसमे कुछ करोगे भी ।

ब्राह्मण और बाम्हन का अतर होना–ऊपर से थोडा और भीतर से बहुत अतर होना । उ० तुम दोनो मे ब्राह्मण और बाम्हन का अतर है ।

भ

मारना–बहुत साधारण और छोटा रना । उ० भँकारी मारकर आप अपने त बहादुर समझते है ।

ाड़े में जाना–बेकार जाना । उ० सारा ा भंग के भाडे मे गया ।

ा होना–नसे की सी या पागलपन की रना; उलटे-सीधे काम करना ।

ना–भग पिया जाना । उ० वहाँ तो ानती है, तुम जैसे सच्चे साधुओं का ाही ।

ाना–भाँग पीना । उ० वह खूब भग है ।

उड़ा देना–एक ही बार मे दो भाग ा । उ० उसने एक ही लाठी मे उसका टे-सा उड़ा दिया ।

मचाना–तोड-फोड करना । उ० यहाँ ड़ न मचाओ ।

ा–बरबाद होना । उ० तुम लागों की ाही से सारा धन भंड हो गया ।

ना–भेद खुलना । उ० भडा फूटते ही कू पकड़ लिये गये ।

करना–दे० 'भंडा फोड़ना' ।

भडा फोड़ना–भेद खोलना । उ० इस चोरी का भडा न फोडना, नही तो सब लोग फँस जायँगे ।

भडारा करना–बहुत से साधुओं को भोजन कराना । उ० महथ भडारा कर रहे है ।

भडारा देना–दे० 'भडारा करना' ।

भँवर की नाव होना–घूम-फिर कर उसी स्थान पर बने रहना ।

भँवर में डालना–फेर मे डालना । उ० भँवर मे डालूँगा तो हुलिया बिगड जाएगो ।

भँवर मे पड़ना–चक्कर मे पडना । उ० अभी तो बहुत बहकते हो, पर जब भँवर मे पड़ोगे तो छठी का दूध याद आ जायगा ।

भखना या भख करना–खाना । उ० तुम्हे तो कभी सतोष ही नही होता है, जब देखो कुछ न कुछ भखते ही रहते हो ।

भगत बनना–भला बनने का ढोग करना ।

भगल करना–नक़ल मचाना । उ० बीमार नही है, भगल कर रहा होगा ।

भगल गाँठना–१ छल-कपट करना । २. ढोग करना । ३. इद्र-जाल या बाजीगरी करना ।

भगल निकालना–दे० 'भगल गाँठना'।

भगल मचाना–दे० 'भगल करना'।

भगवान के घर जाना–मर जाना।

भगवा पहनना–संन्यास लेना।

भगदड़ मचना–किसी डर या दुर्घटना आदि से लोगों का इधर-उधर भागना। उ० हाथी के बिगड़ते ही मेले में भगदड़ मच गई।

भगीरथ प्रयास करना–जी-जान से प्रयत्न करना।

भगा ले जाना–किसी की स्त्री को अपने साथ चुपके से ले भागना।

भटका फिरना–१. खोज में इधर-उधर मारे-मारे भटकना। उ० क्या भटके फिरते हो। अब वह नहीं मिलेगा। २. गुमराह फिरना। गलत रास्ते पर जाना। उ० वह क्या साधना करेगा, बरसों से भटका फिरता है।

भठ देना–बुरी जगह फेंकना। उ० आपने अपनी लड़की भठ दी।

भट्ठी दहकना–किसी का कारबार जोरों पर होना। उ० आजकल उसकी भट्ठी खूब दहकी हुई है। उसका क्या पूछना है?

भट्ठी में फेंकना–नष्ट करना। बरबाद करना। दूर करना। उ० भट्ठी में फेंको, ऐसी बातों को।

भट्ठी-सा–बहुत दुःखदायी।

भड़क उठना–१ नाराज होना। २. आन्दोलन का उठना। ३ आग का तीव्र होना।

भड़ास निकालना–दिल का गुबार निकालना।

भद्रा लगाना–अड़चन पैदा करना। उ० शुभ कार्य में भद्रा लगाना ठीक नहीं।

भनक पड़ना–किसी तरह पता चल जाना। सुनगुन मिलना। उ० हमारे कान में पहले ही इसकी कुछ भनक पड़ गई थी।

भभकी देना–घुड़की देना। उ० आपके भभकी देने से मैं नहीं डर सकता।

भभकी में आना–डर जाना, घुड़की से डर कर वश में आना। उ० तुम्हारी भभकी में आकर उसने अपना बहुत नुकसान कर दिया।

भभूका बनना–दे० 'भभूका होना'।

भभूका लाल होना–बहुत क्रोधित होना। उ० वह तो आज भभूका लाल है।

भभूका होना–क्रोधित होना। उ० मेरी बात सुनते ही वह भभूका हो गया और मारने दौड़ा।

भभूत रमाना–१. साधुओं की तरह राख लगाना। उ० आजकल भभूत रमाने वाले सैकड़ों मिलते हैं। २. साधू होना, संसार से विरक्त होना। उ० लड़का मरा, पत्नी मरी, अब जीवन में कोई रस नहीं, भभूत रमाना ही मेरे लिए सर्वोत्तम है।

भभ्भड़ पड़ना–भगदड़ मचना। उ० सेनापति के मरते ही फौज में भभ्भड़ पड़ गया।

भय खाना–भयभीत होना, डरना। उ० भय खाने की क्या बात है, मैं तो यहाँ हूँ ही।

भरती का–व्यर्थ का, जगह पूरा करने के लिए। उ० यह सब भरती की ईंट है। भरती के शब्द कविता को बिगाड़ देते हैं।

भर नजर देखना–अच्छी तरह देखना। उ० उसे मैं भर नजर देख लूँगा तो मुझे संतोष हो जायगा।

भर नींद सोना–दे० 'नींद भर सोना'।

भर पाना–चुकता होना। उ० रुपया भर पाने पर मैं भी दस्तखत कर दूंगा।

भरम खुलना–गुप्त रहस्य खुलना। भेद खुलना। जबतक भरम बना है, ठीक है, खुलने पर वह कौड़ी का तीन हो जायगा।

भरम खोना–विश्वास गँवाना। उ० इतने बड़े आदमी का भरम खोना ठीक नहीं है।

भरम गँवाना–१ अपना भेद खोलना। उ० बेकार में आप अपना भरम गँवाकर आपत्ति में पड़ गये। २. इज्जत गँवाना।

भरे घर का चोर–किसी वस्तु की अधिकता देख कर हतबुद्धि हुआ व्यक्ति।

भरम बिगाड़ना–१. भेद खोलना। उ० आने के साथ ही भरम न बिगाड़ो, कुछ बात हो लेने दो। २ बनीबनाई प्रतिष्ठा भंग करना।

भरमार कर देना–ज्यादती करना। ढेर लगा देना। उ० मैं तो ऐसा-वैसा समझता था, पर उसने तो बरात में सामान की भरमार कर दी।

भरा-पूरा–सब प्रकार से पूर्ण। उ० ईश्वर सर्वदा भरा-पूरा रखे।

भरी जवानी–पूर्ण यौवनावस्था।

भरे मुँह गिरना–१. आतुर होना। २. मुँह के बल गिरना।

भरोसा आना–विश्वास होना।

भर्राया स्वर–रुलाई या करुणा के कारण भारी हुआ स्वर।

भर्रे पर चढ़ाना–दम पर चढ़ाना, झाँसे में लाना। उ० भर्रे पर चढ़ा कर उसे भी शराब पिला दी।

भला-चंगा–शरीर से स्वस्थ। उ० वह भला-चंगा है, बीमार तो नहीं है।

भला-बुरा–हानि और लाभ। उ० तुम अपना भला-बुरा समझ लो, नही तो बाद मे पछताओगे।

भले ही–परवाह नही, चाहे जो हो। उ० वे भले ही मुझसे न बोले, पर मैं उनके यहाँ जाने से नही रुक सकता।

भविष्य काला होकर सामने नाचना–भविष्य अंधकारमय जान पड़ना।

भसुर होना–ऐसा होना जिसे छूआ न जा सके। उ० यह घड़ी तुम्हारे लिए भसुर है क्या, कि नही छू रहे हो?

भस्म होना–१. जल जाना। उ० मेरा घर आग लग जाने से भस्म हो गया। २ बर्बाद हो जाना, नष्ट हो जाना। उ० नशेबाजी मे उसका धन भस्म हो गया।

भाँग खा जाना–होश मे न रहना। पागल की तरह हो जाना। उ० गाव का गाँव भाँग खा गया है।

भाँग छानना–भाँग की पत्तियो का पीस कर नशे के लिए पीना। उ० भाँग छानने वालो से मुझे बड़ी नफ़रत है।

भाँजी मारना–शिकायत करना। उ० दूसरो की भाँजी मारने मे तुम्हे क्या आनन्द आता है?

भाँड़ा फूट जाना–गुप्त बात प्रकट हो जाना, भेद खुल जाना। उ० जब षड्यंत्र का भाँडा फूट जायगा तो बड़ी खलबली मचेगी।

भाँड़े भरना–पछताना। उ० काम बिगड़ जाने पर भाँड़े भरना बेकार है।

भाँड़े में जी देना–किसी पर दिल लगा होना। उ० भाँड़े में जी दिए हो क्या, जो ऐसी दशा हो गयी है?

भाँड़े में जी होना–किसी पर दिल लगा रहना। उ० को तुम उत्तर देय हो पाँड़े। सो बोले जाको जिव भाँड़े।

भाँति-भाँति के–अनेक प्रकार के। उ० उनके निमंत्रण मे भाँति-भाँति के पकवान बनाए गए थे।

भाग खड़ा होना–१. हार जाना, मैदान छोड़ देना, बराबरी न कर सकना। उ० तुम्हे देखते ही लडाई के मैदान से वह भाग खड़ा होगा।

भाग-दौड़ की जिन्दगी–अत्यन्त व्यस्त जीवन।

भागते की लँगोटी–डूबते रुपये का कुछ हिस्सा, जाती चीज का कुछ हिस्सा। उ० भागते की लँगोटी मिल जाय, तो वही बहुत है।

भाग्य की लिखनी–दे० 'विधाता की लिखनी'।

भाग्य के अक्षर–दे० 'विधना के अक्षर'।

भाग्य अंधेरा होना–बदकिस्मती होना।

भाग्यलक्ष्मी सो जाना–भाग्य का प्रतिकूल हो जाना।

भाड़ खाना–हराम की कमाई खाना।

भाड़ झोंकना–१. तुच्छ काम करना। उ० उसे तो भाड़ झोंकने का भी शऊर नही है। २. व्यर्थ समय गँवाना। उ० वहाँ क्या इतनी देर भाड़ झोंकते रहे? ३. भाड़ मे ईंधन डालने का काम करना।

भाड में झोंकना–दे० 'भाड़ मे डालना'।

भाड में डालना–१. नष्ट करना। उ० भाड़ मे डालो या रखो, मुझे इससे क्या काम? २. जलाना। ३ फेकना। उ० भाड़ मे डालो इसे, मुझे अब कोई काम नही।

भाड़ में पड़ना–दे० 'चूल्हे में पड़ना'।

भाड़ लीप कर हाथ काला करना–बुरा काम करके बुराई पाना।

भाड़ा देकर बह जाना–जिस काम पर पैसा लगाया जाय, उसका ख़राब हो जाना। उ० भाड़ा देकर बह जाना किसे स्वीकार होगा? मैं ऐसे काम पर एक पैसा नहीं खर्च करूँगा।

भाड़े का टट्टू–१. मजदूरी पर काम करने वाला। उ० कितना भी काम करेगा तो आखिर भाड़े का ही तो टट्टू है, घर के आदमी की और बात होती है। २. बिना सिद्धान्त का आदमी। उ० उसका कोई सिद्धान्त थोड़े है, वह तो भाड़े का टट्टू है। तुम चार पैसे दे दो तो तुम्हारा भी प्रचार कर देगा।

भादों का भैंसा होना–अत्यन्त मोटा होना। उ० तुम तो भादो के भैंसे होते जा रहे हो।

भादों का मेढक होना–अत्यन्त मोटा होना।

भाप लेना–१ बफारा लेना। उ० भाप ले तो फोड़ा फूट जाय। २ अनुमान से जान लेना। उ० उसने तुम्हारी चाल भाप ली, तभी तो नही आया।

भाभड़-मट्टी–दे० 'भाभस-मट्टी'।

भाभस-मट्टी–कम उम्र मे अधिक उम्र का लगने वाला शरीर। उ० तुम्हारी तरह उसकी भाभस मट्टी नही है।

भारी पत्थर चूम कर छोड़ देना–किसी ऐसे काम के ख्याल को दिल मे निकाल देना, जिससे मतलब न पूरा हो। उ० हमने उस संगदिल से मुंह मोड़ा। भारी पत्थर था चूम कर छोड़ा।

भारी पैर होना–गर्भ रहना, गर्भवती होना। उ० भारी पैर होने की सबसे बड़ी निशानी यह है कि मिचली आने लगती है।

भारी लगना–न रुचना, भारस्वरूप ज्ञात होना। उ० मेरा आना भारी लगता हो तो न आया करूँ

भारी होना–मुश्किल होना। उ० यह बहुत भारी काम है, तुमसे न होगा।

भाव उतरना–किसी चीज का दाम घट जाना। उ० आजकल गल्ले का भाव उतर गया है।

भाव करना–दे० 'भाव-ताव करना'।

भाव का भूखा–प्रेम चाहने वाला।

भाव गिरना–दे० 'भाव उतरना'।

भाव चढ़ना–दाम बढ़ जाना। उ० आजकल कपड़े का भाव चढ गया है।

भाव-ताव करना–दाम ठीक करना। उ० भाव-ताव करके सौदा ले लो।

भावनाएँ सोई होना–इच्छाएँ दबी होना।

भाव बताना–१ कोई काम न करके केवल हाथ-पैर मटकाना या नखरा दिखाना। २ भाव समझाना, नृत्य आदि मे बिना बोले बात स्पष्ट करना, हाथ आदि से भाव स्पष्ट करना। उ० वह नाचना तो जानती है; पर अभी भाव बताने की कला मे कच्ची है।

भावों को ताड़ना–आशय समझ जाना। उ० वह ज्योही मेरे पास आया, मै उसके भावो को ताड़ गया।

भिगो-भिगो कर मारना–१. जूतियाँ भिगो कर मारना ताकि चोट ज्यादा लगे। २. डाँटना-फटकारना। ३. बेइज्जती करना। ४ शर्मिंदा करना।

भिड़ के छत्ते छेड़ना–किसी खौफनाक या डरावने मे बैर करना। उ० उस पर नालिश करके भिड़ के छत्ते न छेड़ो।

भीग कर देखना–प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखना।

भीगी बिल्ली होना या हो जाना–बिलकुल चुप हो जाना। दब कर रहना। उ० पिता जी के सामने तो यह भीगी बिल्ली हो जाता है, पर मुझे कुछ गिनता ही नही।

भीड़ चीरना–भीड़ को हटा कर जाने का रास्ता बनाना। उ० भीड़ को चीरता हुआ वह आगे बढ़ गया।

भीड़ छँटना–भीड़ न रह जाना। भीड़ का हट जाना। उ० मेले मे भीड़ छँट गई है।

भीड़ पड़ना–मुसीबत पड़ना।

भीत के बिना चित्र बनाना–बिना सिर-पैर की बात करना। असभव बात करना। उ० भीत के बिना चित्र न बनाओ, कुछ इस दुनिया की बात करो।

भीत में दौड़ना–अपनी शक्ति से ज्यादा काम करना। उ० भीत मे न दौड़ो, नही तो बीमार पड़ जाओगे।

भीतर का कुआँ–ऐसी उपयोगी चीज जिससे कोई लाभ न उठा सके। उ० तुम्हारा सारा ज्ञान मेरे लिए भीतर का कुआँ है।

भीतर की आँखे अंधी होना–आनरिक अनुभूति शून्य होना, अदूरदर्शी होना।

भीतर पैठकर देखना–असली बात मालूम करना। उ० भीतर पैठ कर देखने पर मालूम होगा कि वह कैसा आदमी है?

भीतर-ही-भीतर–१ मन ही मन। उ० भीतर ही भीतर वह मुझसे जलता है। २. चुपके-चुपके। उ० भीतर-ही-भीतर उसने सारा काम कर लिया और मुझे बतलाया तक नही।

भीम का हाथी–जाकर न लौटने वाला। उ० तुम तो भाई, भीम के हाथी हो। तुम्हे मै कही नही भेज सकता।

भीम होना—बहुत बहादुर और विशालकाय होना। उ० वह तो आजकल भीम हो गया है।

भुगत लेना—निपट लेना। उ० आप चुप रहे, मैं उनसे भुगत लूंगा।

भुज में भरना—दे० 'आलिंगन करना'।

भुजा उठा कर कहना—१. घोषणा करके कहना। २. प्रतिज्ञा करके कहना। उ० मैं हाथ उठा कर कहता हूँ कि तुम्हारा खून करके रहूँगा।

भुजा उठाना—प्रतिज्ञा करना। उ० मैं भुजा उठाता हूँ कि इस काम को अवश्य करूँगा।

भुजाओं में बाँध लेना—कस कर आलिंगन करना।

भुजाएँ फड़क उठना—युद्ध के लिए उत्साहित होना।

भुजा ठोक कर लड़ना—वीरतापूर्वक ललकार कर लड़ना।

भुट्टे-सा उड़ाना—साफ काट डालना। उ० उसने सैकड़ों का सिर भुट्टे-सा उड़ा दिया।

भुन-भुन करना—१. कुढ़ कर अस्पष्ट स्वर में कुछ कहना। उ० क्या भुन-भुन कर रहे हो, जो कहना हो साफ़ कहो। २. धीरे-धीरे बोलना। ३. नाक से बोलना।

भुरकुस निकलना या निकल जाना—१. चूर-चूर होना। उ० मिठाई का तो भुरकुस निकल गया। २. किसी काम का न रह जाना, बर्बाद या नष्ट हो जाना। उ० मार के मारे उसका भुरकुस निकल गया है।

भुरकुस निकालना—१. नष्ट कर देना। उ० डाकुओं ने तो उनका भुरकुस निकाल लिया। २. मारते-मारते बेदम करना। उ० पुलिस ने तो चोर का भुरकुस निकाल लिया। ३. बेकार कर देना। उ० तुमने तो मेरी साइकिल का एक ही बार में भुरकुस निकाल दिया।

भुरता करना या कर देना—मसल कर या दबा कर एक में एक मिला देना। उ० तुमने तो रसगुल्लों को भुरता कर दिया।

भुस के मोल मलीदा होना—कुछ क़दर न होना। उ० अभी क्यों घबराते हो, तुम जैसे बदमाश का तो भुस के मोल मलीदा होगा।

भुस भरवाना—बहुत कड़ी सजा देना। उ० अगर फिर कभी ऐसी शरारत करोगे तो भुस भरवा दूंगा।

भुस में आग लगा कर तमाशा देखना—झगड़ा करा कर अलग हो जाना और परिणाम का मज़ा लेना।

भूँज या भून डालना—बहुत तंग करना।

भूँजी भाँग न होना—कुछ न होना, बिल्कुल गरीब होना। उ० उसके पास तो भूँजी भाँग भी नहीं है।

भूख-प्यास चली जाना—खाने-पीने का होश भी न रहना, आत्म-विस्मृत हो जाना।

भूख मरना या मर जाना—भूख का समाप्त हो जाना। उ० नावक़्त होने से मेरी भूख मर जाती है।

भूख लगना—१. खाने की इच्छा होना। उ० जब भूख लगेगी तो मैं खा लूंगा। २. किसी प्रकार की इच्छा होना।

भूख से आँख नाचना—भूख से आँखें निकली पड़ना।

भूखा रहना—भोजन न करना। उ० वह बीमार है, इसलिए आज भूखा रहेगा।

भूखे-प्यासे—बिना खाये-पिये। उ० वह भूखे-प्यासे अब तक काम कर रहा है।

भूखों मरना—खाना न मिलने का दुःख सहना। उ० इस महँगी में लाखों आदमी भूखों मर रहे हैं।

भूड़ के खेत पर गोता मारना—ऐसे काम से कुछ पाने की आशा करना, जहाँ से प्राप्त होना असम्भव हो।

भूत चढ़ना—१. बहुत हठ होना। उ० तुम्हें तो हर एक बात का इसी तरह भूत चढ़ जाता है। २. कुपित होना। उ० उनसे मत बोलो, इस समय उन पर भूत चढ़ा है। ३. शामत सवार होना। उ० तुम पर भूत चढ़ा है तो मैं उतार दूँ।

भूत बन कर लगना—किसी तरह पीछा न छोड़ना। उ० तुम तो भूत बन कर लग रहे हो। मैं यदि ऐसा जानता तो तुमसे मैत्री ही न करता।

भूत बनना—१. नशे में चूर होना। उ० वह भाँग छान कर भूत बन गया है। २. बहुत क्रोध में होना। उ० मेरी बात सुनकर तो वह भूत बन गया। ३. किसी काम में पूर्ण लीन होना। उ० वह जिस काम में लगता है, भूत बनकर लगता है।

भूत सवार होना—दे० 'भूत चढ़ना'।

भून देना—गोलियों से मार देना।

भूत की तरह जुट जाना–किसी काम को पूरा किये बिना न छोडना, किसी काम को करने मे बुरी तरह लग जाना ।

भूमिहार के गाँव में रहना–१ कुछ भूमिहार के गुण वाला होना । २. दे० 'भूमिहार होना' । उ० भूमिहार नही हो तो भूमिहार के गाँव मे रहते तो हो, तुम्हारा विश्वास नही ।

भूमिहार होना–धोखेबाज, अपना मतलब साधने वाला तथा मक्कार होना । उ० वह भी भूमिहार ही है ।

भूमि होना–पृथ्वी पर गिरना । उ० लाठी लगते ही वह भूमि हो गया ।

भूल कर बैठना या भूलना–किसी की सहायता पर अभिमान करना । उ० आप क्या उनके ऊपर भूल कर बैठे है ? वे आपकी कुछ भी सहायता नही कर सकते ।

भूल-भुलैया में पड़ना–ऐसे झझट मे पडना, जिससे निकलने की राह न दिखे ।

भृकुटी टेढ़ी करना–नाराज होना । उ० भृकुटी टेढी करके आप उसका क्या कर सकते है ?

भेजा खाना–बहुत बकबक कर तग करना, मर खाना । उ० मेरा भेजा मत खाओ, यदि नही मानोगे ता मै कही और चला जाऊँगा ।

भेड़ियाधसान–बिना सोचे-समझे दूसरो का अनुकरण करना । उ० भारत मे भेडियाधसान खूब चलती है ।

भेष बदलना–१ अपनी सूरत छिपाना । पोशाक बदलना । दूसरा रूप धारण करना । उ० बहुत से बादशाह भेष बदल कर अपने राज्य में घूमा करते थे ।

भैंस काटना–गरमी का रोग होना । [यह प्रयोग प्राय. गुंडो-बदमाशो मे चलता है ।]

भैंस के आगे बीन बजाना–किसी के आगे ऐसी कला का प्रदर्शन करना, जो उसको बिल्कुल न समझे । उ० भैस के आगे बीन बजावे भैस बैठि पगुराय ।

भैंस से बीन की दाद लेना या होना–जो किसी विषय मे बारे से कुछ भी न जाने, उससे उसकी प्रशसा चाहना ।

भैंस होना–१ सुस्त और ढीला होना । २ मूर्ख होना । ३ काला होना । ४ औरत का बहुत मोटी और काली होना । उ० वह तो भैस है. उससे कौन शादी करेगा ?

भैरों नाचना–उजाड़ होना । उ० वहाँ तो भैरो नाचने लगी । [यहाँ भैरो का स्त्रीलिंग प्रयोग होता है ।]

भोग लगाना–देवताओं को चढाना । उ० वह भोग लगा कर खाना खाता है ।

भोग सुनाना–गालियाँ सुनाना । उ० अगर तुम मुझसे व्यर्थ मे लड़ोगे तो मै ऐसे भोग सुनाऊँगा कि याद करोगे ।

भोर का तारा–प्रभावहीन, निस्तेज ।

भोर होना–१ तबाह होना । उ० लडकी की शादी मे इतना रुपया खर्च हुआ है कि मेरा तो भोर हो गया ।

भौंह चढ़ाना–नाराज होना । उ० आप मेरे ऊपर भौह चढा रहे है ?

भौंह जोहना–१. खुशामद करना । उ० वह दिन-रात मेरा भौह जोहता रहता है । २. मुख देखना । उ० अपने मालिक का भौह जोहकर काम किया करो ।

भौंह ताकना–रुख देखना । उ० मालिक का भौह ताक कर नौकर को कुछ कहना चाहिये ।

भौंह तानना–दे० 'भौह चढाना' ।

भौंह में बल होना–चेहरे पर असंतोष या तनाव का भाव होना ।

भौंचक रह जाना–हक्का-बक्का हो जाना । उ० इनके विचित्र काम को देख कर कितने ही भौचक रह गये ।

भ्रम की यवनिका फटना–भ्रम दूर होना ।

भ्रम के हिंडोले में झूलना–बहुत बड़े भ्रम मे होना ।

भ्रमर-वृत्ति होना–इधर-उधर से लेने की वृत्ति होना । उ० उस लेखक की भ्रमर-वृत्ति है, उसमे मौलिकता बहुत कम है ।

भ्रू मटकाना–सान बुझाना । इशारा करना । उ० भ्रू न मटकाओ, साफ़ कहो ।

म

मँगता होना–भिखमगा होना। उ० वह तो मँगता है, उसे अपनी इज्जत का क्या ख्याल हो सकता है ?

मँगनी करना–तिलक या बरिच्छा करना, सगाई करना। उ० आज लोग उनकी मँगनी करने जायँगे।

मँगनी देना–उधार देना। उ० घडी, क़लम और साइकिल मँगनी देने से खराब हो जाती है।

मँगनी माँगना–उधार माँगना। उ० शादी आदि के अवसर पर बहुत-सी चीजें मँगनी माँगी जाती है।

मगला लड़का–ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार विवाह के लिए अनुपयुक्त लड़का। उ० मगला लडके से कौन शादी करेगा ?

मगलामुखी–वेश्या।

मगली लड़की–ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार विवाह के लिए अनुपयुक्त और बुरी लडकी। उ० यह तो मगली है, इससे कौन ब्याह करेगा।

मँजा होना–सधा और अभ्यस्त होना।

मजिल कटना–बहुत लबा सफ़र तय होना। उ० किसी तरह आज मजिल कटी।

मजिल मारना–बहुत दूर पैदल चलना। उ० मैं आज मज़िल मार कर आ रहा हूँ।

मंझा घटना–तेज़ी घटना। एक ही डॉट मे मझा घट गया।

मंझा देना–लेस चढ़ाना। उ० पतग के तागे पर मंझा दे दो।

मडल बाँधना–१. घेरना। उ० बादल खूब मडल बाँधे हुए है। २. चारों ओर अँधेरा छा जाना। ३. चक्कर काटना।

मंडी उठना–बाजार या मडी का बंद होना। उ० मंडी उठ गई, अब चलो।

मंडी लगना–बाजार खुलना। उ० मंडी ८ बजे लगती है।

मझधार में छोड़ना–१ विपत्ति के समय साथ छोड़ देना। २. किसी बात को अनिश्चित अवस्था में छोड़ देना।

मंत-तत–उद्योग, प्रयत्न। उ० कुछ मंत-तंत मे मेरा विश्वास नही है।

मंत्र चलाना–वश मे कर लेना, प्रभाव डालना।

मंत्रणा करना–राय-मशविरा करना। उ० वे लोग मंत्रणा कर रहे है।

मंत्रणा देना–परामर्श या सलाह देना।

मंत्र देना–१. सलाह देना। उ० वह मेरे मंत्र देने पर चलता है। २ चेला बनाना। उ० मैने बहुत से अहीरों को मंत्र दिया है। ३. युक्ति या उपाय बतलाना। उ० इसको मत्र तो मै दूँगा, पहले तुम उसको तो करो।

मंत्र फूँकना–१. बहका देना। उ० उन्होने मंत्र फूँक दिया, नही तो वह अवश्य मेरा काम कर देता। २ मत्र का जादू करना। उ० मत्र फूँक कर उड़ा दूँगा। ३ मत्र द्वारा बीमारी आदि हटाना। उ० उसे मंत्र फूँकना आता है।

मंत्र-यंत्र–१. मत्र इत्यादि। २. जादू टोना।

मदा पडना–गिर जाना, नीचे आना। उ० आजकल अनाज का भाव मदा पड़ गया है।

मंदा बोलना–१ धीमी-धीमी आवाज मे बोलना। उ० आज क्या बात है कि आप मदा बोल रहे है। २. किसी बात का दिल मे समर्थन न करना। उ० आप तो मदा बोल रहे है। अपनी राय साफ़ दीजिये। ३ डरना। डर कर धीमी आवाज मे बोलना। उ० तुम्हारे सामने वह मंदा बोलता है।

मक़दूर से बाहर पाँव रखना–योग्यता से बढ़कर काम करने की कोशिश करना। उ० मकदूर से बाहर पाँव न रखना, नही तो बेवकूफ़ बनना पडेगा।

मक़दूरी चलना–अधिकार होना। उ० उस पर आपकी मकदूरी नही चल सकती।

मकान बैठ जाना–मकान का कमज़ोर होने के कारण गिर जाना।

मक्खन मलना–दे० 'मक्खन लगाना'।

मक्खन लगाना–चापलूसी करना। उ० उसे मक्खन लगाना खूब आता है।

मक्खियाँ भिनकना–बहुत गदा होना। उ० उसके घर तो मक्खियाँ भिनकती हैं।

मक्खी उड़ाना–दे० 'मक्खी मारना'।

मक्खी का सर–बहुत थोड़ा।

मक्खी की तरह निकाल फ़ेंकना–एकदम अलग कर देना। उ० उसने अपने दुष्ट लड़के को घर से मक्खी की तरह निकाल फेंका।

मक्खी की मक्खी मारना–बेकार का काम करना। उ० वह दिन भर मक्खी की मक्खी मारा करता है।

मक्खी घोंटना–दे० 'जीती मक्खी घोटना'।

मक्खीचूस होना–कंजूस होना। उ० वह बड़ा मक्खीचूस है। खर्च करने का तो नाम ही नही जानता।

मक्खी छोड़ना और हाथी निगलना–छोटे पापो से बचना और बड़े पाप करना। उ० बिड़ला गरीबो का खून चूस कर लाखो इकट्ठा करता है और दूसरी ओर दो-चार-दस दान कर देता है, यानी मक्खी छोड कर हाथी निगलता है।

मक्खी जीती निगलना–१. जान कर हानि का काम करना। उ० मक्खी जीती निगलना बेवकूफ़ी का काम है। उ० २ पाप का ख्याल न करना। उ० उसका क्या ? वह तो मक्खी जीती निगल सकता है। ३. जान कर किसी बुराई को होने देना।

मक्खी नाक पर न बैठने देना–१ किसी को एहसान करने का समय न देना। उ० वह तुरत बदला चुका देता है, मक्खी तक नाक पर नही बैठने देना। २. अभिमान से किसी के सामने न दबना। उ० यदि तुम मक्खी नाक पर नही बैठने देते हो तो इसमे तुम्हारी शिकायत ही है। ३. कजूस होना।

मक्खी पर मक्खी मारना–बिना सोचे-विचारे बिलकुल वैसा ही अनुकरण करना।

मक्खी मारना–१. बिलकुल निकम्मा रहना। उ० क्या दिन भर मक्खी मारते हो ? क्या मक्खी मार रहे हो ? २. बेकार का काम करना।

मखमल में गाढ़े का पैबन्द–अच्छे तथा श्रेष्ठ के साथ तुच्छ तथा सामान्य का अनमेल मेल।

मखाने के पत्ते से मुंह पोंछना–टापते रहना।

मखौल उड़ाना–उपहास करना।

मग–मग के मुहावरे के लिए 'बाट' और 'राह' देखिए।

मग़ज़ उड़ना–१. बदबू या शोर से दिमाग़ ख़राब होना। उ० मेरा यहाँ आते ही मगज़ उड़ जाता है। २. दिमाग़ का थका होना। उ० आज कुछ न बोलो, मेरा मग़ज़ उड़ रहा है।

मग़ज़ उड़ाना–१. बहुत बोल कर परीशान करना। उ० आपने तो उसका मगज़ उड़ा दिया, अब भी तो चुप रहिये। २. पागल कर देना।

मगज़ के कीड़े उड़ाना–१. बहुत बोलना। उ० क्या मगज के कीड़े उड़ा रहे हो ? २. बहुत तर्क लगाना। उ० कृपाकर मगज़ के कीड़े न उड़ाइए।

मग़ज़ खाना–दे० 'मगज उड़ाना'।

मग़ज़ ख़ाली करना–१ बहुत अधिक दिमाग़ लड़ाना। उ० इस प्रश्न पर मैंने बहुत मग़ज़ ख़ाली किया, पर कुछ भी न निकला। २ व्यर्थ बकवाद से दिमाग थका देना। उ० तुमने तो मेरा मगज ख़ाली कर दिया। ३. पागल बना देना।

मग़ज़ खौलना–१ बहुत काम करने से दिमाग का ठीक न रहना। उ० आफ़िस में आज मेरा मगज़ खौलने लगा। २ गर्मी से दिमाग ठीक न रहना। उ० आजकल दोपहर को मेरा मगज़ खौलने लगता है। ३ क्रोध से दिमाग़ ठीक न रहना। उ० उसकी अभिमान-पूर्ण बाते सुनकर मेरा मगज़ खौलने लगा। ४. बदबू के कारण दिमाग ठीक न रहना।

मग़ज़ चलना–१ बुद्धि चलना। उ० इन बातो मे उसका मगज़ खूब चलता है। २ गर्व करना। उ० अच्छा अब आपका भी मगज़ चलने लगा। ३. पागल होना।

मग़ज़ चाटना–दे० 'मगज उड़ाना'।

मग़ज़ पचाना–१. बहुत दिमाग़ लड़ाना। उ० बहुत मग़ज़ पचाया, पर कुछ समझ मे नही आया। २. समझाने के लिए बहुत बकना। तुमसे क्या मग़ज़ पचाऊँ, तुम्हारे समझ मे तो कुछ आ नही सकता।

मग़ज़-पच्ची करना–दे० 'मग़ज़ ख़ाली करना'।

मग़ज़ भिन्नाना–दे० 'मग़ज़ उड़ना'।

मग़ज़ मारना–किसी मूर्ख को कुछ समझाने का प्रयत्न करना। उ० एक घंटे से मग़ज़ मारता हूँ, पर इस लड़के की समझ में ख़ाक नही आया।

मगन होना—बहुत खुश होना । उ० लड़का खिलौना पाते ही मगन हो गया ।

मगर-अगर करना—टालना, आनाकानी करना । उ० अगर न देना हो तो साफ इन्कार कर दो, मगर-अगर की क्या ज़रूरत ?

मगर से बैर कर पानी में रहना—अपने ही साथ के सशक्त लोगों से वैर करने की मूर्खता करना ।

मगरूरी चकनाचूर हो जाना—गर्व दूर हो जाना ।

मछरहट्टा या मछलीहट्टा बनाना या होना—शोर गुल करना या होना ।

मजमून बाँधना—कल्पना करना, नये भावों की उद्भावना करना । उ० गालिब ऐसा मजमून बाँधता था कि लोग सुन कर दंग रह जाते थे ।

मजमून मिलना—दो लेखकों के भाव मिल जाना । उ० यह तो मजमून मिला है, इसे नकल नहीं कह सकते ।

मजमून लड़ना—दे० 'मजमून मिलना' ।

मजल मारना—मंजिल मारना । बहुत बड़ा रास्ता तय करना । उ० मजल मार कर आ रहा हूँ, जरा आराम करने दो ।

मजा आ जाना—१ हँसी का सामान मिलना । उ० अगर हममें से कोई यहाँ पानी में गिर जाय तो मजा आ जाय । २ आनन्द आ जाना । उ० सूखी रोटी खानी थी, मगर पके आमों के आ जाने से मजा आ गया ।

मज़ा उड़ाना—१ आनन्द लेना । उ० हम सभी लोग यहाँ खूब मज़े उड़ा रहे है । २ स्वाद लेना । उ० जरा इसका भी मजा उड़ाओ ।

मज़ाक उड़ाना—१. बेवकूफ बनाना । उ० किसी का मज़ाक उड़ाना ठीक नहीं है । २. हँसी-ठट्ठा करना । उ० आप तो मजाक उड़ा रहे हैं, यहाँ प्राणों पर आ पड़ी है ।

मजा किरकिरा होना या हो जाना—रंग में भंग पड़ना । उ० पिताजी के आ जाने से खेल का सारा मज़ा किरकिरा हो गया ।

मजा चखाना या चखा देना—बदला लेना । उ० अच्छा आज बच भी गये तो दो-चार दिन में ही इसका मजा चखा दूँगा ।

मजा देखना—दे ०'मज़ा लेना' ।

मज़ा पड़ना—आदत पड़ना । उ० ताश का उसे मज़ा पड़ गया है, दिन-रात खेला करता है ।

मज़ा लूटना—दे० 'मज़ा उड़ाना' ।

मज़ा लेना—१ तमाशा देखना । उ० लड़कों में लड़ाई हो रही है और आप मज़ा ले रहे हैं । २ आनन्द लेना । ३ स्वाद लेना । उ० बाजरे की रोटी का मज़ा लेना चाहते हो तो घी और गुड़ से खाओ ।

मज़े का—१ अच्छा, बढ़िया । उ० खूब मज़े की नाच थी, रात भर देखा । २. मस्त । उ० वह मजे का आदमी है ।

मज़े में—१ आनन्द से । उ० मैं दो वर्ष से वहाँ मजे में हूँ । २ अच्छी प्रकार, पूर्णरूपेण । उ० इस काम को मज़े में कर देना ।

मज़े से—दे० 'मज़े में' ।

मझधार में छोड़ना—बीच में छोड़ना । ऐसे समय या ऐसी परिस्थिति में छोड़ना जब किसी ओर भी जाना सभव न हो । उ० मुझे मझधार में मत छोड़ो ।

मझधार में पड़ना—आफ़त में फँसना । उ० मझधार में पड़ने पर भगवान के सिवा कोई मदद नहीं कर सकता ।

मटकी देना—आँख मटकाना । उ० उस छोटी लड़की का मटकी देना बड़ा अच्छा लगता है ।

मटरगश्त करना—दे० 'मटरगश्ती करना' ।

मटरगश्ती करना—बेकार इधर-उधर घूमना । उ० क्या मटरगश्ती करते हो, कुछ काम भी करो ।

मटियामेट कर देना—तहस-नहस करना । उ० अंग्रेज़ों ने भारत को मटियामेट कर दिया ।

मट्टी पलीत करना—१ दुर्दशा करना । उ० उस दिन तो आपने मेरी मट्टी खूब पलीत की । २ नष्ट कर देना ।

मठना—काट-छाँट कर ठीक करना । उ० इस छड़ी को मठ दो ।

मठ मारना—खराब करना । बिगाड़ना । उ० बनाने वालों के छक्के छूट जाते है और तुम लोगों को मठ मारते देर नहीं लगती ।

मठा-मूसल धमकना—व्यर्थ की बड़ी-बड़ी बातें करना ।

मणि फेंक कर काँच बटोरना—मूल्यवान् वस्तु का तिरस्कार कर व्यर्थ की वस्तु का संग्रह करने की मूर्खता करना ।

मढ़ आना–घिर आना । उ० आज सुबह ही से बादल मढ़ आये है ।

मत देना–१. वोट देना । २. राय देना ।

मत मारी जाना–समझ न रहना । मूर्ख हो जाना । उ० उसकी तो मत मारी गई है, इसी से तो ऐसी बात करता है ।

मत में आना–बुद्धि मे आना, समझ मे आना । उ० अगर तुम्हारे मत मे आये तो तुम भी इस काम को कर डालो ।

मतलब के यार–अपना काम पड़ने पर मित्र बनने वाले । उ० मतलब के यारो से मुझे बड़ी नफ़रत है ।

मतलब की घात चलना–अपना स्वार्थ ही देखना । उ० वे तो सर्वदा मतलब की घात चलते है ।

मतलब गाँठना–स्वार्थ-साधना । उ० बहुत से लोग मतलब गाँठने के लिए ही मित्रता करते है ।

मतलब निकालना–दे० 'मतलब गाठना' ।

मतलब हो जाना–१. मतलब पूरा हो जाना । उ० मतलब हो जाने पर कौन किसका होता है ? २. बुरा हाल होना । उ० इतनी ही दूर आने में उसका मतलब हो गया । ३. मर जाना ।

मतली-सी होना–जी मचलाना । उ० आज सुबह ही से मुझे मतली-सी हो रही है ।

मता करना–१ षड्यंत्र करना । २. धोखा फैलाना । ३ राय-बात करना । उ० क्या मता कर रहे हो ?

मति कच्ची होना–कम समझ होना ।

मति हर लेना–बुद्धि, विवेक नष्ट कर देना ।

मति थकना, पंगु हो जाना–किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो जाना ।

मत्था टेकना–१. सिर नवाना । उ० गुरु के सामने सबको मत्था टेकना चाहिये । २. झुकना, विनम्र या विनीत होना । ३. हार मानना । उ० आखिर उसके सामने तुम्हें मत्था टेकना ही पड़ा ।

मत्था मारना–१. बहुत सोचना-विचारना । उ० उसने बहुत मत्था मारा, पर कुछ समझ मे न आ सका । २. बहुत समझाना । उ० मैने लाख मत्था मारा, पर उसकी समझ मे नही आया ।

मत्थे डालना–ज़िम्मे लगाना । उ० उसने सारी हानि मेरे मत्थे डाल दी ।

मथ डालना–एक ही बात को बार-बार कहे जाना ।

मथानी पड़ना–गड़बड़ी होना । उ० यदि मथानी पड़ी तो तुम ज़िम्मेदार होगे ।

मथानी बहना–दे० 'मथानी पड़ना' ।

मद चूर करना झारना– गर्व दूर करना ।

मदद पहुँचना–सहायता मिलना । उ० युद्ध-स्थल पर अंतिम समय में मदद पहुँची ।

मदद बाँटना–पारिश्रमिक बाँटना । उ० आज तो ठेकेदार ने सबकी मदद बाँट दी ।

मद पर आना–१. जोश मे आना । उ० मद पर आएगा तो सब कर डालेगा । २. जवानी मे आना । उ० पाठा साठा मे मद पर आता है ।

मद से अंधा होना–बहुत घमड में होना ।

मधुप वृत्ति होना–दे० 'भ्रमर-वृत्ति होना' ।

मन अटकना–१ आसक्ति होना, मुहब्बत होना । उ० केवल एक बार के ही मिलन मे दोनों का मन अटक गया । २. मन का रुक जाना ।

मन आधा होना–हतोत्साह होना ।

मन आकाश में उड़ना–मन मे बहुत-सी कल्पनाओं का उठना ।

मन आना–१. इच्छा होना । उ० मन आ गया है, कर ही डालूंगा । २. जान पड़ना । उ० मेरा मन आता है कि वह नहीं आएगा ।

मन उलझना–दे० 'मन अटकना' ।

मन कच्चा करना–१. साहस न करना । उ० मन कच्चा न करो, एक बार और आज़मा लो । २. बहुत भावुक होना । ३. दु.ख या आफ़त पड़ने पर अधिक रोना या डरना । उ० मन कच्चा न करो, धैर्य से सहो ।

मन करना–चाह होना, कामना होना । उ० मन करता है कि मैं भी चला जाऊँ ।

मन कसर-मसर करना–मन में दुविधा होना ।

मन का मारा–दु.खी आदमी । उ० वह तो स्वयं मन का मारा है, उसे न सताओ ।

मन का काला होना–खोटा होना, मन से साफ़ न होना ।

मन का आईना–मन के भावों को प्रकट करने वाला ।

मन का मैला–छली, कपटी । उ० भाई, मन के मैले आदमियों से तो मुझे बड़ी नफ़रत है ।

मन का शूल–मन की वेदना।

मन की थाह लेना–किसी के मन में क्या है, इसका अंदाज़ लगाना।

मन की गाँठ खोलना या खोल डालना–१. जी खोल कर कहना। २. मनमुटाव दूर करना। उ० आज होली के दिन मिल कर मन की गाँठ खोल डालो।

मन की मन में रहना–इच्छा पूरी न होना। उ० बहुत कुछ सोचा था, परंतु कुछ कह न सका; मन की मन में ही रह गई।

मन के लड्डू खाना–निरर्थक आशा में प्रसन्न होना। काल्पनिक या ख्याली प्रसन्नता से प्रसन्न होना। उ० मन के लड्डू खाने से भूख नही जाती।

मन खट्टा होना–१ घृणा होना। पसंद न पड़ना। उ० जब मन खट्टा हो गया तो फिर उसके लिए दिल कहाँ ? २ खटक जाना, अंतर पड जाना। उ० उससे मन खट्टा हो गया।

मन ख़राब होना–१ मन फिरना। उ० उसकी ओर से तुम्हारा मन ख़राब हो गया है। २. नाराज़ होना। ३. मन का चल जाना या लुब्ध हो जाना। उ० उसे देख कर मन ख़राब हो गया। ४ बीमार होना।

मन खिल उठना–अत्यधिक प्रसन्न होना।

मन खोलना–स्पष्ट करना। उ० मन खोल कर कहो, तुम्हें कुल कितने रुपये चाहिए ?

मन चकरी होना–अस्थिर मन होना।

मन चलना–१. इच्छा होना। उ० अच्छी-अच्छी चीज़ों के खाने के लिए किसका मन नही चलता है ? २ मन का उच्छृंखल होना। मन का बुरे पथ पर जाना। उ० अभी मन चलने लगा तो बड़े होकर क्या करोगे ?

मन चुराना–मन मोह लेना।

मन चौगुना होना–हिम्मत बढ़ना। उत्साह होना। उ० इनाम पाने से लड़कों का मन चौगुना हो जाता है।

मन छोटा करना–हताश-निराश होना।

मन टँगा रहना–किसी व्यक्ति या वस्तु की चिन्ता लगी रहना।

मन टटोलना–हृदय की बात जानना, थाह लेना। उ० मैंने उनका मन टटोला, वे कुल १०० रु० देना चाहते हैं।

मन टूटना या टूट जाना–१. जी उचट जाना। उ० यहाँ से मेरा मन टूट गया। २. उत्साह जाता रहना। उ० क्या करूँ अब तो मन टूट गया। ३. प्रेम का समाप्त हो जाना। उ० तुमसे मन टूट गया।

मन ठहरना–चित्त स्थिर होना। मन लगना। उ० बस एक ही पर मन ठहरा है।

मन डाल-डाल दौड़ना–मन का अस्थिर होना, मन में नाना प्रकार की बातें आना।

मन डोलना–१. लालच होना। उ० उसकी चीज़ देखकर तुम्हारा मन भी डोल गया। २. मन मे चंचलता आना। उ० आसन लगा कर ज्यों ही ध्यानस्थ होता हूँ, मन डोलने लगता है।

मन ढलना–किसी का पक्ष करना या किसी एक ओर होना। उ० आपका मन तो उधर ढल गया।

मन देना–१. मन से करना. जी लगाना। उ० मन देकर पढ़ो तो पास हो जाओगे। २. ध्यान देना। उ० परीक्षा निकट है, मन देकर कक्षा मे बैठो। ३ मुग्ध होना। मोहित होना। उ० किसको मन दे दिया है कि यहाँ रहते ही नही ?

मन धरना–मन लगाना। उ० मन धर के काम किया करो।

मन पढ़ना–मन का भाव जानना।

मन फटना–तबीयत हट जाना। उ० उससे मेरा मन फट गया है, अब बात करने को भी जी नही चाहता।

मन फेरना–१ एक ओर से दूसरी ओर चित्त हटाना। उ० जाने क्यों उसने मुझसे मन फेर कर अब उनसे लगाया है। २. मनोरंजन या मनबहलाव करना। उ० वह मन फेरने दिल्ली गया है।

मन फेरवत करना–एक रास्ता से पीछा छुड़ाना। अधिक दिन से सेवन की जाने वाली चीज़ की जगह दूसरी चीज़ को स्थान देना। उ० रोटी खाते-खाते तबीयत ऊब गई। एक दिन चावल बना कर मन फेरवत कर लो।

मन बँटना–ध्यान दूसरी ओर लगना।

मन बढ़ना या बढ़ जाना–१. जोश या उत्साह बढना। उ० पुरस्कार पाने से मन बढता है। २. उच्छृंखल होना। उ० अब लड़के का मन बढ़ रहा है।

मन बल्लियों उछलना–बहुत प्रसन्न होना।

मन बहलाना–मनोरंजन करना। उ० पार्क में जाकर मन बहला आओ।

मन बिगड़ना–१. घृणा होना। उ० बीमारी के बाद इन चीज़ों से मन बिगड़ गया है। २. मिचली आना। उ० क्या खा लिया कि मन बिगड़ गया है? ३. मस्त हो जाना। ४. मन बिगड़ जाना।

मन बूझना–दे० 'मन टटोलना'।

मन बूढ़ा होना–मन में यौवनोत्साह का न रह जाना।

मन भटकना–मन का स्थिर न रहना।

मन भरना या भर जाना–१. तबीयत ऊब जाना। उ० अब तो नौकरी से मन भर गया। २. विश्वास होना। उ० दस्तखत हो गई तो मन भर गया, नहीं तो खटका बना रहता। ३. संतोष हो जाना।

मन भाना–पसंद आना। उ० तुम्हारी छड़ी मेरे मन भा रही है।

मन भारी करना–दुःखी होना, उदास होना। उ० शुभ अवसर के दिन मन भारी न करो।

मन मँजा होना–मन साफ़ होना, कोई दुविधा न होना।

मन मसोस कर रह जाना–विवश या निरुपाय होकर रह जाना।

मन मानना–१. इच्छा पूरी होना। उ० मिठाई से मन मान गया। २. संतोष होना। उ० उसने बहुत कहा, पर मन ही नहीं मानता। ३. विश्वास होना। उ० तुम्हारी बात पर तो मन नहीं मानता है।

मनमाना–१. मनचाहा, यथेष्ट। उ० उसने तो शादी में मनमाना रुपया खर्च किया। २. मनचला, अनियंत्रित। उ० उसका क्या, वह तो पूरा मनमाना है।

मन मार कर बैठ जाना–१. हताश होना। उ० इतनी ही हानि से मन मार कर बैठ गए? २. इच्छा दबा लेना। उ० वहाँ जाना था, पर खर्च की कमी से मन मार कर रह गया।

मन मार कर रह जाना–दे० 'मन मार कर बैठ जाना'।

मन मारना–१. दे० 'मन भारी करना'।

मन मिट्टी होना–मन निरुत्साहित होना।

मन मिलना–१. दोस्ती होना। उ० उन दोनों का मन मिल गया। २. अनुराग होना। उ० बहुत पहले से दोनों का मन मिल चुका है। ३. एक स्वभाव का होना। उ० जब तक मन न मिले, मित्रता कैसी? ४. मन की बात का पता चलना। उ० देखो मैं कोशिश करूँगा, यदि उसका मन मिला तो कुछ किया जायगा।

मन मुँह को आना–हृदय की बात कहने की तीव्र इच्छा होना।

मन में आँधी चलना–मन में विचारों का संघर्ष चलना।

मन में आना या आ जाना–१. जी चाहना, इच्छा होना। उ० मन में आता है कि उससे संबंध कर लूँ। २. दिल पर जगह करना, हृदय में स्थान करना। उ० वह तुम्हारे मन में आ गई है। ३. अच्छा लगना। ४. ठीक ज्ञात होना, उचित लगना। उ० उसके मन में आ तो गया है, देखो करता है या नहीं।

मन में कट कर रह जाना–१. बहुत लज्जित होना। २. तीखी बात से मन पर आघात होने पर भी कुछ कह न पाना।

मन में कहना–१. अपने आप सोचना या समझना। उ० तुमने तो बहुत भला-बुरा कहा, पर वह मन में कह कर रह गया। २. अपने से कहना, धीरे-धीरे कहना। उ० अपना पाठ दोहराना ही चाहते हो तो मन में कहो। इतने ज़ोर से कहोगे तो मैं कहाँ जाऊँगा?

मन में घर करना–१. स्नेह या प्यार होना। २. किसी बात का मन में जम जाना।

मन में चोर बैठना–दे० 'दिल में चोर बैठना'।

मन में छुरी रखना–मन में दुर्भावना रखना।

मन में जमना–१. ठीक जँचना, अच्छा लगना। उ० तुम्हारी बातें मेरे मन में जमती नहीं हैं। २. ख्याल होना। उ० उसने इतना कहा, पर मेरे मन में एक न जमी। ३. मन में बैठ जाना, याद हो जाना। उ० एक बार भी अच्छी तरह मन में जमे तो फिर न भूले।

मन में ठानना–निश्चय करना, इरादा करना। उ० उसने आगे पढ़ने की मन में ठान ली है।

मन में डौल करना–मन में विचार करना, युक्ति सोचना।

मन में तूफान उठना–विचारों का आन्दोलन होना।

मन में दरार पड़ जाना–मन में अन्तर पड़ना।

मन में नक्श करना–चित्त में अच्छी तरह जमाना या जमा लेना। उ० इसे मन में नक्श कर लो, शायद परीक्षा में आ जाय।

मन में नक्श कराना–अच्छी तरह मन या हृदय में अंकित करा देना। उ० उस दिन उसकी कविता ने उस कल्पित कहानी का दृश्य मन में ऐसा नक्श करा दिया कि भुलाने से भी नही भूलता।

मन में फटकने न देना–मन मे तनिक भी न लाना।

मन में बसना–१ हृदय मे स्थान करना। उ० उसकी सूरत मेरे मन में बसी है। २ हृदय में स्थान पाना। उ० मेरे मन मे बसना चाहो तो मेरा कहा करो।

मन में बैठना–दे० 'मन मे जमना'।

मन में भरना–१ विश्वास देना। २. हृदय मे बैठाना। उ० किसी तरह उसके मन मे भर देते तो मेरा जी छूट जाता।

मन में भाना पर मूड़ी हिलाना–मन मे अच्छा लगना, पर ऊपर से उसे स्वीकार न करना।

मन में मथानी फिरना–मन मे उद्वेलन होना।

मन मे मरोड़ करना–छल-कपट रखना। उ० अब हमसे क्या मन मे मरोड़ करते हो?

मन में रखना–१. गुप्त रखना। उ० जब तक कुछ हो न जाय, सारा रहस्य मन मे रखो। २. स्मरण रखना। उ० इतनी बात मन मे रखूँ तो जगह ही न मिले।

मन में लाना–१. समझना, सोचना। उ० मन मे लाकर देखो तो पता चले। २. हृदय मे रखना, हृदय में स्थान देना। प्यार करना।

मन मैला करना–१ क्रुद्ध होना, अप्रसन्न होना। उ० ज़रा-सी बात पर मन मैला करते हो। २. मन दूषित करना। उ० झूठ बोल कर मन मैला न करो।

मन मोटा होना–१. विराग होना, घृणा होना। उ० अब तो उसका मन संसार से मोटा हो गया है। २. मनमोटाव होना। उ० उससे तो मेरा मन मोटा हो गया है, क्योंकि वह बड़ा बनता है।

मन मोड़ना–दे० 'मन फेरना'।

मन मोहना–मुग्ध कर लेना। उ० हाव-भाव दिखा कर उसने मेरा मन मोह लिया।

मन रखना–१. कही मान लेना। उ० आखिर उसका मन रखने मे तुम्हारी क्या हानि है? २. इच्छा पूरी करना। उ० जब भी कुछ कहता हूँ, वह सदा मेरा मन रख देता है।

मन रमाना–१. चिंता छोड़ कर दिल प्रसन्न करना। उ० क्या उदास बैठे हो, जाकर कही मन रमाओ। २. चित्त लगाना। उ० आजकल किस चीज़ में मन रमाये हो?

मन रीता करना–मन की बात कह कर मन हल्का करना।

मन लगना–जी लगना। उ० आजकल पढने मे मन नही लगता है।

मन लगाना–१. किसी काम मे चित्त जमाना। उ० परीक्षा निकट है, मन लगा कर पढो। २ प्रेम करना। उ० उधर मन न लगाओ।

मन लेना–दे० 'मन टटोलना'।

मन साधना–मन को वश मे करना।

मनसूबा बाँधना–१. साहस करना। उ० मनसूबा बाँध कर तो आया था, परतु हुआ कुछ नही। २. ऊँचे महल बनाना, मन मे खूब ऊँची-ऊँची कल्पनाएँ करना। उ० मनसूबा न बाँधो, पता नही होगा या नही।

मन से उतरना-१. प्रतिष्ठा मे कमी होना। उ० कांग्रेस तो सभी के मन से उतर गई है। २ स्मरण न रहना। उ० ज़रा ठहरो, इस समय यह बात मन से उतर गई है।

मन से उतारना–१ चित्त से हटाना। उ० जब प्रेम नही रहा तो मन से उतारने मे क्या हानि? २ भूल जाना। उ० मेरी बात कही मन से उतार न देना।

मन से जूझना–मन की लालसाओ पर विजय पाने की कोशिश करना।

मन से दूर होना–१. भूल जाना। २. मन न मिलना।

मन सोना होना–निर्दोष मन होना।

मन हरना–दे० 'मन मोहना'।

मन हरा होना–प्रसन्नचित्त होना। उ० आज कुछ मिला है क्या, कि तुम्हारा मन इतना हरा हो गया है?

मन हलका होना–मन से चिंता या दुःख दूर होना।

मन हाथ में लेना–अपने अधिकार में करना। उ० चीन का मन तो रूस ने अपने हाथ में ले लिया है।

मन ही मन–स्वयमेव, चुपचाप। भीतर ही भीतर। उ० मन ही मन समझ लिया, कहने की क्या ज़रूरत है?

मन होना–इच्छा होना। उ० मन होता है कि खूब पढ़े, पर व्यय का प्रश्न सामने आ जाता है।

मनादी करना–ज़ोर से कहना। घोषित करना। उ० सड़क पर क्या मनादी कर रहा था, सुना या नहीं?

मनुहार करना–१. विनय या खुशामद करना। उ० चाहते है कि कोई मनुहार करे तो आऊँ। २. स्त्री का पुरुष को या पुरुष का स्त्री को मनाना। उ० वे दोनो खूब मनुहार करते है।

मनोरथ छूछा पड़ना–मनोकामना अपूर्ण रह जाना।

मन्नत उतारना–मनौती पूरा करना। उ० बच्चे की मन्नत उतार दी गई है।

मन्नत मानना–मनौती मानना। उ० अन्नपूर्णा की मन्नत मानो तो शायद काम हो जाय।

मन्सूबे बाँधना–दे० 'मनसूबा बाँधना'।

मयस्सर होना–मिलना। उ० इस गरीब को दूध कहाँ मयस्सर होता है?

मरकट के हाथ मरकत होना–दे० 'बन्दर के हाथ मणि होना'।

मर करके–बड़ी कठिनाई से, बड़ा कष्ट सह कर। उ० मर करके तो इस काम को पूरा किया है।

मरजाद-(मरजाद के मुहावरो के लिए 'इज्ज़त' और 'मर्यादा' के मुहावरे देखिए।)

मर जाना–१ मोहित होना। उ० तुम तो देख कर ही मर गए। २. सर्वनाश होना। उ० मै तो इतने ही मे मर गया।

मर-जी कर–१ किसी भी तरह। उ० मर-जी कर इसे पूरा कर दिया। २ बहुत परिश्रम करके। उ० पूरा तो करेगा, मगर मर-जी कर।

मरना–१ मोहित होना, न्योछावर होना। उ० मै इसकी खूबसूरती पर मरता हूँ। २. प्राण देना। ३. बहुत कष्ट सहना। ४. बहुत परिश्रम करना। उ० क्यों मरते हो?

मरना-जीना–१. सुख-दुःख। उ० मरना-जीना तो सभी के साथ लगा है। २. बहुत परिश्रम करना। उ० इस छोटे से काम के लिए मरने-जीने की क्या जरूरत है?

मरने की छुट्टी न मिलना–काम मे बहुत व्यस्त रहना। बिल्कुल अवकाश न मिलना। उ० क्या करे बेचारा, ए० जी० आफ़िस की नौकरी ही ऐसी है कि मरने की भी छुट्टी नही मिलती।

मरने पर भी नहीं–कभी भी नही।

मर पचना–किसी के लिए मर मिटना। उ० तुम तो मर पचे और उसने शाबासी तक नही दी।

मर मिटना–बरबाद हो जाना। उ० सैनिक युद्ध मे मर मिटे।

मरम्मत करना–१ जीर्ण-शीर्ण चीज को सुधारना। उ० अब मंदिर की मरम्मत कर देना आवश्यक है। २ खूब पीटना। उ० आज तो थानेदार ने चोर की खूब मरम्मत की।

मरहठी घिस-घिस करना–झंझट पैदा करना। उ० तुम तो मरहठी घिस-घिस कर रहे हो, अब कभी यहाँ न आना।

मरहठी घिस-घिस होना–काम मे गड़बड़ी होना। उ० तुम लोगों से तो मरहठी घिस-घिस हो रही है। ऐसों की यहाँ क्या आवश्यकता थी?

मरहठी मचाना–लूटपाट मचाना। उ० मरहठों ने कभी खूब मरहठी मचाई थी।

मरहम पट्टी करना–घाव पर मरहम लगाकर पट्टी बाँधना। उ० उसकी मरहम-पट्टी कर दो।

मरहम रखना–१. सांत्वना देना। २. बिगड़ी बात को बनाना। ३. किसी नाराज़ व्यक्ति को मनाना।

मरहला डालना–झगड़ा-फ़साद तैयार करना। उ० क्या मरहला डाल रहे हो?

मरहला तय करना–१. झगड़ा तय करना। उ० पंच ने मरहला तय कर दिया। २. कठिन काम को पूरा करना। उ० अभी तो एक ही मरहला तय कर सका।

मरहला पड़ना–झंझट या झमेला आना। उ० इधर ऐसे मरहले पड़े कि भर पेट सो भी न सका।

मरहला मचना–दे० 'मरहला पड़ना'।

मरहला मचाना–झमेला डालना या मचाना। उ० तुमने तो ऐसा मरहला मचाया कि जान को आ गई।

मरा जाना–१. किसी पर आसक्त होना, मोहित होना। उ० क्यों उस कलूटी पर मरे जाते हो? २. जान लडा कर परिश्रम करना। उ० इसी काम के लिए आप मरे जा रहे है?

मरा हुआ–१. निस्तेज, जिसका प्रयोग या महत्व काम हो गया हो। २. बुरा।

मरातिब तय करना–भविष्य के झगड़े मिटाना। उ० यदि आप मरातिब तय कर देते तो रोज़ की झझट से जान बच जाती।

मरी पड़ना–१. ताऊन फैलना। उ० कई जगहो पर ज़ोरो से मरी पडी है। २. भुख-मरी फैलना। उ० उस साल बगाल मे मरी पडी थी।

मरूकरि के–कठिनता मे। उ० रसखानि तिहारी सो एरी जसोमति भागि मरूकरि छूट न पाई।

मरूरा देना–ऐंठना। उ० मेरा पेट मरूरा दे रहा है।

मरे को मारना–दु:खी को और दु.ख देना। उ० ये किसान तो स्वय मरे है, अब क्या मरे को मार रहे हो?

मरोड़ की बात–घुमाव-फिराव की बात। उ० देखो, मरोड़ की बात न करो, जो बात हो, सीधे कह दो।

मरोड़ खाना–१ झझट या उलझन मे पडना। उ० तुम तो उससे मझियाई करके खूब मरोड़ खा रहे हो।

मरोड़ गहना–गुस्सा करना। उ० सुनो भी तो, तुरंत मरोड़ क्यों गहते हो?

मरोड़ पकड़ना–दे० 'मरोड़ गहना'।

मरोड़ा उठना–पेट मे दर्द होना। उ० चना खा लेने से ही मरोड़ा उठ रहा है।

मरोड़ी करना–खींचातानी करना। उ० बात मान लो, मरोड़ी करने से क्या लाभ?

मर्ज़ की दवा होना–दे० 'दर्द की दवा होना'।

मर्ज़ी में आना–चाहना, इच्छा होना। उ० जब मर्ज़ी मे आये तो करना, कोई जल्दी नही है।

मर्द आदमी होना–बहादुर आदमी होना। उ० मर्द आदमी है, जाएगा तो करके ही आएगा।

मर्म लेना–भेद लेना, भेद जानने का यत्न करना।

मर्म-बेधी बातें–मन को पीड़ा पहुँचाने वाली बाते।

मर्म को छू लेना–मन या बात की गहराई तक पहुँचना।

मर्यादा के द्वार तोड़ना–मर्यादा का उलघन करना।

मर्याद रहना–१. प्रतिष्ठा रहना। उ० जीकर मर्यादा न रही तो कुछ न रहा। २ बारात का विवाह के तीसरे दिन ठहर कर भोज में शामिल होना। उ० आज मर्याद रहेगी।

मर्सिया पढ़ना–शोक मनाना।

मलदल कर छोड़ देना–नष्ट-भ्रष्ट करना। उ० सारा सामान तुमने मलदल कर छोड़ दिया।

मलना-दलना–दे० 'मलदल कर छोड देना'।

मलार गाना–१ प्रसन्नता से गाना गाना। प्रसन्न होना। उ० शादी हो गई, अब तो मलार गाता रहता है। २ चैन मे रहना। उ० आप तो मलार गा रहे है, बीतती मुझ पर है।

मलाल निकालना–पुराने वैर का बदला लेना। उ० समय पर सारा मलाल निकाल लूँगा।

मलाल मिटाना–दे० 'मालल निकालना'।

मलिया बाँधना या बाँध देना–रस्सी को मोड कर बाधना। उ० मलिया बाँध लो तो खुलने का डर नही रहेगा।

मलियामेट करना या कर डालना–सत्यानाश करना। उ० पाकिस्तान ने कश्मीर को मलियामेट कर डाला।

मलोले आना–पश्चात्ताप होना। उ० अब मलोले आकर क्या करेगे?

मलोले खाना–तकलीफ़ झेलना। उ० अब तो वे खूब मलोल खा रहे है।

मलोले निकालना–दे० 'मलाल निकालना'।

मल्हार गाना–दे० 'मलार गाना'।

मवास करना–ठहरना, डेरा डालना। उ० औघड़े लोग मसान के पास मवास करते है।

मवासी तोड़ना–१ गढ तोडना । २ विजय करना । उ० कब दत्तै मवासी तोरी । कब सुकदेव तोपची जोरी ।

मशक्कत की कमाई–बड़े परिश्रम से अर्जित धन ।

मशविरा करना–राय करना, समझना-बूझना । उ० वह तुम्हारे यहाँ मशविरा करने आया है ।

मशाल जलाकर (लेकर) ढूँढ़ना–चारो ओर तलाश करना । अच्छी तरह ढूँढना । उ० मशाल जलाकर ढूँढो, शायद मिल जाय ।

मशीख्त बघारना–डींग हाँकना । उ० अब क्या मशीख्त बघारते हो, सारा पोल तो खुल गया ।

मष्ट करना–चुप्पी साधना । चुप हो जाना । उ० अपनी बार तो बोलता है, पर दूसरे की बार मष्ट कर लेता है ।

मष्ट धरना–दे० 'मष्ट करना' ।

मष्ट भरना–दे० 'मष्ट करना' ।

मसकर लगाना–खुशामद करना ।

मस भींजना–रेख या मूँछ निकलना । उ० अभी तो केवल २० वर्ष का है, मस भीज रही है ।

मसमसा आना–भीतर ही भीतर कुढना । उ० तुम्हारी बाते सुन कर वह मसमसा गया ।

मसविदा बाँधना–दे० 'मसौदा गाँठना' ।

मसल देना–नष्ट कर देना ।

मसान जगाना–१ शव फूँकना । उ० लोग मसान जगाने जा रहे है । २ श्मशान पर मंत्र सिद्ध करना । उ० औघड मसान जगाते है ।

मसान पड़ना–सुनसान होना । उ० जेठ की दुपहरी मे तो चौक मे भी मसान पड जाता है ।

मसें भींगना–दे० 'मस भीजना' ।

मसौदा करना–किसी बात के लिए सोच-विचार करना । उ० उनके पास जाकर मसौदा कर लो, शायद कुछ जानते हो ।

मसौदा गाँठना–प्रयत्न करना, युक्ति चलाना । उ० कितना भी मसौदा गाँठो, वह नही आ सकता ।

मस्त मौला होना–परवाह न करने वाला मस्त व्यक्ति होना ।

मस्ती झड़ना–ऐंठ दूर होना । उ० अब तो सारी कमाई खर्च हो गई, मस्ती झड गई होगी ।

मस्ती निकालना–१. इच्छा पूरी या दूर करना । उ० मस्ती निकाल रहे हो क्या ? २ गर्व चूर-चूर करना, इतराना दूर करना । उ० घबराओ नही, मैं अभी उसकी मस्ती निकालता हूँ ।

महनभोग में की इकटी होना–दे० 'दही मे का मूसर होना' ।

महनामथ मचाना–झौं-झौं करना, झगड़ा मचाना । उ० चीज मेरी थी और उसने महनामथ मचाकर तग कर डाला ।

महरे बाँधना–पति का स्त्री को खर्च निश्चय करना । उ० तलाक देने पर उन्हे महरे बाँधना पडेगा ।

महसूल मारना–किराया या चुंगी न देना । उ० महसूल मार कर सरकार का नुकसान न करो ।

महाजन का पेट भरना–बाकी चुकाना ।

महाजन होना–१ धनी होना । २ सूद पर रुपये देने वाला होना । उ० हमारे महाजन तो वही है । ३. बडी तोंद वाला होना ।

महारथी होना–समर्थ होना, क्षमता सम्पन्न होना ।

महावरा पड़ना–आदत पड जाना । उ० उसे तो मार खाने का महावरा पड़ गया है ।

महीन काम–सफ़ाई का काम । सावधानी का काम । उ० घड़ी का महीन काम है, तुम न खोलो ।

महीना चढ़ना–१. पिछले महीने का गर्भ रहना । उ० बहू को महीना चढ गया है । २. नियत समय के बाद तक रजस्वला न होना ।

महीने से होना–रजस्वला होना । उ० वह तो महीने से है, खाना नही छू सकती ।

महूरत करना–शुभ दिन से काम प्रारम्भ करना । उ० बच्चा बडा हो गया है, नाग पंचमी से पढाई का महूरत करेगा ।

महेर डालना–१ उलझन डालना । उ० हर काम मे महेर डालने की आदत-सी तुम्हे पड़ गई है । २. देर करना । उ० समय हो गया है, अब महेर न डालो ।

माँ के पेट से लेकर निकलना–सिखे-सिखाये पैदा होना ।

माँग उजड़ना–वैधव्य होना। उ० बेचारी की इसी अवस्था मे माँग उजड़ गई।

माँग काली करना–दे० 'माँग में कोयला दलना'।

माँग-कोख से सुखी रहना–पति तथा बच्चो से भरा-पूरा रहना। उ० ईश्वर करे तुम माँग-कोख से सुखी रहो। [आशीर्वाद है, जो स्त्रियो को दिया जाता है। इसका प्रयोग भी प्राय: स्त्रियाँ ही करती है।]

माँग-चह कर–इधर-उधर से माँग कर, भीख माँग कर। उ० आज भी माँग-चह कर खाने भर को ले आया हूँ।

माँग जलना–दे० 'माँग उजड़ना'।

माँग-ताँग कर काम चलाना–इधर-उधर से लेकर काम निकालना। उ० माँग-ताँग कर काम चला लो, रुपया होगा तो दे देगे।

माँग धोना–विधवा करना। विधवा होने की गाली देना। उ० तुम मेरी माँग धोओगे तो भगवान तुम्हारी माँग धो देगे। [यह एक गाली है, जिसका प्रयोग स्त्रियाँ करती हैं।]

माँग-पट्टी करना–बाल मे कघी करना। बाल झाड़ना। उ० अभी तो वह माँग-पट्टी कर रही है, देर लगेगी।

माँग-पट्टी में लगा रहना–शृंगार करने मे व्यस्त रहना, बनाव-चोनाव मे लीन रहना। उ० नयी बहू तो अभी आठों याम माँग पट्टी मे ही लगी रहती है।

माँग फाड़ना–बाल काढ़ना। उ० पुरुष भी अब बीच से माँग फाड़ते है।

माँग फूँकना–दे० 'माँग धोना'।

माँग बाँधना–बाल सवाँरना। उ० अभी चलना है, जल्दी माँग बाँध लो।

माँग भरना–१ माँग मे सिंदूर लगाना। उ० सौभाग्यवती स्त्रियाँ माँग भरती है। २ विवाह कर लेना। उ० उससे तुममे प्रेम है तो क्यो नही उसकी माँग भर देते ?

माँग मूड़ना–सर के पूरे बाल बनाना, काटना या मुड़ना। उ० माँग मूड़ी माँग मूडी कतरा कर छूरी। आयल बनरा ले गयल मूड़ी।

माँग में कोयला दलना–माँग काली करना। विधवा करना। उ० भगवान तुम्हारी माँग मे कोयला दले। [यह एक गाली है, जिसे एक स्त्री दूसरे को देती है।]

माँग लाल करना–मार कर सर फाड़ डालना। उ० मार कर माँग लाल कर दूँगा, नही चुप रहो।

माँग सफ़ेद करना–दे० 'माँग धोना'।

माँग से ठंडी रहना–सौभाग्यवती रहना। उ० भगवान करे तुम माँग से ठडी रहो।

माँगे देना–मँगनी देना। उ० धोखेबाज़ो को कौन माँगे देगा।

माँझ पड़ना या पड़ जाना या होना–फर्क आना। अंतर पड़ना। उ० उन दोनो मे माँझ पड़ ही गयी।

माँ-बहन एक करना–बदज़बानी करना, गालियाँ देना। उ० तुम्हारी यह आदत बहुत बुरी है, जरा-सी बात पर माँ-बहन एक कर देते हो।

माँ-बहन करना–१ इज्जत से बोलना। उ० कैसा सभ्य लडका है, सभी को माँ-बहन करता रहता है। २ माँ या बहन के लिए अपशब्द कहना। गाली देना। उ० देखो माँ-बहन न करो, नहीं तो मै भी बना दूँगा।

माइँन मे थापना–पितरो की तरह आदर करना। उ० वह तो बड़ो को माइँन मे थापता है।

माई का लाल–बहादुर। कौन माई का लाल है, जो इस काम को कर दे।

माई-बाप समझना–१ सब कुछ समझना। २. सहायक समझना। ३ सरपरस्त समझना।

माट का माट बिगड़ना या बिगड़ जाना–सब की बुद्धि मारी जाना। उ० यहाँ तो माट का माट बिगड़ गया है।

माट बिगड़ना या बिगड़ जाना–प्रकृति मे अंतर आ जाना। उ० तुम्हारा माट बिगड़ गया है, अब वह बात नही रही।

माटी का लोना–मूर्ख और बेवकूफ़ आदमी। उ० उसे मै होशियार समझता था, पर वह तो माटी का लोना है।

माटी की सूरत होना–बहुत बेवकूफ़ होना। सीधा होना।

माटी फाँकना–बैर रखना, ईर्ष्या करना। उ० आप मेरे नाम पर माटी क्यों फाँकते है ?

माटी में मिलना–१. बर्बाद हो जाना । २. मर जाना । उ० हर ज़र्रा खाक तेरी गली का है बेकरार, यां कौन-सा सितमज़दा मिट्टी में मिल गया ।

माटी में रुलना–दे० 'माटी में मिलना' ।

माटी लगना–१. घर की दीवारों का मिट्टी लगाकर मरम्मत होना । २. मरना [स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त एक गाली ।] ३. तुम्हारी माटी लगे । तुम माटी लगो ।

मात करना–१ लज्जित करना । नीचा दिखाना । उ० वह लड़का तो बोलने में अच्छों-अच्छों को मात कर देता है । २. हरा देना । उ० भीम ने गदा-प्रहार में किसको मात नहीं किया ?

मात खाना–१ शर्मिन्दा होना । उ० जाते ही मात खा गए न । २ हारना । उ० उसके आगे तो सभी मात खा जाते हैं ।

मात जाना–१ गर्वित हो जाना । उ० वह तो अपने बल पर मात गया है । २ दे० 'मात खाना' । ३ केचुल से खूब ढक जाना । उ० यह साँप मात गया है । ४ मस्त या पागल हो जाना ।

मात देना–१ बाजी ले जाना, हराना । उ० चालाकियों से अपनी बँचे मेरे हाथ से, वरना मैं दे चुका था उन्हें कल तो मात साफ । २. शतरंज में विपक्षी को हराना । ३ मातम-पुरसी करना, किसी के मरने पर उसके घर जाकर दुःख प्रकट करना तथा घर वालों को सान्त्वना देना ।

मातम-पुरसी करना–संवेदना प्रकट करना ।

मात होना–१ हार जाना । २ परेशान होना । ३. लज्जित होना ।

माता का दूध लजाना–अपनी कायरता के कारण लज्जा का विषय बनना ।

माता ढलना–चेचक का सूखना । उ० तीसरे ही दिन माता ढल गई ।

माता निकलना–चेचक के दाने निकलना । चेचक होना । उ० सारे गाँव में माता निकली हैं ।

माता पूजना–शीतला या काली आदि की पूजा करना ।

माथा ऊँचा करना–प्रतिष्ठा पाना, सगर्व खड़े होना ।

माथा कूटना–१. सिर पर हाथ रख कर शोक करना । उ० अब क्या माथा कूटते हो, वह जी नहीं सकता । २. पछताना । उ० माथा कूटने से क्या लाभ, जो होना था, वह हो गया । ३. सर पीटना ।

माथा खपाना–माथापच्ची करना । दिमाग़ लड़ाना । उ० बहुत माथा खपाया, पर वह न समझ सका ।

माथा खाली करना–दे० 'माथा खपाना' ।

माथा गरम होना–क्रोध आना ।

माथा घिसना–दे० 'माथा रगड़ना' ।

माथा चढ़ना–१. घमंड होना । २. गुस्सा होना ।

माथा टकराना–१. कठिन मानसिक परिश्रम करना । उ० कितना भी माथा टकराओ, यह काम तुमसे नहीं होगा । २ पैरों पर माथा रख कर प्रार्थना करना । उ० बहुत माथा टकराया, पर उसने एक न सुनी ।

माथा टेकना–१ पैरों में सिर रख कर प्रणाम करना । उ० माथा टेकना भारत की प्राचीन परम्परा है । २. झुकना रोब मानना । उ० तुम्हें माथा न टेकना पड़ा तो नाम नहीं ।

माथा ठनकना–१. किसी बात के लिए संदेह होना । उ० तार पाते ही मेरा माथा ठनकने लगा कि क्या हुआ । २ सर में दर्द होना ।

माथा ठोंकना–भाग्य को दोष देना ।

माथा पकड़ कर बैठ जाना–हताश होकर बैठ जाना ।

माथा नीचा होना–लज्जित होना ।

माथापच्ची करना–सिर खपाना । बहुत बकना । उ० क्या उस बेवकूफ के साथ माथापच्ची कर रहे हो ?

माथापिट्टन करना–दे० 'माथापच्ची करना' ।

माथा पीटना–दे० 'माथा कूटना' ।

माथा भड़कना–१. सर में दर्द होना । २. चौकन्ना होना ।

माथा मारना–१. अधिक मानसिक परिश्रम करना । उ० बहुत माथा मारा, पर प्रश्न न सुलझ सका । २ कोशिश करना । उ० माथा मारो, शायद काम बन जाय ।

माथा रगड़ना–१. खुशामद करना। उ० माथा रगड़ते-रगड़ते तंग आ गया, पर उसने एक न सुनी। २. प्रार्थना करना।

माथा सिकुड़ना–असंतोष प्रकट होना।

माथे की मणि होना–अत्यन्त प्रिय होना।

माथे चढ़ना–१. शरारत करना। २. सहक जाना, सर चढ़ना। उ० देखो इतना माथे न चढ़ो, नही तो सज़ा पाओगे। ३. बेअदब हो जाना। उ० यह छोकरा तो बडो के माथे चढ़ गया है।

माथे जाना–१. सर पड़ना, इल्जाम लगना। उ० आप होशियार रहें, यह आपके माथे जायगा। ज़िम्मे पड़ना। उ० यह खर्च आपके माथे जायगा।

माथे टीका होना–१. विशेष गुण होना। उ० क्या कोई कांग्रेस के माथे टीका है कि वही राज्य करे। २. राजगद्दी पर बैठना। उ० आज कुँवर साहब के माथे टीका होगा।

माथे पड़ना या पड़ जाना–उत्तरदायित्व आना। उ० घर का झझट मेरे माथे पड गया है।

माथे पर त्यौरी चढ़ना–क्रोधित होना।

माथे पर आना या आ जाना–मुँह पर क्रोध की झलक दिखाई देना। उ० उसकी गुस्ताखी सुनते ही उनके माथे पर बल आ गया।

माथे पर बल पड़ना–दे० 'माथे पर बल आना'।

माथे पर बायें पाँव के अँगूठे से टीका लगाना–अत्यन्त तुच्छ समझना।

माथे पर सींग होना–कोई विशेषता होना।

माथे मढ़ना–जिम्मे लगाना। उ० देखो चीज़ें फटने वाली है, इन्हें माथे न मढ़ो।

माथे मानना–प्रेम से अगीकार करना। उ० गुरु की आज्ञा माथे मान कर पूरी करो।

माथे मारना–घृणा से देखना। तुच्छ समझना। उ० मुझसे क्या मतलब, मै उसकी लाख की चीज़ भी माथे मारता हूँ।

माथे में कीड़े कुलबुलाना–किसी काम को करने की इच्छा होना।

माथे रोली-चावल चढ़ाना–तिलक करना।

मादरख़्वाही करना–माँ की गाली देना।

मान करना–१. नाराज़ हो जाना। उ० नायिका नायक पर मान करके बैठी है। २. आदर

करना। उ० बड़ो का मान करना हमारा धर्म है।

मान मथना–घमंड या शेखी चूर करना। उ० हमारा मान मथने का साहस किसे है?

मान मनाना–नाराज़ की मनुहार करना। नाराज आदमी को मनाना। उ० घर के बड़े हैं, मान मनाकर लाने मे क्या हर्ज़ है?

मान-महत करना–आदर-सत्कार करना। उ० बडों का मान-महत किया करो।

मान मोरना–अपनी नाराज़ी दूर करना, प्रसन्न हो जाना। उ० वह तो ज़रा-सा तेल लगा देने से मान मोर लेगा; हाँ, तुम्हारी बात मै नही कह सकता।

मान रखना–१. प्रतिष्ठा की रक्षा करना। उ० हज़ारो खर्च करके तो उसका मान रखा। २. बात रखना।

माफ़ करना–१. क्षमा करना। उ० इस बार मुझे माफ़ कर दो, फिर ऐसा काम न करूंगा। २. अलग रहने, दूर जाने, शात रहने या चुप रहने के लिए व्यंग्यात्मक ढग मे कहना। उ० माफ़ कीजिए, मै आपको यहाँ नही देखना चाहता।

माफ़ी चाहना–१. क्षमा चाहना। उ० मैं गलती के लिए माफ़ी चाहता हूँ। २. अलग रहने की इच्छा करना। उ० आप अपने घर जायँ, मै माफ़ी चाहता हूँ।

मामला करना–१. कोई बात पक्की या तय करना। उ० आज मामला कर दिया, चलो इससे भी फ़ुरसत मिली। २. फैसला करना। ३. मुक़दमा चलाना। उ० उन्होने मुझ पर मामला किया है। ४ षड्यत्र या चालबाज़ी करना।

मामला किरकिरा होना–१ ठीक किया हुआ काम बिगडना। उ० आपकी वजह से सारा मामला किरकिरा हो गया। २. मज़ा बिगाडना। उ० नमक अधिक होने से मामला किरकिरा हो गया।

मामला गठना–मतलब पूरा होना।

मामला गर्म होना,–तूल पकडना–झगड़ा आगे बढना या तेज़ होना।

मामला गोल होना–कुछ गोल-माल होना।

मामला ढीला होना–सफलता की आशा न होना।

मामला पक्का करना–१. बात निश्चित या ठीक करना । उ० किसी तरह बातचीत करके मामला पक्का किया । २ सभोग करना । उ० इतने दिन के बाद आज मामला पक्का किया । ३ शादी ठीक करना ।

मामला बनाना–१. काम ठीक करना । उ० वे मामला बनाने आये थे, उलटे बिगड़ गया । २. काम निकालना । उ० आजकल के मित्र मामला बना कर चलते बनते है ।

मामी पीना–अपना दोष न मानना । उ० गाधी जी मामी पीने वालो से घृणा करते थे ।

मायके की जूती में खुशबू आना–मायके की किसी भी चीज का अच्छा लगना ।

माया जोड़ना–रुपया जमा करना । उ० जब एक दिन मर ही जाना है तो माया जोड़ने से क्या लाभ ?

मारकडे की आयु होना–बहुत बडी आयु होना । जल्दी न मरना । उ० उस बुढिए की आयु तो मारकडे की आयु हो गई है, आज दो साल से चारपाई पर है, पर मरती नही ।

मार खाना–१ घाटा सहना । उ० वहाँ जाकर कुछ रुपयो की मार हमने भी खाई । २ पीटा जाना । उ० आज बडी भारी गलती हो गयी है, घर पहुँचने पर मार खानी ही पड़ेगी ।

मारग मारना–रास्ते मे राहगीरो को लूटना । उ० मारग मारना सबसे बड़ा पाप है ।

मारग लगना–१. राह लेना, जाना । उ० तुम्हे हम लोगो के झगडे से क्या मतलब, तुम अपने मारग लगो । २ काम करना, काम पकड़ना । उ० कोई मारग तो लगो या यो ही खाना मिलेगा ।

मारग लेना–दे० 'मारग लगना' ।

मारते-मारते अँचार कर कर देना–बहुत मारना ।

मारते-मारते गठरी बना देना–बहुत ज्यादा मारना ।

मारते-मारते भुरकुस कर देना या निकाल देना–बहुत मारना।

मार बैठना–१. पीट देना । उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो मार बैठूंगा । २. खा जाना, ले बैठना, न देना । उ० वह मेरे ५०० रु० मार बैठा ।

मार-मार कर वैद्य बनाना–१. किसी अयोग्य को ज़बर्दस्ती योग्य बनाना । २. जबर्दस्ती करना ।

मार मारना–खुदकशी करना । आत्महत्या करना । उ० मैंने कहा तंग हूँ मार मरूँ क्या करूँ, हंस के लगे कहने हाँ कुछ तो किया चाहिए ।

मार-मार करना–१ जल्दी मचाना । उ० मार-मार करके तुमने मेरा काम बिगाड दिया । २. छिः-छिः करना, पसद न करना । उ० तुम्हारा यह काम सुन कर सभी मार-मार करेंगे ।

मार-मार किये जाना–कोशिश किए जाना, कोशिश मे कसर न रखना । उ० जीत और हार तो ईश्वर के हाथ है, परन्तु अपनी तरफ़ से मार-मार किये जाओ ।

मार में जाना–रुपया डूबना, रुपये का मारा जाना । उ० तुम्हारा रुपया कुछ मार मे तो नही गया ।

मार लाना–चुरा लाना । नाजायज तरीके से कुछ लेकर भाग आना । उ० वह लाखो रुपये मार लाया ।

मार लेना–१ जीत लेना । ले लेना । उ० तुमने तो सौ की चीज पचास में मार ली । २. चुरा लेना । उ० मै कितना भी होशियार हूँ, तुम कुछ न कुछ मार ही लाते हो ।

मार से भूत भागना–मार या पीटे जाने से ससार मे सभी का डरना । उ० मार से भूत भागता है, तुम तो आदमी ही हो । जरा ठीक मे रहो ।

मारा जाना–१. धन न मिलना । उ० इस बैंक मे मेरे भी १००० रुपये मारे गये । २. मार डाला जाना । उ० इस झगड़े मे मेरा भाई भी मारा गया । ३ परेशान किया जाना । (अशिष्ट प्रयोग)

मारा पड़ना–क़त्ल होना । उ० मारा पड़ा पै जुम्बिशे अबरू से बेगुनाह, रुतबा शहीद का तेरी शमशीर से हुआ ।

मारा फिरना–१. आवारा फिरना । २. वाही-तबाही फिरना । ३ मारा-मारा फिरना । उ० या खुदा पहुँचा 'तजम्मुल' को मदीना की तरफ़, हिंद मे मारा फिरे बेज़ोर बेज़र कब तलक ?

मारा-मारा करना–१. खूब दौड़-धूप करना । २. परिश्रम करना । ३. जल्दी मचाना ।

मारा-मारा फिरना—ठोकर खाना, बेकार इधर-उधर घूमना। उ० क्यों दिन भर मारे-मारे फिरते हो, कहीं कुछ काम करो।

मार्के का काम—महत्त्वपूर्ण काम। उ० यह तो तुमने बड़े मार्के का काम किया।

मार्के की बात—ख़ास बात, महत्त्वपूर्ण बात। उ० यह तो तुमने बड़े मार्के की बात कही।

मार्ग का दीपक—पथ-प्रदर्शन।

मार्ग खुलना—क्रम चल पड़ना।

मार्ग में रोड़े बिछाना—प्रगति और विकास में बाधक बनना।

माल उड़ा देना—माल बहुत खर्च करना या गँवा देना। उ० तुमने पिता के मरते ही सारा माल उड़ा दिया।

माल उगलवा लेना—गायब धन ले लेना। उ० चाहे वह जैसे भी दे, मैं अपना सब माल उगलवा लूंगा।

माल उड़ाना—१. माल हड़प लेना। उ० उसने दूकान में काफी माल उड़ा लिये। २ बढ़िया खाना। उ० आज बरात में खूब माल उडाया।

माल काटना—१ पैसा कमाना। उ० इस नौकरी में तो खूब माल काट रहे हो। २. अच्छी चीज़ों का रसास्वादन करना। उ० खूब माल काटने को मिल रहा है, इसी से लाल हो गए हो। ३ माल या पैसा चुराना। ४ सुन्दरियों के साथ विहार करना।

माल चीरना—१ डरा कर माल ले लेना। उ० बच्चों से क्यों माल चीरते हो? २ नाजायज तरीके से रुपया कमाना।

माल-टाल—१ संपत्ति। उ० उसके पास खूब माल-टाल है। २. अच्छा खाना। पकवान। उ० आज दावत में खूब माल-टाल मिलेगा।

माल तीर करना—किसी बहाने किसी दूसरे का माल अपनी जगह पहुँचा देना। उ० उसका सब माल तीर कर दो, फिर देखा जायगा।

माल निगलना—किसी का धन हड़प लेना। उ० वह दूसरों का माल बहुत जल्दी निगल जाता है।

माल पचाना—धन हज़म करना। माल, धन या रुपया इस प्रकार रख लेना कि किसी को पता न चले। उ० इतनी बड़ी चोरी का माल पचाना आसान काम नहीं है।

माल पी जाना—दे० 'माल पचाना'।

माल-मता—धन। उ० मेरा सब माल-मता लेकर चोर भाग गया।

माल-मलीदा उड़ाना—मौज से खाना, पीना और आराम करना।

माल मारना—दूसरे का धन दबा बैठना। उ० क्यों उसका माल मारते हो?

माल हज़म करना—दे० 'माल पचाना'।

माला चढ़ाया जाना—सम्मान और महत्त्व मिलना।

माला फेरना—भजन करना। उ० आजकल के साधु दिन को माला फेरते हैं और रात को चोरी करते हैं।

मावा निकालना या निकाल देना—खूब पीटना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो मावा निकाल लूँगा।

माशा-तोला होना—तोल में एकदम पूरा होना। उ० उसकी दूकान की चीज़ें माशे-तोले होती हैं।

माशा भर—तनिक सा, बहुत थोड़ा।

मास नोचना—१ परीशान करना। उ० हम गरीब का मास नोचने में आपको क्या मिलेगा? २ तग करके लेना। उ० मास नोचकर वसूल किया गया धन भला किसके काम आयगा?

मास नोच-नोच कर खा जाना—दे० 'मास नोचना'।

माहुर की गाँठ—१. विष से भरा, बड़ा ज़हरीला। उ० यह औषधि माहुर की गाँठ है। २ व्यग्य या कटुवचन बोलने वाला मनुष्य। ३ बड़ा चालबाज़ और फितूरी।

मिज़ाज आना—१ अभिमान होना। उ० थोड़ा धन होते ही उसे मिजाज आ गया। २ क्रोधित होना।

मिज़ाज खराब होना—क्रोधित होना। उ० तुम्हे देखते ही उसका मिजाज ख़राब हो गया। २ रंज होना। दुःखी होना। ३ पागल होना। उ० आजकल उनका मिज़ाज ख़राब है।

मिज़ाज गर्म होना—१. पागल होना। २ क्रोधित या गुस्से में होना।

मिज़ाज न मिलना—बहुत गर्वीला होना। उ० आजकल उसका मिज़ाज ही नहीं मिल रहा है।

मिज़ाज पाना–१. स्वभाव जानना। उ० बड़े आदमियों का मिज़ाज पाना बहुत कठिन है। २ किसी विशिष्ट समय मे मन की स्थिति जानना। उ० मिज़ाज पाकर बात चलाना, नही तो कही गड़बड़ न हो जाय।

मिज़ाज-पुर्सी करना–१. खूब मारना। २. कुशल-समाचार पूछना।

मिज़ाज पूछना–१. ख़बर लेना। उ० अरे कभी-कभी उनका मिज़ाज भी पूछ लिया करो।

मिजाज बिगड़ना–दे० 'मिजाज खराब होना'।

मिजाज बिगाड़ना या बिगाड़ देना–१. क्रोध करना। उ० बात-बात मे मिज़ाज बिगाडना ठीक नही है। २ ऐंठ निकालना, दिमाग ठीक कर देना। उ० चुप रहो, नही तो दो थप्पड में मिजाज बिगाड़ दूँगा। ३. चढा देना, बढावा देना। उ० तुम्ही ने उसका मिजाज बिगाड दिया है, नहीं तो उनकी हिम्मत नही थी कि हम सबको ऐसे डाँटते।

मिज़ाज में आना–१ समझ मे आना। उ० आपकी बात मेरे मिज़ाज मे आ गई। २ घमंड करना। उ० आप आजकल मिजाज मे आ गए है। बात तो दूर रही सलाम तक नहीं लेते।

मिज़ाज सीधा होना–घमड मे चूर होना। उ० एक लाठी लगते ही मिजाज सीधा हो जायगा।

मिजान करना–दे० 'मीजान लगाना'।

मिट जाना–१. फ़िदा होना। २ अत्यधिक महत्त्व प्रदान करना।

मिट्टी अजीज़ होना–स्थान प्यारा होना। उ० मेरे लिए यहाँ की मिट्टी अजीज़ है।

मिट्टी उठना–शव का शवयात्रा के लिए उठाया जाना।

मिट्टी करना या कर देना–बरबाद करना। उ० उसने बाप-दादों की सारी जायदाद मिट्टी कर दी।

मिट्टी की तरह फेंकना–अत्यन्त तुच्छ समझ कर उपेक्षा करना।

मिट्टी के माधो–मूर्ख।

मिट्टी के शेर–बनावटी बहादुर।

मिट्टी के मोल–बहुत सस्ता। उ० आजकल मिट्टी के मोल तो कुछ भी नही है।

मिट्टी ख़राब करना–१. बरबाद करना। उ० उसने ही सारे परिवार की मिट्टी ख़राब की। २. बुरी हालत करना। उ० इतनी दूर पैदल चलाकर मेरी मिट्टी मत ख़राब करो।

मिट्टी ख़राब होना–१. दुर्दशा होना। उ० उस बुढिया की मिट्टी ख़राब हो रही है। २. इज्जत जाना। नीचे गिरना। ३ जिंदगी चौपट होना।

मिट्टी-ख़राबी–बरबादी। विनाश। उ० यहाँ मेरी मिट्टी-खराबी हो रही है।

मिट्टी छुए सोना होना–साधारण चीज भी छू जाने से अमूल्य हो जाना। भाग्यवान् होना। उ० आजकल उसका क्या पूछना है, उसके मिट्टी छुए सोना होता है।

मिट्टी ठिकाने लगना या लग जाना–लाश का जलाया जाना। उ० बेचारा पचखा मे मरा था, आज कही जाकर तो उसकी मिट्टी ठिकाने लगी।

मिट्टी डालना–१ अवगुणो को छिपाना। उ० अवगुण तो सभी मे होते है, पर भले आदमी उन पर मिट्टी डालते रहते है और असभ्य खोले रहते है। २ छोड देना। उ० मिट्टी डालो ऐसी आदत पर। ३. मरने के बाद गाड देना। खोद कर तोप देना। ४ खोद कर गाडना। [यह गाली है, जिसका प्रयोग स्त्रियाँ करती है।]

मिट्टी ढह जाना–१. बुढापे के निशान दीखना। उ० उसकी मिट्टी अब ढह गई। २ मरने के करीब होना। ३ मर जाना। उ० भगवान करे, तुम्हारे मिट्टी ढह जाय। [यह एक प्रकार की गाली है, जिसका प्रयोग स्त्रिया करती है।]

मिट्टी पकड़ना–पृथ्वी पर जम जाना। उ० जब वह मिट्टी पकड़ लेता है तो कोई लाख कर नही उठता। मै मिट्टी पकड़ लूँगा तो मुझे कौन पछाड सकता है। [इसका प्रयाग पहलवानो की भाषा मे ही विशेष होता है।]

मिट्टी पलीत करना–दे० 'मिट्टी ख़राब करना'।

मिट्टी में मिलना या मिल जाना–१. बरबाद होना। उ० ससार की सभी चीज़ें मिट्टी मे मिल जाने वाली है। २. मरना। उ० आज वह बेचारा मिट्टी मे मिल गया। ३. बेइज्जत होना। ४. नीचे गिरना।

मिट्टी में मिलाना–नष्ट करना । समाप्त करना । उ० अपनी बनी इज्जत क्यों मिट्टी में मिलाते हो ?

मिट्टी होना–१. मैला होना । उ० लड़के के सब कपड़े मिट्टी हो गये । २ खराब होना, बरबाद होना । तुम्हारी वजह से मेरा सब काम मिट्टी हो गया । ३. मर जाना । उ० एक दिन सभी मिट्टी होंगे ।

मिठा-मिठा कर बोलना–बहुत नम्रता और प्रेम से बातें करना ।

मिती काटना–ब्याज काटना । उ० इस रुपये मे से मिती काट कर बाकी लौटा दो ।

मिती चढ़ाना–तिथि लिखना । तारीख डालना । उ० रजिस्टर मे इस मास की मिती चढ़ा दो ।

मिती पुगना–दे० 'मिती पूजना' ।

मिती पूजना–हुंडी के रुपये देने का आखिरी दिन आना । हुंडी की मियाद का खतम होना । उ० आज इस हुंडी की मिती पुज गई, रुपये ले आओ ।

मिन-मिन करना–दे० 'मगर-अगर करना' ।

मियाँ-मिट्ठू बनाना–१. प्रशसा करके फुला देना । उ० वह सबको मियाँ-मिट्ठू बना कर अपना काम निकाल लेता है । २ तोते की तरह बिना समझाये शब्द याद करा देना । उ० वह सीखें है जो बोलियाँ सब सिखा दे, मियाँ-मिट्ठू अपना सब उसको बना दे ।

मियाद काटना–जेल काटना । सज़ा के दिन काटना । उ० मियाद काट कर मुझे निकलने तो दो, बच्चू की फिर से टाँग न तोड़ी तो मेरा नाम नही ।

मियाद बोलना–सज़ा के दिन सुनाना । उ० जज ने आज उसे चार वर्ष की मियाद बोल दी ।

मिर्च लगना–दे० 'मिर्चे-सी लगना' ।

मिर्चे-सी लगना–बुरी लगना । बहुत कड़ुई लगना । उ० उसकी बात मुझे मिर्चे-सी लगती है ।

मिलने से रहना–न मिलना । उ० यह चीज तुम्हे मिलने से रही ।

मिलाप रखना–मेल रखना । उ० भाइयो से मिलाप रक्खो ।

मिला लेना–अपने पक्ष में कर लेना ।

मिली-भगत होना–किसी दुरभिसंधि में योग देने वाला होना ।

मिल्लत का–मिलनसार । उ० वह इतना बड़ा आदमी होते हुए भी बड़ी मिल्लत का है । मिल्लत के आदमी बड़े भाग्य से मिलते हैं ।

मिसरा लगाना–१. समस्या-पूर्ति करना । उ० वह कवि तो है, पर उसे मिसरा लगाना एकदम नही आता । २. किसी बात के जोड़ की फबती बात या किसी शेर पर फबता शेर कहना । उ० उस दिन तो तुमने ऐसा मिसरा लगाया कि वे दग रह गए ।

मिसरी की डली–बहुत मीठी । उ० जो बात कहो साफ़ हो, सुथरी हो, मिसरी की डली हो ।

मिसरी की डली दिखाकर विष देना–धोखा देना, कहना कुछ करना कुछ ।

मिसिल उठाना–पुस्तक के अलग-अलग फर्मो को सीने के लिए एक क्रम से लगाना । उ० आज मिसिल उठा रहा हूँ, कल तक शायद पूरी कर दूँ । [इसका प्रयोग दफ्तरियो की भाषा मे होता है ।

मिसिली चोर–बहुत भारी चोर । उ० वह मिसली चोर है ।

मिस्सी-काजल करना–बनाव-चोनाव करना । सिंगार-पटार करना । उ० वह तो रात-दिन मिस्सी-काजल करने मे ही रहती है ।

मीज़ान लगाना–अंको को जोड़ना । उ० सब अंको का मीजान लगा कर जल्दी दो ।

मीजा पटना–स्वभाव मिलना । उ० बिना मीजा पटे मित्रता ठीक नही चलती ।

मीजा मिलना–दे० 'मीजा पटना' ।

मीठा-ठग–प्रिय बाते करके ठग लेने वाला ।

मीठा-मीठा गप्प और कड़वा-कड़वा थू करना–अच्छा-अच्छा ले लेना और बुरी चीजों को छोड़ देना ।

मीठा मुँह करना–दे० 'मुँह मीठा करना' ।

मीठी आँच पर पकाना–१. भीतर-भीतर कष्ट पहुँचाना । २ थोड़ी आँच पर धीरे-धीरे पकाना ।

मीठी होना या हो जाना–१ लाभ होना । उ० मुझे आपके यहाँ आने मे क्या मीठा है, जो रोज आऊँ ? २. अच्छा, मधुर या मृदुल

होना । उ० अब उसका स्वभाव बहुत मीठा हो गया ।

मीठी चुटकियाँ उड़ाना–दे० 'मीठी चुटकी लेना' ।

मीठी चुटकी लेना–१. मधुर तथा विनोदमय, किन्तु कटु व्यग्य करना । मीठी चुटकी लेना उर्दू वाले खूब जानते है । २. हँसी उड़ाना, लिहाड़ी लेना । उ० आने भी दो, ऐसी मीठी चुटकी ली जायगी कि फिर आने को नाम न लेंगे ।

मीठी छुरी–कपटी । ऊपर से मीठा पर भीतर से छुरी की तरह तीखा और कटु । उ० आप तो मीठी छुरी है, आपका मै विश्वास नही कर सकता ।

मीठी छुरी मारना–१. मधुर शब्दो मे तीखा व्यग्य करना । उ० ऐसी मीठी छुरी मारी कि दिल मसोस कर रह गए । २ ऐसी नीति बरतना जो ऊपर से तो ठीक, भीतर से कटु हो । उ० उससे सचेत रहना, वह मीठी छुरी मारता है ।

मीठी नीद सोना–१. सुख से सोना । उ० जब से मेरी परीक्षा समाप्त हो गई, मै खूब मीठी नीद सोता हूँ । २. ऐसी नींद सोना, जिसमें अपने किसी बहुत प्रिय का मधुर स्वप्न दिखाई दे ।

मीठी मार–१. भीतरी या अन्दर की चोट । उ० उसे मीठी मार मारो ताकि कोई कुछ कह भी न सके । २ मधुर जबान में किया गया तीखा व्यग्य । उ० उसकी मीठी मार सब नही समझ सकते ।

मीन को सनीचरी होना–सभी के लिए बुरे दिन आना । उ० आजकल पूरे ससार पर मीन की सनीचरी है ।

मीन-मेख निकालना–१. दोष निकालना । उ० तुम सबके काम मे मीन-मेख निकालना ही जानते हो कि कुछ करना भी ।

मीनाकारी छाँटना–१. बेकार दोष निकालना । उ० किसी दूसरे के काम मे मीनाकारी छाँटना ठीक नही । २. बड़ी बारीकी के बारे में बात करना । उ० मीनाकारी न छाँटिए, मै आपकी गहराई नाप चुका हूँ ।

मुँडकरी मारना–दुखी होकर बैठना । घुटनो मे सिर देकर बैठना । उ० क्या बात है कि आप आज मुँडकरी मारे बैठे है ।

मुँड़वाना–नुक़सान या घाटा करवाना ।

मुँतकिल करना–दूसरे को देना । उ० उसने अपना सारा धन भतीजे को मुंतकिल कर दिया ।

मुँह आना–१. इज्ज़त करना । वाद-विवाद करना । उ० दुष्टो के मुँह आना मूर्खता है । २. मुँह में छाले पड़ना । उ० मुँह आ गया है, कुछ खाए नही बनता ।

मुँह उजला करना–१. मान हासिल करना । इज्ज़त पाना । उ० यह काम करके उसने अपना मुँह खूब उजला किया । २ इज्ज़त बढाना । उ० उसका मुँह मैने खूब उजला किया ।

मुँह उजला होना–१ प्रतिष्ठा रह जाना । उ० इस चोरी से जान छूटे तो मुँह उजला हो । २ इज्ज़त या आबरू का बढ़ना । उ० उसका तो दिन-पर-दिन मुँह उजला हो रहा है ।

मुँह-उजाले–बहुत तडके । उ० विद्यार्थियों को मुँह-उजाले उठकर पढ़ना चाहिये ।

मुँह उठा कर कह देना–जो मुँह में आगे, कह देना । उ० मुँह उठाकर कह देना मूर्खता है । बात सोच-समझ कर कहनी चाहिये ।

मुँह उठाये चले जाना–निडर या बेधडक चले जाना । उ० आप वहाँ मुँह उठाये चले जाइये, कोई रोक नही है ।

मुँह उतरना–१. चेहरे पर रौनक न रहना । उदासी छाना । उ० आजकल क्यो तुम्हारा मुँह उतरा हुआ है, क्या कुछ तबीयत खराब है ?

मुँह करना–१. लिहाज करना । उ० अपने बडो का मुँह करना चाहिये । २. देखना । उ० उधर मुँह करो ।

मुँह का आग उगलना–अप्रिय या कटु वचन कहना ।

मुँह का उतार-चढ़ाव–चेहरे का भाव-परिवर्तन ।

मुँह का कच्चा–१. झूठा । उ० वह मुँह का कच्चा है, उसका कौन विश्वास करे ? २. सबसे कह देने वाला । उ० वह मुँह का कच्चा है, उससे यह बात न कहो । ३. घोड़ा जो लगाम का झटका न सह सके, और बहुत जल्द जिसके मुँह मे घाव हो जाय ।

मुँह का कड़ा–१ सख़्त, तेज़ या कड़ी ज़बान वाला । उ० वह मुँह का कड़ा है, उससे मैं

कुछ नही कह सकता । २. घोड़ा जो सवार के इशारे के मुताबिक चले । उ० मुँह के कड़े घोड़े बहुत कम मिलते हैं ।

मुँह का कौर–आसान काम ।

मुँह का कौर छिन जाना–रोज़ी छिन जाना ।

मुँह का टाँका टूटना–कुछ कह पाना । उ० भला बोले तो मुँह का टाँका तो टूटा ।

मुँह का पानी उतर जाना–अपमानित या लज्जित होना ।

मुँह काला करना–१. बदनामी करना । उ० आपने ही मेरे परिवार का मुँह काला किया । २. अनुचित सहवास करना । उ० तुम्हें उसके साथ मुँह काला करते शर्म नही आई ?

मुँह की खाना–१. बुरी तरह गिरना या हारना । उ० तुम तो ऐसी मुँह की खाओगे कि कुछ दिन तक याद रखोगे । २ वाद-विवाद या बातचीत में परास्त होना । ३. धोखा खाना । ४ प्रतिष्ठा खोना, बेइज्ज़त होना । ५. लज्जित या शर्मिन्दा होना । उ० ऐसी मुँह की खाने पर भी जब तुम नही चेते तो इस जन्म मे चेतना सभव नही ज्ञात होता ।

मुँह की बात छीनना–जिस बात को दूसरा कहने वाला हो, उसी को पहले ही कह देना । उ० वार्त्तालाप मे मुँह की बात छीनना असभ्यता है । उसे मुँह की बात छीनना ही आता है ।

मुँह की मक्खी न उड़ा सकना–१ बहुत कमजोर हो जाना । कमजोरी के कारण हाथ भी न उठा सकना । उ० दस दिन की ही बीमारी में वह ऐसा हो गया है कि मुँह की मक्खी नहीं उड़ा सकता । २. लकवा आदि के कारण हाथ आदि अंगो का बेकार हो जाना ।

मुँह की लाली रखना या रह जाना–प्रतिष्ठा बनाये रखना या बना रह जाना ।

मुँह के तोते उड़ जाना–कुछ बोला न जाना । उ० बाप के सामने तो मुँह के तोते उड़ जाते हैं, और माँ से लड़ता है ।

मुँह के बल गिरना–१. धोखा खाना । उ० वह उसकी बात मे आकर ऐसा मुँह के बल गिरा कि कहा नही जाता । २. ठोकर खाकर गिरना । ३. शर्मिन्दा होना । ४. इज्जत गँवाना ।

मुँह के भाव पढ़ना–चेहरा देखकर व्यक्ति के भावो को जान लेना ।

मुँह ख़राब होना–गंदी बात कहना, गाली देना । उ० आप ऐसे सज्जन व्यक्ति को मुँह नही खराब करना चाहिये ।

मुँह खिलना–प्रसन्न होना ।

मुँह खुलना या खुल जाना–१. उद्दंडता से बोलने की आदत पडना । उ० जिसका मुँह खुल गया, फिर बन्द होना कठिन है । २. मर जाना । ३. बोलना, बोलने की हिम्मत पडना । उ० उनके सामने तो मेरा मुँह ही नही खुलता ।

मुँह खुश्क हो जाना–दे० 'मुँह सूखना' ।

मुँह खोल कर रह जाना–१. कहते-कहते शरमा कर चुप हो जाना । उ० क्यो आप मुँह खोल कर रह गये, कहिये क्या बात है ? २. अवाक् या आश्चर्यचकित रह जाना ।

मुँह खोलना–१. गाली देना । उ० इस प्रकार मुँह खोलते तुम्हे शर्म नहीं आती ? २. माँगना । उ० सबसे मुँह खोलना ठीक नही । ३ घूँघट हटाना । उ० वह मुँह खोलकर तुम्हे देख रही है ।

मुँह गिर जाना–उदास हो जाना ।

मुँह चलना–१. व्यर्थ की बाते निकलना । उ० उसका मुँह हर समय चलता रहता है । २. खाते रहना । उ० लड़को का मुँह हरदम चलता रहता है । ३. कै होना । उ० आज मेरे बच्चे का मुँह चल रहा है ।

मुँह चढ़ाना–१ गुस्सा होना । उ० बहू तो बात-बात मे मुँह चढ़ा लेती है । २ मुँह लगाना । उ० उस नीच को मुँह न चढाओ, नही तो पछताओगे ।

मुँह चलाना–१. बकना, बडबडाना । उ० वह रात-दिन मुँह चलाया करता है । २. खाना खाना । ३. गाली देना । उ० ज्यादा मुँह चलाते हो तो मार खा जाओगे ।

मुँह चाटना–खुशामद करना । उ० वह बड़ो का मुँह चाटकर अपना काम कर लेता है ।

मुँह चिढ़ाना–चिढाने को मुँह टेढा करके दिखाना । उ० लड़के एक-दूसरे को बहुत मुँह चिढाते है ।

मुँह चुराना–सामना न करना । उ० लेने के समय तो छाती तानकर आते हो, और देने के समय मुँह चुराते हो ।

मुँह चूम कर छोड़ देना–१. लज्जित करके छोड़ देना । २ बहुत आगे न बढना । उ० मुँह चूम कर छोड़ देने वालो मे से मै नही हूँ ।

मुँह छूना—१. दिखाने के लिए कहना। उ० मुँह छूते हो या सचमुच खाने चलूँ। २. दिखावटी बात करना। उ० तुम्हे मुँह छूना बहुत आता है।

मुँह ज़रा-सा निकल आना—शर्म से चेहरा फक़ पड़ जाना, बहुत लज्जित होने।

मुँह ज़हर होना—मुँह कड़ुवा होना। उ० इस दवा को खाते ही मेरा मुँह ज़हर हो गया।

मुँह जुठारना—१. नाम मात्र को खाना। उ० अगर भूख न लगी हो तो मुँह ही जुठार लो। इतने से मुझे सन्तोष हो जायगा। २. शादी आदि शुभ कार्यों मे थोड़ा दही मीठा खाना।

मुँह जोड़ना—नजदीक-नजदीक मुँह करना। उ० आज वे दोनो मुँह जोड़ कर बात कर रहे थे।

मुँह झटक जाना—चेहरा उतर जाना, दुर्बल हो जाना। उ० दो ही दिन की बीमारी मे उसका मुँह झटक गया।

मुँह झुलसना—१ देकर दूर करना। उ० इसका मुँह झुलस दो, यह सुबह ही से माँग रही है। २. मुँह मे आग लगाना। [यह एक गाली है जिसका प्रयोग स्त्रियाँ करती है] उ० मुझसे मजाक करोगे तो मै तुम्हारा मुँह झुलस दूँगी।

मुँह झौंसना—दे० 'मुँह झुलसना'।

मुँह टूट जाना—अपमानित होना, बोलती बंद हो जाना।

मुँह टेढ़ा करना—१. चेहरे से नापसदगी दिखाना। उ० मेरी ख़रीदी चीज़े देखकर मुँह मत टेढ़ा करो। २. घृणा प्रदर्शित करना। ३. गर्व करना।

मुँह डालना—१. खाने की चीज पर जानवरों का मुह लगाना। उ० देखो, बैल ने मुँह डाल दिया। २. मुर्गों का आपस मे लड़ना।

मुँह ढाँकना—मरने पर रोना। उ० उसके मरते ही घर के सभी लोगों ने मुँह ढाँक लिये। [इसका प्रयोग केवल मुसलमान या उनके संपर्क मे आने वाले कायस्थ लोग करते है।]

मुँह तक आना—१. लबालब भरना। उ० इस बरतन मे दूध मुँह तक आ गया है। २. ओठ तक आना, जबान पर आना। उ० यह बात उस समय भी मेरे मुँह तक आई थी, पर कह नही सका।

मुँह ताकना—१. कुछ न करना। उ० मुँह ताकने से यह काम न होगा, शुरू करो। २. पाने की आशा से मुँह जोहना। उ० वह भिखारी तुम्हारा मुँह ताकता रह गया, पर तुमने कुछ भी नहीं दिया। ३. टकटकी से देखना। उ० क्या मुँह ताकते हो ? ४. लज्जित या शर्मिंदा होकर देखना। उ० तुमने ऐसा डाँटा कि वह बेचारा मुँह ताकने लगा।

मुँहतोड़ जवाब देना—तुरंत ठीक-ठीक उत्तर देना। मुँह बंद करने वाला उत्तर देना। उ० उसका मुँहतोड़ जवाब देना सुन कर सब लोग दंग रह गए।

मुँह तो देखो—योग्यता तो देखो। उ० पहले अपना मुँह तो देखो, पीछे इस नौकरी के पीछे पड़ना।

मुँह थकना—बहुत बोलने से थक जाना। उ० आज सुबह से बोलते-बोलते मुँह थक गया, पर तुम्हारी समझ मे न आया।

मुँह थकाना—बहुत बोलकर अपने को शिथिल करना। उ० क्यो बक-बक करके मुँह थकाते हो ?

मुँह थुथराना—मुँह फुलाना। उ० जब भी कोई काम करना होता है तो वह मुँह थुथराकर बैठ जाती है।

मुँह-दर-मुँह कहना—१. सामने कहना। उ० उसके मुँह-दर मुँह कहो तो ठीक होगा। छिप कर कहने क्या लाभ है ? २ मुँहतोड़ जवाब देना। उ० मुँह-दर-मुँह कहने मे वह एक ही है।

मुँह दिखाने लायक न रहना—ऐसी स्थिति मे पड़ जाना कि दूसरो का सामना न किया जा सके।

मुँह देख कर बात करना—१. खुशामद करना। उ० मैं किसी का मुँह देखकर बात नही करता। २. पात्रता का विचार कर बात बोलना। मुँह देखकर बीड़ा देना। उ० मुँह देखकर बात की जाती है, भला उसे बे-ते करना उचित था !

मुँह देखकर बात कहना—दे० 'मुँह देखकर बात करना'।

मुँह देख कर बीड़ा देना—पात्रता का विचार कर किसी के साथ व्यवहार करना। आदमी का स्तर देखकर उसके साथ पेश आना। उ चतुर आदमी मुँह देखकर बीड़ा देते हैं।

मुँह देखता रह जाना–आश्चर्य-चकित रह जाना। उ० उसकी बातें सुनकर मैं मुँह देखता रह गया।

मुँह देखना–१. सुबह चारपाई से उठते ही दर्शन होना। उ० जो आपका मुँह देख लेगा, उसे दिन भर खाना न मिलेगा। २ शीशे मे देखना। उ० मुँह तो देखो, यह रंग कैसे लग गया है ? ३. आश्चर्य से देखना। उ० उसकी बात सुनकर मैं मुँह देखता रह गया।

मुँह-देखे का–ऊपरी, दिखावटी, सामने का। उ० मुँह-देखे का प्रेम कोई प्रेम नही है।

मुँह धो रखना–आशा न रखना (व्यंग्य तथा विनोद या क्रोध)। उ० आप मुँह धो रखे, मैं कलकत्ता से आपकी माँगी हुई सारी चीज़े लेता आऊँगा।

मुँह न खोल सकना–१. कुछ न कह सकना। २. ज़ोर न पकड़ सकना।

मुँह न देखना–१. घृणा, भय या शर्म से सामने न होना, न मिलना-जुलना। उ० मै उसका मुँह नहीं देखना चाहता। २. घृणा करना।

मुँह न फेरना–१. इन्कार न करना। उ० वह कठिन से कठिन काम करने से भी मुँह नही फेरता। २. विमुख न होना। ३ बराबरी मे या सामने खड़े रहना।

मुँह न होना–योग्यता न होना, समर्थ न होना।

मुँह निकल आना–१. चेहरा उतर जाना, कमज़ोर एवं दुर्बल होना। उ० दो ही दिन की बीमारी मे उसका मुँह निकल आया। २ शर्मिंदगी या डर के चिह्न मुँह पर दिखाई देना।

मुँह नोच लेना–चुपकर देने या तिलमिला देने वाला उत्तर देना।

मुँह पकड़ना–बोलने देना। उ० तुम बात-बात में अपने पिता जी का मुँह पकड़ लेते हो, यह ठीक नहीं है।

मुँह पड़ना–साहस होना। उ० जिसका मुँह पड़े, वह इस शेर को पानी दे, मैं तो नही दे सकता।

मुँह पर–सामने। उ० पीठ-पीछे तो लोग किसको क्या नहीं कहते ? कोई मुँह पर कहे तो बतलाऊँ।

मुँह पर आग रखना–दे० 'मुँह फूंकना'। [यह स्त्रियो की एक गाली है।]

मुँह पर कालिख पोतना–कलंकित या अपमानित करना।

मुँह पर चाँटा लगना–१. अपने किये बुरे कर्म का फल पाना। २. अपमानित होना।

मुँह पर चूना पोतना–अपमानित करना।

मुँह पर जाना–१ कहने का विश्वास करना। उ० उनके मुँह पर न जाओ। २. लिहाज़ करना। कहने का लिहाज़ करना। उ० आपके मुँह पर जाता हूँ, नही तो सबको यही ठीक कर देता।

मुँह पर थूकना–१ शर्मिन्दा करना। उ० अगर नीच काम करोगे तो सभी मुँह पर थूकेंगे। २ अशिष्टता का व्यवहार करना।

मुँह पर न रखना या रख देना–१. स्वाद भी न लेना। उ० ऐसी अच्छी मिठाई बनी थी, पर उसने मुँह पर भी नही रखी। २. नाराज होकर देना। उ० बहुत चीज वाला बना है तो ले जाकर उसके मुँह पर रख दो।

मुँह पर नाक न होना–शर्म न होना। उ० बहू के मुँह पर तो नाक ही नही है, वह घूँघट काढ़े क्यों ?

मुँह पर पानी फिर जाना–चेहरा प्रसन्न होना। चेहरा खिल जाना। उ० परीक्षा-फल सुनते ही उसके मुँह पर पानी फिर गया।

मुँह पर फिटकार बरसना–मुख मलिन होना, चेहरा उतरा हुआ होना। उ० क्यों मुँह पर फिटकार बरस रही है ? कोई खास बात हो गई है क्या ?

मुँह पर फेंकना–नाराजी से देना। उ० रोज़ अपनी पुस्तक पर ताव दिखलाता था, आज मैंने उसके मुँह पर फेंक दी।

मुँह पर बड़ाई करना–किसी की उपस्थिति में उसकी तारीफ़ करना।

मुँह पर बरसना–चेहरे से स्पष्ट मालूम होना। उ० मुँह पर बरस रहा है कि वह खूनी है।

मुँह पर बसन्त खिलना–दे० 'मुँह पर वसन्त फूलना'।

मुँह पर वसन्त फूलना–१. चेहरा पीला होना। उ० आजकल क्यों आपके मुँह पर वसन्त फूल रहा है। २. चेहरा प्रसन्न और प्रफुल्लित होना। उ० हाँ शादी हो गई, अब मुँह पर क्यों न वसन्त फूले !

मुँह पर बात आना—१. कुछ कहने की इच्छा होना। उ० मुँह पर बात आई, पर फिर शर्मा गई और न कह सकी। २. कहना। उच्चरित करना। उ० गन्दी बात मेरे मुँह पर नहीं आ सकती। ३. संयोग से बात का निकल जाना। उ० मुँह पर बात का निकल जाना। उ० मुँह पर बात आ गई, अब क्या कहूँ ?

मुँह पर बारह बजना—दे० 'मुँह पर फिटकार बरसना'।

मुँह पर मारना—दे० 'मुँह पर फेंकना'।

मुँह पर मुरदनी छाना—१. चेहरा पीला पड़ जाना। उ० उसके मुँह पर मुरदनी छाई हुई है। २. लज्जा या भय के कारण मुँह पर उदासी छाना। ३. बहुत कमजोरी होना। ४. रक्त की कमी होना। ५. मृत्यु के चिह्न दिखाई देना।

मुँह पर मोहर करना—दे० 'मुँह बन्द करना' तथा 'मुँह पकड़ना'।

मुँह पर रखना—१. तमाचा मारना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो मुँह पर रख दूँगा। २. सामने रखना। उ० किताब ले जाकर उसके मुँह पर रख दो (क्रोध में प्रयुक्त)।

मुँह पर लाना—कहना। उ० आज से ऐसी गंदी बात मुँह पर न लाना।

मुँह पर स्याही पुत जाना—अपमानित या कलंकित होना।

मुँह पर हवाई उड़ना—शर्म या डर से मुँह के रंग का बदरंग हो जाना। उ० मुझे देखते ही उनके मुँह पर हवाई उड़ने लगी।

मुँह पर हाथ रखना—दे० 'मुँह पकड़ना'।

मुँह पसार कर दौड़ना—बहुत लालच के साथ किसी की चीज को लेने के लिए बढ़ना। उ० क्या मुँह पसार कर दौड़ रहे हो, शर्म नहीं आती ?

मुँह पसार कर रह जाना—दे० मुँह बाकर रह जाना'।

मुँह पाट होके पड़ना—मुँह छिपाकर औंधे पड़ना।

मुँह पाना—१. रुख देखना। उ० मालिक का मुँह पाना तो कुछ अर्ज करना। २. सम्मति पाना। उ० उनका मुँह तो पा गया हूँ, अब कहो तो कर डालूँ।

मुँह पिटाना—१. चूल्हे-भाड़ में जाना। उ० जाओ, अपना मुँह पिटाओ। मुझसे क्या मतलब ? २. बुरी दशा को प्राप्त होना। उ० तुम अपना मुँह पिटाओ, मुझसे क्या मतलब ? [रोब या घृणा में इसका प्रयोग किया जाता है।]

मुँह पीला पड़ जाना—१. उदास हो जाना। २. भय या लज्जा के कारण मुँह का श्रीहीन हो जाना। ३. घबरा जाना।

मुँह-पेट चलना—कै-दस्त होना। उ० आज सुबह ही से उसका मुँह-पेट चल रहा है।

मुँह फक होना—दे० 'मुँह पर हवाई उड़ना'।

मुँहफट—बिना कुछ ध्यान दिये अश्लील और कड़ई बात कह देने वाला। उ० अगर वह इसी तरह मुँहफट रहा तो कहीं मार भी खा जायगा।

मुँह फटना—१. सूखी हवा या खून की खराबी से ओठ या पूरे चेहरे का फटना। उ० मुँह फटा है, हँसा नहीं जाता। २. चूने से मुँह में घाव होना। उ० मेरा मुँह फट गया है, इसलिए कुछ खा-पी नहीं पाता।

मुँह फाड कर कहना—बेहयाई से कहना। उ० वह ऐसा नीच है कि हर एक बात मुँह फाड कर कहता है।

मुँह फाड़ देना—१. पराजय स्वीकार कर लेना। २. दीन-हीन बन जाना।

मुँह फाड़ना—१. आश्चर्य से देखना। २. बहुत अधिक चाहना या माँग करना। ३. असभ्यता में बोलना।

मुँह फिर जाना—दे० 'मुँह फिरना'।

मुँह फिरना—१. मुँह टेढ़ा हो जाना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो ऐसा तमाचा मारूँगा कि मुँह फिर जायगा। २. लकवा मार जाना। उ० बेचारे का मुँह आज दो मास हुए, फिर गया। ३. दे० 'मुँह मोहठ जाना'।

मुँह फुकाना—मर कर मुँह में आग लगवाना। उ० तुम तो मुँह फुकाने लायक हो। [यह एक गाली है, जिसका प्रयोग स्त्रियाँ करती है।]

मुँह फुला कर बैठना—दे० 'मुँह फुलाना'।

मुँह फुलाना—रुष्ट होना। नाराज होना। उ० सही-सही बताओ, क्यों मुँह फुलाये हो ?

मुँह फूँकना–१. मुर्दे का मुँह जलाना। उ० शव जलाया नहीं गया। मुँह फूंक कर फेंक दिया गया। २. मुँह झुलसना। उ० मुझसे मजाक करोगे तो तुम्हारा मुँह फूंक दूँगी। [यह एक गाली है जिसका प्रयोग स्त्रियाँ करती हैं।]

मुँह फूलना–क्रोध आना। उ० तुम्हारा बात-बात में मुँह फूल जाता है।

मुँह फेरना–१. विमुख होना। उ० मेरे मुँह फेरते ही वे चले गये। २ हराना। उसने शत्रु का मुँह फेर दिया। ३. दूर होना। उ० बुरी आदतों से मुंह फेरो। ४. उपेक्षा दिखाना। उ० वह तुमसे मिलने आया है और तुम मुँह फेर रहे हो? ५. घृणा करना, घृणा से मुँह दूसरी ओर कर लेना।

मुँह फैलाना–१. लालच करना। उ० ज्यादा मुँह मत फैलाओ, जो भाग्य होगा, वही मिलेगा। २ जम्हाई लेना। उ० क्या अशिष्ट की तरह मुँह फैला रहे हो, रूमाल क्यों नहीं लेते?

मुँह बन्द कर देना–हराना। उ० मैने शास्त्रार्थ मे उनका मुँह बद कर दिया। दे० 'मुँह बद करना'।

मुँह बन्द करना–१. चुप होना। उ० अपना मुँह बंद करो, नही तो सारा मामला बिगड जायगा। २. चुप कराना, न बोलने देना। उ० इन सबका मुँह बद करो। ३ हारना। उ० शास्त्रार्थ मे हमारे पडित जी को तो अपना मुंह बंद करना पडा।

मुँह बन्द कर लेना–१. कुछ न बोलना। उ० जब भी कुछ पूछता हूँ, वह मुँह बंद कर लेता है। २. किसी दूसरे को न बोलने देना। उ० उसका मुंह क्यों बंद कर लेते हो?

मुँह बन्द होना–१. चुप हो जाना। २. हार जाना।

मुँह बन जाना–१. ऐसा चेहरा बनना जिससे नाराजगी प्रकट हो। उ० छोटी-छोटी बात से भी उनका मुँह बन जाता है। २ सूरत बिगड जाना, मुँह चिचुक जाना या कमजोरी के कारण सट जाना। उ० एक ही दिन की बीमारी में मुंह बन गया। ३. शर्मिन्दा हो जाना।

मुँह बनाना–दे० 'मुंह बन जाना'।

मुँह बाँध कर बैठना–मौन धारण कर बैठना। उ० जहाँ किसी का व्याख्यान होता हो, वहाँ मुँह बाँध कर बैठना चाहिये। मुंह बाँध कर बैठने से काम न चलेगा, कुछ कहना भी पड़ेगा।

मुँह बाकर दौड़ना–दे० 'मुँह पसार कर दौड़ना'।

मुँह बाकर रह जाना–१. चकित हो जाना। उ० मेरे काम को देख कर बहुत से लोग मुँह बाकर रह गये। २. शरमा कर रह जाना। उ० कुश्ती में हारने पर वह मुँह बाकर रह गया।

मुँह बाये होना–१. उत्कठित होना। २ सामने प्रस्तुत होना, बहुत चाहना।

मुँह बा देना–१. आश्चर्य करना। उ० ऐसा तमाशा दिखलाऊँगा कि मुँह बा दोगे। २ २. मर जाना। उ० एक ही लाठी में उसने मुँह बा दिया। ३ लज्जित हो जाना।

मुँह बाना–१. लेने की इच्छा करना। उ० हर एक चीज के लिए तो तुम मुँह बाते हो। २ जम्हाई लेना। ३. अशिष्टता से ठहाका मारना। ४. लज्जित होने पर भी हँसना।

मुँह बिचकाना–१ घृणा या असंतोष प्रकट करना। २. उपेक्षा करना।

मुँह बिगड़ना–१ चेहरा खराब होना। उ० चेचक निकलने मे उसका मुँह बिगड़ गया। २ मुँह का स्वाद खराब होना। उ० दवा खाते ही मेरा मुँह बिगड़ गया। ३ घृणा होना, न चाहना। उ० तुम्हें देखते ही उसका मुँह बिगड जाता है, वह तुम्हे नही चाहता।

मुँह बिगाड़ना–१. मार कर चेहरा बिगाड़ना। उ० मगर ज्यादा शरारत करोगे तो मुँह बिगाड दूँगा। २ असंतोष प्रकट करना। उ० मुंह क्या बिगाड़ते हो और ले लेना। ३. मुँह का स्वाद खराब करना। उ० आपने मुझे दवा खिला कर मेरा मुँह बिगाड दिया। ४. गर्व खतम करना। उ० अगर ज्यादा बढ-बढ़ कर बात करोगे तो यही मुँह बिगाड दूँगा। ५ नाराजी प्रकट करना। ६ घृणा प्रदर्शित करना। ७. लज्जित करना। ८. लालची बनाना।

मुँह बुरा बनाना–दे० 'मुँह बिगाड़ना'।

मुँह भर आना–१. जी ललचाना। उ० मिठाई देखकर मेरा मुँह भर आया। २. कै आना।

उ० आज सुबह ही से मेरा मुँह भर आ रहा है।

मुँह भर के–१. जितना जी चाहे, अच्छी तरह। उ० मुँह भर के खा लो, किसी चीज की कमी नहीं है। २. लबालब। उ० इतना ही दूध उस गिलास मे मुँह भर के हो जायगा।

मुँह भरना–१ खूब खिलाना। उ० उसका मुँह भर दो तो उसे सतोष होगा। २ घूस देना। उ० उसका मुँह खूब भरो तो वह काम करेगा। ३. बोलने न देना। उ० यह तुम्हारी मुँह भरने की आदत मुझे पसद नही।

मुँह-भराई देना–घूस देना, रिश्वत खिलना, चाँदी का जूता मारना। उ० आजकल बिना मुँह-भराई दिये अपना काम भी नही होता।

मुँह भर बोलना–अच्छी तरह बात करना, प्रेम से बोलना। उ० वह किसी से मुँह भर बोलता भी नही।

मुँह-माँगी मुराद पाना–मनचाही वस्तु पाना, इच्छा पूरी होना। उ० यदि मेरा काम कर कर दोगे तो मुँह-माँगी मुराद पाओगे।

मुँह मारना–१ कान काटना, बढ़कर या अच्छा होना। उ० यह लड़का तो बड़े-बड़े गवैयों का भी मुँह मारता है। २. लज्जित करना, नीचा दिखाना। उ० तुम्हारा उसने मुँह न मारा तो कहना।

मुँह मीठा करना–१ मिठाई खिलाना। उ० अगर मेरा काम कर दोगे तो तुम्हारा मुँह मीठा कर दूँगा।

मुँह मीठा होना–१ लाभ होना। उ० तुम्हारा भी मुँह मीठा अवश्य हुआ है। २. मिठाई मिलना। उ० मुँह मीठा होने की उम्मीद हो तो तुम्हारा परीक्षा-फल बतला दूँ ?

मुँह मुरझाना–चेहरे पर उदासी झलकना।

मुँह में आना–कहे जाने के लिए मुँह मे आना। उ० जो मुँह मे आए, वह सब कह डालना कहाँ की बुद्धिमानी है ?

मुँह में उत्तर न आना–कुछ कह न पाना।

मुँह में और पेट में और होना–कहना कुछ, पर नियत और कुछ दूसरी ही होना।

मुँह में कालिख लगना–कलक का टीका लगना, बहुत बदनामी होना। उ० इस नीच काम के कारण तुम्हारे मुँह मे कालिख लग गई।

मुँह में कालिख लगाना–खूब बदनाम करना। उ० मेरे मुँह मे कालिख न लगाओ।

मुँह में खून लगना–आदत पड़ना। चाट पड़ना। उ० एक दिन मिठाई क्या मिली, तुम्हारे मुँह में खून लग गया।

मुँह में घी-शक्कर होना–अपने अनुकूल बात किसी से सुनने पर प्रसन्न होकर उसको साधु-वाद देने के भाव से ऐसा कहा जाता है।

मुँह में जबान न होना–१. बोलने की ताक़त या हिम्मत न होना। उ० मालिक के सामने तो तुम्हारे मुँह मे जबान ही नही होती, और उस नौकर बेचारे, को डाँटते हो। २. बहुत धीरे से बोलना। उ० मुँह मे जबान नही है क्या, जरा जोर से बोलो।

मुँह मे ठेंपी देना–१. कुछ न बोलना, चुप्पी साधना। उ० मुँह में ठेंपी देने से काम न चलेगा, कुछ बोलो भी। २. कुछ न बोलने देना। उ० उसके मुँह मे ठेंपी न दो, उसे भी कहने दो।

मुँह में तिनका लेना–दीनता प्रकट करना। उ० उसने मुँह मे तिनका लेकर कहा कि मुझे कुछ खाने को दे दो।

मुँह में तुलसी रखकर बात कहना–सत्य और ठीक बात कहना।

मुँह दाँत में होना–सामर्थ्य होना।

मुँह में धूल देना–घृणा करना, दूर हटाना, तुच्छ समझना। उ० जो न जुगति पिय मिलन की धूरि मुकति मुँह दीन।

मुँह में पानी भर आना–१. जी ललचाना। उ० खाने की कोई चीज देखते ही उसके मुँह में पानी भर आता है। पता नही कैसे घर मे पला है ? २. जी मिचलाना। उ० आज सुबह से ही मुँह मे पानी भर आ रहा है।

मुँह में बोलना–धीरे से बोलना। क्यों मुँह मे बोल रहे हो, साफ़ कहो।

मुँह में, राम बगल में छुरी होना–दिखाने के लिए साधु, पर वैसे कपटी होना।

मुँह लगाम देना–१. सोच-समझ कर बोलना। उ० मुँह मे लगाम दो, आखिर अखलाक कब सीखोगे ? २. न बोलने देना। ३ न खाने देना।

मुँह में लगाम न होना–१. बेसमझे बक देना। बिना बिचारे जो आए कह देना। उ० जिसके मुँह मे लगाम नही है, वह भी क्या आदमी है।

मुँह मोड़ना—१. विमुख होना। उ० लड़ाई से मुँह मोड़ना कायरों का काम है। २. काम करने में आगा-पीछा करना। उ० अगर न करना था तो पहले ही कह देते, हाँ करके मुँह मोड़ना ठीक नहीं है।

मुँह मोहठ जाना—१. हार जाना। २ सामना या लड़ाई करने लायक न रह जाना। उ० एक ही बार मे मुँह मोहठ गया।

मुँह रखना या रख लेना—१ बात रखना। उ० इस बार मुँह रख लो, फिर कभी न कहूँगा। २. इज्ज़त रखना। ३ लिहाज या ध्यान रखना।

मुँह लगना—१ सबध रखना, बहुत बोलना-चालना। उ० बुरो के मुँह न लगो। २ किसी के सिर चढना। उ० बडों के मुँह न लगो। ३ जवाब-सवाल करना। उ० सबके मुँह लगना ठीक नही है।

मुँह लगाना—१. अधिक प्रेम करना। उ० नीचो को मुँह लगाना ठीक नही है। २ सिर चढाना। उद्दड बनाना। उ० लडके को मुँह न लगाओ। ३ अपने से अधिक बोलन-चालने देना।

मुँह लटकाना—नाराज होना। उ० बस थोड़ी-बात पर मुँह लटका लिया।

मुँह लायक बीड़ा होना—किसी व्यक्ति के योग्य वस्तु या व्यवहार होना।

मुँह लाल करना—१. पान खिलाना। उ० अरे भाई कुछ न दिया तो कम से कम मुँह तो लाल कर दो। २ तमाचा मार कर मुँह लाल कर देना। उ० अगर ज्यादा बदमाशी करोगे तो मुँह लाल कर दूंगा। ३. क्रोधित होना। उ० थोड़ी बात पर मुँह लाल मत करो।

मुँह लाल होना या हो जाना—शर्म या गुस्से मे मुँह लाल होना। उ० मेरी बाते सुनते ही उनका मुँह लाल हो गया। पराये पुरुष का सामना होते ही उसका मुँह लाल हो जाता है।

मुँह लेकर रहना या रह जाना—काम पूरा न होने पर लज्जित हो जाना। उ० गया था माँगने कि अवश्य दे देंगे, पर बेचारा मुँह लेकर रह गया।

मुँह सँभालना—१. बुरी बातें न बोलना। उ० मुँह सँभाल कर बोला करो, नही तो मार खा जाओगे। २ बोलना सीखना, ज़बान हिलाना सीखना। उ० पहले मुँह सँभालो, फिर बात करना।

मुँह सफ़ेद होना—दे० 'मुँह फक़ होना'।

मुँह सिकोड़ना—१. चेहरे से नाराज़ी या अन्य-मनस्कता दिखाना। उ० उसने मुँह सिकोड़ते हुए 'हाँ' कहा। २ घृणा या नापसदगी प्रकट करना। उ० मेरे खरीदे सामानो को देखकर तो वह मुँह सिकोडने लगता है।

मुँह सीधा करना—सतोष होना।

मुँह सीना—दे० 'मुँह पकडना'।

मुँह सुजाना—दे० 'मुँह फुलाना'।

मुँह सूखना—१ ज़बान सूखना। गला सूखना। उ० अब प्यास के मेरा मुँह सूख रहा है। २. मुँह पर डर या शर्म के चिह्न दिखाई देना, चेहरा फीका पड़ना। उ० मुझे देखते ही उसका मुँह सूख गया।

मुँह से अक्षर न फूटना—कुछ भी न बोल पाना।

मुँह से आह भी न निकलना—तनिक भी दुःख न प्रकट होने देना।

मुँह से दूध की बू आना—लडका होना, अनुभव-हीन होना, लड़कपन की बू आना। उ० अभी उसके मुँह मे दूध की बू आती है, वह क्या जाने कि ससार कैसा है?

मुँह से कच्ची-पक्की निकालना—दुर्वचन कहना, अनुचित कहना, गाली देना।

मुँह से दूध टपकना—दे० 'मुँह से दूध की बू आना'।

मुँह से निकालना—उच्चरित करना, कहना। उ० मै गदी बाते कभी मुँह से नही निकाल सकता।

मुँह से फूटना—उच्चरित होना, कहना। उ० कुछ मुँह से फूटे भी।

मुँह से फूल की तरह झड़ना—मुँह से मीठी तथा प्यारी बात निकलना। उ० उसकी इतनी मीठी आवाज है कि उसके मुँह से गाली भी फूल की तरह झडती है। बहू बोलती है तो मुँह से फूल की तरह झड़ता है।

मुँह से फूल झड़ना—मुँह से मधुर और प्यारी बाते निकालना। उ० वैसा आदमी तो मैंने देखा ही नही, बोलता है तो मुँह से फूल झड़ता है।

मुँह से बात छीनना–दूसरे की बात काट कर स्वयं कहना। उ० मुँह से बात न छीनो, मैं कह लूं तो तुम भी कहना।

मुँह से बोली न आना–कुछ भी न कह पाना।

मुँह से भाप न निकलना–बिलकुल भयभीत और अवाक् हो जाना। जरा भी न बोल पाना। उ० डाकुओं को देखते ही वह इतना डर गया कि मुँह से भाप तक न निकली।

मुँह से लार गिरना–देख कर या सुन कर किसी चीज के पाने की लालच होना। उ० मुझे मिठाई खाते देख कर उसके मुँह से लार गिरने लगा।

मुँह से लार टपकना–दे० 'मुँह से लार गिरना'।

मुँह से लाल झड़ना–प्रिय और मधुर वाणी निकलना। उ० जब बोलने लगता है तो मुँह से लाल ही झड़ता है, ऐसा आदमी तो मैंने देखा ही नहीं।

मुअम्मा खुलना–दे० 'पोल खुलना'।

मुअम्मा हल होना–भीतरी रहस्य खुल जाना। उ० बड़ा बढ़कर बातें करता था, आज सारा मुअम्मा हल हो गया।

मुकदमा ठोंकना–न्याय के लिए अदालत की शरण जाना। मुक़दमा चलाना या दायर करना।

मुक़दमा लड़ना–बैरी से कचहरी की लड़ाई लड़ना। उ० दोनों भाई परस्पर मुकदमा लड रहे हैं।

मुक़दमेबाजी होना–मुकदमा लड़ा जाना। उ० उन लोगों में खूब मुकदमेबाजी हो रही है। यह मर्ज बड़ा बुरा है।

मुक़दमे में वकील होना–अनिवार्य होना। उ० चावल के साथ दाल जैसे मुकदमे मे वकील है तो बिना उसके चावल का खाना कैसा?

मुक़द्दर आजमाना–भाग्य की परीक्षा करना। उ० एक बार और परीक्षा मे बैठकर मुक़द्दर आजमाओ, शायद सफल ही हो जाओ।

मुक़द्दर चमकना–भाग्य चमकना। अच्छे दिन आना। उ० व्यापार मे उसका मुक़द्दर खूब चमका हुआ है।

मुक़र्रर-सिकर्रर–कई बार। उ० वह मुक़र्रर-सिकर्रर आ चुका, ले-देकर छुट्टी करो।

मुक़ाबिले पर आना या आ जाना–विरोध के लिए सामने आना। उ० मुक़ाबिले पर आओगे तो मूँछ बीन लूँगा।

मुक़ाम करना–ठहरना। उ० हमने पिछली रात वहाँ मुक़ाम किया था।

मुक़ाम देना–किसी के मर जाने पर उसके घर मातमपुरसी करने जाना। उ० वह रात ही का मरा है, मुक़ाम दे आओ।

मुक़ाम बोलना–सरकारी अधिकारी का पड़ाव पड़ना। उ० साधारणतः जिलाधीश यहाँ मुक़ाम बोलते हैं।

मुक़ीम होना या हो जाना–ठहरना। उ० मैं तो सालों से प्रयाग में ही मुक़ीम हूँ।

मुक्का चलाना–मुट्ठी बाँध कर मारना। उ० इतने जोर से मुक्का चलाया कि खुद गिर पड़ा।

मुक्का मारना–दे० 'मुक्का चलाना'।

मुक्का लगना–सहसा हृदय पर चोट लगना। बड़ा भारी आघात पहुँचना। उ० उनकी मृत्यु का समाचार तो मुक्का-सा लगा।

मुक्त-कंठ से–बिना किसी हिचक के, पूरी तरह से।

मुक्ति का द्वार–मुक्ति-प्राप्ति का साधन।

मुख कुम्हलाना–दुःखी, निराश, हताश या मलिन होना।

मुख-भंजन करना–अपमानित करना।

मुख़ातिब होना–रुख फेरना, किसी की ओर मुँह करके बातें करना। उ० वह भी कुछ कहना चाहती है, मुख़ातिब हो जाओ।

मुख़्तार होना–प्रतिनिधि होना। उ० वह कांग्रेस का मुख्तार है।

मुग्ध रहना–१ मोहित रहना। उ० वह तो उस लडकी की बात ही पर मुग्ध रहता है। २ मौन रहना। उ० उनके उपदेश सुनकर सब लोग मुग्ध रह गए। ३. रहस्य छिपाना। उ० सब कुछ जानकर भी मुग्ध रहता है।

मुद्दत काटना–१ सूद लेना। उ० अब तक रुपये तुम्हारे पास थे, उसकी मुद्दत तो काटने दो। २. समय बिताना। उ० किसी तरह मुद्दत काट रहा है। २. बहुत बड़ा समय बिताना। उ० अभी तो मुद्दत काटनी है, आज ही से क्या घबराऊँ?

मुजम्मा लगाना–रुकावट या ओट पैदा करना। उ० हमारे कामों में क्यों मुजम्मा लगाते हो?

मुजम्मा लेना–१. छिपे-छिपे लेना। उ० वह तो मुजम्मा लेना ही पसंद करता है, सामने नहीं आता। २. पता लगाना। उ० कल के झगड़े का मुजम्मा लेने गया था।

मुजरा करना–किसी रक़म को दूसरी रक़म में से काट लेना। उ० १० रु० हमारे निकलते थे, वह हमने उसमे मुजरा कर लिये।

मुजरा लेना–१. कटौती लेना। उ० वह तो मुजरा लेता है, कौन उसके यहाँ खरीदेगा। २. मुलाक़ात करना। ३. देखना।

मुटाई चढ़ना–१. घमंड आना। उ० जिसके बल पर मुटाई चढ़ी है, मैं खूब जानता हूँ। २. मोटा होना। उ० क्या खाते हो भाई, तुम पर तो बडी मुटाई चढी है।

मुटाई झाड़ना या झाड़ देना–१. खूब पीटना। उ० शरारत न करो, नही तो सारी मुटाई झाड़ दूंगा। २. गर्व चूर करना। उ० एक बार मे तो सारी मुटाई झाड दिया, अब क्या खाकर बोलेगे?

मुट्ठी खोलना–उदारतापूर्वक देना।

मुट्ठी गरम करना–१. घूस लेना। उ० बेईमानी से मुट्ठी गरम करना पाप है। २. रुपया पाना। ३. घूस देना। उ० उनकी मुट्ठी गर्म करो तो काम तुरत हो जाय।

मुट्ठी गरम होना–१. रुपया मिलना। उ० आजकल तो उसकी मुट्ठी खूब गरम हो रही है। २ घूस मिलना। ३ पास मे रुपया होना।

मुट्ठी ढीली होना–बहुत खर्च करना।

मुट्ठी बन्द रखना–कम खर्च करना। उ० कमा रहे हो, मुट्ठी बंद रखो नही तो पछताओगे।

मुट्ठी बन्द होना–१. भीतरी भेद छिपा रहना। उ० आपस में सुमति है, इसीसे तो मुट्ठी बद है। २. खर्च कम होना। उ० मुट्ठी बद है, नही तो अब तक बाद का दिया रुपया खतम हो गया होता।

मुट्ठी में रखा होना–अपने पास होना। उ० मेरी मुट्ठी मे रुपया रखा होता तो अवश्य दे देता।

मुट्ठी में होना–१. अधिकार में होना। उ० आजकल इंगलैंड ता अमेरिका की मुट्ठी मे है। २. पास में होना। उ० १००० रु० तो मुट्ठी मे हैं, ५०० रु० कही से और खोज लो तो चला जाय।

मुठभेड़ होना–१ मुक़ाबिला होना। उ० चौसा में शेरशाह तथा हुमायूं में मुठभेड़ हुई। २. भेंट होना। उ० आते हुए रास्ते में उनसे मुठभेड़ हुई थी। ३. लड़ाई होना।

मुड़-मुड़ कर पछाड़ खाना–बहुत विलाप करना, दुःखी होना, गिर-पड़कर रोना, बिलखना।

मुड़ कर न देखना–क़तई ख्याल न करना। उ० मै गया था, पर उसने जाने क्यों मुड़ कर भी न देखा?

मुतास लगना–पेशाब लगना। उ० उसे मुतास लगी है।

मुनादी करना–घोषणा करना।

मुफलिसी में आटा गीला होना–गरीबी या मुसीबत में और भी मुसीबत या गरीबी आना।

मुफ्त की रोटियाँ तोड़ना–बिना काम के दूसरे पर बैठे जीविका चलाना। बिना काम दूसरे का खाना। उ० जवान होकर मुफ्त की रोटियाँ तोड रहे हो, शर्म नही आती?

मुफ्त में–१ बेकार में, बिना किसी लाभ के। उ० उसका प्राण मुफ्त मे गया। २ सेंत मे, बिना मूल्य का। उ० मैने उसे छड़ी मुफ्त में दे दी।

मुबादला करना–१ अदला-बदली करना। २. परिवर्तन करना।

मुबादला होना–परिवर्तन होना।

मुबारकबाद देना–बधाई देना।

मुबारकबादी गाना–खुशी के गीत गाना।

मुबारकबादी देना–बधाई देना। उ० भाई तुम्हारी सफलता पर मुबारकबादी देता हूँ, स्वीकार करो।

मुरंडा करना–सुखाना, अशक्त करना। उ० हफ्तो बिना खिलाये रखकर वैद्य ने मुझे तो मुरंडा कर दिया।

मुरंडा होना–अशक्त होना। सूखना। उ० दो दिन के ज्वर मे मुरंडा हो गए।

मुरचंग झाड़ना–चैन से काटना। उ० एक तुम्ही तो मुरचंग झाड रहे हो।

मुरदा उठना–स्त्रियो का मरने के लिए गाली देना। उ० वह सदा मुरदा उठने को ही कहा करती है। भगवान करें तुम्हारा मुरदा उठे।

मुरदा करना–१ मार कर अशक्त करना। उ० साँप को मार कर सबो ने मुरदा कर दिया। २. मार डालना।

मुरदा होना–१ शक्तिहीन होना। २ ऐसा होना जिसे कभी जोश न आये। उ० तुम तो मुरदे हो, क्या खाकर उनका बदला लोगे ?

मुरदे की हड्डियाँ उखाड़ना–१ बीती हुई बात को कहना। उ० अब मुरदे की हड्डियाँ न उखाड़ो, नहीं तो फिर झगड़ा हो जायगा। २. पूर्वजों की बुराई करना। उ० हमसे निपट लो, मुरदे की हड्डियाँ उखाड़ने से क्या लाभ ?

मुरदे से शर्त बाँध कर सोना–गभीर निद्रा लेना। बहुत सोना। उ० तुम तो मुरदे से शर्त बाँध कर सोते हो, जगाने पर भी नही उठते।

मुरदे से शर्त बद कर सोना–दे० 'मुरदे से शर्त बाँध कर सोना'।

मुरव्वत करना–१ दया करना। रहम करना। उ० बड़े आदमी तो है, पर मुरव्वत करना नही जानते। २ शील करना। ३ बुड्ढे है, मुरव्वत करनी पड़ती है, नही तो दिखा देता।

मुरव्वत का मुँह मलना–अशिष्ट होना।

मुरव्वत तोड़ना–प्रेम का व्यवहार मिटाना। उ० थोड़ी-सी बात पर जिंदगी भर की मुरव्वत तोड दी।

मुराद पाना–कामना पूर्ण होना। उ० भगवान की पूजा करो तो तुम भी अपनी मुराद पाओगे।

मुराद पूरी होना–इच्छा पूर्ण होना। उ० मनुष्य की सारी मुरादे कभी पूरी नही होती।

मुराद माँगना–इच्छा-पूर्ति की प्रार्थना करना। उ० ईश्वर से मुराद माँगो, वह पूरा करेगा।

मुराद मानना–किसी काम के लिए मनौती करना। उ० उसने पास होने पर कथा सुनने की मुराद मानी है।

मुरादों के दिन–जवानी, युवा अवस्था। उ० मुरादो के दिन है, कुछ कर लो नही तो पछताओगे।

मुर्गी के आगे हीरा रखना–दे० 'भैंस के आगे बीन बजाना'।

मुर्दनी छाना–उदासी होना, ग़मगीनी छाना। उ० खुशी के समय तुम्हारे पर क्यो मुर्दनी छाई हुई है ?

मुर्दा करना–दे० 'मुरदा करना'।

मुर्दा-दिल होना–उत्साहहीन होना।

मुर्दे को जिंदा करना–उत्साहीन व्यक्ति में जीवन फूंक देना।

मुलतानी करना–मुलतानी रंग में रँगना। उ० कपड़े को मुलतानी कर दो।

मुलाक़ात कराना–जान-पहचान कराना। उ० मुझे उससे मुलाकात करा दो।

मुलाक़ात पैदा करना–जान-पहचान बढाना। उ० वह तो ऐसा चालू है कि सभी अफ़सरो से मुलाक़ात पैदा कर लेता है।

मुलाजिमत अख्तियार करना–नौकरी करना। उ० व्यापार में लाभ न देख कर उसने मुलाजिमत अख्तियार कर ली।

मुलाहिज़ा करना–१. जाँच करना। उ० मुलाहिज़ा करने पर पता चला कि उसकी बीमारी पुरानी है। २ गौर करना, देखना। उ० हुजूर जरा इधर मुलाहिज़ा करें।

मुल्तवी करना–स्थगित करना। उ० दफ़ा २८० के सारे मुकदमे मुल्तवी कर दिए गये।

मुवाफ़िकत करना–१. पक्ष करना। २. वह तो अपने जाति वालो की मुवाफिकत करता है। २ प्रेम से रहना, प्रेम रखना। उ० आपस मे मुवाफिक़त करो।

मुश्किल आसान होना–मुश्किलाहट दूर होना। उ० तुमको देखकर मुश्किले आसान हो जाती है।

मुश्कें कसना–हाथो को पीठ पर ले जा कर बाँधना। उ० थानेदार ने चोर को मुश्के कस दी।

मुष्ठ मार कर बैठना–कुछ न बोलना। चुप हो जाना। उ० अपना काम बना कर वह मेरी बार मुष्ठ मार कर बैठ गया।

मुसलमान होना–१ क्रूर होना। २. मूर्ति आदि से घृणा करने वाला होना। ३ बेधर्म होना। ४ गोभक्षक होना।

मुसलाधार बरसना–ज़ोरो से वर्षा होना। उ० मुसलाधार बरसेगा तो यह झोपडी एक दिन भी न टिकेगी।

मुसीबत का नगारा बजना–मुसीबत का नजदीक आना। उ० है मुसीबत का नगारा बज रहा, पाँव पर रख पाँव हम है सो रहे।

मुसीबतों का पहाड़–बहुत-सी मुसीबतें।

मुहड़ा लेना–दे० 'मुहरा लेना'।

मुहरा करना–चमकाना, पालिश करना, रगड़ना।

मुहर लगना–१ स्वीकृति मिलना। २. प्रमाणित होना। ३. प्रभाव पड़ना। ४. भली-भाँति बन्द करना।

मुहरा लेना–१. सामना करना। उ० अपने को समझकर तो उसका मुहरा लो। २. लड़ाई लड़ना। उ० उससे मुहरा लेने के लिए बल चाहिए।

मुस्कान दौड़ जाना–चेहरे पर हल्की मुस्कान दौड़ जाना।

मुहरे पर रखना–१. शतरंज में किसी के जोर पर कोई मुहरा रखना। २. सामने या निशाने पर रखना।

मुहर्रम की पैदाइश होना–सर्वदा दुःखी रहना। उ० उसकी तो जैसे पैदाइश ही मुहर्रम की है, सदा रोता ही रहता है।

मुहर्रमी सूरत–अपशकुन चेहरा, रोनी सूरत। उ० शुभ काम मे अपनी मुहर्रमी सूरत क्यों आगे लाते हो ?

मुँहा-मुँही होना–१. परस्पर रुष्ट होकर बोला-चाली होना। कहा-सुनी होना। उ० थोड़ी बात पर दोनो मे मुँहा मुँही हो गई। २. प्यार से परस्पर मुँह चूमना। उ० मिलते ही नोनो में मुँहा-मुँही होने लगती है।

मुहाविरा पड़ना–दे० 'मुहावरा पड़ना'।

मुहिम सर करना–लड़ाई जीतना, मोर्चा जीतना।

मूंग की दाल खाने वाला–१. डरपोक। उ० मूँग की दाल खाने वाले क्या रात को कही जा सकते है! २ बीमार। उ० वह मूँग की दाल खाने वाला है, सभी चीजें नही खा सकता। ३ कमजोर।

मूंग दलना–दे० 'छाती पर मूँग दलना'।

मूंछ उखाड़ना–१. शेखी मिटाना। उ० यदि अब बोले तो मूँछें उखाड़ लूँगा। २. बेइज्जती करना। उ० चोरों ने सेठ की मूँछें उखाड ली।

मूंछ ऐंठना–घमंड में मूँछ के बाल फेरना। उ० इतना होने पर उसका मूँछ ऐंठना न छूटा।

मूंछ के बाल ऊँचे होना–गर्व होना, यश या बड़प्पन मिलना।

मूंछ के बाल बिनना–बहुत दुर्दशा होना या बहुत अपमानित होना। उ० खोलिए पलकें दया कर देखिए। मूँछ के भी बाल अब हैं बिन रहे।

मूंछ नीची होना–१. लज्जित होना। उ० बेचारे की मूँछें आज नीची हो गईं। २. बेइज्जती होना। उ० नालायक़ पुत्र के कारण ही तुम्हरी मूँछ नीची हुई।

मूंछें नोच लेना–दे० 'मूँछ बीन लेना'।

मूंछ पेशाब से मुड़वाना–दे० 'दाढ़ी पेशाब से मुड़वाना'।

मूंछ बीन लेना–१. बेइज्जत कर देना। २. गर्व चकनाचूर कर देना। ३. अच्छी तरह दंडित करना। उ० फिर ऐसा कहा तो मूँछ बीन लूँगा।

मूंछें उखड़ना या उखड़ जाना–१. शेखी मिटना। उ० आज तो उनकी मूँछें उखड गईं। २. बेइज्जती होना। उ० जवान लड़की के ३ दिन तक गायब रहने से उसकी मूँछें उखड़ गईं।

मूंछों की लाज रहना–प्रतिष्ठा रह जाना।

मूंछों पर ताव देना–शूरता का बाना दिखाना। गर्व और वीरता प्रदर्शित करने के लिए मूँछें ऐंठना। उ० मूँछन पर ताव दै दै चढ़त कँगूरन पै।

मूँछों पर हाथ फेरना–दे०'मूँछों पर ताव देना'।

मूँड़ कर खाना–मूर्ख को फँसा कर रुपया या धन लेना। उ० उसके साथियों ने उसे खूब मूँड़ कर खाया।

मूँड़ चढ़ जाना या चढ़ना–बेअदबी करना। मुँह लगना। उ० यह तो लड़का बड़ों के मूँड़ चढ गया है।

मूँड़ चढ़ाना–मुँह लगाना। उ० छोटो को मूँड न चढ़ाओ।

मूड़ मारना–१. बहुत दिमागी मेहनत करना। उ० बहुत मूँड़ मारा, लेकिन वह सवाल समझ में न आ सका। २ परिश्रम करना। उ० मूँड़ मारना व्यर्थ है। कुछ हो नहीं सकता। ३ सर काटना। उ० एक ही हाथ में मूँड़ मार दिया।

मूँड़ मुँड़ाना–साधू हो जाना। सर मुड़ा कर साधू होना। उ० नारि मुई घर संपति नासी। मूँड़ मुड़ाय भए संन्यासी।

मूँड़ी काटना–१ धड़ से सर अलग करना मार डालना। उ० भगवान तुम्हारी मूँड़ी काटें। [इसका प्रयोग स्त्रियों की भाषा में होता है। यह एक गाली है।] २. बहुत बड़ी हानि करना। ३. बहुत बेइज्ज़ती करना।

मूँड़ी मरोड़ना–१. सर ऐंठ कर जान मारना। उ० उसने साँप की मूँड़ी मरोड़ दी। २. चालबाजी से नुक़सान पहुँचाना। उ० उस गरीब की मूँड़ी न मरोड़ो।

मूँड़ी हिलाना–हाँ करना या कर देना।

मूढ़े पर बैठना–रंडी की तरह खिड़की या मुड़ेरी पर बैठना। उ० क्या मूढ़े पर बैठती हो, नीचे आओ।

मूआ-टूटा–१. जिसके पास कोई पूँजी न हो। उ० उस मूए-टूटे से कौन शादी करेगा? २ कमजोर। उ० उस मूए-टूटे बैल से खेती नहीं हो सकती।

मूर्च्छा जागना–मूर्च्छा के बाद होश आना।

मूठ करना–तीतर या बटेर पक्षी को हाथ में लेना।

मूठ चलाना–जादू-टोना करना। उ० वह मूठ चलाने मे बड़ा तेज है।

मूठ मारना–१. कबूतर को मुट्ठी मे पकड़ना। २ हस्तक्रिया या हस्तमैथुन करना। उ० उसे मूठ मारने की आदत है। ३. दे० 'मूठ चलाना'।

मूठ लगना–जादू का असर होना। उ० डीठि-सी डीठि लगी उनको, इनको लगी मूँठि-सी मूठि गुलाल की।

मूठी में रहना–अधिकार या वश मे रहना। उ० दिन बिताएँ चाब मूठी भर चना, पर किसी की भी न मूठी मे रहे।

मूत की धार न सूझना–बिल्कुल न दिखाई देना। उ० अब तो उसे मूत की धार भी नही सूझती।

मूत की धार पर मारना–दे० 'पेशाब की धार पर मारना'।

मूत देना–बहुत भयभीत हो जाना। उ० उसके डाँटते ही उसने मूत दिया।

मूत निकल पड़ना–दे० 'मूत देना'।

मूर्ख चपाट होना–बहुत बड़ा बेवकूफ़ होना। उ० वह तो मूर्ख चपाट है, उसकी समझ में यह बात नही आ सकती।

मूर्ति बन जाना–निश्चल बैठा रहना।

मूल गँवाना–अपने पास की वस्तु या पूँजी को भी खो देना।

मूली-गाजर समझना–दे० 'गाजर-मूली समझना'।

मूल्य होना–मान होना, महत्त्व होना।

मूसलाधार वृष्टि होना–देर तक जोरों से वर्षा होना।

मूसलों ढोल बजाना–१ बहुत प्रसन्न होना। उ० यदि मैं पास हो जाऊँ तो मूसलों ढोल बजाऊँ। २ ढोल बजा कर कहना। उ० तुम तो दूसरे की बेइज्जती करने के लिए मूसलों ढोल बजाते हो।

मूसलों से ढोल बजाना–दे० 'मूसलों ढोल बजाना'।

मृगजल होना–अयथार्थ चीज़ होना। कुछ न होना। उ० उस पर तुम व्यर्थ आशा कर रहे हो, वह मृगजल है।

मृत्यु की छाया सिर पर मंडराना–मृत्यु निकट जान पड़ना।

मृत्यु के मुख में पड़ना–मृत्यु होना; नष्ट होना।

मृत्यु बुलाना–जान-बूझ कर ऐसा काम करना, जिसमे मृत्यु का भय हो।

मेढ़ लड़वाना–दो आदमियो मे लड़ाई करवाना। वमचख करवाना। उ० शैर को आबे दमे तेग पिलाओ कि मुझे, मेढ़े लड़वाने से क्या फ़ायदा है पानी पर?

मेंहदी बाँधना–मेहदी का पत्ता पीस कर लगाना। उ० उसने तो मेहदी बाँधी है, आज कुछ कर नही सकती। मेहदी बाँधने से हाथ लाल हो जाता है।

मेंहदी रचना–१. मेंहदी का रग आना २ मेहदी से शरीर पर चित्र या डिज़ाइन बनाना।

मेंहदी रचाना–दे० 'मेंहदी लगाना'।

मेंहदी लगना–हाथ बिल्कुल बझा होना, काम न कर सकना। उ० हाथों मे मेंहदी लगी है क्या, कुछ कर नही सकते?

मेंहदी लगाना–दे० 'मेंहदी बाँधना'।

मेख करना–दे० 'मेष करना'।

मेख ठोंकना–१. हाथ-पैर मे काँटिया ठोंकना। उ० प्राचीन काल मे मेख ठोकने की एक सजा थी। २. हराना, जोर करना। उ० तुम तो खूब मेख ठोंकना जानते हो।

मेख मारना–१. कँटिया ठीक कर हिलना-डुलना बंद कर देना । उ० पहले मेख मारना भी एक दंड था । २. कोई ऐसी बात कह देना जिससे होता हुआ काम न हो । उ० तुमने तो उसके काम में मेख मार दी । ३. काम में बाधा डालना । उ० मेख मारने की बड़ी बुरी आदत तुममे है ।

मेढक या मेढकी का घोड़े के संग नाल ठोंकना–दे० 'हाथी के संग गाँड़े खाना' ।

मेढक या मेढकी को ज़ुकाम होना–१. अनहोनी होना । उ० कलियुग मे तो मेढक को भी ज़ुकाम होने लगा है । २. किसी चीज़ के योग्य न होने पर भी उसे चाहना । उ० अच्छा, मेढक को भी ज़ुकाम होने लगा !

मेदा कड़ा होना–१. कोष्ठबद्धता होना । उ० हमेशा गडबड़ खाते रहने से मेदा कड़ा हो गया है । २. मेदा ऐसा होना कि जल्दी दस्तावर चीज़ या दवा का असर न हो । उ० उनका मेदा कड़ा है, जुलाब की मात्रा जरा बढा देना ।

मेदा साफ़ होना–कब्ज़ियत दूर होना । उ० एक पुड़िया जुलाब में मेदा साफ़ हो गया ।

मेरे मुँह से होना–मेरी वजह से होना । उ० मेरे मुँह से वह काम हो गया, नही तो कोई भी नही कर पाता ।

मेल करना–शत्रुता मिटाना । सधि करना । उ० अब तुम लोग मेल कर लो ।

मेल खाना–१. दो चीज़ों का आपस मे अच्छा लगना । उ० इस कोट और पैंट का मेल नही खाता । २. पटना, पटरी बैठना । उ० उन लोगों मे मेल नही खाता ।

मेल बैठना–दे० 'मेल खाना' ।

मेल मिलना–दे० 'मेल खाना' ।

मेला-सा लगना–बड़ी भीड़ होना । उ० तमाशा देखने के लिए मेला-सा लगा था ।

मेला होना–सधि होना । उ० दोनों दलो में मेल हो गया है ।

मेष करना–हिचकना । उ० क्या मेष करते हो, चलना हो तो चलो, नहीं तो साफ़ जवाब दो ।

मेहनत उठाना–कष्ट सहना । उ० मेहनत उठा कर पढ लो, नही तो ज़िदगी भर रोओगे ।

मेहनत की रोटी खाना–मेहनत करके जीविका चलाना ।

मेहमानी करना–१. आवभगत करना । उ० वह मेहमानी करना ख़ूब जानता है । २. बडी मार मारना । उ० पुलिस ने चोर की अच्छी मेहमानी की ।

मैं खोना, मैं मेरी खोना–अहंभाव दूर करना ।

मैं-मेरा करना–अज्ञानवश अपने अस्तित्व को पृथक् मानना ।

मैं-मैं करना–खुद अपनी तारीफ़ करना । उ० हर वक़्त मै-मै करते तुम्हे शर्म नहीं आती ।

मैदान करना–१. खुला स्थान छोड़ना । उ० घर के सामने थोड़ा-सा मैदान कर लो । २. ढेर लगा देना । उ० व्यापार में तो उसने रुपये का मैदान कर दिया । ३. संग्राम करना । उ० कौरव-पांडव १८ दिन तक मैदान करते रहे ।

मैदान छोड़ कर भागना–युद्ध-स्थल से भागना । भिड़ंत से पीठ दिखाना । उ० राजपूत मैदान छोड़ कर भागना अपनी शान के खिलाफ़ समझते थे ।

मैदान छोड़ना–दे० 'मैदान छोड़ कर भागना' ।

मैदान जाना–पाख़ाना होने जाना । उ० मैं मैदान जा रहा हूँ ।

मैदान पाना–दे० 'मैदान हाथ आना' ।

मैदान मारना–जीत जाना । विजयी होना । उ० महाभारत मे पांडवों ने मैदान मार लिया ।

मैदान में आना–रंगभूमि मे उतरना या आना । लड़ने के लिए मैदान में आना । उ० अर्जुन के मैदान में आते ही कौरव-दल मे भगदड़ मच जाती थी ।

मैदान में उतरना–दे० 'मैदान मे आना' ।

मैदान में क़दम रखना–कोई काम शुरू करना ।

मैदान साफ़ होना–रास्ता कंटकहीन होना । उ० पृथ्वीराज के हारते ही गोरी का मैदान साफ़ हो गया ।

मैदान हाथ आना–विजयी होना । उ० अंत मे मैदान मुसलमानो के हाथ आया ।

मैदान हाथ से निकल जाना–मौक़ा निकल जाना ।

मैदान होना–१. लड़ाई होना । उ० पानीपत में कुल तीन मैदान हुए । २. ढेर होना । उ० यहाँ तो लाशों का मैदान हो गया है । ३. पाख़ाना होना, टट्टी होना । उ० मैदान होने जा रहा हूँ ।

मैल का बैल बनाना–छोटी बात का बतंगड़ करना। उ० उसका क्या विश्वास, वह मैल का बैल बनाने मे बड़ा तेज़ है।

मैल न आना–बुरा न मालूम देना, नागवार न गुज़रना। उ० बनी या ग़म मे कि आया दम अपनी आँखों में, और उस पै मैल हमारी न आँख पर आया।

मैल रखना–वैमनस्य या द्वेष रखना। उ० अब मैल न रखो, प्रेम से रहो।

मैल लाना–रंज लाना, गमगीन और उदास होना। उ० तबीयत पर मैल न लाओ।

मैल हाथ की होना–दे० 'हाथ की मैल होना'।

मैला करना–१. दूषित करना, बदनाम करना। उ० एक मछली सारे तालाब को गदा कर देती है। २. गदा कर देना। उ० पानी मैला न करो।

मैले सिर से होना–ऋतुवती होना। उ० वह तो मैले सिर से है, आखिर कैसे छुए ?

मोची के मोची रह जाना–पहले की-सी बुरी स्थिति मे रह जाना।

मोजरा करना–१. रंडी का गाना सुनना। उ० मोजरा करने के लिए आपको १० रु० देने होंगे। २ मुलाक़ात करना।

मोजरा होना–रंडी का गाना होना तथा लोगो का चारों ओर बैठकर उसका आनद लेना। उ० उसके यहाँ तो रोज मोजरा होता है।

मोटा असामी–रुपये वाला आदमी, ऐसा आदमी जिससे अधिक रुपये मिलने की आशा हो। उ० वेश्याएँ मोटे असामी को चाहती है।

मोटाई उतरना–१. दुबला होना। उ० बेचारे की मोटाई एक ही दिन की बीमारी मे उतर गई। २. घमंड चूर होना। उ० सामना होते ही सारी मोटाई उतर जायगी।

मोटाई चढ़ना या चढ़ जाना–१ शेखी, गर्व बढ़ना। उ० चार पैसे हो गए, अब मोटाई चढ़ गई है। २. कुदर्ज़ेहन होना। उ० तुम्हारी बुद्धि पर मोटाई चढ़ गई है।

मोटाई झड़ना–दे० 'मोटाई उतरना'।

मोटा खाना मोटा पहनना–साधारण स्थिति में गुज़र करना।

मोटा-झोटा–१. साधारण दर्जे का। उ० ये मजदूर मोटा-झोटा खा कर निर्वाह करते है। २. हृष्ट-पुष्ट। उ० मोटा-झोटा आदमी है, कोई बहुत कमजोर नही है। ३. उजड्ड।

मोटा दिखाई देना–धुंधला दीखना। केवल मोटी या बड़ी चीज़ों का ही दिखाई देना। उ० अवस्था गिरी, अब तो मोटा दिखाई देता होगा।

मोटा पेट–पूँजीपति, अधिक पैसे वाला। उ० मोटे पेट वालों को ग़रीबों के दुःख से क्या हमदर्दी हो सकती है ?

मोटा बोल मारना–कटु वचन बोलना।

मोटा भाग–बड़ा हिस्सा।

मोटा भाग्य–भाग्यहीन। बुरा भाग्य। उ० क्या करें, मोटा भाग्य है।

मोटा-महीन–अच्छा-बुरा।

मोटा शिकार–पूंजी वाला आदमी। ऐसा आदमी जिसे फाँसने पर अच्छी आमदनी हो। उ० मोटा शिकार मिल जाय तो काम बन जाय।

मोटी अक़ल–ऐसी अक़ल या बुद्धि, जो अच्छी न हो।

मोटी चिड़िया–दे० 'मोटा शिकार'।

मोटी चुनाई–साधारण भद्दे ईटो की जोड़ाई। उ० मोटी चुनाई है, इसे कोई भी कर सकता है।

मोटी तह जमी होना–किसी प्रभाव का इतना गहरा होना कि और कोई असर न पड़े।

मोटी बात–साधारण बात। सबके जानने की बात। उ० मोटी बात भी नहीं समझते हो तो मैं क्या करूँ ?

मोटी भूल–अक्षम्य भूल। बहुत बड़ी भूल। उ० कोई लड़के तो हो नहीं, इतनी मोटी भूल तुमसे नहीं होनी चाहिए।

मोटी डाल पकड़ना–सबल का पक्ष लेना।

मोटी आमदनी–बहुत आमदनी।

मोटे तौर पर–१. मोटे हिसाब से। उ० मोटे तौर पर पाँच आदमी आएँगे। २. साधारणतया।

मोटे हिसाब से–मोटे तौर से, मोटे रूप से, मोटा-मोटी। उ० मोटे हिसाब से तुम्हारे यहाँ १०० रुपये निकलते हैं।

मोतियों से मुंह भरना–खूब दान करना, काफ़ी धन दे डालना। उ० यदि उन्हें एक पुत्र हो जाय तो ब्राह्णों का मुँह मोतियों से भर देंगे।

मोती की-सी आब उतरना–बड़ी इज्ज़त का खराब हो जाना। उ० इस नीच काम के करने से तुम्हारी मोती की-सी आब उतर जाएगी।

मोती गरजना–मोती में बाल पड़ना। मोती का कड़कना या चटकना।

मोती ढलकना–बहुत रोना। उ० यह खबर सुनते ही उसकी आँखों से मोती ढलकने लगा।

मोती पिरोना–१. बहुत सुन्दर अक्षर लिखना। उ० वह तो कापियों मे मोती पिरोता है। २. महीन काम करना। उ० मोती नहीं पिरोते हो कि इतनी रोशनी पर्याप्त नही है।

मोती बींधना–१. मोती छेदना। उ० मोती बींध कर हार बनाओ। २. नाता होना। उ० इन दोनो की मोती बिंध जाय तो अच्छा हो।

मोती में बाल पड़ना या पड़ जाना–मोती का चिहर जाना, फूटने के कारण मोती में बाल-जैसा निशान पड़ जाना। उ० इस मोती मे तो बाल पड़ गए हैं, किसी चीज़ से धक्का लगा दिया क्या ?

मोती रोलना–कम मेहनत से अधिक कमाना। उ० उसका क्या है ? वह तो मोती रोलता है।

मोम करना–दया या रहम से मुलायम करना, नरम करना। उ० उसके कष्ट ने मेरे कलेजे को मोम कर दिया।

मोम का पुतला–१. बनावटी, कृत्रिम। २. क्षण-भंगुर।

मोम का हो जाना–१. अति दयावान् हो जाना। उ० वह दूसरे के कष्टो को देख कर मोम का हो जाता है। २. बिना दृढ़ता या सिद्धान्त का हो जाना। उ० मोम का न होओ, नहीं तो कोई पूछेगा नही।

मोम की गुड़िया–अत्यन्त कोमल (लड़की)।

मोम की नाक होना–१. तुरत विचार बदलने वाला होना। उ० वह तो मोम की नाक है, जिधर चाहो घुमा लो। २. शर्मदार होना। उ० हमारी कोई मोम की नाक है, जो कोई काट लेगा।

मोम की मरियम–कोमल औरत। उ० वह मोम की मरियम है, ज्यादा न चलाओ।

मोम दिल होना–कोमल हृदय होना।

मोम होना–दे० 'मोम का हो जाना'।

मोमियाई निकालना–१. कठिन परिश्रम करवाना। उ० वह तो धूप मे मोमियाई निकाल लेता है। २. खूब मारना। उ० ज़रा-सी बात पर मोमियाई निकाल ली।

मोरचा खाना–मोरचा खाने से खराब हो जाना। उ० कड़ाही मोरचा खा गई है।

मोरचा जीतना–शत्रु की सेना पर विजय करना। उ० सिकंदर ने पोरस का मोरचा धोखे से जीत लिया।

मोरचाबन्दी करना–रक्षार्थ सेना को सजा कर स्थान-स्थान पर रखना। उ० पिछले युद्ध में अंग्रेज़ो ने अच्छी मोरचाबन्दी की थी।

मोरचा बाँधना–दे० 'मोरचाबन्दी करना'।

मोरचा लेना–लड़ाई करना। उ० मोरचा लेना तो मेरे बल का पता चलेगा, ऐसे क्या दिखाऊँ ?

मोरी छूटना–पतली दस्त बहुत अधिक मात्रा मे होना। उ० उसकी तो मोरी छूट रही है, डाक्टर बुलाओ।

मोरी पर जाना–पेशाब करने जाना।

मोरी में बहाना–बुरे कामों में धन व्यय करना। उ० इस कपूत ने बाप की दौलत मोरी मे बहा दी और अब पैसे-पैसे को मोहताज है।

मोल करना–१. दाम की कमी-वेशी के बारे में झक-झक या मोल-तोल करना। उ० क्या मोल करते हो, लेना हो तो ले लो, नही तो अपना रास्ता नापो। २. दाम के विषय में अच्छी तरह जाँच-पड़ताल, या पूछ-ताछ करना। ३ बिना मोल किए न लेना।

मोल-तोल करना–दे० 'मोल करना'।

मोल-तोल चुकाना–दे० 'मोल करना'।

मोल-तोल होना–१. दाम तय होना। उ० मोल-तोल हो गया है, दाम देकर चले जाओ। २. क़ीमत के संबंध मे झकझक होना।

मोल देना—बेचना। उ० मुझे यह मोल दे दीजिए।

मोल न होना—बेशकीमत होना।

मोल लेना—खरीदना। उ० मुझे एक पुस्तक मोल लेनी है।

मोह की धार में बहना—मोह में डूबा रहना।

मोहड़ा मारना—सर्वप्रथम काम कर डालना। उ० उसने तो मोहड़ा मार कर इनाम ले लिया।

मोहड़ा लगाना—१. पछाड़ना। उ० देखते-देखते उसने मोहड़ा लगा दिया। २. अनाज का बोरा खोल कर रखना या खुला रखना। उ० दूकान में मोहड़ा लगा दो।

मोहनी डालना—मुग्ध करना। उ० उसके स्वरूप ने तो तुम पर मोहनी डाल दी, जब देखो उसी के यहाँ रहते हो।

मोहनी लगना—मोहित होना। उ० देखते ही देखते मोहनी लग गई।

मोहरा लेना—१. भिड़ जाना। उ० तुम तो मोहरा लेने से डरते ही नहीं हो। २. फ़ौज का मुक़ाबिला करना। उ० रसियन फौजों ने अमेरिकनों से खूब मोहरा लिया है।

मोह लेना- मोहित कर लेना। उ० उसकी चितवन ने तो सैकड़ों को मोह लिया।

मौक़ा चूकना या चूक जाना—उचित समय का उपयोग न करना। उ० अब आप तो मौक़ा चूक गए, नहीं तो काम में आसानी हो जाती।

मौक़ा ताकना—दे० 'मौका देखना'।

मौक़ा देखना—१. अवसर या उचित समय खोजना। उ० समाजवादी राज्यारूढ़ होने का मौक़ा देख रहे हैं। २ घात देखना, घात या दाँव की प्रतीक्षा करना। उ० घात देख रहा है, उससे होशियार रहना।

मौक़ा देना—१. अवसर देना। उ० हमें भी मौक़ा दे दो तो हम दिखाएँ। २. कुछ वक्त या समय देना। उ० मौक़ा दो, इतनी जल्दी में उस तसवीर को रँगना संभव नहीं।

मौक़ा पड़ना—१. समय आना। उ० मौका पड़ने पर सब लोग पहचाने जाते हैं। २. ज़रूरत होना। उ० कोई मौका पड़े तो मुझ-से रुपया ले लेना। ३. विवाह-शादी आदि सुअवसर आना। उ० मौक़ा पड़ने पर निमंत्रित करूँगा।

मौक़ा पाना—१. समय पाना। उ० यदि मौक़ा पा गया तो आ जाऊँगा। २. उचित अवसर पाना। उ० घबड़ाओ न, मौक़ा पाकर सब हो जायगा। ३. दाँव या घात पाना। उ० मौक़ा पाया कि उनकी मट्टी पलीत की।

मौक़ा महल—उचित अवसर, मौक़ा। उ० मौक़ा महल आने दो तो दावत करूँगा, यों किस बात पर खिलाऊँ?

मौक़ा मिलना—१. दाँव पाना। उ० कोई मौका ही नहीं मिलता है कि उसे छकाऊँ। २ समय मिलना। उ० मौक़ा मिलना कठिन है, कैसे जाऊँ? ३ किसी काम के करने के लिए सुअवसर मिलना।

मौक़ा हाथ लगना—दे० 'मौक़ा मिलना'।

मौक़े का—१. उचित समय या अवसर का। उ० उसने ऐसे मौके की बात कही कि मेरी ज़बान बंद हो गई। २. अच्छे स्थान पर। उ० यह मौके का मकान है।

मौक़े को हाथ से जाने देना—स्वर्णावसर का उपयोग न करना। अवसर चूकना। उ० यदि मौके को हाथ से जाने दोगे तो पछताओगे।

मौज आना—१ इच्छा में आना। उ० मौज आ गई तो सब कर डालेगा। २. मस्ती में आना। उ० इस वक्त मौज आई है, कुछ न बोलो।

मौज उठना—मन में उमंग उठना। उ० आज मौज उठ रही है, चलो पार्क घूम आयें।

मौज उड़ाना—मजा मारना। उ० आजकल खूब मौज उडा रहे हो।

मौज करना—दे० 'मौज उड़ाना', 'मौज मारना'।

मौज खाना—लहर मारना, हिलोरें लेना। उ० नहीं मौज खा रही है।

मौज पाना—राय या अनुमति का पता पाना। मर्ज़ी जानना। उ० बिना तुम्हारी मौज पाए वह कैसे कर सकता है?

मौज मारना—१. चैन से दिन बिताना। उ० महँगी में कोई भी नहीं मौज मार रहा है। २. लहराना। उ० नदी का पानी मौज मार रहा है। ३. मस्ती लेना, नशे में मस्त रहना। उ० भंग पीकर मौज मारना ही उसका काम है।

मौज में आना—१ मन मे आना। उ० मौज में आया तो कर ही डालूँगा। २. मस्ती मे आना। उ० मौज में आता है तो नाचने लगता है।

मौजूद रहना—१. उपस्थित रहना। उ० आप मौजूद रहेंगे तो काम जल्दी हो जाएगा। २. तत्पर रहना। उ० वह सदा काम पर मौजूद रहता है। ३. निकट रहना।

मौत आना—१. मरने का दिन आना, मृत्यु आना। उ० उसकी मौत आ गई है। २. बहुत बड़ी आफ़त आना। झंझट आना। उ० किताबों की बिक्री का सीजन नही आया, यह मेरी मौत आई है।

मौत का तमाचा—१ मृत्यु का स्मरण कराने वाला काम। उ० इस घटना ने तो उसे मौत का तमाचा लगाया है, अब वह पाप का काम नही कर सकता। २. बहुत तेज़ तमाचा। उ० ऐसा मौत का तमाचा मारा कि उसे भी होश हो गया।

मौत का शिकार होना—मृत्यु को प्राप्त होना।

मौत का सिर पर खेलना—मृत्यु समीप होना।

मौत का पसीना—मृत्यु के चिह्न। उ० कल ही से उसके शरीर पर मौत का पसीना दिखाई दे रहा है।

मौत के घाट उतारना—मार डालना।

मौत के दिन पूरे करना—ऐसे दुःखदायी दिन बिताना, जिनमें मौत ही सभव हो। उ० वह तो मौत के दिन पूरे कर रहा है।

मौत के मुँह में झोंकना—जान-बूझ कर किसी से खतरनाक काम करवाना।

मौत के हाथ होना—मौत के मुँह मे होना।

मौत को गले लगाना—किसी अच्छे कार्य के लिए मर मिटना। उ० स्वतंत्रता-संग्राम में हजारो ने हँसते हुए मौत को गले लगाया था।

मौत को दुलत्ती मारना—मुसीबत मोल लेना। उ० तुम क्यो खाते-पीते हुए मौत को दुलत्ती मारते हो।

मौत सिर पर आना—१. मृत्यु निकट होना। उ० तुम्हारे सिर पर मौत आ गई है, तभी तुम उसे मारने जा रहे हो। २ बुरे दिन आना। उ० ससार के सर पर मौत आ गई है।

मौत से लड़ कर आना—बड़े खतरनाक काम से बचना। बहुत बड़े खतरे से त्राण पाना। उ० वह तो मौत से लड़कर आया है, नहीं तो मर ही गया होता।

मौत बुलाना—ऐसा काम करना, जिससे मौत हो जाय। उ० कूद कर क्यों मौत बुला रहे हो?

मौन खोलना—मौन तोडना। बोलना। उ० अभी तो साधू ने मौन नही खोला है।

मौन गहना—१. चुपचाप रहना। उ० ज्यादा बोलने से मौन गहना अच्छा है। २ जवाब न देना। उ० मौन गहने से काम न चलेगा, उत्तर तो देना ही होगा। ३. स्वीकार करना, अर्द्धस्वीकार करना।

मौन तजना—दे० 'मौन खोलना'।

मौन धारण करना—दे० 'मौन गहना'।

मौन बाँधना—दे० 'मौन रहना'।

मौन रहना—चुप रहना। उ० हमहुँ कहब अब ठकुर सुहाती। नाही त मौन रहब दिन राती।

मौन लेना—दे० 'मौन गहना'।

मौन सम्हारना—दे० 'मौन धारण करना'।

मौर बँधना—विवाह होना। उ० ईश्वर करे, तुम्हे मौर बँधे।

मौर बाँधना—१. विवाह के समय सिर पर सेहरा पहनना। उ० बाँध मौर अरु छत्र सिर बेगि होहु असवार। २. राजा बनाना।

मौरी बँधना—लड़की का विवाह होना। उ० भला राधा के सर मौरी तो बँधी। बेचारी को लँगड़ी होने के करण कोई पूछता ही नहीं था।

मौरूसी होना—१. खानदानी होना। उ० टी० बी० की बीमारी तो उसकी मौरूसी है। २ स्थायी रूप से अपने कब्ज़े मे होना। उ० यह ज़मीन तुम्हारे बाप की मौरूसी नही है।

मौसर आना—प्राप्त होना, मिलना। उ० तुम्हे यह चीज कभी मौसर नही आ सकती।

म्याँऊँ का ठौर—खौफनाक स्थिति, जिसको सहज ही पकडना या सँभालना संभव न हो।

म्याँऊँ का मुँह—खतरनाक या भयावह चीज, सबसे कठिन समस्या। उ० म्याँऊँ का मुँह तो यही है।

म्याँऊँ का मुँह पकड़ना—मुश्किल काम करना। उ० म्याँऊँ का मुँह कौन पकडेगा; सब तो छोटे ही कामों पर तैयार है?

म्याँऊँ-म्याँऊँ करना–१. भय से धीरे-धीरे बोलना। उ० क्या म्याँऊँ-म्याऊँ करते हो, साफ़ कहो। २. नाक से बोलना।

म्यांव-म्यांव करना–दे० 'म्याँऊँ-म्याँऊँ करना'।

म्यान से निकलना–१. तलवार का बाहर आना। २. दे० 'म्यान से बाहर होना'।

म्यान से बाहर होना–बहुत क्रोधित होना। उ० पहले बात सुन लो, तब म्यान से बाहर होना।

म्लेच्छ होना–१. बहुत गंदा होना। २. बहुत कृपण होना। उ० तुम तो बड़े मलेच्छ हो, एक पैसा भिखारी को कभी भी नहीं देते।

य

यंत्र-मन्त्र–दे० 'मंत्र-यंत्र'। उ० डाकिनी साकिनी खचर भूचर यंत्र-मंत्र भजन कलमषारी।

यक़ीन करना–विश्वास या एतबार करना। उ० मेरे पर भी कुछ यक़ीन कीजिए।

यक़ीन लाना–विश्वास करना उ० आप यक़ीन लायें या न लायें, मैं तो सही-सही कह ही रहा हूँ।

यक़ीन होना–विश्वास होना। उ० इस बात पर यक़ीन ही नहीं होता है।

यदा-कदा–जब-तब, कभी-कभी। उ० यदा-कदा आप यहाँ भी आ जाया करें।

यम का केश पकड़ना–मृत्यु का आना।

यम का डंडा लगना–मृत्यु का निकट आना।

यम का पाश–मृत्यु का फंदा।

यम की यातना देना–बहुत कष्ट देना। उ० इस रोग ने तो मुझे यम की यातना दी।

मुम के मुँह से छुड़ाना–मरते हुए की रक्षा करना।

यमपुर को घर बनाना–मृत्यु को प्राप्त होना।

यमपुर पहुँचना–मर जाना।

यमपुर पहुँचाना–१. मार डालना। उ० अगर ज्याद बढ़-बढ़ कर बोलोगे तो अभी यमपुर पहुंचा दूंगा। २. दुर्दशा करना।

यमपुर भेजना–दे० यमपुर पहुँचाना'।

यमपुरी–[यमपुरी के मुहावरों के लिए यमपुर देखिये।]

यमलोक पहुंचाना–दे० 'यमपुर पहुँचाना'।

यमलोक भेजना–दे० 'यमपुर पहुँचाना'।

यश कमाना–नाम हासिल करना। उ० यश कमाना आसान है, पर उसकी रक्षा करना कठिन है।

यश गाना–प्रशंसा करना, बड़ाई करना। उ० झूठे यश गाना खुशामद करना है।

यश मानना–एहसान मानना। उ० मैं आपका बहुत यश मानता हूँ।

यश मिलना–नेकनामी मिलना। उ० कुछ ऐसा संयोग है कि बात-बात में उसे यश मिल जाता है।

यश में धब्बा लगना–(पहले से प्रतिष्ठित) सम्मान मे अंतर पड़ना (यश-विरोधी बात या काम आदि से)।

यश लूटना–१. दे० 'यश कमाना'। २. आसानी से यश कमाना।

यह बात ही क्या है–यह कोई कठिन काम नहीं है। उ० यह बात ही क्या है, जो मैं आपसे सहायता लूं।

यहाँ का यहीं–दुनियाँ का दुनियाँ में ही। उ० यहाँ की सब चीज़े यहीं रह जाती हैं।

याद करना–१. पछताना। उ० इस वक़्त तो आप मुझे मार कर घर से निकाल रहे हैं, पर बाद मे याद करेगे।

याद में–होश में। उ० वे अब याद में नही हैं।

यारमारी करना–मित्र बन कर धोखा देना। उ० यारमारी करने वालों का कभी कल्याण नहीं होता।

यारी कुट करना–दोस्ती छोड़ना। उ० उससे यारी कुट कर दो।

यारी-कुट्टी करना–दे० 'यारी कुट करना'।

यारी गाँठना–१. दोस्त बनाना। २. दोस्ती निभाना। उ० उनसे यारी न गाँठो, अपने मतलब पर वे छोड़ नहीं सकते।

यारी जोड़ना–मित्रता स्थापित करना। उ० इतनी जल्दी तुमने किस-किस से यारी जोड़ ली?

युगधर्म–परिस्थिति या समय के अनुसार व्यवहार। उ० युगधर्म आज नही कहता है कि अछूतो को अछूत समझो।

युग फोड़ना—दोस्तों में फूट पैदा करना। उ० तुमने वह युग फोड़ कर क्या पाया?

युग बीतना—बहुत दिन बीतना। उ० तब से युग बीत गया, पर वे नही आए।

युग-युग—बहुत दिनों तक। उ० भगवान करे आप युग-युग जीएं।

युग-युगान्तर से—बहुत दिनों से। उ० युग-युगान्तर से इनके यहाँ यह प्रथा चली आ रही है।

युग लगना—समय का बहुत बड़ा ज्ञात होना। उ० वियोग में एक रात भी युग लगती है।

युगांतर उपस्थित करना या कर देना—समय पलट देना। क्रांति ला देना। उ० गाधी ने तो अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में युगांतर उपस्थित कर दिया।

युगांतर लाना—दे० 'युगांतर उपस्थित करना'।

युद्ध मॉड़ना—लड़ाई ठानना। उ० निरखि यदुवंश को रहस मन मे भयो, देखि अनिरुद्ध युद्ध मॉड़्यो।

युधिष्ठिर होना—बहुत बड़ा सत्यवादी होना। उ० आप युधिष्ठिर नही हैं कि आपकी बात सही मान लें।

यों ही—१. बिना किसी विशेष ध्येय के। उ० मैं तो उनके यहाँ यों ही गया था। २. मुफ्त में। उ० यह चीज़ आपको यों ही नहीं दे सकता। ३. बिना कारण के।

यों ही सही—इस तरह भी स्वीकार है। उ० खैर, यों ही सही, तुम काम तो करो।

योग-क्षेम पूछना—कुशल-मंगल पूछना। उ० वे मिलें तो बिटिया के यहाँ का भी योग-क्षेम पूछना।

यौवन उभरना—१. जवानी आना। उ० उसका यौवन उभर रहा है, अब उसकी शादी कर दो। २. रौनक़ पकड़ना। ३ सुन्दर होना, सुन्दरता स्पष्ट होना।

यौवन ढलना—१ जवानी बीतना। बुढ़ापा आना। उ० जब इस समय कुछ न कर सके तो यौवन ढलने पर क्या करोगे। २. रौनक़ समाप्त होना।

यौवन पर आना—दे० 'यौवन उभरना'।

र

रंक का राय और राय का रंक होना—समय में बहुत बड़ा परिवर्तन होना। उ० भाई यह दुनिया है, रंक का राय और राय का रंक होते देर नही लगती।

रंग आना—१. रंग अच्छी तरह चढ़ना। उ० एक बार और रँग दो तो साड़ी का रंग आ जायगा। २. मज़ा मिलना। उ० जाफरान छोड़ने के बाद भंग का रंग आता है। ३. रौनक़ आना। उ० बिजली लग जाने के बाद मकान का रंग आयेगा।

रंग उखड़ना या उखड़ जाना—१. धाक न रहना, स्थिति प्रतिकूल होना। उ० पहले यहाँ उसे बहुत आमदनी थी, पर अब तो रंग उखड़ गया। २. मज़ा बिगड़ जाना। उ० तुम्हारे जाते ही यहाँ सारा रंग उखड़ गया।

रंग उड़ना या उड़ जाना—१. रंग का फीका पड़ जाना। उ० अगर साड़ी को धूप मे पसारोगे तो उसका रंग उड़ जायगा। २. धाक खतम होना। उ० अब तो उनका रंग उड़ गया। ३. नशा खतम हो जाना। ४. शर्म या डर से चेहरे की रौनक़ समाप्त हो जाना। उ० मेरे सामने तो उसका रंग ही उड़ जाता है।

रंग उतरना—दे० 'रंग उड़ना'।

रंग कटना—आनंद होना, खुशी मनाया जाना। उ० तुम्हारे यहाँ तो आजकल खूब रंग कट रहा है।

रंग खुलना—१. शरीर का रंग साफ़ होना। २. प्रभाव और तीव्र तथा स्पष्ट होना। ३. रंग का खिल उठना।

रंग खेलना—१. होली के दिन एक दूसरे पर रंग डालना। उ० कम से कम होली के दिन तो रंग खेल लिया करो। २ मज़ा उड़ाना। उ० खूब रंग खेलो। इम्तहान नज़दीक आयेगा तो पता चलेगा।

रंग चढ़ना—१. रग खिलना, रंग का ठीक होना। उ० इस साड़ी पर खूब रंग चढ़ा है। २. असर होना। उ० उस पर भंग का रग खूब चढ़ता है। ३. स्वस्थ और लाल होना। ४ रसिक होना। उ० आजकल तुम पर भी रंग चढ़ रहा है।

रंग चूना–दे० 'रंग टपकना'।

रंग चोखा करना–१ अधिक प्रभावपूर्ण बनाना। २ सुंदर बनाना।

रंग जमना या जम जाना–१. धाक जमना। उ० उसका वहाँ खूब रंग जम गया। २. मस्ती होना। ३. जीत होना।

रंग जमाना–१ असर डालना। उ० एक बार भी रंग जमा दूँगा तो कुछ दिन के लिए ठीक हो जायगा। २. रोब-दाब दिखाना। ३. रोब डालना। उ० तुम तो बातों में ही रंग जमा लेते हो!

रंग जाना–१. पुरानी बात न रह जाना। २. पूर्ण प्रभाव होना।

रंग टपकना–१. युवावस्था का पूर्ण विकास होना। उ० अब तो शरीर से रंग टपक रहा है। २. रंग झलकना। उ० उसके शरीर से ललाई का रंग टपकता है।

रंग-ढंग–१. हालत, दशा। उ० आजकल उसका रंग-ढंग कैसा है? २ व्यवहार, बरताव। उ० आजकल मेरे साथ उसके रंग-ढंग अच्छे नहीं दिखाई देते। ३ लक्षण। उ० आसमान के रंग-ढंग से तो मालूम होता है कि आज पानी बरसेगा।

रंग-ढंग देखना–हाल-चाल देखना। उ० पहले यहाँ का रंग-ढंग देख लो, फिर जाना।

रंगत आना–मजा आना। उ० तुम्हारे बिना नाच मे रंगत नही आती।

रंग दिखाना–१. आफ़त में फँसाना। सकट मे डालना। उ० इसने तो हमे खूब रंग दिखाया। २. मजा दिखाना। उ० चलो तुम्हें भी रंग दिखा लाएँ। ३. फल सामने लाना।

रंग देखना–१. फल देखना। उ० काम तो उन्होंने अपने मन से कर डाला, अब जरा इसका रंग देखना, वे मुँह की न खाएँ तो मेरा नाम नही। २. मजा चखना। उ० भंग का रंग देखना चाहते हो तो मथुरा चलो।

रंग देना–१ अपने प्रेम-पाश में फाँसने के लिये प्रेम करना। उ० मैं जानता हूँ कि तुम उसे केवल रंग दे रहे हो। २ चढाना, भुलावा देना। उ० रंग देकर अपना काम निकाल लो, फिर देखा जायगा। ३ धोखा देना।

रंग न छोड़ना–अपना स्वरूप और स्वभाव न छोड़ना।

रंग निकलना–दे० 'रंग निखरना'।

रंग निखरना–१. रंग का चटकीला होना। उ० सूखने पर रंग निखर जायगा तो साड़ी अच्छी लगेगी। २ गोरा होना। उ० जवानी आने के साथ-साथ लड़कियों का रंग निखरता जाता है। ३ उन्नति करना। उ० उसका भी रंग निखर गया।

रंग पकड़ना–१. जवान होना। उ० उसका लड़का रंग पकड रहा है, अब शादी की जा सकती है। २. बढ़ना, वृद्धि पर होना। उ० मामला अब रंग पकड़ेगा।

रंग पर आना–दे० 'रंग पकडना'।

रंग फ़क पड़ जाना–दे० 'रंग उड़ना'।

रंग फ़क हो जाना–दे० 'फ़क हो जाना'।

रंग फ़क होना–दे० 'रंग उड़ना'।

रंग फीका रहना–काफ़ी असर या रोब न रहना। उ० वह थानेदार है तो बड़े रोब-दाब का, पर यहाँ उसका भी रंग फीका ही रह गया।

रंग बँधना–१ प्रभाव जमना। रोब जमना। उ० अब यहाँ उसका भी काफ़ी रंग बँध जायगा। २ तूल होना। उ० मामले में अब रंग बँधेगा।

रंग बदलना या बदल जाना–१. नाराज होना, लाल-पीला होना। उ० आप तो नाहक हम पर रंग बदलते है। २. हालत मे परिवर्तन आना, दूसरा का दूसरा होना। उ० राजगद्दी पर बैठते ही राजकुमार का रंग बदल गया, अब तो वे अपने मित्रों को पहचानते ही नही। ३ सिद्धांत बदलना। उ० रोज-रोज रंग बदलने वाले मुझे पसंद नही।

रंग बरसना–१. अत्यन्त सुन्दर लगना। २ आनंद छाना। उ० शादी के अवसर पर तुम्हारे घर मे रंग बरस रहा था। ३. मौज उड़ना। उ० आजकल उनके यहाँ रंग बरस रहा है।

रंग बाँधना–१. रोब गाँठना, धाक जमाना। उ० यहाँ रंग न बाँधो, वहीं अपने आफ़िस मे बाँधना। २. ऊँची बाते या अन्य ऊपरी चीजों से रोब जमाना या असर पैदा करना। उ० उस दिन तो उसने ऐसा रंग बाँधा कि सभी लोग दब गए।

रंग बिगड़ना–१. बुरा हाल होना। उ० उसका यहाँ आते ही रंग बिगड़ गया। २. रोब न

रहना, शान न रहना। उ० जब यहाँ मेरा रंग बिगड़ गया तो तुम कितने दिन टिकोगे ?

रंग-बिरंगा–१. बहुत से रंगों का । उ० रंग-बिरंगी साड़ी मुझे बहुत पसंद है। २. बहुत तरह का। उ० रंग-बिरंगी बातें मत करो, सीधे जो कहना हो, कहकर अपना रास्ता लो। ३. रसिक। उ० वह रंग-बिरंगा आदमी है। ४. विचित्र।

रंग भरना–बात को अतिरंजित करके कहना।

रंग मचाना–१. रण मे खूब युद्ध करना। उ० चढ़ि देह समर उत्तर परन उत्तर द्वार मचाय रंग। २. धूम मचाना। उ० उसने तो खूब रंग मचाया है।

रंग मारना–१. विजय पाना। उ० उसने तो रंग मार लिया। २. रग लूटना, मज़ा लेना उ० रंग मारा तो तुमने।

रंग में ढलना–मन के अनुसार चलना। रास्ते पर जाना। उ० उसका तुम्हारे रंग में ढलना ज़रा मुश्किल है।

रंग में भंग करना–मज़ा बिगाड़ना। किरकिरा करना। उ० बत्ती बुझाकर तुमने महफ़िल के रंग में भंग कर दिया।

रंग में भंग पड़ना–आनन्द में बाधा पड़ना। मज़ा किरकिरा होना। उ० बीच महफ़िल मे पिता जी के आ टपकने से रग में भग पड़ गया।

रंग रलना–आनन्द करना, मौज लूटना। उ० आप तो आजकल खूब रंग रल रहे है।

रंग-रलियाँ करना–दे० 'रंग रलना'। उ० श्याम करत रंग-रलियाँ।

रंग-रलियाँ मचाना–१. आनन्द और चैन से रहना। उ० तुम्हारे यही दिन हँसने-बोलने और रंग-रलियाँ मचाने के है। २. रमण करना, विहार करना। ३. आनंद और खुशी से शोरगुल करना या ज़ोर से हँसना या नाच-रग करना।

रंग-राँचो होना–अनुरक्त होना, प्रभाव में होना।

रंग लाना या ले आना–१. रंग दिखाना। उ० रग लाती है हिना पत्थर पर पिस जाने के बाद। २ हालत करना। ३. मज़ा लाना। ४ उन्नति पर होना। उ० उसका व्यापार अब रंग लायेगा। ५. परिणाम दिखलाना। उ० उस दिन की फ़ौजदारी देखो क्या रंग लाती है ?

रंग हटाना–प्रभाव दूर करना। रोब कम करना। उ० तुम्हीं उसका रंग हटा सकते हो।

रंग होना–१. अनुराग होना। २. रोबदाब होना।

रँगा सियार–धूर्त, ऊपर से और भीतर से और। उ० इन रँगे सियारों का विश्वास न करो।

रँगा सियार होना–बनावटी होना, ढोंगी होना। उ० आजकल के महात्मा लोग रँगे सियार होते है।

रंगीन मिज़ाज–रसिया, रसिक।

रँगे हाथ पकड़ा जाना–बुरा काम करते हुए सप्रमाण पकड़ा जाना। (यह to be caught red handed का अनुवाद है।)

रंजक उड़ाना–१. अपान वायु छोड़ना। २. तोप, बन्दूक छोड़ने के लिए बारूद जलाना। उ० वह रंजक भी उड़ाना नही जानता है, और अपने को बहुत बड़ा तोपची समझता है।

रंजक चाट जाना–बन्दूक की बारूद का जल जाना, पर उसका न छूटना। उ० आपकी बन्दूक कैसी खराब है कि सब रजक चाट गई ?

रंजक देना–गाँजे का दम लगाना। उ० रंजक देना स्वास्थ्य के लिए हानिकर है। रजक दो तो हम भी शाम को तुम्हारे यहाँ आ जाया करे।

रंजक पिलाना–तोप या बन्दूक की प्याली में थोड़ा-सा बारूद रखना। उ० चलाने के लिए तोप में रंजक पिला ही रहा था कि दुश्मन आ पहुंचे।

रंजीदा करना–१. नाखुश करना। उ० छोटी-सी बात के लिए आप क्यो उन्हे रंजीदा कर रहे है ? २. उदास करना। उ० बेकार मन रंजीदा न करो।

रँडापा झेलना–विधवापन भोगना। उ० हिंदू विधवाओ के लिए रँडापा झेलना कितना बड़ा अभिशाप है, नहीं कहा जा सकता !

रकम उड़ाना–१. रुपये पाना (रिश्वत रूप में)। २ रुपये खर्च करना।

रक़म खा जाना–दूसरे के धन को हड़प जाना।

रकाब पर पैर रखना–१. चलने के लिए बिलकुल तैयार होना। उ० आप जब भी आते है, रकाब पर पैर रखे आते हैं। २. घोड़े पर चढ़ना सीखना शुरू करना। उ० अभी रकाब

पर पैर रखना तो आता ही नहीं और खिचड़ी में घोडा माँगते हैं सात बित्ते का ।

रक्त की नदी बहाना—घमासान-युद्ध करना या मारकाट करना ।

रक्त के आँसू रोना—बहुत दु:खी होना ।

रक्त पिलना—गदा खून पिलाना । [उ० तुमको रक्त पिला कर तब छोड़ूँगी [यह एक गाली है, जिसका प्रयोग केवल निम्न स्तर की स्त्रियाँ करती हैं ।]

रक्तपात होना—मार-काट होना, खून-खराबी होना । उ० आज से दो वर्ष पहले इसी जमीन के लिए कितना रक्तपात हुआ था ।

रक्त में होना—जन्म से होना, सहज होना ।

रख छोड़ना—बचा रखना । उ० कुछ रुपये बुढ़ापे के लिए भी रख छोडो ।

रखना पड़ना—१. खलल पडना, बाधा पड़ना । उ० इस काम में भी रखना पड गया । २. खराबी या नुक्स होना । ३. झगड़ा पड़ना ।

रख-रखाव—लालन-पलान । उ० इस लड़के का रख-रखाव भी तुमारे ही ज़िम्मे है ।

रख लेना—१. दबालेना, मार लेना । उ० आपने मेरे लिए जो चीजें उनके पास भेजी थी, उन्होने रख ली । २. रखनी या रखेली रखना । उ० उन्होंने एक स्त्री को रख लिया है । ३. जगह देना । उ० अपने आफ़िस में इसे भी रख लो ।

रग उतरना—१. क्रोध उतरना । उ० एक लाठी लगते ही उनका सब रग उतर गया । २. आँत उतरना । उ० जब उनका रग उतरता है तो बहुत परीशान हो जाते हैं । ३. हठ दूर होना ।

रग खड़ी होना—१. शरीर की किसी रग का फूल जाना । उ० उसकी हाथ की एक रग खडी हो गई, डाक्टर को दिखा दो । २. नामर्दी के विरुद्ध चिह्न प्रकट होना । उ० रग तो खड़ी होती ही नहीं और बाप बनना चाहते है चार बेटो का । (अश्लील और ग्राम्य प्रयोग)

रग चढ़ना या चढ़ जाना—१. क्रोध आना । उ० बात-बात मे उनकी रग चढ़ जाती है । २. हठ के वश होना ।

रग देना—धोखा देना, फँसा देना । उ० इससे बच कर रहना, नही तो यह मौक़ा मिलते ही रगड़ देगा ।

रगड़ पड़ना—१. अधिक मेहनत पड़ना । उ० उसे बहुत रगड़ पड़ी है, इसी से बेचारा थक गया है । २. रगड़ाई पड़ना । उ० रगड़ पड़ने से हाथ में घट्ठे पड़ गए हैं ।

रगड़ान देना—घर्षण करना, रगड़ना । उ० अंबर और खाल को रगड़ान देने से बिजली पैदा होती है ।

रग दबना—किसी के दबाव में होना । उ० तुम्हारी रग उन्हीं से दबती है ।

रग-पट्ठे से परिचित होना—अच्छी तरह जानना । उ० मैं उसके रग-पट्ठे से खूब परिचित हूँ ।

रग-पट्ठे से वाकिफ़ होना—दे० 'रग-पट्ठे से परिचित होना' ।

रग पर नश्तर मारना—मर्मान्तिक प्रहार करना ।

रग-रग पहचानना—अच्छी तरह पहचानना ।

रग-रग फड़कना—शरीर में बहुत उत्साह होना । जोश आना । उ० जोश की बातें सुनते ही उनकी रग-रग फड़क उठी ।

रग-रग में—सारे शरीर में । उ० शरारत तो तुम्हारी रग-रग मे भरी है ।

रग-रग में कूट-कूट कर भरी होना—पूर्णरूपेण भरी होना, सारे शरीर में व्याप्त होना । उ० शरारत तो तुम्हारे रग-रग मे कूट-कूट कर भरी है ।

रग-रग में घुंघरू बज उठना—बहुत पुलकित हो उठना ।

रग-रग में बैठना—१. पूर्ण रूप से देह में प्रभाव करना । उ० पीते ही जहर उसके रग-रग मे बैठ गया और वह मर गया । २. पूर्णत. अभिभूत करना । उ० शरारत उसकी रग-रग में बैठी है ।

रग-रग से—१. अच्छी तरह, पूर्णरूपेण । उ० वह तो रग-रग से जान देने पर तुला हुआ है । २. प्रत्येक अंग से । उ० तुम्हारे रग-रग से शरारत टपकती है ।

रग-रेशे में—सारे शरीर मे । रग-रग मे । उ० शरारत तो तुम्हारी रग-रेशे में भरी है ।

रग-रेशे से परिचित होना—दे० 'रग-पट्ठे से परिचित होना' ।

रग-रेशे से वाकिफ़ होना—दे० 'रग-पट्ठे से परिचित होना' ।

रगें ढीली पड़ना–थक जाना।

रंगों में बिजली दौड़ना–साहस और उत्साह का भाव शरीर में संचरित होना।

रच-रच–धीरे-धीरे, बनाकर। उ० रच-रच कर लिख दो।

रचि-रचि–धीरे-धीरे, सुन्दरता से बना कर। उ० रचि-रचि लिखो कान्ह को पाती।

रज-बराबर–अत्यन्त तुच्छ।

रट लगाना–१. बार-बार कहना। उ० उसे तो राम-राम की रट लगी है। २. धुन लगना, चाह होना। उ० उसे तो यही रट लगी है कि मैं कलकत्ता चला जाऊँ।

रट्टा लगाना–घोंटना, याद करना। उ० परीक्षा के दिनों में रट्टा लगाने से क्या होगा, यदि पहले से नहीं पढ़ा।

रण में रज रखना–रण जीतना।

रण-बाँकुरा होना–वीर होना।

रति जोड़ना–प्रेम करना।

रत्ती चमकना–दे० 'रत्ती जागना'।

रत्ती जागना–क़िस्मत खुलना। उ० उसकी रत्ती तो सालों से जागी हुई है।

रत्ती भर–ज़रा-सा, थोड़ा-सा। उ० रत्ती भर भी मैं झूठ नहीं बोलता। रत्ती भर तो काम किया और सर पर बैठना चाहते है। रत्ती भर खिलाया, और उसी का एहसान मानूँ।

रत्ती-रत्ती–१. रग-रग, कण-कण। उ० तुम तो मुक़दमे का हाल रत्ती-रत्ती जानते हो। २. थोड़ा-थोड़ा। उ० रत्ती-रत्ती सब दे तो बहुत होगा।

रद्दा चढ़ाना–१. रोब जमाना। २. किसी बात को और अधिक प्रोत्साहित करना।

रपट पड़ना–लुढक जाना, गिर जाना।

रपट्टा मारना–दे० 'रपट्टा लगाना'।

रपट्टा लगना–दौड़ना, बहुत दौड़ना। उ० उसने बहुत रपट्टा लगाया, पर उसका काम न हो सका।

रप-रप चलना–दुलकी या तेज़ जाना।

रप-रप जाना–तेज़ जाना।

रफ़ा-दफ़ा करना–समाप्त करना। उ० इस झगड़े को किसी तरह रफ़ा-दफ़ा करो।

रफ़ू करना–फटे कपड़े को तागों से ऐसा सीना कि विशेष ज्ञात न हो। उ० वह रफ़ू करना अच्छा जानती है।

रफ़ू-चक्कर बनना–दे० 'रफ़ू-चक्कर होना'।

रफ़ू-चक्कर होना–भाग जाना, चलता बनना। उ० सिपाही को देखते ही चोर रफ़ू-चक्कर हो गया।

रफ़्ता-रफ़्ता–शनैः-शनैः; धीरे-धीरे। उ० घबड़ाओ नहीं, रफ़्ता-रफ़्ता सब ठीक हो जाएगा।

रफ्फू करना–दे० 'रफ़ू करना'।

रबदा पड़ना–खूब पानी बरसना। उ० आज सुबह ही से खूब रबदा पड़ रहा है।

रब्त-जब्त बढ़ाना–दे० 'रब्त बढाना'।

रब्त-जब्त होना–मेल-जोल होना। उ० उनसे कुछ रब्ब-जब्त हो तो काम निकल सकता है।

रब्त बढ़ाना–दोस्ती या मेल-जोल बढ़ाना। उ० उस बदमाश से रब्त न बढ़ाओ।

रमजना–ऐसा लड़का, जिसके बाप का पता न हो। रंडी का लड़का। उ० वह तो रमजना है, अपने बाप का नाम क्या लिखाएगा?

रम जाना–मस्त हो जाना। घुल-मिल जाना। उ० यह तुम्हारी बहुत बुरी आदत है कि जहाँ जाते हो, वहीं रम जाते हो।

रल-मिल कर रहना–मिल-जुल कर रहना। उ० वहाँ जाना तो लोगों से रल-मिल कर रहना।

रला डालना–इधर-उधर करना। तितर-बितर करना। उ० ऐसा नौकर है कि सारी चीज़ें रला डालता है।

रला निकल जाना–हिसाब की गलती का दूर हो जाना। उ० अब रला निकल गया, आओ देख लो।

रवाज देना–जारी करना। उ० बुरी बातों को रवाज देने की होशियारी मूर्ख ही कर सकते हैं।

रवाज पकड़ना–प्रचलित होना। उ० रूसी साम्यवाद धीरे-धीरे भारत मे भी रवाज पकड़ रहा है।

रवाना करना–भेजना। उ० तुम्हारे जाते ही मैंने सब आदमियों को रवाना कर दिया।

रवाना होना–चल देना । उ० उनके आते-आते हम लोग रवाना हो गए थे ।

रवा भर–ज़रा-सा, बहुत थोड़ा । उ० मुझे रवा भर नमक दे दो ।

रस आना–आनन्द मिलना ।

रसद बँटना–भोजन का सामान मिलना । उ० अभी बारात में रसद नहीं बँटी है ।

रसना खोलना–बोली निकलना । उ० अब तो बच्चा रसना खोलने लगा है ।

रसना तालू से लगना–ज़बान बद करना, चुप होना । उ० उसकी रसना तो तालू से लगती ही नही, दिन-रात बक-बक करता रहता है ।

रस बरसना–आनन्द पहुँचना ।

रस भंग होना–आनन्द का बीच मे ही भग हो जाना ।

रस भीजना–१. मज़े का वक्त आना । उ० अब तो इसका रस भीजा है और तुम जाना चाहते हो । २. आना । उ० उसमे जवानी का रस भीज रहा है । ३. रस का पूर्ण रूप से फैलना । उ० कल तक आशा है कि रस भीज जायेगा ।

रस भीनना–दे० 'रस भीजना' ।

रस में पगना–आनन्द मे पूरी तरह लीन होना ।

रस-रस–धीरे-धीरे । उ० रस-रस सूख सरित सर पानी । ममता त्याग करहिं जिमि ज्ञानी ।

रस लेना–१. आनन्द लेना । उ० तुम तो यौवन का रस खूब ले रहे हो । २. स्वाद लेना ।

रसातल जाना–१. नष्ट होना । उ० रसा रसातल जैहै तबही । २ नर्क मे जाना ।

रसातल पहुँचना–१. बरबाद होना । उ० उसके साथ तुम भी रसातल न पहुँचे तो कहना । २. नर्क में पहुँचना ।

रसातल पहुँचाना–१. बरबाद कर देना । उ० अगर उसके साथ तुम दो-चार माह भी रह गये तो वह तुम्हे भी रसातल पहुँचा देगा ! २. नर्क में पहुँचाना । उ० तुम्हारे पाप तुम्हे रसातल पहुँचा कर तब छोड़ेंगे ।

रसातल भेजना–दे० 'रसातल पहुँचाना' ।

रसीद करना–१. लगाना, मारना । उ० चुप रहो, नही ऐसा थप्पड़ रसीद करूँगा कि सीधे हो जाओगे । २. भेजना । उ० ज़्यादा बोलोगे तो अभी तुम्हें तुम्हारे नगड़दादा के पास रसीद कर दूँगा ।

रसीद काटना–१. रुपया-प्राप्ति का प्रमाण-पत्र देना । उ० ठहरो, अभी रसीद काट देता हूँ । २. नौकरी या काम पर से हटा देना । उ० ज्यादा परीशान करोगे तो रसीद काट दूँगा । ३. दूसरे संसार को भेजना । उ० बेचारे को मार कर उसकी रसीद काट दी ।

रसे-रसे–दे० 'रस-रस' ।

रसोई चढ़ना–भोजन पकना । उ० रसोई चढ़ गई है, थोडी देर में खाना खाकर तब आओ ।

रसोई तपना–दे० 'रसोई चढना' । उ० विप्र पड़ोसी वैद्य आपकी तपै रसोई ।

रस्सी का साँप बनना–असत्य बात का भयंकर रूप धारण करना । उ० तुम्हारे जैसे वाचालों के मुँह से तो सभी बातें रस्सी का साँप बन जाती है ।

रस्सी जलने पर भी बल बना रहना–स्थिति के बहुत व्यर्थ परिवर्तन हो जाने पर ही रुकने में दम आना ।

रस्सी ढीली छोड़ना–नियत्रण मे कमी करना । उ० यदि रस्सी ढीली छोड देगे तो ये सब फिर उपद्रव करने लगेंगे ।

रस्सी हाथ में रखना–अपने वश मे रखना ।

रह जाना–१ न जा सकना । उ० उनके आने से मै भी रह गया । २. पीछे पड़ना । उ० हम सब चले आए और वह कही रह गया । ३. शेष रहना । उ० केवल पाँच रुपये रह गए है । केवल एक वह रह गया और सब पा गए । ४ कुछ कर न सकना । ५. पडा रहना । उ० मैं असमजस मे रह गया, नही तो बता देता ।

रहते हुए–मौजूदगी में । उ० हमारे रहते हुए कोई चूँ नही कर सकता ।

रहने देना–१. जाने देना । उ० रहने दो, कल करना । २. परिवर्तन करना । उ० मैने तो उसकी ही बातो को रहने दिया । रहने दो, बदलने से क्या लाभ ?

रहपट देना–१ जल्दी कर देना । २. झापड़ मारना । उ० दो रहपट दूँगा तो मिज़ाज ठिकाने हो जायेगा ।

रह-रह के–१. बार-बार। उ० रह-रह के उसकी याद सता रही है। २. पछता-पछता कर। उ० रह-रह के सोचता हूं कि मैंने बुरा किया। ३. थोड़ी-थोड़ी देर पर। उ० रह-रह कर दर्द हो रहा है।

रहस्य खुलना–छिपी बात का पता लगना। उ० अब तो क़त्ल का रहस्य खुल गया है।

रहा जाना–सब्र होना। उ० क्या करूँ, रहा नहीं जाता है।

राई-काई करना या कर डालना–१. टुकड़े-टुकड़े कर डालना। उ० बच्चे ने उस तसवीर को राई-काई कर डाला। २. जीर्ण-शीर्ण करना। उ० तुमने तो मेरा कोट राई-राई कर डाला।

राई-काई होना–छिन्न-भिन्न होना। उ० सारी चीजें आँधी से राई-काई हो गई।

राई-नोन उतारना–नजर लगे हुए बच्चे पर उतारा करके राई और नमक को आग मे डालना, जिससे नजर के प्रभाव का दूर होना माना जाता है। उ० राई-नोन उतार दो तो लड़का ठीक हो जायगा।

राई भर–दे० 'रत्ती भर'।

राई-रत्ती–जरा भी, कुछ भी। उ० मै तो उसकी राई-रत्ती भी हाल नही जानता। तुम्हारी वह राई-रत्ती परवा नही करता। इसमें अब राई-रत्ती भी संदेह नही।

राई-रत्ती करके–बहुत थोडा-थोडा। थोडा-थोड़ा करके। उ० राई-रत्ती करके मैने सारी दवा उसे खिला दी।

राई-रत्ती से परिचय रखना–सब कुछ जानना।

राई से पर्वत करना–छोटी बात को बहुत बढा देना। उ० वह हर एक बात को राई से पर्वत कर देता है।

राक्षस होना–१. बहुत क्रूर होना। उ० वह तो राक्षस है, अपनी औरत को डंडों से मार रहा है। २. ऐसा होना जिसे किसी भी बुरी या अरुचिकर चीज़ से घृणा न हो।

राख की चिनगारी–दबा हुआ जोश या उमंग।

राख की चिनगारी चमकना–दबे हुए जोश या उत्तेजना का उभड़ना।

राख डालना–दबा देना, ढक देना।

राख में मिलना–बरबाद हो जाना।

राग अलापना–१. संगीत गाना। उ० वह तो बड़ा अच्छा राग अलापता है। २. चर्चा छेड़ना, बात कहते रहना। उ० तुम तो हर समय अपना ही राग अलापते हो।

राग गाना–अपनी कहानी कहना। राम कहानी सुनाना। उ० यहाँ तो सभी राग गाने वाले हैं, कौन किसकी सुने ?

राग देना–बुत्ता या धोखा देना।

राग पूरना–दे० 'राग गाना'।

राग-रंग में रहना–ऐश-आराम मे रहना। उ० जहाँगीर सदा राग-रंग मे रहता था।

राग लाना–१. नया झगडा उठाना। उ० तुम्हें तो बिना कोई राग लाये खाना ही नहीं पचता। २. नयी बात लाना या पैदा करना।

राछ घुमाना–दूल्हे की सवारी को कुएँ की प्रदक्षिणा कराना। उ० सब हो गया, केवल राछ घुमाना बाकी है।

राज-काज–राज्य का कार्य। उ० राज-काज करना सबके मान का नही है।

राज देना–सम्राट बनाना। उ० दशरथ ने राम को राज देना चाहा।

राज देना–भेद बताना। उ० उसको किसी ने राज दे दिया है।

राज पर बैठना–सिंहासनारूढ होना। उ० बड़े भाग्य से राज पर बैठा जाता है।

राजफ़ाश करना–भेद खोलना। उ० देखो, इस राज को फ़ाश न करना, नहीं तो बहुत बुरा होगा।

राज भंग होना–१. राज का बर्बाद होना। २. बनी-बनाई गृहस्थी बिगडना। उ० बाप के मरने से उसका राज भंग हो गया।

राज रजना–बहुत सुख से रहना। उ० वह यहाँ भी राज रज रहा है।

राज रजाना–ऐश कराना, आराम से रखना। बहुत सुख देना। उ० आप अपनी स्त्री को तो राज रजना चाहते हैं और विधवा लड़की से काम करवाते हैं, यह कहाँ की शराफ़त है ?

राज़ी-खुशी—अच्छी तरह, सही-सलामत, कुशल-आनन्द से। उ० राज़ी-खुशी वह यहाँ चला आया।

राज़ी होना—१. सहमत होना। उ० वह हमारी बातों पर राज़ी हो गया। २. संतुष्ट होना। उ० बेचारा ग़रीब आदमी है, दो-चार पैसे में राज़ी हो जायगा।

राज्य उलट जाना—मटियामेट हो जाना।

राढ़ करना—१. झगड़ा करना। उ० डगर चलत मोसे कीन्हि राढ़, दूध बेचन मो न जाऊँगी। २. असंभव को भी कर डालना।

राढ़ बढ़ाना—झगड़ा-तक़रार करना, बात बढ़ाना। उ० यहाँ बेकार में राढ़ न बढ़ाओ।

रात आँखों में काटना—रात जागते बिताना।

रात का दिन काटना—बहुत श्रम करना।

रात की रात—१. रात-रात भर। उ० उसने रात की रात मेहनत की, परंतु फ़ेल हो गया। २. रात ही में या एक ही रात मे। उ० रात की रात आए और चले गए। रात की रात मकान तैयार हो गया।

रात ढलना—रात समाप्त होना।

रात-दिन—सदा, सर्वदा। उ० वह आजकल रात-दिन चारपाई पर पड़ा रहता है।

रात-दिन का अन्तर—बहुत अतर।

रात-दिन का रोना—सदा का दुःख। उ० यह तो तुम लोगों का रात-दिन का रोना है, मैं कहाँ तक सुनूँ ?

रात-दिन बराबर होना—सर्वदा कष्ट में रहना। उ० हम लोगों के लिए तो रात-दिन बराबर है।

रात बोलना—रात का साँय-साँय करना, रात का भयावनी होना। उ० कुछ शबे वस्ल में भी चैन न पाया हमने, रात बोले है पड़ी मुर्ग़ सहर के बदले।

रात भारी होना—मानसिक या शारीरिक कष्ट के मारे रात का न बीतना। उ० आज तो रात भी भारी हो गई।

रातिब देना—जानवरों को रात को अन्न या अन्न की बनी चीज़ खिलाना। उ० रातिब नहीं देते हो क्या, देखो हाथी दुबला हो रहा है।

रातिब लगाना—कुत्ते, बिल्ली या हाथी वग़ैरह की रोज़ाना की खुराक मुक़र्रर करना।

रान-तले दबाना—१. कब्ज़े में रखना। उ० तुमने तो उसे अपने रान-तले दबा लिया है, अब जो चाहो करो। २. घोड़े पर सवार होना।

रान से रान बाँधना—दे० 'टाँग से टाँग बाँधना'।

रानी का रूठ कर अपना रनिवास लेना—रूठ कर अपने वश वाली करना।

राम करना—क़ाबू में लाना। उ० उनको राम किया और काम हुआ।

राम-कहानी कहना—१. दे० 'राग गाना'। २. कोई बहुत लंबी कहानी कहना।

राम जाने—१. ईश्वर की सौगंध। उ० राम जाने मैंने यह नहीं किया। २. मुझे नहीं पता है। उ० राम जाने, वहाँ क्या हुआ ?

राम-नाम सत्य है कहना—शव के साथ "राम-राम सत्य है" कहते हुए चलना। उ० सुनो, कहीं लोग 'राम-नाम सत्य है' कह रहे हैं।

राम-बाण होना—अचूक होना।

राम-राज्य होना—१ सुखपूर्ण राज्य होना। २. एकाधिकार होना।

राम-राम करके—१. येन-केन-प्रकारेण, किसी तरह। उ० राम-राम करके उसने इस काम को पूरा किया। २. बड़ी कठिनाई से।

राम-राम करना—१. प्रणाम या नमस्कार करना। उ० मिलें तो राम-राम तो कर लिया करो। २. भगवान का नाम लेना, भजन करना। उ० महात्मा लोग रात-दिन राम-राम किया करते हैं।

राम-राम हो जाना—१. मर जाना। उ० वह बूढ़ा आज राम-राम हो गया। २. दुआ-सलाम हो जाना। उ० मिल गए तो राम-राम हो जाता है, नहीं तो कोई मतलब नहीं। ३. दिवाला निकल जाना। उ० उनका तो राम-राम हो गया।

राम-शरण होना—१. साधु होना। उ० वह तो राम-शरण हो गया, अब उसे घर से क्या मतलब ? २. मर जाना। उ० राम-शरण होने के बाद भला किसका डर ?

राय क़ायम करना—कोई निर्णय करना। किसी एक राय पर पहुँचना। उ० देर हो रही है, जल्दी कोई राय क़ायम की जाय।

रार करना—दे० 'राढ़ करना'।

र मचाना–१. झगड़ा-टंटा मचाना। २. झंझट मचाना। ३. शरारत करना। उ० कृष्ण रोज़ ही कुछ न कुछ रार मचाता है।

ल गिरना–१. पाने की इच्छा होना। लालच होना। उ० जहाँ कोई अच्छी चीज़ दिखाई दी कि तुम्हारे मुँह से राल गिरने लगती है। २. लड़का होना। कम उम्र का होना।

ल चूना–दे० 'राल गिरना'।

ल टपकना–दे० 'राल गिरना'।

वण होना–बहुत अत्याचारी होना। उ० वह तो रावण हो गया है, उसका नाश अवश्य होगा।

शि आना–ग्रह का पक्ष मे आना।

शि बैठना–१. गोद बैठना। दत्तक पुत्र होना। उ० देखें महंथ की राशि कौन बैठता है? २ दे० 'रासी होना'।

शि मिलना–१ दो आदमियो के ग्रहो का एक होना। उ० हमारी-तुम्हारी राशि मिलती है। २ पटरी बैठना। उ० राशि मिल जाय तो कुछ कहूँ।

स आना–मुवाफ़िक होना। उ० दिया है जहर मेरे चारागर ने तग आकर, दवा तो खूब मिली है जो आए रास मुझे।

स उठाना–खलिहान उठाना।

स कड़ी करना–१ लगाम खीचना। उ० घोडा चंचल है, रास कडी कर लो। २. पूरा अंकुश रखना। उ० लडके की रास कडी करो, वरना पछताओगे।

स बैठाना–१ गोद लेना। उ० डलहौजी ने रास बैठाने की प्रथा उठा दी थी। २. जन्म-लग्न का एक होना। उ० पहले रास बैठ जाय तो गणना हो। [विवाह ठीक करने के पहले हिंदुओ के यहाँ ज्योतिष के अनुसार रास बैठाते हैं। इसके ठीक होने पर विवाह होता है, अन्यथा नही।]

स मिलना–१. एक तरह का या एक स्वभाव का होना। उ० उन दोनो की रास मिलती है। २. गणना ठीक होना।

स में लाना–१. वशीभूत करना, अधिकार मे लाना। उ० पहले उसे रास मे लाओ, फिर तो काम बन ही जायगा। २. रास्ते पर लाना। उ० लड़के को रास मे लाओ, नही तो पछताओगे।

रास रमाना–रास रचाना, रासलीला करना। उ० जाकी महिमा कहत न आवे, सो गोपिन संग रास रमावे।

रासी होना–१. घर के किसी दूसरे की राशि पर जन्म लेना। (यह बुरा माना जाता है।) उ० यह लड़का मेरे रासी है, जो बच्चा आज पैदा हुआ, बाप के रासी है। २. परीशान करने वाला होना। उ० तुम तो आजकल मेरे रासी हो गए हो।

रास्ता काटना–१. जाने के पहले किसी का रास्ते को काटते हुए जाना। उ० सियार ने रास्ता काट दिया है। २. तिरछे जाना। उ० रास्ता काट कर चलो, देर हो गई है। ३. काम में बाधा डालना। मेरा रास्ता न काटो, वरना कुशल न होगा।

रास्ता दिखाई देना–उपाय समझ में आना।

रास्ता छोड़ना–१. जाने की जगह देना। २. बाधक न होना।

रास्ता खुलना–रुकावट दूर होना।

रास्ता देखना–१. प्रतीक्षा या इंतज़ार करना। उ० रास्ता देखते-देखते रात हो गई, पर वह नही ही आया। २. आसरा देखना। उ० मुझे तो केवल तुम्हारा रास्ता देखना है।

रास्ता नापना–१. रास्ते पर आना। २. आना-जाना। उ० क्या स्कूल का रास्ता नापते हो, जब कुछ आता-जाता ही नही। ३. चले जाना। उ० मुझे अपना रास्ता नापना है, तुमसे क्या काम?

रास्ता निकालना–युक्ति सोचना।

रास्ता पकड़ना–१. रास्ते पर जाना। रास्ता देख कर चले जाना। उ० यही रास्ता पकड़ कर चले जाओ। २. उचित मार्ग पर जाना। उ० रास्ता पकड़ो, नही तो बदनामी होगी।

रास्ता फूटना–कई रास्तों का निकलना। उ० वहाँ तो कई रास्ते फूटते हैं, मैं किससे जाऊँगा?

रास्ता बताना–१. चालबाज़ी चलना। उ० उसने तो तुम्हे अच्छा रास्ता बताया। २. ढंग या तरीक़ा बताना। उ० कोई रास्ता बताओ कि मुक़दमा तय हो जाय। ३. पथ-प्रदर्शन करना। उपदेश देना। उ० रामचंद्र जी संसार को रास्ता बताने आए थे।

रास्ता बिगाड़ना–आगे के लिए ग़लत सिलसिला चालू करना ।

रास्ता भूलना–बहुत दिनों के बाद आना ।

रास्ता रोकना–१. प्रगति मे बाधक होना । २. रास्ते मे आगे न बढ़ने देना ।

रास्ता लाना– मुवाफ़िक़ करना । उ० उसे किसी तरह रास्ते लाओ ।

रास्ता साफ़ करना–अड़चनें दूर करना ।

रास्ते पर आना–सत्य पर आना, सच बोलना । उ० रास्ते पर आओ तो तुम्हारा कहा सुने ।

रास्ते का काँटा–मार्ग की बाधा ।

रास्ते की धूल बटोरना–गरीब होना, धन के अभाव मे मारा-मारा फिरना ।

रास्ते पर आना– १. सुधर जाना, या रास्ता पकड़ लेना । उ० अब तो वह रास्ते पर आ गया है । २ बात मान लेना । उ० मेरे रास्ते पर आ गए तो अच्छा ही किया । ३ चंगुल में या वश मे आना । उ० अब रास्ते पर आ गए, देखें कैसे चलाते है ।

रास्ते पर लाना–ठीक करना । सुधार करना । उ० उसे पुलिस ही रास्ते पर ला सकती है ।

रास्ते में आँखें बिछाना–बहुत आदर करना ।

राह चलते का पल्ला पकड़ना–रास्ता चलते झगड़ा करना । उ० वह तो राह चलते का भी पल्ला पकड़ता है, तुम तो उसके पड़ोसी हो । तुम्हारे साथ उसका झगड़ा आश्चर्य की बात नही ।

राह ताक-ताक थक जाना–इन्तजार या प्रतीक्षा करते-करते निराश हो जाना । उ० हम क्या कहे तपाक की बातें, आपकी राह ताक-ताक थके ।

राह ताकना–दे० 'रास्ता देखना' ।

राह देखना–दे० 'रास्ता देखना' ।

राह पड़ना–१. रास्ता हो जाना । उ० आते-जाते इधर से भी राह पड गई है । २. लूट होना । उ० आजकल जगह-जगह राहे पड़ रही है ।

राह पर आना–दे० 'रास्ते पर आना' ।

राह बचाना–सामने आने से बचना ।

राह बता जाना–१. उपाय बताना । उ० वे तो राह बता गए, पर मेरी समझ मे नही आया । २. टाल देना । उ० राह बताने से काम न चलेगा, मेरे साथ वहाँ तक चलिए । जब भी जाता हूँ, राह बता जाता है ।

राह बाँधना–रूँध देना, रास्ता बन्द कर देना । उ० खेत की राह बाँध दो, नहीं तो फ़सल खराब हो जायगी ।

राह भारी होना–रास्ता किसी भी प्रकार खत्म न होना ।

राह मारना–उन्नति मे बाधा डालना । उ० उसने वहाँ जाकर स्वय अपनी राह मार ली । उसकी राह क्यो मारते हो ?

राह रखना–लेन-देन जारी रखना । उ० ऋण चुका कर ही राह रखी जाती है ।

राह लगना–१. पीछे चलना । उ० यह कुत्ता तो तुम्हारी राह लगा है । २. थक जाना । उ० दूर से आया है, राह लग गई है । ३. रास्ता पकडना । उ० इसी राह लग कर चले जाओ । ४ ठीक रास्ते पर चलना । उ० राह लगो, नही तो बदनामी होगी ।

राह लेना–चल देना । उ० ज्यादा बक-बक न करो, अपनी राह लो ।

राह से चलना–१. उचित व्यवहार करना । उ० सबके साथ राह से चलो, नही तो बदनामी होगी । २. अपने काम से काम रखना । उ० राह से चलो, दूसरे की राह से तुमसे क्या काम ?

राह से बेराह होना–१. उचित मार्ग से अनुचित मार्ग पर जाना । उ० वह तो कुसगत मे पड़-कर राह से बेराह हो गया । २ दूसरा धर्म स्वीकार करना ।

राही करना–मुसाफ़िर बनाना । उ० सब सामान देकर इन्हे राही करो ।

राही होना–१. रवाना होना । उ० तुम तो सारे सामान से राही हो गए । २. स्थायी न होना । उ० इस ससार मे सभी राही है ।

राहु का भी केवल चंद्रमा और सूर्य को ही ग्रसना–विपत्ति का केवल अच्छों पर ही आना । उ० देखो तो, इतने ऐरे-गैरे थे कोई हैजे मे नही मरा, वह बेचारा सब की खोज-खबर रखता था, चल बसा । राहु भी चंद्रमा और सूर्य को ही ग्रसते है ।

राहु होना–दुखदायी होना । उ० तुम तो उसके लिए पूरे राहु हो ।

रिज़क मारना–रोजी मारना, जीविका में बाधा डालना। उ० उन गरीबो का रिज़क क्यो मारते हो ?

रिमझिम पानी बरसना–हल्की बूँदा-बाँदी होना।

रिवाज़ चलना–दे० 'रिवाज़ पड़ना'।

रिवाज़ पड़ना–प्रथा चलना। उ० राजपूतों मे जौहर का रिवाज़ पड़ गया था।

रिश्वत का बाजार गर्म होना–खूब रिश्वत दी और ली जाना।

रिश्वत खाना–घूस लेना। उ० रिश्वत और पाखाना खाना बराबर है।

रिस के मारे–क्रोध के कारण। उ० कहा कहौ यहि रिस के मारे खेलन हौं नहि जात।

रिस मारना–१ क्रोध को रोकना। उ० बेचारे ने रिस मार ली, नही तो झगड़ा हो जाता। २ रिस का मारना, क्रोध का मारना। क्रोध का शरीर पर बुरा असर होना। उ० तुम्हे तो दिन-रात रिस मारती रहती है, तुम क्या मोटे होगे ?

रीझ पचाना–अपनी प्रसन्नता किसी को जानने न देना। उ० वह नौकरी पाने से बड़ा प्रसन्न है, पर रीझ पचा रहा है।

रीढ़ टूटना–अशक्त और बेकाम हो जाना।

रीस करना–१ द्वेष करना। उ० रीस करना नीचता है। २ क्रोध करना। उ० बात-बात पर रीस न करो।

रुई–दे० 'रूई'।

रुख़ देखकर बात करना–आदमी का जैसा चित्त या 'मूड' हो, उसे समझ कर उसके अनुकूल बात करना।

रुख़ देखकर बात न करना–ठीक से या ध्यान से बात न करना। उ० उससे क्या कहे, वह तो रुख देकर बात ही नही करता।

रुख़ देना–१. ख्याल करना। उ० जरा मेरी अनुपस्थिति मे इधर भी रुख दीजियेगा। २. राय देना। उ० उन्होने अभी तक अपना रुख नहीं दिया। ३. हाँ कर देना। उ० आप रुख दे दे तो मै उसे आनन-फानन मे खतम कर दू।

रुख़ फेरना–१ रुज होना। दयादृष्टि हटा लेना। उ० जाने क्यो उन्होने रुख फेर लिया है। २. दूसरी ओर देखना। उ० मुझे देखकर वह रुख फेर लेती है।

रुख़ बदलना–दे० 'रुख फेरना'।

रुख़ मिलाना–आमने-सामने होना। उ० रुख मिलाते ही वह भाग जाता है।

रुपया उड़ाना–१ बहुत खर्च करना। उ० बाप का रुपया उड़ाता है, अपना उड़ाना तो पता चलता। २. रुपया चुरा लेना। उ० कोई यहाँ से दस रुपये उड़ा ले गया।

रुपया ऐंठना–गलत-सही तरीकों से रुपये वसूलना।

रुपया खरा होना–रुपया मिलना या मिलने का निश्चय होना।

रुपया गलना–रुपया खर्च होना। उ० इस मुक़दमे मे बहुत रुपया गला।

रुपया गाँठ करना–धन बटोरना। उ० रुपया गाँठ करने के लिए पाप न करो।

रुपया चीरना–दे० 'माल चीरना'।

रुपया जोड़ना–धन बटोरना। उ० भूखा रह कर रुपया जोड़ना ठीक नही है।

रुपया टूटना–घाटा होना।

रुपया ठीकरा होना–अधाधुध व्यय होना। उ० उसके यहाँ रुपया ठीकरा हो गया।

रुपया ठीकरी करना–दे० 'रुपया उड़ाना'।

रुपया डूबना–१. किसी को दी हुई रकम वसूल न होना (२) रोजगार मे घाटा होना।

रुपया तुड़ाना–रुपये की रेजगारी भुनाना। उ० पाँच रुपया तुड़ा लो, काम चल जायेगा।

रुपया पानी की तरह बहाना–दे० 'रुपया उड़ाना'।

रुपया पानी में फेकना–बेकार व्यय करना। उ० तुमने तो रुपया पानी मे फेक दिया।

रुपया फूँकना–१ दुष्कर्म मे धन फेंकना। उ० सारा रुपया उसने जुए मे फूँक डाला। २. बेहिसाब खर्च करना, बहुत खर्च करना। उ० रुपया फूँको नही, उसका ठीक से हिसाब रखो।

रुपये की गर्मी–धन का गर्व होना।

रुपये के दोस्त होना–धन ऐंठने के लिए दोस्ती करना।

रुस्तम का साला बनना या समझना–बहादुर बनना (व्यंग्य)। उ० चार दिन से घूर

लगाता है तो अपने को रुस्तम का साला बनता है।

रुस्तम होना—दे० 'भीम होना'।

रूई का गाला—स्वच्छ और मुलायम। उ० यह बिल्ली तो रूई का गाला है।

रूई की तरह तूम डालना या तूमना—१ छिन्न-भिन्न कर डालना। उ० बन्दर ने कपडे को रूई की तरह तूम डाला। २ हर अवगुण को प्रकट करना। उ० अब रूई की तरह तुमने से कोई लाभ नही रहा। ३. खूब गत बनाना। उ० तुमने तो छोटी-सी बात के लिए उसे रूई की तरह तूम डाला। ४ उलट-पलट कर खराब कर देना। उ० उसने सारी किताबो को रूई की तरह तूम डाला।

रूई की तरह धुन देना या धुनना—खूब मारना। उ० सिपाहियो ने तो बेचारे को रूई की तरह धुन दिया।

रूई के बादल की तरह उड़ जाना—शीघ्र नष्ट हो जाना, क्षणिक या नश्वर होना।

रूई मे लपेटी आग—ऐसी वस्तु जिसके ससर्ग से नाश निश्चित है।

रूई-सा—सुकुमार, नरम। उ० कैसा रूई-सा बच्चा है!

रूई-सूत मे उलझना—सासारिक कामो मे फँसना। उ० यहाँ आकर तो सभी को रूई-सूत मे उलझना पड़ता है।

रूखा पड़ना—१ बेमुरौवत होना। उ० इतनी ही झझट मे रूखे पड गये। २ नाराज होना। उ० उसके लिए आप क्यो रूखे पडते है?

रूखा-सूखा—कुछ भी, भला-बुरा, दाल-दलिया। उ० महँगी मे रूखा-सूखा खाना मिल जाय, यही बहुत है।

रूखा होना—दे० 'रूखा पडना'।

रूप भरना—१ दे० 'स्वाँग भरना'। २. दे० 'स्वाग रचना'।

रूप की दोपहरी खिलना—रूप पूरे चढाव पर होना।

रूप-माधुरी में सने होना—अत्यन्त रूपवान् होना।

रूप-रेख—आकार, स्वरूप। उ० भगवान के रूप-रेख का किसी को पता नही।

रूप लेना—शरीर धारण करना। उ० मनुष्यो के लिए भगवान को भी रूप लेना पडा।

रूप हरना—शर्मिन्दा करना। उ० रामचन्द्र ने स्वयवर मे जाकर सभी का रूप हर लिया।

रूमाल पर रूमाल भिगोना—रोकर बहुत आँसू बहाना। उ० उस एंग्लो-इडियन लेडी के घर चोरी हो गई है, बेचारी रूमाल पर रूमाल भिगो रही है।

रू से—१ कसम से। उ० ईश्वर की रू से बताओ कि क्या बात है? २. मुताबिक। उ० विधान की रू से तो ऐसा न होना चाहिए।

रूह निकलना—मर जाना। उ० देखते ही देखते उसकी रूह निकल गई।

रूह फटकना—गद्‌गद हो जाना। उ० परीक्षा-फल सुनते ही उसकी रूह फटकने लगी।

रूह फ़ना होना—भयभीत होना।

रेकार्ड टूटना—पूर्वस्थापित श्रेष्ठतम काम से बढ कर होना।

रेख आना—दे० 'मस भीजना'।

रेख खींचना—१ निश्चितता से कहना। उ० रेख खीचकर कहता हूँ कि यह अकाट्य है। २ हद या सीमा बनाना। उ० यह मै रेख खीच रहा हूँ, इसका उल्लघन कभी न करना।

रेख में मेख मारना—कठिन या असभव काम करना।

रेज़ा-रेज़ा करना या कर देना—चिथड़े-चिथडे कर देना, छिन्न-भिन्न कर देना। उ० बच्चो के सामने कोई चीज रखा तो वे रेज़ा कर देते है।

रेत पर नाव चलाना—असभव काम करना।

रेल-पेल करना—१ राशि जमा करना। उ० व्यापार मे उसने रुपयो का रेल-पेल कर दिया। २ गाउँज-माउँज रखना, बेतरतीब रखना। उ० क्या पुस्तको का रेल-पेल किये हो? ३ भीड करना। उ० क्या यहाँ रेल-पेल किये हो, हटो भी।

रेल-पेल होना—धक्कम-धुक्की होना, भीड होना। उ० मेले मे तो रेल-पेल होना ही है।

रेल होना—१. दे० 'रेल-पेल होना'। २ बहुत तेज चलने वाला होना। उ० तुम तो रेल हो, मै तुम्हारे साथ नही चल सकता।

रेहन रखना–जमीन को बन्धक या गिरवी रखना। उ० मैने अपनी जमीन रेहन रख दी है।

रेहलत करना–१ मर जाना। २. कूच कर जाना।

रोंगटे खड़े होना या हो जाना–१ भयभीत होना। उ० रात को इस भूत का ख्याल करते ही मेरे रोगटे खडे हो गए। २ रोमाचित होना। उसकी कहानी सुन कर मेरे रोगटे खड़े हो गए।

रोआँ-रोआँ कान होना–बात सुनने की तीव्र उत्कंठा होना।

रोआँ काँपना–बहुत भयभीत हो जाना। उ० अँधेरी रात मे अकेले होने से उस दिन मेरा रोआँ काँपने लगा।

रोआँ टेढ़ा करना–कुछ कर सकना। उ० और सब तो दूर रहा, तुम तो रोआँ भी टेढा नही कर सकते।

रोआँ न उखाड़ सकना–कुछ भी न कर सकना। उ० तुम हमारा रोआँ भी नही उखाड सकते।

रोआँ-रोआँ–शरीर के प्रत्येक अवयव। उ० उस कारुणिक दृश्य को देखकर रोआँ-रोआँ रोने लगा।

रोक-टोक करना–रोकना, आने-जाने न देना। उ० जब यह आम रास्ता है तो क्यो रोक-टोक करते हो?

रोक-टोक में रहना–देख-रेख मे रहना। उ० आजकल यहाँ बहुत से लोग पुलिस की रोक-टोक मे है।

रोकड़ मिलना–१ आय-व्यय का हिसाब बैठना। उ० आज तो मुनीम का रोकड बड़ी देर मे मिला। २ बडी सम्पित्ति मिलना। उ० क्या हमे रोकड मिला है कि तुम्हे दावत दे।

रोकथाम करना–१ देखभाल करना। उ० इन बच्चो का कोई रोकथाम करने वाला नही रहा। २ बाधा डालना। उ० क्यो रोकथाम करते हो, मुझे जाने दो।

रोकर घर भरना–बहुत रोना। उ० मिठाई के लिए लड़का रोकर घर भर रहा है, उसे कही से लाकर दे दो।

रोग का घर–बीमारी का मूल। उ० रोग का घर खाँसी, झगड़ा की जड़ हाँसी।

रोग पाल लेना–झझट लगा लेना, जान की आफ़त ले लेना। उ० तुमने तो उसे बुलाकर एक रोग पाल लिया है।

रोज गड्हा खोदना और रोज पानी पीना–रोज कमाना और रोज खाना। उ० स्थायी आय का काम करो। यह रोज गडहा खोदना और रोज पानी पीना कब तक चलेगा?

रोज़गार चमकना–व्यापार मे खूब लाभ होना। जोरो पर काम चलना। उ० अगर रोज़गार चमक गया तो फिर क्या पूछना है?

रोज़गार चलना–व्यापार जोरो पर चलना। उ० तुम्हारा रोजगार तो चल रहा है, फिर भी नही अटता?

रोज़गार छूटना–काम न रहना, बेकार होना। उ० आजकल मेरा रोजगार छूट गया है।

रोज़गार लगना–खाने-कमाने का प्रबन्ध होना। उ० उसका रोजगार लग गया है, अब उसे कोई कष्ट नही है।

रोज़गार लगाना–नौकरी लगाना, काम लगाना। उ० अगर आप मेरा कोई रोजगार लगा दे तो बड़ा अच्छा हो।

रोज़गार से होना–रुपये कमाना, कोई काम या रोजगार करता होना। उ० आजकल मै कुछ रोजगार से नही हूँ।

रोज़ा खोलना–दिन भर रोजा या उपवास रह कर शाम को नमाज पढ कर कुछ खाना। उ० अब रोजा खोलने का वक्त हो गया, दूकान बद करो।

रोज़ा तोड़ना–१ उपवास पूरा न करना। उ० दोपहर तक रह कर भूख बर्दाश्त न होने से उसने रोजा तोड दिया। २ उपवास खतम होने पर कुछ खाना। ३ दे० 'रोज़ा खोलना'।

रोज़ा बख़्शाते नमाज़ गले पड़ना–लाभ का काम शुरू करते नुकसान होना।

रोज़ी चलना–भोजन, कपडा मिलने भर आमदनी होना। उ० इस महँगी मे किसी तरह रोजी चल जाय, यही बहुत है।

रोज़े से रहना–उपवास करना।

रोटियाँ तोड़ना–बिना काम के रोटी खाना। उ० वह महीनो से यहाँ रोटियाँ तोड़ रहा है, आखिर इस महँगी मे क्या सोचता है?

रोटियाँ निकलना–खाने का ठिकाना होना। उ० दूकान से किसी तरह रोटियाँ निकल जाती हैं।

रोटियाँ लगना या लग जाना–जीविका के लिए कोई काम या नौकरी लगना। उ० मेरी कही रोटियाँ लग जाती तो निश्चित हो जाता।

रोटियाँ लगाना–जीविका के लिए कोई काम या नौकरी लगाना। उ० कही रोटियाँ लगाओ, नही तो यहाँ से भागना पड़ेगा।

रोटियो का मारा–भूखा, बिना खाया-पिया। उ० वह भिखारी रोटियो का मारा है, उसे कुछ दे दो।

रोटियों के लाले पड़ना–दे० 'रोटी को तरसना'।

रोटी-कपड़ा–खाने को भोजन और पहनने को कपड़ा। उ० मनुष्य के लिए रोटी-कपडा सबसे आवश्यक वस्तु है।

रोटी कमाना–रोजी प्राप्त करना। उ० रोटी कमाने के लिए तो कुछ करना ही पड़ेगा।

रोटी की ख़ाक झाड़ना–चापलूसी करना। उ० मेरा काम हो या न हो, मै किसी की रोटी की खाक नही झाड़ सकता।

रोटी को तरसना–भूख से मरना। उ० इस महँगा मे बहुत से लोग रोटी को तरस रहे हैं।

रोटी को रोना–दे० 'रोटी को तरसना।

रोटी चलाना–भोजन-कपड़े का इन्तजाम करना। उ० परिवार की रोटी चलाना भाई साहब के ज़िम्मे है।

रोटी-दाल चलना–दे० 'दाल-रोटी चलना'।

रोटी-दाल से ख़ुश होना–दे० 'दाल-रोटी से ख़ुश होना'।

रोटी पर रोटी रखकर खाना–बड़े आनन्द से जीवन बिताना। उ० उसका क्या पूछना है, वह तो आजकल रोटी पर रोटी रखकर खा रहा है।

रोटी-पानी के चक्कर में होना–जीविका की चिन्ता मे होना।

रोटी-पानी में लगना–गृहस्थी के काम मे लगा होना।

रोटी पोना–१. भोजन बनाना। उ० वह इतनी बड़ी हुई, पर उसे आज तक रोटी पोना भी नही आया। २. आटा गूँथकर पकाने के लिए रोटियाँ गढ़ना या बनाना।

रोटी-बेटी होना–खाने और विवाह आदि का सबध होना। एक फ़िर्के का होना। उ० उन दोनों मे रोटी-बेटी है।

रोड़ा अटकाना–बाधा डालना। उ० वह मेरे हर काम मे रोडे अटकाता है।

रोता हुआ–बे-रौनक।

रोते-रोते आँचल भीगना–अधिक रोना। उ० बेचारी का रोते-रोते आँचल भीग गया, उसे किसी प्रकार सान्त्वना दो।

रो-धो कर काम चलाना–किसी तरह काम चलाना। उ० अब इस महँगी मे कपडा कहाँ बनता है, रो-धो कर काम चलाओ।

रोना-कलपना–दे० 'रोना-गाना'।

रोना-गाना–दे० 'रोना-पीटना'।

रोना-धोना–दे० 'रोना-गाना'।

रोना पड़ना–दे० 'रोना-पीटना पड़ना'।

रोना पीटना–विलाप करना। बहुत रोना। उ० जो होना था सो हो गया, अब रोने पीटने से क्या फ़ायदा?

रोना पीटना पड़ना–गमी छाना, शोक छाना। उ० मुखिया के लड़के के मर जाने से सारे गाँव मे रोना-पीटना पडा हुआ है।

रोना रोना–कष्ट सुनाना। उ० वे जब भी यहाँ आते है, अपना रोना रोने लगते है।

रोने का तार बाँधना–दे० 'रो-रो कर घर भरना'।

रोने वाला न रह जाना–निर्वंश मरना।

रोपना–१. याचना करना, माँगना। उ० जिससे कुछ मिलने की आशा हो, उसी के सामने (हाथ) रोपना चाहिये। २. दृढ़ता से रखना।

रोब दिखाना–शान दिखाना। उ० यहाँ किस पर रोब दिखाते हो?

रोब मिट्टी मे मिलाना–दबदबा समाप्त करना, असर या इज्जत नष्ट करना। उ० अगर ज्यादा शान दिखाओगे तो सब रोब मिट्टी मे मिला दूँगा।

रो बैठना–१. नाउम्मीद होना, निराश होना। उ० अब रो बैठो, वह न आयेगा। २ रोने लगना।

रोम-रोम जलना–बहुत क्रोध या कुढ़न होना।

म-रोम में—समूचे शरीर मे । उ० उसके रोम-रोम में फुड़िया निकली हुई है । ग़ुस्सा तो उसके रोम-रोम में है ।

म-रोम गीला होना—बहुत करुणार्द्र होना ।

रोम रोम में रम रहना—पूर्ण रूप से व्याप्त होना ।

-रो कर—१. किसी तरह से, बडे कष्ट से । उ० जब रो-रो कर ही करना है तो रहने दो, मैं कर लूंगा । २. धीरे-धीरे । उ० तुम हर एक काम को रो-रो कर करते हो । ३. बेमन से । उ० रो-रो कर करना हो तो रहने दो, मै किसी दूसरे से करवा लूंगा । प्राण देना, बहुत दु खी होना ।

-रो कर दिन काटना—कष्ट से समय बिताना । उ० बुढिया रो-रो कर दिन काटती है ।

वाँ खड़ा होना—रोमाचित होना । उ० रास्ते मे शेर को देख कर मेरा रोवाँ खडा हो गया ।

वाँ न उखड़ना—कुछ भी नुकसान न होना । उ० आप क्या बढ-बढ कर बाते कर रहे है, आपसे मेरा एक रोवाँ भी न उखड़ेगा ।

वाँ पसीजना—दया आना । उ० उस बुढिया की करुण कहानी सुनकर मेरा रोवाँ पसीज गया ।

रोशनी डालना—१. प्रकाश डालना । विवेचन करना । [अंग्रेजी मुहावरा To throw light का अनुवाद है ।] उ० इस मज़मून पर कई आदमी रोशनी डालेंगे । २. रोशनी फेंकना, उजेला करना । उ० इधर रोशनी डालो, यहाँ कुछ खरखरा रहा है ।

रौंट करना—चिढ़ कर बेईमानी करना । उ० क्यों रौंट करते हो ! उसका क्या बिगडेगा, तुम्हारा धर्म जायेगा ।

रौंद पर जाना—गश्त के लिए निकलना । उ० सिपाही रौंद पर गए हैं ।

रौग़ने क़ाज़ मलना—दे० 'मक्खन लगाना' ।

रौनक़ जाती रहना—कांति या शोभा का समाप्त होना । उ० बीमारी के कारण उसके चेहरे की रौनक जाती रही ।

रौनक़ होना—१ चमक-दमक या कांति होना । उ० उसके चेहरे पर रौनक है । २. चहल-पहल होना । उ० आज उसके यहाँ बड़ी रौनक़ है ।

रौरव भोगना—बड़ी दुर्दशा होना । उ० अत्याचार करोगे तो बुढापे मे रौरव भोगोगे ।

ल

क टूटना—कमर टूट जाना । हिम्मत हार जाना । उ० बस इतने ही में लक टूट गई ?

लंकाकांड होना—१ तेज़ आग लगना । उ० मेरे गाँव के करीब के कई गाँवो में कल लंकाकाड हो गया । २. बहुत बड़ी घटना होना । उ० यह लंकाकाड नहीं है कि इतना चिल्ल-पों मचा रहे हो ।

[illegible] खाना—लँगड़ाना । उ० हाथी अगले बाएँ पैर से लग खा रहा है ।

लँगड़े की लकड़ी होना—सहारा होना । उ० तुम्ही तो मुझ लँगडे की लकडी हो ।

लंगर करना—१. शरारत करना । उ० अगर ज्यादा लगर करोगे तो पीट दूँगा । २. [illegible]कना । आज कहाँ लंगर करोगे ?

लंगर जारी करना—दान देना । सदावर्त देना । उ० मेरे गाँव के मुखिया ने गाँव मे एक लंगर जारी किया है ।

लंगर डालना—१ जहाज या नाव रोकने के लिए लोहे के बहुत बड़े काँटे को पानी में फेंकना । उ० लगर डाल दो, आगे नही चला जाएगा । २ कही रुकना ।

लंगी लगाना—चाल चलना, दाँव-पेंच लगाना, टँगडी मारना ।

लंगर बाँधना—१. ब्रह्मचर्य धारण करना । उ० लगर बाँधना बडा कठिन काम है, सब लोग इसे नही कर सकते है । २. पहलवानी करना । ३. जहाज़ स्थिर करना ।

लगर-लँगोट देना—दे० 'लँगोट देना' ।

लँगोट आगे रखना—दे० 'लँगोट देना' ।

लँगोट कसना—१ कुश्ती लडने को तैयार होना । उ० उसने लँगोट कस लिया, अब तुम भी अखाड़े मे जाओ । २. लड़ाई करने पर आमादा होना । उ० बात-बात मे लँगोट क्यों कसते हो ?

लँगोट का कच्चा–व्यभिचारी (व्यक्ति)।

लँगोट का सच्चा–ब्रह्मचारी। उ० वह लँगोट का सच्चा है, उसका मुकाबिला तुम क्या करोगे ?

लँगोट देना–किसी पहलवान को पहलवानी सीखने के लिए चेला बनाना। उ० खलीफ़ा ने मेरे भाई को भी लँगोट दिया है।

लँगोट बाँधना–दे० 'लँगोट कसना'।

लँगोटिया यार–बचपन का साथी। उ० वह तो हमारा लँगोटिया यार है।

लँगोटी पर फाग खेलना–थोडा ही साधन होने पर विलासी होना। उ० लँगोटी पर फाग खेलना अच्छा नही लगता, कुछ तो शर्म आनी चाहिए।

लँगोटी बँधवाना–बहुत गरीब बना देना। तबाह कर देना। उ० आप बहुत बन रहे है, अगर दो वर्ष भी जीता रह गया तो लँगोटी बँधवा दूँगा।

लँगोटी बिकवाना–१ जो कुछ थोडा-बहुत हो, उसे भी नष्ट करवा देना। उ० लँगोटी तो बँधवाया ही, अब लँगोटी बिकवा कर दम लूँगा। २. नंगा करना, बेइज्जत करना। उ० उसकी लँगोटी न बिकवाओ।

लँगोटी लगाये घूमना–१. निर्धन हो जाना, २. साधू हो जाना।

लघन करना–उपवास करना।

लबा करना–१ रवाना करना, भेजना। उ० उसे अब लबा करो, नही तो देर हो जायगी। २. चित्त करना, ज़मीन पर पटक देना। उ० अखाड़े मे उतरते ही मैंने उसे लंबा कर दिया। आप-ऐसे आदमियों को सेकड भर मे लबा कर दूँगा। ३ हरा देना।

लंबा बनना–दे० 'नौ-दो-ग्यारह होना'। उ० खाकर वह लबा बना।

लंबा हाथ मारना–बहुत धन प्राप्त करना।

लंबा होना–दे० 'नौ-दो-ग्यारह होना'। उ० मज़ा मार कर आप तो लबे हुए और फँसा मैं।

लंबी तनख्वाह पाना–तनख्वाह मे काफ़ी रुपये पाना।

लंबी तानना–लेट कर अच्छी तरह सो जाना। निश्चिंतता से सो जाना। उ० इस समय मेरे अतिरिक्त सब लबी तान कर सो रहे है।

लंबी रस्सी देना–बहुत ढील देना।

लंबी साँस भरना–१. हताश होना। २. दुख प्रकट करना।

लंबी साँस लेना–दे० 'ऊँची साँस लेना'।

लंबे डग भरना–१ बडी प्रगति करना। २ जल्दी-जल्दी चलना।

लंबे हाथ मारना–मोटी रक़म पर हाथ मारना। उ० बहुत दिल दरया हो रहा है, कही से लंबा हाथ मार कर आये हो क्या ?

लकड़तोड़ होना–नीरस होना।

लकड़ी चलना–१. लाठी से मार-पीट होना। उ० बात ही बात मे उन दोनो मे लकडी चलने लगी। २. लाठी गदके का खेल होना। उ० जलूस मे लकडी चल रही थी।

लकड़ी देना–मुरदे को जलाना। उ० मर गया तो कब तक रोते-धोते रहोगे, लकडी देकर आगे का काम देखो।

लकड़ी फेंकना–लाठी मारना। उ० वह लकडी फेकना बहुत अच्छा जानता है।

लकड़ी-सा–बहुत दुबला-पतला। उ० बीमारी से वह सूख कर लकड़ी-सा हो गया है।

लकडी होना–१ सूख कर बहुत कडा हो जाना। उ० यह रोटी तो सूख कर लकड़ी हो गई है। २. बहुत दुबला-पतला होना। उ० बीमारी से वह लकडी हो गया है।

लकीर का फ़क़ीर–आँखे बन्द कर पुराने ढंग पर चलने वाला। उ० अब इस नये युग मे लकीर के फकीर होना सरासर मूर्खता है।

लकीर पर चलना–बिना समझे-बूझे पुरानी प्रथा पर चलते चलना। उ० पुराने पडित आज भी लकीर पर चलना सबसे बड़ा धर्म मानते है।

लकीर पीटना–दे० 'लकीर पर चलना'।

लक्ष्मी नारायण करना–१ शुरू करना। २. खाना शुरू करना।

लक्ष्मी-वाहन होना–१. धनवान होना। २. महा-मूर्ख होना।

लग चलना–किसी के पीछे हो लेना। उ० जहाँ उसने किसी मालदार आदमी को देखा, झट उसके पीछे लग चलता है और फिर लूट करके ही साँस लेता है।

लगती बात कहना–१ मर्मभेदी बात कहना, चुभती बात कहना। २. चुटकी लेना।

लगन लगना–१. किसी काम को करने की धुन लगना। २. प्रेम होना।

लगाना-बुझाना–लड़ाई-झगड़ा कराना। उ० इन दोनों में आप लगा-बुझा कर तमाशा देख रहे है, यह कहाँ की आदमियत है?

लगाम कसना–नियंत्रण रखना।

लगा रहना–काम मे लीन रहना। उ० कभी बेकार नही रहता है, हमेशा कही न कही लगा ही रहता है।

लगाव होना–आकर्षण होना, प्रेम होना।

लगी-लिपटी कहना–बात स्पष्ट न कहना, पक्ष लेना।

लगी को बुझाना–अभिलाषा पूरी करना। उ० उससे शादी करके लगी को बुझा लो।

लगी बुझाना–दे० 'लगी को बुझाना'।

लगे हाथ–साथ ही साथ। उ० लगे हाथ उनके यहाँ भी होते आना, जा तो रहे ही हो।

लच्छन झड़ना–रूप-रग जाता रहना। पहले का सौदर्य न रहना। काति का खतम हो जाना। उ० रोजे वे साल आँखे को वो अपनी दिखायेगा, रोजे शबे फेराक के लच्छन झड़े हुए।

लच्छन सीखना–सभ्यता सीखना। उ० उसका लडका मेरे यहाँ रहने से काफी लच्छन सीख गया है, नही तो पूरा उजड्ड था।

लच्छन से झड़ जाना–रौनक न रहना। रूप बिगड़ना। इज्जत घट जाना। उ० चेहरा उतर गया, नक्शे बिगड गए है, फिर इन दिनों तो मेरे लच्छन से झड़ गए है।

लच्छन से झड़ पड़ना–१. भद्दा और असुदर होना। २. खुशहाली मे फ़रक आना।

लच्छेदार भाषा–आलकारिक और आकर्षक भाषा।

लज्जा करना–इज्जत का ख्याल रखना। उ० अपने कुल की लज्जा करो।

लज्जा का भी लज्जित होना–अत्यन्त लज्जाजनक स्थिति होना।

लज्जा घोल कर पी जाना–निर्लज्ज हो जाना।

लट छिटकाना–बाल फैलाना। उ० बहुत-सी औरते सर्वदा लट छिटकाये रहती है।

लट जाना–कमजोर हो जाना। उ० वह दस दिन की बीमारी मे एकदम लट गया है।

लट दबाना–अधिकार मे करना। उ० तुमने तो उसकी अच्छी लट दबाई, अब वह चूँ नही कर सकता।

लट पड़ना–बालो का परस्पर चिमट जाना। उ० लट पड गई है, साबुन से धो डालो।

लटिया करना–सूत को लपेट कर आँटी करना। उ० वह जनेऊ बनाने के लिए लटिया कर रहा है।

लटी मारना–गप्प हाँकना। उ० वह दिन भर लटी मारा करता है, जैसे उसको कुछ दूसरा काम ही नही है।

लटरे उतरवाना–मुँडन करवाना। बाल उतरवाना।

लटरे खोले फिरना–१ बाल खोले फिरना। २ नंगे सर फिरना। [यह पहले बुरा माना जाता था।]

लटरे ले डालना–बाल नोच लेना।

लटा हाथी भी नौ लाख का होना–आर्थिक स्थिति बिगड जाने पर भी बडे घरो मे बहुत कुछ होना।

लट्टू होना–आशिक होना, मोहित होना। उ० वह उस लडकी पर लट्टू हो गया है।

लट्ठ चलाना–१. लाठी मारना। २ कडी ज़बान चलाना। उ० तुम तो हर वक्त लट्ठ ही चलाते हो, आदमी को देख कर बात करनी चाहिए।

लट्ठ लिये फिरना–विपरीत काम करना। उ० तुम तो अक्ल के पीछे लट्ठ लिये फिरते हो।

लट्ठ-सा मार देना–बहुत कडा मुँहतोड उत्तर देना।

लड़की-लड़का–सतान, औलाद। उ० उसको एक भी लड़की-लड़का नहीं है।

लड़कों का खेल—सहज बात । उ० यह काम लड़कों का खेल नहीं है, जरा सम्हल कर हाथ लगाना ।

लड़खड़ाती जीभ—दुविधा या असमंजस से ।

लड़ मिलाना—मेल करना । उ० लड़ाई करके तो लड मिलाने चले हो ?

लड़ाई पर जाना—युद्ध मे जाना । उ० १९१४ मे लाखो जवान लडाई पर गए ।

लड़ाई मोल लेना—स्वय झगडा करना । उ० लडाई मोल लेकर तुम स्वय तो बैठ जाते हो और आफ़त मेरे सर आती है ।

लड्डू खिलाना—दावत करना । उ० कल हम सबको लड्डू खिलायेगे ।

लड्डू फूटना—लाभ की बात होना ।

लड्डू फोड़ना—लड्डू खाना । उ० वहाँ से लड्डू फोड कर आए हो तो यहाँ सूखी रोटियाँ कैसे अच्छी लगें ?

लड्डू बँटना—लाभ होना । कुछ अच्छी चीज मिलना । उ० वहाँ क्या लड्डू बँट रहा है जो तुम जाओगे ?

लत पड़ना—आदत पडना । उ० उसे बुरे कामों की लत पड गई है, अब न छूटेगी ।

लतमर्दन करना—१. पैरों से कुचलना । उ० लतमर्दन न करो, काम हो गया हो तो इसे लौटा आओ । २ खूब मारना, लात से खूब मारना ।

लताड़ पाना—भला-बुरा सुनाना ।

लताड़ में आना—मुसीबत और बला मे फँस जाना । उ० नकर अपनी जाँ को मुज़मइल, अरे इशा उनसे लगा न दिल, तू वरना होवेगा मुनफइल कही आ गया जो लताड़े मे ।

लताड़ में रहना—१ मुसीबत मे रहना, बर्बाद होते रहना । आफत में रहना । उ० करें रकम हम अगर हाले पयमाले दिल, रहे हमेशा कलम की लताड़ मे कागज । २ हमेशा प्रयोग मे रहना ।

लत्ता उड़ाना—दुर्गति करना ।

लत्ती करना—भाग जाना । उ० सिपाही को देखते ही चोर लत्ती कर गया ।

लत्ते लेना—१. मूर्ख बनाना । उ० उस सीधे आदमी के लत्ते लेना ठीक नहीं है । २. मीठी बोली में व्यग्य करना ।

लथपथ करना—सानना, लथेड़ना । उ० उसे कीचड़ मे लथपथ कर दिया ।

लथपथ होना—सन जाना, भर जाना । उ० लाश खून से लथपथ है ।

लथाड़ खाना—१. पटका जाना, पछाड़ा जाना । उ० पंजाब का एक बडा पहलवान यहाँ लथाड खा गया । २. घुड़की सुनना । उ० आज तो तुम अपने घर ऐसी लथाड़ खाओगे कि होश हो जायगा । ३. पिछड़ना । ४. नष्ट किया जाना ।

लथाड़ में पड़ना—१ हैरानी में पड़ना । उ० मै तो शादी की लथाड़ मे पड़ा हूँ । २. डाट-फटकार सुनना । उ० उनकी लथाड़ मे पड़ चुका हूँ, अब उनके यहाँ काम नहीं कर सकता ।

लदवा देना—जेल भिजवा देना ।

लपक कर—१ तुरन्त । उ० बाज़ार से लपक कर १ रु० की मिठाई लेते आओ । २. तेज़ी से । उ० लपक कर जाओ ।

लपका पड़ना—बुरी आदत पड़ना । उ० उसे चोरी का लपका पड गया है, अब जल्दी छूट नहीं सकता । तुम्हे झूठ बोलने का लपका पड गया है ।

लपकी भरना—लबे-लबे या दूर-दूर टाँक से सीना । उ० मेरी बनियाइन पर जल्दी से लपकी भर दो ।

लपट-झपट कर—जल्दी और मिल-जुल कर । उ० आओ लपट-झपट कर काम खतम करा दिया जाय ।

लप-लप करना—१. लचकना । लपलपाना । उ० अच्छी तलवार लप-लप करती है । २ चमचमाना । उ० लप-लप करती हुई तलवार देख कर मेरे प्राण सूख गए ।

लपेट में आ जाना—फ़ंदे मे आ जाना । उ० लपेट मे उसका आ जाना बडा ही कठिन है, क्योकि वह बड़ा चतुर है ।

लब हिलाना—कुछ कहना ।

लबड़-धों-धों करना—गड़बड-सडबड करना । उ० लबड़-धो-धो करना हो तो मेरे ऑफ़िस से निकल जाओ, यह बनिये की दुकान नही है ।

लबड़-धों-धों चलना—बेईमानी की चाल सफल होना । उ० आजकल उसकीलबड़-धों-धो खूब चल रही है ।

लबाड़िया होना–झूठा होना।

ललाट के अक्षर–दे० 'विधना के अक्षर'।

ललाट में लिखा होना–भाग्य मे होना। ईश्वर या ब्रह्मा की ओर से भाग्य मे बदा होना। उ० जो ललाट मे लिखा होगा, वह होकर ही रहेगा।

लल्ला जानना दद्दा न जानना–लेना जानना, देना न जानना।

लल्लो-चप्पो करना–दे० 'हाथ-पाँव पकड़ना'।

लल्लो-पत्तो करना–दे० 'हाथ-पाँव पकड़ना'।

लव भर–तनिक भी। थोड़ा-सा, नाम मात्र को। उ० उसे लव भर भी डर नही है। मुझे लव भर जहर मिल जाता तो इस जीवन से छुटकारा पा जाता।

लवलेस न होना–तनिक भी न होना।

लस्टम-पस्टम–किसी प्रकार।

लहना चुकाना–लिया हुआ कर्ज़ दे देना। उ० अगर कुछ आमदनी हो तो सबसे पहले लहना चुका दो।

लहना साफ़ करना–दे० 'लहना चुकाना'।

लहर उड़ाना–१ अच्छे स्वर से गाना। उ० वह रात मे खूब लहर उड़ाता है। २ मौज लेना।

लहर चढ़ना–१. ज़हर चढ़ना। उ० झारने के बाद सर्प की लहर न चढ़ेगी। २. मस्ती चढ़ना। उ० आज लहर चढ़ी है क्या कि अब तक घूम रहे हो?

लहर देना–रह-रह कर कष्ट देना। उ० उसकी मृत्यु तो घर भर को लहर दे रही है।

लहर मारना–१ रह-रह कर किसी प्रकार की पीड़ा उठना। उ० छोटे बच्चे का जाना लहर मार रहा है। २ आनन्द भोगना, मौज करना। उ० तुम तो आजकल खूब लहर मार रहे हो। ३. सीधा न जाकर इधर-उधर मुड़ना। उ० वह लहरे मारता चलता है।

लहर में आना–मस्ती मे आना। उ० न भाई-मैं तुम्हारे साथ नही जाऊँगा, कही तुम लहर मे आकर कुछ ऐसा-वैसा कर बैठे, तो मै कही का न रहूँगा।

लहालोट हो जाना–मोहित हो जाना। उ० उसकी सुन्दरता पर वह लहालोट हो गया है।

लहू कटना–पाखाने से खून गिरना। उ० बहुत दवा करने पर तो उसका लहू कटना बन्द हुआ।

लहू का घूँट पीकर रह जाना–क्रोध को जब्त कर जाना।

लहू का जोश होना–प्रेम का उमड़ना। उ० लहू का जोश होने पर शत्रुता भी भूल जाती है।

लहू का प्यास होना–जान लेने पर तैयार होना। उ० तुम्हारे झगड़े के ही कारण वह मेरे लहू का प्यासा है।

लहू मारना–बहुत कष्ट देना।

लहू खौलना–बहुत क्रोध होना।

लहू-पसीना एक करना–दिन-रात सख्त मेहनत करना। उ० इस मकान के बनवाने के लिए मुझे लहू-पसीना एक करना पड़ा है।

लहू-पानी एक करना–कठिन मेहनत करना। उ० बेचारे किसान लहू-पानी एक करके तो चार पैसे पाते है।

लहू पिला-पिला कर पालना–१. अपना दूध पिला कर पालना। २. बड़े कष्ट से पालना।

लहू-पीकर रह जाना–गुस्से को मन मे ही रखना। उ० उसकी बात सुनकर मै लहू पी कर रह गया, नही तो आज बहुत कुछ हो जाता।

लहू पीना या पी जाना–१. बहुत परीशान करना। उ० वह शरारती लड़का मुहल्ले भर का लहू पी रहा है। २. सार या जीवन रस खीच लेना। उ० रोग तुम्हारा लहू पी गया।

लहू-लुहान होना या हो जाना–खूब खून बहना। लहू मे लथपथ होना। उ० साँप और नेवला लड़ते-लड़ते लहू-लुहान हो गए थे।

लहू सूखना–डर लगना। उ० जगल मे शेर को देखते ही मेरा लहू सूख गया।

लहू सुखाना–दे० 'खून सुखाना'।

लहू से हाथ रँगना–मार डालना, हत्या करना।

लहू होना–खून होना। उ० आँख मे उतरा नही मेरे लहू, जाति का होता लहू है सामने।

लाँग खुलना–डर जाना। उ० हथियारबद डाकू को देखते ही मेरी लाँग खुल गई।

लाइन तीन दिन के लिए बंद होना–दे० 'महीने से होना'। [यह केवल विद्यार्थियों में प्रचलित है और प्राय विनोद मे कहा जाता है।]

लाई लगाना–शिकायत करना, चुगली करना। उ० तुमने ही लाई लगाई होगी।

लाई-लुतरी–चुगली-शिकायत। उ० क्यों लाई-लुतरी किया करते हो ?

लाख कहना–बहुत कहना, कितना भी कहना।

लाख का घर राख होना–१ लाख रुपये का घर नाश होना। बहुत बडी हानि होना। उ० लापरवाही से उसका लाख का घर राख हो गया। २ बहुत बड़ी इज्जत का समाप्त होना।

लाख का या खाक का–धनी या गरीब। उ० मैं लाख का हूँ या खाक का, तुम्हारे घर खाने तो नहीं जाता हूँ, फिर तुमसे क्या मतलब ?

लाख जी से–दिलोजान से। उ० मैंने लाख जी से चाहा कि वह पढ ले, पर उसने नहीं ही पढा।

लाख टके की बात–१. अत्यन्त उपयोगी बात। उ० आपने मेरे लिए लाख टके की बात कही। २ बहुत बडी और सारगर्भित बात। उ यह लाख टके की बात है, समझना तो पता चलेगा।

लाख मन का होना–बहुत वजनी या भारी होना। उ० कूए बुता मे जाना यों बार-बार क्या है, अपनी जगह पै 'सालिक' पत्थर है लाख मन का।

लाख रुपये की बात–महत्त्वपूर्ण बात, बडे काम की बात।

लाख सिर का होना–१. ईमानदार और वफादार होना। उ० उसका नौकर जो छावनी का काम करता है, लाख सिर का है। २ बहुत बहादुर होना।

लाख-लाख बनाव देना–बहुत अच्छा लगना। उ० उसे पान लाख-लाख बनाव देता है।

लाख सिर मारना–पूरा ज़ोर लगा देना। उ० हमने तो लाख सिर मारा था कि पढ लो, लेकिन तुमने सुना कब ?

लाख से लीख होना–बहुत बड़ा से बहुत छोटा हो जाना। सब कुछ से कुछ न रह जाना। उ० भाग्य खराब होने पर लाख से लीख होना मामूली बात है। भारतवर्ष लाख से लीख हो गया है।

लाखा जमाना–मिस्सी की घडी लगाकर पान की सुर्खी जमाना। उ० देखना ऐ 'जौक' होंगे आज फिर लाखों के खूँ, फिर जमाया उसने लाल लब पै लाखा पान का।

लाखा लगाना–दे० 'लाखा जमाना'।

लाखों जूतियाँ पड़ना–बहुत जलील और अपमानित होना।

लाग-पड़ना–दुश्मनी करना या होना।

लाग डॉट करना या होना–मनमुटाव या अनबन होना, स्पर्धा होना।

लाग की आग–प्रतिद्वन्दिता।

लाखो मे खेल सकना–पास मे खब रुपये होना।

लाग बाँधना–दुश्मनी करना। उ० लगा न दामने दिलदार से कभी अफ़सोस, सबा ने लाग ये बाँधी मेरे गुबार के साथ।

लागत बैठना–किसी चीज के बनाने या खरीदने मे दाम लगना। उ० इस मकान के बनवाने मे छः हजार की तो लागत बैठी है।

लागत लगना–दे० 'लागत बैठना'।

लाग रखना–शत्रुता रखना। उ० वह मुझसे मन मे लाग रखता है।

लाग लगना–१ प्रेम होना। उ० उससे तो ऐसी लाग लग गई है कि कभी छोडते नही बनता। २ दुश्मनी होना। उ० दोनों मे खूब लाग लगी है।

लाग-लपेट रखना–१ पक्षपात रखना। उ० जो मनुष्य किसी की तरफ़ लाग-लपेट न रखता हो, वही इनका झगडा तय कर सकता है। २. साफ-साफ़ न कहना। उ० भाई लाग लपेट न रखो, जो बात हो, साफ़-साफ कह दो।

लाचार करना–मजबूर कर देना।

लाचार होना–मजबूर होना।

लाज-भीगी–लज्जापूर्ण।

लाज रखना–इज्जत बचाना। उ० बडे लोग लाज रखने में ही अपने को खतम कर देते हैं।

लाजवन्ती का पौधा होना–बहुत सुकुमार होना, शर्मीला होना।

लाजवाब कर देना–मात कर देना।

लाज से मरना–लाज या शर्म के मारे मुँह ऊपर न उठाना।

लाजिम होना–वाजिब होना। उ० तुम्हें सलाम करना लाजिम है।

लाजों डूबना-उतराना–अत्यन्त लज्जित हो जाना।

लाजों मरना–दे० 'लाज से मरना'।

लाठी के जोर से–मार-पीट के द्वारा।

लाठी चलना–लाठी से मार-पीट होना। उ० बात ही बात मे उन दोनो मे लाठी चलने लगी।

लाठी चलाना–लाठी से मारना। उ० वह लाठी चलाना बहुत अच्छा जानता है। लाठी न चलाओ, नही तो मर जायगा।

लाठी-पोंगा करना–सर-फुडव्वल करना।

लाठी में तेल लगाना–लडने की तैयारी करना।

लाठी लेकर पीछे पड़ना–हर समय कुछ न कुछ दोष ढूंढते रहना; कटु आलोचना करना।

लाड़ करना–प्यार करना।

लात खाना–१ मार खाना। २ बेइज्जत होना।

लात चलाना–दुलत्ती फेकना। उ० घोडी लात चलाती है, ज़रा होशियार रहना।

लात जाना–दूध न देना। उ० मेरी भैंस जब से लात गई, मुझे दूध का बड़ा कष्ट है।

लात की मारी रोटियाँ–अपमान से मिला हुआ भोजन।

लात के देवता–मार पडने पर ही ढंग पर आने वाला व्यक्ति।

लात मार कर खड़ा होना–किसी बडी बीमारी से मुक्त होना। उ० भगवान की दया से वह लात मार कर खडा हो गया, मुझे तो बिलकुल आशा नही थी।

लात मारना–घृणा या क्रोध के साथ छोड देना। उ० ऐसे काम को तो मै लात मारता हूँ।

लातालूती करना–मार-पीट करना। उ० सयाने होकर क्या लाता-लूती करते हो?

लाद निकलना–तोद निकलना। उ० बड़े-बडे महाजनो का लाद निकल जाता है।

लानत-मलामत करना–बुरा-भला कहना। उ० थोड़ी गलती के लिए भाई साहब ने बहुत लानत-मलामत की।

लाभ का पाँवों तले लोटना–लाभ ही लाभ होना, चारो ओर लाभ होना। उ० साहसी के हाथ मे ही सिद्धि है, लोटता है लाभ पाँवो के तले।

लाभ के लोभ में मूल गँवाना–और पाने की आशा मे पास का भी खो बैठना।

लाभ बाँधना–लड़ाई का सामान इकट्ठा करना। उ० आज सब लोग लाभ बाँध कर प्रस्थान कर देगे।

लार गिरना–दे० 'लार टपकना'।

लार गिराना–जी ललचाना। उ० लार न गिराओ, यह तुम्हें न मिलेगा।

लार टपकना–दे० 'जी ललचाना'।

लार लगाना–फँसाना, बझाना। उ० वह लार लगाने के फेर मे है, जरा होशियार रहना।

लारा लौरी लगाना–टाल-मटोल करना। उ० लारा न लगाओ, उसके बिना मेरा काम नही चल सकता।

लाल अंगारा–बहुत क्रोधित। उ० मेरी बात सुनते ही वह लाल अगारा हो गया।

लाल आँखें दिखाना–१ गुस्से से देखना। उ० मैंने आपको क्या कह दिया है, जो आप लाल आँखे दिखा रहे हैं? २ क्रोध करना। उ० लाल आँखे दिखाना हो तो उसे दिखाइये, जो आपका कुछ हो।

लाल आँखें निकालना–दे० 'लाल आँखें दिखाना'।

लाल उगलना–बहुत अच्छी और प्यारी बाते कहना। उ० वह जब बोलता है तो लाल उगलता है।

लाल कर देना–दड देना। पीट कर लाल करना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो लाल कर दूंगा।

लालच देना–किसी के मन मे लालच पैदा करना। उ० ठग ने लडके को मिठाई की लालच देकर उसके सब गहने हड़प लिए।

लाल झंडा दिखाई देना–दे० 'महीने से होना'। [इसका प्रयोग केवल नवजवान विद्यार्थियों में होता है।]

लालन-पालन करना–पालन-पोषण करना । उ० माँ के मरने के बाद भाभी ने मेरा लालन-पालन किया ।

लाल पड़ना–दे० 'लाल होना' ।

लाल-पीला होना–दे० 'लाल होना' ।

लाल फीता शाही–(सरकारी फाइल) सुस्ती व गफलत से काम होना ।

लाल बत्ती जलना–दीवाला होना । उ० उस बैंक में तो लाल बत्ती जल गई ।

लाल बुझक्कड़ होना–हर बात का कोई न कोई उत्तर देने के लिए तैयार होना ।

लाल मिर्च–बहुत क्रोधी, बदमिजाज या कटु वचन बोलने वाला ।

लाल साफा–पुलिस ।

लाल होना या हो जाना–१ नाराज होना । उ० छोटी-सी बात के लिए क्यों लाल होते हो ? २ बहुत अधिक धन पाकर सपन्न होना । उ० वह गडा हुआ खजाना पाकर लाल हो गया है । ३ स्वस्थ होना । उ० आजकल तो वह दूध खाकर लाल हो गया है । ४. खुश होना । उ० यह बात सुन कर वह लाल हो गया ।

लाला-भइया करना–१. इज्जत के साथ बात-चीत करना । उ० वह ऐसा सभ्य है कि सभी से लाला-भइया करता है । २. चापलूसी करना ।

लाले पड़ना–अत्यन्त कमी होना ।

लाव चलाना–पूरा चलाना । उ० मेरे यहाँ खेत सीचने के लिए लाव चलाना पडता है ।

लासा लगाना–फदे मे फँसाना । उ० किसी तरह लासा लगाओ तो उससे कुछ काम निकले ।

लासा होना–पीछा न छोडना । उ० उससे मै बहुत जान छुडाना चाहता हूँ, पर वह तो लासा हो गया है ।

लासे पर लगाना–धोखे मे लाना । उ० कुछ लालच देकर उसे लासे पर लगाओ तो सारा काम बन जाय ।

लाहौल पढ़ना–दे० 'लाहौल भेजना' ।

लाहौल भेजना–लानत भेजना, धिक्कारना, नफ़रत जाहिर करना । उ० लाहौल भेजते है 'मोखय्यर' शराब पर, हजरत हमारे अब तो बडे पारसा हुए ।

लिए मरना–इल्जाम या कलंक लगाना । उ०
फूटी क़िस्मत का गिला है न अजल का शिकवा,
तेगे क़ातिल को लिए मरते हैं मरने वाले ।

लिखना-पढ़ना–तालीम हासिल करना । उ० सभी को लिखना-पढना चाहिए ।

लिख लोढ़ा पढ़ पत्थर होना–कुछ भी पढ़ा-लिखा न होना । मूर्ख चपाट होना । उ० उसका लडका तो लिख लोढा पढ पत्थर है ।

लिखा न मेट सकना–भाग्य में जो हो, उसे न बदल सकना ।

लिखाना-पढ़ाना–शिक्षा देना, तालीम देना । उ० लड़का अब बडा हो गया, उसे लिखाना-पढाना चाहिये ।

लिखा-पढ़ा–पढा-लिखा । शिक्षित । उ० लिखा-पढा आदमी कभी ऐसा बुरा काम नही कर सकता है ।

लिखा पूरा करना–भाग्य का फल भोगना । उ० वह बेचारा लिखा पूरा करता है, नही तो क्या यह भी जीवन है ?

लिफाफ़ा खुल जाना–भेद खुल जाना । उ० उसे छिपाने से क्या लाभ हुआ, आखिर लिफ़ाफ़ा खुल ही गया ।

लिफाफ़ा बनाना–१ ढकोसला रचना । २. ऊपरी बनावट बनाना । ऊपर से काम करना । उ० इस लिफाफा बनाने से तो काम नही चल सकता, कुछ करना है तो ठीक से करो ।

लिफ़ाफ़ा बदलना–१ भडकदार कपडे पहनना । उ० घर मे तो चिथडा लपेटे रहता है, पर बाहर जाना होता है तो लिफाफ़ा बदल लेता है । २ ऊपरी सूरत बदलना । उ० लिफ़ाफ़ा बदल कर मुझे ठगने आए हो ।

लिफाफ़िया होना–केवल ऊपरी टीमटाम होना ।

लिलार का अब्बर–अभागा ।

लिहाज़ करना–ध्यान रखना । ख्याल करना । उ० उसने मेरा ही लिहाज़ करके तुम्हारा इतना बडा काम मुफ्त मे कर दिया ।

लिहाज़ रखना–शर्म रखना, शील करना । उ० अगर आप मेरा लिहाज़ रखते है तो मेरी बात मान ले ।

लिहाड़ी लेना–उपहास करना, मजाक उड़ाना । उ० वहाँ जाना नही, नही तो लडके ऐसी लिहाडी लेगे कि छठी का दूध याद आ जायगा ।

लीक करके—प्रतिज्ञा करके । उ० मैं लीक करके कहता हूँ कि इसका बदला ले कर रहूँगा ।

लीक खिंची होना—मान होना ।

लीक खींच कर—दे० 'लीक करके' ।

लीक गाना—गुण गाना ।

लीक पड़ना—चलने से रास्ते में निशान पड़ जाना । उ० मेरे खेत में लीक पड़ गई है, उसे काँटा रख कर बन्द कर दो ।

लीक पीटना—पुराने रिवाज़ पर चलना । उ० आज लीक पीटने का समय नहीं है ।

लीक-लीक चलना—दे० 'लीक पीटना' । उ० लीक-लीक गाडी चले लीकहि चले कपूत । लीक छोड़ तीनहिं चलें, सायर सिंह सपूत ।

लीचड़ असामी—देने में सुस्त आदमी । उ० लीचड असामी को कौन पसद करेगा ?

लीद करना—घोडे आदि का मल त्यागना । उ० घोडा लीद कर रहा है ।

लीप देना—चौपट कर देना, गडबड कर देना ।

लीपना-पोतना—सफ़ाई करना । उ० जरा उस कोठरी को लीपा पोता करो ।

लीप-पोत कर बराबर करना—१ सर्वनाश करना । उ० पिता जी की कमाई तुमने लीप-पोत कर बराबर कर दी । २ पोचारा फेर देना । मिटा देना । उ० ऐसा लडका है कि सारे लिखे को लीप-पोत कर बरबाद कर दिया । ३. भुला देना । उ० पढा-लिखा लीप-पोत कर बर्बाद न कर देना ।

लीप-पोत देना—दे० 'लीपना पोतना' ।

लीपा-पोती करना—झूठ-सच बोल कर बात को ढँकने का प्रयत्न करना ।

लुण्ड-मुण्ड करना—सिर गंजा करना ।

लुक-छिप कर—गुप्त रूप से । उ० वह लुक-छिप कर ही तो यहाँ रहता है, यदि पुलिस जान जाय तो प्राणों पर आ बने ।

लुक़मा करना—खा जाना, कवर बनाना, हजम कर जाना । उ० शुतुरमुर्ग ऐसा पक्षी है कि उसके सामने जो कुछ पड़ जाय, सबको लुकमा कर जाता है ।

लुक्का लगना—दे० 'लुक्का लगना' ।

लुक्का लगाना—१. झगड़ा लगाना । २. आग लगाना ।

लुगा से होना—दे० 'महीने से होना' । [इसका प्रयोग केवल स्त्रिया करती है ।]

लुच्चा-लुगाड़ा होना—बदचलन होना ।

लुटिया डुबोना या डुबो देना—१. कलक लगाना । उ० उसने अपने परिवार की लुटिया डुबो दी । २ सर्वनाश करना । उ० तुमने तो आज मेरी लुटिया डुबो दी ।

लुटिया डूबना—१. तबाही या बर्बादी आना । २. नुकसान होना । उ० लुटिया डूबी रे हरदास, घोडी दाना खाय न घास । ३. बेइज्जत होना ।

लुटे-पिटे दिन काटना—किसी तरह जीवन बिताना । बहुत तकलीफ़ से दिन बिताना ।

लुढकना-पुढ़कना—१. गिरना-पड़ना । उ० अंधेरा है और पानी बरस रहा है, कहीं लुढक-पुढक जाओगे तो चोट लग जायगी । २ बहुत विनती प्रार्थना करना । उ० लुढकने-पुढ़कने से शायद काम बन जाय ।

लुत्ती लगाना—१. आग लगाना । २ झगड़ा लगाना । उ० तुम्ही ने यह लुत्ती लगाई है ।

लुत्फ़ उठाना—आनद लेना, मजा पाना । उ० उसे मैं कलाकार नहीं मानता, जिसने अपने जीवन का लुत्फ नहीं उठाया ।

लूक लगाना—आग लगाना । उ० ऐसे नीच के मुँह में लूक लगाओ । [यह एक गाली है, जिसका प्रयोग स्त्रियाँ ही विशेष करती है ।]

लूका लगाना—दे० 'लूक लगाना' ।

लूकी लगाना—दे० 'लूक लगाना' ।

लू खाना—गर्मी के दिन हवा लगना ।

लूट खाना—१. दूसरे का धन किसी न किसी प्रकार लेकर उड़ाना । उ० कारिन्दो ने जमींदार का धन लूट खाया । २. सारा धन हडप लेना । उ० चोरो ने बुढिया का धन लूट खाया ।

लूटना-पाटना—लूट-मार करना । उ० चगेजखाँ लूटने-पाटने आया था ।

लूट पड़ना—बिना कीमत के मिलना । सेंत में मिलना । चीजों का मुफ्त में ले लिया जाना । उ० क्या यहाँ लूट पड़ी है, जो हाथ हिलाते आये हो, लेना हो तो दाम लेकर आओ ।

लूता लगाना—दे० 'लुत्ती लगाना' ।

लूती लगाना—दे० 'लुत्ती लगाना' ।

लू मारना—दे० 'लू लगना।'

लू लगना—लू मार देना, गर्म वायु के लग जाने से तबीयत खराब हो जाना। गर्मी के दिनो में गर्म हवा लग जाना। उ० आज बहुत से लोगों को लू लग गई।

लू-लू बनाना—मूर्ख बनाना। उ० सीधे आदमी को लू-लू बना लेते हो, कोई दूसरा रहता तो बतलाता।

लू-लू बोलना—चिढाना, उपहास करना।

लेंडी कुत्ते की मौत मरना—बुरी मौत मरना। दुर्दशा से मरना।

लेंडी कुत्ते की मौत मारना—१ बड़ी बुरी तरह मारना। २. बहुत आसानी से मारना। उ० गुर्ग शेरो पिलग को वह तुर्क, लेंडी कुत्ते की मौत मार आया।

ले आना—साथ लाना। उ० जब आप आइयेगा तो छोटे बच्चे को भी जरूर ले आइएगा।

ले उड़ना—१ लेकर चल देना। उ० वह देखते ही देखते मेरी किताब ले उड़ा। २ छोटी बात को अधिक बना लेना। उ० गाव वाले तो कुछ भी कहो, ले उडते है।

ले-उड़ा होना—धोखेबाज होना।

लेक्चर झाड़ना—व्याख्यान देना। उ० ये महाशय लेक्चर झाडने आये है या कुछ काम करने?

लेखनी उठाना—लिखना शुरू करना। उ० लेखनी उठाने के पहले हमारे लेखको को कम से कम भाषा का ज्ञान तो कर लेना चाहिए।

लेखा जाँचना—हिसाब-किताब देखना। उ० दो-चार माह पर मुनीम का लेखा जाँच लिया करो।

लेखा-जोखा—हिसाब।

लेखा डालना—हिसाब खोलना। उ० अपने यहाँ मेरा भी लेखा डाल लो तो हिसाब करने मे आसानी रहेगी।

लेखा देना—१. हिसाब देना। २. पूरी तरह वर्णन करना।

लेखा बराबर करना—झगडा समाप्त करना। उ० तुम्हारा लेखा बराबर करना यहाँ किसी के बस का नही है, बडे साहब के पास चले जाओ।

लेखा माँगना—हिसाब माँगना।

ले डालना—१. बरबाद करना। उ० आपने मेरे लड़के को भी ले डाला। २. पूरा करना। उ० तुम घबरते क्यों हो, दो मिनट मे इस काम को ले डालूँगा। ३. खतम कर देना, मार डालना। उ० उसके लडके को चोरों ने ले डाला।

ले डूबना—साथ-साथ दूसरे का भी नाश करना। उ० वह अपने तो बरबाद हो ही गया, मेरे भाई को भी ले डूबा।

लेते जाना—लेकर जाना। साथ मे ले जाना। उ० ये चीजे भी लेते जाना।

ले दही दे दही का प्रश्न होना—अपनी गरज का प्रश्न होना। उ० उन्होंने खुद इस चीज के लिए कहा होता तो अवश्य ही अधिक दाम दिया होता; पर तुम स्वय लेकर दिखाने चल रहे हो, अत लेंगे भी तो बहुत कम पर। ले दही दे दही का प्रश्न है न?

ले-दे करना या होना—१. विवाद होना। २ दुर्गति होना।

ले-देकर—१ किसी प्रकार। उ० ले-देकर इन चोरो से जान बचाया। २ सब मिला कर। उ० ले-देकर उसके पास यही इतने रुपये थे। ३. सब हिसाब करके। लेन-देन का हिसाब करके। उ० ले-देकर तुम्हारे नाम पाँच रुपये निकलते है।

ले-दे करना—सवाल-जवाब करना। उ० छोटी सी बात के लिए ले-दे करना ठीक नही था, तुम्ही सह लेते।

लेन-देन न होना—१, कोई सबध न होना। उ० ऐसे दुष्ट आदमियो से लेन-देन ही नही होना चाहिये। २ रुपया-पैसा लेने-देने का व्यवहार न होना। उ० लेन-देन न होती तो वे क्यों दुश्मन बनते?

लेना एक न देना दो होना—कोई सबध न होना। उ० सबसे अच्छे वे सन्यासी ही हैं, जिन्हे ससार से न लेना एक है न देना दो।

लेना-देना—उधार लेने-देने का सम्बन्ध रखना। उ० बड़े-बड़े महाजनो से हमारा लेना-देना चलता है।

लेने के देने पड़ना—जान पर आ पड़ना। उ० अगर यहाँ से न भाग जाओगे तो लेने के देने पड़ेंगे।

लेने-देने में न होना–किसी से कोई सरोकार न रखना। उ० किसी के लेने-देने मे नहीं कोने मे बैठे हैं, तुम्हारा गम सताता है, इसे समझाइए साहब।

ले पालना–अपने यहाँ रख कर पालना। उ० एक अनाथ बच्चा गाँव में आया है, उसे ही ले पालो।

ले बैठना–दे० 'ले डूबना'।

ले रखना–रख छोड़ना। रख लेना। उ० यह कपड़ा मैंने तुम्हारे ही लिए ले रखा था।

लेहाज़ आना–शर्म लगना। उ० सच ही था अहदे वफ़ा लेके दिल उसे देना, आ गया वक्त पै करते हुए तकरार लिहाज़।

लेहाज़ उठा देना–बेशर्म बन जाना।

लेहाज़ टूटना–१ शर्म दूर होना, शर्म न रहना।

लोक-लाज की लोई उतार फेकना–सामाजिक मर्यादा का उल्लघन कर निर्लज्ज हो जाना।

लोक में उजागर होना–लोक मे यश होना।

लोचन भर आना–आँखें भर आना। रोने लगना। उ० उस बुढ़िया की करुण कहानी सुनकर मेरे लोचन भर आये।

लोट जाना–१ मर जाना। उ० एक लाठी मे ही वह लोट गया। २ अचेत होना। उ० भाँग पीते ही वह लोट गया। ३ दीवाला निकल जाना। उ० सेठ जी आज लोट गए।

लोट-पोट करना या कर लेना–१ आराम करना। उ० खाना खाकर कुछ लोट-पोट कर लूँ तो चला जाय। २ मोहित या आकर्षित करना। उ० उसने तो तुम्हें लोट-पोट कर लिया।

लोट-लोट हो जाना–आसक्त हो जाना, रीझ जाना। उ० वह इसे देख कर लोट-पोट हो गया।

लोट होना–१. व्याकुल होना। उ० वह उसके पीछे लोट है। २ आसक्त होना। उ० वह उसकी सूरत पर लोट हो गया है।

लोटा डुबोना–दे० 'लुटिया डुबोना'।

लोटा-थाली तक बिक जाना–दीवाला हो जाना। उ० शराब से इस सेठ की लोटा-थाली तक बिक गई।

लोटा-लोटा कर मारना–जमीन पर गिरा-गिरा कर बुरी तरह मारना। उ० हसरत ने उसको मारा आखिर लुटा-लुटा कर।

लोटे भर पानी को भी न पूछना–कोई महत्त्व न देना।

लोढ़ा ढाल करना–चौपट करना, सत्यानाश करना। उ० झटकि पटकि झट लटकि कसि कीन्ही लोढ़ा ढाल।

लोढ़ा डालना–१ बराबर करना। २. सत्यानाश करना। उ० तुमने सारे काम पर लोढ़ा डाल दिया।

लोथ गिरना–युद्ध में मरे व्यक्तियों का गिरना, लाश गिरना। उ० सन् ४२ में लोथ गिरना देख कर प्राण काँप जाते थे।

लोथ डालना–मार गिराना। उ० उसने झगड़े मे बहुतेरों को लोथ डाला।

लोथ पर लोथ गिरना–जोरों की लड़ाई होना। उ० जब मै युद्ध मे पहुँचा तो लोथ पर लोथ गिर रही थी।

लो दही लाव की बात होना–अपनी ग़रज़ का सवाल होना।

लोन खाना–दे० 'नमक खाना'।

लोन न मानना–नमकहराम होना। उ० उसे कौन अपने घर रखेगा, जिसने अपने पिता का भी लोन न माना। वह भला और किसको मान सकता है।

लोन निकलना–नमकहरामी का फल मिलना।

लोमड़ी के खट्टे अंगूर होना–कोई चीज न मिलने पर उसे बुरा बतलाया जाना।

मारकंडे होना–अमर होना। उ० लोमश मारकंडे नहीं हो, तुम्हे भी एक दिन मरना है।

लोरी देना–गीत गाकर बच्चों को चुप कराना या सुलाना। उ० लोरी देकर बच्चे को सुला दो। माता का लोरी देना मुझे अब भी नहीं भूला है।

लोह-लट्टू–उजड्ड; असंस्कृत।

लोहा करना–कपड़ों पर इस्तरी करना। कपड़ों को कड़ा करके तह लगाना। उ० धोबी मेरे कपड़ों पर लोहा कर रहा है।

लोहा गहना–युद्ध करना। उ० डरपोक व्यक्ति क्या लोहा गहेंगे, यह काम तो वीरों का है।

लोहा बजना–दे० 'लोथ पर लोथ गिरना'।

लोहा बजाना–लड़ाई लेना। उ० मैं उनसे लोहा बजाने को तैयार हूँ।

लोहा मानना–श्रेष्ठता स्वीकार करना।

लोहा लेना–१ लड़ना। २. मुकबिला करना।

लोहू का घूँट पीना–क्रोध रोक लेना। उ० लोहू का घूँट पीकर रह गया नहीं तो उन्हें बतला देता।

लोहे का चना–बहुत कठिन काम। उ० भाई यह तो मेरे लिए लोहे का चना है, तुम कर डालते तो अच्छा होता।

लोहे का सोना बनाना–सारहीन वस्तु या महत्त्व-हीन व्यक्ति को महत्त्वपूर्ण बनाना।

लोहे की कील गाड़ना–अपनी विजय घोषित करना। अधिकार स्थापित करना।

लोहे की छाती कर लेना–कठिन से कठिन कष्ट सहने के लिए दिल कड़ा कर लेना। उ० मेरे तीन-तीन लड़के एक दिन मरे; पर मैंने लोहे की छाती कर ली थी और मेरी आँखें गीली तक न हुईं।

लोहे के घाट उतारना–मार डालना। उ० उसने हँसते-हँसते उसे लोहे के घाट उतार दिया।

लोहे के चने–बहुत कठिन काम। उ० आपके लिए तैर कर गंगा पार करना लोहे के चने है।

लोहे के चने चबाना–१ बहुत अधिक मेहनत से काम करना। उ० इस काम को पूरा करने के लिए आपको लोहे के चने चबाने पड़ेंगे। २. असंभव काम करना। उ० उसे जीतना तो मेरे लिए लोहे के चने चबाना है।

लोहे से आग बरसाना–बहुत वीरता तथा पराक्रम दिखाना।

लौट-पौट हो जाना–दे० 'लोट-पोट हो जाना'।

लौ लगना–धुन सवार होना। उ० उसे हर समय पढ़ने की लौ लगी रहती है।

लौ लगाना–लीन रहना, मग्न रहना। उ० इस समय आपको भगवान में लौ लगानी चाहिए।

लौह पुरुष–बड़े ही दृढ़ व्यक्तित्व का आदमी। [यह अंग्रेजी प्रयोग का अनुवाद है।] उ० पटेल लौह पुरुष थे।

व

वंट होना–दे० 'बट होना'।

वकालत करना–किसी के पक्ष में बोलना।

वकालत चमकना–दे० 'वकालत चलना'।

वकालत चलना–वकालत के पेशे में खूब आमदनी होना। उ० उनकी आजकल वकालत खूब चली हुई है।

वकालत जमना–वकालत के पेशे में लाभ होने लगना। उ० वकालत जम जाय तो एक बढ़िया-सा बँगला लूँ।

वकूअ में आना–१ प्रकट होना। २ घटित होना। उ० यह बात कब वकूअ में आई?

वक़्त आ पहुँचना–१. मरने का वक्त करीब आना। उ० उस बूढ़े का वक़्त आ पहुँचा है। २. उचित समय आना। उ० वक़्त आ पहुँचा है, उसकी दावत कर डालो। ३ निश्चित समय या वक़्त का आना।

वक़्त काटना–किसी तरह समय बिताना। उ० यहाँ वक्त काटने के लिए कुछ खेल का सामान होना चाहिये।

वक्त की चीज–ऋतु-विशेष में मिलने वाली चीज। उ० यार देहात में रहते हो, फली वगैरह वक्त की चीजें तो भेज दिया करो।

वक़्त खोना–१ समय नष्ट करना। उ० वक़्त खोना बहुत बड़ा पाप है। २. ठीक अवसर पर चूकना। उ० वक्त तो खो दिया, भला अब क्या हो सकता है?

वक़्त ताकना–मौका देखना। अवसर पाने की घात में रहना। उ० वक्त ताकते रहो, जब समय आयेगा तो काम तुरन्त बन जायगा।

वक़्त पर–अवसर आने पर। उ० इसे रख छोड़ो, वक़्त पर काम आयेगी।

वक़्त हाथ से दे देना–अवसर चूकना। उ० वक़्त हाथ से दे दिया तो बैठ कर पछताओ।

वक्तृता झाड़ना–भाषण देना।

वक़्फा देना–छुट्टी देना।

वक़्फा मिलना–१. स्कूलों में पढ़ने के बीच में अवकाश मिलना। २. छुट्टी मिलना।

वक़्फा होना–छुट्टी होना।

वचन–[वचन के मुहावरों के लिए 'बचन' के मुहावरे देखिए।]

वचन न जाना–दिये हुए आश्वासन या प्रतिज्ञा का पूरा होना।

वचन प्रमाण करना–वचन सत्य प्रमाणित करना।

वचन-बान से मारना–अप्रिय बातों से पीडा पहुँचाना।

वचन में बँधना–प्रतिज्ञाबद्ध होना, वचनबद्ध होना।

वचन लगना–बात का असर होना।

वज़न रखना–महत्त्व रखना। [यह अंग्रेजी मुहावरा To carry weight का छायानुवाद है।] उ० आपकी यह दलील कोई वज़न नहीं रखती।

वज़न लेना–तौलना। [यह अंग्रेजी मुहावरा To take the weight का अनुवाद है।] उ० इसका भी वजन ले लो, शायद डाक से भेजा जा सके।

वजा होना–मुजरा या मिनहा होना। उ० वह रुपया इसी मे वजा हो गया।

वजूद पकड़ना–१ जाहिर होना। उ० अब तो इस चीज ने वजूद पकड़ ली, इसे छिपाना व्यर्थ है। २. होना। स्थित होना।

वधिक की बाँसुरी का मृग बनना–१. पूरी तरह वश मे होना। २. धोखे मे फँस जाना।

वबा आना–१ हैज़ा आदि बीमारियो का आना। २. किसी महामारी का आना। उ० हज़ारों मर गए उस पर, सिसकते है लाखों। अजीब रोग है या रब यह क्या वबा आई।

वबालेजान हो जाना–१ बोझ मालूम देना, बुरा लगना। २. जान आफ़त मे आना।

वर्षा होना–१. बहुत अधिक परिमाण मे ऊपर से गिरना। उ० उसकी शादी मे कल वहाँ जहाज़ से फूलो की वर्षा हुई। २. बहुत अधिक मिलना। उ० आजकल खेती में रुपयों की वर्षा हो रही है।

वली खंगर–धर्मध्वजी, साधू होने का झूठा दावा रखने वाला। उ० आजकल वली खंगरों की कमी नहीं है।

वसीला पैदा करना–आमदनी का रास्ता निकालना। उ० कोई वसीला पैदा करो तो कलकत्ता चला जाय।

वसूल पाना–दूसरे से जो पाना हो, वह मिल जाना। उ० मैने उससे सब रक़म वसूल पाई।

वस्त्र-मोचन होना–सब कुछ चोरी चला जाना।

वह दिन न रह जाना–पहले की-सी स्थिति न रह जाना।

वाक़ा होना–घटित होना। उ० यहाँ तो एक विचित्र किस्सा वाक़ा हुआ है।

वाजिबी खर्च–उचित खर्च। उ० जो वाजिबी खर्च होगा, वह तो करना ही पड़ेगा।

वाजिबी बात–उचित बात। उ० वाजिबी बात कहो, किसी से डरो मत।

वानी फूटना–मुँह से शब्द निकलना।

वादाखिलाफ़ी करना–१. दे० 'वादा टालना'। २. बात देकर उस पर से हट जाना।

वादा टालना–प्रतिज्ञा भंग करना। बात देकर टाल देना। उ० वादा टालोगे तो वे भला क्या कहेंगे ?

वादा पूरा करना–प्रतिज्ञा पूर्ण करना। वचन को पूरा करना। उ० वादा पूरा करने वालों का सब लोग विश्वास करते है।

वादा रखना–प्रतिज्ञा कराना। उ० उनसे पहले वादा रखा लो, फिर मैं देख लूँगा।

वादी पर आना–अपने हठ पर आना, जिद्द पर आना। उ० अपनी वादी पर आऊँ, तो अभी नाच नचा दूँ।

वापस आना–लौट कर आना। उ० वे कल गये और आज वापस भी आ गये।

वापस करना–१ लौटाना, फेरना। उ० यह कपड़ा ठीक नही है, इसे वापस कर दो। २. लेकर फिर दे देना। उ० किताब वापस की या नही ?

वापस जाना–आकर लौट जाना। उ० उसका भाई आया था, पर तुरत वापस गया।

वापस होना–१. लौट जाना। उ० वे क्यो तुरत ही वापस हो गए ? २. खरीदी चीज का लौटाया जाना। उ० वह घड़ी वापस हुई या

नहीं । ३. दी हुई वस्तु का दिया जाना या मिलना । उ० बारात का सामान वापस हुआ या नहीं ?

वापिस–['वापिस' के मुहावरों के लिए 'वापस' के मुहावरे देखें ।]

वाम अंग फरकना–शरीर के वाम अंग में विशेष प्रकार का स्पन्दन (स्त्रियों के लिए शुभ और पुरुषों के लिए अशुभ माना जाता है ।)

वाम वाणी बोलना–कटु वचन बोलना ।

वाम होना–१ प्रतिकूल होना । २. दुष्ट होना ।

वायदा करना–दे० 'वादा करना' ।

वार ओछा पड़ना–लड़ाई में वार का भरपूर हाथ न पड़ना ।

वार करना–हमला करना । उ० आज उस गाँव पर एक भेड़िये के झुण्ड ने वार किया था ।

वार खाली जाना–चाल सफल न होना । उ० मैंने उसे अपने वश में करने के लिए बड़ी कोशिश की, पर वार खाली गया ।

वार न लेने देना–दम भरने की भी फुर्सत न देना । उ० आप नौकरों को वार भी नहीं लेने देते ।

वारि पर भीत उठाना–असंभव काम करने का प्रयत्न करना ।

वारियाँ जाना–न्यौछावर हो जाना । उ० ऐसे भोले लड़के पर वारियाँ जाऊँ । [स्त्रियाँ प्यार में कहती है ।]

वारी जाना–दे० 'वारियाँ जाना' ।

वारी होना–दे० 'वारियाँ जाना' ।

वारे-न्यारे करना–१. खूब नफा कमाना, माला-माल होना । उ० उन्होंने थोड़े ही दिनों में वारे न्यारे कर लिये । २ सत्यानाश करना । ३ निपटा देना, खतम करना ।

वावेला करना–१ शोर मचाना । २ झगड़ा करना । ३ रोना-पीटना ।

वास्ता देना–दुहाई देना, बीच में डालना । उ० मैं खुदा और रसूल का वास्ता देकर यह कह रहा हूँ ।

वास्ता पड़ना–काम पड़ना । उ० वास्ता पड़ेगा तो दौड़े यहीं आओगे ।

वास्ता पैदा करना–मिलने का ढंग निकालना । उ० उससे मिलने का कोई वास्ता पैदा करो ।

वास्ता रखना–संबंध रखना । उ० अब आपसे मैं कुछ भी वास्ता न रखूँगा ।

वाह-वाही होना–तारीफ़ होना ।

वाही-तबाही फिरना–१ बेकार फिरते रहना । उ० तुम क्यों वाही-तबाही फिरते रहते हो, कुछ काम क्यों नहीं करते ? २ बरबाद हो जाना । उ० उन पर वाही-तबाही फिर गई ।

वाही-तबाही बकना–बेहूदा या बेकार बातें बकना ।

विचार-सागर में डूबना–विचारों में लीन होना ।

विजय करना–दे० 'विजय करना' ।

विधना के अक्षर–दे० 'बिधना के अक्षर' ।

विपत्ति उठाना–संकट या कष्ट सहना ।

विपत्ति काटना–कष्ट के दिन बिताना ।

विपत्ति झेलना–दे० 'विपत्ति उठाना' ।

विपत्ति ढहना–एकबारगी आफ़त आ जाना ।

विपत्ति मोल लेना–व्यर्थ में अपने ऊपर आप झंझट मोल लेना ।

विपत्ति सिर पर लेना–दे० 'विपत्ति मोल लेना' ।

विरह की कांती होना–विरह को दूर करने का साधन होना ।

विश्वास में विष घोलना–विश्वास के भाव को ठेस पहुँचाना ।

विष का घूंट पीना–अत्यन्त अप्रिय बात को सह जाना ।

वेद-वाक्य मानना–पूर्ण सत्य मानना, भगवान की आज्ञा मानना । उ० आपकी हर बात को मैं वेद-वाक्य मानता हूँ । आप जैसा ही कहेंगे, वैसा ही करूँगा ।

वेश धारण करना–किसी के स्वरूप या पहनावे की नकल करना ।

वेश-भूषा–कपड़े इत्यादि पोशाक । उ० उसकी वेश-भूषा अच्छी है ।

वैर–वैर के मुहावरों के लिए 'बैर' देखिए ।

व्यंग्य करना–दे० 'व्यंग्य छोड़ना' ।

व्यंग्य कसना–दे० 'व्यंग्य छोड़ना' ।

व्यंग्य छोड़ना–चुभती हुई बात कहना । तानाज़नी करना । उ० मुझ पर ही व्यंग्य छोड़ना है ?

व्यवस्था देना–शास्त्र-विधान बताना । उ० इस विषय में मनु भगवान क्या व्यवस्था देते है ?

व्याधि-मंदिर होना–शरीर में बहुत बीमारियाँ होना । उ० यह भिखारी तो पूरा व्याधि-मंदिर हो गया है । इसके बचने की आशा नहीं

व्रत ठानना–नियम लेना, प्रतिज्ञा करना ।

श

शंकर की लकड़ी–ईख। [कहारो की भाषा मे प्रयुक्त होता है। मूलतः इसका रूप सक्कर या शक्कर की लकड़ी रहा होगा।]

शंकर होना–अत्यन्त सीधा होना। उ० उनका लडका तो शकर है, उसने झगडा हर्गिज़ नही किया होगा।

शंख बजना–१ विजय होना। उ० उन लोगो का शख बज गया, अब वे झडा भी फहराये। २ दिवाला निकलना। उ० इलाहाबाद बैक मे शख बज गया।

शंख बजाना–१ आनन्द मनाना। उ० शत्रुओं की हार पर कौन नही शंख बजाता? २ विजय करना। ३. पछताना। उ० सारा रुपया वह ले गया, अब आप बैठ कर शख बजाइए।

शऊर पकड़ना–१. तमीज़ सीखना। उ० ज्यो-ज्यो लडका बडा हो रहा है, शऊर पकड रहा है। २ बिगड़ना (व्यग मे)। ३ आप तो खूब शऊर पकड़ रहे है।

शक डालना–शुबहा पैदा करना। उ० होने-हवाने के विषय मे शक न डालिए, मुझे करने दीजिए।

शकुन-तकिया–वह शब्द या वाक्य जिसे किसी-किसी को प्रत्येक बात मे कहने की आदत होती है। उ० उसकी 'समझे' शकुन-तकिया है। ['का नाम है कि', 'मतलब कि', 'गॅवला जो है कि', 'रामजी', 'जे बासनीक', 'माने', 'समझे' आदि बहुत-सी शकुन-तकिया प्रसिद्ध है। शुद्ध शब्द 'सखुन-तकिया' है। इसे तकिया-क़लाम भी कहते है।]

शकुन देखना–शुभाशुभ विचार करना। ज्योतिष या कुछ अन्य प्रचलित आधारों से भविष्य के बारे मे शुभ-अशुभ या ऐसी ही बातो का विचार करना।

शकुन विचारना–दे० 'शकुन देखना'।

शक्कर से मुँह भरना–१. किसी खुश-खबरी के अवसर पर मिठाई खिलाना। २. मुँह मीठा करना।

शक्ल बनाना–१. चित्र बनाना। उ० उसने एक शेर की शक्ल बनायी है। २. रूप बनाना। उ० यह क्या पागलों-सी शक्ल बना रक्खी है।

शक्ल बिगाड़ना या बिगाड़ देना–१ खूब मारना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो ऐसी शक्ल बिगाड़ूंगा कि होश करोगे। २ सूरत खराब करना। उ० चेचक ने बच्चे की शक्ल बिगाड दी।

शक्ल से बेज़ार होना–किसी की सूरत मे घृणा करना।

शगुन लेना–दे० 'शकुन देखना'।

शगुन होना–१. अच्छा फल निकलना। २ मॅगनी रीति का अदा होना। ३ दशहरे के दिन नये वर्ष का लगान लेना आरभ होना।

शगूफ़ा खिलना–कोई नया और विलक्षण घटना होना। उ० आज मेरे मुहल्ले मे अच्छा शगूफ़ा खिला। उनके घर की दोनो लड़कियाँ गायब हैं।

शगूफ़ा खिलाना–नया रग खिलना, कोई नई और विलक्षण घटना कर बैठना। उ० तुमने तो यहाँ आकर अच्छा शगूफ़ा खिलाया।

शगूफा दिखाना–आफ़त दिखाना। बला मे फँसना। उ० तुख्म उल्फत मे शगूफा यह दिखाया मुझको। दश्ते पुरखार के काँटो पर लिटाया मुझको।

शड़पा मारना–एकदम घोट जाना। उ० शुतुर-मुर्ग हरएक चीज शड़प्पा मार जाता है।

शत्रु को युद्ध में पीठ न दिखा–कभी हार न होना।

शनाख़्त करना–पहचानना। उ० शनाख़्त करके अपना सामान ले जाओ।

शनि-दृष्टि पड़ना–बुरी दृष्टि पड़ना।

शपथ उठाना–क़सम खाकर प्रण करना। उ० शपथ उठाकर तो गया है, देखो क्या करता है?

शफ़क़ फूलना–आसमान मे लाली फैलना। उ० आज सुबह का शफ़क फूलना बडा सुहावना लग रहा है।

शफ़ा देना–अच्छा करना, नीरोग करना। उ० मुझे शफ़ा देने वाला कोई नही मालूम होता।

शब्दों के कोड़े लगना–भला-बुरा कहा जाना।

शब-बास होना–१. रात को रहना। विश्राम करना। २. रात भर सोना।

शबाब आना—बहुत अधिक सुन्दर होना ।

शब्दों के महल बनाना—दे० 'हवाई किले बनाना' ।

शब्दों में बांधना—शब्दों द्वारा प्रकट करना ।

शमा बढ़ाना—बत्ती बुझाना । चिराग गुल करना ।

शरई दाढ़ी—बहुत लंबी दाढ़ी । उ० उसकी शरई दाढ़ी बड़ी खूबसूरत लगती है ।

शरई पैजामा—ऊँचा पैजामा । उ० शरई पैजामा कैसे पहनते हो ?

शर चढ़ना—पति की चिता पर चढ़ कर पति के साथ जल मरना ।

शरण ताकना—आश्रय चाहना ।

शरण रखना—कृपापात्र बनाना, सरक्षण मे लेना ।

शरम खाना—१. संकोच खाना । उ० इसमे शरम खाने की क्या बात है ? २. निर्लज्ज होना । उ० तुम तो शरम खा गए हो, तुम्हारा मुक़ाबिला कौन कर सकता है ?

शरम रखना—१. आबरू बचाना । उ० किसी प्रकार मेरी शरम रख लो, तुम्हारा भगवान भला करेगा । २. लिहाज़ रखना, अदब रखना । उ० बड़ों के सामने कुछ तो शरम रखो ।

शरम रहना या रह जाना—इज्जत रहना । उ० किसी तरह शरम रह गई ।

शरम से गड़ना या गड़ जाना—लज्जा से गड जाना । उ० उसी दिन से वह मुझे देखता है तो शरम से गड जाता है ।

शरम से पानी-पानी होना—बहुत लज्जा आना । अत्यन्त लज्जित होना । उ० आज हम लोगों ने उसे ऐसा बनाया कि वह शरम से पानी पानी हो गया ।

शरमिंदगी उठाना—लज्जित होना । उ० आपकी वजह से हमें भी शरमिंदगी उठानी पडी ।

शरह करना—टीका करना । उ० आजकल वे किसी फ़ारसी क़िताब की शरह कर रहे है ।

शराब ढलना—दे० 'बोतल ढलना' ।

शरारत का पुतला—बहुत शरारती ।

शरीक करना—मिलाना, रखना । उ० मुझे भी अपने रोजगार मे शरीक कर लीजिए ।

शरीक रहना—शामिल रहना । मैं भी आपके काम में शरीक रहूँगा ।

शरीक होना—दे० 'शरीक रहना' ।

शरीर गलना—शरीर का क्षीण होना ।

शरीर छूटना—मरना । उ० आज उसका शरीर छूट गया ।

शरीर घुला जाना—चिंता के कारण शरीर का दुर्बल हुआ जाना ।

शर्त बाँधना—बाज़ी लगाना ।

शर्फ ले जाना—आगे निकल जाना, बढ़ जाना ।

शर्बत का-सा घूंट पीना—कोई द्रव शर्बत की तरह मजा लेते हुए पीना । उ० तुम्हारे लिए मैं ज़हर भी शर्बत का-सा घूंट पी सकता हूँ । मीरा और सुकरात ने ज़हर को शर्बत का-सा घूंट पीया ।

शर्म भून कर खा जाना—निर्लज्ज हो जाना ।

शर्मसार करना—शर्मिंदा करना ।

शर्म से पानी-पानी होना—लज्जा से डूब जाना । बहुत शर्मिंदा होना ।

शल हो जाना—थक जाना । थक कर चूर हो जाना ।

शव की तरह जीना—पौरुषहीन होकर या निर्लज्ज होकर जीना ।

शशदर रहना—आश्चर्य मे पड़ जाना, हैरान हो जाना ।

शस्त बाँधना—निशाना बेधने के लिए सीध लगाना । निशाना दुरुस्त करना । उ० शस्त बाँध कर बन्दूक़ का घोड़ा दबाओ ।

शस्त लगाना—दे० 'शस्त बाँधना' ।

शस्त्र डाल देना—हार मान लेना ।

शहद की छुरी होना—ऊपर से मीठा एवं मृदुल और भीतर से कटु तथा भयावह होना । उ० आप शहद की छुरी है, आपको मैं खूब जानता हूँ ।

शहद लगा कर अलग होना—आग लगा कर दूर होना । झगड़ा लगा कर हट जाना । उ० आप तो शहद लगाकर दूर हो गये, यहाँ मेरी जान आफ़त में पड़ी है ।

शहद लगा कर चाटना—बेकार रखना । कुछ उपयोग न कर सकना । उ० पास तो हो गए, अब सनद को शहद लगा कर चाटो ।

ाहादत देना–गवाही देना । उ० मेरे खिलाफ़ शहादत दी तो खैर नहीं ।

ाहादत लेना–गवाही लेना ।

ाहीद होना–कुर्बान होना । सत्य के लिए जान देना । उ० सन् ४२ के आन्दोलन मे कितने ही भारतवासी शहीद हो गए ।

ॉक गुज़रना–कष्टकर होना, हृदय पर धक्का लगना । ['शॉक' शब्द अँग्रेज़ी शब्द Shock है ।] उ० छोटे लड़के के मरने से उस पर बहुत शॉक गुजरा ।

ाख निकलना–१. ऐब निकलना, बखेडा होना । २ बढना ।

ाख निकालना–१ दोष देना । २ नुक्ताचीनी करना । ३ झगड़ा खड़ा करना ।

ाख लगना–गर्व होना ।

ाख़ लगाना–१. कलम लगाना । डाली काट-कर जमीन मे गाड़ना । उ० इसकी शाख लगानी पड़ेगी, क्योंकि बीज नही होते । गुलाब की शाख़ लगा दो। २. सम्मान करना उ० मै नहीं शाख लगाऊँगा तो क्या कोई विलायत से आयेगा ?

ाखसाना पैदा हो जाना–झगड़ा खड़ा हो जाना । उ० टुकड़े दिल है किस कदर गुस्ताख नाना हो गया, ज़ुल्फ़ में पैदा कहाँ का शाखसाना हो गया ।

खा बढ़ाना–विस्तार करना ।

खें निकलना–१. पेड़ का टहनियों मे विक-सित होना । २. ऐब निकालना ।

खोच्चार करना–विवाह के समय वंश-परंपरा का वर्णन करना ।

गिर्द करना–चेला बनाना । उ० मैं तुम्हारे से दुष्ट को शागिर्द करना नही चाहता ।

दियाना देना–दे० 'शादियाना बजाना' ।

दियाना बजाना–प्रसन्नता के उपलक्ष में बधाई जाना ।

दी मर्ग हो जाना या होना–किसी बात की प्रसन्नता मे एक-ब-एक मर जाना । उ० दम शादीए मर्ग हो जाना तेरे खत के जवाब देखा ।

न घटना या घट जाना–इज्जत मे कमी आना । उ० अगर तुम मेरे यहाँ खा लोगे तो क्या तुम्हारी शान घट जायगी ?

शान चढ़ाना–१. किसी एक बात को और बढ़ाना, तीव्र बनाना । २. खूब बनाव-सिंगार करना । ३. रगड कर तेज़ करना । ४. उत्सा-हीन को उत्तेजित करना ।

शान जाना–दे० 'शान घटना' ।

शान मारना–शान की बातें करना ।

शान मारी जाना–दे० 'शान मे फ़र्क आना' ।

शान में फ़र्क आना–इज्जत मे कमी आना । उ० यदि आप मेरा काम कर देगे तो आपकी शान मे कौन फ़र्क आ जायगा ? शान मे फ़र्क आने का अदेशा हो तो आप मुझ गरीब के दरवाज़े न आया करें ।

शान में बट्टा लगना–दे० 'शान मे फ़र्क आना' ।

शाना से शाना छिलना–कंधा से कंधा छिलना । अत्यन्त भीड होना । उ० मेले मे इतनी भीड थी कि शाना से शाना छिल रहा था ।

शाबासी देना–वाहवाही देना, उत्साहित करना । उ० वह जीत कर आया है, शाबासी दे आओ ।

शाबासी लूटना–प्रशंसित होना ।

शाम उतरना–शाम होना, दिन ढलना ।

शाम की सुबह करना–रात काटना या व्यतीत करना ।

शामत आना–१. विपत्ति आना । २ पीटे जाने की घड़ी आना । उ० मालूम होता है कि तुम्हारी शामत आई है ।

शामत का घेरा–जिसकी दुर्दशा का समय आया हो । उ० वह बेचारा शामत का घेरा है, उसकी कुछ सहायता कर दो ।

शामत का मारा–दे० 'शामत का घेरा' ।

शामत में फँसना–आफत या विपत्ति मे फँसना ।

शामत सवार होना–दे० 'शामत आना' ।

शामत सिर पर खेलना–दे० 'शामत आना' ।

शाम फूलना–शाम को पश्चिम मे ललाई का प्रकट होना ।

शामिल हाल–दुःख-सुख का साथी, सच्चा साथी । उ० वही तो एक मेरा शामिल हाल है, तो साथी किसे कहें ?

शामी लगाना–घोडे के पैर मे नाल लगाना । उ० इक्के के घोड़े मे शामी लगाना बहुत ज़रूरी है ।

शासन की कमर ढीली पड़ना–शासन में दुर्बलता आना।

शिकंजे में कसना–अपने वश में कर लेना, जाल में फँसाना।

शिकंजे मे खींचना–१. बहुत कष्ट देना। उ० शिकजे मे खीचने मे तो अच्छा होगा कि जान से ही मार दो। २ अधिकार या वश मे लाना। उ० पहले मुझे उन्हे शिकंजे मे खीचने-दो, फिर तो सारा काम मै आनन-फानन करा लूंगा।

शिकन डालना–१ कपडो मे तह डालना। उ० कपडों मे शिकन डाल कर ठीक से रख दो। २ मरोड़ना, कड़ापन खराब करना। उ० भला बतलाओ, इस पेंट को क्या खाक पहन कर जाऊँ? तुमने तो शिकन डाल कर इसे लुगरी कर डाला।

शिकम शेर होकर खाना–खूब पेट भर खाना।

शिकस्त खाना या खा जाना–हारना। उ० पृथ्वीराज ने मुहम्मद गोरी से शिकस्त खाई।

शिकस्त देना या दे देना–हराना। उ० उसने दुश्मन को खूब शिकस्त दी।

शिकायत करना–निन्दा करना। उ० वह लोगो की झूठी शिकायत करता रहता है।

शिकायत रफा करना–१. रज मिटाना। मन-मुटाव दूर करना। उ० उनकी मेरी-शिकायत रफा कर दो तो मै उनके यहाँ जाया करूँ। २ दुःख मिटाना। रोग मिटाना। उ० कोई ऐसा हकीम नही मिलता, जो मेरे पेट की शिकायत रफा कर सके।

शिकायतों का दफ्तर खोल देना–ढेर सारी शिकायते करना।

शिकार फँसाना–झूठ-सच कह कर लाभदायक व्यक्ति को फँसाना।

शिकार बनना–१ कुप्रभाव मे आना। २ लक्ष्य बनना।

शिकार हाथ लगना–१. धनी-मानी का वश मे होना। उ० अगर इस बार कोई शिकार हाथ मे लग गया तो मेरा सब काम बन जायगा। २. आखेट मे किसी शिकार का मिलना। उ० आज तो एक भी शिकार हाथ नहीं लगा।

शिकार होना या हो जाना–१. अधिकार मे होना। उ० उनका शिकार होना मेरे लिए बड़ा कष्टप्रद होगा। २. प्रेम मे फँसना। उ० वे तो उस दुष्टा के शिकार हो गए। ३. मुब्तिला होना। उ० मैं आजकल कई रोगों का शिकार हूँ।

शिकार फँसाना–मोटा असामी फाँसना। उ० मानते है उस्ताद कि तुम्हारे जोड का शिकार फँसाने वाला दुनियाँ में दूसरा नही है।

शिकारी ब्याह–शिकारी की तरह किया गया ब्याह। इसे अपने शास्त्रो मे गंधर्व विवाह की संज्ञा दी गई है। उ० महाभारत-काल में अपने यहाँ बहुत से शिकारी ब्याह हुए थे।

शिकार हाथ से जाता रहना–लाभदायक असामी का वश से निकल जाना।

शिखर छूना–चरम स्थिति को पाना।

शिगूफ़ा खिलना–दे० 'शगूफा खिलना'।

शिगूफ़ा खिलाना–दे० 'शगूफा खिलाना'।

शिगूफ़ा छोड़ना–दे० 'शगूफा खिलाना'।

शिगूफा फूलना–दे० 'शगूफा खिलना'।

शिप्पा जमना या जम जाना–चास लगना, सयोग होना। उ० अगर मेरा यहाँ शिप्पा जम गया होता तो काफी आमदनी हो जाती।

शिरकत करना–दे० 'शरीक रहना'।

शिरोधार्य करना–आदर के साथ स्वीकार करना। उ० आपकी आज्ञा शिरोधार्य करता हूँ।

शिलग मारना–छलाँग मारना।

शिष्टाचार करना–१ मारना-पीटना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो यही ऐसा शिष्टाचार कर दूंगा कि याद रखोगे। २. तहजीब से पेश आना। ३ बहुत बनावट या तकल्लुफ करना।

शीत मारना–ठड का गहरा कुप्रभाव होना।

शीर और शक्कर होना–बिल्कुल घुलमिल जाना। उ० वे दोनो तो जैसे शीर और शक्कर हो गये है।

शीराज़ा खुलना–१. इतजाम खराब होना। २. सिलाई खुल जाना।

शीराजा टूटना–दे० 'शीराजा खुलना'।

शील तोड़ना–१. निठुर होना। क्रूर बनना। उ० मै ऐसा काम नही कर सकता, जिसमे शील तोड़ना पड़े। २. अशिष्टता करना।

ा होना–नम्रता न होना। शालीनता का व होना। उ० उसके पास शील तो है वह कैसे किसी का आदर करे।

नवाना–नत होना, अधीनता स्वीकार ा। प्रणाम करना।

हल का कुत्ता–१. दीवाना, पागल। उ० ज्ञानी होने पर मनुष्य का दिमाग शीश-ा का कुत्ता हो जाता है। २. घबराया , परीशान, किंकर्तव्य-विमूढ़।

ाशा–बहुत नाजुक। उ० शीश-वाशा है, इसे मै साइकिल पर नही ले जा ा।

सुंघाना–बेहोश करना। उ० शीशी कर मेरा ऑपरेशन कीजियेगा।

में उतारना–१ मोहित करना। २ भूत ना।

में बाल पड़ना–फूटने से शीशे मे बाल जैसा का निशान पड़ जाना। उ० इस शीशे बाल पड़ गया, तस्वीर के लिए अब ा शीशा मँगाओ।

ा अदा करना–धन्यवाद देना। उ० ने मेरे लिए इतनी तकलीफ उठाई, उसके मै आपका शुक्रिया अदा करता हूँ।

ुर्ग होना–१ विपत्ति के समय मुँह तोप निश्चित हो जाने वाला होना। मूर्ख । २. लबा और मूर्ख होना।

व्यवहार–बेमुरौव्वती का व्यवहार।

मटना–कष्ट का दूर होना।

'हना–कष्ट पाना।

ोना–वेदना होना।

पैदा करना–मशहूर होना। उ० तीय सैनिको ने अच्छी शुहरत पैदा की है।

किरकिरी होना–अभिमान चूर-चूर होना। बहुत डीग हॉक रहा था, पर एक ही ड़ मे सब शेखी किरकिरी हो गई।

जताना–बड़ाई जाहिर करना, डीग ना। उ० यहाँ शेखी न जताइए। आपकी रग से मै वाकिफ हूँ।

झाड़ना–दे० 'शेखी निकलना'।

निकलना या निकल जाना–नीचा देखना। ानित होना। उ० घबराइए नही, आपके ा की तरह आपकी भी शेखी दो-चार रोज ाकल जायगी।

शेख़ी बघारना–दे० 'डीग हाँकना'।

शेख़ी मारना–दे० 'डीग हाँकना'।

शेख़ी हाँकना–दे० 'डीग हाँकना'।

शेर का बच्चा शेर होना–बहादुर व्यक्ति की बहादुर सतान होना।

शेर की आँख से देखना–शत्रुता की नज़र से देखना। उ० क्यो शेर की आँख से देख रहे है, मैने भला आपका क्या बिगाड़ा है?

शेर की मांद में घुसना–ख़तरनाक काम करना।

शेर के कान कतरना–बहुत वीर तथा साहसी होना। उ० उससे लोहा लेना शेर के कान कतरना है। भाई वह डाकू तो शेर के कान कतरता है।

शेर के दाँत गिनना–१ कठिन काम करना। उ० इस नदी को पार करना शेर के दाँत गिनना है। २ दे० 'शेर के कान कतरना'।

शेर-दिल होना–बहादुर होना।

शेर-बकरी का एक घाट पानी पीना–सबल-निर्बल सबको एक समान अधिकार और सुविधा मिलना।

शेर मारना–१ बहादुरी का काम करना। उ० आप ऐसे डरपोक के लिए शेर मारना असभव है। २ कायर या डरपोक होना (व्यग्य)। बहुत छोटा काम करना उ० आप शेर मारते है, इसका मुझे खूब पता है।

शेर से पंजा लेना–सशक्त का मुकाबिला करना।

शेर होना–निडर या निर्भीक होना, बिना डर का बनना। उ० अपने घर तो कमज़ोर भी शेर हो जाते है। अपने घर पर तो कुत्ते भी शेर होते है।

शैतान उठाना–१. झगड़ा खड़ा करना। उ० बेकार मे शैतान न उठाओ, तुम्हारा तो कुछ न होगा, यहाँ खून-खराबा हो जायगा। २ शोर मचाना। उ० शैतान उठाना हो तो मै पुस्तक बन्द कर दूँ।

शैतान का कान फूंकना–बुरे विचार मे लीन होना। उ० मै समझ रहा हूँ कि शैतान ने आपका कान फूँक दिया है, आप गिरने से बाज़ नही आ सकते।

शैतान का धक्का–बुरी प्रेरणा। उ० शैतान के धक्के से मनुष्य ख़राब हो जाता है।

शैतान का बच्चा–१. नीचा। उ० शैतान के बच्चे का छुआ पानी मैं नहीं पी सकता। मेरे यहाँ तुम जैसे शैतान के बच्चे की आवश्यकता नही। २. एक गाली। ३. प्रेमपूर्ण शब्द।

शैतान की आँत–बहुत लम्बी। उ० यह डोरी है या शैतान की आँत ?

शैतान की खाला–झगडालू औरत। उ० इसका स्वभाव मैं जान गया, यह तो शैतान की खाला है। इस शैतान की खाला को अपने घर मे न आने दिया करो।

शैतान की फटकार पड़ना–बुरी दशा होना।

शैतान के कान काटना–शैतान से भी चतुर होना। उ० तुम तो शैतान के भी कान काटते हो, अब तुम्हारे नजदीक वह नही आ सकता।

शैतान चढ़ना–दे० 'शैतान लगना'।

शैतान लगना–१ भूत सवार होना। उ० उस औरत को शैतान लगा है, इसी से वह अट-शंट बक रही है। २ बदमाशी सूझना। उ० शैतान लगा है क्या, जो ऐसा कर कर रहे हो ?

शोख़चश्मी करना–१. शरारत करना। उ० उन्ही ने परदे मे की शोखचस्मी बहुत हमने तो आँखो की हया की।

शोभा की नदी उमड़ना–शोभा का आधिक्य होना।

शोभा देना–१. सुन्दर लगना। उ० सदर सड़क पर आपका मकान कितना शोभा दे रहा है ? २ उचित लगना। उ० आपके लिए ऐसा कहना शोभा नही देता।

शोर मचाना–बहुत जोर से चिल्लाना। उ० सध्या समय लड़के यहाँ बहुत शोर मचाते है।

शोरिश बरपा करना–फ़साद खडा करना। दगा मचाना।

शोरे की पुतली–बहुत गोरी स्त्री। उ० यह औरत तो शोरे की पुतली है।

शोला-भभूका होना–क्रोध मे आ जाना। लाल हो जाना। उ० यह सुनते ही शोला-भभूका हुई। लगी कहने है बला क्या हुई।

शोहदपन करना–दे० 'शोहदपन फैलाना'।

शोहदपन फैलाना–बदमाशी करना। लुचपन करना।

शौक चर्राना–दे० 'शौक पैदा होना'।

शौक पूरा करना–इच्छा पूरी करना। दिल की वासनाओ को तृप्त करना। उ० जवानी में सब शौक पूरा कर लो, नही तो बुढ़ापे में पछताओगे।

शौक पैदा होना–चाह होना। जोर की चाह होना। उ० जब तुमको मिर्जई पहनने का शौक पैदा हुआ है तो सिलवा लो, यो उसे आजकल लोग पसद नही करते।

शौक फ़रमाना–उपभोग करना। उ० सिगरेट हाजिर है, शौक फरमाइए।

शौक मिटाना–दे० 'शौक पूरा करना'।

शौक से–१. आनन्द से। उ० आप मेरे यहाँ शौक से रह सकते है। २. चाह से। उ० वह आम शौक से खाता है।

श्मशान जगाना–श्मशान मे बैठकर मंत्र सिद्ध करना।

श्रम पाना–थकना, थक जाना।

श्राद्ध करना–मनुष्य की अन्तिम क्रिया या अतिम संस्कार करना। उ० अपने पिता जी का श्राद्ध कब कर रहे हो ?

श्री करना–१. शुरू करना। उ० पहले काम को श्री करो, फिर देखा जायगा। २. माथे पर टीका लगाना।

श्रीगणेश करना–कोई काम शुरू करना। भगवान का नाम लेकर श्रीगणेश करो, फिर देखा जायगा।

श्रुतिपथ में आना–सुनना। उ० यह बात तो आपके श्रुतिपथ मे अवश्य आई होगी।

श्रेय पाना–किसी काम के करने की बड़ाई पाना। उ० भारत को स्वतंत्र करने का श्रेय गांधी जी ने पाया।

श्वास-कास–दमा-खाँसी। उ० वह श्वास-कास मे परीशान है।

श्वास खींचना–साँस रोकना। साँस खीच कर भीतर रोकना। उ० श्वास खीच कर इसे उठाओ तो शायद उठ जाय। श्वास खीच कर डूबो।

श्वास छूटना–मरना। उ० बहुत दिनो की बीमारी के बाद आज उसका श्वास छूटा।

श्वास चढ़ाना–दे० 'श्वास खींचना'।

श्वास रहते–जब तक जान रहे। आजीवन। उ० श्वास रहते मैं किसी से डर नही सकता। श्वास रहते मैं सेवा करने को प्रस्तुत हूँ।

श्वास रोकना–हवा भीतर खींच कर रोके रहना। उ० श्वास रोक कर उठाओ तो उठ जायगा।

श्वेत यश–निर्मल यश।

ष

षट्चक्र रचना–दे० 'षड्यंत्र रचना'।

षट्रस भोजन–हर प्रकार का अच्छा-अच्छा भोजन। उ० जो आपके यहाँ षट्रस भोजन बनता है, वह मुझे ख़ूब ज्ञात है।

षड्यंत्र रचना–किसी के विरुद्ध कपटपूर्ण आयोजन करना। उ० तुम षड्यंत्र रच रहे हो, यह मुझे मालूम है।

षड्राग करना–तीन-पाँच करना। गड़बड़ करना।

षोडश-शृंगार करना–पूरा सिंगार करना, अच्छी तरह सजना-बजना। उ० वह षोडश-शृंगार करके यहाँ आई है।

षोडश-संस्कार समाप्त होना–सोलहों संस्कार समाप्त हो जाना, मर जाना। संसार से विदा हो जाना। उ० उसके आज षोडश-संस्कार समाप्त हो गए।

स

संकट के बादल मँडराना–चारों ओर से विपत्ति का घेरना।

संकट-चौथ का सफल होना–संकट-चौथ व्रत के बाद संकट का दूर हो जाना। उ० तुम्हारी संकट-चौथ सफल हो गई।

सँकरा जीवन–दुःखपूर्ण जीवन। उ० इस सँकरे जीवन से तबीयत ऊब गई है।

सँकरा समय–मुसीबत के दिन।

सँकरे के साथी होना–विपत्ति में सहायक होना।

सँकरे में पड़ना–विपत्ति में फँसना। उ० आजकल तो मैं चारों ओर से सँकरे में पड़ा हुआ हूँ।

संकल्प करना–१. दृढ़ निश्चय करना। उ० मैंने संकल्प कर लिया है कि वहाँ नहीं जाऊँगा। २. दक्षिणा देना। उ० उसने शुभ अवसर पर बहुत कुछ संकल्प कर दिया।

संकल्प-विकल्प में पड़ना–असमंजस में पड़ना, दुविधा में पड़ना। उ० मैं तो आज बड़े संकल्प-विकल्प में पड़ा हूँ कि वहाँ जाऊँ या नहीं।

संकुचित हाथ से–कंजूसी से।

संख बजाना–१. रोना। उ० क्या बेकार में संख बजा रहे हो? २. पूजा करना। उ० पुजारी संख बजा कर चला गया।

संख-मंख–ठीक, वैसा ही, एक ही तरह का। उ० मेरा कुत्ता संख-मंख वैसा ही है।

संग डोलना–साथ-साथ घूमना।

संगत करना–१. साथ में रहना। उ० बुरों को छोड़ कर भले लोगों की संगत करो। २. साधुओं की मंडली में होना। ३ खिलाना, साधुओं को खिलाना।

संगदिल होना–कठोर होना। उ० वह तो बड़ा संगदिल है, उससे क्या कहूँ?

संग लगना–पीछे पड़ना। साथ जाना। उ० क्या संग लगे हो, मुझे जाने न दो।

संग लगाना–साथ भेजना। उ० मैंने उसके संग बच्चे को लगा दिया।

संग लेना–साथ ले लेना। उ० मैं अपने संग ले लेता, पर साइकिल में हवा नहीं है।

संग सोना–सहवास या समागम करना। उ० संग सोई तो फिर लाज क्या?

संगीन के बल पर–शस्त्र का भय दिखा कर।

संझवत देना–दे० 'संझा-बत्ती करना'।

संझा फूलना–शाम होना। उ० संझा फूली, तुम नहिं आए, पछी गीत सुनाए।

संजीवनी बूटी–प्राणदान देने वाली जड़ी।

संझा-बत्ती करना–शाम को दीपक जलाना। उ० क्या बैठे हो, ज़रा संझा-बत्ती तो कर दो, अँधेरा हो गया।

सठ के संठ रह जाना–जड़, मूर्ख रह जाना।

संदेह की हवा बहना–संदेह फैलना।

संबंध टूटना—सबंध न रहना ।

संसार की हवा खाना—सांसारिक व्यवहार मे अनुभव प्राप्त करना । उ० चलो-चलो, ८० वर्ष से ससार की हवा खा रहा हूँ, तो अब तुम सिखाने चले हो ।

संसार की हवा लगना—१ सामारिक रंग चढ जाना, व्यवहार मे चतुर हो जाना । उ० तुमहूँ लागी जगत गुरु जगनायक जग वायु । तुम्हे भी संसार की हवा लग गई क्या ? २. छली या धूर्त होना । उ० उसे भी समार की हवा लग रही है ।

ससार त्यागना—१. सन्यासी होना । उ० अब कौन है, जो संसार त्यागे ? २ मर जाना । उ० एक दिन सभी को संसार त्यागना है ।

संसार में पदार्पण करना—१ जन्म लेना । २. कर्मक्षेत्र मे प्रवेश करना ।

संसार से आबदाना उठना—मर जाना । उ० बडी जल्दी उसका संसार मे आबदाना उठ गया ।

संसार से उठना—१ मर जाना । उ० आज वह ससार से उठ गया । २ खतम होना, बीत जाना । उ० सती-प्रथा समार से उठ गई ।

संसार से चले जाना—मर जाना ।

ससार से ऊपर उठना—असाधारण होना ।

संसार से नाता तोड़ना—१ वैरागी होना । सन्यासी होना । उ० वह तो ससार से नाता तोड कर जगलो मे रहता है । २. मर जाना ।

ससार से नाता त्यागना—दे० 'ससार से नाता तोड़ना' ।

संसारी होना—गृहस्थ बनना । उ० प्राचीन काल मे २५ वर्ष के बाद लोग ससारी होते थे ।

सस्था खोलना—सस्था प्रारम्भ करना ।

सकता पड़ना—पिंगल मे विराम भग होना । उ० सतो के पदो मे प्राय सकता पडता है ।

सकुन डालना—शगुन विचारना । उ० सकुन डालो तो कि वह आयेगा या नही ।

सखुन डालना या डाल देना—माँगना, याचना करना । उ० तुम भी सखुन डालो, शायद कुछ मिल जाय ।

सखुन देना—प्रण करना, वचन देना । उ० मै सखुन देता हूँ कि समय पर तुम्हे रुपया अवश्य दूंगा ।

सख्त-सुस्त कहना—भला-बुरा कहना ।

सख्ती करना—निर्दयता का बर्ताव करना । उ० वह अपने अधीनो पर बडी सख्ती करता है ।

सगाई करना—१ शादी करना । उ० तुमने सगाई बडे मेल से की है । २ दोस्ती करना । उ० क्यो उससे सगाई करते हो, वह बड़ा छली है ।

सचमुच—१ असल मे । उ० सचमुच, वह बडा दिलेर आदमी है । २ क्या सचमुच, क्या असल मे । उ० सचमुच वह कवि है या तुम बनाते हो ?

सजीव वर्णन—ऐसा वर्णन, जो हू-बहू और प्रभावपूर्ण हो ।

सटक्का मारना—१ शीघ्रता से जाना । उ० सटक्का मार कर चले जाओ, देर न करो । २ बहुत सटर-मटर बात करना । उ० क्या सटक्का मारते हो, कुछ तो काम करो ।

सटपटाते फिरना—परेशानी मे घूमना । उ० आज बड़े सटपटाते फिरते रहे हो, क्या बात है ।

सटर-पटर लगाना—१. पटरी बैठाना । उ० आजकल तुम सेठ से बड़ा सटर-पटर लगा रहे हो । २ साधारण काम करना । उ० बेकार था, सोचा कुछ सटर-पटर ही लगा लूं । ३ झझट फैलाना । उ० तुम तो व्यर्थ का सटर-पटर लगाते हो । ४. सबध कायम करना ।

सट्टा-बट्टा लगाना—काम के लिए साधन जुटाना । उ० तुम तो बडी जल्दी सट्टा लगा लेते हो, काम होते देर ही नही लगती ।

सट्टी मचाना—शोर-गुल करना । उ० क्या व्यर्थ के लिए सट्टी मचाये हो ?

सट्टी लगाना—१ चीजे बिखेर कर रखना । उ० तुमने तो कमरे मे सट्टी लगा दी है, जरा करीने से रखो । २ बिक्री के लिए जगह की तरकारी आदि की दूकानो का खुलना । उ० इस इतवार को सट्टी लगेगी ।

सठिया जाना—बुद्धि मन्द हो जाना । शाब्दिक अर्थ—साठ वर्ष से ऊपर का होना ।

सड़क काटना—चोडा रास्ता तैयार करना । उ० इधर से सड़क काट दो तो अच्छा रहेगा ।

सड़क की धूल समेटना—सारहीन को महत्त्व देना ।

सड़क नापना–बेकार घूमना । उ० इसे कोई काम नही मिलता क्या, जो सारे दिन सड़क नापता रहता है ।

सड़क निकालना–दे० 'सड़क काटना' ।

सड़ा करना–दु ख, कष्ट पाते रहना ।

सत छोड़ना–१ सत्य से डिगना । उ० मर जाओ, पर सत न छोडो । २. हिम्मत छोडना । उ० उसने डर कर सत छोड़ दिया ।

सत निकल जाना–१. ताकत न रहना । २ असलियत का निकल जाना । ३ थक जाना । ४. हार जाना ।

सत पर चढ़ना–१ सती होना । उ० सत पर चढने की प्रथा अब नही रही । २ सत्य के पीछे अपना बलिदान करना या कष्ट सहना । उ० सत पर चढने वाले तो हरिश्चद्र ही थे ।

सत पर रहना–१ पतिभक्त होना । उ० पुराणो मे सत पर रहने की कथाएँ मिलती है । २. अपने वचन पर रहना । उ० मै सत पर रहने वाला आदमी हूँ, डगे नही । सत्य पर रहना, झूठ न बोलना । उ० साधु को सत पर रहना ही उचित है ।

सतर करना–बेइज्जती करना । उ० भरी सभा मे उसकी सतर की गई ।

सत हार जाना–१. हिम्मत हार जाना । २ बूढा हो जाना ।

सतरा-बहतरा होना–१ ७०-७२ वर्ष का होना । २ मस्तिष्क का सतुलन ठीक न रहना ।

सतीत्व बिगाड़ना–स्त्री की इज्जत लूटना । उ० आततताइयो ने साम्प्रदायिक दगे मे अनेक का सतीत्व बिगाड दिया ।

सती होना–१. दे० 'सत पर चढना' । २ काम के लिए मर मिटना । उ० लोहार का बैल कुम्हार लेकर सती होवे । मै तुम्हारे लिए क्यो सती होऊँ ? ३ पति के साथ जीवित स्त्री का चिता मे जलना । उ० वह सती हो गई । ४. बहुत कष्ट सहना । उ० वह अपने पुत्र के लिए सती हो रही है ।

सत्कार करना–१ मार-पीट देना । उ० कुत्ते का अच्छा सत्कार कर दिया, अब वह कभी न आयेगा । २. सम्मान करना । उ० वह अतिथियों का सत्कार करता है ।

सत्त खो देना–ज़बर्दस्ती समागम करना ।

सत्त बाँधना–सत पर स्थिर रहना ।

सत्तर चूहे खाये होना–हर तरह का कर्म किये होना । भले-बुरे अनेक कर्म किये होना ।

सत्ता चलना–कब्ज़ा होना । उ० शताब्दियों तक अंग्रेज़ी सत्ता चलती रही, पर अब छुटकारा मिल गया ।

सत्ता चलाना–अधिकार जताना । रौब गाँठना । उ० इन गरीबो पर क्या सत्ता चलाते हो ?

सत्तू घोलना–बेकार बहस करना । उ० क्या सत्तू घोल रखा है, मतलब की बात कह कर झगडा काटो ।

सत्तू चाटना–दाँत टूट जाने के बाद कुछ खा न सकना । बुढ़ापा आ जाना । उ० अभी से सत्तू चाटने लगे हो तो बुढ़ापे मे क्या करोगे ?

सत्तू-बाँध के खोजना–अच्छी तरह कमर कस कर या तैयारी करके किसी चीज या व्यक्ति की तलाश करना । उ० अब की बार सत्तू बाँध के खोजने निकलूँगा, देखे तो कैसे नही मिलती है ।

सत्तू बाँध के पीछे पड़ना–बुरी तरह पीछे पड़ना, पूरी तैयारी से पीछे पड़ना । उ० वह तो तुम्हारे पीछे सत्तू बाँध के पड़ा है । मुझे उम्मीद नही है कि आसानी से तुम बच सकोगे ।

सत्तू-सीधा बाँध कर पीछे पड़ना–किसी कार्य के करने के लिए पूर्णत तैयार हो जाना, दिल से कार्य मे लग जाना । उ० वह तो पुत्री की शादी के पीछे सत्तू-सीधा बाँध कर पड़ गया है ।

सत्य छोड़ना–दे० 'सत छोड़ना' ।

सत्य डिगना–१ धर्म से बिचलना । उ० सब कुछ खो देने पर भी उसका सत्य न डिगा । २ बेईमानी आना । उ० कितना भी लालच दिखाओ, उसका सत्य नही डिगेगा ।

सत्य पर रहना–अपने धर्म पर अटल रहना । उ० हरिश्चद्र सब दे देने पर भी सत्य पर रहे ।

सत्यानाश करना–बरबाद करना । उ० गज़नवी ने सोमनाथ के मन्दिर का सत्यानाश कर दिया ।

सथराव करना–दे० 'सथराव डालना' ।

सथराव डालना–मार कर बिछा देना, मुर्दों का ढेर लगा देना ।

सथराव पड़ना–मुर्दों का बिछौना बिछ जाना ।

सथराव होना–दे० 'सथराव पड़ना'।

सदके जाना–बलि जाना। बलैया लेना। उ० गोपियाँ श्याम के सदके जाती थीं।

सदमा उठाना–१. शोक सहना। उ० इस साल तो उस बेचारी ने पुत्र-मृत्यु का सदमा उठाया। २. आफ़त में फँसना। उ० परोपकारियों को दूसरों के लिए सदमे उठाने पड़ते हैं।

सदमा पहुँचाना–१. शोक देना। उ० इस समाचार ने उसे बड़ा सदमा पहुँचाया। २. कष्ट देना। उ० उसे सदमा न पहुँचाओ, वह तो स्वयं विपत्ति का मारा है।

सदर दरवाज़ा होना–प्रमुख साधन या तरीक़ा होना।

सदा देना–भिक्षा माँगना। उ० देखो द्वार पर कोई सदा दे रहा है, कुछ दे दो।

सदा लगाना–दे० 'सदा देना'।

सनक सवार होना–धुन चढ़ना, किसी काम के लिए धुन सवार होना। उ० उसे तो व्यापार करने की सनक सवार हो गई है।

सनसना जाना–डर जाना, मग्न हो जाना। उ० रात में उस मुर्दे का ख्याल करके मैं सनसना गया।

सन से निकल जाना–सनसनाते हुए जल्दी से निकल जाना। उ० जहाज़ आया और सन से निकल गया। गोली सन से निकल गई।

सन से होना–आश्चर्य में पड़ जाना। उ० उसके मरने का समाचार पाते ही सब लोग सन से हो गए।

सन हो जाना–१. डर के मारे ठक रह जाना। उ० मैं तो रात को पेड़ देख कर भूत के भ्रम में सन हो गया। २. घबड़ाहट में पड़ जाना। उ० चारों ओर से शत्रुओं को देख कर मैं सन हो गया। ३. मौन रह जाना। उ० उसके मरने की खबर सुन कर वह सन हो गया।

सनाथ करना–शरण देना, आश्रय देना। सहायक होना। उ० आज बेचारे ने मुझे सनाथ कर दिया।

सना होना–पूरी तरह लिप्त होना।

सनीचर आना–कुसमय आना। आफ़त आना, बुरे दिन आना, दुर्भाग्य आना। उ० हमारे ऊपर तो सालों से सनीचर आए हैं।

सन्न मार जाना या मारना–सहसा चुप और शांत हो जाना। उ० यों तो लोग बहुत बढ़-बढ़ कर बोल रहे थे, पर उसे देखते ही सब सन्न मार गए।

सन्नाटा खींच जाना या खींचना–कुछ न बोलना, चुप हो जाना। उ० जब भी कुछ पूछता हूँ, वह सन्नाटा खींच जाता है।

सन्नाटा बीतना–उदासी में दिन कटना। उ० सब लोग चले गए, आजकल घर में सन्नाटा बीत रहा है।

सन्नाटा मारना–दे० 'सन्न मारना'।

सन्नाटे की–डरावनी, सनसनाती हुई। उ० आज तो सन्नाटे की रात थी।

सन्नाटे के साथ–सन करते हुए। उ० गोली सन्नाटे के साथ निकल गई।

सन्नाटे में आ जाना–आश्चर्य में पड़ जाना, हैरान हो जाना। उ० उसके विद्वतापूर्ण भाषण को सुन कर सभी लोग सन्नाटे में आ गए।

सन्यास लेना–किसी कार्य से विरक्त होना।

सपट्टा मारना–दे० 'सटक्का मारना'।

सपना देखना–कल्पना करना।

सपना-सा होना–मिथ्या होना।

सपना होना–देखने को भी न मिलना। न मयस्सर होना। उ० इन गरीबों को तो दूध-घी सपना है।

सपने में भी नहीं–कभी नहीं।

सपने की बात–अयथार्थ बात।

सपर जाना–मर जाना। उ० एक ही लाठी में सपर गया।

सपाटा भरना–दे० 'सपाटा मारना'।

सपाटा मारना–१. दौड़-धूप लगाना। उ० जाने क्यों वह आजकल बड़ा सपाटा मार रहा है। २. कसरत करना। उ० तुमने तो सपाटा मारना छोड़ दिया। ३. उड़ करना।

सपाटा लगाना–दे० 'सपाटा मारना'।

सप्तम सोपान पर होना–चरम स्थिति में होना।

सफर करना–यात्रा करना। उ० तीसरे दर्जे में सफ़र करना बड़ा कष्टप्रद है।

सफ़ाई करना या कर देना–१. नेस्त-नाबूद कर देना। उ० तैमूर ने दिल्ली की सफ़ाई कर दी। २. खाकर खतम कर देना। उ० दो ही आदमियों ने सारी मिठाई की सफ़ाई कर दी। ३. जान से मार डालना। उ० हत्यारों ने दो

की सफ़ाई कर दी । ४. समाप्त कर देना । उ० शिकारियों ने चिड़ियों की सफ़ाई कर दी ।

सफ़ाई देना–बिना दोष का सिद्ध करना । उ० सफ़ाई मत दो, मैं सब कुछ जानता हूँ ।

सफ़ाया करना–दे० 'सफ़ाई करना' ।

सफेद को काला करना–भले को बुरा बताना । अच्छे को बुरा बना देना ।

सफ़ेदपोशी–ऊँचे तरीक़े का रहन-सहन ।

सफेद बालों की लाज रखना–बुढ़ापे का सम्मान बनाये रखना ।

सफ़ेद रंग पड़ जाना–१. उदास हो जाना, बिना चमक-दमक के हो जाना । उ० एक ही डाँट में सफ़ेद रंग पड़ गया । २. डर जाना । उ० अभी तो शिकार करने को बड़े उत्सुक हो, जब शेर का दर्शन करोगे तो रंग सफेद पड जायगा । ३. किसी बीमारी से खून की कमी होना । उ० उसका रंग सफ़ेद पड गया है, कोई दवा करो ।

सफ़ेद या सियाह करना–भला या बुरा करना । उ० मैने अपने किशवरे दिल का तुम्हे किया मुख़्तार, तुम अब सफ़ेद करो आगे या सियाह करो ।

सफ़ेद हाथी बँधना–खर्च बढने का उपक्रम होना ।

सफ़ेदी आना–वृद्ध होना । उ० अब तो सफेदी आ गई, केवल बच्चो का सहारा है ।

सबकत करना–१. आगे बढना, आगे जाना । २ शुरू करना ।

सबक़ देना–१. उपदेश देना । वह बडा अमूल्य सबक देता है । २. याद करने के लिए पाठ देना । उ० अध्यापक ने हमे यह सबक़ दिया है ।

सबक़ पढ़ाना–१. बहकाना । उ० चलो सबक न पढाओ, मुझे सब पता है । २. सिखाना । उ० अपना सबक़ उसे न पढाओ । ३ पाठ पढ़ाना । उ० आज का सबक़ पढा दिया गया ।

सबको एक डंडे से हाँकना–सबके साथ बराबर बर्ताव करना । उ० न्यायी वही है, जो सबको एक डंडे से हाँकता है । राजा के लिए सब को एक डडे से हाँकना हो नीति है ।

सब धान बाइस पसेरी होना–१ सबको एक-सा समझना । २. भिन्न-भिन्न मूल्य की वस्तुओं को एक समझना ।

सब नौबत होना या हो जाना–पूरी दुर्दशा होना । उ० उसी के साथ इनकी सब नौबत हो गई, फिर भी उसका साथ नहीं छोड़ रहे है ।

सब मिला कर–कुल, संपूर्ण । उ० सब मिला ५० रु० निकले ।

सबील पिलाना–१. मुफ्त पानी पिलाना । २. मुहर्रम के महीने मे मुफ्त मे दूध या शर्बत पिलाना । उ० भर के मश्कें आबलों की अब पिला दीजे सबील, पड़ गए है प्यास मे काँटे जबाने खार मे ।

सब्ज़ क़दम होना–मनहूस और बुरे शकुन वाला होना । उ० वह सब्ज़ है, उसे यहाँ उस दिन न भेजना ।

सब्ज़-बाग़ दिखाना–१. व्यर्थ की आशा देना । उ० तुम्हारा सब्ज़-बाग दिखाना हम खूब जानते है, पर करे क्या ? २. चालबाज़ी चलना । उ० सब्ज़-बाग दिखा कर उसने उसका सारा धन ले लिया । ३. हिम्मत बँधाना । उ० यदि तुमने सब्ज-बाग न दिखाया होता तो मेरा पार न लगता ।

सब्ज़-बाग नज़र आना–आशा होना । उ० उसकी बातों मे तो सब्ज-बाग ही नजर आ रहा है, आगे जो हो ।

सब्ज़ होना–प्रसन्न और फला-फूला होना । उ० सब्ज होती ही नही यह सरजमी, तुख्मे ख्वाहिश दिल मे तू बोता है क्या ?

सब्ज़ी पीना–भंग पीना । उ० बाज आये रिंद कब अमले ना सवाब मे, सब्जी पिएँ जो तोबा करे ये शराब से ।

सब्र कर बैठना–संतोष कर लेना । उ० सब्र किए बैठे रहो, ईश्वर अच्छा ही करेगा ।

सब्र पड़ जाना या पड़ना–शाप पडना । उ० गरीबो को न सताओ, उनका सब्र बड़ा जल्दी पड़ता है ।

सब्र समेटना–करुण पुकार का शाप लेना । उ० निरपराधो को सता कर उनका सब्र न समेटो ।

समझ के पोछे लाठी लिए घूमना–नासमझी करना; बेवकूफ़ी की बातें करना ।

समझ पर पत्थर पड़ना–दे० 'अक्ल पर पत्थर पड़ना' ।

समझ लेना–बदला देना या लेना । उ० वक्त पड़ने पर मै भी समझ लूँगा ।

समझ से ऊँची बात–ऐसी बात जो बुद्धि मे न आती हो।

समझाना-बुझाना–१. चिरौरी-मिन्नत करना। उ० समझा-बुझा कर उसे रास्ते पर लाओ। २. समझाना, बतलाना। उ० मैने बहुत समझाया-बुझाया, पर उसे कुछ जँचता ही नही है।

समय आ जाना–मृत्यु निकट होना।

समय का पलटा खाना–१ स्थिति मे परिवर्तन होना। २ मौसम बदलना।

समर रोपना–लडाई खडी करना। उ० समर रोप कर भगत है कायर और कपूत, समर रोप कर लरत है मार्नो, सिह, सपूत।

समर-सेज पर सोना–युद्ध मे मृत्यु को प्राप्त होना।

समस्या सुलझाना–विपत्ति या कठिनाई दूर करना। हल निकालना। उ० गरीबो की समस्या सुलझाने वाला कोई भी दिखाई नही पडता।

समाँ बँधना–१. गुण-विशेष से एकाग्रचित्तता होना। २ सौंदर्य या रौनक़ बढना।

समाँ बाँधना- सगीत, नृत्य या भाषण आदि का इतनी उत्तमता से करना कि सुनने वाले स्तब्ध हो जायें। उ० भोजपुरी नाटक के रचयिता भिखारी ठाकुर जब स्टेज पर खडे होते थे, तो समाँ बाँध देते थे।

समाँ पाना–फुरसत पाना। उ० जब समाँ पाऊँगा तो उससे भेट करूँगा।

समाई रखना–१. सह जाना। २. क्षमता होना।

समुद्र-पार उतारना–१ काले पानी की सजा देना। उ० समुद्र-पार उतारने की सजा अब समाप्त हो गई है। २ बहुत कड़ी सजा देना।

सम्हल कर बोलना–मर्यादा मे रह कर बात करना।

सम्हल-सम्हल कर पैर रखना–बडी सावधानी से काम करना या आगे बढना।

सरंजाम करना–सरो-सामान की तैयारी करना। उ० उत्सव का सरंजाम कर दिया, क्योकि जा रहे हो?

सर-आँखो पर होना–१ मजूर होना। उ० आपका हुक्म सर-आँखो पर है। २ किसी के स्वागत करने को तैयार होना। किसी की इज्जत बख्शना। उ० आप मेरे सर आँखो पर है।

सर करना–१. गोली छोड़ना। उ० अन्त मे पुलिस ने सर करना शुरू किया। २. विजय कर लेना। उ० भारत की हाकी टीम ने सभी को सर कर लिया।

सरकशी करना–आज्ञा का उल्लघन करना। अधिकार से निकलना। उ० अलाउद्दीन के वृद्ध होते ही सारे जागीरदार सरकशी करने लगे।

सरका कूटना–हस्तमैथुन करना।

सरकार की मेहमानी खाना–जेल की सजा भुगतना।

सरता-परता करना–मिला-जुला कर औसत निकालना। उ० यों तो नुक्सान ही दिखाई दे रहा है, सरता-परता करने पर शायद कुछ मिले तो मिले।

सरता-परता बराबर करना–१. नफ़ा-नुक्सान बराबर करना। २. चौपट करना।

सरदार होना–श्रेष्ठ होना।

सरनाम करना–मशहूर करना। उ० गामा के बल ने उन्हे सरनाम कर दिया।

सरनाम होना–मशहूर होना। उ० अहिसा के कारण गाँधीजी ससार मे सरनाम हो गए।

सरपट जाना–दे० 'सरपट दौड़ना'।

सरपट दौडना–बहुत तेज दौडना। उ० हमारा घोडा सदा सरपट दौडता है।

सरपट फेंकना–दे० 'सरपट दौडना'।

सर पर सवार रहना–हर घडी सामने मौजूद रहना। उ० २४ घटे नौकरो के सर पर सवार रहता है, साँस तक नही लेने देता।

सरफ़राज करना–वेश्या के साथ प्रथम समागम करना। [बाजारू भाषा मे यह प्रयोग किया जाता है। इसे नथुनी उतारना भी कहते है।]

सरसरी तौर पर नजर डालना–बहुत ध्यान से न देखना, यों ही देखना।

सरसों फूलना–दे० 'आँखो मे सरसों फूलना'।

सराय का कुत्ता होना–स्वार्थी मित्र होना। उ० सराय के कुत्ते तो बहुत मिलते हैं, कोई सच्चा भी तो मिले।

सराय की भटियारी–बेहया तथा झगड़ालू स्त्री। उ० वह तो सराय की भटियारी है भला उससे कौन बोले ?

सराय होना–अस्थायी ठहराव या निवास-स्थान होना। उ० यह दुनिया सराय है, जो यह समझते हैं, वे उचित रास्ते पर चलते है और जो नही समझते, वे गुमराह होते हैं। यह दुनिया दुरगी है ऊँची सराय कही वाहवाही, कहीं हाय-हाय !

सरे आम–दे० 'खुले आम'। उ० तुमने तो उसे सरे आम बेइज्जत कर दिया।

सर्द खाना–जाड़ा लगना। उ० आज रात मैं वहाँ सर्द खा गया। कही बुखार न आये।

सर्द-गर्म कहना–भला-बुरा कहना।

सर्द-गर्म मौसम–अच्छा-बुरा समय।

सर्द हो जाना–१. डर से चुपचाप हो जाना। उ० उन्हे देखते ही वह सर्द हो गया। २ मर जाना। उ० वह तो कड़ाके के जाड़े मे सडक पर ही सर्द हो गया।

सर्दी खाना–ठडक लगना।

सर्दी चढ़ना–जाडा देकर ज्वर आना। उ० क्वार मे प्राय. सर्दी चढती है।

सर्दी पड़ना–ठडक पडना। उ० कई दिन से खूब सर्दी पड रही है।

र्दी लगना–ठंडक लगना। उ० उन्हे मर्दी लग सगई है, कोई दवा दे दो।

सर्राफ़ के से टके–वह सौदा जिसमे हानि न हो। उ० सर्राफ के से टके चाहते हो तो वह मजा व्यापार में कहाँ है ?

सर्वस्व जाता देख कर आधा छोड़ देना–बडे नुक़सान को बचाने के लिए थोड़ा नुक़सान सहना।

सलाई फेरना–अधा करना। उ० ज्यादा बकोगे तो आँखो पर सलाई फेर दूँगा।

सलाम करके चल देना–रंज होकर चला जाना। उ० थोड़ी-सी बात में ही वे सलामकर के चल दिए।

सलामती से–सकुशल। उ० ईश्वर करे वह सलामती से पहुँच जावे।

सलाम देना–१. नमस्कार कहना। उ० उसने आपको सलाम दिया है। २. दे० '**सलाम बोलना**'।

सलाम फेरना–१. रज होकर तमस्ते या सलाम भी स्वीकार न करना। उ० जाने क्यो उसने मेरा सलाम भी फेर दिया। २. नमाज पढना। उ० मुसलमान पाँच बार सलाम फेरते है।

सलाम बोलना–बुलाना [इस अर्थ में सलाम बोलने का प्रयोग आफ़िसों में होता है।] उ० १ अफसर ने चपरासी से कहा कि टाइप बाबू को सलाम बोलो। २. बड़े साहब आपको सलाम बोलते है।

सलाम लेना–नमस्ते स्वीकार करना। उ० मेरा भी सलाम लीजिए।

सलामी उतारना–प्रतिष्ठा मे तोपों की सलामी देना। उ० नेहरू को अमेरिका मे २१ तोपो की सलामी उतारी गई थी।

सलाह ठहराना–निश्चित राय करना। उ० आखिर क्या सलाह ठहराई गई ?

सल्तनत खूब बैठना–अच्छा प्रबन्ध होना। उ० अकबर की सल्तनत खूब बैठी थी।

सवा बीस होना–बहुत ठीक होना।

सवारी लेना–सवारी के लिए प्रयोग करना। उ० मै तो घोड़े की भी सवारी लेता हूँ और हाथी की भी।

सवाल-जवाब करना–दे० 'जवाब-सवाल करना'।

सवाल देना–१. कचहरी मे नालिश करना। उ० मैने सवाल नही दिया, उसे क्षमा कर दिया। २ माँग पेश करना। उ० मैने दो सवाल दिए हैं, देखे बड़े सरकार क्या करते है ?

सवाल हल करना–दे० 'समस्या हल करना'।

सवालों की झड़ी लगा देना–एक के बाद एक प्रश्न पूछे जाना।

सवा सोलह आना–पूर्णतः, बिना किसी कमी के।

ससरी अटकना–प्राण कंठ तक आना। उ० मेरी तो ससरी अटकी है और तुम्हे मजाक सूझ रहा है।

ससुराल की राई पहाड़ लगना–ससुराल की छोटी बात भी बड़ी लगना।

सस्ता लगना–मूल्य में कमी होना। उ० आज तो तरकारी सस्ती लगी है।

सस्ते छूटना–१. सरलता से मुश्किल काम का बन जाना। २ कम दाम में अधिक दाम वाले काम का हो जाना। उ० दस देकर सस्ते ही छूट गए, नहीं तो सैंकड़ों देने पड़ते।

सहस्रमुख से भी वर्णन न कर पाना–अवर्णनीय होना।

सहम चढ़ना–१. लज्जा होना। उ० किसी को देख कर भी तुम्हे सहम नही चढती है ? २. डर होना। उ० उस साधू को देख कर लड़के पर ऐसी सहम चढ़ी कि बाहर ही नही निकलता।

सहसबाहु होना–बहुत बहादुर होना। उ० आप सहसबाहु हैं तो अपने घर के लिए, यहाँ आपकी एक भी न चलेगी।

सहारा ढूँढ़ना–शरणदाता की तलाश करना। उ० कहाँ सहारा ढूँढते हो, बस ईश्वर को ही अपना समझो।

सहारा देना–१ मदद करना। उ० तुमने उसे बड़ा सहारा दिया। २. आशा देना। उ० जब सहारा दे चुके हो तो पूरा करो। ३. रोकना। उ० क्यो सहारा देते हो, जाने दो।

सहारा पाना–१ बढ़ावा पाना। उ० बैल सहारा पाते ही गाडी खीच ले गया। २. रुपये की मदद पाना। उ० वह सरकार की ओर से सहारा पाता है।

सहारे की लकड़ी–सहायक।

सही जान पड़ना–उचित जँचना। उ० उसकी बातें तो मुझे सही जान पड़ती हैं।

सही पड़ना–ठीक उतरना। उ० तुम जो कहते हो, वह सही पड़ता है।

सही भरना–स्वीकार कर लेना। उ० समझ-बूझ कर तो सही भरा करो, नहीं तो एक दिन धोखा खाओगे।

सही-सलामत–दे० 'सलामती से'।

साँई के सौ खेत होना–बहुत उपाय होना।

साँच को आँच न होना–सच्चे व ईमानदार व्यक्ति के लिए कोई भय न होना।

साँचे में ढलना–बहुत खूबसूरत उतरना, अत्यन्त सुन्दर होना। उ० यहाँ एक विचित्र कलाकार आया है। मूर्ति तो साँचे मे ढली बनाता है।

साँचे में ढला होना–अति सुन्दर स्वरूप का होना। उ० लड़का क्या है, साँचे मे ढला है।

साँचे में ढालना–बहुत खूबसूरत बनाना। उ० खिलौने क्या बनाता है, साँचे में ढाल देता है।

साँझ पड़ना–संध्या होना।

साँठ-गाँठ करना–१ दलाली करना। उ० उसने तो साँठ-गाँठ करके व्यापारी को घाटा दिलवा दिया। २ किसी काम के लिए गुप्ततः किसी से समझौता करना।

साँठ-गाँठ होना–किसी काम के लिए बिना किसी को बताए किसी से समझौता होना।

साँड़ की तरह घूमना–निश्चिन्त होकर घूमना। उ० कोई काम नही है क्या, कि साँड़ की तरह घूमते हो ?

साँड़ की तरह डकारना–ऊँची आवाज़ से बोलना। उ० ज़रा धीरे से बोलो, क्यों साँड की तरह डकार रहे हो ?

साँधा मारना–दो रस्सियो आदि मे गाँठ लगाकर जोड़ना। उ० अच्छी तरह साँधा मारना, कही बीच से खुल न जाय।

साँप का पैर पेट में होना-बुरे आदमी की बुराई या उसकी कटुता भीतर रहना, उसका किसी के द्वारा जल्दी पता न चलना। उ० उसे तुम सीधा समझते हो, वह परले नम्बर का टेढा है। जानते हो साँप के पैर पेट मे होते है, तुम्हे उसकी बुराई ऊपर से दिखाई नही पड सकती।

साँप का सूँघ जाना या सूँघना–साँप का काटना। उ० उसे साँप ने सूँघ लिया। उसे साँप सूँघ गया है।

साँप की चाल चलना–टेढे या वक्र होकर चलना। उ० वह साँप की चाल चलता है। ऐसे से होशियार रहना चाहिए।

साँप की तरह केंचुली झाड़ना–१. पुराना वस्त्र छोड कर नया धारण करना। उ० होली मे सभी साँप की तरह केंचुली झाड़ते है। २. रूप बदलना। उ० तुम तो हर वक्त साँप की तरह केंचुली झाड़ते रहते हो।

साँप की पूँछ झड़ना–मौत का समय आना। उ० मैं जानता हूँ कि साँप की पूँछ झड़ गई है और मुझे अवश्य ही कुछ करना पड़ेगा।

सांप की लहर–सांप के काटने पर तकलीफ़ या ज़हर के जोश का दौरा। उ० मेंहुए सांप की लहर खूब आती है।

सांप की-सी केंचुली झाड़ना–निखरना, रंग आना। साफ़-सुथरा होना। उ० आप तो सांप की-सी केंचुली झाड़ रहे हैं।

सांप के बिल में हाथ डालना–जान-बूझ कर खतरे और नुक़सान में पड़ना।

सांप के मुंह की छछूंदर होना–दोनों ओर से अनिष्टकारी स्थिति होना।

सांप के मुंह में उंगली डालना–जान का खतरा मोल लेना।

सांप के मुंह में पड़ना–खतरे मे पड़ना। उ० मैं तो वहाँ जाकर सांप के मुंह मे पड़ गया था।

सांप के सांप पांव होना–बुरों की बुरी सोहबत होना।

सांप के साथ खेलना–१. भयंकर कार्य करना। २. जान-बूझ कर भयानक काम करना।

सांप को दूध पिलाना–शत्रु का पालन-पोषण करना। उ० तुम उससे घर का-सा बर्ताव करते हो, यह नही जानते कि सांप को दूध पिला रहे हो।

सांप खेलाना–१. खतरनाक चीज से खेलना। उ० जान-बूझ कर सांप खेलाने से क्या लाभ? २. कष्टप्रद चीज या शत्रु को पालना। उ० जब जानते हो कि यह एक दिन तुम्हे हानिकारक होगी तो क्यो सांप को खेला रहे हो?

सांप-छछूंदर की दशा होना–असमजस या दुविधा मे पड़ना। उ० यदि नीचे कूदूं तो मर जाऊं, न कूदूं तो पुलिस पकड़ ले। मेरी तो सांप-छछूंदर की दशा है।

सांप छाती पर फिरना–बहुत दु:ख होना। दिल पर सदमा गुज़रना। उ० छाती पं उसके क्यों न फिरे सांप कब्र में, जो हो डंसा हुआ तेरी जुल्फ़े सियाह का।

सांप छाती पर लोटना–दिल मे दु:ख होना। उ० वह तो ऐसी बात कह गया कि सुनते ही छाती पर सांप लोट गया।

सांप निकल जाने पर लकीर पीटना–काम या बात हो जाने पर या अवसर बीत जाने पर व्यर्थ प्रयत्न करना।

सांप मर जाए पर लाठी न टूटना–काम भी बन जाना और हानि भी न होना।

सांप-सा छाती पर या दिल पर फिरना या लोटना–देखिए ऊपर।

सांप सूंघ जाना–१. बेजान होना। उ० तुम तो ऐसे पड़े हो, जैसे सांप सूंघ गया हो। २. सांप का काट लेना। उ० दिल उसके साया नख़्ल मज़्ह में ऊंघ गया, निगह का सांप मुसाफ़िर को आह सूंघ गया।

सांपा करना–किसी के मरने पर रोना, बिलखना।

सांपा पड़ना–मातम छाना, कोहराम मचाना। उ० उनके मरने से वहाँ सांपा पड़ा होगा।

सांपे जाना–मातमपुरसी करने जाना। उ० उसका भाई मर गया है, ज़रा सांपे जाना है।

सांय-सांय बात करना–बहुत धीरे बात करना।

सांस गिनना–मृत्यु की प्रतीक्षा करना।

सांस अड़ना–दम अटकना। उ० उनकी सांस अड रही है। उ० क्या आए तुम, जो आए घड़ी दो घड़ी के बाद, सीने में होगी सांस अड़ी दो घड़ी के बाद।

सांस उखड़ना–दमे की बीमारी का दौरा होना। उ० नीचे-ऊपर चढ़ने से उसकी सांस उखड़ गई।

सांस उड़ना–मरणासन्न होना। उ० अब तो उसकी सांस उड़ रही है।

सांस उलटी लेना–१. पश्चाताप करना। उ० जो होना था, वह हो गया। अब सांस उलटी लेने से क्या फ़ायदा। २. मरने के क़रीब होना। ३. दमे का उभरना।

सांस ऊपर-नीचे होना–१. सांस का रुक जाना। उ० वह गिरा और उसकी सांस ऊपर-नीचे होने लगी, मेरी तो तबियत घबड़ा गई। २. तबियत घबरा जाना। उ० भाई यह बात सुन कर तो मेरी सांस ऊपर-नीचे हो रही है।

सांस खींचना–१. दम रोकना। उ० सांस खींच कर उठाओ तो उठेगा। २. सांस लेना। उ० लड़का सांस जल्दी-जल्दी खींच रहा है। ३. दु:खी होना। उ० क्यो सांस खींच रहे हो? सब ठीक हो जायगा।

साँस चढ़ जाना या चढ़ना–१ दे० 'साँस उखड़ना'। २. दे० 'साँस उड़ना'। ३ थकावट आ जाना। उ० उसकी साँस तो बड़ी जल्दी चढ़ जाती है।

साँस चढ़ना–अफसोस होना। उ० इम्तहान की साँस अभी से चढ़ी है।

साँस चढ़ाना–दे० 'श्वास चढ़ाना'।

साँस छूटना–दे० 'श्वास छूटना'।

साँस जहाँ की तहाँ रह जाना–दे० 'नीचे की साँस नीचे और ऊपर की साँस ऊपर रह जाना'।

साँस टूट-टूट जाना–रुक-रुक कर साँस आना, मृत्यु के स्पष्ट लक्षण दिखाई देना। उ० आस कैसे न टूट जाती तब, साँस जब टूट-टूट जाती है।

साँस तक न लेना–बिलकुल न बोलना। सन्न हो जाना। उ० वह इतना बक गया, परन्तु तुमने साँस तक न ली।

साँसत का छकड़ा–बहुत बड़ी मुशीबत।

साँस नहों में बसना–बहुत डर लगना।

साँस रहते–जीवन भर। उ० साँस रहते राणा प्रताप ने अकबर की अधीनता न मानी।

साँस रोक कर–पूरी एकाग्रता से, बिना किसी प्रतिवाद के।

साँस लेना–काम के बीच मे आराम करना। उ० साँस लेने की फुरसत नही है और तुम आने को कहते हो।

साँस लेने की जगह न होना–बहुत भीड़ होना।

साँसा पड़ना–विपत्ति या आफत का शुबहा होना। उ० साँसा पड़ने के कारण मैं बहुत चिंतित हूँ।

साई देना–एडवांस, अग्रिम या बयाना देना। उ० बाजे वाले को साई दे दी।

साई बजाना–जो साई (पेशगी) दे, उसके यहाँ बाजा बजाना। उ० परसों उनके यहाँ साई बजानी है।

साए से भागना–१ नजदीक न आना। उ० वह तो मेरे साए से भी भागता है। २ घृणा करना। ३. डरना।

साका चलना–व्यापार आदि में विश्वास जमना। उ० उसका तो खूब साका चलता है।

साका बाँधना–१ रोब या धाक जमाना। उ० उसने तो इन अनपढो पर अच्छा साका बाँधा है। २. विश्वास जमाना। उ० साका बाँध कर बिना रुपये के भी व्यापार चल सकता है।

साख उठ जाना–पुराने विश्वास का रहना, प्रतिष्ठा नष्ट होना।

साखी पुकारना–सौगंध खाना, साक्षी देना। उ० मै अग्नि की साखी पुकारता हूँ, मैंने इस काम को नही किया।

साग-पात समझना–दे० 'गाजर-मूली समझना'।

साज छेड़ना–बजाना प्रारम्भ करना। उ० साज छेडो, क्या मुँह छिपाए बैठे हो?

साज-बाज करना–१. गड़बड़ी करना, षड्यंत्र करना। २ मेल-मिलाप करना।

साज-बाज करना–शृङ्गार करना।

साझे की खेती–साझे का काम।

साझे की सुई का ठेले पर लदना–साझे के या पचायती काम का गैर जिम्मेदारी से होना।

साठे पर पाठे होना–बुढ़ापे में भी पूरी शक्ति रहना।

साढ़े साती आना–१. साढ़े सात वर्ष को सनीचर ग्रह का आना। २ बुरे दिन आना।

सात कोठरी में छिपा कर रखना–गुप्त से गुप्त जगह मे छिपाना।

सात घाटों का पानी पीना–सांसारिक व्यवहार मे बहुत अनुभवी होना। उ० उसे क्या सिखाते हो, वह तो सात घाटों का पानी पी चुका है।

सात-चौदह की सैर कराना–जेल की हवा खिलाना।

सात जनम में–कभी भी, कितना भी समय बीतने पर। उ० यही दिमाग रहा तो आप सात जनम मे भी नही पढ सकते।

सात तालों के अन्दर रखना–सुरक्षित रखना। उ० वह अपनी चीजें सात तालो के अन्दर रखता है, कोई नही पा सकता।

सात धार होकर निकलना–१ पाखाने से पतला होकर बह जाना। २ न पचना। उ० इन

गरीबों के खून की कमाई खाते हो, देखना सात धार होकर निकलेगी।

सात परदे में रखना—बहुत हिफ़ाजत से सँभाल कर रखना। उ० जो होनहार होगी, वह होकर रहेगी; तुम भले ही उसे सात परदे में रखो।

सात-पाँच—१ धूर्तता, चालाकी। उ० मै तो भाई सात-पाँच नही जानता हूँ। २ अनेक। उ० यहाँ सात-पाँच आदमी हैं, किसको-किसको खिलाओगे। ३ कुछ। उ० सात-पाँच आदमियो में भाषण क्या होगा?

सात-पाँच करना—१. धोखेबाजी करना। उ० सात-पाँच करके सारा माल हड़प लिया। २. सवाल-जवाब करना। ३ शुबहा करना। उ० आदमी विश्वास पात्र है, सात-पाँच न करो। ४. बहकाना। उ० सात-पाँच न करो, सही-सही बता दो।

सात बार नौ त्यौहार होना—रोज ही उत्सव-त्यौहार लगा रहना।

सातवें आसमान पर पर मारना—बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ करना।

सात समुन्दर पार करना—१ बहुत दूर जाना। २ अत्यन्त कठिन काम करना।

सातों द्वीप में खोजना—सब जगह खोजना।

सातों भूल जाना—अपने मे न रहना, होश-हवास भूल जाना। उ० शेर को देखते ही सातो भूल गए।

साथ देना—१ सग चलना। उ० कुछ दूर तक तो मेरा साथ दो। २ मदद करना। उ० तुमने मेरा साथ नही ही दिया, इसका ख्याल रखना।

साथ पुरवना—साथ देना। उ० सच्ची बताओ, हमारा साथ पुरओगे या नही।

साथ लगा जाना—दे० 'साथ लगा फिरना'।

साथ लगा फिरना—पीछे-पीछे फिरना, दुम के पीछे फिरना। उ० उसके नजदीक तो मै उससे जुदा जाता हूँ, लेके साए की तरह साथ लगा जाता हूँ।

साथ लेना—साथ मे या सग मे ले लेना। उ० अँधेरी रात है, किसी को साथ ले लो।

साथ सोकर मुँह छिपाना—घनिष्ठ होकर भी रहस्य न बताना। उ० तुम तो ऐसे आदमी हो कि साथ सोकर भी मुँह छिपाते हो।

साथ हो लेना—पीछे हो लेना, सग में जाना। उ० तुम भी साथ हो लेना, नही तो रास्ते में डर जायगी।

साध पुरवना—दे० 'साध बुताना'।

साध बुताना—हौसला पूरा करना। उ० इस गरीबी में सिनेमा देखने को पैसे तो नही है, पर साध बुताने के लिए कभी न कभी जाना ही पडता है।

सान चटाना—दे० 'सान चढ़ाना'। उ० चाकू को सान चटा दो।

सान चढ़ाना—सान के जरिए किसी हथियार आदि पर धार रखना या उसे तेज करना। उ० कत्ल को किसके चढा ली तेग तूने सान पर, उतरे है आँखो मे जख्मों के मेरे खँ देख कर।

सान देना—१ शान धरना। एक विशेष प्रकार के पत्थर पर तेज़ करना। उ० चाकू पर सान दे दो। २. मिला देना। उ० उसने मुझे भी झगड़े मे सान दिया। ३ किसी द्रव पदार्थ में मीसना या माँडना। उ० आँटा सान दो।

सान पर चढ़ना—१. शान दिया जाना। विशिष्ट पत्थर पर तेज किया जाना। उ० अभी कैंची सान पर चढ़ेगी। २. निखरना। उ० अपनी कला को अभी और सान पर चढने दो।

सान रखना—दे० 'सान चढाना'।

सान लगाना—दे० 'सान चढ़ाना'।

साफ आसमान देखना—विषय की ठीक-ठीक जानकारी करना।

साफ़ उड़ जाना—१. हाथ न लगना। उ० चिडिया साफ़ उड़ गई। २. तुरन्त कट जाना। उ० उसका हाथ मशीन मे पड़ते ही साफ उड़ गया।

साफ़ उड़ा जाना—स्पष्ट इन्कार कर देना। उ० हमारी बात तो वह साफ उडा गया।

साफ़ उड़ा लेना—१ चुपचाप ऐसे ले आना कि कोई न जाने। उ० उसने तो लड़की को साफ उड़ा लिया। २. चुपके से ले लेना। उ० उसने तुम्हारा रुपया साफ उड़ा लिया।

साफ़ करना या कर देना—१. मार डालना। उ० उसने अनेक को साफ कर दिया। २. नष्ट करना। उ० टिड्डियों ने तो खेती साफ कर दी। ३ खाकर चुका देना। उ० तुमने

अकेले सब खाना साफ़ कर दिया। ८ खतम कर देना, उड़ा देना।

साफ़ कान खोल देना–होशियार कर देना। उ० मैंने तुम्हारा कान साफ़ खोल दिया, यदि अब कुछ होगा तो मैं नहीं जानता।

साफ़ छूट जाना–निर्दोष प्रमाणित होकर बच जाना। उ० उसके ऊपर भी अभियोग था; परन्तु वह साफ छूट गया।

साफ़ जवाब देना–१ स्पष्ट रूप से इन्कार कर देना। उ० यदि देना हो तो दो, नहीं तो साफ जवाब दो, सात-पाँच क्यों करते हो? २. दो-टूक उत्तर देना।

साफ़-साफ़ बचना–बाल-बाल बच जाना। उ० झगडे में वह भी था, परन्तु साफ़-साफ़ बच गया।

साफ़-साफ़ सुनाना–स्पष्ट कहना, खरी-खरी कहना। उ० चाहे आपको बुरी लगे या भली, वह तो साफ़-साफ़ सुनाता है।

साफ़ा देना–खाने को न देना। उ० उसने तो बुला कर साफा दे दिया। अब कभी बुलाएगा तो हर्गिज नहीं जाऊँगा।

साबका पड़ना–१ काम पड़ना। उ० कभी साबका पड़े तो देखना कि मै कैसा आदमी हूँ। २ व्यवहार होना। उ० साबका पड़ने पर सभी जान जाते है।

सामना करना–१. मुक़ाबिला करना। उ० दोनों सेनाओं ने प्लासी मे सामना किया। २. बराबरी करना। उ० चार अक्षर पढ़ लिया अब बड़ो का सामना करता है।

सामने आना–१ विरोध में खड़ा होना। उ० जरा कोई सामने आये तो बतलाऊँ। २ आमने-सामने होना, चार आखें होना। उ० समझा है किसे तू गैर बता, अपने न रुखे जेबा को छिपा, परदे को उठा कर सामने आ, तू और नहीं मै और नहीं।

सामने करना–१. आगे लाना। उ० उसे साहब के सामने कर दो, तब छूटेगा। २ कह देना। उ० इस बात को भी सामने कर दो छिपाने से क्या लाभ?

सामने का–१ आँखों-देखा हुआ। उ० मेरे सामने की चीज है, तुम क्या जानो? २ आगे का। उ० मेरे सामने का बच्चा मुझी को पढ़ाता है।

सामने की परोसी थाली छिन जाना–मिली हुई वस्तु का छिन जाना।

सामने की बात–आँखों-देखी बात। उ० जब उसके सामने की बात है तो वह झूठ नहीं बोल सकता।

सामने दृष्टि करना–मुकाबले से विचलित न होना।

सामने पड़ना–१. आगे आना। उ० वह तो उस दिन से सामने ही नहीं पड़ता है। २ झगड़ा-फ़साद करने लगना। उ० कम से कम माता-पिता के तो सामने न पड़ा करो।

सामने बोलना–बड़ो को प्रत्युत्तर देना।

सामने मुँह कर बात न करना–सामने न आना।

सामने होना–शर्म न करना। उ० वह तो मेरे सामने होती है।

सामान करना–तैयारी करना। उ० अब देर न करो, जल्दी सामान करो।

सामान बाँधना–सामान तैयार करके प्रस्थान करना, चलने की तैयारी करना। उ० जल्दी सामान बाँध लो, गाडी का समय हो गया है।

सामान मे आना–आपे मे आना, होश मे आना। उ० जरा सामान मे आइए, कुछ पता है किससे बाते कर रहे है?

साया डालना–१ मेहरबानी करना। उ० वह अमीर-गरीब सभी पर साया डालता है। २ प्रभाव डालना। उ० उसकी विद्वता ने सभी पर साया डाल दिया है।

साया पड़ना–प्रभाव होना। उ० यहाँ तो उसका साया खूब पडा है।

साया में आना–आश्रय मे आना। उ० सब छोड कर भगवान के साये मे जाओ।

साया होना–१ मेहरबानी या दया होना। उ० जब ईश्वर का साया है तो फिर डर किसका? २. भूत आदि का प्रभाव होना। उ० रात को अकेले गया, वहीं शायद साया हो गया।

साये में रहना–आश्रित रहना, रक्षित रहना। उ० वह तो बाबू साहब के साए मे रहता है।

साये से भागना–दूर-दूर रहना, डर के कारण सामने न जाना।

साहस का साथ छोड़ना–हिम्मत मे कमी आना।

साष्टांग प्रणाम करना–जमीन पर पेट के बल लेट कर आठों अंगों से प्रणाम करना। उ० पहले शिष्य गुरु को साष्टांग प्रणाम करते थे।

सिंगार-पटार करना–दे० 'बनाव-चोनाव करना'।

सिंदूर लुटना–विधवा होना।

सिंह का बच्चा–बहुत बहादुर। उ० वह सिंह का बच्चा है, कभी सामना होगा तो पता चलेगा।

सिंह की मूँछ पर हाथ फेरना–दुस्साहस का काम करना।

सिंहनाद करना–जोर से हुँकार भरना।

सिंह-सियार की दोस्ती–१ अनमेल दोस्ती। २ दो दुश्मनों की दोस्ती। ३ बहुत मजबूत एवं बड़े और बहुत छोटे एवं निर्बल की दोस्ती। उ० सिंह-सियार की दोस्ती नहीं चल सकती।

सिंह होना–१ क्रूर होना। २ अपने क्षेत्र में अकेले रहने वाला होना। ३ वीर होना, बहादुर होना।

सिक्का जमना–दे० 'सिक्का बैठना'।

सिक्का बैठना–अधिकार या असर होना। उ० यहाँ कांग्रेस का सिक्का खूब बैठा है।

सिक्का बैठाना–प्रभाव जमाना। उ० गुणी आदमी को सिक्का बैठाते देर नहीं लगती।

सिट्टी-पिट्टी गुम होना–डर या भय से होश-हवाश न रहना। उ० जब उसने प्रश्न पूछा तो मेरी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।

सिट्टी-पिट्टी भूलना–दे० 'सिट्टी-पिट्टी गुम होना'।

सिट्टी भूलना–दे० 'सिट्टी-पिट्टी गुम होना'।

सिड़ सवार होना–दे० 'सनक सवार होना'।

सितम करना–दे० 'सितम ढाना'।

सितम ढाना–जुल्म करना। उ० गरीबों पर सितम ढाओगे तो भगवान तुम पर सितम ढायेगा।

सितार का तार उतर जाना–पहले-सी मस्ती या आनन्द न रह जाना।

सितारा गर्दिश में होना–मुसीबत में होना। बदकिस्मत होना। उ० आजकल उनका भी सितारा गर्दिश में है।

सितारा चमकना–सौभाग्य के दिन होना। उ० भारतवर्ष का सितारा दिन पर दिन चमकता जा रहा है।

सितारा डूबना–बदकिस्मत होना, धाक खत्म होना।

सितारा बुलन्द होना–दे० 'सितारा चमकना'।

सितारा मिलना–१ नक्षत्रों तथा ग्रहों का अनुकूल होना। उ० जब सितारा मिले तो कुछ काम भी हो। २. अनुराग होना। उ० उन दोनों का सितारा मिल गया है।

सिद्ध-हस्त होना–कुशल होना।

सिपर डालना–दे० 'सिपर फेंकना'।

सिपर फेंकना–डर से हथियार डाल कर हार मान लेना।

सिपर होना–सामने आना, रुकावट डालना। उ० कत्ल भी होने न देंगे रश्क से अगयार को, तेग जब खींचोगे उन पर हम सिपर हो जायेंगे।

सिप्पा जमाना–१ यत्न या उपाय करना। उ० बिना सिप्पा जमाए काम होने की आशा नहीं है। २ बहुत घुमा-फिरा कर कहना। उ० तुम तो यार सिप्पा जमा कर सभी करवा लेते हो। ३. रोब जमाना। ४ प्रभावित करना। ५. अधिकार करना।

सिप्पा बैठना–१ कोशिश चलना। उ० यदि उनसे सिप्पा बैठ गया तो लड़का कुछ हो जाएगा। २ रोब गालिब होना।

सिप्पा भिड़ना–१. उपाय होना। उ० कोई सिप्पा ही नहीं भिड़ता कि काम हो। २. तदबीर से काम हो जाना। उ० उसका तो अच्छा सिप्पा भिडा। ३. पहुँच होना।

सिप्पा भिड़ाना–उपाय करना, रास्ता निकालना। उ० किसी तरह सिप्पा भिड़ाओ तो काम हो जाय।

सिप्पा लड़ना–दे० 'सिप्पा भिड़ना'।

सिप्पा लड़ाना–दे० 'सिप्पा भिड़ाना'।

सिमट जाना–लज्जा करना।

सियापा चढ़ना–रोना, दुःख होना।

सियार बोलना–एकदम सुनसान होना।

सियार होना–१ चालाक होना। २. कायर, भीरु और डरपोक होना। ३. डर जाना, डर कर दुबक जाना। उ० वह तो मुझे देखते ही सियार हो गया।

सिर-आँखों के बल–बड़े उत्साह से करना।

सिर आँखों पर–सादर स्वीकार।

सिर-आँखों पर बैठाना–बड़े सम्मान और सत्कार से स्वागत करना। उ० पं० नेहरू को संसार सिर-आँखों पर बैठा रहा है।

सिर-आँखों पर होना–हृदय से स्वीकृत होना। पूर्णत: स्वीकार होना। उ० उसका कहना सिर-आँखो पर है।

सिर आना–देवी-देवता के प्रभाव से खेलना। उ० उसके सिर काली आती है।

सिर आसमान से लगना–बहुत गर्व होना।

सिर उठाकर चलना–रोब से अकड़ कर चलना। उ० वह तो गुंडो का साथ पाकर सिर उठाकर चलने लगा है।

सिर उठाना–१. आँख उठा कर देखना। उ० वह तो बडो के आगे सिर भी नही उठाता है। २. बराबरी मे प्रतिष्ठित रूप से खड़ा होना। उ० जर्मनी अन्य देशो के सामने सिर नही उठा सकता। ३. गर्व करना। उ० अभी सिर न उठाओ, तुमसे भी बड़े-बड़े पडे है। ४. विद्रोह करना। उ० अलाउद्दीन के समय मे सिर उठाने वाले को कठिन दंड दिया जाता था। ५. बीमारी से फुरसत पाना। ६ किसी काम से फुरसत पाना।

सिर उठाना मुश्किल होना–बिलकुल फुरसत न मिलना।

सिर उठाने की फ़ुरसत न होना–बिल्कुल अवकाश न मिलना। उ० यहाँ तो सिर उठाने की भी फुरसत नही है और तुम जाने के लिए ही घबडाए हो।

सिर उतरवाना–सिर कटवा लेना। उ० अलाउद्दीन ने अपने चाचा का सिर उतरवा लिया।

सिर उतारना या उतार लेना–सर धड़ से अलग करना। उ० अलाउद्दीन के इशारे पर सिपाहियों ने जलालुद्दीन का सिर उतार लिया।

सिर ऊँचा करना–दे० 'सिर उठाना'।

सिर ओखली में देना–आफ़त या खतरे मे पड़ना। उ० सिर दिया ओखली मे तो मूसलो का क्या डर?

सिर ओढ़ना–अपने ऊपर दायित्व लेना।

सिर औंधाकर पड़ना–१. शोक से सर नीचे करके पड़े रहना। उ० जाने क्यों जब से पत्र आया है, वह सिर औंधा कर पड़ा है। २. बहुत चिंतित या लज्जित होना।

सिर करना–१. गले मढना। उ० सारी ज़िम्मेदारी उनके सिर कर दो और चलो। २. बाल सँवारना। उ० अभी तो वह सिर कर रही है। [दूसरे अर्थ का प्रयोग केवल स्त्रियों के लिए होता है।]

सिर कलम करना–सिर काट लेना।

सिर का एक बाल भी न छोडना–सर्वस्व छीन या ले लेना। उ० डाकुओं ने उसके सिर का एक बाल भी न छोड़ा।

सिर काढ़ना–१ प्रसिद्ध होना। उ० अब तुम भी सिर काढने के फेर मे हो। २. बाल सँवारना या चोटी-पट्टी करना। उ० सिर काढ़ कर जल्दी चलो।

सिर का न पाँव का–दे० 'घर का न घाट का'।

सिर का पसीना पैर तक आना–कठिन परिश्रम करना। उ० काम करते-करते किसानों का सिर का पसीना पैर तक आता है, तब भी बेचारे भूखे रहते है।

सिर का बोझ टलना–झझट या किसी बड़े काम का दूर होना। उ० लडकी की शादी हो गई, सिर का बोझ टला।

सिर का बोझ टालना–१ झझट हटाना। २. बडा काम पूरा करके निश्चिंत होना। उ० कही टटोल कर उसकी शादी करके सिर का बोझ टालो।

सिर की बला–अपनी मुसीबत।

सिर कुचलना–पराजित करना, दबा देना।

सिर कूटना–जान खपाना, बहुत परिश्रम करना। उ० मतबादी इहि हित सिर कूटैं, मुक्ति मिले जनम-मरन छूटैं।

सिर के बल चलना–सम्मान के साथ बुलाने पर जाना। इज्जत करना। उ० तुम्हारे कहने पर वह सिर के बल चल सकता है।

सिर के बल नीचे आना–बुरी तरह परास्त होना।

सिर के बाल सफेद होना–उम्र बीतना, बुढापा आना।

सिर खपाना–१ बहुत सोच-विचार करना। उ० बहुत सिर खपाया, परन्तु प्रश्न न आया। २ समझाना, बुद्धि मे बैठाना। उ० इतना यदि दूसरे के लिए सिर खपाते तो अवश्य समझ जाता।

सिर खाना–परीशान करना। उ० मेरा सिर न खाओ, मुझे काम करने दो।

सिर खाली करना–१. दे० 'सिर खपाना'। २. अधिक बोलना। उ० आज कक्षा मे सिर खाली कर दिया। ३ सिर खाना। उ० आप हमारा सिर खाली न करें, कृपा कर तशरीफ़ ले जायँ।

सिर खुजलाना–१. बहाना करना। उ० सिर न खुजलाओ, देना हो तो दे दो। २. मार खाने की इच्छा करना। उ० सिर खुजला रहा है क्या, कि दिया काम नहीं कर रहे हो। ३. लज्जित हो जाना।

सिर खुलवाना–सिर मे पाछ लगवा कर खराब खून निकलवाना। उ० पुराने जमाने में सिर खुलवाने का बहुत रिवाज़ था।

सिर खोल देना–सिर फोड देना। उ० अधिक बकबक करेगा तो एक ही लाठी मे सिर खोल दूंगा।

सिर पैर गाड़ी पहिया करना–अथक परिश्रम करना, खूब दौड-धूप करना।

सिर गूंथना–सिर के बाल संवारना।

सिर गंजा करना–१ दे० 'सिर के बाल न छोड़ना'। २. बहुत मारना। उ० अब अधिक शरारत करोगे तो सिर गंजा कर दूंगा।

सिर घुटनों में देना–१. लज्जित होना। उ० उसने तो तुरंत सिर घुटनों मे दे दिया। २ सोच-विचार में पडना। उ० क्या बात है कि सिर घुटनो में दिये हो।

सिर घूमना–१ घबराहट होना। २ उददंड या धृष्ट हो जाना।

सिर चढ़ कर बोलना–अपने आप जाहिर हो जाना। उ० तीन काम—चोरी, हत्या और छिनारी सिर चढ कर बोलते है।

सिर चढ़ना–१. शरारत करना। २ बहुत मुँह लगना। उ० बडो के सिर चढना ठीक नही है। ३ सिर का बलिदान होना। उ० भारत की स्वतत्रता के लिए अगणित सिर चढे।

सिर चढा–मुँह-लगा। उ० यह तो बडा सिर चढा लड़का है।

सिर चढ़ाना या चढ़ा देना–१ गुस्ताख बनाना। उ० छोटो को कभी सिर न चढाओ। २ सिर बलिदान करना। उ० भगतसिह ने माँ की वेदी पर सिर चढ़ा दिया।

सिर चला जाना–१ मर मिटना। उ० देश के लिये सिर चला जाय तो अच्छा ही है। २. पागल हो जाना। उ० उसका सिर चला गया है।

सिर चीरना–बहुत कोशिश करना। उ० लाख सिर चीरो, पर पास नही हो सकते।

सिर छिपाने का स्थान–आश्रय का स्थान मकान।

सिर छुपाना–किसी को मुँह न दिखाना। उ० वह बेचारा तुम्हारे ही कारण सिर छुपाता घूम रहा है, अब तो माफ़ कर ही दो।

सिर जमीन पर रखना–आधीन होना, विनम्र होना।

सिर जाना–१ जिम्मे पडना। २. सिर कटना।

सिर जोड़ कर बैठना–लोगो का विपत्ति पड़ने पर पास मे सात्वना देने के लिए बैठना। उ० उसका पुत्र मर गया, सब लोग सिर जोड़ कर बैठे है।

सिर जोड़ना–१ चित्त एकाग्र करना। उ० सिर जोड़ कर पढोगे तो पास हो जाओगे। २. सभा या जलसा करना।

सिर झुका कर मान लेना–बिना किसी प्रतिवाद के स्वीकार कर लेना।

सिर झुकाना या झुका देना–१. आज्ञा मानना। उ० सबका बडो के आगे सिर झुकाना चाहिए। २. शर्मिंदा होना। उ० सामने आते ही उसने सिर झुका दिया। ३. पराजित होना। उ० अंत मे उसे सिर झुकाना ही पडा। ४ विनम्र बनना। उ० वह सभी के आगे सिर झुकाए रहता है। ५. प्रणाम करना। उ० बडों को देख कर सिर झुकाया करो।

सिर टकराना–बहुत प्रयत्न करना। उ० मैंने बहुत सिर टकराया, पर काम न बन सका।

सिर टूटना–झगड़ा-फसाद मे सर फूटना। उ० आज के झगडे मे बहुतो के सिर टूटे।

सिर ठोंकना–पछताना।

सिर डालना–जिम्मे करना। उ० नुकसान तुमने किया और जुर्माना मेरे सिर डाल दिया।

सिर तोड़ना–दे० 'सिर फोड़ना'।

सिर थाम के बैठना–बहुत शोक करना। उ० क्या सिर थाम के बैठे हो, यह तो ससार का काम ही है।

सिर देना—मर-मिटना । उ० देश के लिए सिर दे दो ।

सिर धड़ से अलग करना—दे० 'सिर उतारना' ।

सिर धरना—१ स्वीकार करना । उ० आपकी बातें सिर धरता हूँ । २ उत्तरदायी बनाना । जिम्मे करना । उ० मै नही जानता था कि सब मेरे ही सिर धरा जायेगा ।

सिर धुनना—दे० 'सर पीटना' ।

सिर नंगा करना—दीनता दिखाना । उ० बडो के आगे सिर नगा भी करना पडे तो हर्ज क्या ?

सिर न उठा सकना—१. काम मे अत्यन्त व्यस्त होना । २ लज्जा या आदर के कारण सिर झुका रहना । ३ पूर्णत: पराजित होना ।

सिर नवाना—१ प्रणाम करना । २ दीनता दिखाना । ३ लज्जित या शर्मिदा होना । ४. नीचा दिखाना । ५ हराना । ६ बेइज्जत करना ।

सिर नीचा करना—१ बेइज्जत होना । उ० तुमने नीच काम करके खुद अपना सिर नीचा किया । २. शर्मिदा करना । उ० व्यर्थ के लिये उसका सिर नीचा न करो । ३ हार मान लेना ।

सिर नीचा होना—१ बेइज्जत होना । उ० गुडो के साथ रहने से उसका सिर नीचा हो गया । २ लज्जित होना । उ० हार जाने के कारण उस दिन उसका सिर नीचा हुआ ।

सिर पकड़ कर बैठना—निश्चेष्ट बैठना, निष्क्रिय होना, दु:खी होना ।

सिर पचाना—१ बहुत सोच-विचार करना । उ० लाख सिर पचाओ, सवाल नही हल होगा । २ मेहनत करना । उ० दिन भर सिर पचाता है तो पेट भरता है ।

सिर पटक के मरना—बहुत खुशामद या कोशिश करना । उ० सिर पटक के मर गया, पर उसने एक न सुनी ।

सिर पटकना—१ चिंता या फिक्र करना । उ० सिर पटकने से क्या लाभ, जो होना था, वह तो हो गया । २. बहुत प्रयास या परिश्रम करना । उ० सिर पटक कर उसने काम कर लिया । ३ सिर पटक कर रोना ।

सिर पड़ना—अपने पर आ जाना । उत्तरदायी होना । ज़िम्मे पडना । उ० यह काम मेरे सिर पडा है । उनके बाद मेरे ही सिर पड़ेगी ।

सिर पर आ जाना—कम दिन शेष रह जाना । पास आ जाना । उ० अब तो परीक्षा सिर पर आ गई । अब तो मौत सिर पर आ गई ।

सिर पर आना—दे० 'सिर पड़ना' ।

सिर पर आ पड़ना—१ बहुत समीप आ पहुँचना । २. बहुत थोडा समय रह जाना ।

सिर पर आफ़त आना—विपत्ति पड़ना ।

सिर पर आरे चलना—१ जुल्म होना । उ० किसानो के सिर पर आरे चलते है, पर वे कर ही क्या सकते है ? २. प्राण पर आ बनना ।

सिर पर आसमान उठा लेना—१. बहुत गर्व करना । २. बहुत चीखना-चिल्लाना ।

सिर पर उठा लेना—दे० 'आसमान सिर पर उठा लेना' ।

सिर पर एक भी बाल न बचना—खूब दुर्गति होना ।

सिर पर कफन बांधना—मरने तक को तैयार हो जाना ।

सिर पर कोई न होना—कोई सहायक या रक्षक न होना । उ० तुम्हारे बाद घर के सिर पर कोई न होगा ।

सिर पर खडा रहना—हर समय आगे रहना । उ० मालिक तो सदा सिर पर ही खडा रहता है ।

सिर पर खून चढ़ना—१ क्रोधित होकर किसी का प्राण लेने पर उतारू हो जाना । उ० उससे न बोलो, उसके सिर पर खून चढा है । २ किसी का खून करने के बाद खूनी की ऐसी दशा हो जाना कि देखने वाला समझ जाय कि उसने खून किया है ।

सिर पर खून सवार होना—दे० 'सिर पर खून चढना' ।

सिर पर खेलना—१ बिल्कुल निकट होना । उ० उसके सिर पर मौत खेल रही है । २ प्राण खतरे मे डालना । उ० सिर पर खेल कर जवानो ने गढ जीता । ३ दे० 'सिर खेलना' ।

सिर पर घड़ फोड़ना—दोष देना ।

सिर पर घर उठाना-दे० 'आसमान सिर पर उठाना' ।

सिर पर चढ़ कर बोलना—दे० 'सिर पर चढ़ना' ।

सिर पर चढ़ना–१. अपने आप जाहिर हो जाना। २. उत्पात करना। उ० क्या सिर पर चढ़ रहे हो ? ३. बहुत परीशान करना। ४. किसी चीज के करने या कराने के लिए बहुत कहना। ५. अशिष्टता का व्यवहार करना, बेअदबी करना। उ० इस लड़के में सिर पर चढ़ने की आदत बड़ी बुरी है।

सिर पर छप्पर रखना–१. दबाव डालना, बहुत कहना। उ० उसके सिर पर छप्पर रखने की जरूरत न होगी, वह स्वयं कर देगा। २ केश बहुत बढ़ा लेना। उ० क्या सिर पर छप्पर रख लिया है ?

सिर पर छाया रहना–कोई सहारा या आश्रय होना।

सिर पर जूँ न रेंगना–दे० 'कान पर जूँ न रेंगना'।

सिर पर ठीकरा फोड़ना–दोषी ठहराना।

सिर पर जूता पड़ना–जूते से मार पड़ना।

सिर पर पड़ना–दे० 'सिर पड़ना'।

सिर पर पाँव रख कर भाग जाना–घबड़ा कर भाग जाना।

सिर पर पाँव रख देना या रखना–१ जल्दी में होना। उ० तुम तो जब आते हो, सिर पर पाँव रखे ही आते हो। २. उजड्ड बर्ताव करना। उ० तुम तो सभ्य हो, उसके सिर पर पाँव न रखो। ३. मात कर देना। ४ बढ़ कर होना। उ० शरारत में तो तुमने उसके भी सिर पर पाँव रख दिया।

सिर पर पृथ्वी उठाना–दे० 'आसमान सिर पर उठाना'।

सिर पर बीतना–दे० 'सिर पर आना'।

सिर पर भूत चढ़ना–दे० 'सिर पर शैतान चढ़ना'।

सिर पर मिट्टी डालना–१ नाराज होना। उ० आखिर क्या बात है कि उसके सिर पर मिट्टी डालते हो। २. अरुचि या घृणा दिखाना। उ० ऐसी औरतों के सिर पर मिट्टी डालता हूँ। ३. शोक करना।

सिर पर मुसीबतों का टोकरा पटक देना–बहुत बड़ी मुसीबत में डाल देना।

सिर पर मौत खेलना–ऐसी खतरनाक स्थिति में होना, जहाँ मृत्यु-भय हो।

सिर पर रखना–बड़ी आवभगत करना। उ० वह तो अपने पूज्यों को सिर पर रखता है।

सिर पर लेना–१ अपने को जोखिम में डाल कर भी अपने ऊपर लेना या सामना करना। उ० वीर पुरुष, जो भी आता है, उसे सिर पर लेता है। २. सहन करना। उ० सारी हानि अपने सिर पर ले लो। ३. ज़िम्मे लेना। उ० घर का काम मैंने अपने सिर ले लिया।

सिर पर वज्र गिरना–१. बहुत बड़ी मुसीबत पड़ना। २ अप्रत्याशित घटना का हो जाना।

सिर पर विपत्ति का वितान तनना–बहुत मुसीबतों का घेरे रहना।

सिर पर शैतान चढ़ना–१. बहुत क्रोधित होना। उ० उसके सिर पर तो शैतान चढ़ा ही रहता है, उससे कौन बोले। २. अभाग्य आना, बुरे दिन आना। ३. बुद्धि ठीक न होना।

सिर पर सवार होना–१. तगादा करना। २. धुन लगना। ३ साथ लगे रहना।

सिर पर सहना–खुद सह लेना। उ० मैंने सब कुछ सिर पर सह लिया।

सिर पर साया होना–अभिभावकत्व होना।

सिर पर सींग होना–कोई विशेष गुण या अवगुण होना। उ० उनके सिर पर सींग है क्या कि उनको टिकट पहले दे दूँ। उनके सिर पर सींग है क्या कि केवल उन्हीं को दंडित करूँ ?

सिर पर सुरख़ाब का पर लगना–कोई विशेषता होना।

सिर पर से साया उठ जाना–सहायक या अभिभावक का दिवगत होना।

सिर पर सेहरा बंधना–१. प्रशंसा या शाबाशी मिलना। उ० देखें कि सेहरा किसके सिर बंधता है ? २ विवाह होना। ३ विजयी होना।

सिर पर सेहरा होना–१ प्रशंसित होना। उ० सेहरा तो उसी के सिर पर है। २. प्रधान होना। उ० देश का सेहरा नेहरू के सिर पर है।

सिरपरस्ती करना–बचाना, रक्षा करना। उ० मेरी सिरपरस्ती भगवान् ही करेंगे।

सिर पर हाथ धर के रोना–अपने भाग्य पर रोना। उ० जब फ़ेल हो गए तो सिर पर हाथ धर के रोने से क्या लाभ ?

सिर पर हाथ फेरना–१. बहकाना । फुसलाना । उ० कुत्ते के सिर पर हाथ फेर कर लाओ । २. चालबाजी से हड़प जाना । उ० गुंडो ने बेचारी के सिर पर हाथ फेर कर सब ले लिया । ३ प्रेम दिखाना । ४ प्रेम करना । ५. आशीर्वाद देना ।

सिर पर हाथ रखना–१ सहायता करना । उ० उसने तुम्हारे सिर पर हाथ रखा है, नही तो बता देता । २ कसम खाना । उ० बच्चे के सिर पर हाथ रख कर कहता हूँ कि यह चीज मेरी है । ३. शरण देना ।

सिर पर होना–पालने वाला या मददगार होना । उ० मेरे सिर पर ईश्वर है ।

सिर पीटते फिरना–पछताना, चिता करना । उ० जब चोरी हो गई तो सिर पीटते फिरने से क्या लाभ ?

सिर पीटना–सिर धुनना । उ० सिर पिट-पिट पछनाहि । वह सिर पीट कर रो रही है ।

सिर पीट लेना–भाग्य पर रोकर बैठ जाना । उ० सिर पीट लेने मे काम न चलेगा, इस मामले मे कुछ करो ।

सिर-पूँछ न होना–कोई आधार या तथ्य न होना, मात्र निराधार अफ़वाह होना ।

सिर फिरना–१ बुद्धि भ्रष्ट होना, अक्ल उलटी होना । उ० है सुधारों की वहाँ पर आस क्या, हो जहाँ पर सिर धरों का सिर फिरा । उनका सिर फिर गया है, वे इसे नही समझ सकते । २. पागल होना ।

सिर फेरना–१ बहकाना । उ० उसका सिर न फेरो । २ इन्कार करना । उ० उसने तो मेरे माँगने पर सिर फेर लिया । ३. मुखातिब न होना, दूसरी ओर देखना ।

सिर फोड़ना–१. मर तोड़ कर अंतिम क्रिया करना । उ० अपनों का भी चिता मे सिर फोड़ना पड़ता है । २ लडना-झगड़ना । उ० शांति से रहो, सिर न फोडो ।

सिर बाँधना–केश सवाँर कर बाँधना । उ० सिर बाँध लो ।

सिर बेचना–१. सैनिक बनना । उ० युद्ध काल मे लाखों ने सिर बेच दिये । २. इज़्ज़त बेचना । उ० सिर बेच कर रुपया न कमाओ ।

सिर भिन्नाना–सर मे चक्कर आना । उ० इसकी बात सुन कर मेरा सिर भिन्नाने लगा ।

सिर मढ़ना–दे० 'सिर डालना' ।

सिर-माथे पर बैठाना–बड़ी आवभगत करना । उ० वह उसकी क़द्र जानता है, अतः सिर-माथे पर बैठाता है ।

सिर-माथे पर होना–मान्य होना । उ० आपकी आज्ञा सिर-माथे पर है ।

सिर मारना–१ बहुत मेहनत करना । उ० बहुत सिर मारा, पर पास न हुआ । २. बहुत तलाश करना । उ० लाख सिर मारने पर भी वह नही मिला । ३ समझाना । उ० कितना भी सिर मारो, उसकी मोटी अकल मे कुछ धँसता ही नही । ४ गले मढ़ना । उ० उसकी चीज उसके सिर मारो ।

सिर मुड़ाना–दे० 'मूड मुडाना' ।

सिर मुड़ाते ओले पड़ना–आरम्भ मे ही काम मे गड़बडी पडना या हानि होना । उ० मैने व्यापार शुरू किया, परन्तु सिर मुड़ाते ही ओले पडे ।

सिर मुड़ना–धूर्तता से छीन लेना । उ० तुमने तो उसका सिर ही मूड़ लिया ।

सिर में बाल होना–शक्ति होना । उ० जब तक सिर मे बाल है, तब तक इसे नही छोड सकता ।

सिरमौर होना–श्रेष्ठ स्थान पाना ।

सिर रँगना–कपाल फोड़ देना । उ० ज्यादा बकोगे तो सिर रँग दूँगा ।

सिर रहना–बार-बार कह कर परेशान करना । उ० सिर रहने से तबीयत घबडाती है, ज़रा साँस तो लेने दो ।

सिरवा मारना–ओसावन मे हवा न चलने पर कपड़े से हवा देना । उ० हवा नही है तो सिरवा मार कर ओसावन करवा दो ।

सिर सफ़ेद होना–१ तजुरबा होना । २ अवस्था गिरना । उ० उसका सिर सफेद हो चला है । ३. बाल सफेद होना । उ० आखिर सिर धूप मे तो सफेद हुआ नही है ।

सिर रगड़ कर मर जाना–कितना भी प्रयत्न करना, पर सफल न होना ।

सिर सहलाना–१ स्नेह करना । उ० वह अपने कुत्ते का सिर सहला रहा था । २. खुशामद करना । उ० मुझे दूसरो का सिर सहलाना अच्छा नही लगता ।

सिर सूँघना–आशीर्वाद देना । उ० पडित जी ने उसका सिर सूँघा ।

सिर से कफ़न बाँधना–प्राण की परवाह न करना। उ० वह तो सिर से कफन बाँधे फिरता है। भगतसिंह सिर में कफन बाँधे फिरता था।

सिर से खेल जाना–१ प्राण अर्पण कर देना। उ० युद्ध में वह सिर से खेल गया। २. जी-जान से लग जाना। ३. प्राण की भी परवाह न करना। उ० इस काम के पीछे मैं सिर से खेल जाऊँगा।

सिर से खेलना–१ दूसरों को लड़ाना। उ० तुमको सिर से खेलने में बड़ा मजा आता है।

सिर से चलना–बहुत सम्मान करना। उ० उसके लिए मैं सिर से चलता हूँ।

सिर से तिनका उतारना–उपकार के बदले उपकार करना। उ० यदि उसने मेरा भला किया तो मैं भी कभी सिर से तिनका उतार दूँगा।

सिर से पानी गुजरना–सहनशीलता की सीमा पार होना। उ० अब तो सिर से पानी गुजरता है, आगे बर्दाश्त न होगा।

सिर से पैर तक–पूरे बदन में, अंग-प्रत्यंग में। उ० अब तो विष सिर से पैर तक फैल गया।

सिर से पैर तक आग लगना–दे० 'सिर पर शैतान चढ़ना'। उ० उसकी बात सुनते ही सिर से पैर तक आग लग गयी।

सिर से बला टालना–१ आफ़त या झंझट हटाना। उ० उसने रुपया देकर सिर से एक बला टाल दी। २ बिना मन के काम करना। उ० मन से किया है या सिर से केवल बला टाल दी है?

सिर से बोझ उतारना–१ दे० 'सिर से बला टालना'। २ कृतज्ञता मान कर बदला देना। उ० एक बार उसने मेरे लिए किया था, मैंने भी करके सिर से बोझ उतार दिया। ३ बड़ा काम कर डालना। उ० लड़की की शादी करके सिर से बोझ उतार दिया।

सिर से भूत उतरना–धुन दूर होना।

सिर से लेकर पैर तक देखना–अच्छी तरह देखना।

सिर हथेली पर लिए फिरना–मृत्यु से न डरना, जान की बाज़ी लगा कर कोई काम करना।

सिर हिलाना–१ 'ना' कर देना। उ० माँगने पर उसने सिर हिला दिया। २ सिर हिला कर हाँ करना। उ० बोले तो नहीं, पर सिर हिला दिया तो कर ही देंगे।

सिर होना–१ अनवरत कोशिश में रहना। उ० वह नौकरी के सिर हो गया है। २ भाँप जाना। उ० वह देखते ही सिर हो गया है। ३. जिम्मे होना। उ० सारा काम मेरे सिर हो गया।

सिरे का–१ चोटी का। उ० वह तो सिरे का नेता है। २. आखिरी। उ० सिरे की पुस्तक मुझे देना।

सिले में–उसकी जगह पर, बदले में। उ० तुम करो सिले में, मैं भी कुछ कर दूँगा।

सिसकियाँ भरना–सिसक-सिसक कर रोना। उ० देखो कमरे में कौन सिसकियाँ भर रहा है?

सींग काट कर बछड़ों में मिलना–वृद्ध होकर लड़कों में रहना। उ० अब क्या सींग काट कर बछड़ों में मिलते हो?

सींग दिखाना–१ विश्वास देकर मौके पर धोखा दे देना। उ० उसने तो ऐन मौके पर सींग दिखा दी। २. निराश आदमी को और चिढ़ाना। उ० सींग न दिखाओ, मेरे भी दिन कभी पलटेंगे।

सींग निकलना–१ शरारती होना। उ० अब तो इसके सींग निकलने लगी है। २. बेवकूफी करना। ३ जानवरों का युवा होना।

सींग पर मारना–ध्यान न देना। उ० वह तो मेरी बात सींग पर मारता है।

सींग समाना या समा जाना–जीविका चलाने का ठिकाना होना। उ० सींग समा जाय तो मैं भी मकान खोज लूँ।

सींगी तोड़ना–१ गले लगाना। उ० उसने स्त्री को देखते ही सींगी तोड़ी। २ सींगी में रक्त निकालना। उ० आज भी कुछ हज्जाम सींगी तोड़ते हैं।

सींगी लगाना–दे० 'सींगी तोड़ना'।

सींव काँड़ना–दे० 'सींव चरना'।

सींव चरना–ज़बर्दस्ती या हठ करना। उ० क्यों सींव चरते हो, उसे देना होता तो वह दे देना।

सीटी देना–आज्ञा देना। उ० गार्ड ने गाड़ी खुलने की सीटी दी।

सीठी लगना–निस्सार लगना।

सीढ़ी-सीढ़ी चढ़ना–शनैः-शनैः तरक्की करना। उ० एक-ब-एक नहीं चढ़ सकते हो, अत सीढ़ी-सीढ़ी चढ़ना ठीक है।

सीध आना–मुठभेड़ करना । उ० तुम्हारे सीध आने का कौन साहस करेगा ?

सीध बांधना–१. निशान लगाना । उ० सिपाही बंदूक की सीध बाँध रहा है । २. लाइन मे खड़ा होना ।

सीधा करना–१. ठीक रास्ते पर लाना । मार कर ठीक करना । उ० उसको पुलिस ने सीधा कर दिया । २. निशान लगाना । उ० वह सीधा कर रहा है ।

सीधा दिन–मंगल का दिन । उ० सीधे दिन से कार्य शुरू करो ।

सीधा-साधा–१. भोला-भाला । उ० वह तो सीधा-साधा लड़का है । २. मामूली तौर पर । उ० गाधी जी सीधे-साधे रहते थे ।

सीधी अंगुली घी निकालना–सरलता से काम बनाना । उ० आजकल सीधी अँगुली घी नही निकलता है ।

सीधी तरह–सरलता से, आसानी से । उ० सीधी तरह काम न होगा, तो टेढ़ी तरह होगा ।

सीधी बात न आना या निकलना–ठीक-ठीक बात न करना ।

सीधी बात न बोलना–सत्य और प्रिय बात न बोलना ।

सीधी राह–उचित पथ, उचित पथ पर । उ० सीधी राह चलो, नही तो बदनामी होगी ।

सीधी सुनाना–स्पष्ट शब्दो मे कह देना । उ० मुझे लप्पो-चप्पो नही आती, मै तो सीधी सुनाता हूँ ।

सीधे मार्ग पर आना–१. सुधर जाना । २ ठीक और उचित काम करना ।

सीधे मुँह बात न करना–रोब से बोलना । उ० ओहदा पा गया, अब तो सीधे मुँह बात ही नही करता है ।

सीना उभार कर चलना–इतरा कर गर्व से चलना । उ० चार दिन से धूल लगाता है तो सीना उभार कर चलता है ।

सीना कूटना–रंज करना, छाती पीटना । उ० बस क्या कहे हाले दिले मातम ज़दा ऐ वाय, सीना ही फ़कत कूटे हैं क्या पीटे है सर भी ?

सीना चाक होना–छाती टूक-टूक होना, छाती फटना । उ० मिला क्या हजरत आदम को फल जन्नत से आने का, न क्यो इस ग़म से ना चाक हो गंदुम के दाने का ।

सीना चौड़ा होना–गर्व होना ।

सीनाज़ोरी करना–जबर्दस्ती करना । उ० चोरी और सीनाज़ोरी । यहाँ सीनाजोरी न करो ।

सीना तान कर चलना–१. गर्व करना । २. अकड़ कर चलना ।

सीने पर मूँग दलना–सरे आम दुःख देना ।

सीने पर साँप लोटना–दे० 'छाती पर साँप लोटना' ।

सीने पर सिल धरना–छाती पर पत्थर रखना, ज़ब्त करना, सब्र करना । उ० ख़ानए अगयार में जाते है सुन कर क्या करूँ, सिल मगर सीने पर धर लेता हूँ भारी इन दिनों ।

सीने पर हाथ रखना–१ मन को समझा कर सतुष्ट करना । उ० सीने पर हाथ रखो और आगे कदम उठाओ । २ ठंढे दिल से विचारना और सत्य बोलना । उ० सीने पर हाथ रख कर कहो, क्या यह काम बुरा नही है ।

सीने में अंगार होना–मन मे वेदना या विद्रोह होना ।

सीने से लगाना–१. प्रेम से आलिगन करना । उ० मिलते ही उसने सीने से लगा लिया । २ प्रेम से स्वागत करना । उ० शुभ समाचार को मैंने सीने से लगाया ।

सीप से समुद्र उलीचना–नगण्य प्राय साधन से बहुत बडा काम करने का असफल प्रयत्न करना ।

सीमा से बाहर जाना–मर्यादा से अधिक या बेहद होना । उ० सीमा से बाहर न जाओ नही तो बदनामी होगी ।

सीर में–ऐसे कब्ज़े मे जो कोई ले न सके । उ० उसके पास सीर में ५० बीघे खेत हैं ।

सुख का सपना हो जाना–जीवन मे तनिक सुख भी न रह जाना ।

सुख की नींद सोना–चैन से दिन काटना । उ० सब तरह से निश्चित होकर वह सुख की नींद सोता है ।

सुख की सेज उठ जाना–सुख समाप्त हो जाना ।

सुख मानना–१. प्रसन्न रहना । उ० यह बैल मेरे यहाँ सुख मानता है । २. मुआफ़िक रहना । उ० तुम तो सभी से सुख मानते हो ।

सुख में राते होना–अत्यन्त सुख में होना ।

सुख लूटना–मौज उड़ाना । उ० वह आजकल जवानी का सुख लूट रहा है ।

सुग्गे का सेमल होना–भ्रम होना ।

सुतली में पोत पोहना–बेमेल या असगत काम करना ।

सुध दिलाना–१ विस्मृत बात का स्मरण कराना । उ० जब मैंने सुध दिलायी तो उन्हे होश पडा, नही तो भूल ही गए होते ।

सुध बिसरना–सब भूल जाना । उ० गोपियो का प्रेम देख कर ऊधो अपनी सुध बिसर गए।

सुध बिसराना–१ स्मृति न रहना । उ० जाकर उन्होंने सुध बिसरा दी । २. चेतनारहित हो जाना । मस्त हो जाना । उ० मुरली की तान सुनते ही जड़-चेतन सभी सुध बिसरा देते थे ।

सुध बिसारना–दे० 'सुध बिसराना' ।

सुध-बुध जाती रहना–१ होश-हवास न रहना । उ० शेर को देखते ही सुध-बुध जाती रही । २ आसक्त होना ।

सुध-बुध मारी जाना–१ मस्त हो जाना, आशिक हो जाना । उ० लैला के पीछे मजनू की सुध-बुध मारी गई थी । २ बेहोश हो जाना । ३ बेअक्ल होना । ४ पागल होना ।

सुध रखना–स्मरण रखना । उ० जरा मेरी बात की भी सुध रखिएगा ।

सुध लेना–१. खबर लेना । उ० कृष्ण ने जाकर गोपिकाओ की सुध भी न ली । २ रक्षार्थ आना । उ० बिना हरि के कौन मेरी सुधि ले ।

सुधाकर लिखते राहू लिखा जाना–अच्छा काम करते बुरा हो जाना ।

सुनगुन पाना–दे० 'सुनगुन मिलना' । उ० चिउरा दही के सुनगुन पावो । चौदह कोस दउर ले जावों ।

सुनगुन मिलना–किसी तरह पता चल जाना, सुराग मिलना । दे० 'भनक पड़ना' ।

सुनगुनाहट पाना–दे० 'सुनगुन पाना' ।

सुनती-उडती बात–अफ़वाह ।

सुनना चाहना–खरी-खोटी सुनने की इच्छा होना । उ० क्या कुछ सुनना चाहते हो कि काम ठीक से नही करते ?

सुन पाना–१. जान लेना । उ० अगर उसने सुन पाया तो खैर नही । २. गुप्त बात की थोड़ी-सी आहट मिलना ।

सुनहरा मौका–अनुकूल अवसर [यह Golden chance का अनुवाद है]

सुनी-अनसुनी करना–सुन कर भी उस पर ख्याल न करना । उ० अफसरो की सुनी-अनसुनी न करो, नही तो नाराज हो जाएँगे ।

सुन्न खींच जाना–एकदम चुप रह जाना, कुछ न कह पाना ।

सुन्न हो जाना–१ धक्क से रह जाना, बेजान हो जाना । उ० चोट लगते ही सारा बदन सुन्न हो गया । २. सुस्त हो जाना । उ० वह तो सुन्न हो गया है, कुछ करता ही नहीं ।

सुबकियाँ लेना–सिसकी लेकर रोना । उ० वह सुबकियाँ ले रही है, तुमने कुछ कह दिया है क्या ?

सुबह का दीपक होना–श्रीहीन होना, मलिन होना, बुझने वाला होना ।

सुबह-शाम करना–दे० 'टीला-हवाला करना' ।

सुरग लगाना–जमीन के अन्दर खाई खोदकर बारूद भरना । उ० पहले सुरग लगा कर लडाई जीतना आसान था ।

सुर अलग-अलग रहना–एक राय न रहना, आपस मे फूट रहना । उ० सुर सदा है अलग-अलग रहता, एक सुर से कभी नही कहते ।

सुरत बिसारना–बिलकुल भूल जाना । उ० आपने जाकर सुरत भी बिसार दी ।

सुरधाम जाना, सुर पुर की राह लेना–मृत्यु को प्राप्त होना ।

सुरपुर सिधारना–मर जाना । उ० आज वह सुरपुर सिधार गया ।

सुर में सुर मिलाना–दे० 'हाँ मे हाँ मिलाना' ।

सुराग़ मिलना–भेद का कुछ पता चलना । उ० देखो, कुछ सुराग मिले तो बताये ।

सुराग़ लगाना–पता चलाना । उ० बिना उसके कोई सुराग नही लगा सकता ।

सुराग़ लेना–रहस्य पाना । उ० उसका सुराग लेना आसान नही है ।

सुर्ख़-रू होना–यशस्वी या प्रतिष्ठित होना ।

सुर्ख़ होना–१. पक कर लाल हो जाना । उ० फल सुर्ख हो गया है । २. क्रोधित होना । उ० क्यों सुर्ख होते हो, सुनो भी तो । ३. मोटा-ताजा और खुशरंग होना । उ० उसे तुम बीमार कहते हो और वह सुर्ख हो रहा है ।

सुर्खाब का पर लगा होना–कोई विशेषता होना। कोई विशेष बात होना। उ० सुर्खाब का पर लगा है क्या, कि केवल तुम्ही को निमंत्रण मिलेगा।

सुर्खाब का पर होना–किसी में कोई विशेषता होना।

सुलगना–भीतर ही भीतर नाराज होना।

सुलफ़ा हो जाना–गायब हो जाना। उ० जब से तुम पड़ोस मे आये हो, हमारा सुख-चैन सुलफा हो गया है।

सुला देना–मार कर खतम कर देना। उ० शिवाजी के सिपाहियो ने मुगलो की सेना सुला दी।

सुलूक करना–व्यवहार करना। उ० सबसे अच्छा सुलूक करो।

सुलूक से रहना–१. मेल-मिलाप से रहना। उ० आपस मे सुलूक से रहना सीखो। २ तहज़ीब से रहना। उ० बड़े हुए, सुलूक से रहो।

सुस्त होना–१. कमजोर होना। उ० बीमारी के कारण लड़का सुस्त हो गया। २ आलसी होना।

सुस्ती करना–देर करना, आलस्य करना। उ० काम में सुस्ती न करो, नही तो बिगड सकता है।

सुहाग उजड़ना–विधवा होना।

सुहाग भरा रहना–माँग भरी-पूरी रहना। पति का जीवित रहना। उ० ईश्वर करे तुम्हारा सुहाग भरा रहे।

सुहाग मनाना–अपने अहिवात की प्रार्थना करना। उ० मै तो ईश्वर से केवल अपना सुहाग मनाती हूँ। वह अटल रहे तो धन लेकर क्या करूँगी ?

सूअर होना–१. बहुत गंदा रहने वाला होना। २. बेवकूफ़ होना।

सूई का पहाड़ होना–जरा सी बात का बहुत बढ़ जाना।

सूई का भाला बनना–१ छोटी चीज से अधिक कष्ट मिलना। उ० मेरे लिए तो यही फोड़िया सूई का भाला बन गई है। २ छोटे ऐब का बढ़ जाना।

सूई के नाके से खुदाई को या सब को निकालना–कुदरत के जोर से असभव को कर दिखाना। उ० था काम यह तेरा ही खुदावंद ताला, ला सूई के नाके से खुदाई को निकाला।

सूई के नाके से हाथी निकलना–कठिन या असम्भव काम होना।

सूख कर काँटा होना–अति दुर्बल हो जाना। उ० वह तो ज्वर से सूख कर काँटा हो गया।

सूखते धान में पानी पड़ना–दुःखी या निराश व्यक्ति मे आशा का सचार होना।

सूखा जवाब देना–दे० 'कोरा जवाब देना'।

सूखा टरकाना–बिना इच्छा पूरी किए फेर देना। बिना लिए-दिए लौटा देना। उ० उसने तो तुम्हे सूखा टरका दिया।

सूखा टालना–दे० 'सूखा टरकाना'।

सूखा लगना–१. प्रसद न आना। उ० आज का खाना तो सूखा लगता है। २. सुखडी रोग का होना। उ० बच्चे को सूखा लगा है।

सूखी मुस्कान–ऐसी हँसी, जो हृदय से न निकली हो।

सूखे खेत लहलहाना–कष्ट मे सुख या आराम मिलना।

सूखे धान पर पानी पड़ना–मरते-मरते जान बचना। उ० डाक्टर के आने से सूखे धान पर पानी पड़ गया, नही तो कोई आशा नही थी।

सूखे पर लगना–तट पर जा लगना। किनारे लगना। उ० जहाज जाकर सूखे पर लगा। कोई ऐसी युक्ति करो कि मेरा बेड़ा भी सूखे पर लगे।

सूची-भेद्य अंधकार–गहरा अँधेरा।

सूत की तरह तोड़ना–बिना परिश्रम तोड़ देना, आसानी से तोड़ देना।

सूत की तरह होना–दे० 'सूत बराबर होना'।

सूत धरना–मकान आदि बनाने में सीध मे सूत से निशान करना। उ० राजगीर सूत धरता है।

सूत बराबर होना–बहुत महीन होना। उ० लाइन की मोटाई सूत बराबर होनी चाहिए। यह रस्सी तो सूत बराबर है।

सूत-सूत–१. थोड़ा-थोड़ा । २. सारा-पूरा । उ० उसका सूत-सूत गहना चोरी चला गया ।

सूतक लगना–छूत लगना ।

सूद-दर-सूद लेना–चक्रवृद्धि ब्याज लेना । उ० उस ग़रीब से सूद-दर-सूद न लो ।

सूद पर देना–ब्याज पर रुपया देना । उ० आजकल सूद पर देने का समय नहीं है ।

सूधी कहना–१. दे० 'खरी-खोटी सुनाना' । २ साफ़-साफ कहना ।

सूधी-सूधी सुनाना–दे० 'सूधी कहना' ।

सूधे-सूध–साफ़, स्पष्ट । उ० मैं तो सूधे-सूध कहता हूँ, चाहे किसी को बुरा लगे या अच्छा ।

सूना लगना–सुनसान लगना । उ० उनके चले जाने से घर सूना लगता है ।

सूप भर–बहुत, बहुत ज्यादा । उ० थोड़ा-सा चाहिए, सूप भर लेकर क्या करूँगा ?

सूरज की तरह चढ़ना–पूर्ण प्रताप से चढ़ाई करना ।

सूरज के सम्मुख जुगनूं–तुलना में अत्यन्त सामान्य या तुच्छ ।

सूरज को दीपक दिखाना–१ बहुत गुणी को कुछ बताना । उ० जवाहरलाल को राजनीति बताना सूरज को दीपक दिखाना है । २ बहुत प्रसिद्धि का परिचय देना । उ० नेहरू का भारत मे परिचय देना सूरज को दीपक दिखाना है ।

सूरज चढ़ना–कुछ दिन निकलना । उ० सूरज चढ़ने के बाद मै उठा और हाथ-मुंह धोकर कचहरी चला गया ।

सूरज ढलना–१. अवनति होना । उ० उसका सूरज ढल रहा है । २. शाम होना ।

सूरज पर थूकना–१. निर्दोष को कलंक लगा कर बदनाम करना । उ० सूरज पर थूकने का अर्थ अपने पर थूकना है । सूरज पर थूकोगे तो कभी तुम्हारे साथ भी कोई ऐसा करेगा । २. मूर्खता करना ।

सूरज पर धूल फेंकना–दे० 'सूरज पर थूकना' ।

सूरज सिर पर चढ़ आना–दोपहर होना ।

सूरत आँखों से न उतरना–हर समय ध्यान बना रहना ।

सूरत करना–१. प्रयत्न करना । उ० कोई सूरत करो कि मेरा काम हो जाय । २. ध्यान करना । उ० आपने कभी सूरत भी न की ।

सूरत दिखाना–१. उपाय बताना । उ० उसने सारी सूरतें दिखा दी, अब जो चाहो, करो । २ सम्मुख आना । उ० वह तो सूरत भी नही दिखाता है ।

सूरत नज़र न आना–कोई उपाय न सूझना । उ० पास होने की कोई सूरत ही नज़र नहीं आ रही है ।

सूरत निकालना–१. सुधार कर अच्छा बनाना । २. कोई युक्ति सोचना ।

सूरत बनाना–१ रूप बनाना । उ० तुमने तो नाटक में भिखारी की अच्छी सूरत बनाई थी । २ मुंह बना कर घृणा दिखाना । उ० उसे देख कर क्यों सूरत बनाते हो ? ३ अपने को दीन प्रदर्शित करना । उ० सूरत बनाने मे फीस नहीं माफ़ होगी ।

सूरत-शक़ल–चेहरे की बनावट । उ० सूरत-शक़ल से वह चोर मालूम पड़ता है ।

सूरत हराम होना–दे० 'इद्रायन का फल होना' ।

सूली चढ़ाना–फाँसी की सजा देना । उ० गोडसे गांधी-हत्या केस मे सूली चढा दिया गया ।

सूली पर जान होना–१ जान जाने का डर होना । उ० उन हत्यारों की जान सूली पर है । २. बहुत परीशान होना ।

सेक-सॉक करना–गर्म करना, सेकना । उ० सेक-सॉक करो, फोड़ा ठीक हो जाएगा ।

सेंत का–१ बहुत ज्यादा । २. बिना दाम का ।

सेंध में बैठ कर घूरना–विपत्ति या पकड़े जाने वाली स्थिति में भी न घबराना ।

सेंध लगाना–सेंध मार कर या छेद बना कर चोरी करना । उ० चोरों ने सेंध लगा कर सब कुछ ले लिया ।

सेमर का फूल होना–आकर्षक किन्तु धोखे की चीज़ होना । उ० उसका प्रेम सेमर का फूल है ।

सेमर का सूआ–निस्सार वस्तु को महत्त्व देने वाला ।

सेर को सवा सेर मिलना–अपने से बड़े का मिलना । छोटे बदमाश को बड़ा बदमाश मिलना । बुरे का और बुरे से पाला पड़ना । उ० घबराओ नहीं, तुमने तो हम लोगों को

खूब परीशान किया, पर किसी दिन सेर को सवा सेर अवश्य मिलेगा।

सेहत होना–तन्दुरुस्ती ठीक होना। उ० आजकल मैं पहले से सेहत हूँ।

सेहरा बँधना–१. शादी होना। उ० ईश्वर करे कि तुमको सेहरा बँधे। २. विजयी होना। उ० देखें खेल मे सेहरा किसे बँधता है? ३. प्रशसा होना।

सेहरे जलवे की–वह स्त्री, जो विधिपूर्वक व्याह कर लाई गई हो। उ० मै सेहरे जलवे की स्त्री हूँ, कोई रखनी नही हूँ। [इसका प्रयोग मुसलमानो मे ही होता है।]

सैकड़ों घड़े पानी पड़ना–बहुत शर्मिंदा होना। उ० उस दिन की बात से उस पर घडो पानी पड गया। अब वह यहाँ आने का नाम भी नही ले सकता।

सैन करना–इशारा करना। उ० बोलना नही, जो कहना हो सैन करके ही कह देना, ताकि और लोग समझ न सके।

सैन बताना–सकेत बता कर कहना। उ० कृष्ण के सो जाने पर यशोदा नौकरों को सैन बताती थी, ताकि उनकी नींद न टूटे।

सैन मारना–आँख से सकेत करना। इशारा करना। उ० उसके सैन मारने पर सब समझ गया।

सोठ की नास लेना–दे० 'सोठ के लड्डू खाना'।

सोंठ के लड्डू खाना–चुप्पी साध लेना। कुछ न बोलना।

सोंठ हो रहना–खामोश हो रहना।

सोच में रहना–फ़िक्र में पड़े रहना। उ० आजकल तुम नौकरी की सोच मे रहते हो।

सोजरा करना–रंडी या वेश्या के साथ सहवास करना।

सो जाना–अत्यन्त शिथिल हो जाना।

सोटे लँगोटे में मस्त रहना–अपने में ही मस्त रहना।

सोते को जगाना–अज्ञान में पड़े व्यक्ति को सचेत करना।

सोना उगलना–अत्यन्त लाभदायक होना।

सोना तौलना–दे० 'सोने की तौल तौलना'।

सोना सुगंध–सुगंधित और सोने की तरह सुंदर रंग का। उ० सोना सुगंध क्यों न कहूँ तुझको ऐ परी रंगत सुनहरी तिस पर यह खुशबू बदन मे है।

सोने का घर मिट्टी होना–अच्छी चीज़ का बिल्कुल बरबाद हो जाना। उ० जयचंद के कारण भारत-जैसा सोने का घर मिट्टी हो गया।

सोने का संसार–१. सुख-वैभव का संसार। २. सुख की गृहस्थी।

सोने की कटारी–देखने मे लुभावनी, पर विनाशकारी। उ० मैं जानता हूँ कि उसकी बाते सोने की कटारी है।

सोने की चिड़िया–१ खूबसूरत तथा प्यारा। २ खूब माल देने वाला व्यक्ति। उ० सोने की चिडिया मिली है, अब मुझे किसी बात का कष्ट न होगा।

सोने की चिड़िया हाथ से निकल जाना–किसी ऐसी चीज़ का अपने वश में से चला जाना, जिससे बहुत अधिक लाभ होता रहा हो। उ० अंग्रेजो के हाथ से सोने की चिड़िया निकल गई।

सोने की तौल तौलना–बिलकुल ठीक तौलना। उ० भाव जो कहो रख दूँ, पर तौलूँगा सोने की तौल। इस महँगी में मिट्टी भी सोने की तौल तौली जाती है।

सोने के कौर खाना–१ खूब सम्मान पाना। २. ऐश्वर्य में रहना। ३. बढ़िया भोजन करना।

सोने के दिन–सौभाग्य के दिन।

सोने में सुगंध होना–गुण मे भी विशेष गुण होना। उ० राजा बन कर नम्र होना सोने मे सुगंध होना है।

सोने में सोहागा होना या हो जाना–चीज का और निखर जाना या अच्छा हो जाना। उ० अगर इस कोश में शब्दों की व्युत्पत्ति दे दी जाती तो सोने में सुहागा हो जाता। बोलता तो अच्छा है, अगर जरा धीरे-धीरे बोलता तो सोने मे सोहागा हो जाता।

सोलह आने–पूरी तौर से। उ० मैं सोलह आने सच कहता हूँ, वह नहीं आया था।

सोलह दूनी आठ का पहाड़ा पढ़ाना–खूब उल्टी-सीधी समझाना।

सोलह-सोलह गड़े सुनाना–भला-बुरा सुनाना। उ० उसे सोलह-सोलह गड़े सुनाये, पर उस बेहया ने तनिक भी ध्यान न दिया।

सोलहो आने–दे० 'सोलह आने'।

सोलहों दंड एकादशी–एकदम निराहार।

सोहबत उठाना–साथ में रह कर गुण-दोष ग्रहण करना। उ० हमने जन्म से ही अच्छों की सोहबत उठाई है।

सौ कसाई के एक कसाई–बहुत कठोर।

सौ कोस भागना–कोई सम्बन्ध न रखना। बहुत दूर रहना। उ० लम्पटों से तो मैं सौ कोस भागता हूँ।

सौ जान से कुर्बान होना–बहुत खुश होना।

सौ बात का एक बतगड़–दे० 'सौ बात की एक बात'।

सौ बात की एक बात–१ खुलासा, साराश। उ० सौ बात की एक बात यह है कि तुम्हें काम करना पड़ेगा। २ असली बात।

सौ सुनार की के बराबर एक लोहार की करना–एक ही प्रयत्न में मुँह तोड़ उत्तर देना।

सौ-सौ घड़े पानी पड़ना–दे० 'सैकड़ों घड़े पानी पड़ना'।

सौ-सौ चूहा खाकर बिल्ली का हज करने चलना–छल करना, ढोंग रचना।

स्टीम भरना–१. उत्साह देना, बढ़ावा देना। उ० उसने ऐसी स्टीम भरी कि वह तुरन्त कूद गया। २. काम करने के लिए खिलाना-पिलाना।

स्नेह जुड़ना–प्रेम होना।

स्याह-सफ़ेद करना–मन के अनुसार भला-बुरा करना। मनमानी करना। उ० उसका राज्य है, चाहे स्याह करे चाहे सफ़ेद।

स्याही आना–वृद्धता आना। उ० अब तो स्याही आ गई, भला कुछ दान-पुण्य तो कर लो।

स्यापा पड़ना–ग़मी (किसी के मर जाने) में रोना-चिल्लाना। उ० मरने का तार पाते ही घर में स्यापा पड़ गया।

स्वर्ग के तारे–अलभ्य वस्तु। उ० तुम्हारे लिए मै स्वर्ग के तारे ला सकता हूँ।

स्वर्ग के पथ पर पैर देना–प्राण खतरे मे डालना। उ० जब जानते हो कि वहाँ वन्य पशु हैं तो स्वर्ग के पथ पर पैर क्यों देते हो?

स्वाँग करना–१. किसी अन्य का वेष बनाना। उ० वह स्वाँग करने पर पहचान में आती ही नहीं। २. बनाव-चोनाव करना। उ० जल्दी स्वाँग करो, नाटक प्रारम्भ होगा।

स्वाँग बनाना–१ रूप बनाना। उ० तुम तो सदा स्वाँग बनाने मे ही रहते हो। २. मजाक उड़ाना। उ० किसी का स्वाँग न बनाया करो।

स्वाँग भरना–१ अनेक वेशों मे उपस्थित होना। अनेक रूप बनाना। उ० कल तो नाटक मे तुम बहुत स्वाँग भर रहे थे। २. दे० 'दम भरना'।

स्वाँग लाना–धोखा देने के लिए कोई रूप धारण करना।

स्वाद चखाना–किसी को उसके लिए अपराध का दंड देना।

स्वारथ होना–सफल होना। उ० तुम्हारे खा लेने से मेरा खाना बनाना स्वारथ हो गया।

स्वाद चखना–अनुभव करना।

स्वार्थ का अखाड़ा होना–सबका स्वार्थ मे लीन होना।

स्वार्थ के ग्राहक होना–स्वार्थी होना।

स्वार्थ में अन्धा होना–अपना मतलब हल करने के लिये किसी की भी परवाह न करना। उ० स्वार्थ मे इतने अन्धे न हो जाओ कि दीन-दुनिया की भी खबर न रहे।

स्वास्थ्य गिरना–स्वास्थ्य खराब होना।

स्वाहा करना या कर देना–नष्ट-भ्रष्ट करना। उ० हनुमान ने देखते-देखते सोने की लंका स्वाहा कर दी।

स्वाहा होना–जल जाना, बरबाद हो जाना। उ० एक ही एटम बम में जापान का एक पूरा नगर स्वाहा हो गया।

ह

हँकार पड़ना–पुकार मचना । उ० आपकी वहाँ हँकार पड रही है, जरा जल्दी जाइए ।

हगामा मचाना–१. शोरगुल मचाना । २ लडाई-झगड़ा मचाना । उ० यहाँ हगामा न मचाओ ।

हंडा फोड़ना–भेद प्रकट करना । उ० अगर इस चोरी का हडा फोड़ देते तो तुम्हे इससे बरी कर देता ।

हँड़िया चढ़ाना–रसोई बनाना । उ० आज हँड़िया नही चढाओगे क्या ?

हँफनी मिटाना–दम मारना । उ० जरा हँफनी मिटा लेने दो, आखिर लगातार ८ घटे कैसे काम किया जा सकता है !

हँस कर बात उड़ाना–ध्यान न देना । हँस कर टालना । उ० मै काम की भी कहता हूँ तो तुम हँस कर बात उडा देते हो, बाद मे पछताना पड़े तो मै जिम्मेदार नही ।

हस का भाग कौए द्वारा लिया जाना–योग्य व्यक्ति को मिलने वाली वस्तु अयोग्य के पास जाना ।

हँस-कौए का साथ होना–परस्पर विरोधियो का साथ होना ।

हँसते मरना–ख़ुशी-ख़ुशी प्राण त्यागना । उ० जाति-हित के लिए मरे हँसते, आह निकले न, दम निकल जावे ।

हँसते-हँसते–१. खुशी से । उ० भगतसिह हँसते-हँसते फाँसी के तख़्ते पर लटक गये । २. आसानी से । उ० इसे तो तुम हँसते-हँसते कर सकते हो ।

हँसते-हँसते दोहरा हो जाना–बहुत या खूब हँसना ।

हँसते-हँसते पेट में बल पड़ना–बहुत ज़ोर से हँसना । इतना हँसना कि पेट में दर्द होने लगे । उ० उसकी बात पर तो हँसते-हँसते पेट मे बल पड गया ।

हँसते-हँसते बुरा हाल होना–दे० 'हँसते-हँसते पेट मे बल पड़ना' ।

हँसते-हँसते लोट-पोट होना–दे० 'हँसते-हंसते पेट मे बल पडना' ।

हँसते हुए–दे० 'हँसते-हँसते' ।

हस बनाते-बनाते कौआ बना देना–अच्छी और योग्य वस्तु बनाते-बनाते बुरी बना देना ।

हँसी उड़ाना–उपहास करना, बनाना । उ० इस सीधे आदमी की क्यों हँसी उड़ा रहे हो ?

हँसी-खेल–सहज बात, आसान काम । उ० अरे यह तो हँसी-खेल है, इसके पीछे क्यों जान दे रहे हो ?

हँसी-खेल समझना–दे० 'हँसी समझना' ।

हँसी छूटना–हँसी आना । उ० आपकी बातें सुन कर उसे हँसी छूट रही थी ।

हँसी-ठठोली–मज़ाक, दिल्लगी, विनोद । उ० हँसी-ठठोली मे क्यों रोते हो ? दिन रात की हँसी-ठठोली अच्छी नही ।

हँसी में उड़ाना–दे० 'हँसकर बात उड़ाना' ।

हँसी में खाँसी होना–दिल्लगी मे झगड़े की नौबत आना । उ० तुम इसे समझते नही हो, यह बडा दुष्ट है, इसकी वजह से यहाँ हँसी मे खाँसी होते देर नही लगेगी ।

हँसी मे ले जाना–किसी बात को मजाक मे टालना या मज़ाक समझना । उ० तुम तो मेरी हर बात हँसी मे ले जाते हो । कम से कम सुन तो लिया करो ।

हँसी समझना–साधारण बात समझना, कठिन न समझना । उ० विद्वान् बनना क्या हँसी समझ रक्खा है ?

हक़ अदा करना–कर्त्तव्य का पालन करना । उ० वे दोस्ती का हक़ अदा कर रहे हैं ।

हक़ दबाना–किसी दूसरे का अधिकार या धन अपने अधिकार मे करना । उ० उसका हक़ क्यो दबा रहे हो, उसके लड़के-बच्चों को तुम्ही खिलाओगे क्या ?

हक़ पर लड़ना–अपने अधिकार या अपनी चीज के लिए लड़ना । उ० अपने हक़ पर लड़ने के लिए तुम्हें कौन रोकेगा ?

हक़ पर होना–उचित बात की या अधिकार की माँग करना । उचित बात का आग्रह करना । उ० जो हक़ पर होगा, उसी की विजय होगी ।

हक़ मारना–दे० 'हक़ दबाना' ।

हकर-हकर पानी पीना–दे० 'डगडगा कर पानी पीना' ।

हकर-हकर होना–१. पेट का पतुहा होना । पेट का भीतर कुछ न रहने के कारण सटा रहना। उ० बेचारा हकर-हकर हो गया है, कुछ खिला दो। २. दुर्बल होना । उ० दो ही दिन की बीमारी में हकर-हकर हो गया ।

हक़ीक़त में–सचमुच, वास्तव में । उ० हक़ीक़त में वह बड़ा ईमानदार आदमी है ।

हक़ीर जानना–छोटा समझना । उ० वह अपने सामने तुम्हें हक़ीर जानता है ।

हक्का-बक्का रह जाना–दे० 'भौचक रह जाना' ।

हक्के लगना–काम में आना । उ० इस चीज को फेंको नहीं, किसी के हक्के लग ही जायगी ।

हग भरना–दे० 'हग मारना' ।

हग मारना–१. बहुत डर जाना । २. हग देना । ३. बहुत ज्यादा पाखाना करना । ४ किसी चीज को बहुत गदा कर देना ।

हचर-मचर करना–आगा-पीछा सोच कर टाल-मटोल करना । उ० क्या हचर-मचर कर रहे हो, चलो भी ।

हजम करके डकार तक न लेना–किसी वस्तु या बात को एकदम अपने तईं रख लेना, उसकी कोई क्रिया-प्रतिक्रिया न प्रगट करना, पूरी तरह हड़प जाना ।

हज़म होना–बेईमानी से लिया हुआ माल का अपने पास रहना । पच जाना । उ० बेईमानी का धन हजम न होगा ।

हजामत करना–दे० 'हजामत बनाना' ।

हजामत बनाना–१ लूटना, धन हर लेना । उ० चोरों ने वहाँ उसकी खूब हजामत बनाई । २. बाल काटना । ३ पीटना, खब मारना । उ० ऐसी हजामत बनाऊँगा कि ज़िंदगी भर याद करोगे । ३. परीशान करना ।

हजामत होना–१. दड होना, मार पड़ना । उ० लड़के की वहाँ खूब हजामत हुई । २ लूट होना । उ० बुढ़िया के धन की खब हजामत हुई ।

हज़ार मुँह से–अत्यधिक, अनेक प्रकार से ।

हज़ार तरह से–बहुत तरह से ।

हज़ारों सुनाना–बहुत भला-बुरा कहना । उ० इस छोटी-सी बात पर आप हजारो सुना रहे हैं, आपको शर्म नही आती !

हज़ूर में हाज़िर रहना–खिदमत मे हाजिर रहना ।

हटक मानना–मना करने पर किसी काम के करने में रुकना । उ० बंसी-धुनि मृदु कान परत ही गुरुजन हटक न मानति । हटक मानो नही तो विपत्ति मे पड़ोगे ।

हठ कर–जबर्दस्ती, बलात् । उ० हठ कर वह मेरे घर मे घुस गया, तो आखिर मैं कितना दुतकारता ।

हठ करना–दे० 'हठ पकड़ना' ।

हठ ठानना–दे० 'हठ पकडना' ।

हठ पकडना–किसी बात के लिए ज़िद्द करना । उ० छोटे बच्चे खूब हठ पकड़ते हैं । क्या बच्चों की तरह हठ पकडते हो ?

हठ बाँधना–दे० 'हठ पकड़ना' ।

हठ में पड़ना–हठ करना । उ० मन हठ परा न मान सिखावा । हठ मे पड़ोगे तो नुक़सान होगा ।

हठ रखना–जिस बात के लिए कोई अड़े, उसे पूरा करना । उ० उसका हठ रखना जरूरी है, नही तो नाराज़ हो जायगा । हट रखने से लड़के और हठी हो जाते है ।

हड़प करना–ग़ायब करना, बेईमानी से ले लेना । उ० दूसरे का रुपया इसी तरह हड़प कर लोगे ?

हड़बड़ करना–जल्दी मचाना । उ० हड़बड़ करोगे तो काम खराब हो जायगा ।

हड़बड़ी में पड़ना–उतावली की दशा मे होना । जल्दी मे पड़ना । उ० हडबड़ी मे पड कर तुमने काम ख़राब कर दिया ।

हड्डियों की माला होना या हो जाना–दे० 'सूख कर काँटा हो जाना' ।

हड्डी-गुड्डी–हड्डी-हड्डी । उ० मारूँगा तो हड्डी गुड्डी भी न बचेगी ।

हड्डी-पसली दुरुस्त करना–खूब मारना । उ० अगर वह चोर पकडा गया होता तो उसकी हड्डी-पसली दुरुस्त कर दी जाती ।

हड्डी-हड्डी तोड़ना–दे० 'हड्डी-पसली दुरुस्त करना' ।

हड्डे के छत्ते छेडना–दे० 'भिड के छत्ते छेडना'।

हलके इज्जत करना–दे० 'कलक लगना' । उ० हलके इज्जत न करो, उनकी भी कुछ इज्जत है, और कुछ डर नही तो अपनी ही इज्जत से डरो ।

हत्थे चढ़ना–बस या क़ाबू मे होना। उ० वह तो तुम्हारे हत्थे चढने से रहा।

हत्या का टीका माथे पर होना–हत्या के लिए जिम्मेदार होना।

हत्या टलना–झझट दूर होना। उ० चलो किसी तरह हत्या टली, अब होश रहा तो उसके घर कभी न जायंगे।

हत्या लगना–हत्या का पाप लगना। उ० गाय मारने से हत्या लगती है।

हत्या सिर लगाना–झझट का काम देना। उ० यह हत्या सिर लगा कर आप मुझे विपत्ति मे न फंसाइए।

हथउधार देना–दे० 'हथफेर देना'।

हथकंडा–चालाकी की युक्ति।

हथफेर देना–बिना गिरवी रखे या लिखे थोड़े दिन के लिए रुपया देना।

हथफेरी करना–१ गबन करना, माल मारना। २ खाने पर हाथ मारना।

हथिया लेना–जबरदस्ती अधिकार कर लेना।

हथियार करना–हथियार से लड़ना।

हथियार चलाना–१. लडाई करना। २. हथियार से वार करना।

हथियार ठढे करना–लडाई के अस्त्र-शस्त्र को शरीर से उतार कर रखना।

हथियार डाल देना–अपने को शत्रु के हवाले कर देना, हार मान जाना। उ० पिछली लडाई मे जापानियो ने हथियार डाल दिये।

हथियार बाँधना–दे० 'हथियार लगाना'।

हथियार लगाना–अस्त्र धारण करना। उ० हथियार लगा कर युद्ध मे जाना चाहिये।

हथेली का आँवला–१ सहज प्राप्त वस्तु। २ अच्छी तरह जानी-समझी बात।

हथेली का फफोला–बहुत सुकुमार वस्तु। उ० हथेली के फफोले नही हो, सीधे से काम करो, नही तो खाना नही मिलेगा।

हथेली खुजलाना–१ कुछ मिलने का शकुन होना। उ० आज सुबह ही से मेरी हथेली खुजला रही है, कुछ प्राप्ति अवश्य होगी। २. मारने की इच्छा होना। उ० आज मेरी हथेली खुजला रही है, किसी को मारना होगा क्या?

हथेली देना–सहायता करना। उ० आफत मे फँसे हुये को हथेली देना सबका धर्म है। जरा हथेली दे दो मेरा बेड़ा पार लग जाय।

हथेली पर जान रखना या लेना–प्राण की कुछ परवाह न करना। उ० मैं तो देश के लिए हथेली पर जान रखे फिर रहा हूँ।

हथेली पर जान होना–जान जोखिम मे होना। उ० इस समय दुश्मनों की वजह से हथेली पर जान है।

हथेली पर सरसों जमाना–देर से होने वाले काम का अति शीघ्र करना या कोई असंभव काम करना।

हथेली पर सिर रखना–दे० 'हथेली पर जान रखना'।

हथेली मे आना–वश मे आना। अधिकार में आना। उ० किसी तरह वह हथेली में आ जाय तो काम बन जाय।

हथेली लगाना–दे० 'हथेली देना'।

हद व हिसाब नहीं–अपार, बहुत ही ज्यादा। उ० आपके झूठ बोलने का हद व हिसाब नही है।

हद से ज्यादा–बहुत अधिक। उ० आप हद से ज्यादा झूठ बोलते है।

हप कर जाना–१. झटपट खा जाना। उ० देखते-देखते वह सारा भात हप कर गया। २ हड़प लेना।

हबर-हबर करना–१ जल्दी से खाना खाना। उ० हबर-हबर क्या कर रहे हो, क्या गाड़ी छूटी जा रही है। २ जल्दी करना।

हम-प्याला होना–जिगरी दोस्त होना।

हमराह करना–साथ मे करना। उ० उसे भी हमराह कर लो, नही तो भूल जायगा।

हमराह होना–साथ चलने वाला होना। उ० मै भी बद्रीनाथ के लिए आपका हमराह होना चाहता हूँ।

हमल गिरना–गर्भपात होना। उ० उसका आज पाँच माह का हमल गिर गया।

हमल गिराना या गिरा देना–गर्भपात कराना। उ० बहुत सी औरते हमल गिरा देती हैं।

हमल रहना या होना–गर्भ रहना। उ० बहुत दिनो के बाद राजा साहब के घर में हमल है।

हमेव टूटना या टूट जाना–गर्व चूर्ण होना। उ० भगवान करे, तुम्हारा हमेव टूट जाय।

हमेशा रोते जन्म गुजरना–एक-न-एक आफ़त ज़िंदगी भर रहना। उ० बुढ़िया का हमेशा रोते जन्म गुजरा है।

हरताल फिर जाना–खराब या बर्बाद हो जाना।

हरदी-चूने-सा एक रंग हो जाना–कोई भेद न रह जाना।

हरफ़ आना–दोष लगना, कसूर लगना। उ० आपका कहना तो कर रहा हूँ, पर यदि मेरे ऊपर जरा भी हरफ़ आया तो ठीक न होगा।

हरफ़ उठाना–अक्षर पहचान कर पढ लेना। उ० अब तो बच्चा हरफ़ उठा लेता है।

हरफ़ बैठाना–टाइप जमाना, छापे का अक्षर क्रम से रखना।

हरा बाग–व्यर्थ आशा बँधाने वाली बात। उ० आपके सामने जो हरा बाग है, उस पर न भूलिए, वह दो दिन से अधिक नही रहेगा।

हरा-भरा रहना–धन एवं संतान से भरा-पूरा रहना। उ० ईश्वर करे आप हमेशा हरे-भरे रहें।

हराम की कौड़ी–अनुचित रीति से या मुफ्त मे मिला धन।

हराम घाट उतारना–बुरे रास्ते पर लगाना।

हराम मुँह लगना–१ बुरी कमाई पर रहना। उ० हराम मुँह लगना बड़ी बुरी चीज़ है। २. मुफ्त का रुपया-पैसा पाने का चस्का लगना। उ० हराम मुह लगा है, क्यों न मोटे होगे?

हरा हो जाना–१. ताजा हो जाना। उ० एक गिलास शर्बत पिला दो तो वह भी हरा हो जाय। २. प्रसन्न हो जाना। उ० वह तुम्हे देखते ही हरा हो गया। ३. फिर से स्मरण हो आना। ४. आज मित्र के लड़के को देखकर मित्र के मरने का घाव हरा हो गया।

हरियाली सूझना–१. आसान समझना। २. खुशी मे लीन होना। उ० नई शादी हुई है, उसे तो हरियाली सूझ रही है। ३. भविष्य सुन्दर दिखाई देना। उ० विद्यार्थी-जीवन तक बड़ी हरियाली सूझती है, पर उसके समाप्त होते ही हेकड़ी भूल जाती है।

हर्रे फिटकरी के बिना चोखा रंग होना–बिना खर्च या परिश्रम के अच्छा काम होना।

हर्रे लगे न फिटकरी–बिना परिश्रम के; मुफ्त में।

हरिश्चन्द्र होना–बहुत बड़ा सत्यवादी होना। उ० आज के संसार में कौन हरिश्चंद्र है?

हलकम मचाना–जल्दी करना। उ० हलकम मचाओगे तो काम खराब हो जायगा।

हलक में उँगली डाल कर निकालना–पचाई हुई चीज को वापस लेना। उ० मुझे ऐसा वैसा आदमी न समझो, अगर मेरा रुपया न दोगे तो मै हलक मे उँगली डाल कर निकाल लूँगा।

हलका करना–बेइज्जत करना। उ० भरी सभा मे किसी को क्यो हलका करते हो?

हलकापन दिखाना–तुच्छता दिखाना।

हलका लहू होना–खून देखते ही अचेत हो जाना। उ० उसका लहू हलका है, कल आपरेशन रूम मे जाते ही बेहोश हो गया।

हलका होना–छोटा होना, तुच्छ होना। उ० अगर नीच काम करोगे तो समाज की आँख मे हलके हो जाओगे।

हलकी बात–१. बुरी बात। २. तुच्छ या छोटी बात। उ० ऐसी हलकी बात मुँह पर फिर न लाना।

हलके भारी होना–भार-सा जानना। उ० आप मेरे दो दिन रहने से ही हलके भारी हो रहे हैं, ऐसा जानता तो कभी न रुकता।

हलचल मचाना या मचा देना–१. खलबली मचाना। उ० आपका जोशीला भाषण विद्यार्थियो में हलचल मचा देगा। २. जोश भड़काना। ३ आन्दोलन करना।

हलचल होना–१ घबराहट होना। उ० महीने मे दस-बारह डाके पड चुके, इससे देहात मे काफी हलचल है। २ खलबली होना। ३ आन्दोलन होना।

हलवा निकालना–खूब मारना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो मै तुम्हारा हलवा निकाल लूंगा।

हलवे माँड़े से काम–लाभ ही से मतलब। उ० तुम्हे तो अपने हलवे माँडे से काम है, किसी का चाहे कुछ भी हो।

हलाक होना–मार डालना। उ० उस नीच ने मेरी बकरी को हलाक कर डाला।

हलाकान होना–परीशान होना। उ० तुमसे तो हलाकान हो गया।

हलाल करना–१. मार डालना। उ० मुर्गी हलाल करो । २. ईमानदारी के साथ व्यवहार करना। उ० जिसका खाना, उसका हलाल करके खाना।

हलाल का–ईमानदारी से पाया हुआ । उ० हलाल के धन से तुम फलोगे।

हल्दी उठाना–विवाह मे हल्दी और तेल लगाने का रस्म होना। उ० आज मेरे छोटे भाई की हल्दी उठेगी ।

हल्दी की कुटी गाँठ हो जाना–चूर या पस्त हो जाना।

हल्दी चढना–दे० 'हल्दी उठना'।

हल्दी लगना–शादी होना। उ० किसी तरह हल्दी लग जाती तो भगवान को धन्यवाद देता।

हल्दी लगा कर बैठना–१ कोई काम-धाम न करना। उ० हल्दी लगा कर बैठने से काम न चलेगा, कुछ काम करो। २. घमड मे फूला रहना। उ० वह आजकल हल्दी लगा कर बैठा रहता है ।

हल्दी लगी न फिटकरी–मुफ्त मे, बिना कुछ खर्च किये। उ० हल्दी लगी न फिटकरी और उसकी शादी हो गई।

हल्फ उठाना–सौगध खाना। उ० उसने सबके सामने हल्फ उठा लिया तो हाकिम क्या करे?

हल्ला करना–शोर करना। उ० लडके शाम को खेलते समय बहुत हल्ला करते है । उ० हल्ला करने से काम न चलेगा, कुछ लिखित कार्रवाई करो।

हवस पकाना–व्यर्थ कामना करना। उ० तुम तो हवस पकाने के सिवा और कुछ नही जानते ।

हवाइयाँ छूटना–रग फीका पड जाना । चेहरा उतर जाना। उ० यह समाचार सुन कर हवाइयाँ छूटने लगी।

हवाई खबर–अफवाह। उ० हवाई खबर पर विश्वास करना ठीक नही।

हवा उखडना–रोब न रह जाना।

हवा उड़ना–खबर फैलना। अफ़वाह फैलना। उ० बात को अभी गुप्त ही रखो, हवा उडते देर नही लगती।

हवा का रग देखना–समय देखना । उ० हवा का रग देख कर काम करना चाहिये।

हवा के घोड़े पर सवार होना–१. बहुत जल्दी मे होना। उ० आप मेरे यहाँ आते है तो हवा के घोड़ों पर सवार होते है। २. बहुत तेज जाना। उ० वह जैसे हवा के घोड़े पर सवार है, देखो न वहाँ निकल गया।

हवा के बबूले फोड़ना–अपने मन के घोड़े दौडाना। ख्याली पोलाव पकाना। उ० एक ओर तो हवा के बबूले फोड़ने वाले साधारणतया इस ससार मे कुछ नही कर पाते, पर दूसरी ओर जगत्-प्रसिद्ध कलाकार मूलतः हवा के बबूले ही फोडने वाले होते है।

हवा को गिरह में बाँधना–न होने वाली बात करने की कोशिश करना, असंभव काम करना। उ० यह काम आपसे न होगा, इसे करना तो हवा को गिरह मे बाँधना है।

हवा खाना–१ आना बेकार होना। उ० इस बार आपका आना हवा खाना हो गया, क्योंकि आपका काम नही होगा। २. अच्छे स्थान पर घूम कर साफ़ हवा का सेवन करना। उ० वे हवा खाने नैनीताल गए है।

हवा तक न छूना–कोई असर या संसर्ग न होना।

हवा देना–बढाना, उग्र करना, उत्तेजित करना।

हवा देख कर पाल तानना–परिस्थिति और रुख देख कर काम करना।

हवा न लगना–१ पर्दे मे रहना । २. सुख-सुविधा मे रहना।

हवा न लगने देना–१ तनिक भी पास न फटकने देना, दूर रखना। २. प्रभाव न पडने देना।

हवा पर चलना–१ निराधार चलना। उ० हवा पर चलना सरासर बेवकूफी है। २. घमड करना। उ० थोड़ा धन हो गया तो हवा पर चलने लगे। यही तुम्हारी बिसात है । ३. अनुमान लगाना। उ० हवा पर ही चलते-चलते उसने सच्ची बात जान ली।

हवा पर दिमाग़ होना–बहुत घमड करना। उ० पद पा जाने से उसका दिमाग़ हवा पर है।

हवा पलटना–१. हालत मे सुधार होना। उ० अब तो देश की हवा कुछ पलटी है। २. दशा का खराब होना। उ० देखते है तो देश की दशा फिर पलटेगी। पता नही क्या-क्या देखना है?

हवा पीकर रहना–बिना आहार के रहना। उ० आजकल वह साधु हवा पीकर रह रहा है।

हवाइयाँ उड़ना या उड़ाना–चेहरे का रंग फीका पड़ जाना या कर देना ।

हवाई किला ढा देना–सारी कल्पनाएँ नष्ट करना ।

हवाई किला बनाना–ख्याली पुलाव पकाना ।

हवा फाँक कर रहना–दे० 'हवा पीकर रहना' ।

हवा फिरना–दे० 'हवा पलटना' ।

हवा फैलना–किसी विचार का प्रचार होना ।

हवा बताना–टाल देना । धता बताना । उ० वह अपना काम निकाल कर तुम्हे हवा बता देगा ।

हवा बदलना–दे० 'हवा पलटना' ।

हवा बाँधना–दे० 'डीग हाँकना' ।

हवा बिगड़ना–१ समय मे फ़र्क होना । बुरी दशा आना । उ० इस महँगी मे धनियो की भी हवा बिगड गई है । २. वातावरण खराब होना । उ० इस समय हवा बिगडी है, जरा सम्हल कर आया-जाया करो ।

हवा में उड़ा देना–कोई ध्यान न देना ।

हवा में महल बनाना–कल्पना लोक मे विचरण करना ।

हवा में गाँठ बाँधना–न होने वाले काम को करने का प्रयास करना । उ० हवा मे गाँठ बाँधना मूर्खता का काम है ।

हवा में से पकड़ना–सुनी-सुनाई बात को ले लेना ।

हवा लगना–साथ का असर पड़ना । उ० उन दुष्टों की हवा लगेगी तो तुम्हारा लडका भी खराब हो जायगा ।

हवाला करना–१ जिम्मे कर देना । उ० पिताजी ने मुकदमे का सब काम मेरे हवाले कर दिया । २. नाम लेना । उ० उनका हवाला कर दोगे तो वे कुछ न लेंगे । ३. नजीर के रूप मे पेश करना ।

हवालात करना–१. जेल में रखना । उ० हकीम इस डाकू को अवश्य हवालात करेगा । २. सज़ा के पहले नज़रबद या भीतर रखना ।

हवाला देना–१. जहाँ से उद्धरण लिया गया हो, उस पुस्तक का नाम, संस्करण, छपाई का सन् तथा पृष्ठ आदि देना । २ संदर्भ देना । ३ नाम लेना । उ० आपका हवाला देते हुए उन्होने अपनी अर्जी दी तो मुझे मानना ही पड़ा ।

हवाले करना–दे देना, सौंपना । उ० जिसकी चीज़ है, उसके हवाले करो ।

हवाले पड़ना या पड़ जाना–वश में आ, जाना । उ० ह्वै है कहा अरविन्द सो आनन इंदु के आय हवाले पर्‍यो । अब तो आप मेरे हवाले पड़ गए ।

हवास गुम होना–होश ठिकाने न रहना । उ० शेर को देखते ही मेरा हवास गुम हो गया ।

हवास ठिकाने होना–चेत में होना । उ० हवास ठिकाने हो जाय तो उससे बात करो, अभी वह क्रोध मे है ।

हवा से अछूता रहना–कोई असर न होना ।

हवा से झगड़ना–दे० 'हवा से लड़ना' ।

हवा से बचना–प्रभाव से बचना ।

हवा से बातें करना–१ बहुत तेज़ चलना । उ० मेरा घोड़ा गाड़ी मे जुतते ही हवा से बाते करने लगता है । २. आप ही आप बोलना । उ० वह पागल की तरह हवा से बाते करता है । ३. फ़ुर्तीला होना । ४. जल्दबाज़ होना ।

हवा से लड़ना–बिना बात के लड़ना । उ० बहुत सी झगडालू औरतें हवा से लड़ती है ।

हवा हो जाना–१ बहुत तेज दौड़ना । उ० चाबुक पडते ही घोडा हवा हो जाता है । २. गायब हो जाना । उ० वह कहाँ हवा हो गया ?

हस्तक्षेप करना–किसी काम या बात में दखल देना ।

हहा खाना–बहुत विनती करना । उ० क्या हहा खा रहे हो, वह किसी की सुन नही सकता ।

हाँक देना–जोर से पुकारना । उ० कौन आपको हाँक दे रहा है ?

हाँक-पुकार कर कहना–सबको सुना कर कहना । उ० उसने हाँक-पुकार कर कहा कि जो मुझसे लड़ना चाहे, लड़ ले ।

हाँक मारना–दे० 'हाँक देना' ।

हाँक लगाना–'दे० हाँक देना' ।

हाँ जी हाँ जी करना–दे० 'हाँ में हाँ मिलाना' ।

हाँड़ी के चावल का पता होना–साधारण से साधारण गुप्त बात का पता होना ।

हाँड़ी में कालिख लगना–खाने-पीने से ख़ुश होना । उ० इस महँगी में जिसकी भी हाँड़ी

में कालिख लग जाय, उसको धनवान ही समझो।

'हाँ' में 'हाँ' मिलाना–१. चापलूसी करना। किसी की 'हाँ' मे 'हाँ' मिलाना मैं पसन्द नही करता। २. हाँ करना।

हाँ-हाँ करना–स्वीकार करना। उ० अभी तो हाँ-हाँ कर रहा है, पीछे इन्कार कर जायेगा।

हाँ-हजूरी करना–दे० 'हाँ मे हाँ मिलाना'।

हाजिर जवाब–किसी भी बात का ठीक-ठीक और तुरन्त उत्तर देने वाला।

हाजिरी देना–सेवा मे उपस्थित होना, रहना।

हाट करना–बाजार करना। उ० हाट करने जा रहा हूँ।

हाट खोलना–दूकान करना। उ० निरभागी ने खोली हाट। ले गए चोर भरत औ बाट।

हाट चढ़ना या चढ़ जाना–१. बाजार मे बिकने को आना। उ० कल मेरा आलू भी हाट चढ़ेगा। २. बाजार का मँहगा होना। उ० आजकल हाट चढ़ गया है।

हाथ आना–१. मिलना। उ० था रात शबे वस्ल में क्या शोर मचाया, हाथ आए तो काटूं मैं गला मुर्ग़ शहर का। जफ़ाएँ करते हैं थम-थम के इस ख्याल से वो, गया तो फिर नहीं ये मेरे हाथ आने का। उ० अगर कुछ पैसे हाथ आ गये तो मैं आज सिनेमा देखने अवश्य जाऊँगा। २. किसी खेल या तलवार, लाठी आदि चलाने का हाथ जानना। उ० तलवार का एक भी हाथ मुझे नही आता।

हाथ उठा-उठा कर कहना–खुले आम ज़ोर देकर कहना।

हाथ उठा-उठा कर दुआ देना–बहुत प्रेम से दुआ देना। दिल से दुआ देना। उ० वह हाथ उठा उठा कर दुआएँ देती है।

हाथ उठा कर कोसना–खूब कोसना। उ० तुमने उसकी कुछ बुराई की है क्या? वह तुम्हें हाथ उठा-उठा कर कोस रहा था।

हाथ उठा कर देना–१. खुशी से देना। उ० उस ग़रीब को कुछ हाथ उठा कर दे दो, भगवान तुम्हारा भला करेगा। २. सबको बतला कर देना। उ० देना ही है तो चुपके से दो, हाथ उठा कर क्यों देते हो?

हाथ उठाना–१ पीटना। उ० छोटे बच्चे पर हाथ उठाना ठीक नहीं है। २. प्रणाम करना। उ० बड़ों को देख कर हाथ उठाना चाहिए। ३. आशीर्वाद देना। उ० साधू ने देखते ही हाथ उठाया।

हाथ उठा बैठना–१. मार बैठना। २. किनारा कसना। अलग होना। उ० कहेगे हम कि हमको चाहते हो, अगर तुम हाथ उठा बैठे सितम से।

हाथ उठा लेना–छोड़ देना, कोई सरोकार न रखना। उ० क्या काम है बला से जो तू हो असीरे ज़ुल्फ, जब से कि हाथ ऐ दिले-मुज़्तर उठा लिया।

हाथ उतर जाना–हाथ के जोड का उखड़ जाना। उ० बोझ डाले ना बहुत दस्ते दुआ पर तासीर, मुझको डर है कि मेरा हाथ उतर जायेगा।

हाथ ऊँचा रहना–१. भाग्यवान् होना। २. दे० 'हाथ ऊँचा होना'। उ० दौलत जो तेरे पास है रख याद तू ये बात, खा तू भी और अल्लाह की कर राह मे खैरात। देने से भी इसके तेरा ऊँचा रहेगा हाथ, औ यो भी तेरी गुज़रेगी सौ ऐश से औक़ात।

हाथ ऊँचा होना–दानी और खर्चीला होना। उ० तुम्हारे पास धन है, पर तुम्हारा हाथ ऊँचा नही है।

हाथ ओछा पड़ना–पूरा हाथ न पड़ना। उ० हाथ तो ओछा पडा था गिर पड़े हम आप से, दिल के क़ातिल को बढ़ाना कोई हमसे सीख जाय।

हाथ ओट लेना–हाथों की ढाल बना लेना। हाथ पर वार रोकना।

हाथ कंगन को आरसी क्या होना–प्रत्यक्ष बात के लिए दूसरे प्रमाण की कोई आवश्यकता न होना।

हाथ कच्चा होना–(किसी काम या कला के करने में) हाथ में कुशलता न होना, अनिपुण होना।

हाथ कट जाना–लिख देने के कारण उससे बाहर या अलग जाने की गुन्जाइश न रह जाना। उ० मेरा हाथ कट गया है, नही तो मैं आपका काम बना देता।

हाथ कटा देना–कुछ करने लायक न रह जाना (लिख कर)।

हाथ कमर पर रखना–बहुत कमज़ोर होना। उ० दो ही दिन के उपवास में वह हाथ कमर पर रख कर चलने लगा है।

हाथ का खिलौना–१. प्यारी चीज। उ० यह लड़का मेरे हाथ का खिलौना है। २. कठपुतली। ऐसी चीज जिसे मनमाना नचाया जा सके। उ० आज के राजा तो जनता के प्रतिनिधियों के हाथ के खिलौने है।

हाथ काट लेना–१. हाथ से लिखवा लेना। उ० आपका हाथ काट लिया है, अब टस से मस नहीं हो सकते। २. बिल्कुल लाचार कर देना।

हाथ कानों पर रखना या रख लेना–आश्चर्य में पड़ना। उ० उस पाँच वर्ष के लड़के के मुँह ऐसी बातें सुन कर सभी ने हाथ कानो पर रख लिये।

हाथ का पांसा होना–पूरी तरह वश मे होना।

हाथ का मक्खी न उड़ाना–कुछ भी न करना।

हाथ का सच्चा–१. सच्चा आक्रमण करने वाला। उ० हाथ का सच्चा है। उसका वार कभी खाली नही जा सकता। उ० उसका भाई हाथ का सच्चा है, उसका विश्वास सभी लोग कर सकते है।

हाथ की कठपुतली होना–पूरी तरह वश में होना।

हाथ की मैल होना–तुच्छ वस्तु होना। उ० बिड़ला के लिए रुपया हाथ की मैल है।

हाथ की लकड़ी होना–सहारा होना।

हाथ के ऊपर हाथ धरे बैठना–बेकार वक्त जाया करना। उ० आप क्या यहाँ महीनों से हाथ के ऊपर हाथ धरे बैठे है, क्यो नही कुछ काम करते ?

हाथ के तोते उड जाना–अक्ल चली जाना। उ० बाप के मरते ही जैसे उसके हाथ के तोते उड गये, अब तो उससे कुछ होता ही नहीं।

हाथ को हाथ न सूझना–बहुत अँधेरा होना। उ० भादों की अँधेरी रात में हाथ को हाथ नहीं सूझता है।

हाथ ख़ाली जाना–१. वार ठीक न लगना। उ० अगर इस बार भी हाथ खाली गया तो तुम्हारी हार है। २. असफल जाना। बिना कुछ लिए जाना। उ० तुम ऐसे समय में आये कि इस बार भी हाथ ख़ाली जाओगे। ३. चाल का सफल न होना।

हाथ ख़ाली होना–१. पास में रुपया-पैसा न होना। उ० भाई इस समय मेरा हाथ ख़ाली है, मुझसे न माँगना। २. हथियार पास न होना। उ० हाथ ख़ाली है, नहीं तो बताता। ३. कुछ काम न होना। उ० आज मैं हाथ खाली हूँ, अगर घूमने चलोगे तो मैं भी चलूँगा।

हाथ खींचना–काम से हट जाना। उ० जब उन्होंने इस काम से हाथ खींच लिया, तो यह मुझसे अकेले नही हो सकता।

हाथ खुजलाना–१. कुछ मिलने का शकुन होना। उ० हाथ खुजला रहा है, कुछ मिलेगा क्या ? २. किसी को मारने की इच्छा होना।

हाथ ख़ून से रंगे होना–हत्यारा होना।

हाथ खोल देना–खुल कर व्यय करना। उ० जहाँ इज्जत का सवाल आता है, वह हाथ खोल देता है।

हाथ गरम होना–द्रव्य मिलना, रिश्वत मिलना।

हाथ घिसना–बेकार तकलीफ़ उठाना। उ० बिना किसी लाभ के क्यों हाथ घिसते हो ?

हाथ चढ़ना–१. वश में आना। उ० अगर वह एक बार भी हाथ चढ गया तो सब काम करा लूँगा। २ मिलना। उ० कुछ हाथ चढे तो कथा कह दूँ।

हाथ चलना–१. पीटना। उ० उसका लड़कों पर बहुत हाथ चलता है। २. तेज़ लिखना। ३. किसी भी कला मे अच्छी गति होना।

हाथ चलाना–हाथ से मारना, मारना। उ० लड़कों पर हरदम हाथ क्यो चलाते हो ?

हाथ चाटना–सब खाकर भी संतोष न होना। उ० आज का भोजन ऐसा बना था और इतना कम था कि सब हाथ चाटते गये।

हाथ-चालाक़–जल्दी से चीज़ ग़ायब करने वाला। उ० उस हाथ-चालाक़ आदमी को घर के अन्दर मत आने दो।

हाथ चूमना–हाथ की कुशलता पर मोहित होकर हाथ चूमना। उ० इच्छा होती है कि इस तसवीर बनाने वाले का हाथ चूम लूँ।

हाथ छोटा होना–कंजूस होना।

हाथ छोड़ना–प्रहार करना, मारना।

हाथ जमना–दे० 'हाथ बैठना'।

हाथ जोड़ना–१. वास्ता न रखना। उ० आप ऐसे दुष्टों से हाथ जोड़ना ही ठीक है। २ प्रणाम करना। उ० मास्टर साहब को हाथ जोड़ो।

हाथ जोड़े रहना–आज्ञाकारी होना, सेवा मे उपस्थित रहना।

हाथ झाड़ कर खड़ा होना–यह दिखाना कि मेरे पास कुछ नही है। उ० जब कोई काम पड़ता है तो आप हाथ झाड कर खड़े हो जाते है।

हाथ झाड़ कर चल देना–सब कुछ छोड़ कर चल देना।

हाथ झूठा पड़ना–१ बात झूठी निकलना। उ० एक बार भी अगर हाथ झूठा पड गया तो कोई विश्वास न करेगा। २ वार न लगना। उ० अगर इस बार आपका हाथ झूठा न पडा हो तो उसका सर धड़ से अलग हो जाता।

हाथ डालना–हस्तक्षेप करना, दखल देना। उ० मैं आप लोगों के झगडे मे हाथ न डालूँगा।

हाथ तंग होना–पास मे रुपया-पैसा न होना। उ० आजकल हाथ तंग है, बाद मे दे दूंगा।

हाथ ताकना–दूसरे के अधीन होना। दूसरे के भरोसे होना। उ० भगवान न करे कि किसी को किसी का हाथ ताकना पड़े।

हाथ तैयार होना–हस्त कला आदि मे अभ्यस्त एवं कुशल होना।

हाथ तोड़-तोड़ कर खाना–१. दे० 'हाथ चाटना'। २. बहुत खाना।

हाथ थामना–१. मारने से रोकना। २ सहारा देना।

हाथ दबा कर–१. धीरे-धीरे। २ किफायत से।

हाथ दिखा जाना–हाथ की सफ़ाई से कुछ मार ले जाना। उ० बेटा हमे ही हाथ दिखा जा रहे हो, चुपके से घड़ी निकाल कर रख दो।

हाथ दिखाना–१. वीरता दिखाना। उ० कुछ हाथ दिखाओ तो मै जानूं कि तुम वीर हो। २. नब्ज दिखाना। उ० डाक्टर को हाथ दिखाओ तो रोग का पता चलेगा। ३ ज्योतिषी को हाथ की रेखाएँ दिखाना। ४ किसी कला या विद्या में अपनी योग्यता दिखाना। उ० तुम भी हाथ दिखाओ।

हाथ डुलाते आना–दे० 'हाथ हिलाते आना'।

हाथ धरना–१. मदद देना, बचाना। उ० हाथ धरो नही तो मैं डूबा। २ विवाह करना। उ० जिसका हाथ धरा, उसका निर्वाह भी करो।

हाथ धोकर पीछे पड़ना–तन-मन से पीछे पडना। उ० अगर हाथ धोकर पीछे पड़ोगे तो अवश्य काम पूरा हो जायगा। वह तुम्हारे पीछे हाथ धोकर पड़ा है।

हाथ धोना–दे० 'हाथ धो बैठना'।

हाथ धो बैठना–१ अधिकार से चला जाना, खो देना। उ० मुक़दमा तो खूब लड़ा, पर खेत से हाथ धो बैठा। यही रवैया रहा तो एक दिन तुम जान से हाथ धो बैठोगे।

हाथ न आना–१. वश मे न आना। २ प्राप्त न होना।

हाथ न सूझना, हाथ से हाथ न सझना–बहुत अँधेरा होना।

हाथ न धरने देना–१. बात के फंदे मे न आना। उ० जो होशियार होगा अपने ऊपर तुम्हे हाथ न धरने देगा। २ छूने भी न देना। उ० लेना तो दूर रहा, वह मुझे उस चीज पर हाथ भी न धरने देगा।

हाथ नाड़ी पर होना–आतरिक स्थिति से अवगत होने की चेष्टा करते रहना।

हाथ पकड़ना–१ रक्षा मे लेना। उ० हाथ पकडे हो तो उसकी जान बचाओ। २. रोकना। ३. बेइज्ज़त करना।

हाथ पड़ना–वार पडना। उ० एक भी हाथ पडेगा तो खतम हो जाओगे।

हाथ पत्थर-तले दबना–वश मे होना। दबाव मे होना। उ० उसका हाथ पत्थर तले दबा है, नही तो वह सब कुछ कर डालता।

हाथ पर धरा होना–१ जबान पर होना। उ० गाली तो उसके हाथ पर धरी होती है। २ पास मे होना, उपलब्ध होना।

हाथ पर सरसों जमाना–शीघ्रता करना, जल्दी चाहना। उ० हाथ पर सरसो न जमाओ नही तो काम बिगड़ जायगा।

हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाना–१. बेआसरा का हो जाना। २. दे० 'हाथ पर हाथ धर कर बैठना'।

हाथ पर हाथ धर कर बैठना–बिना काम के बैठे रहना। उ० तुमको दिन भर हाथ पर हाथ धर कर बैठना कैसे अच्छा लगता है?

हाथ पर हाथ मारना–प्रण करना, बाजी लगाना । उ० उसने हाथ पर हाथ मार कर कहा कि मै उसे आज ज़रूर मार डालूँगा ।

हाथ पसारना–याचना करना । उ० जिससे कुछ मिलने की आशा हो, उसी के सामने हाथ पसारना चाहिये ।

हाथ पसारे जाना–मर जाना, बिना कुछ लिए दूसरे लोक को जाना । उ० संसार मे जो आया है, एक दिन हाथ पसारे जायगा ।

हाथ-पाँव चलना–१. काम करने की शक्ति होना । उ० जब तक हाथ-पाँव चलता है, हम किसी के मोहताज नही है । २ चंचल रहना । उ० तुम्हारा हाथ-पाँव तो चलता ही रहता है, कभी शात तो बैठते ही नही ।

हाथ-पाँव जोड़ना–प्रार्थना करना । उ० चोर ने बहुत हाथ-पाँव जोडा, तब कही सिपाही ने २५ रु० पर उसका मुकदमा तय किया ।

हाथ-पाँव टूटना–देह मे दर्द होना । उ० आज सुबह ही से मेरे हाथ-पाँव टूट रहे है ।

हाथ-पाँव ठंडे पड़ना–दे० 'हाथ-पाँव ठडे होना' ।

हाथ-पाँव ठंडे होना–मरने का समय करीब होना । उ० बुढ़िया के हाथ-पाँव ठडे हो गये है, उसे चारपाई से उतार दो ।

हाथ-पाँव तोड़ना–१ बहुत परिश्रम करना । उ० बहुत हाथ-पाँव न तोड़ो, नही तो बीमार पड़ जाओगे । २ मार कर अपाहिज कर देना । उ० आज रात को चोरो ने उसके हाथ-पाँव तोड़ दिये ।

हाथ-पाँव निकालना–बहुत क्रोधित होना । उ० क्या छोटी-सी बात पर हाथ-पाँव निकाल रहे हो ?

हाथ-पाँव पकड़ना–विनती करना । उ० अरे भाई उसका हाथ-पाँव पकड कर किसी तरह मनाओ, नही तो कही चली जायगी तो बड़ी परेशानी होगी ।

हाथ-पाँव पीटना–दे० 'हाथ-पाँव मारना' ।

हाथ-पाँव फूलना–भय से घबरा जाना । उ० हथियारबन्द डाकुओ को देख कर मेरे हाथ-पाँव फूल गये ।

हाथ-पाँव फैलाना–लम्बा-चौडा काम फैलाना । उ० तुम अकेले क्या कर सकते हो, अगर अधिक हाथ-पाँव फैलाना है तो दो-चार नौकर रख लो ।

हाथ-पाँव बचाना–होशियारी से काम करना । उ० यहाँ हाथ-पाँव बचाये रखना, नही तो जीवन बरबाद हो जायगा ।

हाथ-पाँव मारना–बहुत प्रयत्न करना । उ० कितना हाथ-पाँव मारो तुमसे यह काम न होगा ।

हाथ-पाँव हिलाना–१ परिश्रम करना । उ० जवानी मे खूब हाथ-पाँव हिलाना चाहिये । २. काम करना । उ० बिना हाथ-पाँव हिलाये खुशहाल नही हो सकते ।

हाथ पीला होना–विवाह होना ।

हाथ पूरा पड़ना–हथियार ठीक से लगना । उ० अगर हाथ पूरा पड़ा होता तो उसका सर धड से अलग हो जाता ।

हाथ फेंकना–१ दाँव चलाना । २. मारना । ३. जूए मे दाँव की कौडी फेंकना ।

हाथ फेरना–१ हड़प लेना । उ० बहुतेरो के धन पर हाथ फेर कर वह धनी बना है । २ मंत्र-तंत्र से झाडना । उ० जरा मेरे बच्चे पर हाथ फेर दो ।

हाथ फैलाना–दे० 'हाथ पसारना' ।

हाथबंदी होना–थोडा भी मौका न होना । उ० आजकल बडी हाथबन्दी है, अवसर मिलने पर अवश्य आऊँगा ।

हाथ बँध जाना–निर्धारित के अतिरिक्त कुछ न कर पाना ।

हाथ बटाना–मदद देना । उ० पिता के कामों मे पुत्र को भी हाथ बँटाना चाहिये ।

हाथ बटोरना–खर्च मे कमी करना । सोच-समझ कर खर्च करना ।

हाथ बढाना–१ दखल देना । उ० आपका इस काम मे हाथ बढाना उचित नही है । २ लालच करना । उ० दूसरो की चीज़ पर हाथ नही बढाना चाहिये । ३. लेने के लिये हाथ लपकाना ।

हाथ बाँधना–१. विनती करना । उ० भिखारी उनके सामने हाथ बाँधे खड़ा था, पर उन्होने उसकी एक भी न सुनी । २ मुजरिम के हाथ बाँधना, हथकड़ी डालना ।

हाथ बाँधे खड़ा रहना–आज्ञा के लिए हर समय हाजिर रहना । उ० मेरा नौकर ऐसा आज्ञाकारी है कि जब देखो हाथ-बाँधे खडा रहता है ।

हाथ बैठना–१ काम का अभ्यास होना । उ० उसका हाथ बैठ गया है, अब वह इस काम को कर लेगा । २. तलवार चलाने मे हाथ जमना । ३. ठीक लिखना आ जाना । उ० लड़के का हाथ बैठ गया है, अब ठीक से लिख लेगा ।

हाथ बैठाना–मश्क करना । उ० छोटे बच्चो को पटरी पर हाथ बैठाना चाहिये ।

हाथ भर का कलेजा हो जाना–साहस बढ जाना । उ० दो-तीन कुश्ती मारने से उसका हाथ भर का कलेजा हो गया है ।

हाथ भरना–१. ज्यादा काम करने से हाथ थक जाना । उ० मेरा हाथ भर गया है, अब थोडा आराम करने दो । २ रुपया मिलना । मुट्ठी गर्म होना । ३. घूस देना । उ० उस क्लर्क का हाथ भरो तो काम अपने आप हो जायगा ।

हाथ मंजना–दे० 'हाथ बैठना' ।

हाथ मजबूत करना–स्थिति दृढ करना ।

हाथ मरोड़ना–पछताना ।

हाथ मल कर मरना–पछता कर रह जाना ।

हाथ मलना–अफसोस करना । पछताना । उ० काम खराब हो जाने पर हाथ मलना बेकार है ।

हाथ मारना या मार देना–हड़प लेना । उ० तुम भी उनकी किसी चीज पर हाथ मार दो ।

हाथ मिलाना–१ दान देना । उ० हाथ मिलाने वालों का सदा कल्याण हो । २ किसी से अंग्रेजी शिष्टाचार से आगमन या विदाई के समय हाथ मिलाना । (To shake hand) ।

हाथ में क्या न होना–हाथ मे या अधिकार मे सब कुछ होना । उ० कर नहीं कौन काम हम सकते, क्या नही हाथ मे हमारे है ?

हाथ में खुजली होना–१ मारने की इच्छा होना २. कुछ मिलने का शकुन होना ?

हाथ में झंड़ा लेना–किसी काम को करने का निश्चय करना ।

हाथ में ठिकरा होना–भिक्षा माँगना । उ० जब हाथ मे ठिकरा है तो इज्जत की क्या परवाह ?

हाथ में दही जमना–हाथ का इतना बझा होना कि हिलाया भी न जा सके ।

हाथ में दिया होते कुआँ में गिरना–वचन का साधन होते हुए भी अनिष्ट को प्राप्त होना ।

हाथ में मेंहदी लगना–चुपचाप बैठे रहना, कुछ न करना ।

हाथ में नकेल रखना–अपने वश मे रखना ।

हाथ में सोने का कटोरा होना–दे० 'हाथ मे ठिकरा होना' ।

हाथ में हाथ देना–१ किसी के साथ विवाह कर देना । उ० जब आपने उनके हाथ मे उसका हाथ दे दिया तो अब उसके सुख-दुःख के वे ही जिम्मेदार है । २ समर्पण करना । ३ प्रेम से हाथ मिलाना ।

हाथ रँगना–१. घूस लेना । उ० हाथ रँगना महापाप है । २ हाथ पर खूब मारना । उ० हाथ पर इतना मारना कि लाल हो जाय ।

हाथ रोकना–१ व्यय कम करना । उ० हाथ रोको, नही तो बाद मे बडा कष्ट होगा । २ वार बचाना । उ० अगर हाथ न रोके होते तो तुम्हे काफी चोट आती ।

हाथ रोपना–१. पीटे जाने के लिए हाथ फैलाना । २ कुछ माँगने के लिए हाथ फैलाना । उ० भगवान न करे कि सूमो के आगे हाथ फैलाना पडे ।

हाथ लगना या लग जाना–मिलना । उ० इतना धन कहाँ से आपके हाथ लग गया ?

हाथ लगाना–१ वैर का बदला लेना । उ० अभी तो बडा अच्छा लग रहा है, जब हाथ लगाऊँगा तो मालूम होगा । २. दे० 'हाथ चलाना । ३ हाथ से लेना । ४ छूना ।

हाथ लपकाना–चोरी करना ।

हाथ लाल कर देना या करना–हाथ पर बहुत मारना । उ० मास्टर ने मेरे लडके का हाथ लाल कर दिया ।

हाथ लाल करना या कर लेना–बदनामी अपने ऊपर लेना । उ० तुम्हे बचाने के लिए उसने अपना हाथ लाल कर लिया ।

हाथ समेटना–हाथ रोकना, कम खर्च करना, खर्च बन्द कर देना । उ० खर्चे से हाथ समेट लो, नही तो बाद मे पछताओगे ।

हाथ साफ़ करना–१. कष्ट देना । उ० असहायो पर हाथ साफ करना महापाप है । २. चुराना या मार लेना । ३ वह तो उधर रहेगा, तब तक तुम हाथ साफ कर लेना । ४. हाथ से

कुछ करने की कला प्राप्त करना। उ० पहले हाथ साफ़ करो तो मेरे मित्रों की नक़ल करना।

हाथ सिर पर रखना–१. प्रणाम करना। उ० बड़ो को देखते ही हाथ सिर पर रखना चाहिये। २. प्यार करना। पुचकारना। दुलारना। ३ मददगार बनना। रक्षक बनना। ४. किसी के सिर की कसम खाना। उ० अपने लड़के के सिर पर हाथ रख कर मै कह सकता हूँ, मुझे कुछ भी ज्ञात नही।

हाथ से जाने देना–अधिकार से चला जाने देना। उ० इस ज़मीन को हाथ से जाने न दो, नही तो फिर नही मिलेगी।

हाथ से देना–दे० 'हाथ से जाने देना'।

हाथ से बात करना–मारना-पीटना। उ० तुम सीधी तरह मानोगे या हाथ से बात करनी पड़ेगी।

हाथ से बेहाथ होना–अपना अधिकार खो देना।

हाथ सैला होना–पास मे रुपये होना।

हाथ हिलाते आना–१ असफल लौट आना। उ० वह बडी आशा लगा कर वहाँ गया था, पर हाथ हिलाते आया। २ बिना कुछ लिये आना। उ० अरे! वह तो हाथ हिलाते आ रहा है? मालूम होता है कि सामान नही मिला!

हाथापाई करना–दे० 'हाथाबाही करना'।

हाथापाई होना–लड़ाई-झगड़ा होना। उ० बात ही बात मे उन दोनो मे हाथापाई हो गई।

हाथाबाही करना–हाथ से साधारण लड़ाई-झगड़ा करना। उ० वे दोनो बात ही बात मे हाथाबाही करने लगे।

हाथाबाही होना–दे० 'हाथापाई होना'।

हाथी के खाये कैथ होना–भीतर से खोखला, पर ऊपर से फूल कर गुप्पा होना।

हाथी के दाँत बिठाना–असम्भव बात करना।

हाथी के संग गाँड़े खाना–छोटे का बड़े की बराबरी करने की मूर्खता करना। उ० हाथी के संग गाँड़े खाने गये तो और क्या होगा? मूर्खों का यही तो काम है।

हाथी के साथ गन्ने चूसना–दे० 'हाथी के साथ गाँड़े खाना'।

हाथी झूमना–दरवाजे पर हाथी झूमना, हथिया-नशीन होना। बहुत धनी मानी होना। उ० उनका क्या है? उनके दरवाजे पर तो हाथी झूमते है।

हाथी झूलना–दे० 'हाथी झूमना'।

हाथी पाँव पाना–कठिन सजा पाना।

हाथी बाँधना–१. बहुत व्यय की चीज़ रखना। उ० तुम्हारे जैसा दरिद्र क्या खाकर हाथी बाँधेगा? २. धनी होना। उ० तुमने ग़रीबों का खून चूस-चूस कर हाथी बांधा है।

हाथों की फेरी होना–१. अनुचित सम्बन्ध होना। २. चालाकी से चीजों का इधर-उधर होना।

हाथो के तोते उड़ जाना–१. बहुत घबरा जाना। उ० वह तो ऐसे चक्कर मे पड़ा कि उसके हाथो के तोते उड गए। २. अक्ल मारी जाना। उ० ठगो के बीच पड़ कर मेरे हाथों के तोते उड गए।

हाथों बिक जाना–पूरी तरह वश मे होना।

हाथो में लेना–अपने अधिकार मे या अपने जिम्मे लेना। उ० इस काम को तुम अपने हाथो मे ले लो, शायद ठीक चले।

हाथों लेना–१ बहुत प्यार करना या मानना। उ० उसके बच्चे को तो लोग हाथों लिए रहते है। २ हाथ से मारना।

हाथो सौंप देना–संरक्षण मे रख देना।

हाथो-हाथ–१. बहुत जल्दी। उ० यह काम हाथो-हाथ हो जायगा। २. चारो ओर से हाथ बढ़ा कर।

हाथो-हाथ लेना–१. प्रेम करना, बहुत आदर-सत्कार करना। उ० लडका बहुत होनहार और सुन्दर है, इससे उसे लोग हाथों-हाथ लिये रहते है। २. बहुत माँग होना या लिया जाना। उ० उस पुस्तक को लोग हाथों-हाथ ले रहे है।

हामी भरना–१. 'हाँ मे हाँ मिलाना'। २. हाँ करना। उ० हामी भरा था कभी तुमने यहीं पर हो आज मुकरते कि था हामी भरा नही।

हाय पड़ना–१ आह पड़ना। उ० ग़रीबों की हाय पड रही है, इसी से कष्ट भोग रहे हो। २. हाय-हाय मचना। उ० उनके मरने से वहाँ हाय पड़ी है, तुम्हारी कौन सुनेगा?

हाय-हाय करना—१ काम में काफी मेहनत करना। उ० ज्यादा हाय-हाय न करो, नही तो बीमार हो जाओगे। २. दुख प्रकट करना। उ० अब हाय-हाय न करो जो होना था, हो गया। ३ रोना। ४ बहुत चाहना। उ० तुम तो रुपये के लिये हाय-हाय किया करते हो।

हाय-हाय पड़ी रहना—अभाव का रोना रोना।

हाय-हाय मचाना—१ शिकायत करना। शिकायत के रूप में शोर मचाना। उ० यहाँ हाय-हाय मचाने की कोई जरूरत नही है, मै सब समझ रहा हूँ। २. अपने दुख को बुरी तरह या चिल्ला कर जोर-जोर से प्रकट करना।

हार-जीत करना—१ जुआ खेलना। उ० दीवाली छोड़ कर मै भी कभी हार जीत नही करता। २ हारने-जीतने का फैसला देना। उ० हार-जीत करो, मै घर जाऊँ।

हार बैठना—हार जाना। उ० बीमार इश्क मे अब क्या लगाएँगे 'आजाद' कि नकद दिल को तो पहिले ही हार बैठे है। २ नाक में दम आ जाना।

हार मानना—हार स्वीकार करना। उ० अभी मै उनसे हार नही मान सकता।

हार में रहना—घाटे में रहना। उ० मै ही हार में रहा, तुम तो अपना रुपया पा गए।

हार खाना—हारना। उ० एक बार हार खाने से हिम्मत न हारो, कोशिश करो, शायद जीत जाओ।

हारिल की लकड़ी होना—सहारा होना।

हाल पतले होना—१. आर्थिक स्थिति खराब होना। २ स्वास्थ्य खराब होना।

हाल-बेहाल होना—१ अच्छी हालत से बुरी हो जाना। उ० समय के फेर से हाल-बेहाल होते देर नही लगती है। २ मरने के करीब होना। उ० उसका हाल-बेहाल है, चलो देख आवें।

हाल लगना—हिलना-डुलना। उ० बर्तन एक दम भरा हुआ है, हाल लगने से दूध गिरेगा।

हालत संगीन होना—जीवन को खतरा होना।

हासिल करना—प्राप्त करना। उ० उसने पार-साल एम० ए० की डिग्री हासिल की।

हासिल होना—मिलना। उ० तुम वहाँ बेकार जा रहे हो, तुम्हे कुछ भी हासिल न होगा।

हा-हा खाना—खुशामद करना। उ० बहुत हा-हा खाने के बाद उसने काम करने का वचन दिया।

हा-हा ही-ही करना—१ हँसी-मजाक करना। उ० हर समय हा-हा-ही-ही करना असभ्यता है। २. बहुत हँसना। उ० उसका लड़का बीमार है, जरा हा-हा ही-ही न करो।

हिंदी की चिंदी निकालना—१. किसी बात की पूरी खोज करना। २ किसी की दुर्दशा कर डालना। ३ किसी भाषा को बहुत क्लिष्ट करके बोलना। ४ किसी भाषा को बिगाड़ कर बोलना। उ० भाई हिंदी की चिंदी न निकालो, न बोलने आता हो तो बल्कि न बोलो।

हिंदू होना—१ सीधा होना। २. बुढ़ापे में दिमाग खराब हो जाने वाला होना। ३. भीरु होना। उ० हो तो हिंदू, क्या खाकर यह काम करोगे ?

हिकमत करना—१ युनानी दवा करना। उ० पढने के साथ-साथ कुछ हिकमत भी करता हूँ। २ उपाय लगाना। उ० कुछ हिकमत करो कि मुझे भी नौकरी मिल जाय।

हिचकी बँध जाना—रोते-रोते साँस अटकने लगना। उ० मास्टर ने लड़के को इतना मारा कि उसकी हिचकी बँध गई।

हिचर-पिचर करना—१ आना कानी करना। उ० अगर न देना हो तो साफ इन्कार कर दो, हिचर-पिचर क्यों करते हो ? २ ठीक से काम न करना। उ० ठीक से काम करना, हिचर-पिचर न करना।

हिजो करना—दोष निकालना। उ० हर एक काम में हिजो करना ठीक नही।

हिजो निकालना—दे० 'हिजो करना'।

हिफ्ज करना—याद करना। उ० आज १० तक का पहाड़ा हिफ्ज कर लो।

हिम्मत का जवाब देना—कार्य की कठिनता के कारण साहस जाता रहना।

हिम्मत हारना—१. साहस छोड़ना। उ० हिम्मत न हारो फिर कोशिश करो, शायद सफल हो जाओ। २ डर जाना।

हियाव करना—हिम्मत करना, दिल कड़ा करना। उ० हियाव करके फोड़े का आपरेशन करा लो।

हिये में धरना—मन में विचार लाना ।

हिया सिराना—हृदय को संतोष मिलना ।

हियाव खुलना—डर दूर होना । हिम्मत पड़ना । उ० हियाव खुलता तो मैं भी चला जाता ।

हिये की आँख खुलना—ज्ञान होना ।

हिरन हो जाना—काफ़ूर हो जाना, भाग जाना ।

हिलके पानी न पीना—बहुत आलसी होना । उ० तुम जब जवानी में हिलके पानी नही पीते हो तो बुढ़ापे में क्या करोगे ?

हिल-मिल कर रहना—मेल-जोल मे रहना । उ० परिवार के सभी आदमियो को हिल-मिल कर रहना चाहिये ।

हिल-मिल जाना—मेल होना । मिल जाना । उ० लड़का वहाँ हिल-मिल गया था, इसी से आते वक्त उसकी आँखे भर आई ।

हिसाब देना—खर्च-बर्च का व्यौरा देना । उ० जिसे तुम रुपया देना, कह देना कि हिसाब देने के लिये सब ठीक से लिखे रहे ।

हिसाब बैठना—१. सुभीता होना । उ० अगर हिसाब बैठे तो चलिये आज ही ट्रक से लाया जाय । २. तय हो जाना । ३. हिसाब-किताब का ठीक होना ।

हिसाब साफ़ करना—१. हिसाब के मुताबिक सब रुपया दे देना । उ० पहले उसकी दूकान का हिसाब साफ़ कर दो, तो फिर और लोगो का देना । २. ठीक से पूरा हिसाब कर देना । उ० आज किसी तरह हिसाब साफ करो ।

हिसाब होना—बर्खास्त होना । उ० उसका तो वहाँ हिसाब हो गया, कोई और नौकरी खोज दो ।

हींग हगना—पेचिश होना । उ० आज हफ्तों से वह हींग हग रहा है, उसे कुछ दवा लेते आना ।

हीरा खाना—जहर खाकर जान देना । उ० हीरा खाना सबसे बड़ा पाप है ।

हीरे का टुकड़ा—१. बहुत चरित्रवान व गुणी व्यक्ति । २. बहुत मूल्यवान और महत्त्वपूर्ण ।

हीरे का रोजगार करने के बाद काँच देखना—महत्त्वपूर्ण के बाद व्यर्थ के चीज में पड़ना ।

हीरे की कनी चाटना—दे० 'हीरा खाना' ।

हीला-हवाला करना—बहाना करना । टाल-मटोल करना । उ० भाई एक चीज माँगता हूँ, मगर हीला-हवाला न करना ।

ही-ही ठी-ठी करना—१. हँसी-मजाक करना । २. निर्लज्जतापूर्वक हँसना । ३. तुच्छतापूर्वक हँसना ।

हुँकारी भरना—सही भरना, हाँ करना । उ० तुम तो हुँकारी भर कर भी 'ना' कर देते हो । तुम्हारा क्या विश्वास ?

हुंडी पटना—हुंडी का रुपया मिलना । उ० अगर आप थोड़ी मेहनत कर देंगे तो हुंडी पट जायगी ।

हुकूमत करना—राज्य करना । उ० भारतवर्ष में कभी मुगल भी हुकूमत करते थे ।

हुकूमत चलाना—राज्य का काम करना । राज्य करना । उ० हुकूमत चलाने के लिए बड़े होशियार आदमी की जरूरत है ।

हुकूमत जताना—रोब दिखाना । उ० हुकूमत जताओगे तो ठीक न होगा ।

हुक्का-पानी न रखना—जाति से बाहर कर देना । वास्ता न रखना । उ० उस नीच से हुक्का-पानी न रक्खो ।

हुक्का-पानी पिलाना—आदर-सत्कार करना । उ० कोई भी चला जाय, वह हुक्का-पानी ज़रूर पिलाता है ।

हुक्का-पानी बन्द करना—जाति से निकाल देना । उ० रखनी रख लेने के कारण उसका हुक्का-पानी बंद कर दिया गया है ।

हुक्म उठाना—आज्ञा पालन करना । आज्ञानुसार काम करना । उ० यहाँ मैं तुम्हारा हुक्म उठाने के लिए नही आया हूँ ।

हुक्म बजाना—दे० 'हुक्म उठाना' ।

हुज्जत करना—१ तर्क करना । बहस करना । उ० क्यों हुज्जत कर रहे हो, अगर काम न करना हो तो घर चले जाओ । २. हठ करना ।

हुरमत उतारना—दे० 'आबरू उतारना' ।

हुरमत करना—इज्जत करना । आदर-सत्कार करना । उ० अपने दरवाजे सबकी हुरमत करनी चाहिये ।

हुरमत लेना—बेइज्जत करना । इज्जत लेना । उ० भरी सभा मे किसी की हुरमत लेना ठीक नहीं है ।

हुर्रे उड़ाना–बदनाम करना।

हुर्रे बोलना–हर्षध्वनि करना।

हुल-हपाड़ा करना–शोरगुल करना। उ० यहाँ हुल-हपाड़ा न करो।

हुलिया तबाह करना–दे० 'हुलिया बिगाड़ना'।

हुलिया बिगड़ जाना–१. भय या परेशानी आदि से आकृति का बदल जाना। उ० शेर को देखते ही उसकी हुलिया बिगड़ गई। २. डर जाना। ३. तंगदस्ती होना।

हुलिया बिगाड़ना या बिगाड़ देना–१. दुर्दशा करना। उ० उसने तो आज पैदल चला कर मेरी हुलिया बिगाड़ दी। २. रूप बिगाड़ना। उ० होली के दिन ऐसी हुलिया बिगाड़ूँगा कि याद करोगे।

हुलिया लिखाना–किसी का पता लगाने के लिये रूप, रंग और निशान आदि पुलिस में लिखाना। उ० नहीं मिल रहा है तो थाने में उसकी हुलिया लिखा दो।

हुल्ला-हपाड़ा करना–दे० 'धुमगज्जर मचाना'।

'हूँ' करना–१. स्वीकार करना। उ० बहुत सोच-समझ कर वे 'हूँ' करते हैं। २. अस्पष्ट स्वीकृति देना। ३. आश्चर्य प्रकट करना। ४. डाँटना या रोकना।

हूँ न रह जाना–अहंकार दूर होना।

हूँ से तूँ करना–१. इन्कार करना। २. नाराज होना। ३. मरजी के खिलाफ़ जाना।

हूँ-हाँ करना–१. दे० 'हीला-हवाला करना'। २. बे मन से हुँकारी भरना।

हूक-हूक कर रोना–फूट-फूट कर रोना। उ० लड़के के मरते ही बुढ़िया हूक-हूक कर रोने लगी।

हूर की बच्ची–बहुत सुंदर लड़की।

हूक लगना–१. चिंता करना। २. प्राण कंठ तक आना।

हूल देना–आगे बढ़ाना, ठेलना। उ० लोगों को हूल देकर बैठने की जगह करो, वे आ रहे हैं।

हृदय उछलना–मन में खुशी होना। उ० पुत्र को देखते ही माता का हृदय उछलने लगता है।

हृदय उमड़ आना–भावातिरेक होना।

हृदय का अंतर–दे० 'हृदय की गाँठ'।

हृदय का काँटा निकलना–आशंका या दुर्भाव दूर होना।

हृदय काँपना–१. डरना। २. ठंड से कंपन होना।

हृदय का टुकड़ा–बहुत प्यारा। उ० अपना लड़का किसके हृदय का टुकड़ा नहीं होता।

हृदय का चोट खाना–हृदय को पीड़ा होनी।

हृदय का शूल होना–१. दुःखदायी होना। २. दुश्मन होना।

हृदय की गाँठ–मनमोटाव। उ० मेरी उनकी हृदय की गाँठ जल्दी दूर नहीं हो सकती।

हृदय की कली खिल जाना–प्रसन्नता होना।

हृदय की गाँठ खोलना–दे० 'मन की गाँठ खोलना'।

हृदय फटना–१. बहुत कष्ट होना। उ० उसके मरने का समाचार सुन कर मेरा हृदय फट रहा है। २. दिल टूटना, मन फिरना। उचाट होना। उ० उनसे तो मेरा हृदय फट गया।

हृदय में गुदगुदी उठना–मन में बहुत खुशी होना। उ० जिस समय मेरी उसकी भेंट होती है, हृदय में गुदगुदी उठने लगती है।

हृदय में चुभना–हृदय को कष्ट पहुँचना।

हृदय में छुरी छिपाना–बुरे विचार मन में रखना। उ० घनिष्ठ मित्रों के लिए हृदय में छुरी छिपाना महापाप है।

हृदय में फफोले पड़ना–बहुत पीड़ा होना।

हृदय में हलचल होना–मन में नाना प्रकार के भावों का उठना।

हृदय से बोझ हटना–दुश्चिन्ता दूर होना।

हृदय से लगाना–१. छाती से लगाना। कलेजे से लगाना। उ० उसने आते ही सबको हृदय से लगा कर भेंट की। २. प्यार करना।

हृदय हलका होना–दु:ख या चिंता का भार कम होना।

हेकड़ी करना–ऐंठ दिखाना। उ० चोरी करके हेकड़ी करते हो, शर्म नहीं आती?

हेकड़ी किरकिरी होना–शान का न रहना। उ० उनकी वजह से तुम्हारी हेकड़ी किरकिरी हो गई।

हेकड़ी दिखाना–१. डाँट बताना। उ० तुम हर समय हेकड़ी दिखाते हो, मैं भी मौक़ा

पड़ने पर समझ लूंगा। २. रोब या ऐंठ दिखाना।

हेकड़ी भूल जाना—गर्व चूर-चूर हो जाना। डाँट-डपट भूल जाना। उ० इतनी मार मारूँगा कि हेकड़ी भूल जायगी।

हेटी होना—बेइज्जत होना, इज्जत बिगडना। उ० तेरे हेटी हुई ऐ गुबदे गरदाँ क्या-क्या, उठ गए ख्वाने करम से तेरे मेहमाँ क्या-क्या ?

हेरे-फेरे कराना—बार-बार इधर-उधर दौडाना।

हैदड़ा खोना—बुरा दर्जा करना, गिरना। उ० उसने तो अपना हैदड़ा अपने हाथों खो रखा है।

हैरान करना—दे० 'तंग करना'।

हैसियत रखना—१ मिलकियत रखना। उ० वे भी आपसे कम हैसियत नही रखते। २. शक्ति रखना। उ० तुम-जैसे पाच को लड़ाने की हैसियत रखता हूँ।

होंठ काटना—दे० 'होठ चबाना'।

होंठ चबाना—१. दे० 'हाथ मलना'। २. क्रोधित होना। उ० होंठ चबा कर तेवर मत बदलो, मैने उसे नही बुलाया है।

होंठ चाटना—१ और खाने की लालच करना। उ० क्या होठ चाटते हो, अब कुछ नही है। २. शर्मा जाना, झेंप जाना। उ० मैने ऐमी डाँट बताई कि होठ चाटने लगे।

होंठ हिलाना—कुछ बात करना। उ० तुक होठ हिलाऊँ तो यह कहता है न बक बे, और पास जो बैठूं तो सुनाता है सरक बे।

होंठों का हिलना—धीरे-धीरे बातचीत होना। उ० क्या तबा मे जूदन है चट दिल की उड़ा जाना, होठों का यहाँ हिलना, वहाँ बात का पा जाना।

होंठों पर जबान फेरना—प्यास से परीशान होना।

होंठों में कहना—चुपके से कहना। उ० कुछ गर से होठों में कहे है, पै जो पूछो, तो वह वही मुकरता है कि मै कुछ नही कहता।

होंठों में मुस्कराना—ऐसे हँसना कि दाँत न दिखाई दे। उ० मगर हँसी तेरी गुलशन मे याद आती है, कली-कली जो अब होंठो मे मुस्कराती है।

हो आना—किसी से मिल कर लौट आना। उ० आप उनके पास से हो आइये, मैं यहीं हूँ।

हो पड़ना—१. लड़ाई-झगड़ा होना। उ० बात ही बात मे उन दोनो में हो पडी। २. घटित होना। उ० जो होना था, हो पड़ा।

हो रहना—१. पीछे-पीछे चलना। उ० हाथ-पैर रहते हुए आप क्यो किसी के हो रहे है? २. वश मे हो जाना। उ० आजकल आप उस स्त्री के हो रहे है।

होका देना—पुकार मचाना, दुहाई देना। उ० इश्क ने जिस दम दयारे दिल में आ होका दिया, नालए सोजाँ ने सीने मे मेरे रोका दिया।

होनहार पेड़ के पत्ते शुरू से हरे होना—प्रारम्भ से ही भावी श्रेष्ठता का आभास मिलना।

होड़ बाँधना—बाजी लगाना। उ० उतने बडे आदमी से किसी बात में होड बाँधना तुम्हे शोभा नही देता।

होम करते हाथ जलना—अच्छा कार्य करते बुरा फल मिलना।

होली करना—नष्ट करना, जलाना।

होश उड़ना या उड़ जाना—१. आश्चर्य होना। उ० उसकी बात सुन कर मेरा होश उड़ गया। २ डर जाना। उ० शेर को देख कर मेरे होश उड गये।

होश काफ़िर हो जाना—दे० 'होश उड़ जाना'।

होश की दवा करना—सोच-समझ कर कहना। होश में रहना। उ० होश की दवा करो, नहीं तो व्यर्थ मे झगडा हो जायगा।

होश ठिकाने होना—घमंड चूर होना। उ० एक ही थप्पड मे उसका होश ठिकाने हो गया।

होश दंग रह जाना—दे० 'होश दग होना'।

होश दंग होना—आश्चर्य मे होना। उ० पाँच वर्ष के लडके की ऐसी बाते सुन कर सबके होश दग हो गये।

होश फाख्ता हो जाना—दे० 'होश उड जाना'।

होश बिगड़ जाना—दे० 'होश उड़ जाना'।

हो-हल्ला मचाना—१. हल्ला मचाना। २. चिल्लाना। ३. ऊधम करना। ४. जल्दी

मचाना। उ० हो-हल्ला न मचाओ, नही तो काम खराब हो जायगा।

हो-हा करना–१. शोर करना। उ० क्या बैठे-बैठे हो-हा किया करते हो? २. विरोध करते हुए शोर करना।

हौआ होना–भयानक या डरावना होना।

हौल आना–खौफ मालूम देना, डर लगना। उ० मैं इश्क का यह न समझी थी डौल, तेरे गम से आने लगा मुझको हौल।

हौल-दिल होना–घबराहट होना। उ० हौल-दिल न हो, सब ठीक हो जायगा।

हौल बैठ जाना–भय समा जाना। उ० लडके के दिल मे हौल बैठ गई है, इसी से स्कूल नही जाता।

हौल-हौली करना–घबरा देना। उ० हौल-हौली करोगे तो काम खराब हो जायगा।

हौस बुझाना–कामना पूरी करना। उ० उसने भी अपनी हौस बुझा ली।

हौसला अफ़ज़ाई करना–दे० 'हौसला बढ़ाना'।

हौसला छलकना–मन में इच्छा होना।

हौसला निकालना–इच्छा पूरी करना। उ० आज हौसला निकाल लो, फिर शायद मौक़ा न मिले।

हौसला पस्त होना–उत्साह न रह जाना। उ० अब मेरा हौसला पस्त हो गया है, मुझसे कुछ नही हो सकता।

हौसला बढ़ाना–साहस बढ़ाना, उत्साह बढ़ाना। उ० अगर इसी तरह लडके का हौसला बढ़ाते रहोगे तो वह अवश्य तरक्क़ी करेगा।

हौसला होना–जोश और इच्छा होना। उ० इस समय हौसला है, काम कर देगा।

हौरा-झौरा–झगड़ा-झझट। उ० हौरा-झौरा मुझे पसद नही।